ओ३म्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये
आजीवन सदस्य-२०१ रु०

विदेश मे २० पौ० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—५० पैसे

वर्ष ४७, अक २६, रविवार, १५ जुलाई, १९८४
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६०

दूरभाष ३४३७१८
श्रावण कृष्णा २, २०४१ वि

कश्मीर को इस्लामी जम्हूरियत बनाने की साजिश

३,००० पाकिस्तानी सिख वेश में गुरुद्वारों में :

आर्य नेताओं की गुप्त रिपोर्ट से भण्डाफोड़

नई दिल्ली : जिस प्रकार पिछले कुछ वर्षों से खालिस्तान बनाने के इच्छुक पाकिस्तान तथा अमरीका समर्थक आतंकवादियों का केन्द्र पंजाब बन गया था, उसी प्रकार जम्मू कश्मीर डा० फारूख अब्दुला के नेतृत्व मे देश के लिये एक और नया सिर दर्द बन गया है। यह है निष्कर्ष उस गुप्त रिपोर्ट का जो 7 जून को श्रीनगर मे आर्य समाज मन्दिर तथा हिंदू मन्दिरो को जलाये जाने और तोड फोड की घटनाओ की जाच करने के बाद तैयार की गई थी।

श्री रामगोपाल शालवाले और श्री ओम प्रकाश त्यागी ने कश्मीर के दगा-ग्रस्त क्षेत्रो का दौरा करके तथा वही के स्थानीय निवासियों से बातचीत करने के बाद, तथ्यो का गहन अध्ययन किया और 28 जून को प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से भेंट करके उन्हे उक्त रिपोर्ट पेश की।

आर्य नेताओं ने कहा कि वर्तमान हालात मे कश्मीर में व्याप्त परिस्थितियो को देखते हुए वहा राष्ट्रपति शासन स्थापित करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नही है। इसमें तनिक भी देर करने से भयकर परिणामों का सामना करना पड सकता है। साथ ही आर्य नेताओ ने सरकार से यह माग भी की कि जिस तरह शरारती तत्वों द्वारा नष्ट किए गए चर्च को सरकार ने वहां पुन: बनवाया था, उसी प्रकार आर्य समाज मन्दिर का भी सरकार की ओर से पुनर्निर्माण कराया जाए।

इस गुप्त रिपोर्ट मे बतलाया गया है कि कश्मीर मे गत एक वर्ष से पाकिस्तान समर्थक तत्व सिख आतकवादियो के साथ "मिलकर प्रचार कर रहे हैं कि 14 अगस्त 1984 (पाक जन्म दिवस) तक खालिस्तान स्थापना हो जाएगी और कश्मीर घाटी पर पाकिस्तान का अधिकार हो जाएगा और यह "इस्लामी जम्हूरियते कश्मीर" कहलाएगा। घाटी में पाक अधिकृत तथा-कथित आजाद कश्मीर मे छपे पर्चे बाटे जा रहे हैं जिनके द्वारा मुसलमानो को हिन्दुओ के और हिन्दू भारत के विरुद्ध जिहाद के लिये उकसाया जा रहा है तथा साम्प्रदायिकता का विष फैलाया जा रहा है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि बाहर से आये लगभग तीन हजार व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों मे फैले हुए हैं जो विभिन्न गुरुद्वारो और मस्जिदो मे रह रहे हैं। ये सब राज्य के बाहर से आए हुए हैं। इस सब का उद्देश्य हिन्दुओ को किसी न किसी प्रकार घाटी छोडकर भागने पर मजबूर कर देना है। 7 जून को हुए पुलिस गोलीकाड मे मरे अधिकाश व्यक्ति सिखो के वेश मे राज्य के बाहर से आए मुसलामान थे। इन सभी की पहचान गुप्त रखी गई तथा इनके शव भी किसी को नहीं दिए गए।

रिपोर्ट मे डा० फारुख पर आरोप लगाया गया है कि उनके अमरीका तथा सी० आई०ए० के साथ घनिष्ट सम्बन्ध हैं। आज से दो वर्ष पूर्व जब वे अमरीका गए थे तो उन्हें एक वर्क पेपर (निर्देश पत्र) दिया गया था जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार जम्मू कश्मीर सरकार तथा कश्मीरी मुसलमानो को खालिस्तान आन्दोलन के साथ सहयोग करना चाहिए। कमीर मे विरोधी दलो के सम्मेलन के पश्चात अमरीका तथा सी० आई० ए० द्वारा समर्थित समाचार पत्रो ने डा० फारूख अब्दुल्ला का समर्थन शुरू कर दिया था। यह इस आरोप का पुष्ट प्रमाण है।

इसके अलावा जमायते इस्लामी तथा अन्य पाक समर्थक तत्वो द्वारो यह प्रचार किया जा रहा है कि सैकडो प्रशिक्षित व्यक्ति सिखो के वेश मे पाकिस्तान से काश्मीर मे घुसने के लिये तैयार हैं और केवल इशारे का इन्तजार कर रहे हैं। डा० फारूख अब्दुल्ला बार बार यह कह रहे हैं कि पजाब को सेना के द्वारा कुचला नही जा सकता, फौज हटने के बाद देखिये क्या होता है। ऐसी आशका है कि ईद के बाद कुछ नई घटनाए हो। अत समय की माग है कि अल्पसख्यको को उचित सुरक्षा प्रदान की जाए तथा राज्य मे कम से कम 6 महीने के लिए सैनिक शासन लागू किया जाए।

यह गुप्त रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद केन्द्रीय सरकार के सकेत पर राज्यपाल श्री जगमोहन ने तुरन्त कार्रवाई करके फारूख अब्दुला को हटा कर शाह गुलाम मुहम्मद को, जो फारूख के बहनोई हैं, मुख्यमत्री का कार्यभार सौंपा है। श्री शाह ने मुख्यमत्री बनते ही भारतीय राष्ट्र की अखण्डता कायम रखने और भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन का आश्वासन जनता को दिया है।

पजाब मे सैनिक कार्रवाई के बाद कश्मीर मे यह कार्रवाई भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व पूण है, जिसके दूरगामी परिणाम होने की सभावना है।

विमान का अपहरण

कश्मीर मे फारुख अब्दुल्ला को हटाने के दो दिन बाद ही उग्रवादियो ने दिल्ली जाने वाले विमान का अपहरण कर लिया। चालको को पिस्तौल की नोक पर विमान लाहौर ले चलने को मजबूर किया। लाहौर पहुचने पर उन्होंने विमान को उडाने की धमकी दी जिससे एयर बस के यात्रियो के प्राण सकट मे पड गए। जब भारत सरकार ने उनकी कोई भी माग मानने से इन्कार कर दिया और पाकिस्तान सरकार ने भी उन्हे कोई शह नही दी, तो 22 घटे के बाद उन्होने आत्म समपण कर दिया। विमान के यात्री सकुशल दिल्ली वापिस पहुच गए। अपहोर्ताओ को भारत को सौंपने के लिए ने पाकिस्तान सरकार से मना कर दिया है।

पाकिस्तान के इस सद् व्यववहार के कारण दोनो देशो के सूचना मत्रियो ने एक दूसरे के बिरुद्ध प्रचार न करने का फैसला किया है।

कश्मीर मे डेढ सौ उग्रवादी गिरफ्तार किए गए है और अभी कर्फ्यू चल रहा है।

शहीदो जत्थे भेजने का निश्चय

अकाली दल ने 16 जुलाई से स्वर्ण-मन्दिर को सेना से मुक्त कराने के लिए शहीदी जत्थे भेजने का निश्चय किया है।

परामर्शदाता—अभय स्वामी सरस्वती
सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार
व्यवस्थापक—रामलाल मल्लिक

आओ सत्संग में चलें

ऋग्वेद १० मंडल का ११७ सूक्त

—श्री सोमदत्त विद्यालंकार—

दान तथा परोपकार का महत्व

इस सूक्त का देवता है धन अन्न दान प्रशंसा। इस सूक्त में निर्धन पुरुषो को दान देने के लिए बडे अच्छे शब्दों में प्रेरणा की है।

1. न वा उ देवा क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति उतापृणन्मर्डितारं न विन्दते॥
ऋ० 10-117-1

(देवा. क्षुधं इत् वध न ददु) देवो ने भूखों गरीवों को ही मौत नही दी, वल्कि देखा जाता है कि (आशितं मृत्यव. उपगच्छन्ति) खाते पीते आदमी को भी मौत अपने पजे मे दवोच लेती है। (उत) और निश्चय से (पृणतः रयिः) दान देने वाले का धन (न उपदस्यति) नष्ट नही होता। (उत) परन्तु (अपृणन् मर्डितारं न विन्दते) दान न देने वाले को कोई सुख देने वाला मित्र नही मिलता।

भूख नहीं दी, वध जीवों का देवों ने ही कर डाला।
दाता नहीं, अन्न देकर जो बुझा सके यह ज्वाला॥
क्षुधा क्षीण की अवहेला कर जो खुद माल उड़ाता।
एक दिवस उसके प्राणों को भी अन्तक ले जाता॥
दाता का धन कभी न घटता, देता उसे विधाता।
किन्तु कृपण को कहीं न कोई सुखदाता मिल पाता॥

2 य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन् रफितायोपजग्मुषे।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरो तो चित्स मर्डितारं न विन्दते॥

(य अन्नवान सन्) जो अन्न वाला होता हुआ भी (पित्व चकमानाय) अन्न की इच्छा करने वाले (रफिताय) दरिद्रता के कारण बुरी अवस्था में पड़े हुए (उप जग्मुषे) घर मे मांगने के लिए आये हुए (आध्राय) गरीव के लिए (मनः) अपने मन को (स्थिरं कृणुते) कठोर कर लेता है, (उत पुर चित् सेवते) बल्कि उसके सामने बैठकर ही मजे से स्वयं अन्न खाता है, (सः) वह (मर्डितारं न विन्दते) सुख देने वाले मित्र को प्राप्त नहीं करता।

दुर्बल और भूख से पीड़ित स्वयं द्वार पर आये।
लिये अन्न की चाह, विकल हो सन्मुख कर फैलाये॥
ऐसे याचक के प्रति भी जो हृदय कठोर बनाता।
अन्न खाद्य है, किन्तु नहीं देने को हाथ बढ़ाता॥
यही नहीं, तरसा कर उसको स्वयं सामने खाता।
सुख दाता उस महा क्रूर को कहीं नहीं मिल पाता॥

3. स इद् भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्॥

(यः कृशाय) जो दुवले पतले (अन्न कामाय चरते) और अन्न की इच्छा से इधर-उधर घूमने वाले (गहवे) घर-घर जाकर भीख मागने वाले (कृशाय) दुवले-पतले याचक को (ददाति स. इत् भोजः) अन्न देता है वही सच्चा भोजन करता है (अस्मै) इस दाता के पास (याम हूतौ) इस दानरूपी यज्ञ के लिए (अरं भवति) पर्याप्त धन होता है, ओर वह (अपरीषु) कठिन प्रसंग में भी (सखायं वृणुते) मित्र वना लेता है।

कृश शरीर है मांग रहा जो घर जाकर दाना पानी।
ऐसे प्रतिग्रही याचक को जो देता वह दानी॥
यज्ञों में पूरा पूरा फल उसको ही मिल पाता।
शत्रु मंडली में भी वह है सबको मित्र बनाता॥

4. न स सखा यो न ददाति सख्ये, सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥

(पित्वः सचमानाय) अन्न की इच्छा करने वाले (सचा भुवे सख्ये) समान विचार वाले मित्र को भी (न ददाति) जो नही देता है (न सः सखा) वह सच्चा मित्र नहीं है (अस्मात् अप प्रेयात्) ऐसे आदमी से दूर ही रहना चाहिए (न सत् ओकः अस्ति) उसका घर रहने योग्य नहीं है (पृणन्तं अन्यं अरणं चिदिच्छेत्) ऐसे घर से तो जंगल भी अच्छा।

5. पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनुपश्येत पंथाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा अन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः॥

(तव्यान् नाधमानाय पृणीयात् इत्) बलवान् समर्थ आदमी, सहायता की इच्छा करने वाले अशक्त के लिए अवश्य सहायता करे और (द्राघीयांसं पंथा अनुपश्येत्) लम्बे जीवन रूपी मार्ग का ख्याल करे क्योंकि धन (रथ्याः चक्रा. इव) रथ के पहियो के समान (अहि) निश्चय से (आवर्तन्ते) घूमते है (रायः अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते) धन एक के पास से दूसरे के पास चले जाते हैं।

6. मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥

(स अप्रचेताः) वह मूर्ख जो धनवान होता हुआ भी (अर्यमणं न पुष्यति) साधुजनों का पोषण नही करता है, सहायता नही करता है (न सखायं) और न अपने मित्रो की ही मुसीवत मे सहायता करता है (सः केवलादी) वह अकेला स्वयं ही खाने वाला (केवलाघो भवति) अकेला ही पाप का फल भोगता है। (सत्यं ब्रवीमि) मैं सच कहता हूं कि (अप्रचेताः) वह मूर्ख (अन्नं मोघं विन्दते) अन्न को व्यर्थ ही प्राप्त करता है (स. तस्य वधः इत्) वह तो उसकी मौत ही है।

व्यर्थ अन्न पैदा करता वह, जिसका मन न उदार।
सच कहता हूं वह संग्रह है उसका ही संहार॥
साधु जनों के काम न आता जो न मित्र के काम।
जो केवल निज पेट पालता वह केवल अघ धाम॥

7. कृषन्नित्फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः।
वदन्ब्रह्माऽवदतो वनीयान् पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात्॥

(कृषन् इत्) खेती करता हुआ ही (फालः आशितं करोति) हल का फाल कृषक को अन्न का भोक्ता बनाता है। (अध्वानं) मार्ग पर चलता हुआ ही मनुष्य अपने (चरित्रै.) गमन मार्ग को, अपने पैरों से (अध्वानं अपवृक्ते) मार्ग से दूर गन्तव्य स्थान तक जाता है। (वदन् ब्रह्मा) उपदेश देता हुआ ज्ञानी (अवदतः) उपदेश न देने वाले से (वनीयान्) श्रेष्ठ होता है (पृणन् आपिः) उसी प्रकार देने वाला मित्र (अपृणन्तं अभिष्यात्) दान न देने वाले को अतिक्रान्त कर जाता है।

खेत जोत कर फाल कृषक को अन्न दे रहा उपकारी।
उपकृत करता आचरणों से पथ को पथिक सदाचारी॥
वक्ता पण्डित सदा अवक्ता से बढ़कर आदर पाता।
दाता पुरुष कृपण से उत्तम बन्धु सदृश माना जाता॥

8. एकपाद्भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात्।
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे सम्पश्यन् पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः॥

(एकपाद्) एक गुणा धन रखने वाला (भूयः) दुगने धन वाले के मार्ग पर (विचक्रमे) पराक्रम करता है। (द्विपात्) दुगना धन रखने वाला (पश्चात् त्रिपादं अभ्येति) तिगुने धन वाले के पोछे जाता है। (चतुष्पात्) चौगुना धन रखने वाला (द्विपदां) उससे भी दुगना धन अर्थात् आठ गुणा धन रखने वालों की (पंक्तिः) पंक्तियों की (अभिस्वरे) स्तुति की ध्वनि मे (उपतिष्ठमानः) उपस्थित होता हुआ (एति) चलता है।

एक अंश का धनी द्विगुण के पीछे चलता है तत्काल।
वह भी तीन अंश वाले का अनुगम करता है सब काल॥
चार अंश वाला चलता है पीछे औरों को अवलोक।
अतः वैभव का मान छोड़कर धन दान करें सकल सब लोक॥

9. समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः॥

(हस्तौ) दोनों हाथ (समौ चित्) एक समान होने पर भी (समम् न विविष्टः) एक समान कार्य नहीं करते हैं (सम्मातरा चित्) एक माता से उत्पन्न दो बछड़िया गाय बनकर (न समं दुहाते) एक समान दूध नही देतीं (यमयोः चित्) जुड़वां बच्चों को भी (न समा वीर्याणि) एक समान बल पराक्रम नहीं होते (ज्ञाती चित् सन्तौ) एक ही परिवार के होते हुए भी दो व्यक्ति (न समं पृणीतः) एक जैसा दान नहीं करते।

दोनों हाथ समान यद्यपि हैं, करते कार्य न किन्तु समान।
दो बछिया बहिने भी करतीं एक सदृश नहिं दुग्ध प्रदान॥
जुड़वां सन्तानों में होता, सदृश शक्ति का भाव नहीं।
पुरुष एक कुल के दो होते दानी एक समान नहीं॥

सुभाषित

अधर्म से विनाश

वायु आदि में जो दोष उत्पन्न होते हैं उनका मूल अधर्म है। अधर्म का मूल लोगों के असत् कर्म हैं। दोनों का मूल प्रजा का अपराध है। जब देश, जनपद, नगर तथा ग्राम के प्रधानपुरुष धर्म का मार्ग छोड़ कर प्रजा से अधर्मयुक्त व्यवहार करते हैं तब उनके आश्रित पुरजन तथा व्यवसाय करने वाले लोग पापों की ओर अधिक बढ़ते हैं, तब अधर्म धर्म को ढक लेता है। तब लोग अधर्म-प्रधान बनकर देवताओं और विद्वानों का अपमान करने लगते है। परिणाम स्वरूप यथाकाल जल नही बरसता, सूखा पड़ता है, या वर्षा विकृत हो जाती है, वायु ठीक नही चलती। धरती बाम्फ हो जाती है। जलस्रोत सूख जाते हैं। अनाज अपना गुण छोड़ देते हैं। तब इन व्यवहार-दोषों से जनपद ध्वंस हो जाते हैं।

—चरक

सम्पादकीयम्

कश्मीर में भी ऐतिहासिक भूमिका

"आप जानते हैं कि आप किससे बात कर रहे हैं ? मैं कश्मीर का मुख्यमंत्री हूं।"

"आप भी जानते हैं कि आप किससे बात कर रहे है ? मैं आपके बाप का सहपाठी हूं। मैं और शेख अब्दुल्ला कश्मीर के अमुक स्कूल मे बचपन मे एक साथ एक ही क्लास पढ़ते रहे है। इसलिए आप मुझे अपने चाचा का दर्जा तो दे ही सकते हैं।"

"अच्छा-अच्छा यह बात है। जो आर्य समाज मन्दिर हजूरी बाग जला दिया गया है मैं उसकी क्षति पूर्ति के लिए अपनी सरकार की ओर से एक लाख रुपया देने को तैयार हूं।"

यह अंश है उस वार्तालाप का जो आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल के नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और तत्कालीन कश्मीर के मुख्यमंत्री डॉ० फारूख अब्दुल्ला के मध्य हुआ। इस बीच और जो बातें हुईं उनमे डॉ० फारूख अब्दुल्ला ने जो रूख अपनाया, वह मुख्य मंत्री के योग्य तो था ही नहीं बल्कि उसे शिष्ट जनोचित कहना भी सम्भव नहीं है। डॉ० अब्दुल्ला ने बातचीत के दौरान अपना यह मन्तव्य भी, शायद अनजाने में ही, प्रकट कर दिया कि मैं तो चाहता हूं कि सब हिन्दू यहां से चले जायें। मैं नहीं चाहता कि आर्य समाज मन्दिर यहां दुबारा बनाया जाये।"

आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने डॉ० अब्दुल्ला को उनके पिता शेख अब्दुल्ला के राष्ट्रवाद की याद दिलायी और यह भी याद दिलाया कि वह हमेशा आर्य समाज के कामों के प्रशंसक रहे और उन्होंने कभी आर्य समाज पर साम्प्रदायिकता का लांछन नहीं लगाया। आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने उनसे कहा कि आपने अपने पिता के समय की नीतियों को बदल कर अब पाकिस्तान समर्थक तत्वों और खालिस्तान पक्षपाती उग्रवादियो से हाथ मिलाया है, यह किसी भी तरह से देश के हित में नहीं है। पंजाब में सैनिक कार्रवाही के तुरन्त बाद कश्मीर मे जो दगे हुए उनमें आपकी पुलिस खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रही और हिन्दुओ के मन्दिर तथा दुकानें जलाई जाती रहीं। आश्चर्य की बात यह है कि उस दंगे में जो लोग मारे गये उनकी आपने जाँच भी नहीं करवाई। हमे शक है कि मरने वाले लोग सिखों के वेष में पाकिस्तानी मुसलमान थे और इसी आशंका के कारण आपने न उनका पोस्टमार्टम करवाया और न घटना की न्यायिक जांच करवाई।

इसी बात पर डॉ. फारूख अब्दुल्ला गरम होकर बोले थे और अपने मुख्यमंत्री होने का रौब दिखाया था। वार्तालाप की समाप्ति पर डॉ. अब्दुल्ला ने आर्यसमाज मन्दिर और उसके साथ लगी कन्या पाठशाला के पुनर्निर्माण के लिए एक लाख रुपए देना स्वीकार किया था। इन दोनो इमारतों के जलने से लगभग 55 लाख रुपये की क्षति का अन्दाज है। आर्य समाज का प्रतिनिधि मण्डल सरकार द्वारा एक लाख रुपये के प्रस्ताव को सधन्यवाद अस्वीकार करके मुख्य मंत्री के कक्ष से बाहर निकल आया था।

उसके बाद आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने 5 दिन तक कश्मीर में रहकर विभिन्न विश्वसनीय स्रोतों जो जानकारी हासिल की उससे प्रतिनिधि मण्डल की आंखे खुली की खुली रह गयी। तभी पता लगा कि किस प्रकार 14 अगस्त को (जो पाकिस्तान का जन्म दिवस है) कश्मीर को इस्लामीं जमहूरियत बनने की और जम्मू के इलाके को खालिस्तान में शामिल करने की गहरी साजिश थी जिसे पूरा करने के लिए आजाद कश्मीर से लगभग 3 हजार मुसलमान कश्मीर में आकर सिखों वेष में गुरुद्वारों में ठहरे हुए थे। उधर पंजाब में कार्यवाही शुरू होते ही बब्बर खालसा और सिख स्टुडेंट्स फैडरेशन के उग्रवादी कश्मीर में घुस आये थे। यह भीं स्मरणीय है की सिख छात्र संघ पंजाब में प्रतिबन्धित था उस पर फारूख अब्दुल्ला ने कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया था। उग्रवादियों के प्रशिक्षण शिविर गुरूमत कैम्प के नाम से कश्मीर के विभिन्न स्थानों पर लगते रहे हैं। वहां उनकों शस्त्रास्त्र चलाने की ट्रेनिंग के अलावा उनके दिमागों में भारतविरोधी विचार भरे जाते रहे हैं। स्वयं कश्मीर के लिबरेशन फ्रंट नाम से जो मोर्चा कायम है उसमें पाकिस्तान समर्थक अवामी लीग के प्रधान के मोलवी फारूख के अलावा राज्य के कई वरिष्ठ मंत्रियों और सरकार के अधिकारियों का भी भरपूर सहयोग रहा है। कश्मीर विश्वविद्यालय तो जैसे राष्ट्र विरोधी तत्वों का गढ़ ही बना हुआ है।

कश्मीर को भारत से अलग करने के लिए प्रयत्नशील मुक्ति मोर्चे के लोग आजाद कश्मीर के प्रमुख नेता, तथा खालिस्तान आन्दोलन के स्वयंभू राष्ट्रपति जगजीत सिंह चौहान परस्पर कई बार मिलकर इस योजना को कार्यान्वित करने का षडयन्त्र करते रहे हैं। इन सब की मिलन स्थली ब्रिटेन रहा है। ब्रिटेन स्थित भारतीय दूतावास के कर्मचारी श्री म्हात्रे की हत्या में इन तत्वों का हाथ था और मकबूल भट्ट की फांसी पर कश्मीर में उपद्रव करने वाले भी यही तत्व थे। इसी प्रकार की और बहुत सी विस्फोटक जानकारी आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल को मिली (पृष्ठ। और पृष्ठ 4 पर देखिये)।

आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने वह सारी रिपोर्ट कश्मीर से लौटकर 28 जून को प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को दी और फारूख अब्दुल्ला के साथ हुए अपने वार्तालाप का पूरा विवरण भी उन्हें सुनाया। प्रधानमंत्री ने तुरन्त कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन को बुलाकर वह गुप्त रिपोर्ट उन्हें पकडाई और उसके आधार पर आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया।

एक जुलाई को ईद का त्योहार था। सारा मुस्लिम जगत अपने पवित्र त्योहार को मनाने में मशगूल था। उधर राज्यपाल अगली कार्यवाही की तैयारी के लिए अपनी बिसात बिछा रहे थे। 2 जुलाई का दिन आते ही प्रातः काल राज्यपाल ने डॉ० अब्दुल्ला को बुलाया और उनको कहा कि अब आपका बहुमत नही रहा, इसलिए आप इस्तीफा दे दे अन्यथा मुझे अपने अधिकार का प्रयोग करके आपको मुख्यमंत्री पद से बर्खास्त करना पड़ेगा। ईद के तोहफे के रूप में डॉ० अब्दुल्ला की कुर्सी पर उनके सगे बहनोई गुलाम मुहम्मद शाह को बिठा दिया गया और राष्ट्र विरोधी तत्वो से साठगांठ का पुरस्कार डॉ० अब्दुल्ला को मिल गया।

पंजाब में सैनिक कार्यवाही होने के साथ ही जिस प्रकार का माहौल कश्मीर में बनाया जा रहा था, उसके कारण भावी घटनाओ का आकलन करने वाले पत्रकार और राजनीतिज्ञ यह तो अनुमान कर रहे थे कि कश्मीर में भी कुछ उथल-पुथल होने वाली है, परन्तु प्रधानमंत्री कश्मीर मे इतनी जल्दी कदम उठायेंगी, यह किसी को कल्पना नही थी। फारूख अब्दुल्ला को तो कतई नही।

जिस तरह 30 मई को आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल से भेंट के पश्चात प्रधान मंत्री ने पंजाब में सैनिक कार्यवाही का निश्चय कर लिया, उसी प्रकार कश्मीर के सम्बन्ध में भी 28 जून को आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा दी गई गुप्त रिपोर्ट के पश्चात ही प्रधान मंत्री ने कश्मीर में कार्यवाही करने का निश्चय कर लिया। हम यह नहीं कहते कि पंजाब और कश्मीर की यह कार्यवाही प्रधानमंत्री ने आर्य समाज के कहने से की है। ऐसा सोचना भी मिथ्या अहंमन्यता होगी। परन्तु इतना अवश्य कहते हैं कि दोनों राज्यों में राष्ट्र के सम्मुख जो खतरा उपस्थित था उनको सही परिप्रेक्ष्य में देखने की हिम्मत आर्य समाज ने ही की जबकि अन्य सब राजनैतिक दल इन दोनों राज्यों मे घटित घटना चक्रको केवल अपने दलीय दृष्टिकोण से ही देखते रहे।

अब भी जिस प्रकार समस्त विपक्षी दलो ने कश्मीर में हुई इस कार्यवाही का समर्थन करने के बजाय उसका विरोध किया है, उससे यह स्पष्ट है कि सब राजनीतिक दल केवल चुनाव, केवल वोट और केवल इन्दिरा गाधी को हटाने की बात ही जानते हैं इससे अधिक वे कुछ नही सोच पाते। हमें इन विपक्षी दलों पर आश्चर्य होता है, कि संकुचित राजनीति ने उनको कितन सकुचिता बना दिया है। जितने भी राष्ट्रीय प्रश्न हैं उन सब पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सोचने का नजरिया इन सब राजनैतिक दलों को आर्य समाज से सीखना चाहिए। पंजाब और कश्मीर के सम्बन्ध में आर्य समाज की इस ऐतिहासिक भूमिका को राष्ट्र आसानी से भुला नहीं सकेगा।

एक गोपनीय रिपार्ट

कश्मीर में राष्ट्र विरोधी कार्यों में संलग्न व्यक्ति

आर्य नेताओ—सर्वश्री रामगोपाल शाल वाले और ओमप्रकाश त्यागी ने कश्मीर मे अपने प्रवास में से जो गुप्त रिपोर्ट तैयार करके प्रधान मन्त्री को पेश की थी और जिसके आधार पर कश्मीर कार्रवाई हुई समझी जाती है, उसमें राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से सम्बन्धित व्यक्तियो का विवरण निम्न प्रकार दिया गया था .—

संसत्सदस्य गुलाम रसूलकर, इयोपुर : राज्य सभा के लिए मनोनीत यह व्यक्ति पाकिस्तानी तथा साम्प्रदायिक तत्वो के साथ सक्रिय रूप से निरन्तर कार्यरत रहा है।

जी० एन० करनाई : इस समय पाकिस्तान मे रह रहा है। 1946 में प० नेहरू के कश्मीर आगमन के समय पुल उड़ाने के षडयंत्र मे गिरफ्तार हो जाने के बाद एक खिड़की से कूद कर गुलाम रसूलकर की मदद से ही पाकिस्तान फरार हो गया था। 1965 मे घुसपेठियो के साथ फिर कश्मीर लौटा तथा रसूलकर के लिये मकबूल भट्ट का सन्देश लाया। इयोपुर निवासी सनाउल्ला खान भी पाकिस्तान से वापस आ गया और गुलाम रसूल कर को मकबूल भट्ट का कार्यक्रम बताया।

मकबूल भट्ट के ताहिर यासीन और कालेखान के साथ लौटने पर इनके रहने का प्रबन्ध गुलाम रसूलकर ने ही किया। था। मकबूल भट्ट गुलाम रसूल के साले जी० एन० त्रिखा के साथ रहा था। त्रिखा आजकल प्रदेश काग्रेस कमेटी का उप प्रधान है। 1965 में भट्ट जब गुलाम रसूल से साथ रह रहा था तब उसने दास का मकान लुटवाया था। गुलाम रसूल द्वारा यह सूचना देने पर कि अमर चन्द नामक व्यक्ति को दास का मकान लुटवाये जाने का पता है, मकबूल भट्ट ने उसे यातनायें देकर मार डाला था।

पाकिस्तान गुप्तचर विभाग के सूबेदार मेजर हबीबुल्ला से गुलाम रसूल अपने मकान पर भेंट करता रहा। 1971 तथा 1974 मे महत्वपूर्ण दस्तावेजो के टेप और फोटो इसने पाकिस्तान भेजे। श्रीनगर दूरदर्शन केन्द्र में लगाई गई आग मे भी इसका हाथ बताया जाता है। इसकी भू० पू० पत्नी ने जी० एम० सादिक के मुख्यमन्त्रीकाल मे गवर्नमेंट महिला कालेज श्रीनगर के स्नानागार में कुरान के फटे हुये पृष्ठ रखकर साम्प्रदायिकदंगा करवाया था। श्रीसादिक के मुख्य मन्त्री काल मे ही गुलाम रसूलकर ने मकबूल भट्ट को एक उच्च सरकारी पद देने की सिफारिश की थी।

फांसी की सजा सुनाये जाने के बाद जब मकबूल भट्ट एक पाकिस्तानी मेजर की मदद से पाकिस्तान भागा था उस समय फरार होने के लिये श्रीनगर से गुलमर्ग तक जीप गुलाम रसूल ही ने उपलब्ध कराई थी। मकबूल भट्ट को फांसी होने के बाद गुलाम रसूल ने ऐसे पोस्टर छापे जिनमें हिन्दुओं को घाटी छोड़ने को कहा गया था। इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्र विरोधी तत्वो को केन्द्र का संरक्षण दिलाना तथा उन्हे कांग्रेस कार्य कर्ताओं के रूप में प्रस्तुत करना था।

कश्मीर विश्वविद्यालय

श्रीनगर विश्वविद्यालय राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का केन्द्र रहा है। पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री श्री भुट्टो को फांसी होने पर विश्वविद्यालय परिसर में उपद्रव हुए। पुस्तकालय के ऊंचे भवन का नाम भुट्टो स्मारक पुस्तकालय रखा गया और इस नाम का एक बोर्ड भी उस भवन पर छात्रों द्वारा एक महीने तक लगाए रखा गया। केन्द्र सरकार द्वारा आपत्ति करने पर ही उसे हटाया गया। बाद में पाकिस्तानी तत्वों को सन्तुष्ट करने के लिए इस भवन का नाम इकबाल पुस्तकालय रख दिया गया। श्री एस० ए० कामिल की देखरेख मे पाकिस्तान की जमाते इस्लामी के अध्यक्ष मौलाना मौदूदी के साम्प्रदायिक लेखो पर उर्दू विभाग ने एक शोध विषय पी० एच० डी० के लिए स्वीकृत किया है।

जमाते तुलबा के अध्यक्ष श्री अयूब ठाकुर की फिजिक्स विभाग में आवश्यक आचार सहिता का पालन किए बिना नियुक्ति की गई। उन्हें परिसर में निवास भी उपलब्ध कराया गया। वे अपने विभाग में कभी-कभी ही उपस्थित होते थे, परन्तु उन्होने जमात के लिए सुदृढ़ आधार बना दिया। उनकी सेवाएं उनके गिरफ्तार होने पर ही समाप्त की गई। अयूब ठाकुर ने विश्वविद्यालय परिसर में डा० मोहम्मद सुल्तान भट्ट (असिस्टेण्ट रजिस्ट्रार) की सक्रिय मदद से जम्मू काश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट की शाखा खोली है।

1981 में जब 22 विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय से निकाला गया तो उनके कमरों से आग्नेयास्त्र तथा लिबरेशन फ्रण्ट का साहित्य बरामद हुआ था जिसे अधिकारियों ने दबा दिया। आजकल राष्ट्र विरोधी घटनाओं को श्री मोहम्मद शफी (शिक्षा मन्त्री) श्री ए० जी० लौन (विधायक) तथा श्री ए० जी० आखकार का सहयोग प्राप्त है। परिसर में बम विस्फोटों तथा विश्वविद्यालय के हिन्दू अध्यापकों की 'हिट लिस्ट' बनाने में (जिसमे श्री आर० के० शर्मा इत्यादि के नाम हैं) फ्रंट का ही हाथ है।

श्री सेफुद्दीन सोज (ससद सदस्य नेशनल कान्फ्रेंस) ने, जब वे विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार थे, राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का ढाँचा तैयार करने में मदद दी। उन्होने श्री क्यू० रफी की (इतिहास (विभागाध्यक्ष) तथा बक्फ ट्रस्ट के सचिव के दामाद श्री अबदुस्सलाम भट्ट (कानून विभाग में रीडर), श्री मोहम्मद सुल्तान (अर्थशास्त्र विभाग) तथा श्री हमीद उल्लाह भट्ट की नियुक्तियां कीं।

श्री मोहम्मद शफी (शिक्षा मन्त्री) श्री ए० जी० लोन तथा श्री जी० आर० कर सभी मकबूल भट्ट के निकट थे। यह स्मरणीय है कि श्री भट्ट को म्हात्रे हत्याकांड के बाद फांसी दी गयी थी।

डा० दुर्रानी कई वर्ष बाद भारत लौटे हैं, तथा फ्रंट के लिए कार्य कर रहे हैं। वे अक्सर विश्वविद्यालय परिसर में देखे जाते हैं। शिक्षा मन्त्री भौतिक विभाग [illegible] उनकी नियुक्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। डा० दुर्रानी विश्वविद्यालय में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में अति सक्रिय हैं।

कुछ विशिष्ट व्यक्ति

डा० शम्सुद्दीन—प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष पर्शियन, मौलवी फारूक के एजुकेशन ट्रस्ट के सचिव तथा जमाते इस्लामी से निकट से संबंधित, कुछ समय पूर्व जमात के अधिकृत समाचार पत्र 'अजान' के संपादक मण्डल से संबंधित, भारत विरोधी गैर मुस्लिम तथा गैर काश्मीरी अध्यापकों के विरुद्ध आंदोलन में सक्रिय रूप से सलग्न। इसके लड़के की राष्ट्र विरोधी तत्वो से पुलिस की मुठभेड़ से मृत्यु हो गयी।

डा० शकील उर रहमान—उर्दू विभागाध्यक्ष, 1971 की लड़ाई में पाक समर्थक कार्रवाइयों में संलग्न थे। प्रतिवर्ष नेपाल जाते तथा वहां से पाक उच्चायोग से आर्थिक मदद लेते थे। जनता शासन काल में बिहार विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त किए गए थे। वर्तमान सरकार द्वारा भ्रष्टाचार के आरोप में निष्कामित। मूल रूप से बिहारी हैं और बंगला देशी बिहारी मुसलमानों के लिए कार्यरत हैं।

श्री मखदूमी—भौतिक शास्त्र विभागाध्यक्ष, शरद अवकाश में दिसम्बर 1983-जनवरी 1984 में कराची गए। वहां लिबरेशन फ्रंट कार्यकर्ताओं से संपर्क किया। अब उनके लिए कार्यरत हैं।

डा० मुहम्मद सुल्तान भट्ट(अर्थशास्त्र विभाग)—शिक्षा मन्त्री मोहम्मद शफी के निकट हैं। मकबूल भट्ट के गांव के रहने वाले, होस्टल में अनधिकृत रूप से रहे तथा वहीं से राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का संचालन किया। फ्रंट के पकड़े गए छात्रों को बचाया। मोहम्मद शफी के विश्वासपात्र। इन्हें शिक्षा मन्त्री की सिफारिश पर उपकुलपति ने विश्वविद्यालय की कई प्रमुख समितियों में रखा है, यद्यपि अभी तक यह नियमित अध्याप-

(शेष पृष्ठ १० पर)

फारुख अब्दुल्ला क्यों हटाये गए

14 अगस्त, 1984 को कश्मीर घाटी पर पाकिस्तान का कब्जा होने और जम्मू को खालिस्तान में शामिल करने की योजना थी। लिबरेशन फ्रंट की ओर से पर्चे बांटे गए थे जिनमें हिन्दू भारत के विरुद्ध जिहाद की घोषणा थी। कश्मीर के बाहर से आए 3000 संदिग्ध व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में फैले हुए थे—जो अधिकतर सिखों के वेश में थे। लिबरेशन फ्रंट के समर्थक गांवों में 25 अफगान परिवार आकर बस गए थे। जम्मू क्षेत्र में गूजरों और बकरवालों को बसाकर आबादी का अनुपात बदला जा रहा था। आतंकवादियों ने गन्धरबल नहर को उड़ा दिया था। 7 जून को पुलिस की गोली से जो लोग मारे गए उनके शव किसी को नहीं दिये गए, न ही उनका पोस्टमार्टम हुआ—आशंका है कि वे कश्मीर के बाहर के मुसलमान थे। जमाते इस्लामी ने यह भी प्रचार किया था कि आजाद कश्मीर के सैंकड़ों प्रशिक्षित व्यक्ति सिख वेश में कश्मीर में घुसने के लिए संकेत की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ब्रिटिश उच्चायोग और अमरीकी दूतावास को भारत विरोधी समाचार भेजे जा रहे थे।

१५ जुलाई को सार्वजनिक अभिनन्दन पर विशेष

आर्य-पुरोहित-शिरोमणि

श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण

—प्राचार्या श्रीमती कमलारत्नम्—

म[illegible] पाखंडों, पशुबलियों, और अनावश्यक क्रिया कलापों के जगड्वाल से त्रस्त होकर महात्मा बुद्ध ने अपने अहिंसा-धर्म का प्रचार किया था। परन्तु कालान्तर में उसमें भी दोष भर गये तथा वर्णाश्रम व्यवस्था के विकृत होने से क्षत्रिय अपना कर्तव्य भूल गये। देश की रक्षा और गृहस्थ धर्म के पालन की उपेक्षा कर वे गृहत्याग करने लगे। देश के परतन्त्र होने का एक यह भी बहुत बड़ा कारण था। ऋषि दयानन्द ने यह सब देखा। तभी उन्होंने जहां झूठे धर्मों तथा वितण्डावाद का अपनी ओजस्वी वाणी से खण्डन किया, शुद्ध शास्त्रार्थ से विधर्मियों को धराशायी किया, वहीं वैदिक कर्मकाण्ड को फिर से उसके सर्वपावन रूप में प्रतिष्ठित किया। आर्य समाज द्वारा प्रशिक्षित यज्ञ-पुरोहितो के देश भर में फैल जाने के कारण अन्ध विश्वासी अनपढ़, मूर्ख सनातनी पुरोहितों की छुट्टी हो गयी और इस पवित्रधारा की आपाद-मस्तक अनुभूति मुझे पूजनीय पुरोहित प्रवर पं० चन्द्रभानु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के माध्यम से हुई।

हम विदेश में रहते थे। बेटा छः वर्ष का हो गया था। विदेश मे वैदिक संस्कार हो नहीं सकते थे। राजधानी लौट कर आर्य समाज से सम्पर्क किया। मेरे पिता स्वामी दयानन्द के बडे भक्त थे। मूर्ति-पूजा के सख्त खिलाफ थे। आर्यपद्धति से हवन करते थे तथा नियम पूर्वक प्रवचन सुनते थे। उन्होने स्वामी जी के निर्देशानुसार हम बहिनों का भी यज्ञोपवीत संस्कार कराया। आर्य समाज मन्दिर में हमने कहा—ऐसा पुरोहित चाहिये जो कम से कम शुद्ध संस्कृत बोलता हो और वेदोक्त विधि से संस्कार करा सके। छूटते ही पं० चन्द्रभानु जी का नाम प्रस्तावित कियागया। अपने समय के वे विद्वान एवं तेजस्वी पुरोहित थे। इस प्रकार 24 मार्च, 1951 को पंडित जी से हमारी प्रथम भेंट हुई।

"पंडित जी बेटे का यज्ञोपवीत करना है। कौन सा दिन शुभ है?"

"सभी दिन शुभ हैं। ईश्वर की बनायी कोई वस्तु अशुभ या दोष पूर्ण नहीं है। सब दिन कल्याणकारी होते हैं,

"पण्डित जी! कौन सा मुहूर्त्त ठीक रहेगा?"

"मुहूर्त्त भी काल का ही एक अंश है। काल स्वयं ईश्वर का एक रूप है। सभी मुहूर्त्त अच्छे हैं। आप अपनी सुविधा का समय चुन लीजिये।"

संयोग से उसी दिन हमारी पुत्री भी 40 दिन की हुई थी। पंडित जी ने बेटे का यज्ञोपवीत और बिटिया का जात कर्म तथा नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से जिस प्रकार कराया वह हम सबके लिये स्मरणीय है। उस दिन पंडित जी की वाणी हमें हजारों वर्ष पूर्व ऋषियों के युग में ले गयी। इससे पहले हमारे यहां हवन आदि तो होते थे, परन्तु संस्कार कर्ता पंडितो के अन्ध विश्वास और भ्रष्ट उच्चारण, ऊपर से लोभ,—कृपणता तथा मलिन अनुशासनहीनता से त्रस्त होकर मेरा जी चाहता था यहां कि से उठ जाऊं और यज्ञ ध्वंस कर दूं। वैदिक कर्मकांड के जाज्वल्यमान, परमपावन रूप के दर्शनों का, उनमे भाग लेने का सौभाग्य मुझे सर्व प्रथम पंडित चन्द्र भानु के सान्निध्य में प्राप्त हुआ। बस, उस दिन से जो श्रद्धा मन मे बनी वह आजन्म बनी रही। बीच-बीच मे रविवासरीय हवन-प्रवचनादि में जाना होता था और पंडित जी से मिलना होता रहता था।

हम लोग जापान से लौटे थे। मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी थी। छोटे भाई का विवाह होने वाला था। भाई ने अपने लिये एक सर्वांग सुन्दर सिख-परिवार की षोडशी कन्या चुनी थी। विवाह के समय कन्या के माता-पिता अनुपस्थित थे। हम पंडित जी की शरण गये। विवाह-विधि इस प्रकार सम्पन्न करानी थी जिससे आर्य-धर्म भी खंडित न हो और लड़की के पैतृक सिख-सम्प्रदाय का भी पूरा सम्मान हो और यह सब एक ही समय, एक ही धार्मिक विधि द्वारा एक ही स्थान पर, सम्पन्न होना था। पंडित जी ने बड़ी कुशलता से इस कठिन गुत्थी को सुलझाया। न्यायाधीश के सम्मुख हस्ताक्षर करने के बाद प्रातः करीब 12 बजे वैदिक विधि से विवाह प्रक्रिया सम्पन्न हुई। वर पक्ष वाले तो सन्तुष्ट थे ही, कन्या पक्ष वालो ने भी अपने को पूर्ण सम्मानित अनुभव किया और किसी प्रकार का साम्प्रदायिक मत-भेद उठने नही दिया। इस घटना से यदि आज की स्थिति की तुलना करे तो सोच कर बड़ा दुःख होता है कि एक ही माता की सन्तान सिख और हिंदू आज एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं। उस अवसर पर आदरणीय पंडित जी ने जिस दूरदर्शिता और मानवीय संवेदना का परिचय दिया था वह अपने आप मे एक स्मरणीय घटना बन गया है। वैदिक सिद्धान्तो की सार्वभौमता को उन्होंने उस दिन बड़ी कुशलता से सिद्ध किया था।

समावर्तन संस्कार

इसके बाद हमारे परिवार में कितने हवन हुए, यज्ञानुष्ठान हुए, सब के होता, अध्वर्यु पुरोहित पण्डित जी होते थे। वैदिक यज्ञपद्धति में वेदी के चारों ओर चार पुरोहित बैठते है। पण्डित जी के समकक्ष किसी अन्य को न पाकर मैं उन्ही को चतुर्मुख ब्रह्मा समझ उन्ही के तेजस्वी व्यक्तित्व मे "चत्वारो होतारः" की कल्पना कर लेती थी। 1972 मे हमारा बेटा विदेश से अध्ययन समाप्त कर घर लौटा। मैंने पण्डित जी से कहा अब इस युवा स्नातक का समावर्तन-संस्कार होना चाहिए। आप कृपया वैदिक-संस्कार-विधि का अध्ययन कर एक सुन्दर सर्वांग सम्पूर्ण यज्ञ की व्यवस्था कीजिये। स्मरण रहे आज कल लोग जन्म, विवाह और मरण के अतिरिक्त अन्य तेरह संस्कार भूल चुके हैं। "समावर्तन" नाम भी बहुतो ने नही सुना है। उस यज्ञ मे हमने नगर के प्रतिष्ठित संस्कृति-सम्पन्न शताधिक अतिथियों को बुलाया था। आज तक वे लोग इस यज्ञ की गरिमा को याद करते है। हमारे परिवार की तो वह अमूल्य स्मृति है ही। रूस, यूरोप और अमरीका मे भौतिकी मे "विज्ञ-नवारिधि" की उपाधि से विभूषित उस बालक ने उस दिन आंख मे काजल डाल दर्पण मे अपना मुख देखा तथा पंडित जी के आदेशों का अक्षरशः पालन किया था। वर्तमान मे अतीत को प्रतिबिम्बित कराने का यह अद्भुत प्रयोग था। कितना गूढ अर्थ छिपा था इस वेदोक्त कृत्य मे। और इस को साकार करने का श्रेय माननीय पण्डित जी को था।

तदुपरान्त भूमि खरीदी गयी। भूमि पूजन हुआ, गृहप्रवेश हुआ। घर बसा, बच्चे बडे हुए। उनके विवाह, वाग्दान आदि का समय आया। यह सब सुकृत्य पण्डित जी की छत्रछाया, उनके सुललित मन्त्रोच्चारण से पूत वातावरण में सम्पन्न हुए। पण्डित जी मे विवाहविधि को इस प्रकार महिमा मण्डित किया है कि उसका संस्कार एवं प्रभाव विवाहित जोड़ो पर आजन्म रहता है और वे स्वस्थ, सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। पण्डित जी द्वारा कराये गये विवाह के असफल होने का प्रश्न ही नहीं उठता। कहां तक जाय कहा, हमारे घर के धार्मिकपक्ष काजितना भी कर्मकाण्डीय आधार था, सब पण्डित जी के हाथों साकार हुआ और अत्यन्त सुन्दरता के साथ। यथार्थ में वे हमारे परिवार के धार्मिक अधिष्ठाता तथा नैतिक और आध्यात्मिक पथप्र दर्शक हैं।

समय के साथ चलने वाले

पण्डित जी ने जिस बालिका का जात कर्म संस्कार कराया था, वह अब एक-प्यारी पुत्री की माता है। संयोगवश हमारी षेवती का जात कर्म अथवा नाम करण संस्कार अभी तक नही हो पाया है, यद्यपि वह तीन वर्ष की होने वाली है। पण्डित जी से मैंने जब कहा तो वे खूब हँसे और बोले "बहिन जी, आज कल के युवावर्ग, ऐसा नही है कि धार्मिक अनुष्ठानो मे विश्वास नही रखते। असल में आज के राजधानी के जीवन की आपाधापी एवं जीविकोपार्जन की समस्याएं ही बच्चों का सारा समय और शक्ति ले लेती है। आप एक काम करें। बेटी से कहे कि वह बालिका का जन्म-दिन मनाए और उसके पूर्व हवन कर ले।" मेरी तीन साल पुरानी समस्या का इतनी जल्दी और इतना सरल समाधान! सच है ८० के निकट की वय में समय के इतना निकट चलने वाला कोई विरला ही होता है। अपनी समस्याओं से भावात्मक रूप से जुडे होने के कारण तथा उन्हे अति निकट से देखने के कारण हम तुरन्त उनका समाधान नही ढूंढ पाते हैं। ऐसे मे पण्डित जी जैसा परामर्श दाता कोई मिल जाए तो मन को कितनी शान्ति मिलती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक कर्मकाण्ड के उद्देश्यो मे एक बिंदु यह भी है कि दीर्घकाल से दुरुपयोग और अज्ञान के कारण जिन-जिन वैज्ञानिक क्रियाओ का अर्थ और व्यवहार विकृत अथवा विस्मृत हो गया है उनका शोध करके उन्हे पुनः प्रतिष्ठित किया जाए। महर्षि के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पडित चन्द्रभानु ने वर्षों शोध तथा परिश्रम पूर्वक अध्ययन करके एक ग्रन्थ तैयार किया, जो उनके अर्ध शताब्दी से भी ऊपर के अनुभवो से अनुप्राणित है। पडित जी की आयु इस समय अस्सी के आस-पास है। उन्हीं की प्रेरणा से दक्षिण-दिल्ली के एक सुरम्य प्रान्तर मे आवास स्थली का निर्माण हुआ है और उन्हीं के आशीर्वाद से उसका नामकरण "सर्वप्रिय विहार" हुआ है। इस छोटी सी बस्ती में पण्डित जी के व्यक्तित्व की छाप छायी हुई है। जिसको पूछो, वही उनके व्यक्तित्व से प्रभावित है, वही उनका प्रशसक है। सुनते थे कि सन्तो के सान्निध्य मे शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। सर्वप्रिय विहार मे सब आपसी मत भेद भुला कर, ऊंच-नीच का विचार त्याग कर आपस मे मैत्रीभाव से रहते हैं। वैदिक आर्य पुरुष, सौम्यशालीन मनुष्यत्व की पण्डित जी आदर्श मिसाल हैं। मुख पर तेज, जिहवा में मिश्री और आंखों मे स्नेह की यह प्रतिमूर्ति शतायु हो और दीर्घकाल तक आर्य धर्म को बल देती रहे, परमपित से यही हमारी प्रार्थना है। पता—ईशान, एफ १/७ हौजखास एनक्लेव, नई दिल्ली-१६

गुरुकुल-हितैषियों की सेवा में

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और सरकारी अनुदान

—डा० रामनाथ वेदालंकार—

आर्य पत्रों में समय-समय पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में त्रुटियों के सम्बन्ध मे लेख निकलते रहते हैं और प्रायः उन त्रुटियों के लिए शिक्षा-मन्त्रालय, विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग या सरकारी अनुदान को उत्तरदायी ठहराया जाता है। कभी यह प्रस्ताव किया जाता है कि गुरुकुल अपने उद्देश्य में सफल नही हो सका तथा आर्य जनता की आशा को पूरा नही कर सका, इसलिए इसे पब्लिक स्कूल में परिणत कर दिया जाये और कभी यह कहा जाता है कि सरकारी शिकंजे से इसे मुक्त कराकर पुराने ढंग पर जनता के प्राप्त दान से इसे चलाया जाये।

कुछ मास पूर्व गु० कु० कां० विश्वविद्यालल के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी का इस आशय का एक लेख निकला था कि गुरुकुल के विश्वविद्यालय विभाग मे तो शिक्षा मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का हस्ताक्षेप है, अतः हम उसे अपनी इच्छानुसार गुरुकुल के आदर्शों के अनुरूप नही चला पाते, किन्तु विद्यालय विभाग को चलाने मे तो हम स्वतन्त्र हैं। विश्वविद्यालय ब्रह्मचर्य,

के तत्कालीन जनसम्पर्क-अधिकारी डा० विनोद चन्द्र सिन्हा ने इसका प्रतिवाद छपवाया था कि विश्वविद्यालय की त्रुटियां आन्तरिक कारणों से हैं, न कि सरकार के हस्ताक्षेप के कारण। अनुशासन की दृष्टि से कुलाधिपति के वक्तव्य पर उसी संस्था के किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिवाद छपाना उचित है या नही, यह एक स्वतंत्र प्रश्न है, किन्तु इससे यह तो सामने आ ही गया कि अपनी त्रुटियो के लिए सरकार को उत्तरदायी ठहराने के विरोध में एक दूसरा पक्ष भी है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा (विजिटर) प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने अभी हाल ही मे आर्य पत्रों में छपे अपने 'गुरुकुल की समस्याओं का एक ही हल है' शीर्षक लेख में विश्वविद्यालय-विभाग की एक प्रमुख त्रुटि की ओर संकेत करते हुए यह शिकायत की है कि गुरुकुल के विश्वविद्यालय-विभाग में जो छात्र पढ़ रहे हैं वे गुरुकुलीयता या गुरुकुलीय संस्कृति से शून्य हैं। गुरुकुलीय संस्कृति से आपने अभिप्राय लिया है

तपस्या का सादा जीवन, गुरु-शिष्य का दिन-रात का सम्बन्ध, आश्रम-व्यवस्था, प्रातः सायं सन्ध्या-हवन करना, भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत होने के साथ-साथ पूर्व तथा पश्चिम दोनों के विज्ञान में निष्णात होना, वैदिक संस्कृति का ज्ञान एवं उसे जीवन में उतारना, जन्म की जात-पात को न मानना आदि। लेखक के अनुसार गुरुकुल की ये आधारभूत वस्तुएं वर्तमान गुरुकुल-विश्वविद्यालय में नही है। यद्यपि आपका लेख सरकारी अनुदान के विरोध में नहीं है, अपितु गुरुकुल के विद्यालय विभाग को भी सरकारी अनुदान दिलाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए, यह दर्शाने के लिए है, तो भी हमने उस लेख से उतना ही अंश ले लिया है जो वर्तमान अनुदान-प्राप्त विश्वविद्यालय का चित्रण करता है।

इन्हीं दिनों गुरुकुल के भूतपूर्व सहा० मुख्याधिष्ठाता पं० धर्मवीर विद्यालंकार का एक लेख आर्य पत्रों में छपा है, जिसमें वर्तमान गुरुकुल विश्वविद्यालय की अनेक त्रुटियां बताई गई हैं—तथा वे त्रुटियां सरकारी अनुदान लेने के कारण हैं—यह कह कर सरकारी अनुदान को ठुकरा देने का प्रस्ताव किया है। सार रूप में वे त्रुटियां यही हैं कि अधिकांश शिक्षकों, इतर कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों में गुरुकुलीयता, वैदिक संस्कृति और आर्यसमाज के प्रति आस्था नहीं है तथा प्रबन्ध में भी भ्रष्टाचार व्याप्त है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कुलाधिपति, विजिटर आदि गुरुकुल के उच्च अधिकारी एवं वहां के पढ़े हुए अनेक स्नातक सरकारी अनुदान लिए जाने के बाद उत्पन्न हुई गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थिति से पर्याप्त चिंतित हैं।

क्या सरकारी अनुदान कारण है?

अब देखना यह है कि क्या गुरुकुल विश्वविद्यालय में आई इन त्रुटियों का कारण शिक्षा मन्त्रालय, विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग या सरकारी अनुदान लेना है। आयोग द्वारा गुरुकुल को यूनिवर्सिटी की समकक्षता की सन् 1962 में जो मान्यता दी गई थी वह इस उद्देश्य से थी कि गुरुकुल वेद, संस्कृत, प्राच्य दर्शन आदि प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन एवं अनुसंधान का केन्द्र बनेगा। इसीलिए आरम्भ में अपनी ओर से वेद, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास तथा मनोविज्ञान इन पांच विषयों में ही स्नातकोत्तर कक्षाएं चलाने की अनुमति प्रदान की थी। आयोग का अभिप्रेत यह था कि इन विषयों पर ही उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान हो, शेष विषय स्नातक कक्षा तक पढ़ाये जाते रहें। बाद में तत्कालीन कुलपति जी के अनुरोध पर आयोग ने हिन्दी, अंग्रेजी तथा गणित विषयों को भी स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए स्वीकार कर लिया। इस प्रकार आठ विषयों में एम० ए० कक्षाएं चालू की गईं। विज्ञान महाविद्यालय को जो कि पहले क्रमशः आगरा यूनिवर्सिटी तथा मेरठ यूनिवर्सिटी का अंग रहा था, गुरुकुल विश्वविद्यालय का अंग बाद में स्वीकार किया गया और उसमे स्नातकोत्तर कक्षाएं खोलने की अनुमति तो अब तक नही मिली है।

जिस अनुदान आयोग ने गुरुकुल को विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता ही वेदादि प्राच्य विषयों के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए दी है, वह भला इसमें बाधक क्योंकर बनेगा? और सचमुच पिछले इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण खोज निकालना कठिन है जब गुरुकुल के उद्देश्यों की पूर्ति में वह बाधक हुआ हो। शिक्षापटल, सिंडीकेट, सीनेट आदि में जो सरकारी प्रतिनिधि रहे हैं वे या तो बैठकों में आते ही नहीं, और आये भी तो बाधक कभी नहीं हुए। शिक्षाविभाग या शिक्षकेतर विभाग में किसकी नियुक्ति होती है, किस विषय का क्या पाठ्यक्रम निर्धारित होता है, इत्यादि बातों में शिक्षा-मन्त्रालय या अनुदान आयोग ने कभी हस्ताक्षेप नहीं किया। गुरुकुल के अधिकारी विभिन्न समितियों के माध्यम से पाठ्यक्रम निर्धारित करने, शोध-विषय स्वीकृत करने, नियुक्ति करने, समुचित रूप से छात्रावास चलाने, आर्यसमाज की गतिविधियां करवाने, संध्या-हवन की व्यवस्था करने, क्रीड़ा-प्रतियोगिताओं, सभाओं आदि का आयोजन कराने आदि में पूर्ण स्वतन्त्र रहे और अब भी हैं। सरकार का हस्ताक्षेप केवल एक विषय में रहा है और वह है विश्वविद्यालय का संविधान संशोधित करना, जिससे प्रतिवर्ष नये चुनाव के कारण होने वाली आर्य प्रतिनिधि सभाओं की पार्टी बन्दी से स्वतन्त्र रहकर विश्वविद्यालय समुचित दिशा में विकसित हो सके। संविधान के सम्बन्ध में मतभेद हो सकते हैं और बातचीत से मध्यमार्ग भी निकल सकता है।

सरकारी अनुदान मिलने से भवन-निर्माण, पुस्तकालय, शिक्षकों तथा शिक्षकेतर कर्मचारियों के वेतन आदि की समस्या प्रायः हल हो गई है। अब उसके लिए चिन्तित न होकर गुरुकुल के अधिकारी गुरुकुल को गुरुकुलीय आदर्शों के अनुरूप विकसित करने में अधिकाधिक ध्यान दे सकते हैं। इस ओर वे ध्यान न दें तो दोष उनका माना जायेगा न कि सरकार का।

गुरुकुल समुचित दिशा में सम्यक् रूप से विकास कर रहा है या नहीं—इसका अवलोकन करने के लिए अनुदान-आयोग की ओर से समय-समय पर कमेटियां नियुक्त होकर गुरुकुल आती रही हैं। 1972 में नियुक्त कमेटी ने जहां छात्रों की संख्या कम होने की ओर ध्यान आकृष्ट किया था वहां साथ ही अपनी रिपोर्ट में यह भी कहा था कि गुरुकुल की यूनिवर्सिटी के स्तर की संस्था के रूप में जो मान्यता दी गई थी उसमें एक हेतु यह था कि वह वैदिक वाङ्मय तथा संस्कृत साहित्य के अध्ययन व अनुसंधान में विशिष्टता प्राप्त करे, पर इस दिशा में भी गुरुकुल ने कोई विशेष कार्य नहीं किया। इस प्रकार जो आयोग वेदवेदांगादि के अध्ययन व अनुसंधान न करने पर अपना रोष प्रकट कर रहा है, वह इसमें बाधक बनेगा, यह एक न समझ में आने वाली बात है। फिर भी गुरुकुल की त्रुटियों के लिए शिक्षा मन्त्रालय या अनुदान आयोग को उत्तरदायी ठहराना उनके प्रति अन्याय करना है।

त्रुटियों का असली कारण

त्रुटियों का वास्तविक कारण तो यह है कि हम गुरुकुल में गुरुकुलीय आदर्शों को क्रियान्वित करने के प्रति स्वयं ही →

इस लेख के लेखक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में लगभग 38 वर्ष कार्य कर चुके हैं। इस अवधि में वे विद्यालय-विभाग में अध्यापक, महा विद्यालय में वेदोपाध्याय, अध्यक्ष एवं रीडर संस्कृत विभाग, कुलसचिव, आचार्य एवं उपकुलपति इन विभिन्न पदों पर रहे है। बाद में तीन वर्ष उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में दयानन्द-पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। गुरुकुल के सम्बन्ध में पूर्व प्रकाशित लेखों के सन्दर्भ में पाठक इनके विचार भी पढ़ें।

ागरूक नहीं हैं। हम वाणी से तो गुरुकुल के आदर्शों एवं वेद-वेदांगों के अनुष्ठान की बार-बार दुहाई देते हैं, पर रते उस विषय में कुछ नहीं हैं।

यह आपत्ति उठाई जा रही है कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों एव शिक्षकेतर कर्मचारियों में गुरुकुल के आदर्शों के प्रति आस्था नहीं है। यदि यह सत्य है तो उन्हें नियुक्त किसने किया है? क्या शिक्षा-मन्त्रालय या अनुदान आयोग ने नियुक्त किया है? चयन करने और नियुक्त करने वाले तो हम ही हैं। यह एक कटु सत्य है कि अधिकांश कुलपतियों के काल में इस ओर ध्यान नहीं रखा गया कि ऐसे व्यक्ति नियुक्त किये जायें जो गुरुकुलीय संस्कृति के प्रति आस्थावान हो। विश्व-विद्यालय की स्थिति की मान्यता मिलने के पश्चात जिन नवीन शिक्षकों की नियुक्तियां हुई उनमें गुरुकुलीय संस्कृति का बिल्कुल भी ध्यान न रख कर पी० एच० डी० होना आदि अन्य बातें प्रमुख रूप से देखी गईं। इस विषय में मैं केवल एक उदाहरण देता हूं।

स्वर्गीय पं० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति से कौन अपरिचित है। उन जैसा अपने विषय का उदभट विद्वान और वैदिक संस्कृति, आर्यसमाज एवं गुरुकुलीय आदर्शों के प्रति समर्पित कर्मठ व्यक्ति मिलना कठिन है। पर पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि उस समय की चयन-समिति ने दर्शन विभाग के अध्यक्ष पद पर पं० सुखदेव जी को, जो पहले से ही गुरुकुल में दर्शन शास्त्र के उपाध्याय थे, न चुनकर एक बाहर के पी० एच० डी० को चुना, जिसका भारतीय दर्शन का ज्ञान सीधा संस्कृत के दर्शन शास्त्रों के आधार पर न होकर अंग्रेजी पुस्तकों के आधार पर था, पाश्चात्य दर्शन का ज्ञान भले ही अधिक हो। गुरुकुलीय संस्कृति से तो वे सर्वथा अछूते ही थे। पं० सुखदेव जी की इस पर यह प्रतिक्रिया हुई कि इस अपमान को सहन करने की अपेक्षा मैं त्याग-पत्र देकर गुरुकुल से चला जाना अधिक अच्छा समझूंगा। अब कुलपति जी को उनकी यह प्रतिक्रिया ज्ञात हुई तब उन्होंने बीच का यह निर्णय लिया कि प्राच्य दर्शन शास्त्र के अध्यक्ष पं० सुखदेव जी होंगे तथा पाश्चात्य दर्शनशास्त्र के अध्यक्ष बाहर से आए दूसरे विद्वान। बाहर के विद्वान को यह अजीबोगरीब स्थिति स्वीकार न थी कि मैं केवल पाश्चात्य दर्शन का अध्यक्ष कहलाऊं, जबकि पाश्चात्य दर्शन को आयोग ने मान्यता ही नहीं दी है। अतः वे आये ही नहीं। इस प्रकार पं० सुखदेव जी ही दर्शनशास्त्र के अध्यक्ष बन गये। पर चयन-समिति ने तो गुरुकुलीय संस्कृति के पुजारी को सम्मान नहीं दिया, जबकि उस चयन-समिति में कुलपति तथा विषय-विशेषज्ञ दोनों गुरुकुल के स्नातक थे। क्या अनुदान आयोग ने यह कहा था कि शिक्षकों का चयन करते समय गुरुकुलीय संस्कृति को न देख कर केवल पी० एच० डी० उपाधि को देखा जाये? नहीं, स्पष्ट है कि यह हमारी अपनी ही चूक थी। ऐसे कई उदाहरण मेरे सामने हैं, पर मैं जानबूझ कर ही उन्हे नही दे रहा हूं।

फिर, जो शिक्षक नियुक्त किये गये उनमें गुरुकुलीय संस्कृति है या नही और यदि नही है तो वे स्वयं को उस संस्कृति में रंगने के लिए तैयार हैं या नही, यह देखने के लिए एक वर्ष का समय हमारे पास था, क्योंकि वे एक वर्ष की परीक्षणावधि (प्रोबेशन) पर रखे गये थे। जिनमें नहीं थी उन्हे किसी कठिनाई का सामना नही करना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि लोगों ने समझ लिया कि गुरुकुलीयता, आर्यसमाज, वैदिक संस्कृति ये सब तो ऊपर से कहने की ही बाते हैं, इनमें रमो या इनसे दूर रहो, कोई अन्तर नही पड़ता है। यही सिलसिला प्राय: आने वाले कुलपतियों के काल में भी जारी रहा और अधिकांशतः उन शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों की नियुक्तियां होती रहीं जो गुरुकुलीय संस्कृति के प्रति आस्थावान नही थे। कोई-कोई नियुक्तियां जातिवाद के आधार पर भी हुईं अब हम उन नियुक्त कर्मचारियों को दोष देते हैं कि उनमें गुरुकुलीय संस्कृति नहीं है। असल में दोष तो चयन करने वालों का है जिन्होंने ऐसे व्यक्तियों का चयन तो कर लिया, पर वे अनिवार्य रूप से गुरुकुलीय संस्कृति के रंग में रंग जायें. इस ओर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नही समझी। यदि कुलपति दृढ़ एवं प्रभाववाली रहे होते तथा वे विभागाध्यक्षों एवं शिक्षकों को अनुशासन में रखने में सफल हो पाते तो प्राय: सभी नियुक्त शिक्षक गुरुकुल के अनुरूप स्वयं को ढाल सकते थे। पुराने गुरुकुल के शिक्षकों में पाश्चात्य दर्शन के उपाध्याय प्रो० नन्दलाल जी खन्ना, अंग्रेजी के उपाध्याय प्रो० लालचन्द जी आदि बाहर के शिक्षणालयों में ही पढ़े थे, पर गुरुकुल में आकर उन्होंने स्वयं को पूर्णतः गुरुकुल के रंग में रंग लिया था।

श्री पं० मदन मोहन मालवीय जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय में बाहर से चुन-चुन कर विद्वानों को एकत्र किया था। हम भी ऐसा कर सकते थे कि बाहर विश्वविद्यालयों में नियुक्त गुरुकुल के योग्य विद्वानों को विशेष वेतन वृद्धियां देकर बुला लेते। ऐसे उदाहरण हैं भी कि कुछ प्रत्याशी अच्छे योग्य और गुरुकुल के लिए पूर्णतः उपयुक्त थे, पर उन्हे इस कारण नही चुना गया, क्योंकि वे विशेष वृद्धियां मांगते थे, तथा बाहर जो वेतन पा रहे थे उससे कम में नहीं आना चाहते थे। विशेष वेतनवृद्धि न देने के अपने सिद्धांत पर हम अन्त तक दृढ़ रहे हों ऐसा भी नही हुआ, क्योंकि बाद मे किसी-किसी को विशेष वेतन-वृद्धियां दी भी गई, पर इस कारण नही कि वे गुरुकुलीय संस्कृति मे रंगे थे, अपितु किसी अन्य कारण से।

अब कुछ विषयों में अनुदान-आयोग ने गुरुकुल के लिए प्रोफेसर का पद भी स्वीकृत कर लिया है, जिन विषयों में अभी नहीं हुआ उनमें भी निकट भविष्य में स्वीकृत हो सकता है। उन पदों के लिए योग्य प्रोफेसरों का चुनाव होना है, जिनके लिए स्वभावतः गुरुकुल में पहले से शिक्षण कार्य करने वाले लैक्चरार एवं रीडर भी प्रत्याशी होंगे तथा बाहर के विद्वान भी। देखना यह है कि गुरुकुल के अधिकारी यदि गुरुकुल में पहले से कार्य कर रहे व्यक्ति को प्रोफेसर पद पर नियुक्ति करते हैं तो यह देख लेते हैं कि नही कि उस व्यक्ति ने गुरुकुल के अपने 10, 12, 15 या 20 वर्षों के कार्यकाल में स्वयं को गुरुकुलीय संस्कृति में ढाल लिया है या नही। यदि ऐसे व्यक्ति को नियुक्ति देते हैं, जो गुरुकुल के अपने सुदीर्घ काल में गुरुकुलीय संस्कृति से सर्वथा दूर रहा है, तो इससे यह प्रमाणित होगा कि गुरुकुलीय संस्कृति में स्वयं अधिकारियों का ही विश्वास नहीं है। यही बात बाहर के प्रत्याशी के सम्बन्ध में भी लागू होती है।

यह भी ज्ञात हुआ है कि कतिपय अन्य विश्वविद्यालयों के समान पूर्व नियुक्त लैक्चरारों एवं रीडरों के कुछ प्रतिशत को उच्चतर पद पर प्रोन्नत करने की योजना भी गुरुकुल के पास आई हुई है। उसमें भी यह देखना है कि प्रोन्नत करते समय गुरुकुलीय संस्कृति को प्राथमिकता दी जाती है या नहीं। अपने विषय में योग्य होने के साथ-साथ जिनमें गुरुकुलीय संस्कृति भी ओतप्रोत है, उन्हें प्रोन्नत न करके दूसरे प्रकार के व्यक्तियों को यदि प्रोन्नत किया जाता है या प्रोफेसर पद के लिए चुना जाता है, तो यह पुरानी भूलों के साथ एक नई भूल जुड जायेगी, जिसका परिमार्जन बाद में नहीं हो सकेगा।

मद्य, मांस आदि का सेवन

पं० धर्मवीर जी ने अपने लेख में यह भी आक्षेप किया है कि ऐसे प्राध्यापक तथा शिक्षकेतर कर्मचारी गुरुकुल में काफी संख्या में हैं जो तंबाकू, मद्य, मास का भरपूर सेवन करते हैं और एक उच्च अधिकारी की कन्या के विवाह के अवसर पर शराब का भी वितरण हुआ। यह भी लिखा है कि झूठे प्रमाण पत्र दिये जाते हैं और झूठे बिलों द्वारा भुगतान तो साधारण बात है। यदि यह सत्य है, तो क्या गुरुकुल के उच्चतर अधिकारियों को इसका ज्ञान नहीं है अथवा ज्ञान होते हुए भी वे इसे उपेक्षणीय समझ रहे हैं। इस प्रसंग में मुझे याद आता है कि गुरुकुल में शिक्षकेतर विभाग में एक व्यक्ति उच्च अधिकारी के रूप में रखे गये थे, जो मद्य-मांस का सेवन करते थे तथा सिगरेट तो कार्यालय में बैठकर भी पीते थे। कार्यालय के कर्मचारियो का कहना था कि वे बात भी बिना गाली के नहीं करते हैं। इन्हे रखवाने मे एक दो उच्च सभाधिकारियों का विशेष हाथ था। हो सकता है कि सभाधिकारयों को पहले से उनके इस दुर्व्यसन का ज्ञान न हो, पर उनकेगुरुकुल में आने के बाद तो सभाधिकारियों और कुलपति से लेकर नीचे तक सबको यह ज्ञात हो गया था। फिर भी किसी अधिकारी ने उन्हें अपना जीवन व व्यवहार गुरुकुलीय संस्कृति के अनुरूप रखने के लिए नहीं कहा। अन्त में कार्यालय के कर्मचारियो का असन्तोष जब चरम सीमा पर पहुंच गया तब एक आन्दोलन का शिकार होकर उन्हे गुरुकुल से जाना पड़ा।

यह उदाहरण मैंने इसलिए दिया है कि अधिकारी लोग इन बातो को उपेक्षा की दृष्टि से न देख कर यदि तुरन्त आवश्यक कदम उठाये तो भविष्य में सब लोग सतर्क रहेगे। यदि यह बातें संस्था में बढ़ती हैं तो स्वयं हम ही इसके दोषी हैं, अनुदान आयोग नही। फिर, झूठे बिलों का भुगतान, झूठे प्रमाणपत्रों का वितरण किन्ही अधिकारियों का परस्पर मिलकर माल की खरीद करते हुए अपना पैसा बनाना आदि बाते यदि सत्य हैं तो उस ओर से आंख बन्द न करके तुरन्त कार्यवाही की जानी आवश्यक है।

कुलपतियों का बाहर रहना

पं० धर्मवीर जी ने यह भी लिखा है कि आदरणीय कुलपति महोदय गुरुकुल-परिसर में मात्र 5-7 दिन रहते हैं। संभव है यह कुछ अतिरजित चित्र हो। पर कुलपतियों का गुरुकुल में कम रहना पहले भी होता रहा है। आद्य कुलपति पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति तो इस हेतु गुरुकुल में कम रह पाते थे कि वे संसत्सदस्य भी

थे। वे जब तक संसत्सदस्य रहे तब तक गुरुकुल से कोई वेतन नही लेते थे। उस समय पं० इन्द्र जी केवल नीति-निर्धारक थे, कुलपति का अधिकतर कार्य आचार्य करते थे, जो गुरुकुल में ही रहते थे। असल मे उस समय कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के कार्य की विभाजक-रेखा भी बहुत स्पष्ट नहीं थी, क्योकि उससे पूर्व प्राय: आचार्य के अधिकार अधिक रहे थे। पं० इन्द्र जी के बाद कोई-कोई कुलपति अधिक समय गुरुकुल से बाहर रहते हुए भी पूरा वेतन पाते रहे, और यह समझा जाता रहा कि कुलपति कही भी रहे, वह 'ऑन ड्यूटी' है, क्योंकि सभी जगह वह संस्था की मान-मर्यादा और व्यवस्था को स्थिर रखने का कार्य करता है। जहां तक मैं जानता हूं, भारत के किसी अन्य विश्वविद्यालय के कुलपति को ऐसी छूट नही है। वे जब स्पष्टत: विश्वविद्यालय के कार्य से या विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि बनकर कही बाहर जाते हैं, तभी वे 'ऑन ड्यूटी' समझे जाते हैं, अन्यथा वे भी नियमानुसार छुट्टी लेते हैं।

अन्य विश्वविद्यालयों का विस्तार बहुत अधिक होने से वहां के कुलपति भी बहुत व्यस्त होते हैं। मैं पंजाब विश्वविद्यालय में तीन वर्ष रहा हूं। मैंने देखा है कि वहां के कुलपति प्रात 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक अपने कार्यालय मे बैठे कार्य करते रहते हैं। यहां कृषिविश्वविद्यालय, पंतनगर में मैंने देखा है कि यहां के कुलपति कार्यालय मे काम पूरा नही हो पाता तो अपने निवास पर फाइले मंगा लेते हैं और रात्रि में उन्हें देखते हैं। उसकी तुलना में तो ऐसा लगता है जैसे गुरुकुल के कुलपति को कुछ कार्य ही नही है। गुरुकुल के कुलपति तो प्राय: कार्यालय में जाते ही नही, वे अपने निवास स्थान पर ही कार्यालय लगाते रहे हैं। उन्हे इतनी फुर्सत भी होती है कि वे अपने पृष्ठपोषक शिक्षकों एवं कर्मचारियों से घंटों बाते करते रहें। गुरुकुल छोटा विश्वविद्यालय अवश्य है, पर इसके उद्देश्य महान् हैं और कुलपति पर उन महान् उद्देश्यों की पूर्तिका उत्तरदायित्व है। उस उत्तरदायित्व को समझकर यदि कुलपति कार्य करें तो उन्हे अनावश्यक रूप से बाहर रहने की फुर्सत ही नहीं मिलेगी।

वैदिक अनुसधान

प्राय सभा और गुरुकुल के अधिकारी दोनो घोषणा करते रहते हैं— वेद और वेदानुसंधान गुरुकुल का मुख्य लक्ष्य है। विश्वविद्यालय बनने के बाद गुरुकुल मे वेद प्रचार और वेदानुसन्धान के नाम पर आज तक क्या हुआ है? पहले गुरुकुल में एक श्रद्धानन्द-स्मारक-निधि स्थापित थी, जिससे प्रतिवर्ष वेद विषयक पुस्तक प्रकाशित होती थी। 'ब्राह्मण की गौ', 'वैदिक विनय', वैदिक ब्रह्मचर्य-गीत, 'वरुण की नौका', 'वेद का राष्ट्रीय गीत', 'वेदोद्यान के चुने हुए फूल' आदि महत्त्वपूर्ण पुस्तकें इस निधि से प्रकाशित हो चुकी हैं। पं० भगवद् दत्त जी वेदालंकार

गुरुकुल कांगड़ी......

वेदानुसन्धाता के रूप मे गुरुकुल मे कार्य करते रहे हैं। उनकी भी उत्कृष्ट कोटि की 6-7 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। परन्तु विश्वविद्यालय बनने के पश्चात् अब न प्रतिवर्ष होने वाला वह प्रकाशन हो रहा है, न पं० भगवद्दत्त जी के सेवा-निवृत्त होने के बाद उनके स्थान पर किसी अन्य की नियुक्ति हुई है। 1983 मे गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर वेद-सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए मैंने कहा था कि गुरुकुल संस्था को यदि जीवित रहना है, तो वह वेद का कार्य करके ही जीवित रह सकती है। होशियारपुर का विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रारंभ मे अपने बूते पर ही वैदिक अनुसंधान में जुटा था, अब वह विश्वप्रख्यात हो गया है तथा अनुदान भी पाता है। वैसे ही गुरुकुल भी यदि यशस्वी और अमर होना चाहता है तो उसे विभिन्न विषयों के अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त उच्च कोटि के वैदिक अनुसन्धान मे प्रवृत्त होना होगा। विभिन्न विषयो का अध्ययन-अध्यापन तो सभी विश्वविद्यालयों में है, वेदानुसन्धान अन्यत्र नही है और वही गुरुकुल की विशेष देन हो सकती है और उसी से गुरुकुल की कीर्ति चिरस्थायी हो सकती है।

अन्य विभागो के समान गुरुकुल मे एक वेद-विभाग भी है, जिसमे चार वेदोपाध्याय हैं, पर वे तो स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओ मे वैदिक साहित्य के अध्यापन के लिए नियुक्त किये गये हैं। यथोचित सुविधाये देकर हम उन्हें प्रेरित अवश्य कर सकते हैं कि अतिरिक्त समय में वे वेदानुसन्धान का कार्य भी करे। परन्तु इस विभाग से पृथक् एक वेदानुसन्धान-विभाग अब तक खुलकर पुष्पित, पल्लवित और फलित हो चुकना चाहिए था। उससे उच्चकोटि के 4-5 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुकने चाहिए थे। अन्य विश्वविद्यालयों में वेद और दयानन्द पर अनुसन्धान के लिए यदि दयानन्द चेयर खुल सकती है, तो गुरुकुल विश्वविद्यालय मे 'वैदिक शोध-संस्थान' क्यों नहीं खुल सकता। अन्य योजनाओ की अपेक्षा सर्वप्रथम वेदानुसन्धान विभाग खोलने की योजना अनुदान-आयोग को भेजी जानी चाहिए थी, जिसके विषय में आज तक हम मौन हैं। इसके स्थान पर गुरुकुल के अधिकारी-गण या कुलपति इस दिशा मे सोचते रहे है कि कौन-कौन सा नवीन विषय गुरुकुल मे और चालू किया जाये। कोई बी० एड० खोलने की योजना बनाते हैं, तो कोई अर्थशास्त्र या कॉमर्स विषयों को आरंभ करवाना चाहते हैं। अधिकारियों के सम्मुख गुरुकुल को चलाने की दिशा ही स्पष्ट नहीं है।

गुरुकुल के छात्र

कहा जाता है कि विश्वविद्यालय में अब जो छात्र हैं वे बाहर की उपज हैं, गुरुकुल की उपज नहीं हैं, परिणामत: गुरुकुलीय संस्कृतिक से शून्य हैं। इस पर प्रथम तो यह कहना है कि गुरुकुलीय संस्कृति यदि अधिकारियों एवं शिक्षकों मे ही नहीं होगी, तो छात्रों मे कहां से आयेगी, चाहे वे बाहर की उपज हों, चाहे गुरुकुल की। दूसरे यह बात भी मन से निकाल देनी चाहिए कि बाहर के सब छात्र खराब ही होते हैं और गुरुकुल के सब छात्र अच्छे ही जब मैं गुरुकुल के कार्य करता था तब गुरुकुल में प्रविष्ट अनेक बाहर के छात्रो से मेरा सम्पर्क होता था। कई छात्रो ने मुझे कहा कि हम तो दूर से गुरुकुल का नाम सुनकर बड़ी आशा लेकर यहां आये थे तथा कुछ बनने की हमारी लालसा थी। पर यहां आने पर तो ऐसा लगता है कि हम ही यहां वालों को कुछ बना-सिखा सकते है। कुछ ऐसे बाहर के छात्र भी मेरे सम्पर्क में आये जो कुछ बनने की आशा लेकर तो गुरुकुल मे नही आये थे, पर यदि गुरुकुल छात्रों के निर्माण की योग्य स्थली होती, तो वे बनने के लिए तैयार थे। तीसरे कुछ ऐसे छात्र दिखाई दिये जो कहते थे कि हम तो अध्ययन के लिए आये हैं, दुश्चरित्र तो हम पहले से ही नही हैं, अच्छे अंकों मे परीक्षा उत्तीर्ण करके अपने भविष्य को उज्ज्वल करना चाहते हैं। चौथे प्रकार के कुछ छात्र ऐसे देखे, जिन्हें शरारती तत्त्व कहा जा सकता है, जिनने बाहर के और गुरुकुल के पढ़े दोनों ही थे।

मैं कहना यह चाहता हूं कि छात्रों के बुरा या अच्छा होने की कसौटी उनका बाहर के कालेजो में पढ़ा होना या गुरुकुल मे पढ़ा होना नही है। अब बाहर और गुरुकुल मे विशेष अन्तर नहीं रह गया है। गुरुकुल की जो अच्छाइयां थी उनमें से बहुत-सी बाहर पहुंच चुकी हैं और बाहर की बहुत सी बुराइयां गुरुकुल में आ चुकी हैं। कोई छात्र बाहर के पढ़े हुए हैं, इससे भयभीत होने की आवश्यकता नही है। हमारे गुरुकुल से यदि वैदिक एवं गुरुकुलीय संस्कृति की सुगन्ध उठ रही है तो वह बाहर से आये छात्र के हृदय को भी अवश्य सुरभित करेगी। वे कुलसभाओं में उपस्थित होंगे, उनमे भाग लेंगे, विश्वविद्यालय-व्याख्यान-माला के अन्तर्गत बाहर से आये विद्वानों के भाषण सुनेंगे, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं क्रीड़ा-सांमुख्यों में भाग लेंगे, तो अवश्य ही गुरुकुलीयता एवं भारतीय संस्कृति उनके हृदयों में घर कर सकेगी। पर होता यह रहा है कि शिक्षक लोग ही कुलसभाओं में, यहां तक कि गुरुकुल के प्रतिष्ठापक स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान-दिवस की सभा में भी नहीं आते और सम्बद्ध आचार्य एवं कुलपति इस उदासीनता एवं अनुशासनहीनता को चुपचाप सह लेते हैं।

छात्रावास

पं० धर्मवीर जी ने अपने लेख में यह भी सूचित किया है कि विश्वविद्यालय के छात्रावासों में एक भी छात्र निवास नहीं कर रहा, प्रत्युत उनमें पी० ए० सी० के जवान रहते हैं और जिला सहारनपुर की पी० ए० सी० का कार्यालय चलता है। इन छात्रावासों का उपयोग छात्रों के लिए होने में क्या कठिनाई है तथा निरन्तर उनमे पी० ए० सी० का रहते रहना क्यों आवश्यक है, इस विषय में तो गुरुकुल के वर्तमान अधिकारी ही प्रकाश डाल सकते हैं। पर गुरुकुल के छात्रावास गुरुकुलीय संस्कृति के विशेष जनक बन सकते हैं, जहां रहते हुए छात्र सन्ध्या, अग्निहोत्र, व्यायाम, क्रीड़ा, आसन, प्राणायाम, योगाभ्यास आदि का पालन करते हुए समान भोजन प्राप्त करें एवं छात्र-परिषदों मे वक्तृत्व-कला का विकास करे। पहले एक प्रमुख छात्रावास में आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्र रहते थे, अब उक्त महाविद्यालय को सरकार ने ले लिया है, अत. सभी छात्रावासो का उपयोग वेद, कला एव विज्ञान महाविद्यालयों के छात्रो के लिए हो सकता है तथा वे छात्रावास गुरुकुलीय पद्धति पर चलाये जा सकते हैं। बहुत समय से वेद महाविद्यालय के छात्र वानप्रस्थाश्रम में या सुविधानुसार अन्यत्र निवास करते रहे हैं। उन्हे छात्रवृत्ति भी दी जाती है। एक छात्रावास में इन्हें रखकर आदर्श छात्रावास चलाया जा सकता है। छात्रवृत्ति के रूप में जो अर्थराशि दी जाती है, वह नि:शुल्क भोजन के रूप मे दी जा सकती है। पुराने गुरुकुल में सब छात्रों को अनिवार्य रूप से छात्रावास मे ही रहना होता था तथा भोजन की घंटी बजने पर सब इकट्ठे भोजन-भंडार में जाकर पंक्ति में बैठकर एक-जैसा भोजन करते थे। भोजन की वैसी व्यवस्था अब भी की जा सकती है। इसमे शिक्षा मंत्रालय या अनुदान आयोग बाधक नहीं है। वर्तमान कुलपति श्री हूजा कुछ वर्ष पूर्व राजेन्द्र-छात्रावास में ऐसी व्यवस्था प्रारंभ करवा भी चुके है— जो कुछ समय तक सफलता पूर्वक चलती रही है।

क्या अनुदान को ठुकरा दें?

कुछ लोगों का कहना है कि सरकारी अनुदान को ठुकरा कर जनता के दान से उसी रंग पर गुरुकुल को चलाया जाये, जिस ढंग पर यह सरकार द्वारा विश्वविद्यालय की मान्यता मिलने से पूर्व चलता था। पर, निश्चय जानिये, अब गुरुकुल पुराने ढग पर नहीं चल सकता। प्रथम तो चन्दे की ही समस्या आयेगी। जब सरकारी मान्यता गुरुकुल को नहीं मिली थी, तभी चन्दा आना बहुत कम हो गया था। न ही कोई चन्दा मांगने जाना चाहता था। जो चन्दा लाने में कुशल एवं कर्मठ माने जाते थे, उनका भी उत्साह मन्द पड़ गया था, क्योंकि यह बड़ा रूखा कार्य है। कुछ अन्य उपाध्यायों को भी डेपुटेशन बनाकर धन संग्रहार्थ

(शेष पृष्ठ १० पर)

सामाजिक जगत्

आर्य समाज आंदोलन को नया रूप देने का सुझाव

नई दिल्ली, 30 जून। बदलते युग में आर्यसमाज आंदोलन को नया रूप देने का सुझाव वरिष्ठ आर्य नेता श्री सत्यदेव भारद्वाज ने दिया है। वह आर्य समाज का इतिहास ग्रंथ के पहले तीन खण्डों का प्रकाशनोद्घाटन कर रहे थे।

सात खण्डों में प्रकाश्य इस ग्रंथ को प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डा० सत्यकेतु विद्यालंकार लिख रहे हैं। आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में इस पुस्तक के विमोचन के लिए समारोह आयोजित किया गया था। जिसमें आर्यसमाज के गण्यमान्य नर-नारी भारी संख्या में उपस्थित थे।

श्री भारद्वाज के अनुसार सामाजिक आध्यात्मिक क्षेत्र के अलावा आर्थिक क्षेत्र में भी आर्यसमाज को नेतृत्व देना चाहिए। आर्यसमाज को अपनी शिक्षण संस्थाओं के साथ आर्थिक उत्पादन की भी बड़े पैमाने पर व्यवस्था करनी चाहिए ताकि वे संस्थाएं स्वावलम्बी हो सकें।

पुस्तक के लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने बताया कि भारत के पुनर्जागरण काल में आर्यसमाज की विभिन्न क्षेत्रों में क्या भूमिका है, इसका प्रामाणिक विवरण इस इतिहास के एक-एक खंड में देने का प्रयत्न किया गया है। इसके अलावा एशिया और यूरोप के विभिन्न देशों में उस काल के सामाजिक आंदोलनों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया हैं।

इस समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले तथा पंजाब के भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री श्री अमरनाथ विद्यालंकार व श्री पृथ्वीसिंह आजाद व प्रो० वेदव्यास के अलावा बड़ी संख्या में नगर के आर्यसमाजी उपस्थित थे। समारोह का संचालन वरिष्ठ पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार सम्पादक 'आर्य-जगत्' ने किया।

□

शहीद सैनिक हितेश कुमार पलटा

अमृतसर में सैनिक कार्रवाई के दौरान शहीद हुआ बहादुर सैनिक हितेशकुमार पलटा। आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, सीताराम बाजार के पूर्व प्रधान, यूनिवर्सल टाइप राइटर्स कम्पनी के मालिक श्री दीवानचन्द पलटा के सुपुत्र हितेशकुमार ने [जन्म २२ सितम्बर १९४४] ६ जून को स्वर्णमन्दिर से श्री लौंगोवाल और श्री तोहड़ा को सुरक्षित निकाल लाने का अपना मिशन पूरा करने के पश्चात् उग्रवादियों की गोली से ७ जून को प्राण दे दिये। ऐसे वीर जवान पर समस्त भारत को गर्व है।

हिन्दू हाई स्कूल साढौरा

साढोरा : हिन्दू ऐंग्लो-संस्कृत हाई स्कूल हरियाणा के पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है जिसका सम्बन्ध अधिकतर निर्धन, हरिजन तथा पिछड़े वर्गों के छात्रों से है। परन्तु अपने परिश्रम से ये छात्र शहरी बच्चों से भी आगे निकल रहे हैं। इस वर्ष की मैट्रिक परीक्षा में इस स्कूल के 86 छात्र बैठे थे जिनमें से 22 प्रथम श्रेणी में 36 द्वितीय श्रेणी में और केवल 16 तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये तथा 3 छात्र कम्पार्टमेंट में आये। इस प्रकार इस स्कूल का परीक्षा परिणाम 86 प्रतिशत रहा जब कि कुल बोर्ड में 65 प्रतिशत छात्र पास हुये हैं। राजेशकुमार ने मैट्रिक में 900 में से 633 अंक प्राप्त किए और संजय कुमार ने मिडिल परीक्षा में 600 में से 496 अंक प्राप्त किये।

—हरिराम मुख्य अध्यापक

हिन्दू ए. एस. हाईस्कूल साढौरा (अम्बाला) के छात्र राजेशकुमार ने ९०० में से ७०० अंक प्राप्त करके मैट्रिक में हरियाणा में प्रथम आकर योग्यता सूची में स्थान पाया।

यजुर्वेद का उर्दू भाष्य

नई दिल्ली : केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री एच० के० एल० भगत ने गत 6 जून को श्री आशुराम आर्य द्वारा अनूदित यजुर्वेद के उर्दू भाष्य पुस्तक के प्रथम भाग का विमोचन किया। इस वर्ष के अन्त तक सामवेद अथर्ववेद और ऋग्वेद भी प्रकाशित हो जाने की आशा है।

पंजाब में सैनिक कार्रवाई का स्वागत

सूरत : आर्य समाज सोनीफलिया, सूरत ने सरकार द्वारा पंजाब में की गई कार्यवाही का स्वागत किया है। एक प्रस्ताव में सैन्य अभियान में शहीद हुये जवानों की सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना और इनके सन्तप्त परिवार जनों को अधिकाधिक आर्थिक सहायता देने की माँग की गई।

प्रस्ताव से अल्पसंख्यक आयोग को भंग करने, समान नागरिक कानून लागू करने, कश्मीर के सम्बन्ध में धारा ३७० समाप्त करने, धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने, विदेशी घुसपैठियों को देश से बाहर निकालने और कच्छ, राजस्थान एवं पंजाब की सीमा पर तस्करी रोकने का अनुरोध किया गया है।

गुरुकुल शुक्रताल में प्रवेश

गुरुकुल शुक्रताल में ६ जुलाई से प्रवेश आरम्भ हो चुका है। अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, हिन्दी, संस्कृत, वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण आदि विषयों के साथ योगासन, प्राणायाम, ध्यान समाधि, यज्ञ सन्ध्या अनिवार्य है।

—प्रबन्धक स्वामी आनन्दवेश

गुरुकुल खेड़ाखुर्द

श्री मद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय खेड़ा खुर्द की प्रबन्ध समिति ने श्री सत्यशील गुप्त को प्रधान और माता सुशीला चुग को उपप्रधान चुना है।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

करनाल : आर्यवीर दल करनाल का तृतीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर 25 जून से 1 जुलाई तक लगा। शिविर में 50 आर्यवीरों ने भाग लिया।

—आर्य समाज ग्राम शम्सपुर सट्टो का १६ वां वार्षिकोत्सव ९ से ११ जून तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज अनारकली का वार्षिकोत्सव

दिल्ली : आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग का वार्षिकोत्सव 9 से 11 नवम्बर तक मनाया जायेगा। दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से अनुरोध है कि उक्त तिथियों में वे अपनी समाजों में कोई कार्यक्रम न रख कर समस्त सदस्यों सहित इस उत्सव में सम्मिलित हों।

—रामनाथ सहगल मंत्री आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

गुरुकुल ततारपुर

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर का 20 वां स्थापना दिवस 12-13 जुलाई को मनाया जाएगा।

गुरु विरजानन्द दिवस

मथुरा : श्री विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम वेद मन्दिर, मथुरा में 18 से 22 जुलाई के दौरान गुरु विरजानन्द दिवस एवं आचार्य प्रेम भिक्षु षष्टि पूर्ति दिवस का आयोजन किया जा रहा है। गुरु विरजानन्द दिवस 13 जुलाई को और आचार्य प्रेम भिक्षु षष्टिपूर्ति दिवस 22 जुलाई को मनाया जायेगा।

बड़ौत में भारत दल का सम्मेलन

२५ जून को प्रातः भव्य शोभायात्रा के साथ बड़ौत में, हाल में ही स्थापित भारत दल का सम्मेलन हुआ जिससे जनता में नई राजनीतिक चेतना जागृत हुई। इस दल के संस्थापक डा० रामकुमार 'कमल' है। सम्मेलन के मुख्य वक्ता भी वही थे। अपने भाषणों में जो कुछ उन्होंने कहा उसका सार यह है – भारत में संसदीय प्रणाली की आत्मा मर चुकी है। काले धन की समानान्तर अर्थव्यवस्था से देश रसातल को जा रहा है। जनता में भारतीय संस्कृति की विशेषताएं शनैः शनैः विलुप्त होती जा रही हैं। भारत को जो स्वाधीनता मिली है, वह ब्रिटिश नेशनैलिटी ऐक्ट के अन्तर्गत मिली है, इसलिए प्रत्येक भारतीय संविधान में अनुच्छेद ३६६, ३७०, ३७१, ३७२, ३९३ और ३९४ ऐसे है जिनमें भारतीय संसद भी परिवर्तन नहीं कर सकती, अतः हमारी स्वाधीनता अभी अधूरी है। हमारी चुनाव पद्धति लोकनिष्ठा के बजाय धननिष्ठा पर आधारित है। इसलिए भारतदल भ्रष्ट राजनीति का विरोध करता हुआ सत्ता और सम्पत्ति के विकेन्द्रीकरण पर जोर देता है। —रघुवीर सिंह तोमर, मंत्री

→ (पृष्ठ 8 का शेष)

कभी-कभी भेजा जाता था, पर प्रायः उससे अधिक चन्दा वे नही ला पाते थे, जितना किराये आदि में उनका खर्च हो जाता था। कभी-कभी तो चन्दे की आय खर्च की तुलना में कम बैठती थी। यदि चन्दा लाना आसान है, तो आज विद्यालय-विभाग के लिए चन्दा क्यों नहीं ले आते? क्यों फार्मेसी से धन न मिलने पर अध्यापकों की हड़ताल का सामना करते हैं तथा किंकर्तव्य विमूढ़ होकर बैठ जाते हैं?

दूसरी कठिनाई यह आयेगी कि हमे पर्याप्त छात्र नहीं मिलेंगे। आज नगर-नगर में स्कूल और कालेज खुले हुए हैं, अनेक यूनिवर्सिटियां भी हैं। छात्र अपने घर में रहकर नाममात्र व्यय में वहां पढ़ कर उपाधि प्राप्त कर सकता है। उसके संरक्षक अधिक व्यय उठाकर गुरुकुल में पढ़ने क्यो भेजेगे। हम लोग गुरुकुल में वेद-महाविद्यालय मे छह विषय पढ़ते थे— वेद, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, आर्य सिद्धांत, अंग्रेजी और छठा पाश्चात्य दर्शन, रसायन शास्त्र, अर्थशास्त्र एवं इतिहास में से कोई एक। आज का छात्र इतने विषय पढ़ने के लिए तैयार नहीं है। उसे बाहर जब केवल तीन विषय पढ़कर बी० ए० उपाधि प्राप्त हो जाती है, तो बी० ए० के समकक्ष अलकार उपाधि के लिए वह छह विषय क्यों पढ़ना चाहेगा? आज भी, पुष्कल छात्रवृत्ति का प्रलोभन देकर भी, वेद महाविद्यालय के लिए हम पर्याप्त छात्र नहीं जुटा पाते। फिर, एक बार यूनिवर्सिटी तोड़ देने पर आपकी उपाधियों की मान्यता भी कायम नहीं रहेगी। अतः कोई छात्र उन उपाधियों को क्यों लेना चाहेगा?

शिक्षकों को आप बाहर के स्तर का वेतन नहीं दे सकेंगे, अतः योग्य शिक्षक भी मिलने कठिन होंगे। जो मिलेंगे भी, वे बाहर नियुक्ति मिलने पर छोड़कर चले जाया करेंगे। अन्य भी कई परेशानियां सिर पर सवार हो जायेंगी। एक बार सरकारी मान्यता हटा कर नये सिरे से पूर्ववत् गुरुकुल को चला सकना उतना आसान नहीं है, जितना प्रतीत होता है। यदि उच्च कोटि का गुरुकुल न चलाकर एक साधारण उपदेशक महाविद्यालय चलाने का स्वप्न हो, तब दूसरी बात है ठुकराइये अनुदान को और परीक्षण कीजिये।

तो फिर क्या करें?

प्रश्न यह उठता है कि तो फिर क्या करें? कैसे गुरुकुल में आई त्रुटियों को दूर करें? क्या निराश होकर गुरुकुल को बन्द कर दें? मेरा कहना है कि निराश होने की आवश्यकता नही है। सभाधिकारी, गुरुकुल के उच्च अधिकारी, शिक्षापटल, कार्य परिषद्, शिष्ट परिषद्, शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी, छात्र सब कृत-संकल्प हो जायें तो गुरुकुल को नई रंगत दे सकते हैं। सबसे पहले सभाधिकारियों और गुरुकुल के उच्च अधिकारियों को संकल्पबद्ध होना पड़ेगा कि उदासीनता एवं निष्क्रियता सहन नहीं करेंगे। उन लोगों को ही उत्साहित एवं पुरस्कृत किया जायेगा जिनका जीवन गुरुकुलीय संस्कृति से ओतप्रोत होगा, उन्हीं विषयों को प्राथमिकता दी जायेगी जो गुरुकुल के विशेष विषय हैं। कहना और लिखना आसान है, करना कठिन है। पर यदि गुरुकुल को गुरुकुल बनाना है तो इस संकल्प के लिए कटिबद्ध होना ही पड़ेगा। अनुदान प्राप्त गुरुकुल विश्वविद्यालय में सब त्रुटियां ही त्रुटियां हों, ऐसी बात नहीं है। वह अपने ढंग से विकास कर रहा है, आवश्यकता है केवल उसमें प्राण फूंकने की तथा गुरुकुलीय संस्कृति का रंग जमाने की।

पता : 1/116 फूलबाग
पन्तनगर (नैनीताल)

यह लेख किन्हीं व्यक्तियों को आलोचना के लिए नहीं किन्तु केवल वस्तु स्थिति सामने लाने के उद्देश्य से लिखा गया है, क्योंकि वस्तुस्थिति को दृष्टि से ओझल रखकर न हम सही परिणाम पर पहुंच सकते हैं, न कर्तव्य निर्धारित कर सकते हैं। अनुदान को ठुकराने का प्रस्ताव करने वाले और न ठुकराना चाहने वाले दोनों ही गुरुकुल के हित-चिन्तक हैं। अतः आइये, हम परस्पर विचार-विनिमय करके सही रास्ता अपनायें।

—लेखक

कश्मीर में राष्ट्र विरोधी......

(पृष्ठ 4 का शेष)

पक नहीं है। पाक समर्थक सब गतिविधियों के मूल कारण वही हैं।

उम्मीद उल्लाह—असिस्टेंट रजिस्ट्रार। एडमिनिस्ट्रेशन एस्टेट, शिक्षा मन्त्री तथा ए० जी० लोन के निकट। अल फतह का सदस्य होने के कारण गिरफ्तार किए गए। पाक्षिक 'इंडिया' टुडे ने अपने फरवरी 29, 1984 के अंक में पृष्ठ 29 पर लिखा "अल फतह का एक और सदस्य काश्मीर विश्वविद्यालय में असिस्टेंट रजिस्ट्रार बना"। ये मोहम्मद सुल्तान के साथ राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहे। परिसर में हुये विस्फोटों में इनका नाम लिया जाता है।

एन० ए० अलवी - (प्राध्यापक पुस्तकालय विभाग) पाकिस्तानियो से घनिष्ठ संबंध। प्रतिवर्ष पाकिस्तान जाते हैं। पिछले महीने छात्रावास के वार्डन बनाए गए हैं। परिसर में हुए बम विस्फोटों मे इनका नाम भी बताया जाता है।

डा० अमीन अंदराबी—प्राध्यापक इकबाल इंस्टीट्यूट) श्रीमती गांधी के काफिले पर बम फेंकने के षड्यंत्र में गिरफ्तार किए गए थे। मौसम की खराबी के कारण प्रधान मन्त्री का जहाज श्रीनगर नही उतर पाया और इस प्रकार भाग्यवश ही वे बच गईं।

रशीद नजकी (कश्मीरी विभाग) —जमाते इस्लामी के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

डा० रशीद सिद्दीकी —(प्रो० तथा कानून विभागाध्यक्ष) भू० पू० कांग्रेस संसद सदस्य बेगम हबीबुल्ला के दामाद इनका साला प्रधानमन्त्री सचिवालय में है। वजाहत हबीबुल्ला का मुख्य मन्त्री डा० फारूख से घनिष्ठ सम्बन्ध था। एक दिल्ली में कांग्रेस समर्थक है तथा दूसरा श्रीनर में नेशनल कान्फ्रेंस समर्थक है। इस प्रकार दोनों और से अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। अपने साले का उपयोग प्रधानमन्त्री सचिवालय से सूचनाएं डा० अब्दुला के पास पहुंचाने मे कर रहे हैं।

डा० मकबूल अहमद—(निदेशक एशियाई अध्ययन केन्द्र) इनका सेवाकाल 12-6-84 को समाप्त होना था। वे शेख अब्दुल्ला की जीवनी लिख रहे हैं। इन्होंने अपने सेंटर को इस दिशा में कार्य करने को कहा है कि कश्मीर हमेशा से मध्य एशिया का भाग रहा है अतः भारत से इसका सम्बन्ध अस्वाभाविक है। अमेरिकन सी. आई. ए. द्वारा जोर्डन में संचालित एक सेण्टर के ये अंतरंग सदस्य हैं। वे विश्वविद्यालय के उपकुलपति बनना चाहते थे, परन्तु अनैतिक कार्यों के आरोपों के कारण नहीं बन पाए।

ख्वाजा नजीब—कश्मीर के लिबरेशन फ्रंट का नियमित दूत था तथा बर्मिंघम से पत्र तथा रुपये लाता था। अब जीरों पुल के निकट एक बंगले में रहता है तथा विश्वविद्यालय में रीडर की नियुक्ति के लिए कानून विभाग में प्रयास कर रहा है।

अवसरवादी

विश्वविद्यालय में अवसरवादी प्राध्यापकों का एक ऐसा दल भी है जो नेशनल कान्फ्रेंस तथा कांग्रेस दोनों से लाभ प्राप्त करने की कोशिश करता रहता है। इनके नाम इस प्रकार हैं :—

—रियाज पंजाबी (निर्देशक पत्राचार कोर्स संस्थान),—अब्दुल सलाम भट्ट —डा० शाहिद सिद्दी की, डा० एस० ए० वानी (सभी कानून विभाग)—डा० श्रीमती मोहिनी कौल डा० टी० एन० गंज (सभी हिन्दी विभाग),—डा० एन० के तेंग (राजनीति शास्त्र)

ये सभी अपने स्वार्थों के लिए कार्य करते है तथा कश्मीर में बाहरी व्यक्तियों के खिलाफ हैं।

उपकुलपति एस० मंजूर आलम—शिक्षा मन्त्री (श्री शफी) के दबाव में मोहम्मद सुल्तान के राष्ट्र विरोधी तत्वों का समर्थन शुरू कर चुके है। श्री सुल्तान के नियमित प्राध्यापक न होने पर भी इन्होंने उनको विश्वविद्यालय की प्रमुख उपसमितियों में नियुक्त किया है।

जमाते इस्लामी के कुछ सक्रिय कार्यकर्ता जिन्हें अलीगढ़ विश्वविद्यालय से निकाला जा चुका है, इस विश्वविद्यालय में आ गए हैं। श्री अंसारी जो जीव विज्ञान विभाग में रिसर्च एसोसिएट हैं, ऐसे ही व्यक्ति हैं।

आर्य समाज के इतिहास के समर्पण समारोह की झांकियां

30 जून को आर्यसमाज अनारकली में हुए एक भव्य समारोह मे डा० सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा लिखित आर्यसमाज के तीन खण्डों को जनता को समर्पित किया गया। प्रथम चित्र में गन्धर्व महाविद्यालय की छात्राएं श्री विनय चन्द्र मौद्गल्य के नेतृत्व मे संगठन सूक्त का गायन कर रही हैं। दूसरे चित्र में श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार (सार्वभौम लन्दन आर्य महासम्मेलन के प्रधान) तीनों खण्डो को जनता के समक्ष प्रदर्शित कर रहे है। साथ में श्री शालवाले और डा० सत्यकेतु जी भी खडे है।

प्रथम चित्र मे प्रो० वेदव्यास जी, श्री सत्यदेव भारद्वाज, श्री रामगोपाल शालावाले और ओमप्रकाश त्यागी तथा अन्य विशिष्ट जन। द्वितीय चित्र मे श्रोताओ के रूप में उपस्थित आर्य नर-नारियों का एक दृश्य।

प्रथम चित्र में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले प्रसिद्ध आर्य साहित्यकार, 'दिवंगत हिन्दी सेवी' नामक ग्रन्थमाला की बृहत्-योजना के अध्वर्यु, श्री क्षेमचन्द्र सुमन का उनको भारत सरकार की ओर से पद्मश्री का अलंकरण मिलने पर माल्यार्पण द्वारा स्वागत कर रहे हैं। द्वितीय चित्र मे स्व० पं० बुद्धदेव जी विद्यालकार के छोटे भाई, संगीत की साधना को समर्पित, श्री विनयचन्द्र मौद्गल्य को पद्मश्री मिलने के उपलक्ष्य मे माल्यार्पण। तृतीय चित्र में इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान, आर्य समाज के इतिहास की बृहत् योजना की पूर्ति में डा० सत्यकेतु जी के अन्यतम सहयोगी, प्रो० हरिदत्त वेदालंकार का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन। →

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट [illegible]
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११२३/७२ डी० सी० (४०[illegible])

ग्रन्थ समर्पण समारोह में अपने विचार और शुभकामना प्रकट करने वाले महानुभाव—प्रो० वेदव्यास जी, डा० सत्यव्रत सिद्धान्तलंकार, श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री [illegible] लाल एडवोकेट, स्वामी शक्तिवेश जी, श्री रामनाथ सहगल, प्रो० रत्नसिंह जी, श्रीमती शान्ता मल्होत्रा प्रिंसिपल, श्री क्षितीश वेदालंकार।

पंजाब : तूफान के दौर से

पंजाब में सैनिक कार्रवाई से पहले और बाद में जो कुछ हुआ, उसका प्रामाणिक, ऐतिहासिक, निष्पक्ष विश्लेषण। अकाली आन्दोलन के सम्बन्ध में अनेक रहस्यों का उद्घाटन।

ले० - श्री क्षितीश वेदालंकार

फोटो कम्पोजिंग

अपने ढंग की अनूठी पुस्तक प्रेस में जा रही है

मूल्य २० रु० पेपर बैक, सजिल्द ३० रु०।

१५ अगस्त से पहले रुपया भेजने वालों को क्रमशः १५ और २५ रु० में।

प्राप्ति स्थान— आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

शहीद परिवार सहायता निधि

नाम	स्थान	राशि
46. श्री हरवंश लाल खुराना	नई दिल्ली	500-00 रु०
47. श्री जीवन दास आर्य	नई दिल्ली	200-00 रु०
48. श्री राजकुमार कपूर	नई दिल्ली	251-00 रु०
49. आर्य समाज-	निजामुद्दीन ईस्ट	101-00 रु०
50. श्री निर्मल शर्मा	नई दिल्ली	101-00 रु०
51. आर्य समाज-	पंजाबी बाग	101-00 रु०
52. जैमिनी शास्त्री	दिल्ली	101-00 रु०
53. श्री वीरेन्द्र कुमार गोयल	दिल्ली	100-00 रु०
54. आर्य समाज-माडल टाउन	गुड़गाँव	60-00 रु०
55. श्री चमन लाल खुराना	नई दिल्ली	51-00 रु०
56. प्रि० डी० ए० वी० कालेज	पिहोवा	51-00 रु०
57. श्री खेमचन्द मेहता	नई दिल्ली	50-00 रु०
58. श्री करुण सचदेव	नई दिल्ली	51-00 रु०
59. लाला रामशरण दास निधि	हांसी	501-00 रु०
60. श्री सी० ए० विद्यार्थी	नई दिल्ली	51-00 रु०
61. तीरथ राम गुप्ता	नई दिल्ली	100-00 रु०
62. आर्य समाज नागलराया	नई दिल्ली	165-00 रु०
63. श्री परमानन्द शर्मा	रेवाड़ी	51-00 रु०
64. एम० आर० शर्मा	बड़ौदा	51-00 रु०
65 श्री के० बी० गोम्बर	नई दिल्ली	101-00 रु०
66. श्रीमती जनक देवी आर्य	मुरादाबाद	101-00 रु०
67. श्री बलदेवराम अग्निहोत्री	दिल्ली	100-00 रु०
		जोड़—2989-00 रु०

नोट :—8 जुलाई के अंक में शहीद परिवार सहायता निधि क्रमसूची सं० 11 पर श्री डी० पी० सेठ द्वारा 101-00 रु. एवं क्र० सं० 14 श्री एस० एल० सूरी द्वारा रु० 500-00 दिये गए हैं।

श्री पं० चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन

आर्य पुरोहित सभा की ओर से श्री पं० चन्द्रभानु श्री सिद्धान्तभूषण का १५ जुलाई को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में सायं ४ बजे अभिनन्दन समारोह होगा। मुख्य अतिथि श्री इन्द्रकुमार गुजराल होंगे। श्री पं० चन्द्रभानु जी द्वारा लिखित महाभारत-सूक्ति-सुधा नामक ग्रंथ का विमोचन श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी करेंगे। —वेदकुमार वेदालंकार, मंत्री आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली।

शुभ-सूचना

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, पूज्य अमर स्वामी जी महाराज के प्रतिभाशाली शिष्य, आचार्य विक्रम एम० ए० ने आर्य समाजों को ज्यादा से ज्यादा समय देने का निश्चय किया है। वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि की रोचक आकर्षक एवं प्रभावशाली कथाओं के द्वारा आचार्य जी की सेवाओं से लाभ हेतु उनके पते पर पत्र व्यवहार करें।

पता – एल ६५ A साकेत, नई दिल्ली-११००१७

—रामनाथ सहगल, सभा मंत्री

संन्यासी को आवास चाहिए

एक विद्वान् सन्यासी को स्थायी तौर पर एक स्थान पर रह कर लेखन कार्य में प्रवृत्त रहने के लिए दिल्ली-नई दिल्ली के किसी आर्य समाज मंदिर में उपयुक्त स्थान की आवश्यकता है। केवल आवास की सुविधा चाहिये। अन्य किसी प्रकार का दायित्व समाज पर नहीं होगा। पत्र व्यवहार का पता —द्वारा आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

ईसाई कन्या के लिये आर्य वर

१८ वर्षीय, प्रमाणित नर्स मासिक आय १२०० रु०, सुन्दर, सुशील, ईसाई कन्या के लिए आर्य (हिन्दू) परिवार का ऐसा योग्य वर चाहिए जो दिल्ली में रहने वाला हो। पत्र व्यवहार का पता—अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१

दानवीर श्रीमती सत्यावती सूद का निधन

आर्य जनता को सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि—श्रीमती सत्यावती सूद धर्मपत्नी श्री रतनचन्द्र सूद (कार्यकर्ता प्रधान महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा) का सोमवार दिनांक ९-७-८४ को प्रातः ७ बजे स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग, शुद्धि सभा, वेद-प्रतिष्ठान, टंकारा ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं ने शोकसभा की, दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए प्रार्थना की एवं शोक प्रस्ताव पारित किया। १२ जुलाई को सांय ५ से ६ बजे तक चौथा और पगड़ी रस्म श्री सूद के निवास स्थान—१९—गोल्फलिंक, नई दिल्ली-३ पर होगी—

रामनाथ सहगल सभा-मंत्री

□

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये विदेश मे २० पौ० या ५० डालर वर्ष ४७, अंक ३२, रविवार, ५ अगस्त, १९८४ दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० इस अंक का मूल्य—५० पैसे सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० श्रावण शुक्ला ९, २०४१

सवा अरब रु० की 'हिन्दू निधि' की योजना

न्यूयार्क में विश्व हिन्दू सम्मेलन का निश्चय

न्यूयार्क में हाल ही में सम्पन्न हुए दशम हिन्दू सम्मेलन मे निर्णय किया गया है कि विश्व में हिन्दू धर्म के प्रचार प्रसार और कल्याण-कारी गतिविधियो के संचालन हेतु १० करोड़ डालर [लगभग ११० करोड़ रुपए] की 'हिन्दू निधि' स्थापित की जाये।

विश्व हिन्दू परिषद अमरीका द्वारा आयोजित इस सम्मेलन मे जिसमे विश्व भर के ५ हजार से अधिक प्रतिनिधियो ने भाग लिया था, हिन्दू और सिख को एक दूसरे का पूरक बताते हुए अलगाव व भेद भाव के बीज बोने वालो को राष्ट्रद्रोही बताया गया।

सम्मेलन मे प्रस्ताव पारित करके हाल ही मे पंजाब मे घटी घटनाओ पर खेद व्यक्त करते हुए कहा गया है कि सिख धर्म हिन्दू धर्म, और हिन्दू सिख धर्म के बीना जीवित नही रह सकता।

सम्मेलन ने एक अन्य प्रस्ताव पारित करके देश-विदेश मे रहने वाले सभी हिन्दुओ से व्यक्तिगत भेद भाव, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता, धार्मिक आस्थाओ और भाषाई विवादो से ऊपर उठकर राष्ट्रवादी ढग से एकजुट होकर कार्य करने की अपील की।

सम्मेलन ने सभी इस्लामी देशो से आग्रह किया है कि वे अपने यहाँ गैर इस्लामियो को वही स्वतत्रता प्रदान करें जो इन देशो मे इस्लाम धर्मावलम्बियों को प्राप्त हैं।

इस सम्मेलन मे भारत से भाग लेने वालो मे विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह जी मेवाड, सासद डा० कर्ण सिंह, स्वामी चिन्मयानद, स्वामी ईश्वरानद गिरि, सिख नेता डा० गोपाल सिंह, जैन मुनि श्री सुशील कुमार, दादा वास्वानी, स्वामी सच्चिदानद और श्री एच० वी० शेषाद्रि भी शामिल थे।

साम्प्रदायिक उपद्रव रोकने के लि[illegible] राष्ट्रीय नि[illegible]

आओ सत्संग में चलें

देवान् यज्ञेन बोधय

—प्रेमचंद्र श्रीधर एम० ए०—

मनुष्य इस संसार मे आकर तीनों लोको का उपभोग करता है। इसीलिए उसे तीन ही प्रकार का शरीर प्राप्त हुआ है। वह तीन प्रकार से ऋणी है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक इन—सब का अस्तित्व मनुष्य के लिए है। इसी आधार पर उसे अपने तीनो ऋणों से उऋण होने के लिए तीन प्रकार का यज्ञ करना परमावश्यक है। पृथ्वी लोक का ऋण पितृयज्ञ अर्थात आधिभौतिक यज्ञ के द्वारा, अन्तरिक्ष लोक का देवयज्ञ के द्वारा, और देवलोक का ऋण ऋषिऋण अर्थात् ज्ञानयज्ञ के द्वारा उतारना चाहिए। यही यज्ञ का आधार है।

सृष्टि स्वयं परमात्मा का निरन्तर चलने वाला यज्ञ है। इसी यज्ञ के आधार पर सब जीवो का अस्तित्व बना हुआ है। अत. यज्ञमय जीव यज्ञ के माध्यम से उस दयामय परमात्मा का धन्यवाद करता है और परोपकार की भावना से प्रेरित होकर सृष्टि के सुख आनन्द मे और अधिक वृद्धि करता है। मनुष्य का शरीर कर्म करने और कर्मफल भोगने के लिए बना है। बिना कर्म और भोग के मनुष्य रह नही सकता। अत महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज ने "यज्ञ रहस्य" मे लिखा है — "जिस कर्म से ब्रह्माण्ड की रक्षा वा स्थिति हो और सृष्टिक्रम जारी रहे, अथवा भोग केवल इसी प्रयोजन से किया जाए कि उसके द्वारा शरीर ऐसा कर्म कर सके जो ब्रह्माण्ड की रक्षा वा स्थिति के निमित्त और सृष्टि क्रम के जारी रखने में सहायक हो, वह यज्ञ है।"

वैदिक सस्कृति का आधार ही यज्ञ है और इसलिए [illegible] ति पांच प्रकार के यज्ञों के करने का विधान है।

पञ्चैतास्तु महायज्ञान्,
यथाशक्ति न हापयेत् !
—मनुस्मृति 4/21

यज्ञ की पराकाष्टा है जीव मे मैत्री भावना की उत्पत्ति और जीवन को समदर्शी स्वभाव वाला बना देना। इस लक्ष्य की प्राप्ति यज्ञ के द्वारा ही सम्भव है।

यस्मिन् सर्वाणि भूता—
न्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोह: क: शोक,
एकत्वमनुपश्यत.॥ —यजु० 40/7
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि
भूतानि समीक्षे। —यजु० 36/18

यज्ञ के द्वारा ही "आत्मवत् सर्वभूतेषु" की भावना जागृत होती है।

यज्ञ का महत्व

गीता मे कहा है :—

नायं लोकोस्त्ययज्ञस्य
कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।
—अध्याय 4/31

अर्थात् हे अर्जुन ! जो यज्ञ नही करते उनको यही लोक प्राप्त नही होता, तो फिर परलोक क्या प्राप्त होगा। महर्षि याज्ञवल्क्य से पूछा गया कि महराज यज्ञ की आत्मा क्य[illegible] [illegible]र प्राण क्या है ? उन्होंने कितना सुन्दर कहा—यज्ञ की आत्मा है "स्वाहा" और प्राण है "इदन्नमम"।

यज्ञ हमें "स्वाहा" और "इदन्नमम" की उच्चतम चेतना तक ले जाने का साधन है। यज्ञ में दी गई आहुतियां अग्नि के द्वारा उस स्थान पर पहुंचती हैं जहां ब्रह्म का निवास है, क्योंकि अग्नि को सप्त जिह्व अर्थात् सात जिह्वाओं वाली कहा है। वे सात जिह्वाएं निम्न हैं—काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सधूम्रवर्णा स्फुलिंगिनी, और विश्वरूची। प्रकाश में भी सात रंगों की किरणे मानी जाती है। यही यज्ञ मे दी हुई आहुति को वहन करती है। इनके द्वारा सब जीवो को प्राण रूप में समान रूप से यज्ञ का प्रसाद प्राप्त होता है।

यज्ञ के इस बाह्यान्तर स्वरूप के अतिरिक्त इसका अभ्यन्तर स्वरूप का सम्बन्ध उन वेद मन्त्रो के उच्चारण से होता है जिनका पाठ करते हुए हम आहुति देते हैं। मंत्र हमारे मन और प्राण को प्रभावित करते हैं और उनसे पवित्र विचारों का निरन्तर उद्बोधन होता है।

इसी कारण "**यज्ञो वै विष्णु.**" और "**यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म**" ऐसा कहा गया है।

यज्ञ के अर्थ तथा लाभ :—

यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु। यज धातु का अर्थ है, (1) देव पूजा (2) संगति करण और (3) दान। परमात्म देव से संगति करण के दो ही साधन हैं—पूजा (उपासना) और दान (आत्म समर्पण)। उपासना और आत्मसमर्पण के द्वारा ही साधक परमात्मा से संगति करता है।

उपनिषदों में भी आया है :—

त्रयो धर्मस्कन्धा., यज्ञो अध्ययनं
दानमिति प्रथमः :

—धर्म के तीन स्कन्धो मे भी प्रथम स्थान यज्ञ, स्वाध्याय और दान को प्राप्त है।

हमारी सम्पूर्ण संस्कृति का सार भी यही है कि हम "स्व" को "पर" के लिए आहुत कर दें।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते
देवान् यज्ञेन बोधय।
आयु: प्राणं प्रजां पशुं
कीर्ति यजमानं च वर्धय॥
—अथर्ववेद 19/63/1

अथर्ववेद मे स्पष्ट उपदेश है यदि—संसार में नीरोग, सुखमय और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन की कामना है तो यज्ञ के द्वारा देवों को प्रसन्न करो। यज्ञ ही आयु, प्राण, प्रजा, पशुधन, कीर्ति के द्वारा यजमान को बढ़ाता है।

संक्षेप में यज्ञ का यही महत्व है। इसलिए यज्ञ जीवन का अभिन्न अंग है।

पता—ई/36 रणजीत सिंह मार्ग,
आदर्श नगर, दिल्ली-33

सुभाषित

ओ३म् उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्तः प्रक्रामन्तः ।
पद्भ्यां दक्षिण सव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम् ।।

अथर्ववेद १२-१-२८

हम चलते हुए, ठहरे हुए या आगे बढते हुए, दाये या बाये पैर से भूमि को कष्ट न दे। अर्थात् कोई ऐसा काम न करें जिससे मातृभूमि का अहित हो।

सम्पादकीयम्

पहले भारतीय, पीछे कुछ और

अब से 36 वर्ष पहले 3 अप्रेल 1948 को संविधान सभा में यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि भारत की राजनीति मे साम्प्रदायिकता के कैंसर को प्रवेश नही करने दिया जायेगा, क्योंकि इसी साम्प्रदायिकता के कारण देश का विभाजन हुआ था और लाखों निरीह लोग मारे गये थे या बेघर बार हो गये थे। तभी संविधान सभा मे भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य बनाने का फैसला किया गया था। आजादी के शुरू में ही जो संकल्प हमने किया था, इन पिछले वर्षों मे वह किस तरह चकनाचूर हुआ है और धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त की बलि चढ़ी है, यह इतिहास की विडम्बना है।

उस समय उस प्रस्ताव मे कहा गया था कि उचित ढंग से लोक सभा को चलाने और राष्ट्र की एकता को विकसित करने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह जरूरी है कि भारतीय जीवन से साम्प्रदायिकता को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाय। संविधान सभा का यह स्पष्ट मत था कि किसी भी साम्प्रदायिक संगठन को केवल उन कामो में सम्मिलित होने की अनुमति दी जाय जिनका सम्बन्ध वास्तविक रूप से प्रमाणित धर्म, संस्कृति, शिक्षा और समाज से हो। संविधान सभा ने यह भी कहा था कि कानूनी या प्रशासनिक कदम उठाकर यह सुनिश्चित कर दिया जाय कि इसके अतिरिक्त वे संगठन किसी प्रकार की अन्य गतिविधियों मे लिप्त न हो सकें।

उक्त प्रस्ताव श्री अनन्त शयनम् आयंगर ने प्रस्तुत किया था, जो बाद मे लोक सभा के अध्यक्ष भी बने थे। डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, ज्ञानी गुरुमुख सिंह मुसाफिर, प्रो० एन० जी० रंगा और श्री [illegible]जम्मुल हुसैन जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था। उस समय यह प्रस्ताव संविधान सभा तक ही सीमित नहीं रहा, प्रत्युत कांग्रेस कार्य समिति मे भी पास किया गया। तब तक महात्मा गांधी शहीद हो चुके थे। कांग्रेस कार्य समिति ने यह स्पष्ट रूप से कहा था कि इस देश मे ऐसी किसी भी संस्था को सहन नहीं किया जायेगा जो हिंसा का प्रचार करती हो और साम्प्रदायिक घृणा फैलाती हो। उस समय संविधान सभा के एक सदस्य श्री हाजी अब्दुल सत्तार ने यह आपत्ति उठाई कि ऐसा प्रतिबंध केवल उन्ही संस्थाओं पर लगाया जाय जो हिंसा और साम्प्रदायिकता का प्रचार करते हो। तब नेहरू जी ने आवेश में आकर जो कुछ कहा उसे एक तरह से भविष्यवाणी के रूप मे माना जा सकता है।

तब नेहरू जी ने कहा था—"मैं सरकार की स्थिति इस प्रस्ताव के बारे मे स्पष्ट कर देना चाहता हूं। सरकार इस प्रस्ताव का न केवल स्वागत करती है बल्कि इस बारे में वह सब कुछ करने को तत्पर है जो उसकी सामर्थ्य में हो। इस प्रस्ताव के पीछे जो भाव है, सरकार उसे हर हालत में प्राप्त करना चाहती है। स्वतन्त्र भारत की सरकार के लिए यह अनिवार्य है। अतीत में हमारे कुछ लोगो ने इस बारे में भूल करके जो गलती की है उससे हमें बहुत हानि उठानी पड़ी है।"

उन्होंने कहा—"अतीत में परिस्थितियां बिल्कुल भिन्न थीं। परन्तु स्वतन्त्र होने के पश्चात, हमारे सामने इस नीति पर चलने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। हम देख चुके हैं कि राजनीति में साम्प्रदायिकता क्या-क्या गुल खिलाती रही है। हमें याद है कि हम कैसे-कैसे खतरों से निकलने को मजबूर हुए और किस तरह के [illegible] परिणाम हमारे सामने उभरे। इसलिये यह समझ लेना चाहिए कि धर्म और राजनीति का मिलाप बहुत खतरनाक बात है। इससे कई अस्वाभाविक और अवैध [illegible] है। अतः इसे समाप्त करना नितान्त जरूरी है। सामूहिक तौर पर [illegible] बहुसंख्यक समुदाय के लिए भी कम खतरनाक नहीं है। यदि कोई [illegible] इससे कोई लाभ उठाना चाहते हैं तो वे बड़ी भारी भूल में हैं। [illegible] इतिहास को दुबारा नहीं दुहराया जा सकता।"

[illegible] कि हमारे नेताओं ने साम्प्रदायिकता को समाप्त [illegible] सत्ता और स्वार्थ के वशवर्ती साम्प्रदायिकता [illegible] साम्प्रदायिकता के कारण भारत का विभाजन हुआ था। उस समय सोचा गया था कि इस विभाजन की दुःसह पीड़ा सहने के बाद अब यह रोग अपने आप समाप्त हो जायेगा, क्योंकि भारत ने धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्र की स्थापना का दृढ़ निश्चय किया था। पर स्थिति ऐसी हो गई जैसा कि शायर ने कहा है—"

बूट डासन ने बनाया, हमने एक मजमूं लिखा।
मुल्क में मजमूं न फैला, और जूता चल गया ।।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जब चुनावी राजनीति के अखाड़े मे बड़े बड़े पहलवान दंगल मे उतरे तो उन्होने सदा साम्प्रदायिकता के ही दाव पेच चले। सम्प्रदाय ही नहीं, चुनाव प्राय अपनी बिरादरी के वोटो का हिसाब लगाकर लड़े गए। नाम धर्म-निरपेक्षता का लिया जाता रहा, और काम सर्वथा उसके विपरीत होते रहे। और तो और, आजादी के पश्चात् एक नई प्रवृत्ति यह पैदा हो गई कि जो भी कुछ गैर-हिन्दू है, वही धर्म निरपेक्ष माना जाने लगा। जैसे मुसलमानों का या अन्य अल्पसंख्यकों का समर्थन करना ही धर्म निरपेक्षता की सबसे बड़ी कसौटी बन गई। हालांकि अल्पसंख्यको को जितना समादर और सुविधाएं भारत मे प्राप्त हैं उतनी संसार के अन्य किसी देश मे नही हैं। परन्तु यहां बहुसंख्यक अर्थात् हिन्दू होना जैसे अपराध हो गया और गैर-हिन्दू होना वरदान बन गया। जब कभी मुस्लिम साम्प्रदायिकता की बात की जाती है तब तुरन्त अपनी न्याय प्रियता सिद्ध करने के लिए हिन्दुओं की हुई-अनहुई साम्प्रदायिकता की चर्चा छेड़ दी जाती है। इस साम्प्रदायिकता का दोष कितना हिन्दुओ पर है और कितना गैर-हिन्दुओ पर, इसका फैसला करने के लिए इससे बढ़कर प्रमाण और क्या हो सकता है कि जहा-जहा मुसलमानो का बहुमत है वहीं साम्प्रदायिक दंगे होते हैं।

तभी नेहरू जी ने स्पष्ट किया था कि धर्म निरपेक्षता का अर्थ यह नहीं है कि हमारे देश मे धर्म पर आचरण नहीं होगा। उसका अर्थ केवल इतना ही है कि राज्य किसी के धर्म मे हस्तक्षेप नही करेगा और सभी धर्मों के साथ समान और सन्तुलित व्यवहार करेगा। उसका अर्थ यह भी नही होगा कि अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति अपनाई जाय। परन्तु हुआ उससे उल्टा। भारत सरकार सदा अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति पर चलती रही। कांग्रेस की तो बात ही छोड़िए, पचमेली जनता सरकार ने भी अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए अल्पसंख्यक आयोग का गठन कर डाला।

जिस तरह प्रेम से प्रेम पैदा होता है और घृणा से घृणा, क्या यह सम्भव नही है कि एक वर्ग साम्प्रदायिकता के आधार पर अपनी सारी राजनीति चलाता जाय और दूसरा वर्ग धर्म निरपेक्षता के व्यामोह मे ही फंसा रहे। चाहे बहुसंख्यक हो, चाहे अल्पसंख्यक, उन दोनो को ही एक दूसरे की भावनाओ का आदर करना सीखना होगा। इस विषय मे राजनीतिक नेता लोग गाहे-ब-गाहे हिन्दूओ को उपदेश देते रहते है, परन्तु जूता जिस जगह 'पिंच' करता है, वह जगह दूसरी है। उसकी ओर कोई ध्यान नही देता। यह ठीक है कि अल्पसंख्यको के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। पर उसका यह अर्थ कैसे हो गया कि बहुसंख्यको के साथ अन्याय किया जा सकता है। अंग्रेजो ने इस देश में "फूट डालो और राज्य करो" की नीति चलाई थी, परन्तु अब वह अनीति नही चल सकती। सत्ता हथियाने के लिए हिंसा और साम्प्रदायिकता को अब यह राष्ट्र सहन नहीं कर सकता। अतः साम्प्रदायिक दलों पर निश्चित रूप से प्रतिबन्ध लगना चाहिए। राजनीतिक दल के रूप में उनकी मान्यता समाप्त होनी चाहिए। हम चिरकाल से यह माग करते आ रहे हैं। अब जब लोक सभा में यह विधेयक फिर आया है, तो हमारी राष्ट्रीयता की कसौटी उपस्थित हो गई है। प्रश्न यह है कि हम पहले भारतीय हैं या कुछ और। आज अपने आपको पहले सिख या पहले मुसलमान कहने वाले चारो तरफ मिल जायेंगे, पर 'पहले भारतीय' कहने वाले कौन हैं— उनकी तलाश में आंखें भटक रही हैं।

बांग्ला देश के हिन्दुओं के लिए अलग राज्य

—प्रो० बलराज मधोक—

बांग्लादेश के हिन्दुओं ने भारत-विभाजन के समय भी महान बलिदान दिया और पूर्वी पाकिस्तान में भी दुःख सहे। आज वे बांग्लादेश में भी अपनी जान माल की सुरक्षा के लिए चिन्तित हैं। न तो भारत और न ही कोई और विश्व-संस्था उनके हितों की रक्षा का कोई उपाय कर रही है। इस ओर सभी को, भारत सरकार को, हिन्दू संस्थाओं को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह हमारा सभी का नैतिक कर्त्तव्य भी है। सरकार का तो कर्तव्य अनेक प्रकार से है क्योंकि बांग्लादेश के हिन्दुओं को सजा मिल रही है, वह उनकी गलती की नहीं है।

आज बांग्लादेश के हिन्दू और बौद्ध जनों को प्राणों के लाले पड़े हुए हैं, और उनकी सम्पत्ति भी लुट रही है। वहां एक प्रकार का नरसंहार हो रहा है। भारत-विभाजन के समय पूर्वी पाकिस्तान बन जाने वाले भारतीय प्रदेश में हिन्दुओं और बौद्धों की संख्या कुल आबादी का 44 प्रतिशत थी। उन्होंने 1946 के महत्वपूर्ण चुनाव में संयुक्त भारत के पक्ष में मतदान किया था, उसी का विपरीत परिणाम उन्हें भोगना पड़ रहा है। पिछले 36 वर्षों में पूर्वी पाकिस्तान की सरकारों ने और 1971 के बाद कुछ समय छोड़कर बांग्लादेश की सभी सरकारों ने जो नीतियां अपनाई उनसे वहां हिन्दुओं और बौद्धों की संख्या आधी भी नहीं रही। 1947 में वहां हिन्दू बौद्धों की संख्या डेढ़ करोड़ थी वे अब तीन करोड़ होते, पर आज वे उतने ही हैं। फिर भी वे बांगलादेश में 15 प्रतिशत तो हैं ही।

पूर्वी बंगाल में भारत-विभाजन से पूर्व 44 प्रतिशत हिन्दू बौद्धों की संख्या की तुलना में भारत के बंटवारे में पश्चिम बंगाल (या हिन्दू बंगाल) को केवल 30 प्रतिशत भूमि मिली और 56 प्रतिशत मुसलमानों को 70 प्रतिशत भूमि दे दी गई। असम के सिलहट जिले में जो असम से काटकर पूर्वी पाकिस्तान को दे दिया गया, हिन्दू-बौद्ध 49 प्रतिशत थे। चटगांव पहाड़ी क्षेत्र तो विशुद्ध रूप से बौद्ध था और खुलना जिला हिन्दू बहुल। पर वे दोनों भी पूर्वी पाकिस्तान को दे दिए गए। होना तो यह चाहिए था कि भारत-विभाजन के समय दोनों हिस्सों में जनसंख्या की पूरी तरह अदला बदली होती। इतिहास कांग्रेस पार्टी को इसके लिये कभी क्षमा नहीं करेगा कि उसने आबादी की अदला-बदली की शर्त रखे बिना भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि विभाजन से कुछ पहले से शुरू हुए साम्प्रदायिक उपद्रव विभाजन के दिन से और भड़क गए।

पाकिस्तान के निर्माण के समय कांग्रेस की इस गलती का अहसास उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल और केन्द्रीय मंत्री डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी को हो गया था। वे चाहते थे कि पाकिस्तान में शेष बच रहे हिन्दुओं की रक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं। सरदार पटेल ने तो यहां तक दो टूक बात कह दी थी कि यदि पूर्वी पाकिस्तान ने हिन्दुओं को बराबरी का अधिकार नहीं दिया और समान नागरिक के रूप में स्वीकार नहीं किया और हिन्दू शरणार्थी बनकर भारत आए तो उसे हिन्दुओं को बसाने के लिए भारत को जमीन का एक हिस्सा देना होगा।

पटेल का तो यह रुख था। परन्तु प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने न तो राष्ट्रवाद का परिचय दिया और न ही दूरदर्शिता का। 1950 के नेहरू लियाकत समझौते के अनुसार उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान के हिन्दुओं के हितों को बिलकुल भुला दिया, और इसी के विरोध स्वरूप डॉ० मुखर्जी ने नेहरू के मंत्रिमण्डल से इस्तीफा दिया था। नेहरू-लियाकत करार के बावजूद पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं की दुर्दशा जारी रही।

हिन्दुओं और बौद्धों का कत्ल उनकी सम्पत्ति जब्त करने और उनके मान सम्मान पर प्रहार की घटना चलती रहीं और 1970-71 में उनकी चरम सीमा आ गई जब एक करोड़ से अधिक शरणार्थी भारत भाग आए। तीस लाख को पूर्वी पाकिस्तान ने पहले ही मार दिया था। 1971 के भारत-पाक युद्ध का यह प्रमुख कारण था जिसके परिणाम स्वरूप पाकिस्तान का विभाजन हुआ और बांग्लादेश का जन्म हुआ। परन्तु इसके बावजूद भारत ने वहां के हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिए कुछ नहीं किया।

बांग्लादेश से अपनी सेनाएं हटाने से पहले भारत सरकार के सामने मैंने सुझाव रखा था कि वहां के हिन्दुओं के लिए शान्ति और सुरक्षा की गारंटी प्राप्त की जाए और पहले भारत भाग आए हिन्दुओं को वापस जाने पर अपनी सम्पत्ति वापस दिलाई जाए। उनका समुचित पुनर्वास हो। वहां के हिन्दू शरणार्थियों के लिए पूर्वी पाकिस्तान का बंटवारा हो जाना चाहिए था। कुछ अन्य सुझाव भी थे जो इस प्रकार हैं।

कुछ सुझाव

भारत और बांग्लादेश की आर्थिक और सीमाशुल्क सम्बन्धी निकटता बनाने के लिए एक ही मुद्रा रखी जाए, यह आर्थिक एकीकरण पांच वर्ष में पूरा कर लिया जाए। शान्ति और मैत्री में बाधक कारणों को खत्म कर दिया जाए जिससे पुराने निकट के सांस्कृतिक और [illegible] सम्बन्ध फिर से मजबूत हो सकें। खुली सीमा हो, व्यापार भी अबाध हो। एक सन्धि सम्पन्न की जाए और दोनों देशों का एक ही परामर्श तंत्र हो जिससे आपसी विवाद उसे ही सौंपे जाएं और किसी भी समस्या को अन्तरराष्ट्रीय न बनाया जाए।

मुजीब के काल में जो समझौते हुए उनमें डेढ़ करोड़ हिन्दुओं के हितों के लिए कोई प्रावधान नहीं रखा गया। इन हिन्दुओं का दोष यही था कि उन्होंने 1947 में भारत माता के टुकड़े करने का पक्ष नहीं लिया था, उन्होंने ही बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए तन-मन-धन दिया। उनकी उपेक्षा करना अथवा उन्हें बांग्लादेश के शासकों की दया पर छोड़ देना उचित नहीं था। 1975 में मुजीबुर्रहमान की हत्या के बाद से उन हिन्दुओं पर अकथनीय अत्याचार होने लगे और बांग्लादेश के निर्माण में उनके योग को बिलकुल भुला दिया गया।

भारत को बांग्लादेश की मुक्ति के समय ही व्यापक सन्धि में फरक्का बांध रेल परिवहन आदि पर निश्चित समझौते कर लेना चाहिए थे। हो सकता है कि प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने मुजीब के शब्दों पर भरोसा किया, जैसे जवाहर लाल नेहरू ने 1954-55 में चीनी प्रधानमंत्री चाउ एन लाई की बातों में आकर पंचशील समझौता किया और तिब्बत पर चीन की सम्प्रभुता स्वीकार कर उस प्रदेश को चीन का अंग मान लिया। मुजीब की हत्या के बाद से बांग्लादेश में जो घटनाएं हो रही हैं उनसे तो कट्टर नेहरूवादियों एवं धर्मनिरपेक्षता समर्थकों को भी आघात लगा है।

इस्लामी राज्य

बांग्लादेश के सभी शासकों ने इस नीति में कोई कसर नहीं छोड़ी। वे सभी अरब देशों के पेट्रो डालरों की आशा में इस्लाम की कट्टरता के प्रचारक बन गए। 1982 में सत्ता प्राप्त करने वाले जनरल इरशाद ने तो देश को इस्लामी राज्य घोषित कर दिया और हिन्दुओं की सम्पत्ति एवं धर्म की सुरक्षा का अब तो कोई प्रश्न ही नहीं रहा। इरशाद ने मस्जिदों और मुल्लाओं को निर्देश दिए कि बांग्लादेश में कोई भी गैर मुस्लिम इस्लाम के दायरे से बाहर न रहे। सऊदी अरब से पूरी सहायता प्राप्त कर अब बांग्लादेश की मस्जिदों के इमाम आदि सरकारी अधिकारियों के समान वेतनादि लेते हैं और सरकार के आदेशों का पालन करते हैं।

बांग्ला देश ने अब उसी पाकिस्तान से निकट सम्बन्ध बना लिए हैं जिसके अत्याचारों से तंग होकर उससे मुक्ति का संघर्ष किया। उसने अब उसी भारत से वैमनस्य बना लिया है जिसने उसे मुक्त कराने में अपने सैनिकों का बलिदान किया। [illegible] हिन्दुओं की [illegible] पर [illegible] [illegible] जिन्हें मुक्ति संग्राम में कुचलकर [illegible] किया।

[illegible]

है। उसने डेढ़ करोड़ हिन्दु बौद्धों का भविष्य अन्धकारमय बना दिया है। अपने दशक के अन्दर या तो ये सब अपने धर्म त्यागने पर मजबूर हो जाएंगे जैसा पाकिस्तान में हुआ है, अथवा उनका नाम निशान नहीं रहेगा।

भारत की सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। यह समस्या राजनीतिक है और परिस्थितियों को देखते हुए इसके समाधान के लिए एक शक्तिशाली राजनीतिक आन्दोलन खड़ा करना होगा। बांग्लादेश के हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिए आवश्यकता होने पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भी शिकायत भेजनी पड़ेगी और अन्य विश्व संगठनों, मंचों, से उसे उठाना पड़ेगा। यह मांग भी होनी चाहिए कि बांग्लादेश से आने वाले हिन्दुओं को विश्व संगठनों द्वारा शरणार्थी का दर्जा मिले जिससे उनकी सहायता के लिए अन्य अनेक देश और संगठन आगे आसकें उन्हें उसी प्रकार माना जाए जैसे अफगानिस्तान फिलस्तीन और तिब्बत के लोगों को माना जाता है। बांग्लादेश के हिन्दुओं के लिए अलग राज्य की मांग की यही बुनियाद होगी।

पता,—जे-394 शंकर रोड, नई दिल्ली-110060

●

दो छात्र योग्यता सूची में

डी०ए०वी० हायर सैकण्डरी स्कूल अजमेर के श्री देवेन्द्र कुमार मिश्र एवं संजीव कुमार जैन ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की विज्ञान एवं वाणिज्य की परिक्षा में प्रथम दस छात्रों की योग्यता सूची में पांचवा एवं चौथा स्थान प्राप्त किया है। —रामसिंह, प्रधानाचार्य डी० ए०वी० उ० मा०-विद्यालय, अजमेर

—आर्य समाज [illegible] नई दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन में निम्नलिखित अधिकारी चुने गए: प्रधान: श्री वीरेन्द्र कुमार, उपप्रधान: श्री [illegible] चन्द, मन्त्री: श्री [illegible] श्री जय प्रकाश, [illegible] [illegible]

—[illegible]

[illegible]

—[illegible]

राष्ट्रीय एकता के लिए सतर्कता आवश्यक

—श्री हरिदास ज्वाल, मंत्री बिहार आर्य प्रति० सभा, पटना—

पंजाब में अकाली सिक्खों ने गत दो वर्षों से अपने अधिकारों और मांगों के बहाने एक विचित्र स्थिति उत्पन्न कर दी थी। हिन्दू धर्म स्थानों को अपवित्र करना, उनसे घृणा उत्पन्न करने की हरकतें करना, गाय का सिर काटकर पवित्र सार्वजनिक स्थानों में रखना, आदि ऐसी हरकतें हुई जिससे वातावरण विषाक्त हो गया। मार-काट, लूट-पाट, आगजनी, दिनदहाड़े हत्या, नारियों की भी हत्यायें, बंक लूटना, सरकारी अस्त्र-शस्त्र गायब करना जैसी घटनाओं ने मानवता को कलंकित कर दिया। ऐसी हरकतें कोई धार्मिक सम्प्रदाय, और सुसंस्कृत नागरिक कदापि नहीं करता है।

भारत एक महान देश है असामी, बंगाली, उड़िया, पंजाबी, महाराष्ट्री, गुजराती, मद्रासी, कर्नाटक आदि भारतीयता के अटूट अंग है, एक को दूसरे से अलग मानना पृथकतावादी भावना है जो राष्ट्रीयता के लिये घातक है, काश्मीर में उग्रवादी जोर पकड़ रहे हैं। पाकिस्तान और बंगलादेश अपनी हीनताओं का बोझ किसी न किसी प्रकार भारत पर लादना चाहते हैं। वे भारत से काम भी लेते हैं, पीठ में छूरा भी भोंकते हैं

इन परिस्थितियों में राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता बढ़ जाति है। पर भारतीय राजनीतिक पार्टियों की हरकते, शासकीय दल के विरोध में ऊट-पटाग आलोचना करना और शासन पर तोहमत लगाना ही रह गया है। सुझाव सहयोग और संगठन की भावना का काम ही नहीं।

देश को सुदृढ़ रखने को हमारे नीतिकारों ने साम, दाम, दण्ड और भेद की सारगर्भित नीति अपनाने की अनुशंसा की है। ये नीतिया कब और कैसे चलायी जाएं, यह तो शासक पर निर्भर है। राजनीति भक्ति और कीर्तन के सहारे नहीं चलती। उसमे शान्ति, सन्धि, विग्रह,'लोभ, न्याय, कठोरता, दण्ड और क्रान्ति की समय के अनुसार जरूरत पड़ती है।

भारत की धर्म निरपेक्षता की नीति के कारण कभी-कभी राष्ट्रीयता पर भी आंच आयी है। पड़ोसी देशों को सहायता के लिये वह सदा तैयार रहता है। उसने बंगलादेश के नागरिकों को मुक्ति दिलायी। श्रीलंका में भी वह शान्ति स्थापना का पूर्ण प्रयत्न कर रहा है, परन्तु वहां के नागरिकों की सुरक्षा भी चाहता है। तिब्बतियों की स्वतंत्रता का अपहरण कर चीन ने उनको बेघर-बार कर दिया, उनकी नारियों को चीनी नागरिकों से वैवाहिक संबन्ध जोड़ने को मजबूर किया गया उनके धर्म-कर्मो को मटियामेट करने में चीन को जरा दया न आयी, क्षमा उसने सीखी ही नहीं तब वह समाजवाद हुआ या साम्राज्यवाद' परन्तु भारत ने उनको शरण दी। यह थी भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम को मानने वाली वैदिक संस्कृति।

पंजाबियों की प्रवृति

यह मशहूर है के कि सिक्ख और पंजाबी कभी भीख नहीं मांगते। अपनी संस्थाओं में उनकी दान शीलता की भी प्रशंसा है। साथ ही उनकी संघर्षशीलता का भी सर्वत्र नाम है। आपस में भी वे खूब लड़ते और झगड़ते है, अपनी संस्थाओं मे एक दल दूसरे से प्रति दिन लड़ता है। परन्तु दूसरों के मुकाबले मैं वे सदा एक हो जाते हैं। खालिस्तान की मांग पर राष्ट्रवादी सिक्ख भी साम्प्रदायिक बन रहे हैं। सरकारी नौकरी, साहित्यिक सेवा, सैनिक सेवा, व्यापार कार्य आदि सभी क्षेत्रो में संलग्न सभी सिक्खो की नजर वही अटकी है, कुछ प्रकट, कुछ लुके-छिपे, खालिस्तान स्थापना की हामी भर रहे हैं।

पाकिस्तान के निर्माण के समय जो साम्प्रदायिक दंगे हुए उनमें सिक्खों और पंजाबियों पर भंयकर विपत्ति आई। उस समय भारत से अन्य प्रदेश वासियो ने उनकी भरपूर मदद की और सरकार ने भी पूरा सहारा दिया। फलत: उत्तर प्रदेश, और बिहार के अनेक नगरों तथा अन्य औद्योगिक नगरों मे वे सुस्थापित हो गए। पटनासिटी सरकार की कृपा से पटना साहिब हो गया परन्तु पटना को कोई आज पाटलीपुत्र न बना सका। हिन्दुओ ने सिक्खो से कोई भेदभाव नही किया। परन्तु खालिस्तानियो ने जो हिन्दु बिरोधी लहर चलाई उसकी प्रतिक्रिया देश के अन्दर में ही नही, बल्कि विदेशों में संयुक्त राष्ट्र कनाडा और संयुक्त राज्य मे भी फैल रही है, इंगलैंड मे सिक्खों कि हरकतो से वहां के निवासी पहले से चौकन्ने हैं, सरकारी पदो और सेना मे उच्च स्थानों पर रह कर भी अनेकों ने अपने पद की मर्यादा नष्ट कर दी। विश्व प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर को अधार्मिकता का अखाड़ा बना दिया। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि घरवाले और बाहर वाले दोनो खालिस्तान बनाकर भारत को खंड-खंड करना चाहते थे। यदि अकालियों और पाकिस्तानियों का षड्यंत्र सफल हो जाता तो देश पर महान विपत्ति आ जाती। अत: अकालियों को अपने देशद्रोह का फल भोगना पड़ा, सरकार जागी तो इससे स्वयं सिखों का ही हित हुआ। पंजाब बच गया पंजाब के हिन्दुओं को तो राहत मिली ही। सैनिक कारंवाई एक वरदान बनकर आयी। अब बिना पूर्ण शांति स्थापना करने और स्वर्ण मंदिर को सच्चे अर्थ में धर्म मंदिर बनाये बिना सेना की वापसी कदापि नहीं होनी चाहिये।

हिन्दुओं के मंदिर और मुसलमानों की मस्जिद, ईसाइयों के गिरजे, बौद्ध मंदिर, जैन मंदिर और पारसी मंदिर सभी की तलाशी सरकार को लेनी चाहिए। जब महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह जम्मू कश्मीर के मनाने की योजना बनायी जा रही थी, तब उग्रवादियों ने हजूरी बाग के आर्य समाज मदिर और कन्या विद्यालय के सम्पूर्ण भवन को जलाकरराख कर दिया। लाखो की सम्पत्ति नष्ट हुई। यह कितना घृणित कार्य है। अगर इस प्रकार की हरकत किसी मस्जिद के साथ होती तो क्या होता। विभाजन के बाद पाकिस्तान ने पंजाब और सिन्ध में आर्य समाज की शैक्षणिक संस्थाओं और समाज मंदिरो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हुयी। आर्य समाज ने सबकुछ सहन किया। फिर भी आर्य समाज मानवता की सेवा करता रहा।

आर्य समाज न मुसलमानो का दुश्मन है न सिक्खों या अकालियों का। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में सत्य को प्रकाश में लाने के लिये सभी सम्प्रदाय, हिन्दू मुसलिम, ईसाई, सिक्ख, जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव, लिंगायत, वट, चार्वाक आदि के अन्दर कुरीतियो, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का खंडन मानव हित के लिये किया है। उनका किसी से वैमनस्य नही था। वे राजाओं का भी खडन करते थे परन्तु उनसे द्वेष नहीं करते थे। वे महान योगी और महर्षि थे

आर्य समाज तो नानकदेव और दसो गुरूओं की प्रशसा गीत सदा से गाता चला आ रहा है। सभी गुरू हिन्दू धर्म के रक्षक थे। आर्य समाज के मंचो से सिक्ख गुरूओं और राजा रणजीत सिंह के चारित्रिक गुणों और कार्यो की प्रशसा के गीत गाये जाते रहे है। नानकदेव के अनेक सिद्धान्त और उनकी प्रचार शैली में आर्य समाज से समानता है।

आर्य समाज का दृष्टिकोण सदा राष्ट्रीय रहा है। पृथकतावादी सदा आंदोलन के विरोध में आर्य समाज आगे रहा है और रहेगा। वह मानवता का प्रचारक है। महर्षि दयानंद ने 1877 ई० से ही पंजाब को प्रचार का केन्द्र बनाया था। इसीलिए आर्य समाज का प्रचार वहां ज्यादा हुआ। गुरू विरजानंद का जन्म-स्थान करतारपुर पंजाब में ही था। पंजाब आर्य समाज और उनके अनुयायियों का गढ़ है। अनेक सिख वर्षों तक आर्य समाज के प्रधान और मंत्री रहे हैं। सिक्ख घरों में हवन-यज्ञ भी होते रहे हैं। सिक्ख और हिन्दू परिवारो मे शादी-विवाह तो आज तक होते हैं। शहीद भगत सिंह के दादा अर्जुन सिंह, पिता किशन सिंह चाचा अजित सिंह आर्य समाजी थे। स्वंय भगत सिंह आर्य कुमार सभा के सदस्य और डी०ए०वी० के छात्र रहे थे। गुरूद्वारों में नित्यप्रति जाकर हिन्दु अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं। सभी हिन्दू गुरुद्वारों का पूरा सम्मान करते रहे हैं। हिन्दुओं की ओर से कोई दुर्भावना नहीं। आर्य समाज के प्रमुख सन्यासी स्वामी स्वतंत्रता नंद सिक्ख परिवार के ही थे।

पर अकालियों की उग्रवादी नीति और देशद्रोह असह्य है। सिख सैनिकों मे विद्रोहात्यक भावना फैलाकर देश में अराजकता लाना अपराध है। बिहार के रामगढ़ की सैनिक छावनी से अस्त्र-शस्त्र और विशाल ट्रकों को लेकर भागने की साजिश कितनी भयंकर थी। अगर अन्य भारतीय सैनिक सचेष्ट नही होते और उत्तर प्रदेश की सेना उनको रोकने की तत्काल कारंवाई न करती, तो कितना अनर्थ हो जाता। अभी भी कुछ देश अकाली सिक्ख भारत विरोधी हवा विदेश में फैला रहे हैं। कुछ राजनीतिक पार्टियां भी राष्ट्रीय हित की बात न सोचकर, वोट की राजनीति और कुर्सी पाने के लिये उल्टी-सीधी बातें करके लोकप्रियता प्राप्त करना चाहती हैं। विष की अग्नि से कही अमृत की बूदों को पाने की आशा हो सकती है।

हमें बाहर भीतर सभी जगह सतर्क रहना होगा।

पता—बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, नया टोला, पटना—४

प्रवेश सूचना

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी जिला भिवानी मे प्रभाकर, प्राज्ञ, विशारद व शास्त्री का प्रवेश प्रारम्भ है। छात्राओं के लिये छात्रावास की व्यवस्था है। शास्त्री को डिग्री बना दिया गया है। उत्तीर्ण छात्र हर प्रकार की नौकरी के योग्य माने जायेगे। – ऋषिपाल आर्य आचार्य।

नया आर्य समाज

दिल्ली: आर्य समाज साकेत को 5 वर्ष पूर्व डी० डी० ए० द्वारा अलाट भूमि पर एक शैड निर्मित कर दिया गया है। अब सत्संग इसी शैड मे होते हैं। इस भूमि पर आर्य समाज भवन बनाने हेतु कलात्मक नक्शा तैयार हो गया है। भवन बनाने के लिये दानी सज्जनों से धन देने की प्रार्थना है।

—लक्ष्मीराम कटारिया, प्रधान

स्व० स्वामी करपात्री जी आदि का व्यावहारिक ज्ञान

—श्री अमर स्वामी सरस्वती—

स्व० करपात्री जी ने ऋषि दयानन्द के लेखों के विरुद्ध एक ग्रन्थ अनेक पण्डितों द्वारा लिखाया था। उसका नाम था—'वेदार्थ पारिजात' उसका मूल्य १८०) रुपया बताया गया था। मैं तो धनाभाव के कारण उसको ले ही नहीं सकता था। किसी सभा समाज या धनी आर्य पुरुष ने वह लेकर मेरे पास भेजा नहीं। यदि वह ग्रन्थ मुझको मिलता तो मैं उसके बहुत से भाग का खण्डन करता।

विदुषी आचार्या पुत्री प्रज्ञादेवी जी के पास मैंने एक दिन वह देखा था। उसमें मैंने यह लिखा देखा कि—

"ईश्वर एक है और उस ही की उपासना करनी चाहिये" यह बात स्वामी दयानन्द जी ने बाइबिल और कुरान से सीखी थी।"

मैंने वेदार्थ पारिजात की इन पंक्तियों के विरुद्ध—"आर्य जगत्" साप्ताहिक पत्र में एक लेख दिया। उसका शीर्षक था—

(1) श्री स्वामी करपात्री जी का शास्त्र ज्ञान—

मैंने वेदादि सत्य शास्त्रों के बहुत से प्रमाण देकर बतलाया कि वेदादि सत्य शास्त्रों में इसके असंख्य प्रमाण हैं कि—

"ईश्वर एक है और उसकी ही की उपासना करनी चाहिये।"

अब "आचार्य विश्वश्रवा" जी द्वारा ज्ञात हुआ कि 'वेदार्थ पारिजात में"—"आधत्त पितरो गर्भम्"—इस मन्त्र को लेकर लिखा है। स्वामी दयानन्द जी ने इस मन्त्र के भावार्थ में बतावा है कि—पिता अपने बालक को पुष्प माला पहनाकर गुरुकुल में प्रविष्ट कराने को ले जाय। लेखक ने लिखा है कि—"स्वामी दयानन्द को इतना भी ज्ञान नहीं था—ब्रह्मचारियों को फूलों की माला पहनने का निषेध है।"

वेदार्थ पारिजात" के लेखकों ओर लिखाने वालों को इतना व्यावहारिक ज्ञान नहीं है कि—घर के नियम तथा गुरुकुल के नियमों में अन्तर होता है। उदाहरण के लिये—मैं दो बातें लिखता हूं—

(१) ब्रह्मचारियों के लिये नियम है कि—

"उपरि शय्यां च वर्जय"

चारपाई पर सोना ब्रह्मचारी के लिये निषिद्ध है। पर श्री करपात्री जी आदि के ज्ञान में यह बात भी कभी आई कि नहीं, कि—जन्म से गुरुकुल को प्रस्थान करने से पहले बालक चारपाई पर नहीं सोता था? क्या घरों में भी यही नियम है कि—जन्म से सब बालक भूमि पर सुलाये जायें? सर्वत्र सब ही बच्चे आदि चारपाई पर ही सोते हैं। गुरुकुल में जाकर चारपाई पर सोना छोड़ देते हैं।

(२) दूसरी बात यह है कि—गुरुकुलों में या अन्यत्र भी ब्रह्मचर्य व्रत लेने वाले के लिये नियम है कि

"तैलाभ्यङ्गं च वर्जय"

ब्रह्मचर्य व्रत धारी को शरीर पर तेल नहीं मलना चाहिये अर्थात् तेल की मालिश नहीं करनी चाहिये।

श्री करपात्री जी तो शरीर छोड़ कर चले गये। वह जीवित होते तो उनसे पूछता कि—तेल न मलने का नियम बालक के लिये जन्म से ही है या वेदारम्भ के पश्चात् है? सभी मनुष्य जानते हैं कि—'बालक को दाइयां और माइयां सर्वत्र तेल मलती हैं।

यह घरों के सामान्य नियम हैं जो गुरुकुलों में जाने पर बदल जाते हैं। गुरुकुल में प्रविष्ट कराने के लिये—पिता अपने बालक को उल्लास के साथ माला पहना कर गुरुकुल में ले गया तो क्या पाप हो गया? गुरुकुल में जाकर बालक गुरुकुल के नियमों का पालन करेगा। क्या करपात्री जी आदि में घरों के कहीं यह नियम भी हैं कि—जिस बालक को ब्रह्मचारी बनाना है उसको जन्म से ही भूमि पर सुलाया जाय?

—प्रसूता स्त्री भी भूमि पर ही सोवे और बालक को बिल्कुल कभी तेल न लगाया जाव?

यह नियम कहीं भी नहीं है। अतः स्पष्ट है कि—गुरुकुल के नियम और हैं, गुरुकुल से पहिले घर के और।

श्री करपात्री आदि ने यह संकल्प कर रखा था कि स्वामी दयानन्द के लेखों का खण्डन अवश्य करना है, चाहे वे कितने ही अच्छे हों। **"येन केन प्रकारेण कुर्यात् सर्वस्य खण्डनम्"**

पता—वेदकुटीर, कवि नगर
गाजियाबाद

इह ब्रवीतु य उ तच्चिकेत

यज्ञ विषयक प्रश्नों का स्पष्टीकरण

म. म. आचार्य विश्वश्रवा व्यास, वेदाचार्य, एम. ए.

संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण पर मैंने आठ प्रश्न विद्वानों के विचारार्थ आर्य जगत् में प्रकाशित किये। मैं 'यज्ञ महाभाष्यम्' लिख चुका हूं, पर कुछ बातें अभी विचार कर लिखनी शेष हैं।

इस लेख के छपने पर बहुत पत्र मेरे पास आये।

१. कोई लिखता है कि आज तक आप महर्षि की बातों का समाधान करते रहे, अब शंका होने लगी?

२. कोई कहता है कि जब आप ही शङ्का करने वाले बन गये तो समाधान कौन करेगा?

३. किसी-किसी ने कुछ समाधान लिखे भी।

इन को देखकर मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि मैं अपने प्रश्नों को स्पष्ट नहीं कर सका। अतः इस लेख से प्रश्नों का स्पष्टीकरण करता हूं।

'इद्ध'

१—"अयन्त इध्म आत्मा" मन्त्र में—'इध्यस्व वर्धस्व च इद्ध वर्धय च'

यहां यह 'इद्ध' पद कहां का रूप है। पाणिनि के सूत्रों से सिद्धि बताने की आवश्यकता नहीं है। पर 'इद्ध' कहां का रूप है, यह तो पता चले।

१. क्या निपात समुदाय है इत्+ह। जैसा श्री रामनाथ वेदालंकार बताते हैं।

२. या यह नाम रूप हैं? यदि नाम रूप है तो कौन-सी विभक्ति, कौन-सा वचन है।

३. या यह धातु रूप है। यदि धातु रूप है तो कौन-सा लकार, कौन-सा पद, कौन-सा पुरुष, कौन-सा वचन है। तथा यह 'इद्ध' पद शुद्ध रूप है या कारित रूप है। कुछ तो पता चले।

साधारण दृष्टि से देखने से पता चलता है कि जैसे—वर्धस्व की प्रतिद्वन्द्विता में वर्धय है वैसे ही इध्यस्व की प्रतिद्वन्द्विता में 'इद्ध' है।

इस मन्त्र पर एक मात्र टीका हरदत्त मिश्र की है। वह लिखते है—

"इद्ध णिज्लोपोऽत्र द्रष्टव्यः। इन्धय दीपय।" (आश्वलायन गृह्यसूत्र व्याख्या हरदत्तमिश्रकृता)

इस से प्रतीत होता है कि हरदत्त 'इद्ध' को 'ञि इन्धी दीप्तौ' धातु का मध्यम पुरुष एक वचन प्रयोग बता रहा है। अर्थ णिच् का लोप है। पर रूप सीधा इन्ध् धातु का है। मध्यम पुरुष एक वचन में परस्मैपद सिप् और आत्मने पद में थास् प्रत्यय लगता है। थास् हो तो संभावना ही नहीं है। पर सिप्' में सिप् कहां गया। यदि 'हि' होकर लोप हो गया, और 'इन्ध' धातु के न का लोप भी मान लें, तो भी 'द्ध' कैसे हो गया। 'अकार' बीच में क्या 'शप्' है। या क्या। कुछ समझ नहीं आता। बिना सूत्र के ही सिद्ध हो, तो भी कोई हानि नहीं, पर कुछ पता तो चले 'ध' का द्ध होना। अकार का उपजन किस का विकार है। यह है प्रश्न।

'इद्ध' का 'इत्+ह' करके अर्थ पं० भीमसेन संस्कार चन्द्रिकाकार की बुद्धि की उपज है। इसी का अनुसरण द्वितीय संस्कार चन्द्रिकाकार पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने किया। उसी को पं० रामनाथ वेदालंकार लिख रहे हैं। वस्तुतः ये तीनों विद्वान् होने के नाते 'इद्ध' को धातु रूप नहीं लिख सके। वे तीनों समझते थे कि यह धातु रूप नहीं बन सकता।

संस्कार समुच्चयसार व मदनमोहन विद्यासगर जी ने अर्थ ठीक किया (इध्यस्व) चमक, (इद्ध) चमका। अर्थ यही स्वारसिक है। पर प्रश्न है इद्ध की सिद्धि का।

वैदिक पदानुक्रम कोषकार ने समस्त वैदिक साहित्य के प्रत्येक शब्द पर प्रकाश डाला है, पर 'इद्ध' पद पर मौन धारण कर लिया है।

पं० विश्वबन्धु शास्त्री लाहौर ने, अपने ग्रन्थ दैव यज्ञ प्रदीपिका' में और पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने

(शेष पृष्ठ १० पर)

किशोर कुंज

सगर माथा के माथे पर कैसे पहुंची

—बचेन्द्री पाल

पर्वतों पर चढ़ने का शौक मुझे बचपन से ही था। उत्तरकाशी से 12 किलोमीटर पहले मेरा गांव है। पास ही एक पहाड़ी रास्ता गंगोत्री तक जाता है। जब मैं 7 वर्ष की थी, अपनी मां के साथ कभी-कभी इस रास्ते से गुजरती थी। तब विचित्र-सी पोशाक पहने कुछ लोग दिखाई देते थे। वे 'कुली' नहीं लगते थे, फिर भी उनकी पीठ पर सामान लदा होता था। मैं उनके बारे में मां से पूछती, तो मां हमेशा एक ही उत्तर देतीं—"ये सब हिमालय की चोटियों पर चढ़ने जा रहे हैं।"

मैं सोचा करती—'बड़ी होकर मैं भी हिमालय की चोटियों पर चढूंगी।' मगर बड़े होने का इंतजार मैं न कर सकी। जब भी अवसर मिलता, मैं आस-पास की ऊंची-नीची पहाड़ियों पर चढ़ती। मैं जानना चाहती थी, इन ऊंचे-ऊंचे पर्वतों के ऊपर क्या है?

देहरादून के डी०ए०वी० कालेज से संस्कृत में एम०ए० किया। फिर श्रीनगर, गढ़वाल से बी०एड० किया। घरवाले चाहते थे, मैं शादी कर लूं या काम-धंधा तलाश करूं। शादी मैं करना चाहती न थी। नौकरी कोई मिली नहीं। हारकर गाव और घर वालों की मर्जी के खिलाफ मैंने उत्तरकाशी के नेहरू पर्वतारोहण संस्थान में दाखिला ले लिया। सभी कहने लगे—"कैसी बेशर्म लड़की है।"

एवरेस्ट अभियान पर जाने से पहले की मेहनत याद आती है, तो अजीब-सा लगता है। अभ्यास के लिए मैं रोज सबेरे उठकर 20-25 किलो वजन के पत्थर पीठ पर लाद, देवी घाट तक जाया करती थी। देवी घाट मेरे गाव से दो किलोमीटर की चढ़ाई पर है। वहां से लौटती, तो मेरी पीठ पर लकड़ियों का एक वजनी गट्ठर होता था। लौटकर 6 किलोमीटर की दौड़ लगाया करती थी। इस तरह मेरे अंदर पर्वतों से लड़ने की हिम्मत और शक्ति पैदा हुई।

हिमालय पर्वत की अनेक छोटी-मोटी चोटियों पर चढ़ने का मैंने अभ्यास किया। कई शिखरों पर विजय भी पाई। फिर मुझे बुलाया सगर माथा यानी एवरेस्ट ने।

सचमुच मैंने एवरेस्ट की चोटी पर विजय प्राप्त कर ली। आज भी ऐसा लगता है, जैसे सपना देखा हो। एवरेस्ट पर मैं पूरे 46 मिनट रही। वहां से चारों ओर के दृश्य का वर्णन मैं कर नहीं सकती। सामने देखती रही, तभी तक ठीक रहा। नीचे दृष्टि गई, तो घबरा उठी। सोचने लगी—'यहां से नीचे उतरूंगी कैसे?

हमारा तीसरा कैंप 25 हजार फुट की ऊंचाई पर लगा था। वहीं से हमें सीधे एवरेस्ट पर पहुंचना था। एक दिन भयंकर बर्फानी तूफान आया। समूचा कैंप बर्फ में दब गया। सच, भगवान ने ही हमें बचाया उस दिन।

खुम्बू आइस फाल का नाम तो आपने सुना ही होगा। जब हम उसे पार कर रहे होते थे, तो कुछ पता नहीं चलता था, अगले कदम पर क्या हो जाए। कभी तो मुझे नींद आने लगती थी। किंतु ऐसे में एक हल्की-सी झपकी भी हमेशा की नींद सुला सकती थी, इसलिए नींद को भगाना पड़ता था। विकट पहाड़ी चढ़ाई के साथ-साथ भूख-प्यास और नींद पर काबू पा हमने 23 मई को एवरेस्ट पर विजय पा ही ली।

ऋषि की दयालुता

स्वामी दयानन्द की वाणी के जादू से मूर्तियों को जल में प्रवाहित करने का सिलसिला जोर पकड़ गया। तब जिन लोगों की आजीविका का साधन मूर्ति पूजा थी, उन्होंने निराशोन्मत्त होकर एक ब्राह्मण के द्वारा स्वामी जी को पान मे जहर दिलवा दिया। स्वामी जी को ज्यों ही इसका आभास हुआ कि विष दिया गया है, त्यों ही उन्होंने योग की न्यौली क्रिया के द्वारा सब जहर बाहर निकाल दिया।

यह घटना जब वहां के तहसीलदार सैयद मुहम्मद को पता लगी तो उसने अपराधी को गिरफ्तार कर लिया। यह पूछने के लिए वह स्वामी जी के पास आया कि उस दुष्ट को क्या दण्ड दिया जाए। उसने सोचा था कि स्वामी जी इस बात से प्रसन्न होंगे। पर स्वामी जी ने मुंह फेर लिया और तहसीलदार से बात नही की।

तहसीलदार स्वामी जी का भक्त था, उसने स्वामी जी से इस नाराजगी का कारण पूछा। तब स्वामी जी ने जो उत्तर दिया, वह इतिहास मे स्वर्णाक्षरो में लिखने योग्य है। वह उत्तर क्या था, स्वामी जी के जीवन-दर्शन को समझने की कुंजी है। उन्होने कहा—

"मैं संसार को कैद कराने नहीं आया, वरन् कैद से छुड़ाने आया हूं। यदि कोई दुष्ट अपनी दुष्टता न छोड़े, तो हम श्रेष्ठता क्यों छोड़ें।"

इस उत्तर को सुनकर तहसीलदार दंग रहा गया और विष देने वाले उस ब्राह्मण को रिहा कर दिया। यह थी स्वामी जी की दयालुता।

—घनश्याम आर्य 'निडर'

हास्य विनोद

अध्यापक—बच्चो, सूर्य दूर है या आगरा?
छात्र—सर आगरा दूर है।
अध्यापक—कैसे?
छात्र—क्योंकि हमें सूर्य तो दिखता है, परन्तु आगरा नहीं दिखता।

अध्यापक—क्यों...रितू, कुत्ते पर निबंध लिख कर लाए?
रितु—सर जैसे ही मैंने कुत्ते पर कापी रखी वैसे ही वह भाग गया।

पहला मूर्ख—शेर अण्डे देता है।
दूसरा मूर्ख—नहीं, शेर बच्चे देता है।
तीसरा मूर्ख—तुम दोनों गलत हो। वह जंगल का राजा है। जी चाहे तो अण्डे दे, और जी चाहे तो बच्चे दे।

रोगी—मेरे पेट में दर्द हो रहा है। डॉक्टर साहब कोई अच्छी दवा दीजिए।
डॉक्टर—लो, यह दवा।
रोगी—यह दवा खाने की है या पीने की?
डॉक्टर—पीने की।
रोगी—लेकिन बाहर बोर्ड पर तो लिखा है दवाखाना।

महेश—मां हमारे पड़ौसी तो बड़े कंजूस लग रहे हैं
मां—कैसे?
महेश—उनका लड़का एक पैसा निगल गया तो वे झट से डॉक्टर बुला लाए।

मालिक—तुमने ३ पत्र डालने में ३ घण्टे लगा दिए?
नौकर—मैं तो घूमते-घूमते परेशान हो गया।
मालिक—क्यों?
नौकर—मैं जहां जाता हूं वहीं लेटर बॉक्स पर ताला लगा होता है।

अध्यापक—रमेश बताओ सुनील गावसकर और कपिलदेव में क्या अन्तर है?
रमेश—सर, गावसकर थम्स अप का प्रचार करता है, जबकि कपिल देव कल्पा साबुन का।

चीन की दीवार और बच्चन जी

आकाश से पृथ्वी की ओर अगर गौर से देखें तो कहते हैं, केवल "वानली चेंगचेंग"—(चीन की दीवार ही दिखाई देती है। यह दीवार विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है और इस दीवार ने विश्व के हर चिन्तक को उद्वेलित किया है... वकौल चीनवासियों के यह १० हजार मील लम्बी है, पर अब यह मात्र १४८४ मील की ही रह गई है और दिन-ब-दिन झरती जा रही है...जब एक ऐतिहासिक अवशेष ध्वस्त होता नजर आने लगता है, तो विचारक को भी झकझोर देता है, हिन्दी के प्रख्यात कवि डॉ हरिवंशराय बच्चन ने जब यह समाचार पढ़ा तो उन्हें कैसा लगा, ज्यों का त्यों पाठकों के लिये प्रस्तुत है :—

"इधर समाचार पत्रों में मैंने पढ़ा कि चीन की दीवार, जो कि एकमात्र इमारत चन्द्रमा से आंखों से देखी जा सकती है, गिर रही है। मुझे याद आई अपनी एक कविता जो १९३६ की 'सरस्वती' में निकली थी—'हलाहल' शीर्षक कविता से एक पद यों था :—

एक दिन दृढ़ चीनी दीवार
गिरेगी, गिरकर होगी क्षार,
धरा लुंठित होगी दिन एक
कुतुब की नभचुम्बी मीनार
धसेगी मरू में मिस्र-समाधि
किसी दिन कुटिया, तनिक विचार, अर्थ क्या रखता
मिटना सोच मचाना तेरा हाहाकार॥

[आशा है इन पंक्तियों से पाठकों को कुछ विनोद होगा।]

प्रशिक्षण शिविर

नरवाना : आर्य समाज नरवाना के समस्त अध्यापकों का प्रशिक्षण शिविर 16 से 22 जुलाई तक प्रो० रत्नसिंह जी के निर्देशन मे लगाया गया जिसमें प्रतिदिन तीन घण्टों तक वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान हुए। अध्यापकों पर इस शिविर का गहरा प्रभाव पड़ा।

पत्रों के दर्पण में

कश्मीर में भी ऐतिहासिक भूमिका

15 जुलाई के अंक में उक्त शीर्षक से छपा आपका सम्पादकीय पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मेरे विचार से यह लेख सब दैनिक समाचार पत्रों में छपने की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे राष्ट्रहित में आर्यसमाज द्वारा किये जाने वाले कार्य का संसार को पता लग सके। यह आर्यसमाज के गौरव में अत्यन्त वृद्धि करने वाला लेख है। इस लेख के लिए शतशः बधाई।—डा० सत्यव्रत राजेश, दयानन्द नगरी, ज्वालापुर (सहारनपुर)

यही लेख 15 जुलाई के दैनिक भास्कर (इन्दौर) में भी छपा था। 20 जुलाई के दैनिक भास्कर में उसकी प्रतिक्रियाएं निम्न प्रकार प्रकाशित हुई हैं—

कश्मीर : नेताओं की शर्मनाक चुप्पी

क्षितीश वेदालंकार का लेख 'कश्मीर में भी ऐतिहासिक भूमिका' बहुत पसंद आया। लेखक ने इसमें कश्मीर के हजूरीबाग आर्य समाज मन्दिर और देवकी कन्या पाठशाला को जलाकर नष्ट कर देने के कारनामे का सही वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि कश्मीर के प्रशासन में हिन्दू संस्थाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। इस काण्ड में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के साहस की प्रशंसा भी की जानी चाहिए।

देश के विरोधी दलों ने कश्मीर में हुए इस काण्ड के बारे में चुप्पी साधकर देश के साथ विश्वासघात किया है। सत्ता के लालच ने विरोधी दलों को अंधा बना दिया है। क्षितीश जी को हार्दिक बधाई।

—म. गहलोत, पेटलावद, जिला झाबुआ।

(2)

कश्मीर में उपद्रवियों ने आर्य समाज मन्दिर व देवकी कन्या पाठशाला के भवनों को जलाकर राख कर दिया। इससे जम्मू-कश्मीर के कट्टर मुस्लिम शासनतंत्र का स्पष्ट पता चलता है। इस गम्भीर प्रकरण पर भारत सरकार, इं का व विरोधी दल भी ऐसे चुपचाप हैं, जैसे यह सब कुछ बहुत अच्छा हुआ हो।

—भारतसिंह, छावनी इन्दौर।

(3)

क्षितीश वेदालंकार के 'भास्कर' में प्रकाशित लेख से पता चला कि कश्मीर में उपद्रवियों ने दिनदहाड़े एक प्रसिद्ध आर्य समाज भवन व देवकी कन्या शाला के भवनों को जलाकर नष्ट कर दिया। इस गम्भीर मामले पर हमारे सब नेता चुपचाप बैठे हैं। उनके लिए यह शर्म की बात है। यदि कभी कहीं किसी मस्जिद या चर्च के भवन को थोडी भी क्षति होती तो हमारी सरकार व नेतागण तूफान ला देते।

नेताओं की इस एकांगी मनोवृत्ति की जितनी आलोचना की जाए, कम है।

—कृष्णकांत गुप्ता, फ्रीगंज, उज्जैन।

अमरीका और पाकिस्तान का हाथ

भारत सरकार की ओर से पंजाब के बारे में जो श्वेतपत्र प्रकाशित हुआ है उसमें खालिस्तान के आन्दोलन में लिप्त विदेशी सरकारों का नाम बेशक नहीं लिया गया, पर उसके पीछे अमरीका, पाकिस्तान और किसी हद तक चीन का भी हाथ था, उसके लिये निम्न प्रमाण हैं—

(1) स्वर्ण मन्दिर में पाकिस्तानी पासपोर्ट और पाकिस्तानी मुद्रा मिली है।

(2) स्वर्णमन्दिर में नकली दाढ़िया मिली हैं, जिनका प्रयोग पाकिस्तान से आए मुसलमान करते होंगे।

(3) चीन-निर्मित हथियार काफी मात्रा में बरामद हुए हैं।

(4) स्वर्णमन्दिर में हाई फ्रीक्वेंसी का रेडियो ट्रांसमिटर भी मिला है जिसका सम्बन्ध सीधा लाहौर से था।

(5) खालिस्तानी पासपोर्ट कनाडा में और खालिस्तानी मुद्रा अमरीका में छपी थी। इसमें सी०आई०ए० का सहयोग स्पष्ट है।

(6) कनाडा निवासी सुरजन सिंह को जनरल जिया ने नए वर्ष के उपलक्ष्य में बधाई संदेश भेजा था।

(7) अमरीका की ओर से जो हथियार अफगान शरणार्थियों के लिये भेजे जाते थे, वे अमृतसर पहुंच जाते थे। हथियारों की तस्करी की बात जनरल जिया ने भी स्वीकार की है।

(8) जनरल सुन्दर जी ने बताया था कि सैनिक कार्रवाई में मारे गये कई उग्रवादियों के पोस्टमार्टम से पता लगा कि उनका खतना हुआ था।

ज्ञानचन्द गोयल, उपमंत्री आर्यवीर दल मालव, जिला गुड़गांव

सेना का जाना जरूरी था

पंजाब में अकालियों और इंकाइयों ने लगभग एक साथ होड़ करते हुए, सत्ता हथियाने के लिये धार्मिक उग्रवाद और आतंकवाद को बढ़ावा दिया, उसी के परिणाम स्वरूप सैकड़ों निर्दोष देशभक्तों की हत्या हुई। लगभग ढाई साल स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को नष्ट कर उसे हत्या लूट एवं देश द्रोहियों के किले में बदल दिया गया। मन्दिर से उग्रवादियों को हटाने की कार्यवाही में जो शहीद हुए हैं उन्हें लाख लाख श्रद्धांजलि। लेकिन श्रद्धांजलि देकर मामले को रफा-दफा नहीं किया जा सकता, क्योंकि सवाल यह उठता है कि विदेशी हथियार पवित्र मन्दिर में आए कहां से और इतने हथियार आने के बावजूद हिंदुस्तान का खुफिया विभाग नपुंसक क्यों बना रहा। अकाली दल, सरकार, और गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के सदस्य मूक दर्शक बनकर क्यों देखते रहें। सरकार की सुरक्षा व्यवस्था का क्या हुआ। स्वर्ण मन्दिर में सेना का जाना भी अनिवार्य था। क्योंकि सिखों ने न तो पंजाब में हो रही हत्याओं का ही स्पष्ट विरोध किया और ना ही उनमें इतनी शक्ति शेष रह गई थी कि वे स्वर्ण मंदिर को अपराधियों का अड्डा बनने से रोक पाते। इसलिए सैनिक कार्यवाही का विरोध करना सरासर गलत है। सिखबन्धु अब दूरदर्शिता से काम लें और उग्रवादियों को पकड़वाने में सेना की मदद करें। —रमेश चन्द्र सेन पारस जी बाड़ा लश्कर

पवित्रता किसने नष्ट की

सरकार द्वारा पंजाब को सेना के सुपुर्द करने व स्वर्ण मन्दिर में सेना के प्रवेश पर कुछ सुप्रसिद्ध सिखों ने यह कहा हैं कि सेना के प्रवेश से गुरुद्वारा अपवित्र हो गया है। कुछ प्रश्नों का उत्तर उनकी ओर से अपेक्षित है—

1. गुरुद्वारे में सभी धर्मों के अनुयायी श्रद्धा व भक्ति से दर्शन करने जाते हैं। सेना में भी सभी धर्मों के मानने वाले हैं। वे यदि यूनीफार्म में गुरुद्वारे में प्रवेश करें तो क्या गुरुद्वारा अपवित्र हो जाता है।

2. हजारों बेगुनाह इन्सानों की हत्या करने वाले व अनेक बैंको बसों व ट्रेनों में डकैतियां डालने वाले लुटेरों व हत्यारों को शरण देने से क्या गुरुद्वारा पवित्र रहता है। गुरुद्वारे में चोरी, डकैती व राहजनी का माल रखने से क्या गुरुद्वारा पवित्र रहता है।

4. गुरुद्वारा में बन्दूके, स्टेनगने, मिसाइलें गोला-बारूद व अन्य घातक हथियारों के रखने से क्या गुरुद्वारो की पवित्रता नष्ट नही होती।

5. अफीम, चरस, गांजा, भाग, हैरोइन व अन्य नशीले पदार्थ क्या गुरुद्वारे में रखने व तस्करी करने से गुरुद्वारा पवित्र रहता हैं ?

ये कुछ प्रश्न हैं, अपवित्रता का राग अलापने वाले उन सिख नेताओं के लिये। इन्हें पढ़कर विचार करें और फिर कहें कि गुरुद्वारे की पवित्रता किसने नष्ट की।

ज्ञानचन्द जैन, विवेकानन्द मार्ग, लश्कर

आर्य समाज एक सम्प्रदाय ?

'आर्य जगत्' के कई लेख तो इतने प्रेरणादायक होते हैं कि इन्हें पढ़कर आत्मा से आवाज आती है कि यदि देश में कोई जीवित सस्था है तो वह बस आर्य समाज ही है। परन्तु जब किसी आर्य समाजी से बात होती है तो वह आर्य समाज के मूल उद्देश्य—"सारे संसार को आर्य बनाने"—का कोई उत्तर नही दे पाता।

एक समय था जब विदेशी शासन के दौरान आर्य समाज शास्त्रार्थों में न केवल भारत को बल्कि समस्त जगत को चुनौती देता था। परन्तु आज स्वतन्त्र होकर भी आर्य समाज हाथ पर हाथ धरे बैठा है। यदि यही हालत रही तो आर्य समाज तो समाप्त हो ही रहा है, देश भी खण्डित होने से न बच पायेगा। आर्य समाज का अपना कोई राजनीतिक दल न होने के कारण आर्य समाजी अन्य दलों में बैठकर उनकी बंसी बजा रहे हैं। वैदिक शिक्षणालयों में आर्य सिद्धांतो का प्रचार न होने और आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगो मे उपस्थिति न होने का भी यही कारण है। यह स्थिति न बदली गई तो आर्य समाज केवल एक सम्प्रदाय मात्र बन कर रह जायेगा।

—ओ० पी० भटिया, जयपुर

ईसा मसीह विवाद के घेरे मे

क्या ईसा मसीह कुंवारी कन्या के बेटे थे ? क्या दफनाए जाने के बाद वे कब्र से फिर जी उठे थे ? क्या वे पानी पर चलते थे ? क्या वे ईश्वर के इकलौते बेटे थे ? इन सवालों पर पश्चिम में कर्नल इंगरसोल और भारत के दयानन्द सरस्वती ने बहुत कुछ लिखा है। लेकिन इग्लैंड के चर्च के अभी-अभी चुने गए बिशप ने इन्हीं सवालो के जो जवाब दिए है उन्होने पश्चिमी जगत में तहलका मचा दिया है।

नवं निर्वाचित बिशप श्री डेविड जेंकिन्स का कहना है कि अच्छा ईसाई होने क लिए इन करिश्मो की सच्चाई में विश्वास करना जरूरी नहीं है। जेन्किन्स मानते है कि ईसा मसीह को अद्वितीय पुरुष सिद्ध करने के लिए भी ये सब बाते लिखी गई हो सकती हैं। जेन्किन्स का कहना ईसाई समाज की नजर में कुफ्र है और ब्रिटेन के ईसाई नेताओं ने उनके खिलाफ जोरदार अभियान छेड़ दिया है। लेकिन मजे की बात यह है कि उनके इन विचारो के बावजूद उन्हें एंगलिकन चर्च के चौथे सबमे महत्वपूर्ण पद के लिए चुन लिया गया है। और ऐसा नहीं है कि वे अकेले हैं। 31 बिशपो में से सिर्फ 11 की राय है कि ईसा मसीह को ईश्वरीय मानना जरूरी है। ईसा मसीह के कन्या पुत्र होने और कब्र से पुनरुत्थान के सवाल पर भी बिशप लोग बंटे हुए है।

ईसा मसीह को लेकर चला यह नया विवाद दुनिया के सारे ईसाई जगत को हिलाए बिना नहीं रहेगा। कुछ आधारभूत सच्चाईयो के हिल जाने पर ईसाई मजहब की अन्य मान्यताओं पर भी प्रश्न-चिन्ह लग सकते है जिन्हें ईसाई समाज कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकेगा। — 'नवभारत टाइम्स' की सम्पादकीय टिप्पणी (4 जुलाई, 84)

प्रो० वेदव्यास जी को दस लाख रु० की थैली भेंट करने का निश्चय

आर्य प्रादेशिक सभा और डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धक सभा के प्रधान, वरिष्ठ एडवोकेट प्रो० वेद व्यास जी को उनके जन्म दिवस पर उक्त दोनों सभाओं की ओर से दस लाख रु० की थैली भेंट करने का निश्चय किया गया है। एतदर्थ दो सितंबर को तालकटोरा गार्डन में भव्य समारोह का आयोजन होगा। 19 अप्रैल को महात्मा हंसराज दिवस पर दस लाख रु० की थैली पहले भेंट की जा चुकी है। यह समस्त राशि आगामी वर्ष देशव्यापी स्तर पर मनाए जाने वाले डी० ए० वी० शताब्दी समारोह के निमित्त होगी।

शताब्दी समारोह को सार्थकता प्रदान करने के लिए डी० ए० वी० समिति ने अनेक महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रमों की योजना बनाई है। ये कार्यक्रम शताब्दी वर्ष तक पूरे करने हैं। उन्हीं कार्यक्रमों की पूर्ति में यह राशि काम आयेगी।

सभी आर्य समाजों और डी० ए० वी० संस्थाओं से अनुरोध है कि वे इस मद में अधिक से अधिक राशि भेजने की कृपा करें।

दरबारी लाल, संगठन सचिव
रामनाथ सहगल, सभा मन्त्री

शहीद परिवार सहायता निधि

जिन सैनिकों ने राष्ट्र को खण्डित होने से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी, उनके निराश्रित परिवारों की सहायता के लिए अपने कर्तव्य को पहचानिये और इस निधि में तुरन्त अपनी भेंट भेजिये।

159. श्री जगदीश —दिल्ली	101-00
160. आर्य समाज —अशोक विहार, दिल्ली	101-00
161. श्री एम० सी० ढींगरा एवं श्रीमती गार्गी ढींगरा—दिल्ली	51-00
162. श्री चमन लाल महाजन —नई दिल्ली	51-00
163. डी० ए० वी० प० स्कूल —लारेंस रोड, अमृतसर	101-00
164. श्री रामचन्द्र आर्य—केहरवाला	51-00
165. श्री पुष्कर लाल आर्य —कलकत्ता	100-00
166. श्री बनारसी दास तायल —तिगड़ाना	100-00
167. आर्य समाज —हिण्डौन सिटी	100-00
168. श्री वेद भूषण —लुधियाना	251-00
169. आर्य समाज मा० टा० —जालन्धर	100-00
170. अनिल राड़ कं०—गाजियाबाद	51-00
171. श्री रामलाल —नयाबांस (राज०)	51-00
172. श्री ए० सचदेवा—इन्दौर	101-00
173. श्री राम कुमार शर्मा—जमशेदपुर	51-00
174. आर्य समाज हंसापुरी—नागपुर	101-00
175. राजपाल एण्ड संस—दिल्ली	251-00
176. श्री श्याम लाल कौशल —नई दिल्ली	500-00
177. अनीता थापर— नई दिल्ली	5-100
178. श्री जे० एन० चौधरी —नई दिल्ली	251-00
179. श्री एस० पी० पुरी—नई दिल्ली	500 00
180. सुशीला देवी —नई दिल्ली	101-00
181. श्री रामशरण दास खुराना —नई दिल्ली	101-00
182. श्री जगदीश गम्भीर —मेरठ	201-00
183. डी० ए० वी० कालेज—अमृतसर	5001-00
184. श्री सुरजीत सिंह ग्रेवल —नई दिल्ली	60-00
185. गुप्तदान (द्वारा—प्रो० वेदव्यास जी)	300-00
186. वेदमित्र—नई दिल्ली	101-00
	8980-00

पुरोहित-शिरोमणि श्री पं० चन्द्रभानु जी का स्वर्गवास

अभी पिछले अंक (२९ जुलाई) में हमने आर्य पुरोहित शिरोमणि श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण के अपने यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूरे कर लेने पर आर्य पुरोहित सभा तथा समस्त आर्य जनता की ओर से भाव-भीने अभिनन्दन समारोह का सचित्र समाचार दिया था। पर किसे पता था कि ऐसी अनहोनी होगी। १५ जुलाई को अभिनदन समारोह हुआ, अकस्मात् १८ जुलाई को सायंकाल एक मोटर साइकिल की टक्कर से वे दुर्घटनाग्रस्त हो गए। तुरन्त उन्हें मैडिकल इंस्टीट्यूट में दाखिल कराया गया। इनटेसिव केयर यूनिट में रखा गया, परन्तु उनकी बेहोशी नहीं टूटी।

अन्ततः २८ जुलाई की शाम को उन का स्वर्गवास हो गया। आर्यजगत् यह सुनकर स्तब्ध हो उठा। २९ जुलाई को प्रातः ११॥ बजे लोदी रोड के दयानंद श्मशान घाट में वैदिक विधि से उनकी अन्त्येष्टि हुई। ३१ जुलाई को आर्यसमाज हनुमान रोड में सायं ५ बजे शान्तियज्ञ हुआ। शोक सभा में आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। 'आर्यजगत्' पत्र की ओर से भी विनम्र श्रद्धांजलि। —सम्पादक

श्रीमती महादेवी पमार दिवंगत

गुरुकुल वृन्दावन के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता, 'मदर लैण्ड' 'आर्गनाइजर' और 'पाञ्चजन्य' के प्रबन्ध व्यवस्थापक, 'अमेरिकन रिपोर्टर' के पूर्व सम्पादक, भारतीय विकास परिषद, आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वयं सेवक के कर्मठ कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र सिंह पमार आयुर्वेद शिरोमणि की पत्नी श्रीमती महादेवी पमार का 28 जुलाई को 68 वर्ष की आयु में अकस्मात् देहावसान हो गया। अपने पति के समाज सेवा सम्बन्धी कार्यों में वे सदा जैसी सहयोगिनी बनी रहीं, वह अनुकरणीय है। 3 अगस्त को सायं 5 बजे उनके निवास स्थान—28 यू० बी० जवाहरनगर में शान्ति यज्ञ हुआ जिसमें आर्य समाज, संघ तथा पत्रकार जगत् के अनेक व्यक्ति सम्मिलत हुए। 'आर्य जगत्' की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना है। —सम्पादक

साम्प्रदायिक उपद्रव......

(पृष्ठ १ का शेष)

शान्ति और सहअस्तित्व की भावना से मिलकर नहीं रहे हैं। आखिर लेबनान, साइप्रस, फिलिपाइंस और अन्य देशों में जहां मुसलमान शासक तो नहीं हैं लेकिन वहां वे पर्याप्त संख्या में हैं, क्या हो रहा है।

हमारे बुद्धिजीवी, पत्रकार और नेतागण यह जानने की कोशिश क्यों नहीं करते कि 1947 के पश्चात कुछ वर्षों तक देश में साम्प्रदायिकता क्यों शान्त थी और साम्प्रदायिक दंगे क्यों नहीं हुए और अब 14-15 वर्ष से साम्प्रदायिक दंगों का वही पुराना सिलसिला पुनः क्यों शुरु हो गया है। क्या कारण है कि साम्प्रदायिक दंगे उन्हीं क्षेत्रों में होते हैं जहां मुसलमान बहुसंख्या में हैं। क्या कारण है कि उपद्रव मुसलमानों द्वारा ही किसी न किसी बहाने की आड़ में शुरु किये जाते हैं।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश में श्रावणी और जन्माष्टमी

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में 3 अगस्त से प्रभात फेरी और 11 अगस्त से ऋग्वेद पारायण यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा श्री जैमिनि शास्त्री होंगे। रात को शास्त्री जी की ही कथा होगी। 19 अगस्त को डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार की अध्यक्षता में जन्माष्टमी का उत्सव होगा जिसमें अनेक विद्वान वक्ता भाग लेंगे। —मन्त्री गणेशदास गोवर

अन्तर्जातीय विवाहों के लिए सम्पर्क करें

वेदपाल शास्त्री
संयोजक अन्तर्जातीय विवाह विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002 फोन—274771, 260985

सामाजिक जगत्

श्री अमरनाथ जी कपाही दिवंगत

आर्य समाज आदर्श नगर, नई दिल्ली के प्राण, आल इण्डिया ब्रिक्स एण्ड टाईल्ज फैडरेशन के उप प्रधान, दिल्ली ब्रिक क्लिन ओनर ऐसोसिएशन के प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा के पूरे सहयोगी, दिल्ली के कर्मठ कार्य कर्ता श्री अमर नाथ कपाही हमारे मध्य मे नही रहे। गत मास उनका अकस्मात् देहान्त हो गया। उनके निवास स्थान पर (मजलिस पार्क, आजादपुर) में श्रद्धाजलि सभा मे आल इण्डिया ब्रिक क्लिन फैडरेशन के प्रधान श्री मनोहर लाल जैन, श्री केदारनाथ साहनी, श्री मदनलाल खुराना, आर्य समाज आदर्श-नगर के प्रधान, दिल्ली ऐशोसिएशन के मंत्री श्री धर्म पाल चड्ढा, श्री चमनलाल मल्होत्रा आदि वक्ताओ ने उनके कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि हमारे मध्य से एक कर्मठ कार्यकर्ता चला गया है। आप अपने व्यवसाय के अलावा समाज-हित के कार्यों मे सदा आगे रहते थे।

दिल्ली की बहुत सी आर्य संस्थाओं ने तथा भारत भर के ईंट महा संघों ने उनके निधन पर शोक प्रस्ताव भेजे। उनके सुपुत्र श्री जगदीश कपाही एवं उनका सम्पूर्ण परिवार भी समाज हित के कामो में उसी तरह दत्तचित्त है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे। 'आर्यजगत्' की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि और परिवार के प्रति पूर्ण सहानुभूति।—रामलाल मलिक, व्यवस्थापक 'आर्यजगत्'

कविता के आस्थाशील पक्ष की उपेक्षा क्यों

साहित्य-संगम के तत्वावधान मे आठवें दशक की हिन्दी-कविता पर आयोजित गोष्ठी मे निबन्ध-पाठ करते हुए डा० सुन्दरलाल कथूरिया और डा० देवराज पथिक ने इस दशक के आस्थाशील-संस्कृति चेतना-सम्पन्न कवियों की काव्य-सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला। चर्चित कवियों मे जीवन प्रकाश जोशी, रामदास 'नादार', सत्यपाल चुघ, अराज, प्रेमप्रकाश गौतम, सिद्धनाथ कुमार, वचनदेव कुमार, त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल, मनोहर अभय, देवेन्द्र आर्य, जगदीश कुमार, बाबूलाल गोस्वामी, कुअर बेचैन, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', राजेन्द्र गौतम, विक्रम कुमार, राजेन्द्र मिश्र आदि उल्लेखनीय हैं। गोष्ठी में मानव-मूल्यों से जुडे कवियों की उपेक्षा पर चिंता व्यक्त की गयी। अनेक विद्वानों ने विचार विमर्श मे भाग लिया।

मुख्य अतिथि डा० ललित शुक्ल ने निबन्ध-पाठकों के व्यापक अध्ययन की प्रशंसा की। अध्यक्ष पद से बोलते हुए सुपरिचित समीक्षक डा० सुरेशचन्द्र गुप्त ने समीक्षकों से आग्रह किया कि वे जीवन के सद्पक्ष को उजागर करने वाले कवियों की ओर भी अपेक्षित ध्यान दें।

—डा० नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी बी ए/3 ए, जनकपुरी, नयी दिल्ली—110054

श्रेष्ठ मानव के निर्माण के लिए वैदिक धर्म

खंडवा। 21 जुलाई को 'दैनिक भास्कर' इन्दौर के यशस्वी प्रधान सम्पादक श्री यतीन्द्र भटनागर ने आर्य समाज खण्डवा द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं की शिक्षिकाओं और आर्य बन्धुओ को सम्बोधित करते हुये कहा कि इस भौतिक वादी युग में मानव की सुख सुविधाओं के लिये कई वस्तुओ का निर्माण हो चुका है। परन्तु इनका उपभोग करने वाले मानव का अवमूल्यन होता दिखाई दे रहा है।

ऐसी स्थिति में वैदिक धर्म की शिक्षा ही श्रेष्ठ मानव बनाने मे योगदान सकती है।

स्वाधीनता आन्दोलन मे आर्य समाज के योगदान की सराहना करते हुए उन्होने हाल में ही पंजाब और काश्मीर की घटनाओ में आर्य समाज के नेताओ की ऐतिहासिक भूमिका का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज सही अर्थों मे राष्ट्रवादी संस्था है। इन्होने कहा—

"आप लोग भले ही कम हों, परन्तु दीपक के समान जल कर अंधेरे को दूर कीजिये।"

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रामचन्द्र आर्य ने की। मुख्य अतिथि बंबई के अग्रणी व्यापारी वालजी भाई भानुशाली थे। सचिव श्री कैलाशचंद पालीवाल ने आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं एवं जनोपयोगी कार्यक्रम की जानकारी दी। कु० हेमलता शर्मा शिक्षिका ने वैदिक शिक्षा पर सुलझे हुए विचार रखे। स्वागत कुमारी सत्यवती नावडू, छगन लाल चौधरी, डा० जगदीश चन्द चौरे ने किया। संचालन लक्ष्मी-नारायण भार्गव ने किया। आभार प्रदर्शन श्री मावजी भाई भानुशाली ने किया।

●

चार परिवारों की शुद्धि

मदुरै: गत 1 जुलाई को चार परिवारो के 15 व्यक्ति, जो गत अक्टूबर मे मुसलमान हो गये थे, पुन: वैदिक धर्म मे दीक्षित कर लिये गये हैं। आर्य समाज मदुरै द्वारा इन व्यक्तियो का अभिनन्दन किया गया।

कु० अनुराधा प्रथम

अमृतसर: बी० बी० के० डी० ए० वी० स्कूल कटरा मोहन सिंह अमृतसर का इस वर्ष की ५वीं और १०वी कक्षा का परीक्षाफल बहुत ही शानदार रहा है। ५वी कक्षा की छात्रा अनुराधा २०० में से १८८ अंक प्राप्त करके ब्लाक में प्रथम और जिले भर में द्वितीय स्थान पर रही है। इस परीक्षा में बैठे ४७ छात्र-छात्राओं मे सबके सब उत्तीर्ण हुये हैं। इसी प्रकार १०वी कक्षा की परीक्षा में ७४ छात्र-छात्राओं मे सबके सब उत्तीर्ण हुए हैं। २० छात्रों ने ७० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। ६वी कक्षा की संगीता ठाकुर ने धर्म शिक्षा परीक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। यह परीक्षा डी०ए०वी० कालेज प्रबन्ध समिति, नई दिल्ली द्वारा आयोजित की जाती है।

वेद गोष्ठी

दिल्ली: वैद्य राम गोपाल शास्त्री स्मारक समिति के तत्वावधान में इस वर्ष 25 अगस्त को हिन्दू कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित वार्षिक वेद गोष्ठी मे आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री (बड़ौदा) का वेद संज्ञा (वेद कितने और कौन से हैं) विषय पर व्याख्यान होगा।

यज्ञ पर अनुसंधान

हैदराबाद: अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद के अधिष्ठाता पं० वेद भूषण के अनुसंधान पर प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने विज्ञान प्रौद्योगिकी, नई दिल्ली को यज्ञ पर अनुसन्धान करने का आदेश दिया है। विदित हो कि इस अनुसन्धान का निष्कर्ष पर्यावरण प्रदूषण को नष्ट करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा क्योंकि गाय के घी को जलाने के सिवाय इसका अन्य कोई विकल्प नही है।

पं० वेदभूषण आगामी 5 अगस्त को मौरीशस जा रहे हैं, जहा वे एक वर्ष तक रहेगे।

—काशी आर्य समाज मन्दिर, बलानाला द्वारा वेद प्रचार सप्ताह १२ से १९ अगस्त तक मनाया जायेगा।

यज्ञ विषयक प्रश्नों......

(पृष्ठ ६ का शेष)

अपने ग्रन्थ 'हवन मन्त्रा:' में इत्+ह करके ही सन्तोष कर लिया है।

पं० चमूपति जी ने (इद्ध) पदका अर्थ अवश्य किया। पं० बालकृष्ण एम० ए० ने 'चमकाओ' अर्थ किया।

आर्य समाज में कुछ व्याख्याएं आर्य भाषा और अंग्रेजी में धारावाही अनुवाद कहे जाते हैं। ये विलक्षण अनुवाद होते हैं। इनको धारा में पता ही नही लगता कि किस शब्द का क्या अर्थ है। पं० सातवलेकर जी के भाषानुवाद प्राय: धारावाही हैं।

हमने पहले 'यज्ञ महाभाष्यम्' आर्यभाषा में लिखा। फिर ध्यान आया कि यज्ञ के लगभग जो एक सौ मन्त्र हैं, उन पर संस्कृत भाष्य भी लिखें। उससे मैं इस झगड़े में पड़ गया।

इसी मन्त्र में एक और समस्या भी है। वह यह कि इस मन्त्र में दो पद है—

१. 'वर्धय और समेधय' दोनों का अर्थ यदि 'बढ़ा' यही है तो एक पद व्यर्थ है। यहां अधिकपदत्व दोष आता है। प्रजया-पशुभि: ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन वर्धय फिर समेधय' की क्या आवश्यकता है। सब लेखक चारों में से दो के साथ वर्धय और दो के साथ समेधय करके सन्तोष कर लेते हैं। यथा—प्रजया पशुभि: वर्धय, ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन समेधय—यह व्यर्थ मन्वय है। यहां आश्वलायन मन्त्र व्याख्याकार हरदत्तमिश्र भी चौकड़ी भूल गये और वर्धय समेधय का न अन्वय ही कर सके और न कारण बता सके।

इस प्रकार ये 'इद्ध+समेधय' दोनों पद संस्कृत भाष्यकार के लिये सिर दर्द बने हुए हैं।

फिर अजीब लीला यह है कि मन्त्र में घी का नाम निशान नहीं और घृताहुति लग रही हैं पांच-पांच। विचित्र विनियोग है।

आहुति के पञ्चत्व का भी कारण नहीं पता। स्वामी मुनीश्वरानन्द आदि कुछ ने जितनी संसार में पांच-पांच बातें हैं, सब संग्रह कर दीं, पर उनका पंच घृताहुति से क्या सम्बन्ध है। इस प्रकार यह 'अयन्त इध्म आत्मा' मन्त्र एक पहेली ही है। 'समाचरतु सज्जना:' यह एक आशा है।

उत्तराखण्ड में लाला लाजपत राय

जब जनेऊ पहनने के लिए पुलिस बुलानी पड़ती थी

१८वीं शताब्दी ! छुआ-छूत ! ऊँच-नीच की भावना; तथा कथित धर्म चूल्हा-चौका मे छुप रहा था ! गुजराती ब्राह्मण पं० कर्षनजी तिवारी के पुत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२५-१८८३) ने १८७५ ई० मे आर्य समाज की स्थापना करके ससार के सभी लोगों की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति हेतु एक लहर पैदा की। महर्षि ने कहा था—"मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है; किन्तु जो सत्य है, उसको मानना – मनवाना और जो असत्य है, उसको छोडना और छुड़वाना मुझको अभीप्ट है।' उक्त लहर से अनुप्राणित जनो मे लाला लाजपत राय भी एक थे।

उत्तराखण्ड (नैनीताल, अल्मोडा, पिथौरागढ, चमोली, उत्तरकाशी, टिहरी, पौड़ी व देहरादून) के लोहार बढई, दर्जी, टम्टा आदि जब मुर्दा पशुओं का मास तथा शराब का सेवन करने लगे, तो उन्हे डूम (अछूत) समझा जाने लगा। बीठ (ब्राह्मण व क्षत्रिय) लोग उनके डोला-पालकी, मुकुट लगाने और मन्दिर मे आने का विरोध करने लगे। ईसाई व मुसलमान ऐसी स्थिति का लाभ उठाने लगे !

उत्तरी भारत और उत्तराखण्ड (नैनीताल, काशीपुर, दुगड्डा, हल्द्वानी, जसपुर, टिहरी, अल्मोडा आदि) की आर्यसमाजो द्वारा सचालित शुद्धि आदोलन से प्रभावित होने वाले जनों मे सर्वश्री चिरंजीलाल साह, हरी प्रसाद टम्टा किशन टम्टा, दौलतराम सेठ के नाम उल्लेखनीय है।

लाला लाजपत राय का शुभागमन

सेठ दौलतराम जी लाहौर से प्रभावशाली आर्यसमाजी नेता लाला लाजपत राय को श्रावणी, १९१३ ई० को अपने ग्राम-सुनकिया (नैनीताल) लाये। एक विशाल शुद्धि समारोह आयोजित किया गया। लाजपतरायजी ने तथा कथित डूमो से खान-पान व रहन-सहन (आहार-आचार-व्यवहार) मे शुद्धि लाने का व्रत दिलाकर—उन्हे 'शिल्पकार' की सज्ञा देने के साथ जनेऊ-धारण का अधिकार दिया। वास्तव मे भ्रष्ट आहार-आचार-व्यवहार वाले जनों को तब तक अछूत (डूम) माना जाना चाहिये, जब तक उनके गुण-कर्म-स्वभाव मे सुधार न आ जाय। सज्जन-सदाचारी-शिष्ट व्यक्ति को 'आर्य' कहते है, दुर्जन-दुराचारी-दुष्ट व्यक्ति को 'अनार्य' (डूम, अछूत) कहते है।

जनेऊ धारण करने वाला 'द्विज' कहलाता है। जनेऊ के तीन धागे मन-वचन-कर्म की एकरूपता और शुद्धता-पवित्रता का सकेत देते रहते है। शिल्पकार वर्ग मे लाजपत राय जी के हाथ से सर्वप्रथम जनेऊ धारण करने वालो मे सर्वश्री दौलतराम सेठ, खुशीराम, तुलाराम, धनीराम, नारायण राम सेठ, बचीराम आदि थे।

शिल्पकार सुधारिणी सभा

लाला जी 'शिल्पकार सुधारिणी सभा' की स्थापना करके उत्तराखण्ड के शिल्पकारो का सुधार दौलतराम जी के योग्य पुत्र खुशीरामजी को सौप गये। कानपुर, लखनऊ, बरेली, दिल्ली आदि से आर्य-समाज के प्रचारक उत्तराखण्ड मे सनातन-वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे। "दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे" आदि गीत गाने लगे। महर्षि दयानन्द प्रणीत ग्रथ 'सस्कारविधि' के अनुसार सस्कार एव सत्यार्थ-प्रकाश' के अनुसार विचार फैलने लगे।

सन् १९२१ मे खुशीराम जी अपने सहयोगियों सर्वश्री शम्भुनाथ सेवानिवृत्त तहसीलदार, प० भूमित्र नागरी, धनीराम, हरीराम, शोभाराम, अनन्तराम आदि के साथ ढोल-नगाडा-बीन-निशाण सहित ग्राम-मटिला (अल्मोडा) मे जनेऊ-सस्कार कराने पहुचे। बीठो ने विरोध किया। गोपीराम द्वारा एस० डी० एम० रानीखेत को सूचित किया गया। अगले दिन किशोरीलाल जी के निवास मे अपराह्न ३ बजे गारद के सरक्षण मे भूमित्र जी ने "यज्ञोपवीत परम पवित्र" मत्रोच्चार किया तथा खुशीराम जी ने ७ व्यक्तियो को जनेऊ धारण कराया।

सन् १९३२ मे खुशीराम जी ने पाडेकोटा, ब्योखा आदि स्थानों मे भी शिल्पकारो को जनेऊ धारण कराया। रानीखेत के आस-पास इनीराम जी पौरोहित्य कार्य करते रहे। सुदूर ग्रामो मे सर्वश्री धनीराम, हरीराम घुलई, चेतराम, शालिग्राम आदि ने धर्म प्रचार किया।

हरीराम जी दफ्तरी (रानीखेत) ने शिल्पकार छात्रो को छात्रवृत्ति दी। पं० लच्छीराम जी संस्कृत के विद्वान बन कर पुरोहित बने।

शिक्षा विभाग नैनीताल के बचीराम जी ने सर्वश्री नारायणराम सेठ बचीराम सेठ, गगाराम, अनन्तराम, हीरामराम, आदि के सहयोग से सुरमाना-मुक्तेश्वर मे 'दयानन्द शिल्प विद्यालय' की स्थापना की जिसकी आधार शिला प० गोविन्द वल्लभ पन्त (जो बाद मे भारत के गृह-मन्त्री बने) द्वारा रखी गई। उक्त विद्यालय (गुरुकुल) का मुख्याधिष्ठाता पं० भूमित्र नागरी को बनाया गया। महात्मा नारायण स्वामी की प्रेरणा से भूमित्र जी ने ताकुला मे अनाथालय खोला। भुवाली मे 'शम्भुनाथ-रामेश्री देवी सार्वजनिक पुस्तकालय तहसीलदार शम्भुनाथ जी की देन है।

त्रिमूर्ति 'राम-पाल-मित्र' मण्डली—प० भवानीराम-प० शान्तिपाल—प० भूमित्र-उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध धर्म प्रचारक है।

आर्थिक उन्नति

हरीप्रसाद जी टम्टा ने शासन से ३० हजार एकड भूमि लेकर शिल्पकारो मे आवटित की। १५० प्राथमिक व रात्रि पाठशालाये, कई पुस्तकालय उत्तराखड मे खोले, जिन्हे जिला परिषदो ने स्वतत्रता के बाद अपनी व्यवस्था मे ले लिया। शिल्पकारो की सेना मे भर्ती का मार्ग खुलवाया। १९४१ ई० मे टम्टाजी को लखनऊ मे सेना द्वारा गार्ड आफ आनर' दिया गया। राजनैतिक व सामाजिक चेतना हेतु अल्मोडा से 'समता' साप्ताहिक का प्रकाशन टम्टाजी की ही देन है।

हल्द्वानी के स्वामी रामानन्द जी व रामगढ (नैनीताल) के दीवानसिंह जी ने नायक जाति मे विधिवत विवाह प्रथा चलायी। १९५४ ई० मे महात्मा नारायण स्वामी (प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने सरकारी गजट मे शिल्पकारो के लिये 'आर्य' शब्द घोषित करवाया।

लाला लाजपतराय के शुभागमन से शिल्पकारो व नायको की सामाजिक उन्नति हुई। शिल्पकारो व बीठो के मध्य भेदभाव समाप्त होने लगा। महर्षि दयानन्द का अमरग्रथ सत्यार्थ प्रकाश जनमानस मे धर्म प्रकाश के रूप मे समर्थ हुआ है।

पता—आर्यसमाज ताडी खेत (अल्मोडा) उत्तर प्रदेश

सन १९१३ की श्रावणी पर सुनकिया (नैनीताल) मे शिल्पकारों को लाला लाजपत राय जनेऊ धारण करवा रहे है

यू० १०३/१०८ लायसेंस
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३, प्रीपेमिन्ट (४०१)

श्री तिलकराम आर्य स्वामी मेधानन्द बने

आर्यसमाज मन्दिर हांसी में मुजफ्फरनगर के श्री तिलकराम आर्य को स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती संन्यास की दीक्षा दे रहे हैं।

आर्यजनों से निवेदन

(१) मैं आर्य समाज के व्याख्यान महारथियों के व्याख्यानों का संग्रह कर रहा हूं। जिन सज्जनों के पास कु० सुखलाल आर्य मुसाफिर, पं० रामचन्द्र देहलवी, स्वामी समर्पणानन्द जी, पं० प्रकाशवीर शास्त्री आदि विद्वानों के टेप अथवा व्याख्यान हों, वे मुझे लिखें।

(२) शास्त्रार्थ संग्रह—महर्षि दयानन्द सरस्वती से लेकर अमर स्वामी जी महाराज तक सभी विद्वानों के शास्त्रार्थों का संग्रह करना है। जिनके पास इन शास्त्रार्थों का विवरण हो, सूचित करें।

ये दोनों ग्रन्थ ऐतिहासिक होंगे और आर्यसमाज की धरोहर का कार्य करेंगे। निवेदक—विक्रम आचार्य,
एल 95 ए साकेत, नई दिल्ली-110017

आर्य समाज बाजार सीताराम

दिल्ली : आर्य समाज सीताराम बाजार मे ११ से २० अगस्त तक प्रातः ६॥ से ८॥ बजे तक ऋग्वेदीय बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रकाश चन्द्र शास्त्री होंगे। रात्रि ८॥ से ६॥ बजे तक पं० पुरुषोत्तम जी द्वारा वेद कथा हुआ करेगी।

आर्य समाज सफदर जंग एनक्लेव

आर्य समाज सफदर जंग एन्क्लेव का वार्षिकोत्सव १५ से १६ अगस्त तक मदर डेरी के निकट बी-२ ब्लाक मे मनाया जायेगा।

कश्मीर में वेद प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के निमंत्रण पर कविराज पं० इन्द्रसेन विश्व प्रेमी आजकल इस राज्य के कठुआ, साम्बा और जम्मू क्षेत्र में वेद प्रचार कर रहे हैं।

आचार्य द्विवेदी का अभिनंदन

ज्वालापुर : गुरुकुल महाविद्यालय के कुलपति डा० कपिल देव द्विवेदी का हरिद्वार पचपुरी के विद्वानो ने आपके 'वेदामृतम्' ग्रंथ माला के प्रकाशन पर अभिनन्दन किया।

टंकारा में शोक

टंकारा : महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा और उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने ट्रस्ट के कार्यकारी प्रधान श्री रत्न चन्द सूद की धर्म पत्नी के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ३४, रविवार, १९ अगस्त, १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | भाद्रपद कृष्णा ७, २०४१ वि०

कश्मीर के समाज मन्दिर के लिए ढाई लाख रु० दान

डी० ए० वी० कालिज कमेटी की पहल

नई दिल्ली : दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज नई दिल्ली की प्रबन्ध-समिति ने, देवकी आर्य-पुत्री पाठशाला एवं आर्य समाज हजूरी बाग (श्रीनगर) के जो भवन पिछले दिनो उपद्रवियो द्वारा जला डाले गये थे, उनके पुनर्निर्माण हेतु अढ़ाई लाख रुपये की राशि भेजी है।

उक्त जानकारी देते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रामनाथ सहगल ने सभी आर्य-जनों से इस पुनर्निर्माण मे अधिकतम आर्थिक योगदान देने की अपील की है। राशि मनीआर्डर अथवा चैक/ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली को भेजी जा सकती है। चेक/ड्राफ्ट केवल खाते मे ही भेजें। यह राशि यहा से सीधा श्रीनगर भेज दी जायेगी।

गायत्री मंत्र पर लन्दन में विश्व सम्मेलन

नई दिल्ली : विश्व भर में गायत्री मंत्र के प्रसार के उद्देश्य से स्वामी प्रज्ञानन्द (भू० पू० प्राध्यापक,जबलपुर विश्वविद्यालय-प्रो० लोकेश) आगामी 27 अगस्त को विश्व प्रज्ञा सम्मेलन आयोजित कर रहे है। सम्मेलन मे 74 देशों के करीब 10 हजार प्रतिनिधि भाग लेने वाले है।

स्वामी जी ने, 1947 मे मथुरा में गायत्री परिवार की नींव डालने वाले श्रीराम शर्मा से युवावस्था में ही दीक्षा ली और विश्वविद्यालय का अध्यापन कार्य छोड़कर गायत्री मंत्र की गरिमा और महत्व की अलख जनसाधारण में जगाने का व्रत लेकर निकल पड़े। उन्होने देश भर में 2400 प्रज्ञापीठ व 10 हजार स्वाध्याय मण्डलों की स्थापना की जिसका संचालन शांति-कुंज, गायत्री नगर, हरिद्वार से होता है। यहीं डाक्टरों का एक दल गायत्री मंत्र पर शोध कार्य कर रहा है तथा गायत्री और यज्ञ को पूरक मानते हुए ध्वनि तरंगों व कंपन के आधार पर सोनोपैथी व यज्ञोपैथी का विकास हो रहा है।

स्वामी प्रज्ञानन्द के अनुसार अमेरिका के भाषा वैज्ञानिक डा० हरबर्ट स्टेगल ने सभी धर्मों के प्रार्थना मन्त्रों की तुलना में गायत्री मंत्र को सबसे शक्तिशाली पाया। इस मंत्र ने एक सेकेंड में 1 लाख 10 हजार ध्वनि कंपन पैदा किये। किसी भी दूसरे मंत्र में इतनी सामर्थ्य नहीं मिली।

जे० कृष्णमूर्ति ने भी 'भारत पूजा' ग्रन्थ में लिखा है कि इस मंत्र के उच्चारण से सूर्य की ओर से प्रकाश-प्रवाह का प्रभा मण्डल सा आकर्षित होता है जो 27 से 37 सेंटीमीटर आकार का होता है। निरन्तर नियमित जाप, प्राण विद्युत संचार करता है।

हैदराबाद में दंगा कैसे हुआ

बोनालू के जलूस पर पथराव : चार विधायक गिरफ्तार

हैदराबाद के दंगे मे 11 व्यक्ति मारे गए और 100 से अधिक व्यक्ति घायल हो गए। जब छुरेबाजी की घटनाएं लगातार जारी रही और साम्प्रदायिक आग शान्त नही हुई, तब स्थिति पर नियंत्रण करने के लिए सेना भेजनी पड़ी।

घटना 23 जुलाई की है। तेलगाना और हैदराबाद की गरीब हिन्दू जनता परम्परा से बोनालू नामक पर्व मनाती आ रही है। उस दिन इसी बोनालू का जलूस निकल रहा था और जब वह मंजिल के करीब पहुचने वाला था, तभी उस पर पथराव शुरू हो गया। श्रद्धा-भक्ति और उल्लास मे ओत-प्रोत जलूस में शामिल जनता की भावनाए इस पथराव से भडक उठी दूसरे लोगो का कहना है कि जलूस में शामिल कुछ लोगो ने जोश मे आकर भिन्न सम्प्रदाय वालो की एक हलवाई की दुकान की अलमारियां तोड डाली और मिठाई लूट ली। इस पर उस सम्प्रदाय के लोग भी उत्तेजित हो गए और उन्होने जलूस मे शामिल लोगो पर हमला कर दिया।

सम्भवत: कुछ असामाजिक तत्वों को जलूस का शान्तिपूर्वक समाप्त होना नहीं सुहाया, इसलिए उन्होने जानबूझ कर गडबडी फैलाई।

गडबडी की आशंका से पुलिस ने शोभा यात्रा के साथ-साथ कुछ सिपाही लगा दिये थे पर बाद की घटनाओं की दृष्टि से वे नाकाफी सिद्ध हुए। छिटफुट हिंसा की घटनाओ के चलते समूचे पुराने शहर पर कर्फ्यू लगाना पड़ा।

अगले तीन दिन शाति पूर्ण बीते तब 27 जुलाई को दिन के कर्फ्यू मे ढील दी गई। ढील की अवधि में ही चारमीनार, लाल बाजार और चौक क्षेत्रो में हिंसा फिर से भड़क उठी। हिन्दू और मुसलमान दोनो के ही पूजा के दिन शुक्रवार को कर्फ्यू मे ढील देने को किसी भी दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता।

एक पूजा-स्थल से बाहर आने वाले व्यक्तियों के एक गिरोह ने एक स्कूटर सवार और उसकी पत्नी पर हमला करके वाहन को आग लगा दी तो उपद्रव फिर शुरू हो गए। इसके बाद पूजास्थलो, दुकानो और आते-जाते वाहनो पर हमलों का दौर शुरू हुआ। फौरन ही कर्फ्यू की गिरफ्त फिर कस दी गयी।

कर्फ्यू फिर लागू होने से वारदाते रुकीं और 28 जुलाई के दिन करीमनगर और रगारेड्डी जिलो मे छुरेबाजी की छुटपुट घटनाओ को छोड कर स्थिति शात रही। इसमे उत्साहित होकर अधिकारियों ने 28 जुलाई रविवार को कर्फ्यू मे ढील दे दी ताकि लोग इस बीच अपनी आवश्यकता की वस्तुओ की खरीद-फरोख्त कर सके। किन्तु यह रविवार दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ। पुराने शहर के सुल्तान शाही क्षेत्र और कई स्थानो की छुरेबाजी की घटनाओ मे 5 व्यक्ति मरे और अनेक घायल हुए।

बाद मे पुलिस ने राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत इत्तिहादुल मुसलमीन के तीन और भारतीय जनता पार्टी के एक कुल चार विधायकों को बन्दी बना लिया। इस कदम की दोनो ही दलो पर तीव्र प्रतिक्रिया हुई। दोनो ही दल कट्टर प्रतिद्वंद्वी है तथा पुराने शहर के मुस्लिम बहुल मिश्रित जनसख्या वाले क्षेत्र में शक्ति-परीक्षा और लोकप्रियता बढाने की होड में रहते है 1983 के विधान सभा चुनावो मे यहा से मजलिस ने 2 और भाजपा ने 2 सीटो पर कब्जा किया था। राजधानी की अन्य छ: सीटों पर तेलुगू देशम कायम रही थी। कुछ लोगो का कहना है कि इन उपद्रवो मे इंकाके नेताओ ने इत्तिहादुल मुसलमीन के लोगो को सहयोग दिया था। 1981 की जुलाई मे भी गोलकुण्डा अचल मे बोनालू के जलूस पर हुए हमलो से साम्प्रदायिक उपद्रव भडक उठा था, छुरेबाजी की 350 वारदाते हुई थी और 21 व्यक्तियो के प्राण गये थे।

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अग्निहोत्र से कृषि को लाभ

—श्री माइक बिलियन, अमरीका—

कृषि के परम्परागत तरीको से हमारी पृथ्वी पर जो हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है वह पिछले कुछ वर्षों से लोगो को चिन्तित कर रहा है। जीव-नाशक रसायनो, औषधि युक्त वनस्पति नाशको और विभिन्न प्रकार के खादो के उपयोग से हमारे उपजाऊ खेत आज धीरे-धीरे बजर भूमि मे परिवर्तित होते जा रहे हैं। मनुष्य से लेकर जीवाणुओं तक के स्वास्थ्य और जीवन पर इन रसायनो और इससे पैदा उपोत्पादों का जो कुप्रभाव हो रहा है वह स्पष्ट है। प्रकृति की सभी वस्तुओ पर इनके विष का असर पड रहा है और खेद तो इस बात का है कि इसके बावजूद इसका उपयोग जारी है। अत, आवश्यक है कि हम और बातो को छोड़ कर पहले कृषि के वैकल्पिक तरीको का विकास करे ताकि हमारी पृथ्वी की रक्षा हो सके। और वे तरीके आज भी पौधों को जीवाणुओ, विभिन्न रोगो से सरक्षण देने व भूमि-क्षरण व उसकी उर्वरा शक्ति कायम रखने मे कारगर होगे।

एक प्राचीन तरीका हवन द्वारा पेड़-पौधो के रोगोपचार का हमारे पास है। यह अत्यन्त प्राचीन और वैज्ञानिक पद्धति है। हवन अथवा यज्ञ के नाम से प्रसिद्ध इस प्रणाली से वातावरण शुद्ध बनता है और इसमे सामंजस्य स्थापित होता है। वातावरण को शुद्ध बनाने के लिये किये जाने वाले विशेष हवन को अग्निहोत्र कहते हैं। हवन की अग्नि से वातावरण मे परिवर्तन होता है और इस अग्नि में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय तावे के हवनकुण्ड मे धान, कण्डे और शुद्ध घी के जलाने से वातावरण मे कृषि के लिये लाभकारी परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है। पौधों पर तो इस का आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। हवन द्वारा पौधो के रूपान्तरण के लिये उत्प्रेरक वातावरण तैयार हो जाता है जो पौधो को शक्तिशाली और स्वस्थ बनाकर पौष्टिक तत्वो को इनकी जड़ो तक पहुचाने मे सहायक होता है। अत:, "जहा नियमित रूप से हवन होता है वहा पौधे बहुत जल्दी फलते-फूलते हैं और इनके फल-फूल और पत्ते के स्वाद, रग, और पौष्टिकता में जबर्दस्त सुधार हो जाता है। इसलिए यदि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय अग्हिोत्र (हवन) किया जाये तो उससे उत्पन्न वातावरण मे पौधों को पौष्टिक पदार्थ प्राप्त होने के कारण इनमे शक्ति का संचार हो उठता है। जिस क्षेत्र मे अग्निहोत्र नियमित रूप से होता है वहां, वातावरण से पौधो को शक्ति तो प्राप्त होती ही है, पौधो से भी इनके आस पास के क्षेत्र में शक्ति-वर्धक-वातावरण उत्पन्न हो जाता है। परिणाम यह होता है कि पौधे पूर्णरूप से विकसित होते हैं और अधिक से अधिक उपज देने लगते हैं।

हवन, विशेष रूप से अग्निहोत्र, की राख जब खेत मे बिखेरी जाती है और बीजो तथा नन्हे पौधो से इसका स्पर्श होता है, तो पौधे बड़ी तेजी से बढ़ते हैं और निरोग तथा हृष्ट पुष्ट होते हैं।

कृषि के परम्परागत तरीके के अनुरूप पौधो की दो कतारो के बीच काफी अन्तर रखना पडता है जिसके कारण भूमि का भारी कटाव होता रहता है। खेतो मे रासायनिक खाद डाले जाते हैं जो भूमि की पौष्टिकता को नष्ट करते हैं और उन्हे पानी के साथ बहा ले जाते हैं। ऐसा होने से भूमि सिकुडती जाती है और जल भी कीचड-युक्त होकर दूषित हो जाता है। इसके मुकाबले पर हवन कृषि प्रणाली से पौधो की कतारो में अधिक अन्तर की आवश्यकता न होने से भूमि का अधिक उपयोग किया जा सकता है। भूमि के कटाव का खतरा नही रहता और थोड़ी भूमि मे अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

ऊंची क्यारियां

इस प्रणाली की एक विशेषता यह भी है कि इसमें यह आवश्यक नही कि क्यारियां ऊंची बनाई जाये। ऊंची क्यारी तैयार किये बिना भी हवन प्रणाली वही लाभ देती है। हवन में इस्तेमाल किये जाने वाले घी के पुष्टिकारक तत्व वातावरण में मिलकर उसे इतना स्वास्थ्यवर्धक बना देते हैं कि वह पृथ्वी के समस्त प्राणियों के लिये हितकर हो जाता है।

ऊंची क्यारियां बनाने का यह लाभ होता है कि मिट्टी में वायु और नमी अच्छे प्रकार मिल जाती है। पौधों के लिये लाभकारी कीट आदि इसमें खूब पनपते हैं। दूसरी बात यह भी होती है कि क्यारियो के ऊंचा बनाने के कारण कोई इनपर पांव नही रख पाता जिससे कि पौधे दबने से बचे रहते हैं। क्यारी ऊंची बनाने से जगह की भी बचत होती है और जब पौधे बढ जाते हैं तो इनके पत्ते उसी पंक्ति के पौधो और समीप की क्यारियो के पौधो से मिलकर इनके नीचे भूमि पर एक प्रकार की छतरी सी बना देते हैं जिसकी वजह से उस भूमि द्वारा सिंचित जल और ओस, धूप में जल्दी उड़ने नहीं पाती और मिट्टी मे नमी बनी रहती है।

पौधों के लिए नितान्त आवश्यक नमी किसी और जमीन मे उतनी देर नही बनी रहती जितनी देर उस जमीन में जिस पर कि यज्ञ के वातावरण का असर पड़ा हो। इस भूमि पर यह असर यज्ञ में घी के इस्तेमाल किये जाने के कारण ही उत्पन्न हो पाता है।

अत: हमने देखा कि अग्निहोत्र द्वारा हम न केवल भूमि का उपजाऊपन बढ़ा कर इसकी उपज ही बढ़ा सकते हैं बल्कि वायु प्रदूषण को, जो आज ससार की एक विकट और गम्भीर समस्या और चिन्ता का विषय बन गया है, रोक-थाम कर सकते हैं। [अंग्रेजी से अनूदित]

यहीं जिऊंगा यहीं मरूंगा

—श्री रुद्रदत्त शर्मा 'साबिर'—

है देश मेरा मैं देश का हूं, यहीं जियूंगा, यहीं मरूंगा,
इसी से तन-मन मिला है मुझको निसार तन मन वा धन करूंगा।
यही है ऋषियों की जन्म भूमि, यही देवों की दिव्य जननी,
जगत गुरु है यह देश भारत, मैं अवहेलना इसकी क्यों करूंगा।
यहीं के फल-फूल, अन्न मेवे, यहीं का वायु व जल पिया है,
मैं इसकी रक्षा में प्राण देकर भी अपना जीवन सफल करूंगा।
यहीं हुए राम और लक्ष्मण यहीं हुए कृष्ण और अर्जुन,
ये भीष्म और द्रोण मेरे पुरखे, मैं इनका नाम अमर करूंगा।
यह आर्य्यावर्त आर्य्यों का, भटक गया आज राहे-हक से,
मैं वेद अमृत की करके वर्षा, हरा भरा यह चमन करूंगा।
है आज सङ्कट में देश-जाति, है मिट रही सभ्यता हमारी,।
मैं हाथ में ले के ओ३म् का ध्वज, फिर आर्य्यवीरों को सजग करूंगा।

यहीं से सब जग में नूर फैला, यहीं वेद-भानु उदय हुआ था।
है ज्ञान का आदि स्रोत भारत, मैं नाज इस पर न क्यों, करूंगा
भंवर में नैया है देश की फिर, इसे बचाने को प्राणपन से,
पुन: यहीं जन्म लूंगा 'साबिर' स्वर्ग में जा के मैं क्या करूंगा।

वार्षिक चुनाव

—आर्य समाज करोलबाग के चुनाव में प्रधान श्री अजय कुमार भल्ला और मंत्री श्री ओम प्रकाश सुनेजा चुने गये।

—आर्य समाज नया बांस, दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे प्रधान : लाला ओमप्रकाश कपडे वाले, मन्त्री : श्री शिव कुमार और कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र नाथ गोटे वाले चुने गये।

—आर्य समाज विनय नगर, दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे प्रधान : श्री सत्यदेव गुप्त, मन्त्री श्री रोशन लाल गुप्त और कोषाध्यक्ष : श्री राम मूर्ति शर्मा चुने गये।

—आर्य समाज अशोक नगर के वार्षिक चुनाव में प्रधान : श्री राजा राम आर्य, मन्त्री : श्री हरीश कुमार आर्य और कोषाध्यक्ष : श्री चन्द्रभान आहूजा चुने गये।

—आर्य समाज बागली के वार्षिक चुनाव में प्रधान : श्री माणक लाल बाड़ोला, मन्त्री : श्री प्रवीण कुमार चौधरी और कोषाध्यक्ष : श्री रमेशचन्द्र आर्य (पाटीदार) चुने गये।

आदर्श गोशाला

देहरादून : वैदिक साधन आश्रम तपोवन (नाला पानी) आर्य संस्कृति प्रचार-प्रसार का प्रमुख केन्द्र है। वर्तमान आश्रम में एक आदर्श गौशाला का निर्माण किया जा रहा है। समस्त आर्यों से निवेदन है कि वे आश्रम से सहयोग की परम्परा को बनाये रखें।—देवदत्त बाली, मंत्री

—नालन्दा : नालन्दा जिला आर्य सभा की अन्तरंग बैठक 15 जुलाई को बिहार शरीफ आर्य समाज मन्दिर में पं० विष्णुमित्र शास्त्री की अध्यक्षता मे हुई।

—मन्दसौर : आर्यसमाज मन्दसौर ने 14 से 16 जुलाई तक आर्य समाज का प्रचार किया।

—आर्य कुमार परिषद, आर्यगुरुकुल कृष्णपुर मभना (फर्रुखाबाद) के वार्षिक चुनाव में प्रधान : ब्र० मनुदेव आर्य भरतपुर (राजस्थान), मंत्री : ब्र० सुरेश चन्द्र आर्य प्रयाग (उ०प्र०) और कोषाध्यक्ष : श्री विनोद कुमार आर्य मथुरा (उ०प्र०) चुने गये।

सुभाषित

आज के ऐसे दिनों में इस बात पर विश्वास करना कि अच्छाई जीवन का एक प्रधान सिद्धान्त है, उतना ही कठिन है जितना अग्निप्रवेश; किन्तु इस विश्वास को त्याग देना इससे भी कठिन होगा। मैं यह खूब समझती हूं कि वर्तमान मनीषियों के अत्यधिक भय ने भी इतने विनाश की आशंका नहीं की थी जितने की सम्भावना उपस्थित है। अतएव अंधे कर देने वाले दुःख और बहरे कर देने वाले भय के बीच अब विश्वास की आवश्यकता और भी अधिक है जिससे कि हमारी भयंकर पीड़ा और भय का उपचार किया जा सके। इतना तो निश्चित-सा हो चुका है कि स्वर्ग और पृथ्वी मनुष्य की निराशा से उत्पन्न मृग-मरीचिका है। किन्तु ऐसे सभी लोग जिनका ईश्वर पर विश्वास है, अपने ही संसार को सच्चा मानते हैं। वे इस बात की चिन्ता नहीं करते कि दूसरों को कैसा लगता है और आनन्द का भी, जिसका सच्चा अर्थ आत्मा का स्वतंत्र श्वासोच्छ्वास है, इस मृग-मरीचिका में खासा हिस्सा है।

—हेलेन केलर

सम्पादकीयम्

अक्ल कब आयेगी ?

स्वतन्त्रता दिवस हमारे लिए आत्म निरीक्षण का पर्व है। इस दिन जहा हम अपने बलिदानी वीरो का स्मरण करते हैं वहां साथ ही अपने अन्त.करण में पैठकर हमको यह भी विचार करना चाहिए कि हमने देश की आजादी के लिए सर्वस्व लुटाने वाले उन बलिदानियों के स्वप्नो को कहा तक पूरा किया है। कभी-कभी बाहर की चकाचौंध ऐसे भुलावे में डाल देती है कि हम देश की परिस्थितियों का सही आकलन नहीं कर पाते।

नि.सन्देह इस बार स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर देश के प्रत्येक निवासी को पंजाब में हुई त्रासदी का स्मरण आया होगा। परन्तु इस विषय मे भी हम यह समझते है कि देश के विभिन्न स्थानों पर जो विद्रोहात्मक स्थिति पैदा हो रही है, उसी का चरम विस्फोट पंजाब में हुआ था। भारत सरकार को समय पर अक्ल आ गई और उसने कार्यवाही करके इस भयंकर विस्फोट को चकनाचूर कर दिया। परन्तु इसकी छिट-फुट चिनगारिया अभी बाकी हैं। किसी भी राष्ट्र के आन्तरिक विद्रोह को समाप्त करना किसी समर्थ सरकार के लिए कठिन नही होता। परन्तु जब बाहर की शक्तियां उस अन्दरूनी विद्रोह को प्रोत्साहन देने में लगी हों, तब समर्थ सरकार को भी परेशानी का सामना करना पड़ता ही है।

हमारे अकाली बन्धुओ को विश्वास था कि पाकिस्तान उनकी सहायता पर आयेगा, परन्तु वैसा नहीं हुआ और न ही वैसा होने की सम्भावना है। पाकिस्तान यहाँ-वहां फुलझड़िया तो छोड सकता है परन्तु भारत पर आक्रमण करने का क्या परिणाम हो सकता है, इसको उससे अच्छी तरह और कोई नही जानता। क्या पाकिस्तान को दिखाई नहीं देता कि सोवियत रूस की सेनाएं उसकी सीमा पर खडी हैं और उसकी सैन्य शक्ति इतनी है कि अमेरिका की सारी सैनिक सहायता के बावजूद वह चन्द दिनों में ही इस्लामाबाद के सारे सपनों को धूलि-धूसरित कर सकता है। इसलिए जनरल जिया का जब तक दिमाग पूरी तरह खराब न हो जाय तब तक वे इस प्रकार की हिमाकत करने की बात नहीं सोच सकते।

परन्तु यह भी सही है कि भारत के अन्दर जो पाकिस्तान समर्थक तत्व हैं उनको देखकर पाकिस्तानी सैनिको के अन्दर भी उमंग उठती है कि क्यों न एक बार बंगला देश का बदला लेने की आजमाइश कर ली जाय। परन्तु सैनिक तानाशाह यह भी जानते हैं कि ऐसा करना सोवियत रूस को स्वर्णिम अवसर प्रदान करना होगा जिसके लिए शायद अफगानिस्तान के बाद वह प्रतीक्षा ही कर रहा है। इसलिए उग्रवादियों की सहायता के लिए पाकिस्तानी इरादों पर चिन्तित होने की बहुत आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

मुख्य मुद्दा यह है कि उग्रवादी अकाली किस प्रकार इतने स्वार्थी, संकीर्ण, साम्प्रदायिक और देशद्रोही बन गये कि सरासर गलत और असंगत मांगों को लेकर जीने-मरने को तैयार हो गये। जब किसी भी जमात की ओर से अपना अलग राष्ट्र निर्माण करने की मांग उठती है तो ऐसी मांग करने वाला वर्ग चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, परन्तु सारे राष्ट्र के लिए इस चिन्ता का अवसर तो प्रस्तुत कर ही देता है कि अपने ही देश-वासी और अपने ही रक्तमांस से बने ये बन्धु इस प्रकार राष्ट्र द्रोह पर कैसे उतर आये। इसकी असली जिम्मेवारी जहां अकाली नेताओं की है वहां देश के अन्य राजनैतिक दलों के नेताओं की भी कम नहीं हैं। खास और से अनैतिकता को प्रश्रय देने वाले और भ्रष्टाचार में लिप्त तथा राजनीति के नाम पर सब प्रकार के अकरणीय काम करने वाले हमारे राष्ट्र के कर्णधार जब आम जनता को देश के लिए कुर्बानी करने का और राष्ट्र भक्ति का उपदेश देते हैं तो जनता को उनकी विश्वसनीयता पर सन्देह होता है। पानी हमेशा ऊपर से नीचे को जाता है। इसी तरह समाज में नैतिकता के जो मान दण्ड नेता लोग स्थापित करते हैं वही मान दण्ड जनता में प्रचलित होते हैं। इसीलिए महा भारत कार ने बड़े साफ शब्दों में यह घोषणा की है—

राजा कालस्य कारणम्

—अर्थात राजा ही काल का कारण होता है। इसी बात को नीतिकारो ने कहा—

यद्-यद् आचरति श्रेष्ठः तद् तदेव इतरो जनः

—अर्थात् श्रेष्ठ लोग जैसा आचरण करते हैं, सामान्य जन उसी का अनुकरण करते हैं। जब सारा देश ही भौतिकता और स्वार्थ परायणता के रंग मे रंगा हो तो आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यो की परवाह कौन करेगा ?

हमेशा ऊंचाई पर चढ़ने के लिए प्रयत्न करना पडता है और नीचे उतरने के लिए उतना प्रयत्न नही करना पड़ता। इसी प्रकार अच्छाई प्रयत्न-साध्य है और बुराई अनायास मनुष्य को अपनी ओर खींच ले जाती हैं। अगर सारे देश के वातावरण में राष्ट्रीयता की वह लहर न हो जो आजादी के संघर्ष के दिनो में थी, तो जिस आधुनिक पीढ़ी ने संघर्ष के वे दिन देखे ही नही और केवल स्वार्थ परायण राजनीति के ही दिन देखे, उस पीढ़ी के मन में राष्ट्रीयता की वह लहर कहा से आयेगी ? हमारी राष्ट्रीयता का तकाजा है कि हम राष्ट्र के लिए कुर्बानी करने वालो को अपने राष्ट्रीय जीवन में उचित सम्मान का स्थान दें जिससे कम से कम उनको उनकी सन्तान तो खब्ती न समझे।

भारत सरकार ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने वाले लोगो को स्वतन्त्रता सेनानी मानकर और उनके लिए पेंशन की व्यवस्था करके अपने कर्तव्य का पालन किया है। पर यहां भी उससे एक बहुत बड़ी भूल हुई है जिसकी ओर ध्यान खींचना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। भारत सरकार ने सर्वथा साम्प्रदायिकता पर आधारित मोपला काण्ड मे हिस्सा लेने वाले आन्दोलन कारियो को तो स्वतन्त्रता सेनानी मान लिया, पर विशुद्ध राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित तथा कट्टर मतान्ध हैदराबाद रियासत के निजाम उस्मान अली से टक्कर लेने वाले आर्य सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सेनानी मानने से इन्कार कर दिया। जिस निजाम स्टेट ने तेलगु भाषी जनता पर जबर्दस्ती उर्दू थोपी थी, अचकन और तुर्की टोपी को रियासती पोशाक निर्धारित करके प्रत्येक हिन्दू को भी उसे पहनने को बाध्य किया था, जिसने हिन्दुओ के मन्दिरों और पाठशालाओ के साथ भेद-भाव किया था और जिसकी हुकमत में इत्तिहादुल मुस्लमीन जैसी खतरनाक संस्था पल रही थी, उस रियासत के हाकिम से लोहा लेना कोई आसान बात नही थी। उस समय के कासिम रिजवी की तुलना इस युग के भिंडरावाले से ही की जा सकती है।

आर्य समाज ने सन् 1939 में अहिंसात्मक सत्याग्रह करके जो आदर्श उपस्थित किया उसे देखकर स्वयं सत्याग्रह के जनक महात्मा गान्धी भी दातो तले अगुलि दबाए बिना नहीं रह सके। स्वयं पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने भी आर्य समाजियों की इस दिलेरी पर हैरानी के साथ अपनी प्रशंसा के पुष्प चढ़ाए। आजादी के तुरन्त बाद हैदराबाद मे पुलिस ऐक्शन के प्रणेता सरदार पटेल को तो सार्वजनिक रूप से यह कहने को बाध्य होना पड़ा कि यदि आर्यसमाजियो ने वह सत्याग्रह करके भूमि तैयार न कर दी होती, तो हैदराबाद रियासत की समस्या को इतनी आसानी से सुलझाया नहीं जा सकता था। वह समस्या कितनी विकट थी, इसका कुछ अन्दाज हाल मे ही अमृतसर मे हुए 'ब्ल्यू स्टार आपरेशन' से लगाया जा सकता है।

एक और विसंगति यह है कि तेलगु देशम और कर्नाटक जैसे राज्यों ने तो हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को स्वतंत्रता सेनानी स्वीकार कर लिया, परन्तु केन्द्रीय सरकार के कानों पर आज तक जूं नही रेंगी। क्या अब भी उसे अपनो और परायों की पहचान नहीं ?

भारत सरकार को अक्ल कब आयेगी ?

■

मनवोचित आदर्शों के प्रतीक

योगेश्वर श्री कृष्ण

—डा० भवानी लाल भारतीय—

बंकिमचन्द्र चटर्जी के अनुसार श्रीकृष्ण ने अपना ज्ञानार्जन, कार्य साधन तथा लोकरजन—तीनों प्रकार की प्रवृत्तियो को विकास की चरम सीमा तक पहुंचा दिया था, तभी उनके लिये यह संभव हो सका कि वे अपने समय के महान् राजनीतिज्ञ और समाज - व्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हो सके।

धर्म के अनुसार लोगो को स्व-कर्तव्य-पालन हेतु प्रेरित करना ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रहा। वे स्वय धर्म मे अनन्य निष्ठा रखने वाले और वास्तविक रहस्य को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान् धर्मोपदेष्टा थे। ऋषि दयान्द ने तो यहा तक कह दिया था कि श्री कृष्ण ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई बुरा काम नही किया इसीलिए महाभारतकार को लिखना पडा:—

यत: कृष्णस्ततो धर्मो
यतो धर्मस्ततो जयः

"जहा कृष्ण है वहा धर्म है और जहा धर्म है वहा जय है।"

बाल्यकाल से ही देखिये। एक दृढ विचार, पुष्ट शरीर और स्वस्थ मन तथा सकल्पनिष्ठ आत्मा वाले ब्रह्मचारी मे जो-जो विशेषताएं होनी चाहिए वे हमे कृष्ण मे मिलती है। उनका शारीरिक बल अतुलनीय है जिससे उन्होने बाल्यकाल में ही अनेक त्रासदायक एव हिंसक जन्तुओ का वध किया। युद्ध-नीति के वे कितने प्रकाण्ड पण्डित थे यह तो इसी से ज्ञात हो जाएगा कि अर्जुन और सात्यकि जैसे वीर उनके शिष्य थे जिनको उन्होने युद्ध-विद्या सिखाई थी। गदा-युद्ध के वे अच्छे ज्ञाता थे। निर्भयता और चातुर्य के वे आकर थे।

आदर्शों के प्रतिरूप

शारीरिक बल के अतिरिक्त उनका शास्त्रीय ज्ञान भी बढ़ा-चढ़ा था। वे वेदों और वेदांगों के अनुपम ज्ञाता थे। साथ ही वे संगीत, चिकित्सा-शास्त्र, अश्व-परिचर्या आदि नाना लौकिक विद्याओ के भी पंडित थे। उत्तरा के मृतप्राय बालक (परीक्षित) को जीवन प्रदान करना, मुरली-वादन से जड़-चेतन को विमुग्ध कर लेना तथा अर्जुन के सारथि बनकर युद्धक्षेत्र में सतत उसकी रक्षा करना आदि उदाहरण इन बातो को सिद्ध करने के लिए उपस्थित किये जा सकते हैं। शारीरिक और मानसिक शक्तियों का चरम विकास तो उन्होंने किया ही था, आचार की दृष्टि से कोई समकालीन पुरुष उनकी बराबरी नहीं कर सकता था। वे महान् सदाचारी तथा शीलवान् थे। माता-पिता की आज्ञा का पालन करने तथा गुरुजनों के प्रति पूज्य भाव रखने को उन्होने कभी विस्मृत नही किया। वे मादक द्रव्यों अथवा द्यूत क्रीड़ा जैसे व्यसनों से सदा दूर रहे, यहां तक कि उन्होंने समय-समय पर यादवों मे यह आदेश प्रचारित किये थे कि यदि कोई व्यक्ति मदिरा पीता हुआ पाया जाएगा तो राज्य की ओर से दण्डनीय होगा। एक पत्नी-व्रत का दृढ़ता से पालन करते हुए भी उन्होंने सपत्नीक बारह वर्ष तक दृढ ब्रह्मचर्य धारण किया। तदनन्तर उनके प्रद्युम्न जैसा पुत्र हुआ जो रूप,गुण और तेज में सर्वथा अपने पिता के ही अनुरूप था। यह खेद की बात है कि पुराणकारो और कवियों ने श्री कृष्ण के इस उज्ज्वल पहलू को सर्वथा विस्मृत कर दिया और उन्हे कामी, लम्पट, कुटिल तथा युद्ध-लिप्सु के रूप मे चित्रित किया।

श्री कृष्ण संध्योपासना तथा अग्निहोत्र आदि दैनिक कर्त्तव्यों का पालन करने में कभी प्रमाद नहीं करते थे। "महाभारत" मे स्थान-स्थान पर उनकी इस प्रकार की दिनचर्या के उल्लेख मिलते हैं। दुर्योधन से संधि वार्ता के लिए जाने पर मार्ग में जब-जब प्रात: और सायं समय उपस्थित होता है, कृष्ण संध्या और अग्निहोत्र करना नही भूलते। 'महा भारत' मे लिखा है:—

प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु
कृतवान् सर्वमाह्निकम्।
ब्राह्मणैभ्योऽनुज्ञातः
प्रययौ नगरं प्रति॥

प्रात:काल उठकर कृष्ण ने आह्निक (संध्या-वंदन आदि) सब क्रियाये कीं, पुन: ब्राह्मणो से आज्ञा लेकर नगर की ओर प्रस्थान किया।"

लोक कल्याणकारी राजनीति

कृष्ण-चरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनैतिक विचक्षणता और नीतिज्ञता है। राजनीति के प्रति उनका यह अनुराग किसी स्वार्थ-भावना से प्रेरित नहीं था। कृष्ण का राष्ट्रवाद तो लोक-कल्याण, जन-हित तथा सब प्रकार की अराजकता, अन्याय, तथा शोषण की प्रवृत्ति को समाप्त कर धर्म-राज्य की संस्थापना के लक्ष्य को लेकर ही चला था।

सर्वप्रथम उनकी दृष्टि अपने जन्म-स्थान मथुरा जनपद के स्वेच्छाचारी, एकतन्त्रात्मक शासन के प्रतिनिधि, अत्याचारी शासक कंस के ऊपर गई। उन्होंने परिवारिक और वैयक्तिक संबंधों का विचार न करते हुए जनता के हित को सर्वोपरि समझा और कंस के विनाश में ही सबका कल्याण देखा। कंस की मृत्यु के पश्चात् ही मथुरावासियों को सर्वांगीण उन्नति करने का अवसर मिला। कृष्ण का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ था कि जरासंध के आक्रमणों का सिलसिला आरम्भ हो गया।

जरासंघ के सेनापति शिशुपाल ने प्रथम तो रुक्मिणी के विवाह के अवसर पर, पुन: युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के प्रसंग मे, कृष्ण को प्रथम अर्घ्य देने के प्रस्ताव को लेकर विवाद खड़ा किया। उस समय कृष्ण ने ही शिशुपाल के वध द्वारा दुष्ट जनों के विनाश का सिलसिला जारी रखा। जरासंघ को समाप्त करने का अवसर तो इससे पूर्व ही उपस्थित हो गया था। 86 राजाओ को कैद कर तथो इन अभागे राजाओं की संख्या सौ हो जाने पर उनकी बलि देने का जो पैशाचिक विचार जरासंघ ने कर रक्खा था उसे सहन करना कृष्ण जैसे धर्मात्मा एवं करुणाशील पुरुष के लिए असंभव ही था।

कृष्ण और महाभारत

'महाभारत" के युद्ध मे भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, दुर्योधन आदि कौरव पक्ष के सभी महारथी वीरों का एक-एक कर अन्त हुआ और इस प्रकार युधिष्ठिर के धर्म-राज्य स्थापना रूपी महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस महत् कार्य की सिद्धि में कृष्ण का योगदान ही सर्वोपरि था। कृष्ण की इस अपूर्व नीतिज्ञता, रण-चातुरी तथा व्यवहार-कुशलता को ठीक-ठीक न समझ कर उन पर युद्ध लिप्सु होने का आरोप लगाना अथवा समस्त देश को युद्ध की भयंकर एवं विनाशकारी ज्वालाओं में झोंककर स्वयं तमाशा देखने वाला बताना, सर्वथा अनुचित है। कृष्ण ने यथाशक्य युद्ध का विरोध किया। उन्होंने युद्ध को राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का अनिवार्य उपाय कभी माना नहीं यहां तक कि वैयक्तिक मानापमान की परवाह किये बिना वे स्वयं पाण्डवों की ओर से संधि-प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर भी गये। यह सत्य है कि इस लक्ष्य को पूरा करने में वे असफल रहे परंतु इससे संसार को यह तो ज्ञात हो ही गया कि महात्मा कृष्ण शान्ति स्थापना के लिए कितने उत्सुक थे तथा युद्ध के कितने विरोधी थे। उन्होंने स्वयं कहा था कि वे पृथ्वी को युद्ध की महा-विभीषिका से बचाना चाहते हैं।

जब युद्ध का निश्चय हो ही गया, तो उन्होंने अत्याचार शमन और दुष्टों को दण्ड देने के लिए किए जाने वाले युद्ध को स्वर्ग का खुला हुआ द्वार बताया तथा अर्जुन को यह निश्चय करा दिया कि आततायियों को मार डालना ही धर्म है। रणक्षेत्र में उपस्थित होते ही अर्जुन में जिन दीन भावों का संचार हुआ उन्हें अनार्यजुष्ट, अस्वर्ग्य और अकीर्तिकर बताते हुए कृष्ण ने अर्जुन को विगत ज्वर होकर युद्ध करने की प्रेरणा दी। वास्तव में क्षात्र धर्म का यही प्रकृत रूप था जिसे कृष्ण ने गीता में वर्णित अपनी ओजस्वी वाणी में उपस्थित किया। आज हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी कृष्ण की यह ओजस्विनी शिक्षा जन-मन की निराशा, ग्लानि तथा दौर्बल्य को दूर करती है एवं कर्तव्य पालन के लिए उठने की प्रेरणा देती है।

आध्यात्मिक जीवन दर्शन

कृष्ण के व्यक्तित्व के इन पहलुओं की समीक्षा के पश्चात् उनके चरित्र के उस उदात्त पक्ष की ओर ध्यान देना आवश्यक है जिसके कारण वे आध्यात्मिक जगत् के सर्वोत्कृष्ट उपदेष्टा समझे गये और वे योगेश्वर माने गये। वे आज भी कोटि-कोटि जनो की प्रेरणा, श्रद्धा तथा निष्ठा के पात्र बने हुए हैं। कृष्ण राजनीतिज्ञ थे, धर्मसंस्थापक भी थे। वे समाज-संशोधक-तथा नूतन क्रान्ति-विधायक भी थे, किन्तु मूलत: वे योगी तथा अध्यात्म-साधना के पथिक थे। उन्होंने जल में रहने वाले कमल की भांति संसार में रहते हुए, सांसारिक वासनाओं से निर्लिप्त रहकर कर्त्तव्य की भावना से आचरण करने को ही योग की संज्ञा दी।

वे ज्ञान और कर्म के समन्वय के पक्षपाती थे। साथ ही, उपासना योग का भी समर्थन करते थे। ज्ञान, कर्म और उपासना का सामंजस्य ही आर्यचिंतन की विशेषता है और यह समन्वय-भावना ही कृष्ण के व्यक्तित्व में साकार हो उठी थी। कृष्ण स्वयं सच्चिदानंद ब्रह्म के परम उपासक थे और इस सर्वोच्च तत्व का साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् भी वे लोक-मार्ग से च्युत होना अनुचित मानते थे। "गीता" में उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि पूर्णकाम व्यक्ति के लिए यों तो कुछ भी करना शेष नहीं रहता, किन्तु लोक-यात्रा-निर्वाह की दृष्टि से उसे भी आर्योचित मर्यादाओं का पालन करना ही पड़ता है। कृष्ण के आध्यात्मिक दर्शन का यही चरम तत्व है और लौकिक सफलता का भी यही रहस्य है।

जीवन की इन विविधतापूर्ण प्रवृत्तियों का समन्वित अनुशीलन एवं परिष्कार ही कृष्ण-चरित्र की विशिष्टता है। यही कारण है कि कृष्ण जैसा व्यक्ति इस देश में ही नहीं बल्कि संसार में भी कदाचित् ही जन्मा हो। राम स्वयं आदर्श राजा थे, किन्तु कृष्ण तो राजाओं के निर्माता होते हुए स्वयं राजसत्ता से दूर रहने वाले साम्राज्य-संस्थापक थे। कृष्ण का व्यक्तित्व समन्वय में अद्वितीय है।

कुछ उग्रवादियों ने सारे सिख समुदाय को कलंकित कर दिया

—हरविन्दर आहूजा—

मेरा सिर शर्म से झुका हुआ है। एक सिख के नाते भी और एक भारतीय के नाते भी। हरमंदर साहिब सिख पंथ की धुरी और देश के सबसे पवित्र धर्मस्थलों में से है। वह भ्रष्ट हुआ है। सेना के द्वारा नहीं, देश विरोधी और अलगाववादी गिरोह द्वारा। भारत की एकता और अखंडता की विरोधी ताकतों के इशारे पर और एक भटके हुए जोश में इस गिरोह ने सिख समुदाय और पूरे देश के नाम पर कालिख पोत दी है। उन्होंने संतों और शहीदों का पंथ माने जाने वाले सिख-संप्रदाय को कलकित और अकेला कर दिया है।

अब तक के इस सबसे घातक सांप्रदायिक अभियान को उस मंदिर के भीतर से चलाया गया जिसे गुरु अर्जुन देव ने बनवाया था। और उसके चार दरवाजे यही साबित करने के लिए बने थे कि वह जाति या धर्म का भेदभाव किए बिना सबके लिए खुला है। सरोवर, जिसके पानी की पवित्रता की कहानियां कहती है कि इससे स्याह कौवे तक सफेद हो गए हैं और जिसमे डुबकी लगाकर लाखों लोग पाप धोने आते हैं आतंकवादियों द्वारा अपने अपराधी कामो के लिए इस्तेमाल किया गया। इसमे हथियार, चुराए गए धन और ट्रासमीटर वगैरह फेंक कर उसे भ्रष्ट किया गया। गुरु रामदास सराय जिसमें दुनियाभर से आने वाले तीर्थ यात्री ठहरते है, अपराधी तत्वों का अड्डा बना दी गई और वहां शराब व नशीले पदार्थों के भंडार जमा हुए। सामूहिक रसोई के काम आने वाले लंगर भवन को भी इतने ही दुष्ट उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया गया।

आतंकवादियो का सबसे पीड़ादायक और घृणास्पद काम सिखो के सबसे ऊंचे ऐहिक पीठ अकाल तख्त-को उग्रवादियों का अड्डा बना देना था जिनका नेतृत्व भिंडरावाले जैसे कठमुल्ला खलनायक कर रहे थे। अकाल तख्त कायम करने वाले गुरु ने भी इस इमारत का निजी इस्तेमाल नहीं किया था। लेकिन उसे इन लोगों ने अपने एक अभेद्य किले में बदल दिया। अगर आतंकवादियों में सिख भावनाओं और अकाल तख्त की पवित्रता की जरा भी कद्र होती तो वे आत्मसमर्पण कर देते या इसके बाहर आकर वीरतापूर्वक लड़े होते। लेकिन उन्होंने तो इसके भीतर से सुरक्षा सैनिकों पर आग बरसाई और अकाल तख्त को क्षतिग्रस्त होने का कारण जुटा दिया। इमारत की शायद मरम्मत हो जाए लेकिन इस घटना के दाग नही मिटेंगे। मेरी तरह किसी भी समझदार और स्वाभिमानी सिख के लिए ये वितृष्णा पैदा करने वाली बातें हैं।

कोई भी अपने आपको इन दुखद घटनाओं की जिम्मेदारी से बरी नहीं कर सकता। वह सिख हो, अकाली हो, उग्रवादी हो, सरकार हो या प्रेस हो। सबको इस पाप में अपना हिस्सा मजूर करना पड़ेगा। मेरी राय में पहले दोषी सिख हैं क्योंकि सेना के ब्लू स्टार अभियान से पहले की पंजाब की घटनाओ को वे निकम्मे होकर उपेक्षापूर्वक देखते रहे। सिख और सिर्फ वे ही बुद्धिमानी से और व वक्त पर कदम उठाकर अपनी प्रतिष्ठा पर आंच आने को रोक सकते थे। वे कट्टर और हठधर्मी भिंडरावाले और उनके समर्थकों को इतना ताकतवर होने से रोक सकते थे। उनकी करतूतो को बढ़ने से पहले ही मसल सकते थे। सिखो ने अकालियो और उग्रपंथियो के द्वारा गुरुद्वारो को भ्रष्ट किए जाते समय आंखे मीचे रहकर अपराध किया है।

सिख चुप क्यों रहे ?

सिख जानते थे कि स्वर्ण मदिर के भीतर बकर खोदे जा रहे है और किलेबंदी की जा रही है। हथियारो का जखीरा इकट्ठा किया जा रहा है। वे परिक्रमा में हथियारों से लैस आतंकवादियो को टहलते हुए देख रहे थे। गुरुद्वारो के भीतर से राजनैतिक भाषण दिए जा रहे थे। यहा तक कि उन मचो का इस्तेमाल भी अकालियो और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी के नेताओ ने अपने क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों के लिए किया जो रागियो के गुरबानी का पाठ करने के लिए है।

लेकिन किसी देशभक्त, शांति चाहने वाले, ईमानदार सिख मे इतना साहस नही हुआ कि इसका विरोध करता। सिखो की काफी बडी तादाद अकालियों से महमत नही थी। पर कोई अकालियों से यह कहने के लिए नही गया कि वे गुरद्वारो को प्रार्थना और पूजा के लिए छोड दें। गुरद्वारो का राजनीति के लिए और अपराधियो को छुपाने के लिए बेजा इस्तेमाल हो रहा था तो किसी सिख ने स्वर्ण मदिर का या पंजाब के भीतर और बाहर के दूसरे गुरुद्वारो का बहिष्कार करने की घोषणा नही की। पजाब में लोग मौत के घाट उतारे जा रहे थे और पंथ और धर्म के नाम पर जघन्य अपराध किए जा रहे थे। लेकिन किसी सिख ने आगे आकर उसे रोकने की कोशिश नहीं की।

और अब वह सिख जो पिछले दो साल की कपा देने वाली घटनाओ के बीच अविचलित रहे अचानक काफी मुखर और सक्रिय हो गए हैं। ऐसा लगता है कि सैनिक कार्रवाई ने उनके अहकार को छील दिया है। स्वर्ण मदिर और दूसरे गुरद्वारो मे क्या हो रहा था यह बात वे भूल गए हैं। उन्हे सिर्फ एक ही बात खल रही है—सैनिक कार्रवाई। सैनिक कार्रवाई को अलग-थलग करके देखते हुए वे अपने आपको और ज्यादा अकेले करते जा रहे हैं। पजाब के दो संसद सदस्य इस्तीफा दे चुके हैं। दूसरे मशहूर सिखो ने अपने राष्ट्रीय सम्मान पदक लौटा दिए हैं। काश उन्होंने यह साहस और पहल तब दिखाई होती जब गुरद्वारो को विघटनकारी कामो के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था, पजाब के भीतर बेकसूर लोगो को बसो से निकालकर उनकी हत्याए की जा रही थी। अब खुशवतसिंह स्वर्ण मदिर के भीतर हुए रक्तपात से विह्वल हो रहे हैं। जैसे पजाब की सडकों पर पिछले दो साल से जो बह रहा था वह रग था।

मैं नही जानता कि समझदार पढ लिखे सिख भी यह क्यों नही समझ पाते कि सैनिक कार्रवाई का कोई विकल्प नही बचा था। इस कार्रवाई को वे पजाब की घटनाओ के पूरे सदर्भ मे क्यों नही देखते? सैनिको ने तो काफी धीरज बरतते हुए कार्रवाई की। अपनी जान तक की कीमत पर। कौन सिख नही चाहता था कि गुरुद्वारे आतंकवादियो से मुक्त हो जाए और उनकी पवित्रता वापस हो जाए? अब जब यह हो गया तो क्या उन्हे राहत महसूस नही करनी चाहिए और सेना का शुक्रगुजार नही होना चाहिए?

मुट्ठीभर अनुयाइयो को छोड कर कोई और सिख भिंडरावाले को कभी मत नही मानता था। लेकिन अब उन्हे खुले आम महिमामडित करने की कोशिश की

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हर मन्दिर की शान बचा दी.........

रचयिता.—लोक कवि ज्ञानीराम शास्त्री

वीर फौजियो ! छोड़ गये तुम अपनी खास निशानी।
हर मन्दिर की शान बचा दी, दे अपनी कुरबानी॥

दुनिया में नामी था अमृतसर का गुरुद्वारा॥
अफीम, चरस होरोईन का था खोल दिया भडारा॥
कर कर छेद खोद के खंदक कर दिया थोथा सारा।
फैलण लाग्या जहर, बहै थी जित अमृत की धारा॥
जोड लिये हथियार विदेशी चीनी पाकिस्तानी॥१॥

जिस मन्दिर मे गूंजें थे कदे वाहे गुरू के नारे।
दर्शन खातिर भगत जनां के पडे रहै थे लारे॥
उस मन्दिर मे बैठ गये छुप कै डाकू हत्यारे।
हिन्दू सिक्ख थे भाई भाई, कर दिये न्यारे न्यारे॥
ले कानून हाथ मे अपने करण लगे मन-मानी॥२॥

बिना खोट के चलती फिरती जनता रोज मरै थी।
अपनी जान बचावण खातिर छुपती पुलिस फिरै थी॥
डाके, हत्या, आगजनी की नई नई लिस्ट भरै थी।
चोरां की मां बैठी भीतर पैदा चोर करै थी॥
भूल गये सब गुरु-वाणी मे दर्ज फर्ज इन्सानी॥३॥

देश धर्म के गद्दारां नै जाल रच्या था भारी।
बने निशाने नेता अफसर पत्रकार व्यापारी॥
टुकड़े टुकड़े देश करण की करली पूरी त्यारी।
खालिस्तानी झंडे, सिक्के, पर्चे कर दिये जारी॥
दई चुनौती सेना तै हुई दुनिया नै हैरानी॥४॥

ठीक वखत पै वीरो ! तुम नै आ पंजाब बचाया।
पा कै घेरा हर मन्दिर का सब नै शीश झुकाया॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब नै हल्फ उठाया।
मिला हुकम जब फायर का तो लागे करण सफाया॥
"ज्ञानीराम" धर्म खातिर तुम कर गये अमर जवानी...

बच्चा गोद लेने के सवाल पर मुस्लिम महिला की याचिका

वच्चा गोद लेने के अधिकार के सवाल को लेकर पुणे की बेगम अख्तरून्निसा ने सर्वोच्च न्यायालय मे एक याचिका दायर की है। उनकी चिंता यह है कि जो बच्चा उन्होंने गोद लिया उसे आगे चलकर कहीं जायदाद से वंचित न हो जाना पड़े। क्योंकि मुस्लिम समाज में गोद लिए बच्चे को जायदाद में हक का पक्का और कानूनी इन्तजाम नहीं है। यहां पेश है बेगम अख्तरून्निसा से यदुनाथ थत्ते की भेंटवार्ता।

खबर मिली है कि बच्चा गोद लेने के अधिकार के प्रश्न को लेकर बेगम अख्तरुन्निसा सैयद ने एक याचिका सर्वोच्च न्यायालय मे पेश की है। बेगम अख्तरुन्निसा पुणे की निवासी है। उनसे मिलने में कोई कठिनाई नही हुई। जिस प्रश्न को लेकर उन्होने सर्वोच्च न्यायालय का द्वार खट-खटाया है, वह बुनियादी महत्व का है इसलिए उनके साथ हुई बातचीत यहा संक्षेप मे प्रस्तुत कर रहा हू।

प्रश्न : अख्तरुन्निसा बहन, मैं जानना चाहता हू कि यह मामला क्या है?

उत्तर : औलाद के बिना औरत की जिंदगी अधूरी लगती है। मैं भी इस कमी को महसूस कर रही थी। अपने शौहर के सामने मैंने अपना दुखडा रोया। हमने डाक्टरी जाच करवाई। डाक्टरो ने बताया कि हमारे अपना बच्चा होना नामुमकिन है। रिश्तेदारो ने मेरे शौहर पर दूसरी शादी करने के लिए बहुत दबाव डाला। मेरे शौहर को लगा कि मुझ पर इसका बुरा असर पड़ेगा। इस्लामी कानून के तहत मर्द को यह छूट है कि एक समय मे उसकी चार पत्नियां तक हो सकती है। लेकिन वे इसका फायदा उठाने के खिलाफ थे। सो हमने सोचा कि हम एक बच्चे को गोद ले लें।

हमने सलीम शेख के छह महीने के बेटे अलीम को गोद लेने का फैसला किया और 1976 में उसे घर ले आए। बच्चा बड़ा ही प्यारा है और हम दोनो का लाडला है। पर जैसे-जैसे वह बड़ा होने लगा, मुझे चिन्ता होने लगी कि बच्चे का भविष्य क्या होगा?

प्रश्न : जब आप दोनों को बच्चे से इतना प्यार है, तो चिन्ता की क्या बात थी?

उत्तर : मेरे मन में कई तरह के शक उठने लगे। क्या कानूनन हम इस बच्चे के माँ बाप बन सकते है? हम सुन्नी मुसलमान है और उलेमा ने बताया कि इस्लाम गोद लेने की इजाजत नही देता। मुझे यह सुनकर हैरत हुई। मैं इस्लाम को मानने वाली हू। उसकी कुछ बातें जानती भी हू। खुद पैगम्बर साहब ने जैद नाम का बच्चा गोद लिया था। तब वे दूसरों को बच्चा गोद लेने से मना कैसे करते? उलेमा इस मामले में कुरान के सुरा 33 आयत 4 और 37 का हवाला देते हैं। मेरी समझ के मुताबिक, उसमे इतना ही कहा गया है कि जायदाद में औरत, बच्चे और गोद लिए बच्चे को बराबरी का हिस्सा नही दिया जाएगा। गोद लेना अगर मना होता, तो यह बात कहने की जरूरत ही क्या थी? ये मेरे विचार है, लेकिन इसमे सही-गलत का फैसला कौन करेगा?

मुझे चिन्ता इस बात की है कि अगर हमारी जायदाद हमारे लाडले बच्चे को नही मिली और जिनका हमसे कोई नजदीकी रिश्ता नही है उनके हाथ मे चली गई, तो बच्चे की क्या हालत होगी? एक बात और है। आज मेरे शौहर को मुझसे बहुत प्यार है। लेकिन फर्ज कीजिए, कल मेरे शौहर ने फिर से शादियाँ कर ली और उन बीबियों से उनके बच्चे पैदा हुए, तो हमारे गोद लिये बच्चे की हालत क्या होगी?

प्रश्न : फिर क्या रास्ता मिला?

उत्तर : जरा देखिए न बातों का सिलसिला। 1966 में 'हिन्दू दत्तक अधिनियम' बना। वास्तव में उसे 'भारतीय दत्तक अधिनियम' बनाना चाहिए था, क्योंकि आईन ने आश्वासन दिया है कि धर्म-जाति-नस्ल-भाषा वगैरह को लेकर नागरिक-नागरिक के बीच कोई गैरबराबरी नही बरती जाएगी मगर इस मामले मे सरकार ने आईन को ही ताक पर रख दिया। 1972 में जब दुबारा दत्तक विधान वाला बिल आया,तब फिरकापरस्त मुसलमानों ने उसके खिलाफ आवाज उठाई। शासक दल दब गया और बिल वापस ले लिया गया। 1980 मे मुसलमानों को उससे छूट दे दी गई। ऐसी हालत मे हम करे तो क्या करे? सर्वोच्च न्यायालय के दरवाजे खटखटाने के सिवा दूसरा रास्ता ही क्या था? मेरे शौहर और असिम के वालिद दोनों इसमें मेरा समर्थन करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रश्न : आपके वकील का क्या कहना है?

उत्तर : अपने वकील आर० के० राव के भरोसे ही तो मैंने सिविल रिट पिटिशन पेश की है। ये उसके कागजात हैं। जरा देख लीजिए। आईन की 44वीं दफा ने राज्य पर जिम्मा डाला है कि वह कामन सिविल कोड बनाए। मगर न शासक दल इस ओर ध्यान देता है, न विपक्ष। दफा 39-अ यह आश्वासन देती है कि राज्य मजलूमों की हिफाजत करेगा। यहां मेरा बच्चा मां-बाप होते हुए भी यतीम कहलाएगा। आईन की दफा 38 में सभी नागरिकों को सामाजिक, माली और सियासी न्याय देने की बात कही गई है। हिन्दू, ईसाई, आदिवासी, हरिजन वगैरह की हिफाजत के लिए तो कानून बने हैं, लेकिन मुस्लिम औरतों को मुस्लिम मर्दों के रहम पर छोड दिया गया है। धार्मिक आजादी को बनाए रखने का जो आश्वासन आईन मे दिया गया है; उसे बहाना बना कर हमारी गुलामी को बरकरार रखने की कोशिश की जा रही है। लेकिन यह चीज गलत है। मैं तो समझती हूं कि मुल्क के तमाम तबकों के लिए कामन सिविल कोड बनाने से इस्लाम के बुनियादी उसूलों पर कोई आंच नहीं आती।

प्रश्न जब भी ऐसा कोई मामला उठता है, तब कहा जाता है कि सिर्फ कानून बनाने से क्या होता है। आपके पास इसका क्या जवाब है?

उत्तर : यह सच है कि सिर्फ कानून बनाने भर से ऐसे सवाल हल नही होते। इसके लिए लोगो को तालीम देनी होगी। लेकिन कानून से रास्ता तो खुल जाता है। वरना शरीयत भी क्यों बनाई जाती और उसमे हेरफेर करने की बात की मुखालिफत भी क्यों होती? हालाकि कानून अपने आप में काफी नहीं है, मगर यकीनन वह जरूरी है।

'तत्त्वमसि'

लेखक—श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, दिल्ली।

प्राप्ति स्थान- विरजानन्द वैदिक संस्थान, गाजियाबाद, मूल्य—50 रु०

मैं श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को उनके बाल्यकाल से ही जानता हूं। वे विद्वान्, मनीषी और बड़े स्वाध्याय शील, सिद्धान्त वादी व्यक्ति हैं। मैं उनके शुभ नाम के साथ—'सिद्धान्ती' शब्द सदा लिखता हूं। स्वामी जी के लिखे ग्रन्थ 'तत्वमसि' को मैंने आद्योपान्त पढ़ा। इसको पढ़कर मुझको बहुत प्रसन्नता हुई। ग्रन्थ क्या है, रत्न-मंजूषा है। इस ग्रन्थ की रचना—विद्वान् स्वामी जी ने प्राचीन सूत्रकार ऋषियों की शैली पर स्वरचित सूत्रो के द्वारा ही की है। यह भी इस ग्रन्थ की विशेषता है।

स्वामी जी के बनाये इस ग्रन्थ में 682 सूत्र हैं उनके नीचे सूत्र रूप में संक्षिप्त अर्थ है और उन सूत्रों की लगभग साढ़े चार सौ पृष्ठों में सुन्दर व्याख्या है। व्याख्या में लगभग साढ़े चार सौ- वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रमाण हैं।

स्वामी जी की कोई भी स्थापना बिना प्रमाण के नहीं है। इसके साथ ही स्वामी जी ने अद्भुत युक्तियां दी हैं। अकाट्य और गहरी मार करने वाले प्रबल तर्क पढ़कर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ।

शांकर मत के खण्डन में तो ऐसा और कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आया। मैं संक्षेप मे इतना ही कहता हूं प्रत्येक स्वाध्याय प्रेमी को यह ग्रन्थ अवश्य ही पढ़ना चाहिये। 'अवसि देखिये देखन जोगू।"

लगभग 5 सौ पृष्ठ के सुन्दर छपे अच्छे कागज के पुष्ट जिल्द सहित ग्रन्थ का मूल्य 50/-रु० किसी प्रकार भी अधिक नहीं है। —अमर स्वामी सरस्वती—

हरिदेव दान स्मारक निधि

श्री देवराज कोछड़, 51-कदम नगर, निजामपुरा, बड़ोदरा—(पूर्व निवासी ग्रीन पार्क, नई दिल्ली) ने अपने पूज्य पिता श्री हरिचन्द जी की स्मृति में मूलधन राशि रुपया 10,000 (दस हजार रु०) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग को दान देकर लोक कल्याणार्थ निधि स्थापित कर दी है। इस निधि की आय से उनके सुपुत्र लेफ्टिनेंट कर्नल राज मोहन कोछड और श्री रवीन्द्र मोहन कोछड़ ('डिप्टी जनरल मैनेजर, ओ० एन० जी०सी० वैस्टइन रीजन बड़ौदरा) के परामर्श से निम्न उद्देश्यो के लिए व्यय होगी—

1—वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार

2—राष्ट्रीय भावना का विकास

3—निर्धन विद्यार्थियों को शिक्षा, अनाथ, विधवा तथा आर्यसमाज सेवारत व्यक्तियों की सहायता।

4—दीन-दुखियों के दुःखों का निवारण।

—आर्य समाज हांसी (हिसार) के वार्षिक चुनाव में प्रधान : श्री जयकिशन दास आर्य, मंत्री : श्री सतीश कुमार आर्य और कोषाध्यक्ष : श्री मा० वीर भान आर्य चुने गये।

-आर्य समाज पलवल के वार्षिक चुनाव में प्रधान : श्री जांजीराम आर्य, मंत्री : श्री अजीव कुमार आर्य और कोषाध्यक्ष : श्री किशन दास तनेजा चुने गये।

किशोर कुंज

उधार लेना उचित नहीं

एक बार की बात है एक स्कूल के कुछ छात्रों ने मिल कर कहीं पहाड़ी क्षेत्र में जाने की योजना बनाई। इसके लिए यह तय किया गया कि सभी बच्चे अपने-अपने घर से कुछ न कुछ खाने की वस्तुएं अपने साथ लेकर आएंगे।

इन विद्यार्थियों में से एक विद्यार्थी अपने घर आया और अपनी मां से अगले प्रात: सफर के लिए खाना बनाने के लिए कहा। परन्तु घर में तो कुछ भी नहीं था। न खाना बनाने का सामन न सामान खरीदने के लिए पैसे। केवल कुछ पिण्ड खजूर अवश्य पड़े थे जो साथियों में ले जाना अच्छा नहीं लगता।

जब बालक ने अपने घर की स्थिति जानी तो उसने मन ही मन घूमने न जाने का निश्चय कर लिया।

कुछ समय बाद बालक के पिता घर आए तो उनकी मा ने बालक के प्रोग्राम के बारे उन्हें बता दिया। परन्तु संयोग की बात है कि उस समय पिता की जेब भी खाली थी। पिता बालक का दिल नहीं तोड़ना चाहते थे। अत: उन्होंने निश्चय किया कि वे पडौसियों से कुछ उधार मांग कर बच्चे की इच्छा पूरी करेंगे।

पिता जब पड़ौसी के घर जाने लगे तो बालक को परिस्थिति समझते हुए देर न लगी। उसने तुरन्त भाग कर अपने पिता की बाह पकड़ ली और पूछा आप कहां जा रहे हैं?

'बेटे! पड़ौसी के यहां कुछ पैसे उधार मांगने जा रहा हूं ताकि तुम्हारे लिए कुछ खाने का प्रबन्ध कर दें। घर में कुछ नहीं है। पिता जी ने उत्तर दिया।

'नहीं-नहीं पिता जी, उधार मागना उचित नहीं है। मैं साथियों के साथ घूमने जाना भी नहीं चाहता। और अगर जाना भी होगा तो घर में खजूर पिण्ड तो पड़े हैं, मैं वही ले जाऊंगा। कर्ज लेकर शान दिखाना ठीक नहीं होता।

पिता ने उस नन्हे से बच्चे को उठाया और छाती से लगा कर खूब प्यार करने लगे। भावुकतावश मुह से बोल न सके।

बच्चों, आप बता सकोगे यह बालक कौन था जो छोटा होने पर भी इतना बुद्धिमान था। इस बालक का नाम लाला लाजपत राय था जो आगे चलकर 'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

चीन में लम्बी जुल्फों के विरुद्ध जेहाद

बीजिंग में स्कूली छात्रों को अब नये कायदे-कानूनों के तहत विनम्र तथा ईमानदार बनने के लिए आगाह किया गया है। उन्हें यह भी चेतावनी दी गयी है कि वे लम्बी-लम्बी जुल्फें न रखें और न ही अभद्र कपड़े पहनें।

ये नियम चीन द्वारा 'आध्यात्मिक प्रदूषण' के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान का ही एक अंग है।

इन नये निर्देशों तहत अब लड़कियां कंधों के नीचे अपनी घनी जुल्फें नहीं रख सकेंगी, नहीं बालों को किसी तरह की बनावटी लहरों वाले स्टाइल में रख पायेंगी। नियमों में छात्रों को अधिक ईमानदार, विनम्र, उदार हृदय तथा शिक्षकों का आदर करने को कहा गया है।

एक अक्तूबर से इस तरह के निर्देश दफ्तरों में भी लागू किए जा रहे हैं।

हास्य-व्यंग्य

० अध्यापक—कौन-सी चीज ऐसी है, जो आज है, मगर चालीस वर्ष पहले नहीं थी।

छात्र—मैं हूं सर!

० टीटू—शीशा तोड़ा तुमने है और दोषी मुझे ठहरा रहे हो।

मीटू—दरअसल पत्थर मैंने तुम्हें मारा था। तुम हट गए, इसलिए शीशा टूट गया।

० लड़का— ओफ, तुमने मेरा कान काट दिया।

नाई—कोई बात नहीं। पैसे मैं सिर्फ बाल काटने के ही लूंगा।

० अध्यापक—भारत में अब बहुत बड़े पैमाने पर खेती की जाती है।

छात्र— लेकिन सर, हमारे गांव में तो अब भी जमीन पर खेती होती है।

० अध्यापक—अगर गुरु और पिता दोनों खड़े हों, तो पहले किसके पैर छूने चाहिएं?

राजू—यह बात पिताजी से पूछकर ही बताऊंगा।

० अनिल—वह व्यक्ति बहुत गधा था। घंटे भर से मेरा सिर खा रहा था।

सुनील—(हंसकर) बेचारा क्या करता! भूखा होगा। सिर में भूसा भरा देखकर स्वयं को रोक नहीं पाया।

० अध्यापक—गधे और घोड़े में क्या फर्क होता है?

छात्र—गधा बोझा ढोता है और घोड़ा इन्सान।

० मैनेजर—तुम यहां फिर आ गए? एक महीने पहले ही तो मैंने तुम्हें यहां से निकाला था।

नौकर—जी, मैं देखने आया था कि मैनेजर की सीट पर अभी तक आप ही है क्या!

ब्रह्मचर्य की शक्ति

जालन्धर में ऋषि सरदार विक्रम सिंह की कोठी पर ठहरे और 35 व्याख्यान दिये।

एक दिन सरदार साहब ने स्वामी जी से कहा कि आप ब्रह्मचर्य से अतुल बल की प्राप्ति की बात कहते हैं। पर इसका सबूत क्या है? स्वामी जी उस समय चुप रहे। सांझ के समय सरदार साहब अपनी बग्घी पर बैठकर बाहर घूमने निकले। गाड़ी में बढ़िया घोड़ों की जोड़ी जुड़ी थी। कोचवान ने चाबुक फटकारा। जो जोड़ी इशारा पाते ही हवा से बातें करने लगती, वह सिर्फ पांव उठाकर रह गई। कोचवान झुंझलाया। सरदार साहब आश्चर्य चकित हो इधर-उधर देखने लगे। पीछे दृष्टि पड़ी, तो देखा कि स्वामी जी गाड़ी के पहिये को पकड़ कर खड़े थे और मुस्करा रहे थे।

सरदार विक्रम सिंह को ब्रह्मचर्य के बल का सबूत मिल गया था।

—घनश्याम आर्य 'निडर'

आर्य कुमार से

—(शरीर M. A.)—

उठ जाग जाग मेरे कुमार!

ओ बाल सूर्य, ओ दिव्य ज्योति, टुक खोल आंख, पलकें उघार।
ओ जननी के अभिमान जाग, निज देश जाति के प्राण जाग
ओ जीवन के अरमान जाग, संस्कृति के गौरव गान जाग।
तेरे जगने से कण-कण में, फिर नव प्रभात का हो विहार।
अपने वैभव से परिचित हो, जग को निज पौरुष दिखला दे।
अपनी गौरव गरिमा फैला, रश्मि समूह निज चमका दे।
तेरे चरणों में लोट पोट जाए धरती का अन्धकार।
ओ जल कण, तू है महोदधि। तुझ को गर्जन करना होगा।
मेरे वामन तुझ विराट का, जग को पूजन करना होगा।
तेरे भ्रूइंगित में बन्दी जग का स्मित, क्रन्दन, चीत्कार।
राणा प्रताप का साहस तुम, अभिमन्यु के पौरुष महान्
तुम दयानन्द की दिव्य दृष्टि, तुम राम कृष्ण से गुण-निधान।
नव किसलय सम कोमल शरीर, तुम वज्र तुल्य भीषण प्रहार।
उठ जाग जाग मेरे कुमार।

भारत बन्दना

भारत मा जननी जय भारत मा
तुझको तेरे बच्चे शीश झुकाते... ..
नये साज से नयी आवाज से तेरा गान कर रहे,
नयी स्फूर्ति, नयी लगन से अनोखा काम कर रहे।
अपनी पुण्य भूमि का नया रूप हम पाते ॥........
कर्तव्य कर्म को ही जीवन का पैगाम बनाये,
काम, क्रोध, मद, लोभ का दमन करते जाये।
जिससे कर भयभीत शत्रु को दूर भगाते ॥.... ..
जब अंधियारे में आशा की किरणें चमकी,
तभी भारत मा के वीरों की तलवारें दमकी।
दूर-दूर देशों से कितने दर्शन करने आते ॥......
सघन वृक्षों की छाया, शीतल गंगा जल इसका,
स्वर्णिम भानु-चन्द्र से पट उज्ज्वल जिसका।
गिरि भी गर्व सहित ऊंचा शीश उठाते ॥......
यह रम्य पुण्य भूमि षड् ऋतुओं से भी सजी हुई,
चहुं दिशि हरियाली संग सुगन्धि है रमी हुई।
इसीलिये सोने की चिड़िया इसे कहाते ॥......

—निरुपमा छात्रा
ज्वालापुर, हरिद्वार

पत्रों के दर्पण में

यह गुलामी भरा जीवन

भारत व अन्य मुस्लिम देशों में महिलाएं गुलामी का जीवन बिताने को बाध्य हैं। भले ही ईरान की शाही हुकूमत के दौरान ईरान मे और कुछ अरसे तक पाकिस्तान की महिलाएं इसका अपवाद रही हों। पर वहां भी हवा बदलने के साथ ही नारी-उत्पीड़न अपनी चरम सीमा पर है जिसे वहाँ की महिलाएं काफी कोशिश के बावजूद न रोक सकी। उन्हें गुलाम बनना ही पड़ा।

हिन्दू महिलाएं भी कुछ हद तक उत्पीड़न का शिकार थी पर ऋषि दयानन्द के प्रचार ने उनकी स्थिति मे सुधार किया है। एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने पर हिन्दू पर मुकदमा चल सकता है जबकि पहली पत्नी के जजबात को कुचलते हुए एक मुसलमान उसकी सौतन ला सकता है। केवल तीन बार 'तलाक' का उच्चारण कर देना ही किसी मुस्लिम महिला के तलाक को पर्याप्त है। सामाजिक व आर्थिक आत्म-निर्भरता से शून्य मुस्लिम महिला सच्चे अर्थों मे गुलाम है जो पति की रजामन्दी बगैर कुछ भी नही कर सकती।—सरला गोयल, मंत्राणी—महिला समाज जीन्द।

धर्म-प्रचार व समाज आकर्षण

शिक्षा के क्षेत्र मे डी० ए०वी० संस्थाओ का कार्य सराहनीय तो है पर इनका क्षेत्र केवल स्कूल-कालेज की सीमा तक ही कैद न रह जाय, इसके लिये संबंधित प्रबंध समिति अपने जीवन मे गहन चिन्तन कर चुके प्रौढ़ वय के ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासियो की भी नियुक्ति करे। इनमें से एक-एक को दो या तीन समाजें सौंप दी जाय, जहां वे सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषद्, योग, आदि की कक्षायें लें। ऐसे उपदेशक शिक्षक के निर्वाह हेतु पढ़ने आने वाले व्यक्तियों से 15-20 रु० मासिक फीस भी ली जाये। अच्छा हो इसका 4-5 वर्ष के कोर्स का पाठ्यक्रम भी बनाया जाय।

क्रमश: प्रत्येक समाज मे 2-3 दिन सायं एक घंटे के लिये ये कक्षायें रखी जायं जिससे न केवल धर्म का सही प्रचार होगा, बल्कि आर्य समाज के प्रति लोगों का सम्मान भी बढ़ेगा।—देवव्रत भंडारी, ए 2/118, पश्चिम विहार, नई-दिल्ली 63.

ऋषि की मृत्यु कैसे हुई ?

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित आर्य समाज के इतिहास के प्रासंगिक अंश को उद्धृत करते हुए जो सम्पादकीय 'सार्वदेशिक' 15 अप्रैल मे छपा है उसमे इन्द्र जी के निष्कर्षों से पूर्णतया सहमत होना कठिन है। ऋषि के साथ शाहपुरा से आये ब्राह्मण सेवक घूड जी (इसे जीवनी लेखको ने धौल जी या धौड मिश्र लिखा है) द्वारा 21 सितंबर की रात को ऋषि को विष देने की बात अब निश्चित हो चुकी है। शाहपुराधीश श्री नाहर सिंह जी द्वारा रसोइयों की निर्दोषिता वाली बात में सत्यता नही है। शाहपुरा निवासियों के साक्ष्य के अनुसार उक्त पाप करने के बाद धोंड मिश्र, कुंए में कूद कर मरने, पश्चात्ताप करने अथवा देशान्तर गमन करने जैसा कुछ न करके शाहपुरा मे ही रहा।

उधर डी० पी० जौहरी द्वारा भारत और लंदन के बीच पत्राचार के पश्चात् ऋषि को समाप्त करने के षड्यंत्र की वर्णित मान्यता भी इसलिये असत्य ठहरती है कि स्वेज नहर उस समय न होने से जहाजो द्वारा आने-जाने वाली डाक की प्रक्रिया इतनी लंबी थी कि स्वामी जी के जोधपुर प्रवास की अल्प-अवधि में उत्तर-प्रत्युत्तर के बाद षड्यंत्र का रचा जाना संभव नही था।—भवानी लाल भारतीय, चंडीगढ़

सैनिक का निवेदन

13 मई के अंक मे पढ़ा कि 'जन-ज्ञान' के माध्यम से हिन्दू-चेतना जाग्रत करने मे संलग्न पंडिता राकेश रानी को अभी तक परेशान किया जा रहा है। उन पर अभी भी 30 मुकदमे चल रहे हैं।

स्वामी जी ने अपने अमर-ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में मनुष्य उसे ही बताया है जो दूसरे के सुख-दुःख, हानि-लाभ में सहभागी बने। हम विश्व को आर्य बनाने का नारा तो लगा रहे हैं पर उपरोक्त स्थिति में भी हम अपने ही आर्य बंधुओं से द्वेष रखें और पूर्ण सहयोग न दे तो विश्व को आर्य हम कैसे बनायेंगे। अनुरोध है कि समस्त आर्य जगत पंडिता राकेश रानी को सहयोग दे यह ध्यान रखकर कि संगठन में ही शक्ति है और समाज ही संगठन है।—सिपाही हरिचंद देशवाल, 282-डी०एस०सी० प्लाटून, एन० डी० ए०, खड़क वासला, पूना-23

'सामाजिक स्वर्ग' एक प्रेरक प्रकाशन

'जन्म से वर्ण' निर्धारण द्वारा सामाजिक-चेतना का गला घोटने के षड्यंत्र जो महाभारत से पूर्व ही प्रारम्भ हो गए थे, उनका देश को क्या दुष्परिणाम भोगना पड़ा, यह सर्वविदित है।

डा० आनन्द सुमन की 'सामाजिक-स्वर्ग' पुस्तक वर्ण व्यवस्था को (गुण-कर्मानुसार) को स्वाभाविक रूप से प्रतिष्ठित करने पर बल देती है, लघु होते हुए भी साधारण पाठक, आर्य विद्यालय के छात्र-छात्राओं-युवाओं, गो-रक्षा व्रती-शिक्षक समुदाय, सभी के लिये संग्राह्य एवं प्रेरक है। पुस्तक प्राप्त स्थान-क्रांति प्रकाशन, तपोवन आश्रम, देहरादून—2480081 —राम स्वरूप, सम्पादक 'वेद-मार्ग' अजमेर

'हिन्दू' कब जागेगा ?

एक अगस्त को ही 'भारत—छोड़ो' आन्दोलन की चुनौती गूंजी थी और स्वराज की कल्पना से अनुप्राणित सारा हिन्दुस्तान आंदोलन में साथ था। क्रांतिकारियों के प्रेरक बलिदानों और ऐसे ही दूसरे आंदोलनों के फलस्वरूप देश 15 अगस्त 1947 को आंशिक रूप से स्वतंत्र हुआ। फिर देश की अखण्डता पर आरा चला और हिंदुत्व का अभिमान संजोने वाले लाखों हिन्दू अपने धर्म का पालन कर पाने की आशा लेकर धन-जन की भारी क्षति झेलकर भी खण्डित हिन्दुस्तान में आये थे, कल्पना के राम-राज्य के लिए।

तबसे लगातार हिंदू धर्म के खिलाफ नियोजित षडयंत्र तो चल ही रहे हैं। साथ ही 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का विस्फोटक हिंदू, जो उस समय गाय की चर्बी लगे कारतूसों को दांतों से खोलना बर्दाश्त न कर सका, अब इतनी प्रगति कर चुका है कि वही चर्बी पेट में पहुंचने पर भी उसको कोई आपत्ति नहीं है।

मंगल पांडे को केवल अंग्रेजों ने ही नहीं मारा, हमने भी उसकी पुण्यस्मृति की नसबंदी कर दी तो फिर दूसरा मंगल पाण्डे अब पैदा कहाँ से होगा! धर्माचार्य और मठाधीश आज केवल मंदिरों-मठों के वैभव के सेवक भर रह गये हैं। धर्म और गोमाता से उनका दूर का भी रिश्ता नहीं रहा। शासन से आशा कहां जबकि यह स्थिति उसी की कृपा का फल है। आज 85 प्रतिशत हिन्दू अपने ही देश में केवल इसलिये वंश-द्रोही की संज्ञा पाते हैं कि वे गोमाता की चर्बी उफ किये बिना खाना नहीं चाहते। किसी सम्प्रदाय विशेष की नापसन्दगी के कारण हिन्दुओं के पर्व या उत्सव विशेष पर रोशनी, माइक या आतिशबाजी को लेकर चाहे जब दंगे तो होते ही रहते हैं। इतनी दुर्दशा झेलता आज का यह हिन्दू फिर भी सोए रहना चाहता है। पता नहीं, यह जागेगा भी कभी? —सुभाषचन्द, साकेत नगर, ग्वालियर।

साम्प्रदायिक आरक्षण एक गलत कदम

केरल एवं असम की इं का सरकारों द्वारा मुस्लिम अल्पसंख्यकों को आरक्षण की सुविधा तथा असम में घुसपैठियों को गले लगाने के साथ ही उन्हें सरकारी नौकरियों मे आरक्षण की खैरात भी बख्शना लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता का क्रूर उपहास है। यह संबंधित क्षेत्रों के अन्य युवकों की प्रतिभा को कुंठित करने का कुचक्र भी है।

भारतीय संविधान केवल अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिये ही आरक्षण की अनुमति देता है, फिर मुसलमानों को ये सुविधायें देकर भारत सरकार ने इस असंवैधानिक कदम की पुष्टि कैसे कर दी, यह एक रहस्य है। इससे प्रशासन पर साम्प्रदायिकता पूरी तरह हावी तो होगी ही, अपितु अल्पसंख्यकों का राष्ट्रीय धारा में विलीन होना तो दूर, एक नयी अलग धारा ही बह निकलेगी। भारत जैसे लोकतंत्रीय, धर्म निरपेक्ष देश में केवल मुसलमानों के लिये किसी भी क्षेत्र में आरक्षण का सवाल ही नहीं उठना चाहिये। शताब्दियों से चले आ रहे आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक शोषण की शिकार अनुसूचित जन-जातियों की बात ही अलग है जिन्हें समाज के अन्य वर्गों के समकक्ष लाने के लिये संविधान ने इनके आरक्षण की व्यवस्था रखी। वह भी एक अस्थायी प्रक्रिया ही थी।

स्मरणीय है कि मुस्लिम लीग द्वारा राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पृथक प्रतिनिधित्व की मांग की ही चरम परिणति थी देश का विभाजन। वही घातक परम्परा फिर से फन उठा रही है। बेहतर हो कि केन्द्र सरकार केरल व असम की सरकारों द्वारा दी गयी साम्प्रदायिक आरक्षण खैरात को निरस्त घोषित करे।—रवीन्द्र मोहन यादव, 91, तिलक नगर, फिरोजाबाद।

समझे तो क्या समझें ?

स्वामी पूर्णानन्द जी ने 'परोपकारी' के एक पुराने लेख में नाना साहब की बहन के बयान के आधार पर ('अठारह सौ सत्तावन'-बालाजी हार्डीकर) नेपाल में नाना साहब की मृत्यु की बात सही मानकर कन्या कुमारी में ऋषि दयानन्द से उनकी भेंट को सर्वथा असंभव बताया है।

श्री हार्डीकर की दूसरी पुस्तक ('1857 की चिनगारियाँ') शायद स्वामी जी ने नहीं देखी जिसके अनुसार कई आख्यायिकाओं के आधार पर उनका सिहोर (गुजरात) के वन में बने एक मंदिर में रहने का वर्णन है। मेरे पास नाना साहब के नेपाल में न मरने के तथ्य को प्रमाणित करने योग्य सरकारी रिकार्डों के आधार पर प्रमाणित पर्याप्त सामग्री है जिससे यदि स्वामी जी चाहें तो मैं उनका भ्रम निवारण करने को प्रस्तुत हूं।

इसी प्रकार पं० दीनबंधु पर भी आपने ऋषि दयानन्द की विकृत छवि प्रस्तुत करने का जो आरोप लगाया है उसका सही उत्तर कलकत्ता का समाज दे सकता है कि पं० दीनबन्धु वेदशास्त्री गप्पी थे या नहीं। वे कितनी सात्विक वृत्ति के व्यक्ति थे, इसे जानकर लोग जानते हैं।

आपकी मनोवृत्ति के बारे में यही कहा जा सकता है—
शराफत को सरे आफत, दुआ को जो दगा समझे।
पड़े उस अक्ल पर पत्थर, अगर समझे तो क्या समझे॥
—डा० देवेन्द्र सत्यार्थी, मु० पो० कुसाढ़ी, जि० नालंदा, बिहार।

कुछ उग्रवादियों नें....

(पृष्ठ ५ का शेष)

जा रही है और उनकी मृत्यु को सिख पंथ के लिए शहादत का दर्जा दिया जा रहा है। वे कोई विद्वान या अनोखे धार्मिक नेता नहीं थे। लेकिन अब उनकी तस्वीर दिल्ली के गुरुद्वारे बंगला साहिब में टांग दी गई और स्त्री पुरुषों को रोज उन पर मालाएं चढ़ाते देखा जा सकता है। कोई सिख खालिस्तान समर्थक नहीं था। पर अब इस गुरुद्वारे के दरवाजे पर ही विद्रोही नारे गूंजने लगे हैं।

बंगला साहिब का दुरुपयोग

गुरुद्वारा बंगला साहिब को स्वर्ण मंदिर का ही एक अदना नमूना बनाया जा रहा है। उसकी दीवारों पर देश विरोधी और भड़काने वाले पोस्टर चिपकाए जा रहे हैं। कुछ में बीबीसी की निष्पक्ष खबरों का गुणगान है, दूसरो मे श्रीमती गांधी की तुलना जनरल डायर से की गई है। चारों तरफ अलगाववादी नारे लिख दिए गए हैं। गुरवाणी का मधुर पाठ सुनते हुए सभाघर में कम लोग दिखाई देते हैं। बाहर राजनीति पर बहस करते और आगे के कार्यक्रम में मंसूबे बनाते हुए लोग ज्यादा नजर आते हैं। हर दूसरे दिन शहीदी दिवस मनाया जाता है और पगड़ी तथा दुपट्टों को काला रंगने का नाटक गुरुद्वारे के भीतर ही चलाया जा रहा है।

क्यों सब समझदार राष्ट्रवादी सिख इन सब घटनाओं को आंखें मूंद कर देख रहे हैं। क्यों वे दृढ़तापूर्वक इन गलत कार्रवाइयों को नहीं रोकते। उनकी चुप्पी से यही लगेगा कि वे भिंडरांवाले के और देश को तोड़ने के इरादों के समर्थक थे और हैं। वे क्यों पुकार कर इस देश विरोधी प्रचार को बंद नहीं कर देते और जोर देकर कहते कि वे भारत के अवि-भाज्य अंग हैं और हमेशा रहेंगे? क्या वे 1947 के आघात को भूल गए हैं?

अपने ही सिख समाज की मेरी इस कड़ी आलोचना का मतलब यह नहीं है कि पंजाब की इस त्रासदी के लिए वे अकेले जिम्मेदार हैं। दूसरों को भी अपनी जिम्मेदारी का अंश मंजूर करना पड़ेगा।

सरकार का दोष है कि उसने अपने स्वार्थों के लिए टालमटोल का रास्ता लिया। उसने हालात बिगड़ने दिए और कार्रवाई करने में बहुत देर कर दी। खुफिया एजेंसियों की असफलता का बहाना बकवास है। अमृतसर में जब किसी बच्चे तक को मालूम था कि स्वर्ण मंदिर के भीतर क्या हो रहा है, तो अपनी विफल मशीनरी के बावजूद सरकार अनजान कैसे रह सकती थी। लेकिन अगर सचमुच वह अनजान थी तो उसे इस्तीफा दे देना चाहिए। असल में मैं मानता हूं कि सरकार यह सब जानते बूझते भी अपने पैर घिसटती रही। अगर वह वक्त पर कदम उठा लेती तो न इतना खून खराबा होता और न उसके नतीजे इतने संगीन हुए होते। लेकिन एक चतुर और चुनावी गणित में माहिर नेता की तरह श्रीमती गांधी ने कार्रवाई का अपना समय चुना।

इस को उन लोगों को हीरो बना देने का दोष मानना पड़ेगा जिनकी कोई अहमियत नहीं थी। वैसे बड़े और राष्ट्रीय प्रेस ने मोटे तौर पर समझदारी ही दिखाई। लेकिन फिर भी कुछ तो जटिल सिख पंथ और राजनीति की अनभिज्ञता के कारण और कुछ खबर को आकर्षक और बिकने योग्य बनाने के लिए अकालियों के हर ऐरे गैरे नत्थू खैरे को पहले पेज पर छापा जाता रहा। इसी तरह के प्रचार के तो अकाली नेता भूखे थे।

अकालियों की गलती

अकाली और उग्रवादी इस पूरे संकट की जड़ में हैं। अकाली इसलिए कि वे रोज अपनी मांगें उठाते, दोहराते और बदलते रहे बिना उसके महत्व और नतीजों के बारे में सोचे। सब जानते हैं कि जब तक वे पंजाब में शासन करते रहे, कोई माग नही उठाई गई। सरकार से बाहर होते ही वे सिखों के हितों के प्रवक्ता हो गए। उनका सबसे बड़ा अपराध सिख धर्म और राजनीति के फर्क को मिटा देना है। अकाली दल हमेशा ही एक राजनैतिक दल था और वे जो भी मांग रहे थे सब राजनैतिक था और सत्ता में आने की कोशिश से उपजा था। उन्होंने बेशर्मी से इसे धर्म का जामा पहनाया। और अपनी मागों को पवित्र स्थानों के भीतर से उठाते रहे। उन्होने सीधे सादे किसानों को पंथ के खतरे में होने का नारा लगा कर बरगलाया। जब भी उन्होने आंदोलन का नारा लगाया उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को नही, आम सिखो को संबोधित करने की कोशिश की। सिखों ने पूरे समाज के नाम के इस बेजा इस्तेमाल पर कभी आपत्ति नहीं की। सभी सिख अकाली नहीं थे और न हैं। लेकिन किसी ने इस महत्वपूर्ण फर्क को साफ करने की कोशिश नहीं की। अकाली और सिख एक मान लिए गए।

अकालियो की दूसरी संगीन गलती यह थी कि आंदोलन के उग्रपंथियो के हाथ में चले जाने के बाद भी उन्होंने देश व्यापक हित को देखते हुए सरकार से समझौता नहीं किया। उन्होने लेन-देन की नीति को मंजूर करने से इनकार किया। उनके पास कभी कोई स्पष्ट राजनैतिक दर्शन नहीं रहा है। फिर भी वे अपनी लड़ाई चलाते रहे क्योंकि उन्हें काफी प्रचार मिल रहा था और सरकार उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही थी। पंजाब में जब हिंसा अपने शिखर पर थी तब भी वे नई मागों को उछालने मे व्यस्त थे। अगर उनमे गुरुद्वारों से आतंकवादियो को साफ करने का साहस नही था या उन्हें आंदोलन वापस होने पर हिट लिस्ट मे आने की आशंका थी तो वे नई मागो को उछालने और नए "बंद" तथा "रोको" आंदोलन की घोषणा से तो अपने आपको रोके रख सकते थे। नतीजन हम सभी पंजाब की घटनाओं के लिए दोषी साबित होते हैं।

इस संकट को फौरी तौर पर भले ही हल कर लिया गया हो पर वह अभी समाप्त नहीं हुआ है। दुर्भाग्य से विभिन्न पक्ष अपनी गलतियो को अब भी दोहराए चले जा रहे हैं। कुछ पथभ्रष्ट लोग पंजाब से सेना के चले जाने का इंतजार कर रहे हैं ताकि बदला ले सकें। दिल्ली के बंगला साहिब या दूसरे गुरुद्वारो में खालिस्तान या भिंडरावाले समर्थक नारे लगाए जा रहे हैं। समझदार सिख आज भी अपने पवित्र स्थानो के इस दुरुपयोग को रोकने के लिए कोई कदम नही उठा रहे। अकाली आज भी आंदोलन की योजना बना रहे हैं और विरोध के कार्यक्रम घोषित कर रहे हैं। सरकार भी पहले की तरह ही असहाय सी सब कुछ चुपचाप देख रही है। मगर सिख अपने कर्तव्य में चूक रहे हैं तो सरकार क्यों तेजी से कदम नही उठा रही है और गुरुद्वारा बंगला साहिब आदि की पवित्रता भंग करने वाले मुट्ठीभर लोगो को बरज नहीं रही? क्यों आखिर वह ज्वालामुखी के फूटने तक हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती है।

['जनसत्ता' से साभार]

दिसम्बर १९८५ में दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन समारोह

सार्वदेशिक सभा दिसम्बर 1985 में, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन-समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निश्चय कर रही है। इस सिलसिले में विदेशों से भी संपर्क करने को सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा अन्य विशिष्ट अधिकारी शीघ्र ही मारीशस और प० जर्मनी आदि देशों के दौरे पर जा रहे हैं। श्री ओम् प्रकाश त्यागी इन दिनों [illegible] हैं, वे वहीं से उनके साथ जर्मनी जाएंगे।

उक्त समारोह में विगत 100 वर्षों की समाज की गतिविधियों का मूल्यांकन और आगामी 100 वर्षों के कार्यक्रमों की योजना निर्धारित की जायेगी जिसके लिये देश-विदेश के प्रमुख आर्य नेता, विचारक और सन्यासियों से सुझाव मांगे गये हैं। इस समारोह में नेपाल नरेश को भी आमंत्रित किये जाने की संभावना है।

वेद-पारायण-पक्ष

नई दिल्ली : वेद-संस्थान, राजौरी गार्डन द्वारा 28 जुलाई से 11 अगस्त तक चलने वाले वेद-पारायण पखवाड़े का आयोजन किया गया। डा० स्वामीनाथन, डा० मण्डन मिश्र, डा० गोस्वामी गिरधारी लाल, डा० फतह सिंह व डा० अभयदेव सहित विभिन्न सम्प्रदायों के अन्य विद्वानों की उपस्थिति भी संभावित थी।

अग्नि-दग्ध भवनों के पुनर्निर्माण की मांग

कानपुर : आर्य उप-प्रतिनिधि सभा कानपुर की कार्यकारिणी मे पारित एक प्रस्ताव द्वारा श्रीनगर मे आर्य समाज हजूरी बाग तथा देवकी आर्य पुत्री पाठशाला के भवनों को जलाये जाने की तीव्र निन्दा करते हुए मुख्यमंत्री जम्मू व कश्मीर सरकार श्री जी० एम० शाह से उक्त भवनों के शीघ्र पुनर्निर्माण और आगजनी के उत्तरदायी तत्वों को दण्डित किये जाने की मांग की गयी है।

बाल्मीकि बस्ती में वेद-प्रचार

मेरठ : केन्द्रीय आर्य समिति, मेरठ द्वारा बाल्मीकि बस्ती पोदी वाड़ा में 22 से 25 जुलाई तक स्थानीय धर्मशाला में वेद-प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। नित्य 8 से 10 बजे रात तक चलने वाले कार्यक्रमों में भजनों के अलावा डा० वेद प्रकाश व जिला सभा मंत्री श्री इन्द्रराज जी आदि वैदिक विद्वानों के कार्यक्रम विशेष प्रभावी रहे।

गुरुकुल रामलिंग का उद्घाटन

उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) बालाघाट की सुरम्य उपत्यका के ग्राम येडसी मे प्राचीन आर्य शिक्षा पद्धति पर स्थापित गुरुकुल रामलिंग का औपचारिक उद्घाटन, आर्यवीर दल दिल्ली के उपाध्यक्ष व्यायामाचार्य, श्री देवव्रत आचार्य ने 5 अगस्त को किया। समारोह उस्मानाबाद जिले के लोकप्रिय जिलाधिकारी श्री रामानन्द तिवारी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

—दिल्ली : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, विक्रान्त नगर के 5वें वार्षिकोत्सव पर एक जनसभा आयोजित की गई जिसे कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने सम्बोधित किया।

शहीद परिवार सहायता निधि

जिन सैनिकों ने राष्ट्र को खण्डित होने से बचाने के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी, उनके निराश्रित परिवारों की सहायता के लिए अपने कर्तव्य को पहचानिये और इस निधि में तुरन्त अपनी भेंट भेजिये।

क्रम संख्या नाम स्थान	राशि
225. आर्य समाज—रेणापुर	51-00
226. श्री पं० बुद्धराम शर्मा—फरीदाबाद	101-00
227. श्रीमती सुशीला देवी—लखनऊ	101-00
228. श्री बी० डी० आनन्द—नई दिल्ली	101-00
229. „ जगन्नाथ गुलाटी—दिल्ली	51-00
230. आर्य समाज—संगरूर	100-00
231. श्री हंसराज कालरा—नागपुर	51-00
232. „ बसंत लाल—अरनोद	100-00
233. „ मुरारी लाल—वाशीम	100-00
234. „ सोमदेव धूत—कोटा	101-00
235. „ बी० के० वधवार—ग्रेटर कैलाश	300-00
236. श्रीमती सत्यावधवार—ग्रेटर कैलाश	300-00
237. „ सावित्री तनेजा—दिल्ली	51-00
238. श्री कुलदीप शर्मा—न्यूजीलैण्ड	101-00
239. „ अरुण बोहरा—फरीदाबाद	100-00
240. „ सूर्य कुमार कुमावत—नरायना	136-00
241. „ हरचन्द जसूमल—दाहोद	251-00
242. „ ज्येष्ठानन्दकिशन चन्द—दाहोद	251-00
243. „ नारायणदास सीरूमल— „	51-00
244. „ जैराम रतलामी— „	51-00
245. „ दासचन्द्र साजनदास— „	51-00
246. „ सेठ कीमतराय खूबचन्द— „	51-00
247. „ विशनदास नारणदास— „	51-00
248. „ हीरालाल भगवानदास— „	50-00
249. „ दाहोद सिंधी एसोसिएशन „	194-00
250. „ डुंगरराम आर्य—तंवर	100-00
251. आर्य समाज—कटरा	51-00
252. आर्य समाज—अमर कालोनी, नई दिल्ली	202-00
253. श्री रमेन्द्रनाथ बहल—लाजपतनगर	51-00
254. आर्य स्त्री समाज,—अमर कालोनी नई दिल्ली	201-00
255. श्री बृजलाल गुप्ता आ० स०—टोहाना	100-00
256. „ ओमप्रकाश „ „ — „	50-00
257. आर्य समाज—बिक्रमपुरा जालन्धर	101-00
258. श्री बी० एम० मेहता—नई दिल्ली	100-00
259. डॉ० हरिवंशराय बच्चन—गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली	51-00
260. श्रीमती कृष्णा मल्होत्रा—लुधियाना	500-00
आर्य समाज पटेल नगर, नई दिल्ली द्वारा रु० 2100-00 की प्रथम किस्त, 50 रु० से अधिक देने वालों की सूची—	
261. आर्य समाज पटेल नगर नई दिल्ली	500 00
262. श्री बालमुकन्द— „	51-00
263. „ नरेन्द्रनाथ सेठ— „	51-00
264 „ शान्तिस्वरूप गंगिया— „	51-00
265. „ बलदेवराज महाजन— „	51-00
266. „ ए० एन० खन्डूजा— „	51-00
267. „ जैसाराम तनेजा— „	51-00
268. „ कृष्णलाल मानक टाला „	51-00
269. „ जगदीश चन्द— „	51-00
270. „ सूरज बल मल्होत्रा— „	51-00
271. „ देशपाल चोपड़ा— „	51-00
272. „ सी० एल० ग्रोवर— „	51 00
273. „ चुन्नीलाल भाटिया— „	101-00
274. „ पी० आर० पुरी०— „	51-00
275. „ गोपाल दास डाबर— „	51-00
276. „ प्रेमनाथ—पटेल नगर नई दिल्ली	50-0
277. श्रीमती सुशीला मेहता—पटेल नगर	51-00
278. „ शीला रानी ग्रोवर— „	51-00
279. „ सरला वर्मा— „	51-00
280. श्री के० एम० साहनी— „	90-00
एवं अन्य दानी	299-00
281. श्रीमती कौशल्या साहनी—„	52-00
282. श्री रामप्यारेलाल भुटानी—„	50-00
आर्य समाज डिफेन्स कालोनी-कस्तूरबा नगर, नई दिल्ली-24 द्वारा शहीद परिवार सहायता निधि में प्रथम किस्त रुपए 1546	
283. श्रीमती अन्नु चोपड़ा	200-00
284. „ डॉ० सरोजनी सेठ	200-00
285. श्री डी० आई० एस० साहनी	101-00
286. श्रीमती कौशल्या	100-00
287. श्रीमती सरोज भाटिया	100-00
288. श्री एच० एस० पाल	100-00
289. श्री बालमुकन्द	100-00
290. श्री लालचन्द जी	55-00
291. श्रीमती शीला वर्मा	51-00
292. श्री कपूर जी	51-00
293. श्री बी०डी० बत्रा	51-00
294. „ चन्द्रकपूर	51-00
295. „ ज्ञानयज्ञ तुली	51-00
296. श्रीमती कुकरेजा	51-00
297. „ ऊषा साहनी	51-00
298. „ कृष्णा मल्होत्रा	51-00
एवं अन्य दानी—	182-00
299. श्री एस० पी० राव—महबूबाबाद	116-00
300. „ बिलासीराम —„	173-00
301. श्रीमती राजरानी —दिल्ली	101-00
302. श्री सर्वजीत कुमार—„	50-00
303. „ जी० सी० गुप्ता—„	100-00
304. „ ए० एम० सहगल—नई दिल्ली	100-00
जोड़ :—	8497-00

दस लाख रु० की थैली भेंट की जायेगी

एशियाड ग्राम सिरी फोर्ट सभागार में प्रो० वेद व्यास जी का जन्म दिवस समारोह

डी० ए० वी०-कालेज मैनेजिंग कमेटी एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा-नई दिल्ली के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी का जन्म दिवस समारोह 2 सितम्बर रविवार प्रात: 9-30 बजे से दोपहर 12-00 बजे तक नई दिल्ली के एशियाड ग्राम में स्थित सभागार में मनाया जायेगा जिसमें प्रो० वेद व्यास जी को 10 लाख रुपए की थैली भेंट की जायेगी। इसी अवसर पर विभिन्न आर्य संस्थाओं की ओर से शहीद परिवार सहायता निधि के लिए आई राशि भी मुख्य अतिथि को भेंट की जायेगी। समारोह की अध्यक्षता के लिए माननीय श्री बलराम जाखड़ एवं गृहमंत्री श्री पी०वी० नरसिंह राव से प्रार्थना की जा रही है।

उस दिन अपना साप्ताहिक सत्संग स्थगित कर समस्त सदस्यों सहित समारोह में पधारें। समारोह स्थल पहुंचने के लिए अपनी-अपनी समाजों की ओर से बसों से बसें बुक करवा लें। अगर इस सम्बन्ध में कोई कठिनाई हो तो सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

—रामनाथ सहगल सभामंत्री

ध्वनि विस्तारक यन्त्र की आवश्यकता है

आर्य वेद प्रचार संस्थान, फरीदाबाद को वेद प्रचार एवं सत्संग के लिये ध्वनि विस्तारक यन्त्र व कुछ दरियों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह माइक (ध्वनि विस्तारक यन्त्र) व दरियां आर्य वेद प्रचार संस्थान को दान देने की कृपा करें।

पं बच्चू राम शर्मा मंत्री आर्य वेद प्रचार संस्थान 238—जवाहर कालोनी गुरुद्वारा रोड, न्यू टाउन फरीदाबाद

सामाजिक जगत्

शहीद परिवार सहायता कोष

आर्य वेद प्रचार संस्थान, फरीदाबाद से 101 रु० शहीद परिवार सहायता निधि को निम्नलिखित व्यक्तियों ने अपनी भेंट भेजी—

1. श्री जगदीश चन्द शर्मा, 2. श्री विशम्बरदत्त, 3. श्री बुधराम शर्मा, 4. चौ० इन्दराज सिंह सांगवान, 5. श्री उत्तमसिंह नागर, 6. श्री मिलाप चन्द्र, 7. श्री भोर सिंह, 8. श्री शिव चरण शर्मा 9. श्री बल्देव लाल सचदेवा, 10. श्री चेतराम, 11. श्री सुभाष चन्द, 12. श्री मनीराम 13. श्रीमती लक्ष्मी देवी, 14. श्रीमती चन्द्र कान्ता, 15. श्री रामसिंह निमले, 16. श्री विशनदास, 17. श्री ओमप्रकाश कपिल, 18. श्री मनोहरलाल कपूर, 19. श्री सत्यपाल, 20. श्री विनोद कुमार, 21. श्री भगवान सिंह, 22. श्री एस०एस० चावला, 23, श्री कृष्ण गोपाल, 24. श्री सुभाष चन्द।

दो मुस्लिम परिवार फिर हिंदू बने

कानपुर : यहां से 65 कि०मी० दूर झींझक कस्बे में दो मुस्लिम परिवारों ने आर्य समाज गोविन्द नगर द्वारा आयोजित शुद्धि-समारोह में पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण किया। इनमें से एक परिवार दो पीढ़ी पूर्व तथा दूसरा गत वर्ष मुसलमान बना था। आयोजन में केन्द्रीय आर्य परिषद के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने शुद्ध होने वाले परिवारों को यज्ञोपवीत पहनाकर गायत्री मंत्र उच्चारण करवा कर उनका नया नामकरण किया। सम्मिलित व्यक्तियों ने शुद्ध-परिवारों का हार्दिक स्वागत करते हुए उनसे प्रसाद ग्रहण किया।

अभूतपूर्व एम०एड० परीक्षाफल

अम्बाला सिटी : स्थानीय सोहनलाल डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल श्री वी० के० कोहली के अनुसार कालेज इस बार भी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के एम० एड० परीक्षा परिणामों में शीर्ष पर रहा है। कुमारी वन्दना 750 में से 545 अंक लेकर विश्वविद्यालय में प्रथम तथा कुमारी बिनोद बाला 539 अंकों से द्वितीय स्थान पर रही। 67 प्रतिशत छात्र प्रथम तथा शेष 33 प्रतिशत द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

सामाजिक कुरीतियों का निवारण करो

आर्य समाज, कबीर बस्ती दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए स्वामी अग्निवेश ने सामाजिक कुरीतियों के निवारण का आह्वान किया तथा जाति-पांति, छुवा-छूत, ऊँच नीच की दीवार तोड़ कर आदर्श समाज की स्थापना में युवकों से आगे आने को कहा। स्वामी जी ने यज्ञाग्नि को साक्षी बनाकर वेद मंत्रोच्चारण सहित विभिन्न वर्ग के घटकों को यज्ञोपवीत धारण कराये।

मेरठ के पूर्व इमाम श्री महेन्द्र पाल आर्य ने भारतीय मुस्लिमों को राष्ट्रीय एकता मजबूत करने व उनके समाज की कुरीतियों के खिलाफ जेहाद छेड़ने की सलाह दी।

वार्षिक चुनाव

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर के वार्षिक निर्वाचन में, प्रधान—श्री देवीदास आर्य; मंत्री-श्री ओम प्रकाश शर्मा व कोषाध्यक्ष —आर्य रिपुदमन कुमार भल्ला चुने गये।

—आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के त्रय—वार्षिक निर्वाचन मे, प्रधान—श्री वटुकृष्ण वर्मन, मंत्री—श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल तथा कोषाध्यक्ष—श्री आनन्द देव आर्य निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज, तिलक नगर, नई दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में चुने गये प्रधान : श्री वीरभान 'वीर'; मंत्री : जगदीश नागपाल तथा कोषाध्यक्ष : श्री हरदेव ग्रोवर चुने गए।

आदर्श विवाह

भिवानी : श्रावण मास में विवाह न करने की रूढ़िवादी परम्परा तोड़ते हुए, दान-देहज, बैण्ड, मद्यपान व दीगर आडम्बरो के बगैर, यहां 21 जुलाई को श्री बद्रीप्रसाद आर्य के सुपुत्र चि० सतीश व सौ० सुनीता, सुपुत्री श्री रामकिशन मित्तल का आदर्श विवाह सम्पन्न हुआ। अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष व महासचिव तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

स्वामी समर्पणानन्द स्मृति समारोह

मेरठ : गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल के संस्थापक स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) का 89वां जन्म-दिवस समारोह यहां मनाया गया। विद्यार्थियों ने स्वनिर्मित श्लोकों से अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की तथा वक्ताओं ने उनके जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालते हुए उनकी योजनाओं को साकार बनाने का संकल्प किया।

'वेद-मास' समायोजन

भिवानी : आर्य प्रतिनिधि सभा भिवानी ने प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० चिरंजीलाल व स्वामी रुद्रवेश के सहयोग से मंढाण, भेरा, गोकुलपुरा, बापोड़ा दिनोद, नीमड़ीवाली, नन्दगांव, मानहेरु, भागेश्वरी बौंद कलां, खरक वास, पालुवास, नाथुवास, मित्ताथल प्रेमनगर और तिगड़ाना गांवों में—23 जून से 28 जुलाई तक वेद-माह आयोजन किया। पूरी अवधि मे जिले मे वेद-प्रचार की धूम रही।

पौराणिक गढ़ टूटा

वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के मंत्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी तथा क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी की प्रचार मंडली के प्रयास से ज्योतिसर में 4 अगस्त को, स्थानीय पौराणिको द्वारा तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न करने के बावजूद आर्य समाज की स्थापना हो गयी। चुने गये पदाधिकारी— प्रधान श्री अजमेर सिंह; मंत्री : श्री नरसिंह कोषाध्यक्ष : श्री नाथूराम।

स्वामी रुद्रवेश व श्री धर्मवीर के निरन्तर प्रयास से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे भी आर्य समाज की विधिवत् स्थापना हो गयी। राजनीति विभाग के डा० ईश्वर सिंह चौहान तथा विधि-छात्र श्री मेहर सिंह का सराहनीय योगदान रहा। डा० ईश्वर सिंह चौहान, प्रधान चुने गये। उन्हे कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार दिया गया। दोनो ही संस्थाएं हरियाणा प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध रहेंगी।

—चाहूवाली (टिब्बी) की छात्र-संसद के निर्वाचन में, अध्यक्ष—श्री उदयवीर सिंह; प्रधान मंत्री—रणवीर सिंह; वित्त-मंत्री—श्री मानेश कुमार : अनुशासन मंत्री सुश्री कैलाश देवी तथा शिक्षा मंत्री-श्री कृष्ण मोटलिया चुने गये।

— दिल्ली . आर्य सभा नया बांस के 64वे वर्ष के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों व अतरंग सदस्यो ने 21 जुलाई को पं० शिवकुमार शास्त्री भू० पू० सांसद की अध्यक्षता मे आयोजित समारोह मे पूर्ण निष्ठा से समाज का काम सोत्साह करने की शपथ ली।

फीजी में चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी की वार्षिक साधारण सभा मे चुने गये पदाधिकारी इस प्रकार हैं—सरक्षक : श्री आर० परमेश्वर आर्य-रत्न' उप-प्रधान . श्री सुरेंद्र प्रसाद जी, श्री हरि प्रसाद जी तथा श्री कालू करन सिंह, महामंत्री : श्री भुवनदत्त, सचिव, फीजी सरकार तथा कोषाध्यक्ष : श्री जयनारायण जोखन व सहायक डा० वी० आई० सिंह।

—आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव में, प्रधान—श्री द्वारकानाथ सहगल; मंत्री श्री शादीलाल तथा कोषाध्यक्ष—श्री चुन्नीलाल व श्री धर्मचन्द जी चुने गये।

आर्य समाज भिलाई नगर (म० प्र०) के वार्षिक निर्वाचन में, प्रधान—श्री बलदेव मित्रधीर; मंत्री— श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह तथा कोषाध्यक्ष—श्री खेमचन्द मिश्र दिया चुने गये।

आर्य समाज नारायणगढ़ (म० प्र०) का 47वा वार्षिकोत्सव 2 अगस्त से 9 अगस्त तक स्वामी कर्तव्यानन्द जी की अध्यक्षता मनाया गया।

वेद सप्ताह

दिल्ली : यज्ञ भवन सत्संग मण्डली के तत्वावधान में स्वर्गीया सत्यप्यारी जी की प्रेरणानुसार श्रीराम रोड, अलीपुर रोड में 16 अगस्त से 26 अगस्त तक वेद सप्ताह का आयोजन किया गया है। चारों वेदों का पारायण श्री लखपति शास्त्री की अध्यक्षता में होगा। महात्मा प्रभु आश्रित जी के लिखित उपदेश एवं स्वामी जीवनानन्द जी के उपदेश प्रतिदिन सायंकाल होंगे।

खंडवा में बाल मन्दिर

खंडवा (म० प्र०)। 29 जुलाई को यहां गणेशगंज आर्य समाज मे स्वामी विरजानन्द बाल-मंदिर का शुभारम्भ किया। प्रादेशिक मंत्री श्री रमेशचन्द्र ने बच्चों में प्रारंभ से ही आर्यत्व के संस्कारों का बीजारोपण करने हेतु प्रादेशिक संगठन द्वारा सभी समाजों को बाल-मंदिर तथा हरिजन-आदिवासी बहुल क्षेत्रो में दयानन्द सेवा आश्रमों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ मे योजना शुरू भी हो चुकी है। संबंधित समाज के कार्यक्रम से प्रभावित होकर उन्होने उसके 10 हजार रुपये के ऋण की आधी रकम अनुदान में परिवर्तित कर दी। कार्यक्रम का संचालन श्री कैलाशचंद पालीवाल ने किया।

सिकन्दर लाल चौधरी दिवंगत

चंडीगढ : आर्य समाज सेक्टर-32 के प्रधान श्री सिकन्दर लाल चौधरी का अकस्मात् हृदय-गति रुकने से 25 जुलाई को देहावसान हो गया। चडीगढ की सभी समाजों ने विगत 6 अगस्त को उनके निवास पर पगड़ी रस्म मे सम्मिलित होकर भाव-भीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

दिल्ली- प्रदेश केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन ब्रह्मचारी आर्य-नरेश जी की अध्यक्षता मे रविवार 19 अगस्त को करौल बाग, आर्य समाज में प्रात 11 बजे से साय 5 बजे तक होगा। प्रात: नये चुनाव के बाद दोपहर 2 बजे से विशाल आर्य युवक सम्मेलन में शाखा नायकों की नियुक्तिया तथा विशेष कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायगा।

—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर स्थानीय ऊधम सिंह वर्ग, युवक परिषद् सब्जी मंडी, आर्य समाज कबीर बस्ती मे "परमार्थ मिशन" कार्यक्रम रात्रि 7 से 9 बजे तक आयोजित कर रहा है। इसमें आदर्श श्रीकृष्ण-चित्र-प्रदर्शनी व झाँकिया भी रहेगी।

—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, मंगोलपुरी शाखा 20 अगस्त रविवार को रात 7 से 9 बजे तक यज्ञ, जनसभा व विद्वानों के प्रवचन आयोजित करके जन्माष्टमी मनायेगी। अन्त में 'देश-भक्ति' चलचित्र का प्रदर्शन होगा।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डो० सी० (४०१)

मानवती आर्य कन्या हाई स्कूल हांसी

हांसी के मानवती आर्य हाई स्कूल की छात्रा अ. भा. स्तर पर धर्म शिक्षा में प्रथम आई। स्कूल की ओर से उसकी मुख्यापिका प्रो. वेदव्यास जी से चल विजयोपहार प्राप्त कर रही हैं।

मानवती आर्य स्कूल के धर्म शिक्षा में प्रथम आने पर समारोह में उपस्थित डी. ए. वी. कालिज कमेटी के अधिकारी तथा स्कूल के शिक्षक ।

राजेश शर्मा विद्यालय में प्रथम

आर्य युवक परिषद् पट्टी का प्रधान, डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी का दसवीं कक्षा का छात्र राजेश शर्मा बोर्ड की परीक्षा में १२०० में से ९०० अंक प्राप्त करके प्रथम आया। वह आर्य समाज के कार्य में भी अति उत्साह से भाग लेता है।

दहेज की समस्या का एकमात्र हल

अन्तर्जातीय विवाह

(कार्यलय-आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1)

केवल वे ही व्यक्ति पत्र-व्यवहार करें या कार्यालय में मिलें जो दहेज की समस्या को समूल नष्ट करना चाहते हों और जाति-पांति के बन्धन को तोड़कर अन्तर्जातीय विवाह करना चाहते हैं। जिन वर व कन्या के नाम पते व पूर्ण विवरण हमारे पास नहीं हैं, और उनके अभिभावक प्रथम बार सम्पर्क स्थापित करना चाहते हों तो पत्र व्यवहार करते समय वर-कन्या का परिचय इस प्रकार दें : आयु,कद, शिक्षा व अन्य योग्यता, व्यवसाय एवं आय, कैसा सम्बन्ध चाहिए (आयु योग्यता, आय आदि), परिवार के सदस्यों की जानकारी, माता-पिता व अभिभावक की सहमति है या नहीं, कार्यालय से इस विषय का फार्म भी मिल जायेगा। (कार्यालय का समय-सायं 5 बजे से 7 बजे तक (रविवार छोड़कर)

सेवा निःशुल्क है।

डा० मदनपाल वर्मा
अधिष्ठाता— अन्तर्जातीय विवाह विभाग

मुद्रक प्रकाशक श्री रामनाथ सहगल मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ३५, रविवार, २६ अगस्त, १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | भाद्रपद कृष्णा १४, २०४१ वि०

बंगला देश के हिन्दुओं को आश्वासन कितने सच ?

विश्व हिन्दू परिषद ने बंगलादेश के राष्ट्रपति से आग्रह किया है कि उन्होने बंगलादेश के हिन्दुओं को एक सम्मानित जीवन बिताने का जो आश्वासन दिया है उसकी सत्यता को वे व्यवहार द्वारा प्रमाणित करे। उन्हे अविलम्ब ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे कि हिन्दुओं का विश्वास प्राप्त कर सकें और हिन्दू अपने जीवन और सम्पत्ति को सुरक्षित समझ सकें। स्मरण रहे, ज० इरशाद ने बोर्ड के सम्मेलन मे हिन्दुओ के लिए कई सुविधाये देने की घोषणा की थी।

विश्व हिन्दू परिषद को यह आशका है कि ज० इरशाद का यह नया पैंतरा वहा दिसम्बर मे होने वाले चुनावों के लिए हिन्दू मत प्राप्त करने की एक चाल भी हो सकती है तथा आश्वासन अस्थायी हो सकते है। अत: यदि ज० इरशाद का हिन्दुओं के प्रति परिवर्तित नया दृष्टिकोण वास्तविक और हार्दिक है तो उन्हे इसकी सत्यता के लिए अविलम्ब निम्न कदम उठाने चाहिए :—

1. शत्रु-सम्पत्ति अधिनियम या निहित सम्पत्ति अधिनियम को पूर्णत. समाप्त कर दिया जाय और इसके विरुद्ध जिन हिन्दुओं ने मामले दायर किये है, उनको यह सम्पत्ति अविलम्ब सौंप दी जाये। उन्हें इस कारण जो वित्तीय हानि हुई है उसके लिए मुआवजा दिया जाय।

2. हिन्दुओं को नागरिक प्रशासन, पुलिस व न्यायपालिका मे नौकरिया दी जायें। प्रतिरक्षा और विदेश सेवाओ के द्वार भी जो हिन्दुओ के लिए बन्द हैं, खोल दिए जायें। तकनीकी और गैर-तकनीकी शिक्षा मे उनके साथ कोई भेद-भाव नही होना चाहिये। इसी प्रकार व्यापार-वाणिज्य मे भी उन्हे पूरे अवसर प्रदान किये जायें और सरकार सहायता दे।

3 हिन्दुओं के जीवन और सम्पत्ति की पूरी तरह रक्षा की जाय। हिन्दू महिलाओ से छेड़खानी करने वालो तथा हिन्दुओ को जबरदस्ती मुसलमान बनाने वालो के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाय।

4. हिन्दुओ के मन्दिर और पूजा स्थानो जिन पर गुण्डो ने जबरदस्ती कब्जा कर लिया है उन्हे सरकारी खर्च पर पूर्व स्थिति मे लाया जाय और उन्हे उनके वास्तविक स्वामी या संगठन को सौपा जाय।

5. राज्य की सभी निर्वाचित या मनोनीत संस्थाओ में हिन्दुओ को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाय। किसी भी नागरिक से दूसरे दर्जे के नागरिक की तरह व्यवहार नही होना चाहिये।

राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए अक्तूबर में आंदोलन

एक लाख से ज्यादा लोग अयोध्या में संकल्प लेकर सात दिनो की जन-जागरण पदयात्रा करते हुए लखनऊ पहुचेंगे और अयोध्या की राम जन्म-भूमि को मुक्त कराने के लिए राज्य सरकार का दरवाजा खटखटाएगे।

दो साल पहले उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री दाऊदयाल खन्ना और गोरखपीठ के महंत अवैद्य नाथ की पहल पर राम जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति बनाई गई थी। समिति अब तक इस बारे मे बीस सम्मेलन कर चुकी है। पिछले अप्रैल में यहां हुए धर्म संसद में भी इसके बारे में प्रस्ताव पास किया गया था।

समिति के अध्यक्ष महंत अवैद्य नाथ, महामंत्री दाऊदयाल खन्ना और विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महासचिव अशोक सिंहल ने पत्रकार सम्मेलन में कहा कि सरकार संघर्ष और आंदोलन की ही भाषा समझती है इसलिए राम जन्म-भूमि को आजाद कराने के लिए लंबी लड़ाई छेड़ी जाएगी। 7 अक्तूबर को लाखों लोग सरयू के किनारे संकल्प लेंगे कि "हम राम जन्म-भूमि को शांतिपूर्ण संघर्ष के जरिए आजाद कराएगे।" ये लोग पदयात्रा करते हुए 18 अक्तूबर को लखनऊ पहुचेंगे।

राम जन्म-भूमि पर 1949 से सरकार का ताला पड़ा है। इस बारे मे राष्ट्रपति को मई मे ज्ञापन दिया गया। राष्ट्रपति भवन से ज्ञापन गृहमंत्रालय भेज दिया गया और गृहमंत्रालय ने उसे राज्य सरकार को सौंप दिया। राज्य सरकार ने ज्ञापन को ठडे बस्ते मे बंद कर दिया है।

महंत अवैद्य नाथ ने कहा कि यह मांग साप्रदायिक नहीं है क्योंकि हम किसी संप्रदाय के खिलाफ आवाज नहीं उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर राज्य सरकार 14 अक्तूबर तक कोई फैसला नही करती तो धर्मससद में विचार किया जाएगा। साधु और महात्माओं की धर्मसंसद का जो फैसला होगा उसके मुताबिक आंदोलन चलाया जाएगा। पत्रकार सम्मेलन में मुरादाबाद के मोहम्मद मुस्तफा भी मौजूद थे। इनके नाम से जारी एक बयान में कहा गया है कि कुरान शरीफ के हुक्म की रोशनी में मथुरा में बनी ईदगाह, काशी में बनी मस्जिद नाजायज है क्योंकि यह मंदिरों को तोड़कर बनाई गई है। अयोध्या में बाबर ने राम जन्म-भूमि का मंदिर तोड़कर उसके एक हिस्से में नमाज पढ़वाना शुरू किया था। ऐसी सूरत में तीनों मंदिरो की जमीन मुतल्लिका मंदिरों को वापस दी जानी चाहिए। इससे हिंदू-मुसलमानो में सच्ची एकता कायम हो सकेगी। महत अवैद्य नाथ ने कहा कि सरकार इन जगहो को हिंदुओ को सौप दे और मुसलमानों को बदले मे बढ़िया मस्जिद बनवाकर दे।

भास्कर राव तेलगुदेशम् के नए मुख्यमंत्री बने

हैदराबाद: राज्यपाल ने मुख्यमत्री श्री रामाराव को विधान सभा में अपना बहुमत सिद्ध करने का मौका दिये बगैर ही उन्हें बर्खास्त कर दिया। उन्होने पार्टी के ही उदीयमान धूमकेतु श्री भास्कर राव को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिला दी।

देश के सभी बिपक्षी दलो पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। 16 अगस्त को संसद के दोनों सदनो मे दो को छोड़कर शेष सभी विपक्षी दलो ने 'वाक-आउट' किया। शुक्रवार को समूचे आंध्रप्रदेश में राज्य-व्यापी बन्द का आह्वान किया जिसमे छिटपुट हिंसक घटनाओं में अनेक व्यक्ति मारे गए।

श्री रामाराव अपने समर्थक 162 विधायकों को राष्ट्रपति के सम्मुख पेश करने के लिए 21 अगस्त को दिल्ली पहुचे। जिस रेलगाडी मे विधायकगण आए, वह 11 घटे लेट थी। हवाई जहाज भी कई घटे लेट था। उसमे बम होने की अफवाह से विमान की तलाशी लेने मे इतना विलम्ब हो गया। रामाराव तथा विपक्षी दलो का कहना है कि रेल और विमान को जान बूझकर लेट किया गया। नई दिल्ली पहुचने पर विपक्षी दलो ने उन का जबर्दस्त स्वागत किया। 21 अगस्त के बाद का घटना चक्र क्या होगा, यह अभी भविष्य के गर्भ मे है।

[illegible]—[illegible] स्वामी सरस्वती सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अन्न भी ब्रह्म के समान विश्रुत

—मनोहर विद्यालंकार—

अर्वन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का
आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥
साम 445—1114

ऋषिः—त्रसदस्युः । देवता—इन्द्र ।
छन्दः—द्विपदा विराट् ।

शब्दार्थ—सामाजिक—(स्वर्का:) उत्तम सात्विक अन्न भोजी (मरुतः) मनुष्य यदि (अर्कम् अर्चन्ति) अन्न का मर्यादित ढग से सेवन करते हैं, तो यह अन्न—जो (श्रुत:) ब्रह्म के समान विश्रुत (युवा) सुखदान और दु:ख दमन मे समर्थ तथा (इन्द्र:) ऐश्वर्य और चमक प्रदान करने वाला है—(आ स्तोभति) अपने सेवन करने वालों के दु:ख और रोग पर रोक—(अवरोध) लगा देता है।

आध्यात्मिक—(स्वर्का:) अर्चना के उत्तम साधन भूत मन्त्रों का अनुकरण करने वाले (मरुत:) प्राण साधक मनुष्य जब (अर्कम्) अन्न से समान सेवनीय तथा पूजनीय परमात्मा की (अर्चन्ति) आचरण द्वारा अर्चना करते हैं, तब वह (श्रुत:) अन्न के सदृश विश्रुत (इन्द्र:) परमैश्वर्यवान् व सर्व समर्थ (युवा) दु:ख दूर करने और सुख देने में संलग्न परमात्मा, अपने भक्त के दु:खो पर (आ स्तोभति) सब ओर से रोक लगा देता है।

निष्कर्ष—प्राण साधक और सात्विक अन्न भोजी जन यदि अन्न को उचित मात्रा में सेवन करते है, तो यह शक्ति और दीप्ति प्रदान करके उन्हे रोगो और दु:खो से बचा देता है। अमर्यादित ढंग से सेवन किया जाने पर दु:खदायी होता है। आवश्यकता से अधिक सेवन, मनुष्य को रुग्ण कर देता है, और आवश्यकता से कम सेवन करने से मनुष्य निर्बल और अशक्त हो जाता है।

अन्न को युवा कहा गया है क्योंकि यह दु:खो से पृथक् करता है, और दु:ख देता भी है। इसी प्रकार यह सुख देता है, और सुख से पृथक् भी करता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र मे प्रगति चाहने वाले साधकों को प्राण की साधना के साथ साथ मन्त्र वर्णित उपदेशो और आदेशो के अनुसार अपना जीवन बनाकर अपने कर्मों द्वारा परमात्मा की अर्चना करनी चहिये।

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य
सिद्धि विन्दति मानव.'।
गीता।

प्राण की साधना से मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है, ऐश्वर्य बढता है, और वह सुखी होता है। प्राण की उपेक्षा और विकृत होने से अनेक रोग और दु:ख पनपने लगने हैं।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि, देवता और छन्द शब्दों के अर्थ संकेत करते है—कि जब तक रोम कृमियों को त्रस्त कर, और काम क्रोधादि दस्युओं को उद्विग्न कर के मनुष्य, त्रसदस्यु ऋषि नहीं बन जाता, तब तक उस पर 'इन्द्र' ऐश्वर्यशाली की कृपा नही हो सकती, और न ही वह अपने क्षेत्र में विराट् और इन्द्र बन कर देदीप्यमान हो सकता है।

अन्न प्राणदाता और प्राणसंहर्ता

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य
पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम ।
यो मा ददाति स इदेवमावद्
अहमन्नमन्नमदन्तमद्मि ।
साम.594

ऋषि:—आत्मा। देवता—अन्नम्।
छन्द:—त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ—(अहम् अन्नम्) मैं अन्न रूप से सबको प्राण देने वाला तथा आयु समाप्ति पर ले लेने वाला (देवेभ्य: पूर्वम्) सब प्राकृतिक देवों तथा इन्द्रियो से पहले विद्यमान और (ऋतस्य) प्राकृतिक सत् के अटल नियम व (अमृतस्य) चेतन आनन्द के (नाम) स्वरूप की (प्रथमजा) प्रथम अभिव्यक्ति (अस्मि) हूं। इस तथ्य को जानकर (य:) जो सतत गतिशील जीव (मा ददाति) मेरे निमित्त से अर्थात् परार्थ के लिये मुझे अन्न का दान करता रहता है (स इत्) केवल वह (एवम्) इस विधि से (आवत्) जगत् की रक्षा करता है, और मुझे प्राप्त करके जन्म-मरण से छूट जाता है। इस से भिन्न विधि से अर्थात् केवल स्वार्थ या भोक्ता भाव से (अन्नम्-अदन्तम्) भोगों को भोगने वाले को (अहमन्नम्) मैं अन्न— अत्ता चराचर ग्रहणात् (वेदान्त अधि)—उसे खा लेता हूं, उसके प्राण वापस ले लेता हूं, और वह जन्म-मरण के चक्र में घूमता रहता है।

निष्कर्ष—वह परमात्मा अन्न सबको प्राण-दान करने तथा प्राण-हरण करने से अत्ता है। वह ऋत और अमृत दोनों स्वरूपों में प्रथम अभिव्यक्ति है। 'नासदासीन्नोसदासीत्तदानीम्' 'आनिदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न पर: किञ्चनास, उससे पहले कुछ न था।
ऋक् 10-129-1,2

जो मनुष्य दाश्वान् बनकर भोग्य पदार्थ दूसरों को देता है, और उस अत्ता के प्रति आत्म समर्पण करता है, वह उसे प्राप्त करके जन्म-मरण के चक्र से छूटकर मुक्त हो जाता है। इसके विपरीत जो भोगों में लगा रहता है, उसे वह खा लेता है। 'भोगा नभुक्ता वयमेव भुक्ता:'। यही स्थिति है।

आत्मा और अन्न अर्थात् भोक्ता और भोग्य में वस्तुगत भेद न होकर दृष्टि भेद है। जब तक मनुष्य अपने को भोक्ता मानता है, तब तक वह भोगासक्त होने के कारण भोग्य जगत् का अंग बना हुवा, इसमें घूमता रहता है। जिस दिन वह अनासक्त हो जाता है, उसी दिन अपने (अन्न) स्वरूप को अमृत बना लेता है, अथवा आत्म समर्पण कर देता है, और उसे प्राप्त कर लेता है।

विशेष—मनुष्य अपने आत्म-स्वरूप को पहचानने के बाद ही परमात्मा के अत्ता रूप को जानता है, उसे प्राप्त करता है और उसका कृपा-पात्र बनता है। इस में सहायक है—काम, क्रोध, लोभ का त्याग; ऐसा संकेत मिलता है छन्द के शब्दार्थ से।

ऋषि और देवता के सम्बन्ध का सामान्य निर्देश भी है—कि व्यक्ति ऋषि बनकर अर्थात् उसके दर्शन (दृष्टिकोण) और तदनुकूल आचरण को अपना कर ही देवता-स्वरूप को जान सकता है, या उसकी कृपा प्राप्त कर सकता है।

इन्द्र के भर्ग को धारण कर पुष्ट बनो

उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्त:
पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥
साम 444-1115

ऋषि:—त्रसदस्यु:। देवता—इन्द्र.।
छन्द.—द्विपदा विराट्।

शब्दार्थ—(प्रक्षे) इस अश्वत्थ [अनित्य] जगत में (मधुमति) मधुमय अनुभूतियों से पूर्ण (उपक्षियन्त) कर्मण्य बनकर निवास करते हुए और साथ ही साथ प्रतिदिन क्षीण होते हुए, हे (इन्द्र) सर्व सामर्थ्य और परमैश्वर्य के स्वामिन् (ते रयिं धीमहे) हम तेरे भर्ग रूप रयि का ध्यान करते है और उसे अपने मे धारण करने का प्रयत्न करते हैं; इसलिये तू ऐसी कृपा कर कि हम (पुष्येम) सदा पुष्ट रहें।

निष्कर्ष—यह जगत् और हमारा शरीर यद्यपि अनित्य और नश्वर है, फिर भी हेय नहीं है। उस पूर्ण परमेश्वर की रचना होने से यह भी पूर्ण है। इस में रोते-झींकते हुए नहीं, अपितु हंसते-गाते हुए और मनुष्यता के लिये कुछ न कुछ करते हुए जीना है।

अश्वत्थे वो निषदनम्। ऋक् 10-79-51 यद्यपि यह शरीर और जगत् अनित्य हैं, फिर भी देवसदन हैं। यहीं अमृत [नित्य] के दर्शन होते हैं। अश्वत्थो देवसदन:। तत्रामृतस्य चक्षणम्। अथर्व 5-4-3 यह जगत् और शरीर पूर्ण है—पूर्णात्पूर्णमुदंचति। अथर्व० 10-8-29
यस्यां नृत्यन्ति गायन्ति
भूम्यां मर्त्या व्यैलबा:। अथर्व 12-1-41
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।
यजु: 4-2

विशेष—इस शरीर और जगत् में प्रतिक्षण क्षय हो रहा है, उससे बचना हो या उसे स्थगित करना हो तो इन्द्र के रयि का ध्यान करके जितेन्द्रियता को धारण करना चाहिये। जितेन्द्रिय बनने का अर्थ है, इस मन्त्र के द्रष्टा त्रसदस्यु बनना। त्रसदस्यु उसे कहते है, जिस से काम क्रोधादि अन्त:करण के और चोर लम्पट आदि समाज के दस्यु उद्विग्न और भयभीत रहते हैं। (त्रसी उद्वेगे+दसु उपक्षये)

जो व्यक्ति त्रसदस्यु है, उसे किसी क्षेत्र या विषय मे विशिष्टता प्राप्त करके विराट् बनना बहुत आसान है। विराट् के पोषण का सब ख्याल रखते हैं, वह सुगमता से इन्द्र-सखा अर्थात् शक्तिशाली और ऐश्वर्यशाली बन सकता है।

पता—522, ईश्वर भवन
खारी बावली, दिल्ली—6

अन्तर्जातीय विवाह अभियान

दिल्ली : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य मे इस बात पर बल दिया है कि अतीत से विनाश का कारण बने और आज भी देश के प्रजातांत्रिक ढांचे जर्जरित करने वाली जन्मगत जातिपाति व्यवस्था के उन्मूलन के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उत्थान के कार्य में देश-भक्त और धर्म-प्रेमी जनता के योगदान का समय आ गया है। आर्य समाज वैदिक वर्ण-व्यवस्था के, गुण-कर्म पर आधारित सिद्धान्त को ही सही मानता आया है। इसीलिये श्री हरिविलास शारदा द्वारा केन्द्रीय असेम्बली में अन्तर्जातीय विवाह विधेयक प्रस्तुत करा कर पारित करवाया था।

उन्होंने बताया कि इसीलिये सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा ने अपने धर्मरक्षा अभियमान के तरह राष्ट्र प्रेमी युवक-युवतियों से अन्तर्जातीय विवाह का संकल्प लेने की अपील की है। इस संबंध में संयोजक, अन्तर्जातीय विवाह विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नयी दिल्ली से संपर्क किया जा सकता है।

सुभाषित

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलव-दुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति॥

मूर्ख सहज ही वश हो जाता और सहजतर ही विद्वान्।
पर न ज्ञान-लव-दुर्विदग्ध को दे सकते ब्रह्मा भी ज्ञान॥

मेंहदी रचे हाथ पर छड़ी बजें छमछम

—राजीव बोरा—

बड़े शहरों से कस्बे तक तेजी से फैल रहे कान्वेंट स्कूलों की शिक्षा का असली चेहरा एक ताजी घटना में देखा जा सकता है। पूना के पास पिंपरी के कांवेंट स्कूल की प्रिंसिपल ने अपनी छात्राओं को यह सिखाने के लिए कड़ी सजा दी कि माथे पर कुंकुम और हाथों पर मेंहदी लगाने के भारतीय संस्कार कांवेंटी शिक्षा के लिहाज से अक्षम्य अपराध हैं। (हिंदुस्तान टाइम्स में पी०टी०आई० की 4 अगस्त 84 की खबर)। 14 अगस्त को 'जनसत्ता' में मेरठ के मशहूर सोफिया स्कूल का एक दूसरा ब्यौरा है। इस स्कूल की अध्यापिकाओं को कुछ लड़कियों का घुटनों तक ढकने वाले स्कर्ट पहनकर आना बेहद नागवार गुजरा। उन्होंने गुस्से मे ब्लेड से उन लड़कियों के स्कर्ट कुछ अंगुल फाड़ दिए ताकि वे और उनके मां-बाप सब सीख सकें कि स्कर्ट टांगो को कितना ढके और कितना उघाड़े।

यह तो आम जानकारी की बात हैं कि ऊंचे दर्जे के पब्लिक स्कूलो मे छात्रों के मुंह से अगर अंग्रेजी के बजाय मातृभाषा का कोई शब्द निकल जाए तो उस बेचारे पर बन आती है। हिन्दुस्तानी त्योहारों और उत्सव के बारे में हीनता का भाव सींचना अंग्रेजी शिक्षा का अविवार्य हिस्सा है। धड़ल्ले के साथ वे देश के सम्मान की अवहेलना के संस्कार छात्रो में भर रहे हैं और स्वदेशी मान्यताओ और संस्कृति के बारे में अपराध भावना पैदा कर रहे है।

इन घटनाओं को कांवेंट शिक्षा के पक्षधर अपवाद बता कर छुट्टी पा लेंगे। भारतीय समाज भी इतने सांस्कृतिक असमंजस में पड़ा हुआ है कि उसे ऐसी बेहूदी हरकतें बर्दाश्त करते चले जाने की आदत पड़ गई है। इसलिए अपनेपन में गौरव महसूस करने के गुण को बड़ी आसानी से एक ऐतिहासिक दोष बताकर अंग्रेजी शिक्षा समाज के अगुवा वर्ग का पश्चिमीकरण करने में सफल हो रही है। यह घटना नहीं है कि देश में जब देशज शिक्षा की संस्थाएं सूखीं तभी कांवेंट की शिक्षा फल-फूल पाई।

अंग्रेजीपरस्ती आज सत्ताधारी लोगों का धर्म हो गई है। इस धर्म को निभाने में सहायक हर वर्ग, संस्थान और व्यक्ति फलफूल रहा है। उसे नियम या कानून की किसी तरह की बाधा नहीं है। कांवेट स्कूलों में जो सांस्कृतिक भेदभाव अपने छात्रो के साथ होता है उसकी आम स्कूलों में किसी पश्चिमी छात्र के साथ कल्पना नहीं की जा सकती। साफ है कि यह भेदभाव वर्ग भेद के सिर पर चढकर हो रहा है। सत्ताधारी वर्ग इस भेदभाव को प्रगतिशीलता का जामा पहना चुका है। देशज संस्कारों व मान्यताओं को पिछड़ापन बता दिया गया है। पश्चिमी गुलामी इतनी ज्यादा है कि हिंसा को भी खुलेआम एक प्रगतिशील विचार बताया जा रहा है।

शिक्षा के जरिए हमारे सामाजिक संस्कारों को मांजने, संवारने और सींचने का काम होना चाहिए। लेकिन अंग्रेजी शिक्षा इन संस्कारो को खत्म करने पर तुली हुई है। उसकी जगह ऐसी सभ्यता और संस्कार बच्चों पर जबरन लाद दिए जाते है जिसका उसके आस-पास के सामाजिक जीवन में कोई खास महत्व नही है। राजकोट के राजकुमार कालेज में छुरी कांटे और नेकटाई आधुनिकता के पर्याय हैं। उसके बिना कोई छात्र रह नहीं सकता। मुजफ्फरनगर जैसे छोटे शहर के कांवेट स्कूल का पाठ्य-पुस्तक में लंदन ब्रिज के गीत गाए गए है। कांवेट स्कूल में पढ़ने वाले मेरे मित्र का बेटा अपने पड़ोस के उन सब बच्चों को असभ्य, गंवार और बेवकूफ बताता है जो बर्थ-डे पर केक नहीं काटते या उनकी रटी-रटाई तोतापंथी गोलंदाजी का जवाब नहीं जानते।

पब्लिक शब्द का मजाक बनाने वाले ये पब्लिक स्कूल तेजी से पनप रहे हैं और छोटे ताकतवर वर्ग की रीढ़ बन गए हैं। समाज के बड़े हिस्से के सांस्कृतिक जीवन से अलगाव पैदा करके वे शासक वर्ग में एक तरह की हिंसा के बीज रोप देते हैं। उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से बाकी पूरे समाज को पिछड़ा समझने और उन पर हुक्म चलाने के लिए तैयार कर देते हैं। इससे वे अपना कोई स्वाभिमान भी नहीं उपजा पाते। पश्चिमी सभ्यता के दास की तरह अपने बारे में वे एक हीनग्रंथि पाले रहते हैं। इसका एक उदाहरण पिछले साल इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ की दिल्ली यात्रा के समय सामने आया था। दिल्ली के सेंट थॉमस स्कूल ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के समय को याद करते हुए रानी एलिजाबेथ को बच्चों से पालकी पर बैठवाया था।

ये स्कूल चाहे धार्मिक मिशनों द्वारा चलाए जा रहे हों या ऊंचा मुनाफा कमाने के लिए निजी तौर पर खोले गए हों सब के सब एक ही तरह की विचारधारा लोगों के मन में भर रहे हैं। सेवा और शिक्षा के नाम पर ईसाई मिशनरियों ने एक जमाने तक देश के बहुत बड़े हिस्से में यह काम बड़ी आक्रामकता के साथ किया था। नगालैंड में कमीज और पतलून न पहने वाले लोग अछूत बताए गए। उत्तर पूर्व की पहाड़ियों का अधिकांश हिस्सा ईसाई धर्म में रंग चुका है। इसके बावजूद इस सांस्कृतिक आक्रमण के खिलाफ वहां के लोगों में प्रतिक्रिया को रोका नही जा सका। पिछले कुछ दशको मे उनका अपनी भव्य पोशाक, भाषा और रहन-सहन के रमणीय पहलुओं के प्रति मोह बढ़ता रहा है। आज नगालेंड में नगा शॉल के बिना घूमने वाला आदमी बिरादरी से बाहर मान लिया जाता है। गांधी जी ने गलत नहीं कहा था कि वे मिशनरी गतिविधियों के बारे में उत्साहित नही हैं।

आजादी के बाद ये सारे शिक्षा संस्थान नए सत्ताशाली और संपत्तिशाली वर्ग के इस्तेमाल मे आने लगे। स्वदेशी संस्थाए और प्रयोग औपनिवेशिक शासन के दौरान तो नष्ट हुए ही थे, इस नए वर्ग ने भी इन संस्थाओ को फिर से फलने-फूलने नहीं दिया। उन्होंने चाहा यही कि देश में राज करने वाले और प्रजाजनो की शिक्षा अलग-अलग रहे ताकि इस वर्ग को चुनौती न मिल सके। इसमे वे पूरी तरह सफल नही हो सके तो उसकी वजह यही है कि प्रतिभा सिर्फ स्कूल पर निर्भर नही होती।

अपनी संस्कृति और कला इस पूरे वर्ग के लिए सजाने की चीज हो गई है। दस्तकारी का वे एक ही इस्तेमाल जानते है कि उसे अपने घर की दीवारों की शोभा बना लें। उसकी कोई अहमियत वे हमारे देश के आर्थिक जीवन में नही समझते। इसलिए दस्तकारी शिक्षा के औपचरिक ढाचे का एक लंबे समय तक अंग नही हो पाई। जब हुई भी, तो इस तरह कि वह शिक्षा को नौकरशाही और पाठ्यक्रम के बोझिल ढांचे के बीच सांसें गिनने को मजबूर दिखाई देती रहे।

इसमे कोई विरोधाभास नही है कि कस्बे के एक कांवेंट स्कूल की लड़कियों को मेहदी लगाने पर पीटा जाए और दूसरी तरफ दिल्ली के वैभवशाली स्टेट हैंडीक्राफ्ट एंपोरियम में आडंबरपूर्ण मेहदी लगाने का प्रचार किया जाए। इसी का दूसरा उदाहरण यह है कि दिल्ली मे आप भारतीय ढंग का कम खर्चीला मकान बनाना चाहे तो कानून आड़े आ जाएगा। लेकिन प्रगति मैदान के सास्कृति व्यापारिक मेलों मे आधुनिक तडक-भड़क के बीच विदेशियों को रिझाने और देशी आर्टी-फार्टी लोगों को सम्मोहित करने के लिए गांव के कच्चे मकानों की झांकिया दिखाई जाएं।

भारतीय संस्कृति की वाह-वाह आधुनिकता के शास्त्रों और शब्दाडंबर के सहारे पूरी लय से हमारे नेतागण और दूसरे श्रेष्ठजन भी करते हैं। लेकिन यह संस्कृति हमारे रोजमर्रा के जीवन मे उतरी हुई नही है। बल्कि वह है जो कभी-कभी नाटकीय तरीके से शौक पूरा करने वाले वर्ग के चटखारे लेने के काम आ सकती है। उसके मनोरंजन का साधन बन सकती है। कुछ शहरों में शहरी सीमा से दूर खेतों मे ऐसे होटल बने हैं जो महंगे होटलो मे जाने के आदी लोगों के नए मनोरंजन के साधन है। यहा गाव जैसा वातावरण नाटकीय ढंग से उकेरा जाता है। गाव की स्त्रियो के नाचने-गाने, रस-गरबों के बीच खाट बिछा कर ठेठ ग्रामीण खाना परोसा जाता है। ऐसे होटल संपन्न वर्गों के बीच खूब प्रतिष्ठा पा रहे हैं। दूसरी तरफ देश में ऐसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जिनके सदस्यों के घर और रहन-महन मे देशीपन की कोइ झलक भी नही मिलेगी लेकिन विदेशों में वे भारत के सास्कृतिक प्रतिनिधि बनकर जाते हैं। उनकी बीबिया सीधे पल्लू की साड़ी बड़े चाव से पहन कर सयुक्त परिवार की अच्छाइयो और भारतीय त्योहारों के बारे मे भाषण करती दिखाई देंगी।

खाने के लिए डाइनिंग टेबल और पाखाने के लिए कमोड पर बैठने वाली जीवन शैली का अनुसरण करने वाले लोगो के लिए देसी संस्कृति उनके होली-डे मूड का अंग है। छुट्टी के मूड में नींद तोड़ने मे भी एक एडवेंचर जैसा मजा मिलता है। पिंपरी के कावेंट स्कूल मे लड़कियों को पीटा गया तो सिर्फ इस एडवेंचर की गुंजाइश नियम कानून में चलने वाला यह स्कूल नहीं निकाल पाया होगा। छोटी जगह के लोग नियम कानूनों का पालन कुछ ज्यादा ही वफादारी के साथ करते है।

इस शिक्षा को सेकुलर दिखाने के लिए उसमे कुछ गरीब बच्चो को सुविधाए देने की भी कोशिश की जाती है। हालाकि इसमे परेशानिया आती रहती हैं। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज या जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय मे दाखिलों के समय क्या-क्या झंझट हुए हैं, इसकी जानकारी सब को है। पब्लिक स्कूल पेटर्न पर सरकार जो आदर्श स्कूल चला रही है उसमें भी यह हालत होनी है। सामाजिक विभेद पर पलने वाली यह शिक्षा-व्यवस्था अगर समाज में हिंसा नही फैलाएगी तो और क्या करेगी? स्कूल के बाहर ही नहीं स्कूल के भीतर भी छात्रों को शारीरिक सजा न देने की अच्छी शिक्षा का गुण मानने वाले लोगों को भी कांवेट स्कूल मे बच्चों को दी सजा नागवार नहीं लगती। आखिर ब्रिटेन में बच्चों को छड़ी से पीटने की इजाजत दे दी गई है। [जनसत्ता से साभार]

मुहम्मद बिन कासिम की मस्जिद

बनाम

टंकारा का ऋषि जन्म स्थान

—श्री आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार—

सन् 711 मे हज्जाज के शासक ने अपने सेनापति मुहम्मद बिन कासिम को सिंध के शासक राजा दाहिर से युद्ध करने के लिए भेजा। क्योंकि उसने अरबों का एक जहाज रोक लिया था। दाहिर वीरता से लड़ा पर अपनी प्रजा के एक भाग के द्वारा विश्वासघात से ही उसकी पराजय हुई और सिन्ध की भूमि पर इस्लाम की दाग बेल पड गई। वह दिन 10 जून का था। मुहम्मद बिन कासिम ने यहाँ एक मस्जिद भी बनवायी थी जो आज खण्डहर है। पाकिस्तान में 10 जून का यह दिन धूमधाम से मनाया जाता है। इस बार निश्चय हुआ है कि मुहम्मद बिन कासिम की मस्जिद के खण्डहर सुरक्षित रखते हुए उसके पास ही यादगार के रूप में और एक शानदार मस्जिद बनाई जाय। मुहम्मद बिन कासिम के नाम पर कासिम बन्दरगाह तो कराची के पास बनाया ही जा चुका है।

मानव समाज का स्वभाव विचित्र है। एक ही घटना हिन्दुओ के लिए असीम लज्जास्पद तथा मुसलमानो के लिए असीम हर्षोल्लास की। ऐसा ही एक प्रसंग आजकल पंजाब मे घटा है। पिछले लगभग 3 वर्ष से एक उग्रवादी संगठन सन्त जरनैल सिंह भिंडरवाला के नेतृत्व मे पंजाब मे बना। इसका केन्द्र स्थान अमृतसर का प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर रहा। चार सौ के लगभग उग्रवादी सेना की गोलियो का निशान बने। सेना के भी काफी जवान मारे गए गोलियो का निशान बने। एक हजार से ऊपर घायल लोग अस्पतालो मे पड़े हैं। इस उग्रवाद का लगभग अन्तिम शिकार 'पंजाब केशरी' के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र बने। उनके अन्तिम लेख का शीर्षक श्री गुरू नानक देव जी की वाणी के ये शब्द थे—

"ए तो मार-पई कुरलाने की
तें दर्द न आया

बाबर के आक्रमण के समय हिन्दुओ की दुर्दशा को देखकर गुरु महाराज ने भगवान से पूछा था कि लोग दु:ख-दर्द के मारे तड़प रहे है, पर क्या तुझे दया — दु:ख कुछ नही होता ?

पर भगवान का दया-दु:ख तो अत्याचारी पर कहर की तरह पड़ता है। मुगल राज्य अपने अत्याचारो के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो गया। राज कुमार और राजकुमारियां दर-दर के भिखारी बने। श्री रमेश चन्द आदि के बलिदान व्यर्थ नही गये। भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के आदेश से भारतीय सेना ने उग्रवाद का गढ़ ध्वस्त कर दिया।

पर मैं तो टंकारा के विषय में निवेदन करने जा रहा था। किसी जाति या धर्म की प्रारम्भवता का यह चिन्ह होता है कि वह अपने गौरव के चिन्हों को विस्मृत नहीं होने देती। हमारे पाकिस्तानी भाई लगभग 1200 वर्ष पुराने अपने एक गौरव चिन्ह का सम्मान करने जा रहे हैं और हम अपने महा गौरव चिन्ह ऋषि दयानन्द के जन्म स्थान का कुछ रंग रूप ही नही बना पाए।

स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व मे 1926 ई० मे जब आर्य समाज ने टंकार में ऋषि मेला मनाया तो अन्तिम रूप से आर्य समाज के प्रमुख नेताओं और विद्वानो ने यह निश्चय किया कि ऋषि की बहिन प्रेमाबाई की सन्तान का निवास-स्थान ही वस्तुत : ऋषि जन्म-भूमि है। इसके निवास के अनुसंधान में अनन्य भक्त श्री देवेन्द्र बाबू ने लगातार 15 वर्ष भ्रमण तथा अध्यवसाय द्वारा ऋषि जीवन के अनेक नये तथ्यों को प्रकट किया था। इस बात को लगभग 60 वर्ष होने को आए। टंकारा ट्रस्ट को स्थापित हुए भी 25 वर्ष हो चले पर अभी तक ऋषि जन्म स्थान मे कोई स्मारक नही बन पाया।

जन्म-स्थान के मकान का क्षेत्रफल लगभग 3500 वर्गफुट था। इसमे छ: बड़े कमरे या कोठरियां थी। उसमें से लगभग 2000 वर्गफुट का क्षेत्र सेठ कान जी चक्कू भाई ने स्वामी जी के वंशजो से बहुत सस्ता मोल लेकर कोठरियाँ गिराकर अपने मकान मे मिला लिया। यह घटना 1926 के बहुत बाद की है। आर्य भाइयो को यह ज्ञान था कि यह ऋषि जन्म स्थान है, इसलिए सेठजी ने एक प्रपच भी किया। अपने मकान के पश्चिमी भाग मे एक छोटी सी कोठरी को जन्म स्थान कह कर प्रसिद्ध कर दिया। उस कोठरी के फर्शपर एक पटिया भी लगा दी। अनेक वर्ष तक प्रत्येक उत्सव के समय आर्य जन वहां जाते तथा उस कोठरी में यज्ञ कर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते। लगभग 9-10 वर्ष हुए टंकारा के ट्रस्टी जाम नगर के वकील श्री नाना लाल हरिशंकर उपाध्याय जी को पता लगा कि स्वामी जी के वंशजो के एक सम्बन्धी जामनगर मे हैं जिनके द्वारा जन्म-स्थान सम्बन्धी पूर्ण सूचना मिल सकती है। अन्तत : इस प्रयत्न का फल यह हुआ कि ऋषि जन्म-स्थान का अवशिष्ट 1500 वर्ग फुट का भाग जिसमें तीन बड़ी कोठरियाँ यथा एक छोटी अर्ध खंडित कोठरी थी, टंकारा ट्रस्ट ने लगभग 6000/रु0 में क्रय कर लिया। उसे अभी तक अपने पुराने रूप में ही सुरक्षत रखा जा रहा है।

सन् 1975 में जब प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी राहत कार्यों के सम्बन्ध में टंकारा पधारीं और जन्म-स्थान देखने गईं तो श्री कान्ह जी चक्कू भाई के मकान को देखकर उन्होंने कहा था कि ऋषि दयानन्द जैसे महापुरुष का जन्म-स्थान किसी एक व्यक्ति की सम्पति नहीं बन सकता। प्रेरणा पाकर स्व0 श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, संसद सदस्य ने, श्री कान्ह जी चक्कू भाई द्वारा कब्जा किये गये भाग के अधिग्रहण का प्रयत्न आरम्भ कर दिया।

दुर्भाग्य से अभी तक यह प्रयत्न सफल नही हो पाया। अभी तक आर्य जनता की श्रदा और इच्छा के अनुकूल जन्म स्थान की रूप रेखा नहीं विकसित हो पाई।

अब स्थिति यह है कि लगभग 1500 वर्गफुट का भाग अपने पुराने रूप में खड़ा है। 2000 वर्ग फुट के लगभग भाग सेठ कान जी चक्कू भाई दबाए बैठे हैं। टंकारा ट्रस्ट ने तो गुजरात सरकार को यह भी लिख कर दिया कि सेठ कान जी चक्कू भाई का सम्पूर्ण मकान जो लगभग 3000 वर्गफुट में है —यदि सरकार मूल्य निश्चित कर दे तो ट्रस्ट उसे खरीदने के लिए तैयार है। पर गुजरात सरकार इस विषय को उपेक्षित कर रही है और सेठ कानजी चक्कू भाई, किसी कीमत पर भी मकान बेचने को तैयार नहीं।

आर्य समाज एक महान आन्दोलन है। इसकी शक्ति महान है व उसका विस्तार भी बहुत है। आर्य समाज का कार्य देश-देशान्तरों में फैल रहा है। ऐसी अवस्था में फिर भी यदि ऋषि जन्म स्थान का कोई रूप-रंग विकसित न हुआ तो इसे एक विचित्र विडम्बना ही कहा जायेगा।

एक ओर वे लोग है जो अपने धर्म के एक सेना-नायक की विजय की यादगार सैंकड़ों वर्षों के बाद भी शानदार रूप से जीवित रखना चाहते हैं—और एक हम हैं जो अब तक अपने महान मार्ग-दर्शक अद्वितीय योगी, दार्शनिक तथा समाज-सुधारक ऋषि दयानद के जन्म स्थान का रूप ही नही सँवार सके। महान शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज, पं० लेखराम पं० गुरुदत्त आदि के जन्म स्थान तलवन, वजवाड़ा, कछूरा तथा मुलतान के स्मरण चिन्हों के सँवारने की बात तो बहुत दूर है।

पता—"शक्ति सदन"
145/4 सैण्ट्रल टाउन जालन्धर (पंजाब)

स्मारक न्यास का निर्वाचन

अजमेर : श्री कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे यहाँ 29 जुलाई को सम्पन्न महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास के त्रैवार्षिक निर्वाचन में निम्न पदाधिकारियो का चयन हुआ। प्रधान—महात्मा आर्य-भिक्षु विद्यावाचस्पति (डी० लिट्), उप-प्रधान—श्री चंचल दास जी आर्य सेवक तथा मंत्री श्री मदनमोहन जी शास्त्री।

—नई दिल्ली : आर्य समाज ग्रीन पार्क के पदाधिकारियों का निर्वाचन 15 जुलाई को निम्न भाँति सम्पन्न हुआ : लाला इन्द्रनारायण जी (हाँथीदाँत वाले) प्रधान, कंवर जगदीश कुमार एडवोकेट श्री हीरालाल वर्मा एवं श्री बलबीर सूद, उप-प्रधान, श्री बलराम आर्य मंत्री, श्री हनुमन्त राय कोछर उप-मंत्री, श्री के० एल० कोहली कोषाध्यक्ष, श्री हरिश्चन्द्र थापर प्रचार-मन्त्री, श्री राजपाल चोपड़ा पुस्तकाध्यक्ष।

आजकल के सिख आर्य समाज को अपना शत्रु नम्बर एक गिनते हैं, क्योंकि उनके राष्ट्र-विरोधी कार्यों का विरोध करने में आर्य समाज ही सबसे अधिक मुखर रहा है। पर जरा वे इस इतिहास को देखें कि उनके पूर्वजों ने, जिनमें महाराजा कपूरथला से लेकर सरदार विक्रमसिंह और सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया तक शामिल हैं, किस प्रकार आर्यसमाज की स्थापना में और उसके प्रचार में योग दिया था। कारण एक ही था—गुरु नानक की तरह ऋषि दयानंद भी पाखन्डों का विरोध करके एक ओंकार की उपासना सिखाते थे और जातिपांति का विरोध करते थे। 'गुरु का बाग' सत्याग्रह में आर्य समाजियों ने सहयोग दिया था, तो हैदराबाद सत्याग्रह में सिखों ने पूरा सहयोग दिया था।

आर्यसमाज की स्थापना में सिख समाज की भूमिका

—डा० योगेन्द्र शास्त्री, एम० ए०, पी० एच० डी०, जम्मू—

भारत देश पुराकाल में वैदिक शिक्षाओं के कारण संसार का गुरु रहा, मनु ने इसी को ध्यान में रखते हुए कहा है :—

एतद्देश प्रसूतस्य
सकाशादग्रजन्मन: ।
स्वं स्वंचरित्र शिक्षरेन्
पृथिव्य सर्वमानवा : ॥

—भारत के सपूतों, ऋषियों, महात्माओं से शिक्षा पाकर संसार के लोग अपने-अपने देश-काल के अनुसार अपने आचार व्यवहार को सुधारें।

कालान्तर में वैदिक शिक्षा के अभाव में हमारा देश ही मिथ्या मत-मतान्तरों के ऐसे घोर जंजाल में फंस गया कि और को ज्ञान देना कहां, अन्यों की शिक्षाओं की दासता में बंध कर ईसाई, मुसल्मान बनने को विवश हुआ।

देश की इस दुर्दशा से दुखी मध्य युग के सन्तों ने निराकार परमात्मा का उपदेश दिया व मिथ्या ढोंग पाखण्ड का खण्डन किया। इन्हीं कवियों की कविताओं की शिक्षाओं का संग्रह सिखों का गुरु-ग्रन्थ साहब बना जो शिष्य (सिख) के रूप में बाद में सिख सम्प्रदाय का रूप ले बैठा। इस सिख सम्प्रदाय की रचना हिन्दुओं की रक्षा व निराकार उपासना के लिए गुरु नानक देव ने की। सिख समाज का जन्म सिख गुरुओं ने हिन्दू समाज में परमात्मा के नाम पर फैले धार्मिक भ्रष्टाचार को छुड़ाने के लिए एवं एक ओंकार व निराकार परमात्मा की भक्ति का उपदेश करने के लिए हुआ। यही कारण है कि 1877 व 1878 में जब पंजाब के सम्भ्रान्त व सिखों के नेता सज्जनों ने यह सुना कि हिन्दुओं में भी कोई ऐसा महापुरुष उत्पन्न हो गया है जो एक ओंकार व निराकार परमात्मा का उपदेश देकर लोगों से मूर्ति पूजा छुड़वाता है तो पंजाब के वीर सिखों ने उसे पंजाब बुलाकर उनके उपदेशों से लाभ उठाया।

बम्बई आर्य समाज के प्रधान श्री गोपाल राव देशमुख ने स्वामी जी के जीवन की घटनाओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि स्वामी जी का कोई शत्रु नहीं था। वे स्वयं फकीरों की भ्रांति रहते थे। और सभी लोग उनके समर्थक व उनसे सहमत थे। अतः पंजाब जाने पर स्वामी जी का सर्वाधिक प्रचार करने वाले व उनकी सेवा-सत्कार करने वालों में सिखों की संख्या सब से अधिक थी। उस समय गुरुद्वारे प्रायः धर्मशाला कहलाते थे जहां हिन्दू-सिख इकट्ठे होते थे। अतः आर्य समाज का प्रचार भी वहीं से प्रारम्भ हुआ और आर्य समाज की स्थापना में सिखों का बहुत बड़ा हाथ रहा।

जनवरी 1877 में जब ऋषि दयानन्द को पंजाब आने का निमन्त्रण मिला तो निमन्त्रण पत्र भेजने वाले सरदार विक्रम सिंह आहलूवालिया व एक कपूर सम्भ्रान्त परिवार के उच्च पद हस्ताक्षर थे। वे प्रचार में प्रायः सर्वत्र स्वामी जी के साथ रहे। कोहेनूर प्रेस के स्वामी मुंशी हरसुख रायजी, कन्हैया लाल अलखधारी, पण्डित मनफूल आदि ऋषि के भक्त बने। अभी पंजाब में आर्य समाज स्थापित भी नहीं हुआ था कि उनके विचारों का समर्थन करने वाले उनके सबसे अधिक प्रशंसक महाराजा कपूरथला थे, जो सिख थे।

31 मार्च को स्वामी जी लुधियाना पहुंचे तो उन्हें वहां के सबसे बड़े सिख नेता सरदार जयमल सिंह की कोठी पर ठहराया गया। 28 दिन तक इसी कोठी में स्वामी जी के भाषण होते रहे। 10 अप्रैल 1877 को स्वामी जी लाहौर पहुंचे। लाहौर के प्रसिद्ध मुसलमान रहीम खां की कोठी पर स्वामी जी को ठहराया गया। 24 जून 1877 को आर्य समाज की लाहौर में स्थापना हुई और स्वामी जी अनारकली मुहल्ले मे रहने चले गए। आर्य समाज के सर्वप्रथम प्रधान मंत्री सरदार जवाहर सिंह को चुना गया। उन्हीं के नेतृत्व व मार्ग-दर्शन में 300 व्यक्ति आर्य समाज अनारकली लाहौर के सदस्य बने। 5 जुलाई 1877 को स्वामी जी अमृतसर पहुंचे तो पंजाब के सब से पुराने व प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र 'ट्रिब्यून' के मालिक सरदार दयाल सिंह मजीठिया ने उनका भव्य स्वागत सत्कार किया। 5 जुलाई से 15 अगस्त 1877 तक स्वामी जी सरदार मजीठिया की कोठी पर ही रहे, व प्रचार कार्य किया। वहीं पर रहकर उन्होंने 'आर्य उद्देश्य रत्नमाला' नामक पुस्तक लिखी। मजीठिया जी के प्रयत्न से ही आर्य समाज की स्थापना के लिए 40) मासिक पर एक मकान किराये पर लेकर विधिवत् आर्य समाज की स्थापना कर दी गई।

अमृतसर से महर्षि बटाला व गुरुदासपुर में प्रचार करते हुए 16 सितम्बर को जालन्धर पहुंचे। प्रारम्भ में उन्होंने सरदार सुचेत सिंह के निवास स्थान पर विश्राम किया। पश्चात् सरदार विक्रम सिंह के आग्रह पर उनके निवास स्थान पर भाषण दिए। दोनों स्थानों पर कुछ 35 भाषण हुए।

17 अक्टूबर 1877 को स्वामी जी फिर लाहौर पहुंचे और नवाब रजा अली के भव्य प्रासाद में उन्हें ठहराया गया। वहां से 26 अक्टूबर 1877 को महर्षि फिरोजपुर गए जहां उन्हें शहर के प्रसिद्ध सिख नेता सरदार सरूप सिंह की कोठी पर ठहराया गया। 26 दिसम्बर 1877 को स्वामी जी रावलपिण्डी पहुंचे जहां शहर के प्रसिद्ध पारसी व्यपारी के यहां उन्होंने निवास व स्वागत सत्कार ग्रहण किया। वहां से वजीराबाद और मुलतान में भाषण करते हुए महर्षि पंजाब से विदा होकर 20 जुलाई 1878 मे आर्य समाज का प्रचार करने उत्तर प्रदेश के रूड़की स्थान पर पहुँचे।

पंजाब की 1 वर्ष तीन मास 18 दिन की यात्रा के फलस्वरूप पंजाब में आर्य समाज जिस प्रकार फला-फूला उसमें बहु संख्या में सिख नेताओं का हाथ था। उनका पूरा सहयोग समाज को प्राप्त हुआ। शुद्धि के प्रचार के लिए आर्य समाज उपदेशक तैयार करना चाहता था। तो अमृतसर के प्रसिद्ध उद्योगपति सरदार अमर सिंह जी ने दयानन्द अरबी संस्कृत विद्यालय खोलने के लिए मंजिल रोड पर अपनी ओर से 2 एकड़ भूमि में अपने खर्चे से एक विशाल भवन विद्यालय के लिए बनवाकर दिया, जहां से अखिल भारतीय शुद्धि महासभा के भूतपूर्व प्रधान आचार्य देव प्रकाश जी ने दर्जनों उपदेशक प्रचारक तैयार करके पंजाब को आर्य समाज का गढ़ बना दिया। ऋषि दयानन्द सिख गुरुओं की भांति हिन्दुओं में फैले मिथ्या मतमतान्तरों व धार्मिक अन्ध विश्वासों का विरोध करते थे, अतः सिख सच्चे हृदय से आर्य समाज व स्वामी जी का साथ देते थे।

स्वामी जी ने जब गौ-रक्षा आन्दोलन चलाया तो सिखों ने बड़े ही उत्साह पूर्वक उसमें भाग लिया। स्वामी जी ने अपने पत्रों में सरदार स्वरूप सिंह जी की वैदिक धर्म के प्रति की गई सेवाओं की बहुत प्रशंसा की है। स्वामी की शुद्धि व संगठन की विचार धारा को सिखों की ओर से पूरा सहयोग व समर्थन मिला।

1924 की अमृतसर की होम डिपार्टमेंट की फाइल संख्या 198 में लिखा था कि नामधारी सिखों के नेता सरदार इन्द्र सिंह ने घोषणा की थी, गौ-रक्षा आन्दोलन में हिन्दुओं को जरा भी खतरा प्रतीत हुआ तो 10 लाख सिख अपना बलिदान देने को तैयार हैं। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने जब मलकानों की शुद्धि आगरा मथुरा जिले में की, तो मुसलमान इससे बड़े क्रोध में आ गए। उस समय के अकाली नेता सरदार लाल सिंह सेक्रेटरी ने पंजाब खालसा सभा में कहा था "मुसल्मान आपे से बाहर हो रहे हैं, सिख इसे सहन नहीं करेंगे।" 1939 मे आर्य समाज व हिन्दू सभा ने निजाम हैदराबाद की हिन्दू विरोधी नीतियों के विरुद्ध सत्याग्रह किया तो सिखों ने सत्याग्रह मे अपने जत्थे भेजे। नानकाना साहब गुरुद्वारा कमेटी ने अपना जत्था भेजा। नामधारी दरबार ने पूरा सहयोग दिया। रुस्तनगर के सरदार हर भजन सिंह ने सत्याग्रह मे मदद के लिए दौरे किए। लाहौर के जत्थे का नेतृत्व क्रान्तिकारी सिख नेता सरदार मौन सिंह गामा ने किया। अजमेर के प्रसिद्ध आर्य नेता जयदेव शर्मा व सूर्यदेव शर्मा ने 1947 मे अपनी पुस्तक 'हैदराबाद सत्याग्रह का खूनी इतिहास' के पृष्ठ 156, 147, 190 व 245 मे सिखो की आर्य समाज के प्रति सेवाओ का वर्णन किया है।

आज का सिख समाज इस सत्य को अनुभव करे या कि न करे, परन्तु गुरु गोविन्द सिंह (दशम गुरु) ने स्पष्ट कहा है :—

जो तुम सिख हमारे आरज (आर्य)
देवो सीस धर्म के कारज
तृतीय जो नर नारी आरज
हो रहे निज धर्मी खारज
पाप कुकर्मन मे अति लागे
इसी हतु हो रहे अभागे। (पन्थ प्रकाश)

तुम यदि हमारे सच्चे आर्य सिख हो तो धर्म के लिए तुम्हें अपना सिर भी दे देना चाहिए। जो आर्य नर-नारी वेद धर्म को छोड़कर पाप कर्म मे लगे, वे अभागे बन रहे, मैं उनको सुधार के यज्ञ करना चाहता हूं—

होवे जाते यज्ञ पूजा, बढ़े वैदिक रीत।
होवे जाते देश आर्य, वैदिक धर्म प्रतीत ॥

नवजागरण के पुरोधा : कुछ शंकायें व समाधान

आर्यसमाज के इतिहास मर्मज्ञ विद्वान् तथा मेरे मित्र प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने मेरी पुस्तक नवजागरण के पुरोधा – दयानन्द सरस्वती की विस्तृत समीक्षा लिख कर ग्रन्थ की उपलब्धियों और सीमाओं का खुले हृदय से मूल्यांकन किया है। वस्तुत: विषय का मर्मज्ञ ही किसी शोधपूर्ण इतिहास ग्रन्थ को इतनी गहराई से पढ़ कर उसकी ऐसी तात्विक समीक्षा लिख सकता है। तथापि उनकी आलोचना मे उठाये गये कुछ मुद्दों के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करना आवश्यक समझता हूं।

कोई इतिहास पूर्ण नहीं होता। अब जब स्वामी जी की यह जीवनी छप गई है और मैं इसके किसी अगले संस्करण में जोड़ने घटाने तथा संशोधन परिवर्धन

प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु की समीक्षा के उत्तर में

आदि करने के लिये पुन: अपने नोट्स तैयार करने लगा हूं उस समय जिज्ञासु जी द्वारा बताये गये उपयोगी सुझावों को इसमें यथास्थान नियोजित करने का यत्न करूंगा। अब उनके द्वारा निर्दिष्ट कुछ बातो पर विचार करना आवश्यक है। जिज्ञासु जी कहते हैं कि राजा राममोहनराय ने सती-प्रथा के विरुद्ध एक पृष्ठ भी नही लिखा। यह बात मे कैसे मानलूं जबकि 1818 तथा 1820 में राम मोहनराय ने सती-प्रथा को हिन्दू धर्म की मौलिक धारणा के प्रतिकूल सिद्ध करते हुए कुछ ट्रैक्ट लिखे थे जिन्हे Complete Works of Raja Ram Mohan Roy में देखा जा सकता है। दूसरी बात यह है कि यदि राजा राम मोहन ने सती प्रथा को बन्द कराने के लिये कोई लिखित या अन्य प्रकार का प्रयत्न किया तो इससे ऋषि दयानन्द का महत्व कम नही होता। पश्चिमी राष्ट्रों के सम्पर्क का अनेक दृष्टियो से हमारी जाति पर हितकर प्रभाव पड़ा। उसे नकारने में भी कोई तुक नहीं है। जो चीज जैसी है उसे वैसा ही स्वीकार करना चाहिए। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि स्वामी दयानन्द स्वयं विदेशी सम्पर्क —विदेश यात्रा—को अच्छा मानते थे। क्या विदेशी कला-कौशल को सीखने या सीखाने का काम विदेशी सम्पर्क के बिना हो सकता था, जिसके लिये स्वयं स्वामी जी प्रयत्न शील रहे? स्वामी दयानन्द भी श्याम जी कृष्ण वर्मा के माध्यम से मोनियर विलियम्स तथा मैक्समूलर से सम्पर्क रखना चाहते थे, यह उनके पत्रों से विदित होता है। यह तो मानना ही होगा कि टॉनिक खाने से रोग के कीटाणुओं को निकालने में सहायता मिलती है।

पं० लेखराम लिखित जीवन चरित को लेकर मेरे कथन को भ्रम की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। मैं यह अन्य-बार कह चुका हूं कि पं० लेखराम रचित स्वामी जी की जीवनी तो उस आधारशिला के तुल्य है जिस पर अन्य जीवनचरितों के भवन खड़े हैं। ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ की उपेक्षा, अवमानना तथा अवहेलना का तो प्रश्न ही नहीं है। मैंने तो स्वयं आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के आग्रह पर पं० लेखराम रचित इस जीवन चरित का पुन. सम्पादन किया है जो शीघ्र ही छपेगा। इसकी भूमिका से विदित होगा कि पं० लेखराम का एतद्विषयक परिश्रम कितना महत्वपूर्ण था। यदि मैंने इस ग्रन्थ को विवरणों का पुलिन्दा बताया तो इससे इस ग्रन्थ की निंदा नहीं होती। पुलिन्दे में मूल्यवान कागजात रक्खे जाते हैं—उसी में अनमोल रत्न भी रक्खे जाते हैं। विवरणों का यह पुलिंद (संग्रह) ही जीवनचरित लेखन के लिये आधार-भूत सामग्री प्रस्तुत करता है।

देवेन्द्र बाबू के किसी वाक्य का अन्य मतावलम्बियों ने दुरुपयोग किया, तो इससे उस वाक्य में कथित सत्य का महत्व कम नही होता। यह निश्चय है कि एक दो अपवादों को छोड़ कर महर्षि के जीवनचरित लेखन में उनके अनुयायियों ने भारी प्रमाद प्रदर्शित किया, यही देवेंद्र नाथ का कथन है। इसे मेरा कथन न समझा जाय। जिज्ञासु जी ने पाद-टिप्पणियो के सम्बन्ध में लिखा है कि कुछ और होनी चाहिए थीं जो छूट गई हैं। इस सम्बन्ध में तो इतना ही कहा जा सकता है कि कोई भी ग्रन्थ, विशेषत: इतिहास अपने में पूर्ण नही होता। उर्दू ग्रन्थो में उपलब्ध जीवनचरित विषयक सामग्री मेरी पहुंच से परे थी। मुन्शी केवल कृष्ण के बारे में मैंने अभी पूरी जानकारी 'आर्य' (लाहौर) के पुराने अंकों से प्राप्त की हैं और आर्य साहित्यकार कोश में दे रहा हूं।

नये अध्याय के आरम्भ में दयानन्द विषयक जो सूक्तियाँ दी गई हैं उनका चयन ग्रन्थ छपने के बाद किया गया और यह ध्यान रखा गया कि शैली लालित्य-युक्त तथा प्रभावशाली सूक्तियों को प्राथमिकता दी जाय। इसी दृष्टि से देवेन्द्रनाथ की सूक्तियों को प्रधानता मिली। इसमें अन्य श्रद्धांजलियों की उपेक्षा कारण नही है। ठाकुर टीकमसिंह का संस्मरण स्वयं ठाकुर अमर सिंह जी (अमर स्वामी) का लिखा मेरे पास है। उसमें कर्णवास का उल्लेख ही है। टीकम सिंह के कथन के लिये उनके पुत्र से बढ़ कर और प्रमाण क्या हो सकता है? यही उल्लेख अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ के पृष्ठ 7 पर देखी जा सकती है जहाँ यह स्पष्ट लिखा है कि ठा० टीकमसिंह जी ने कर्णवास में ऋषि दयानन्द के दर्शन किये और एक व्याख्यान भी सुना। कर्णवास तथा समीपवर्ती स्थानों के ठाकुरों ने ऋषि के दर्शन कर्णवास में ही किये।

जहां तक काशी नरेश के नाम का सम्बन्ध है जिज्ञासु जी की आपत्ति सही है। इस भूल का कारण पं० घासीराम जी लिखित जीवनचरित है जिसमें काशीराम का नाम ईश्वरी प्रसाद नारायणसिंह लिखा है। ग्रन्थ छपने के कई मास पश्चात् मुझे पं० बलदेव उपाध्याय कृत 'काशी की पाण्डित्य परम्परा, नामक एक ग्रन्थ पढ़ने का अवसर मिला। यदि यह ग्रन्थ जीवनी लेखन काल में मिल जाता तो यह भूल नहीं होती और काशी शास्त्रार्थ में सम्मिलित पौराणिक पण्डितों के इतिवृत्त को भी अधिक प्रामाणिक बनाया जा सकता था। "ऐसा लगता है" और "सम्भवत:" आदि के प्रयोग तो लेखकीय शैली के अन्तर्गत आते हैं। यह वादविवाद का विषय नहीं बनते। स्वामी जी भारतीय नारी के उद्धारक हैं या विषय नारी के यह भी विवाद की बात नहीं है। परन्तु इतना तो निश्चित है कि ऋषि ने भारतीय नारी का बहुत उपकार किया है।

कलकत्ता प्रसंग में मेरे द्वारा प्रकट किये गये विचारों को जिज्ञासु जी कल्पना मानें तो उसमे मुझे आपत्ति नहीं क्योंकि यह तो अपने-अपने विचारों की बात है। यह वे मुझे अवश्य बतायें कि स्वामी जी ने विष्णु बुवा ब्रह्मचारी के विचारों तथा उनके ग्रन्थ 'वेदोक्त धर्म प्रकाश' से कब परिचय प्राप्त किया था? यह विवाद के लिये नही, स्वज्ञान वर्धनार्थ पूछ रह हूं। पादरी खड़क सिंह को "खड्गसिंह" शब्द 'खड्ग" की शुद्धता की दृष्टि से लिखा है, अन्य कोई प्रयोजन नही है। ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालय में प्रयाग विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर "बेनी प्रसाद" को "वेणी प्रसाद" इस प्रकार शुद्ध रूप से लिया गया तो स्वयं बेनी प्रसाद जी को ही आश्चर्य हुआ था। वे अपने को "बेनी प्रसाद" कहलाने में संतुष्ट थे जब कि पुस्तकालय के संस्कृतज्ञ अधिकारियों का आग्रह था कि शुद्ध नाम "वेणी प्रसाद" है।

अमृतसर में तबले वाले उद्यान के सम्बन्ध में खोज की जानी चाहिए। एक यही क्यों, उन सभी स्थानों की स्थिति (Location) का ठीक पता हमें होना चाहिए जहां स्वामी जीक भी रहे थे। वहां स्मारक पट्टिका भी लगानी चाहिये। मैंने मास्टर लक्ष्मण का लिखा उर्दू जीवन चरित पढ़ा नहीं। जब इसे जिज्ञासु जी अनूदित कर देंगे और रामलाल कपूर ट्रस्ट से यह छप जायगा तो मुझ जैसे अन्य उर्दू से अनभिज्ञों को भी इसके पढ़ने का लाभ मिलेगा। मुन्शी मथुरादास की जानकारी मैंने साहित्यकार कोश में अंकित करली है। स्वामी जी के जीवन चरित में प्रासंगिक रूप से ही अनेक व्यक्तियों का उल्लेख आ भी सकता है और रह भी सकता है। कभी-कभी मुख्य और गौण पर भी विचार करना पड़ता है। पं. घासीराम का उल्लेख नहीं आ सका, यह मेरी भूल है जिसका मुझे ग्रन्थ छपने के बाद ध्यान आया। लाहौर में ब्रह्मसमाज का प्रसंग विद्यमान जीवनचरितों पर ही आधारित है। अधिक जानकारी यदि जिज्ञासु जी को है तो वे मुझे भी देने की कृपा करें।

कन्हैयालाल अलखधारी को मैंने वेदान्ती किस ग्रन्थ के आधार पर लिखा है वह प्रमाण ध्यान में नहीं आ रहा। यह भी मुझे ज्ञात है कि वे आगे चल कर नास्तिक, या बुद्धिवादी नास्तिक हो गये थे। स्वामी जी के बारे में उनके प्रशंसापूर्ण उद्गारों की मुझे पूर्ण जानकारी है। यदि वेदान्ती लिखने में मेरी भूल है तो उसे मैं स्वीकार करता हूं।

—डा0 भवानी लाल भारतीय—

साधुओं में अपने जन्म स्थान पर सन्यस्त होने के बाद एक बार आने की जो प्रथा है, उसका ज्ञान मुझे भी है। परन्तु दयानन्द प्रथापालक नहीं थे। वे राजकोट तो गये, किन्तु अपनी जन्मभूमि टंकारा में फिर कभी नहीं गये। 1874 के पूर्व कभी ऋषि टंकारा गये या नहीं यह खोज का विषय है। टंकारा ग्राम है या कस्बा, यह विवाद भी व्यर्थ है। इसका निपटारा करने से पहले कस्बे तथा ग्राम की परिभाषा स्थिर की जाय। आज का टंकारा 1824 के टंकारे जैसा नहीं है। पं० लेखराम लिखित जीवनचरित में आये नामों को मैंने अपने ग्रन्थ मे यथा-तथ प्रयुक्त किया है। परन्तु अब जो पं० लेखराम का ग्रन्थ छपेगा उसमें मैंने व्यक्तियों, स्थानों तथा अन्य नामों की वर्तनियों को सुधार दिया है। रायबहादुर मूलराज पर एक प्रकरण दिया जा सकता था। यह ठीक है। अगले संस्करण में दिया जायगा। परन्तु निंदा-स्तुति करने में हमें अपनी ओर से पर्याप्त संयम बरतना पड़ता है। बालशास्त्री द्वारा अपनी मृत्यु के पूर्व कराये यज्ञ का विवरण मैंने 'काशी की पाण्डित्य परम्परा' में पढ़ लिया है। इस सम्बन्ध में जिज्ञासु जी क्या कहना चाहते हैं, स्पष्ट बतायें। वेद भाष्य के लिये दिये गये फर्रुखाबाद के सेठों के दान की पूरी सूचियां मेरे पास हैं। इनमें से क्या उल्लेखनीय है और क्या नहीं, यह तो लेखक के सोचने का विषय होता है। तथापि सुझावों को मान्यता देनी चाहिए।

पं० इन्द्रमणि की उर्दू पुस्तक का सही नाम यदि पं० लेखराम कृत जीवन के हिन्दी अनुवाद में सही नहीं छपा तो यह अनुवादक की भूल हो सकती है। ऐसी भूलें मेरे द्वारा लिखे गये जीवन चरित में भी उसी स्रोत से आई हैं। पुन: स्मरण करा दूं कि मैंने जानकारी के मुताबिक इस ग्रन्थ के उन सभी नामों की शुद्ध करने का यत्न किया है, जिनके

(शेष पृष्ठ ९ पर)

किशोर कुंज

आर्य समाज का विस्तार

—सत्यप्रिय शास्त्री, एम० ए० साहित्याचार्य,
प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

सम्पूर्ण विश्व में इस समय 8000 आर्य समाजें हैं। आर्य समाज की विचार-धारा से प्रभावित लोगों की सख्या दस करोड व समाज के सदस्यों की सख्या 5,000-00 है। इस समय आर्य समाज के महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय टंकारा सहित पाँच उपदेशक विद्यालय चल रहे हैं जिनमें दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार प्रमुख (हरियाणा) है। सम्पूर्ण विश्व मे इस समय 50 प्रतिनिधि सभायें तथा 200 जिला सभायें हैं जिनमें सर्वोच्च सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। इसका कार्यालय राम लीला मैदान नई दिल्ली में है। आर्य समाज के पास इस समय 1500 वैतनिक तथा 2000 अवैतनिक उपदेशक हैं। आर्य समाज की ओर से निकलने वाले मासिक व साप्ताहिक समाचार पत्रों की सख्या 120 है। आर्य समाज के पुस्तक प्रकाशकों की सख्या 55 है। आर्य समाज की ओर से चलने वाले गुरुकुलों की संख्या 65 है जिनमें लगभग 10 हजार छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा ग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट कालेजो की सख्या 500 है जिनमें लगभग 500000 छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं। हाई स्कूलो की सख्या 1200 है व प्राईमरी स्कूलों की संख्या 1500 है। आर्य समाज के इस समय लगभग दस अनाथालय तथा 25 विधवाश्रम काम कर रहे हैं। प्रचार पर आर्य समाज प्रतिवर्ष डेढ़ करोड व शिक्षा पर लगभग प्रतिवर्ष 15 अरब रुपये व्यय करता है। आर्य समाज के इस समय लगभग 25 कन्या गुरुकुल व लगभग 100 कन्या महाविद्यालय सक्रिय हैं। अनुमानत 125 पुत्रिया पाठशालाओ मे काम कर रही हैं। स्त्री शिक्षा पर आर्य समाज प्रतिवर्ष 75 लाख रुपये खर्च करता है। आर्यजनो द्वारा निर्धन छात्रो को दी जाने वाली सहयता राशि एक लाख मासिक है।

आय समाज की सस्थाओ में लगभग इस समय बीस हजार कमचारी कार्यरत हैं। वैतनिक पुरोहितो की सख्या 250 है। आर्य समाज लगभग 88 करोड की सम्पत्ति पाकिस्तान मे छोडकर आया है। इस प्रकार आर्य समाज का भारत की उन्नति मे एक बहुत बडा योगदान है। लगभग चार विश्वविद्यालयो में तो दयानन्द पीठ की रचना हो चुकी है तथा आर्य समाज से सम्बन्धित विषयो पर लगभग 450 व्यक्ति पी० एच० डी० रह चुके हैं।

आत्मा से प्रेम

एक दिन गगा तट पर एक साधु कमण्डल आदि प्रक्षालन करके वस्त्र धोने में लगा था। वह घुटा हुआ मायावादी था। दैवयोग से भ्रमण करते हुए स्वामी दयानन्द भी वही आ पहुँचे। उसने स्वामी जी से कहा —"इतने त्यागी परमहंस, अवधूत होकर आप खडन मडन की प्रवृत्ति के जटिल जाल मे क्यों उलझ रहे हो? निर्लेप होकर क्यो नहीं विचरते?" महाराज मुस्कराकर बोले—हम तो सब कुछ करते हुए भी निर्लेप हैं। रही प्रवृत्ति की बात, सो शास्त्रीय प्रवृत्ति प्रजा-प्रेम से प्रेरित होकर सब ही को करनी उचित है।

साधु ने कहा —"प्रजा प्रेम का नया बखेडा क्यो डालते हो? आत्मा से प्रेम करो जिसके लिए श्रुति पुकार रही है। उस समय उसने मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य के सवाद के वाक्य भी बोले। तब स्वामी जी ने पूछा—"वह प्रेममय आत्मा है कहां?" साधु ने कहा—'वह राजा से लेकर रंक पर्यन्त और हस्ती से लेकर कीट तक सर्वत्र विद्यमान है।'

तत्पश्चात् स्वामी जी ने गम्भीरता पूर्वक कहा—नहीं, आप उस महान् आत्मा से प्रेम नहीं करते। आपको अपनी भिक्षा की चिन्ता है अपने वस्त्र उज्जवल रखने का ध्यान है। और अपने भरण पोषण की चिन्ता है। क्या आपने कभी उन बन्धुओ का भी चिन्तन किया है जो आपके देश मे लाखो की सख्या मे भूख की ज्वाला मे रात दिन बारहो महीने भीतर ही भीतर जलते रहते हैं। हजारो लोग ऐसे हैं जिन्हे पेट भर अन्न नहीं मिलता। ऐसे कितने ही दिन-दुखिया भारतवासी हैं जिनकी सार-सभार कोई भूले-भटके भी नही करता। महात्मा! यदि आत्मा से प्रेम करना है तो अपने अगो की तरह सबको अपनाना होगा। अपनी भूख मिटाने की तरह उनकी भी चिन्ता करनी होगी। 'सच्चा आत्म प्रेमी किसी से घृणा नहीं करता। उतने ही पुरुषार्थ से वह दूसरों के दुःख मिटाता है, जितने से अपने। ऐसे ज्ञानी जन ही वास्तव में आत्म-प्रेमी कहलाने के अधिकारी हैं।" यह सुनकर वह साधु स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा। क्षमा मांगी और स्वामी जी का भक्त बन गया।

यह था ऋषि दयानन्द का सच्चा आत्म-प्रेम, जो दूसरे को स्वात्मवत् मानते थे।

—घनश्याम आर्य 'निडर'

स्वाधीनता-दिवस

(गीतिका)

रचयिता—डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)

स्वाधीनता-दिनं स्याद्
जनता-हिताय नित्यम्।
सुख-गौरवाभिवृद्धि,
लोकं श्रयेदजस्रम्॥

वीरैं स्व-रक्त-दानैं,
धीरैं स्व-देह-दानैं।
शक्तैं स्व-देश-भक्तैं,
लब्ध स्वराज्यमेतत्॥

आत्माहुति प्रदत्ता,
यै राष्ट्र-धर्म-हेतो।
स्वार्थं विहाय, सर्वे,
तै देव-तुल्य-वन्द्या॥

राष्ट्राय गौरव स्यात्,
तेषां स्वदेश-भक्ति।
स्वार्थार्पणेन सर्वे,
स्युर्देशभक्ति-युक्ता॥

भागीरथ-श्रमेण
स्वाधीनतेयमाप्ता।
रक्ष्या च पोषणीया
निज-जीवनार्पणेन॥

देशा समऽपि लोके,
स्वातन्त्र्य-लाभ तुष्टा।
रक्षति रक्तदानै,
स्वातन्त्र्यमेव नित्यम्॥

स्वार्थं विहाय यत्नं,
रक्षन्तु देशभक्ता।
शक्ता विरक्त-भावा,
स्वातन्त्र्यमेव शाश्वत्॥

स्वाधीनता सुखानां,
मूल गुणोच्चयानाम्।
शक्तेर्धृतेश्च शान्ते,
मानस्य गौरवस्य॥

राष्ट्र-प्रकर्ष हेतु,
पतिताऽर्ति-नाश-हेतु।
हीनाऽऽर्त-शोक-त्राता,
धान्यादि वृद्धि-हेतु॥

धन-धान्य-शान्ति-तुष्टा,
वस्त्रान्न-वास-हृष्टा।
पुष्टाश्च भारतीया,
स्युर्देश प्रेम-पूता॥ स्वा०॥

क्या वैदिक आर्य गोमांस खाते थे?

दिल्ली प्रशासन की पाठ्य पुस्तकों मे संस्कृति पर कुठाराघात

दिल्ली सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवले ने कहा है कि आज भी हमारी स्कूली पाठ्य-पुस्तकों का सकलन व सम्पादन ऐसे भ्रस्ट हाथों में है जो हमारे बच्चो के कोमल-हृदयो मे अपने धर्म और सस्कृति के प्रति नफरत पैदा करने वाली सामग्री देने से बाज नही आते। ऐसा ही एक उदाहरण दिल्ली प्रशासन के स्कूलो की कक्षा 6 की इतिहास व नागरिक शास्त्र तथा 8 वी कक्षा की सुमन सचय नामक पुस्तको मे सामने आया है। इतिहास की पुस्तक मे लिखा है कि वैदिक युग मे अतिथियो को गोमास परोसना सम्मान जनक माना जाता था तथा दूसरी पुस्तक में बताया है कि नारद वेदो को गगा में बहा देने के पक्ष मे थे। उन्होने कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) कुलानन्द भारतीय से इन पुस्तको मे सशोधन की माग की है। ऐसे कुत्सित विचारो से बच्चो को बचाया जाय।

मेरा भारत

—शाति स्वरूप 'कुसुम'—

उत्फुल्ल धरा, उत्फुल्ल गगन
दिशि-2 गुंजित जन गन मन
गण स्वन
पूजा मे विनत सहज मस्तक
श्रद्धारत प्राण विहग नत
आजादी की लौ पर जल बुझ
कितने शलभो ने किया हवन
सम्मान निहित मर्यादा है
गौरव प्राणो से ज्यादा है
यह मेरा भारत, मैं इसके
सुन्दर उपवन का एक सुमन
कण-कण मे स्वप्न सुनहले हैं

उद्यम युत महल दुमहले हैं
गागर-गागर मधु से पूरित
सागर-सागर अमृत मन्थन
उद्यानो मे पिक कुहू—कुहू
खेतो मे केसर की खुशबू
वानस मानस मोती माणिक
षड् ऋतु धरती धानी दुल्हन
स्वर्णिम तन मन प्राची झुरमुट
हिम गिरि चांदी का शीश मुकुट
नदियो के झूले मे झूमा
प्रक्षालित करता सिन्धु चरन

पत्रों के दर्पण में

मुस्लिम दरिंदगी से अमरीकी हिन्दू क्षुब्ध

अमेरिका के हिंदू-जागरण मच का खुला पत्र (केवल) मुख्य मन्त्री महाराष्ट्र के नाम-माननीय मुख्य मन्त्री महोदय

यह राष्ट्रीय अपमान का विषय है कि अफजल खा की बर्बरता झेलने वाले हिंदू आज भी उसके वारिसों की दरिंदगी के शिकार बने हैं। अमेरिका के हिन्दुओं को यह जानकर सदमा पहुचा है कि मुसलमानो के झुण्डों ने मंदिरों को लूटा तथा निर्दोष हिंदुओं व सुरक्षा कर्मचारियो की हत्याए की। हमारी तो धारणा थी कि पाकिस्तान बनने के साथ मुस्लिम समस्या हल हो चुकी है।

हम अभारी होंगे यदि आप हिंदुस्तान में फिर से फन उठाने वाले इस्लामी साम्राज्यवाद के दलालों के षडयत्रो को भ्रूणावस्था मे ही कुचलकर हिन्दुओ को सुरक्षा दे सकें। —हिंदू जागरण मच, 132 डब्ल्यू २4 वीं स्ट्रीट, न्यूयार्क सिटी।

ट्रैक्टर से अधिक लाभदायक बैल

आज पढे लिखे किसानों मे यह प्रचार किया जा रहा है कि बैलो की अपेक्षा ट्रैक्टरों से खेती ज्यादा लाभदायक होती है। परन्तु लाभ की सारी कसर ट्रैक्टर का रख-रखाव दिन ब दिन खर्चीला होने मे पूरी हो जाती है। अब समझकर किसानों के विचार बदलते जा रहे हैं। 70 हैक्टर फार्म के मालिक 80 वर्षीय नैनीताल निवासी श्री जगन्नाथ बाली ने अपने 13 ट्रैक्टरो को बेचकर 40 जोडी बैल खरीदे हैं। इससे, आम लागत पर अधिक काम के अलावा उनके 80 घन मीटर आकार वाले गोबर गैस सयत्र के लिये मुफ्त गोबर और प्राकृतिक खाद भी मिल जाती है। पत नगर कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञो ने भी भारतीय किसानों के लिये बैलों का उपयोग अधिक किफायती और सुविधाजनक बताया है।

आशा की जाती है कि बैलो के प्रयोग को तरजीह देकर भारतीय किसान न केवल लाभ मे रहेंगे बल्कि 'गाय बचाओ—देश बचाओ' अभियान को सफल बनाने के पुण्य के भी भागी होंगे।" —श्री सदाजीवतलाल चन्दूलाल, मानद सयोजक बम्बई गोवश रक्षा समिति, बम्बई।

जहां क्रांतिवीर उपेक्षित हों...!

ग्वालियर शहीद स्मृति समिति के अध्यक्ष और अंग्रेजो के दांत खट्टे करने में अपनी सारी जवानी कारागारो की दीवारो के भीतर होम देने वाले क्रांतिकारी वीर श्री शभुनाथ आजाद आज आगरा के एक अस्पताल मे लावारिस हालत मे पडे हैं। ऐसे क्रातिकारी वीर का स्वतत्र भारत मे लावारिसों जैसी दशा मे जिन्दगी की आखिरी सासे गिनना मम को कचोट जाता है।

इस सदर्भ मे जिस स्वतत्र भारत मे परिस्थितियो वश हमारे भाग्य-विधाता बन बैठे अग्रेज शासन के दलाल ऐशो आराम की जिन्दगी जी रहे हैं क्या उसमें अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले लोगों को भी जीने और इज्जत की मौत मरने का हक है? राजनेताओ ने तो खुद गाधी को ही सत्ता के लिये उपेक्षित कर डाला पर यदि जनता जनार्दन भी इस दुर्दशा की मौन साक्षी बनी रही, तो सतत गतिमान इतिहास-चक्र फिर एक बार उसी बिन्दु पर पहुच जायेगा जिससे मुक्ति पाने के लिये तमाम माताओ की गोदें और सुहागिनो के सुहाग उजडे थे। जो कौम अपने क्रातिकारियो का सम्मान नही कर सकती उसके इस हश्र को कोई रोक नही सकेगा। —श्रीमती सरोज शर्मा, शिंदे की छावनी लश्कर।

आन्दोलनकारी बनाम प्रशासन अधिकार

1947 के बाद देश के शासन की बागडोर जिन हाथो मे आयी उनको आन्दोलन सचालन करने का तो पूरा अनुभव था, किन्तु देश का शासन किस प्रकार चलाया जावे, इसका उन्हें कोई अनुभव नही था। इसी कारण नेहरू जी ने लार्ड माउटबेटन को भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बनाने का अनुरोध किया था।

अग्रेजो के शासनकाल मे जो लोग प्रशासन चलाते थे उन्हीं लोगों को आजाद हिन्दुस्तान का शासन चलाने की बागडोर दे दी गई। जिन के मस्तिष्क में पूरी अंग्रेजियत समाई हुई थी वे प्रशासनाधिकारी हमारे देश के नेताओ की इस कमजोरी को भाप गये। इसलिए इन प्रशासन चलाने वालो ने अंग्रेजों के जमाने से मिलती-जुलती नीतिया ही निर्धारित की और ये जैसी नीतियां बनाते रहे हमारे नेता उन्हें स्वीकृति प्रदान करते रहे।

इन्हीं नीतियो के कारण न तो हिन्दी राष्ट्रभाषा बन पाई और न लोकतत्र प्रणाली सफल हो सकी। हमारी ससद विधान सभाओ मे जितने भी सदस्य चुन कर आते हैं इनमें लगभग 80 प्रतिशत तो अगूठा छाप ही होते हैं। शेष 20 प्रतिशत में से 15 प्रतिशत मुश्किल से दसवीं तक पढे लिखे होते हैं और शेष 5 प्रतिशत जो पढ़े-लिखे लोग होते हैं उनकी सख्या इतनी थोडी होती है कि उनकी आवाज कहीं नहीं सुनी जाती। जात-पात या पैसे के बल पर चुनाव मे विजयी होकर आने वाले अधिकांश सदस्य सदन की कार्यवाही मे भाग नहीं लेते, या केवल हाथ उठाना जानते हैं। पूरा कार्यकाल बीत जाने पर भी वे ससद या विधान सभा की कार्यविधि या नियमों तक का भी ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक नही समझते।

हमारे मंत्री महोदयों के नीति निर्धारक वक्तव्य और नोट भी उनके यही प्रशासक अधिकारी ही तैयार करते हैं जिन्हें मंत्री जी पढ़ कर सुना देते हैं। इसी कारण कई बार मत्री जी को विधान सभाओं तथा ससद में विरोध पक्ष के कोप का भाजन भी बनना पडता है। क्योंकि जो सूचना सदस्य ने मांगी है वह प्रशासनिक सचिवों द्वारा अपने बचाव तथा अन्य कारणो से भेजी गई, तथ्यों से भिन्न होती है। इस कारण विरोध पक्ष मत्री जी की खिचाई करता है। तब बिचारे मत्री जी को क्षमा माग कर ही जान छुडानी पडती है। —किशन स्वरूप गोयल, 3314 बैंक स्ट्रीट, करोल बाग नई दिल्ली—110005

आर्य समाजों में उपस्थिति कैसे बढ़े?

मैं आर्य समाज नाई की मडी, आगरा का सदस्य हू। आर्य समाजों मे उपस्थिति कैसे बढ़े, मैं यही सोचता रहता हू। मैंने अपनी समाज के अधिकारियों के समक्ष एक योजना रखी है। उसे सबने स्वीकार किया। उसमें बहुत लाभ भी हुआ। योजना यह है कि प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को सब स्थानीय आर्यसमाजों का सम्मिलित मासिक अधिवेशन किसी एक समाज में मनाया जाए। किसी विशिष्ट व्यक्ति को मुख्य अतिथि के रूप मे आमंत्रित किया जाए। उसका सस्नेह स्वागत और समादर किया जाए। मधुर भजन गाने वाले भाइयों और बहनो को बुलाया जाए। सदस्यों के साथ उनके पुत्र-पुत्रियों के नाम अलग से निमंत्रण पत्र छपाकर भेजे जाए। अनेक युवक-युवतियां सपरिवार आएगे। प्रसाद या भोजन की व्यवस्था भी हो। हमारे यहाँ यह परीक्षण अत्यन्त सफल रहा है। आप भी आजमाकर देखिए। —यशपाल आर्य, नाई की मडी, आगरा

आर्य जगत की ग्राहक संख्या ५० हजार क्यों न हो?

"लेखनी आपकी इतनी सटीक और समयानुकूल होती है कि मेरी आपके सम्पादकीय के प्रति रुचि व श्रद्धा बढती जा रही है। पर, पजाब और काश्मीर जैसी समस्याओ पर आर्य नेताओ की भूमिका की जानकारी केवल आर्यों तक ही सीमित रह गयी। इस दृष्टि से मैं चाहता हू कि लाखों हाथों तक पहुचने वाले अंग्रेजी समाचार-पत्रो मे भी आपके विचार छपें। इसका दूसरा विकल्प यह है कि 'आर्य जगत' की ही ग्राहक सख्या कम से कम 50 हजार तो होनी चाहिए। यह कोई कठिन कार्य नहीं, पर इसके लिये हम सबको प्रयत्न करना होगा।

—श्री इन्द्र मोहन मेहता, अध्यक्ष आर्य परिवार, आगरा।

सही रास्ता-सत्याग्रह आंदोलन

मुझे विश्वास है कि आदरणीय श्री क्षितीश वेदालकार का लेख 'काश्मीर में ऐतिहासिक भूमिका' प्रत्येक पाठक को अच्छा लगा होगा। पर हजूरी बाग आर्य समाज मदिर व देवकी कन्या पाठशाला की क्षति के सम्बन्ध में केवल प्रधान मत्री अथवा भू० पू० मुख्यमत्री से मिल लेने अथवा क्षतिपूर्ति की मांग करना सहज राजनीतिक दांव-पेच और चमचागीरी है। कायरता का कलक धोने और ठोस उपलब्धि के लिये आर्य समाज को इसके लिये सत्याग्रह आन्दोलन शीघ्र प्रारम्भ करना चाहिये।

—ओ० पी० भाटिया, जयपुर

अण्डों का विज्ञापन क्यों?

प्रतिदिन प्रातः आकाशवाणी के 'विविध-भारती' कार्यक्रम में मानव के लिये हानिकर मांसाहार मे परिगणित अडे का "अण्डे खाइये-स्वस्थ रहिये' विज्ञापन प्रसारण तुरन्त बन्द किया जाय। यह विज्ञापन अहिंसक वैदिक धर्मानुयायियों की मान्यताओं को ठेस पहुचाता है। गाय का दूध अडे से कहीं अधिक स्वास्थ्यवर्धक है। अत आकाशवाणी को वैकल्पिक प्रसारण—"गाय का दूध पीजीये और स्वस्थ रहिये" करना चाहिये। —डा० वेद प्रकाश, अध्यक्ष वैदिक धर्म-रक्षा सभा, 468 ब्रह्मपुरी मेरठ।

पुष्कर में महर्षि सम्बन्धी शिलालेख

ऋषि जीवन-गाथा के अनुसार जगविख्यात ब्रह्मा मदिर पुष्कर में महर्षि का कुछ काल तक निवास मान कर गत ऋषि निर्वाण शताब्दी पर वहां एक भव्य शिलालेख तथा महर्षि का एक भाव पूर्ण चित्र लगवाया गया है। खेद है कि कुछ लोग इसे अप्रमाणिक बताते हैं। इस सदर्भ में यहां के पण्डों पुजारियों की बौखलाहट तो समझ में आती है, पर डा० भारतीय जैसे आर्य विद्वान की लेखनी का प्रमाद विस्मयकारी है।

—श्री कश्यप देव वानप्रस्थी, प्रबंधक—वैदिक सत्सग आश्रम पुष्कर।

आर्यसमाज की स्थापना में सिख...

(पृष्ठ 6 का शेष)

सम्बन्ध में मेरी जानकारी है। पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत 'दयानन्द तिमिर भास्कर' के उल्लेख के प्रसंग में पं० तुलसीराम स्वामी कृत 'भास्कर प्रकाश' का उल्लेख तो प्रासंगिक हो सकता है, पं० मनसाराम के ग्रन्थों का नहीं।

जोधपुर के महाराजा के लिये "महाराणा" छप जाना अनवधानतावश हुई प्रेस की भूल है, क्योंकि स्वयं जोधपुर निवासी होने के कारण इस तथ्य को मैं ही नहीं जानता होऊं, यह संभव नहीं। विष प्रकरण में जो विवेचना है वह जिज्ञासु जी द्वारा प्रदत्त तथ्यों को झुठलाने की दृष्टि से नहीं, अपितु इस दृष्टि से की गई है कि पूर्व विवेचकों की विवेचना में यदि कोई वदतोव्याघात है तो उसका निराकरण किया जाय। विष प्रकरण की सतर्क मीमांसा मैंने की है, इसमें अत्युक्ति की कोई बात नहीं है। मेरे पूर्व के चरित-लेखक सभी मेरे प्रणम्य हैं। पं० लक्ष्मण रचित उर्दू जीवन-चरित मैंने पढ़ा नहीं, उन्होंने विष के बारे में क्या लिखा है, यह जिज्ञासु जी हमें बतायें।

अब रही महाराजा प्रताप सिंह की आत्मकथा की बात। उसमें क्या है, इसके बारे में जिज्ञासु जी अपनी गोपन रखने की प्रवृति को छोड़कर साफ-साफ बताएं तो हम जैसों का उपकार हो। जोधपुर में भैरव सिंह जी को जिज्ञासु जी से भी अच्छी तरह से जानता हूं, क्योंकि मेरा उनका परिचय गत 35 वर्षों का है। अब वे 82 के हैं। मैं गत ग्रीष्मावकाश में ही उनसे जोधपुर में मिला। उनमें गोपन करने की, अपने पास की सामग्री को रहस्यपूर्ण ढंग से छिपाये रखने की प्रवृति बहुत बुरी है। मैंने उन्हें स्पष्ट कहा कि आप स्वयं सोच लें कि आपके बाद इस सामग्री का क्या होगा। वे स्वयं भी जानते है कि उनके न रहने पर यह सामग्री नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगी, तथापि वे इसे किसी व्यक्ति या संस्था को देने की बात तो दूर रही, मुझ जैसे अन्वेषी को भी दिखाने को तैयार नहीं हैं। अतः यदि जिज्ञासु जी महाराज प्रताप सिंह की आत्मकथा का रहस्य स्पष्ट कर दें तो महती कृपा हो।

मैंने स्वामी भास्करानन्द को साधु लिखा, जिज्ञासु जी उसे लफंगा कहते हैं। 'लफंगा' लिख देना तो मेरे लिये भी कुछ कठिन नहीं था। किंतु मैंने प्रकाशानन्द, भास्करानन्द, अच्युतानन्द आदि मांस भक्षण के समर्थक सभी सन्यासियों के लिये संयत भाषा का प्रयोग किया है। यदि मैं असंयत भाषा लिखने पर उतर आता तो मेरी पुस्तक का वह रूप नहीं होता, जो है। अन्त में स्वामी अच्युतानन्द की बात। इस सम्बन्ध में मैंने नवीन प्रमाण एकत्र कर लिये हैं तथा स्वामी अच्युतानन्द का चित्र भी प्राप्त कर लिया है। मैंने यदि किसी तथ्य को प्रस्तुत करते समय मुख्य या गौण स्रोतों का प्रयोग किया है तो उनका वैसे ही संकेत दिया है। अच्युतानन्द का इतिवृत्ति पृथक् लेख में लिखूंगा जो मैंने स्वामी चिदानन्द सम्पादित शुद्धि सभा के मुख पत्र 'श्रद्धानन्द' से संकलित किया है। सन्-संवत् आदि की छापे की भूलें रह गई हैं, यह ठीक है। बहुत सावधानी बरतने पर भी रह जाती हैं। जो कुछ और चाहिए वह तो पृथक् बात है, अभी तो पाठकों को उसी से संतोष करना चाहिए जो मैं इसमें दे पाया हूं। इस लेख के बाद हमारी और जिज्ञासु जी की चर्चा व्यक्तिगत पत्रों में होगी न कि पत्र-पत्रिकाओं में क्योंकि वे मेरे अभिन्न मित्र हैं और हमारा सीधा सम्पर्क भी है।

स्वामी दयानन्द के इस जीवनचरित्र के विषय में तो मैं सन्त तुकाराम का यह अभंग उद्धृत करना चाहूंगा—

सन्तों को उच्छिष्ट मात्र है मेरी बाणी।
जानूं उसका भेद भला मैं क्या अज्ञानी॥

मेरा सारा प्रयास तो स्वामीजी के पूर्व जीवनीकारों के परिश्रम पर ही निर्भर है।

यहाँ रहने का अधिकार नहीं

—कविराज पं० इन्द्रसेन "विश्वप्रेमी"—

भारत में रह कर भी जिनको भारत से होता प्यार नहीं।
ऐसे गद्दारों को 'प्रेमी' यहाँ रहने का अधिकार नहीं॥

भारत की धरती पर जन्मे भारत का सब कुछ खाते हैं,
अहसान फरामोशी इतनी बेशर्म नहीं शर्माते हैं,
देश के द्रोही गद्दारों से हम होते होशियार नहीं,
बँट जाता प्यारा देश शेष रहती अपनी सरकार नहीं।

इन्सान नहीं शैतान बने, ईमान नहीं बेईमान बने,
कहते हैं खालिस्तान बने या फिर से पाकिस्तान बने,
इस देश के टुकड़े कर डालो, यह मिटकर कब्रिस्तान बने,
ऐसों को लाज नहीं आती, मिलता आदर सत्कार नहीं।

ये जो हमारे भाई ही कितने जहरीले सांप बने,
हम दूध पिलाते थे इनको वे जहर हमी पर छाप रहे,
ये नमक हरामी करने लगे हमने भी कितना धोखा खाया,
कैसे इन पर विश्वास करें अब तो होता एतबार नहीं।

यदि भारत में रहना है तो भारत मां से प्यार करो,
मिलजुल कर रहना सीखो यहां और अपना भी सुधार करो,
मानवता को धारण करके न किसी से कभी बिगाड़ करो,
जो उल्टा चले तो जीवन में सुख शान्ति का संचार नहीं।

जो धर्म के नाम पे कत्ल करें वो धर्म नहीं शैतानी है,
गुरुओं के नाम को लेकर के करते अपनी बदनामी है,
बगुला भक्ति करने से तो दिल में आती है बेइमानी है,
ऐसों को कोई न माफ करे, रक्षा करता करतार नहीं।

बन राक्षस गोली चलाते हैं, निर्दोष का रक्त बहाते हैं,
भारत को मिटाना चाहते हैं, पापी हो पाप कमाते हैं,
कहने को संत कहलाते हैं, जालिम है, जुल्म कमाते हैं,
गुरुओं का नाम तो लेते हैं, गुरुओं के आज्ञाकार नहीं।

हथकण्डे ये गद्दारों के भारत के करो टुकड़े-टुकड़े,
एजेन्ट विदेशों के है ये उनके हथियार गये पकड़े।
चेती सरकार अब कहती है, दुष्टों के करो टुकड़े-टुकड़े,
यशगान करो निज सेना का कभी जिसकी होती हार नहीं।

भारत में रहकर भी जिनको भारत से होता प्यार नहीं।
ऐसे गद्दारों को 'प्रेमी' यहां रहने का अधिकार नहीं॥

पता—एच ब्लाक २४५ न्यू कविनगर
गाजियाबाद।

अन्तर्जातीय विवाह

(कार्यालय-आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1)

केवल वे ही व्यक्ति पत्र-व्यवहार करें या कार्यालय में मिलें जो दहेज की समस्या को समूल नष्ट करना चाहते हो और जाति-पाँति के बन्धन को तोड़कर अन्तर्जातीय विवाह करना चाहते हैं। जिन वर व कन्या के नाम पते व पूर्ण विवरण हमारे पास नहीं हैं, और उनके अभिभावक प्रथम बार सम्पर्क स्थापित करना चाहते हों तो पत्र व्यवहार करते समय वर-कन्या का परिचय इस प्रकार दें. आयु, कद, शिक्षा व अन्य योग्यता, व्यवसाय एवं आय, कैसा सम्बन्ध चाहिए (आयु योग्यता, आय आदि), परिवार के सदस्यों की जानकारी, माता-पिता व अभिभावक की सहमति है या नहीं, कार्यालय से इस विषय का फार्म भी मिल जायेगा। (कार्यालय का समय—सायं 5 बजे से 7 बजे तक (रविवार छोड़कर)

सेवा निःशुल्क है।

डा० मदनपाल वर्मा
अधिष्ठाता—अन्तर्जातीय विवाह विभाग

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग, पुस्तक सूची

क्रम संख्या	पुस्तक नाम	लेखक	रु०—पै०
1.	मुण्डक उपनिषद	प्रि० दीवान चन्द	4—00
2.	वेदोपदेश	,, ,,	4—50
3.	मानसिक चित्रावली	,, ,,	6—00
4.	महात्मा हंसराज	राम विचार एम० ए०	1—25
5.	भक्ति सुधा	सूरजभान	6—00
6.	जीवन ज्योति	प्रि० दीवानचन्द	3—00
7.	दयानन्द शतक	,, ,,	4—00
8.	स्वाध्याय संग्रह	,, ,,	2—00
9.	देश धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन	दत्तात्रेय बाब्ले	0—20
10.	धर्म शिक्षा	सदा विजय आर्य	2—00
11.	सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला	अजमेर	12—00
12.	सामवेद संहिता	आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री	20—00
13.	शास्त्रार्थ एक शंकराचार्य से	लेखक— आचार्य विक्रम	6—00
14.	कुंवर सुखलाल अभिनन्दन ग्रन्थ	,, ,,	25—00
15.	अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ	,, ,,	15—00
16.	कुंवर सुखलाल भजनावली	,, ,,	5—00
17.	निराला के काव्य पर अद्वैत वेदान्त का प्रभाव	वाचस्पति कुलवन्त	15—00
18.	सत्यार्थ प्रकाश	दयानन्द	6—00
19.	आर्य समाज का इतिहास	डॉ० सत्यकेतु	100—00
20.	मुझे वैदिक धर्म क्यों प्यारा है	बुद्धदेव मीरपुरी	1—00
21.	षड्दर्शन समन्वय	,, ,,	1—00
22.	वैदिक मान्यताएं	गंगा प्रसाद उपाध्याय	6—00
23.	मनुष्य और मानव धर्म	,, ,,	5—00
24.	षड्दर्शन समन्वय	रमेश कुमार	1—00
25.	प्राची-प्रतीची	डॉ० रत्न कुमारी मिश्र	8—00
26.	माधवानल काम कन्दला	,, ,, ,,	10—00
27.	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी निबन्ध माला	इलाहाबाद	2—00
28.	हिन्दी काव्य का मूल्यांकन	रामकुमारी मिश्र	8—00
29.	वैदिक धर्म और समाज	सत्यप्रकाश	6—00
30.	हम क्या खायें-घास या मांस	गंगा प्रसाद उपाध्याय	6—00
31.	आस्तिकवाद	,, ,,	15—00
32.	मीमांसा प्रदीप	, ,,	10—00
33.	प्रार्थना और चिन्तन	,, ,,	6—00
34.	आर्य समाज	,, ,	8—00
35.	सूर्य सिद्धान्त (भाग 1-2)	महावीर प्रसाद श्रीवास्तव	80—00
36.	इकेबाना	डॉ० कृष्णा मिश्र	4—00
37.	व्यक्ति से व्यक्तित्व	राजेन्द्र जिज्ञासु	15—00
38.	स्मृति लेखा	दीनानाथ	5—00
39.	सुखी समाज	कपिलदेव	8—00
40.	सुखी परिवार	,,	8—00
41.	सुखी गृहस्थ	,,	8—00
42.	सुखी जीवन	,,	8—00
43	अथर्ववेद संहिता	अजमेर	25—00
44.	अष्टाध्यायी भाष्य	कु० प्रज्ञादेवी	15—00
45.	सत्संग प्रार्थना मंत्र	विनोद भसीन	2—00
46.	भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और आर्य समाज	जय देव	1—50
47.	क्रान्ति	सच्चिदानन्द शास्त्री	12—00
48.	नारी दर्पण	,, ,,	15—00
49.	स्वस्ति सुधा	जगत् कुमार शास्त्री	5—00
50.	सदाचार चन्द्रिका	,, ,,	3—00
51.	ब्रह्मचर्य प्रदीप	,, ,,	8—00
52.	बाल रामायण	प्रेमचन्द शास्त्री	7—00
53.	बाल महाभारत	,, ,,	8—00
54.	मधुर शिष्टाचार और सदाचार	राजपाल शास्त्री	10—00
55.	वैज्ञानिक योगासन और प्राणायाम	देवपाल	10—00
56.	आर्षगीता	भवानीलाल	8—00
57.	मोची की डायरी	नारायणदास कपूर	10—00
58.	काव्यकृति उद्बोधन प्रकाश	प्रकाशवीर व्याकुल	5—00
59.	रसस्रावी मुरली मनोहर	राजेन्द्र जिज्ञासु	1—50
60.	गाथा कथन	सारस्वत मोहनी "मनीषी"	25—00
61.	योगसार	प्रो० वेदव्रत	24—00
62.	अथर्ववेद संहिता	क्षेमकरण दास त्रिवेदी	80—00
63.	दैनिक यज्ञ पद्धति	दयानन्द	0—50
64.	चन्द्रगुप्त मौर्य	श्रीराम शर्मा	0—50
65.	महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र	इन्द्र विद्यावाचस्पति	6—00
66.	अथर्ववेद संहिता	अजमेर	25—00
67.	"आर्य जगत्" के विशेषांक	1980-84 प्रत्येक	10—00
68.	निर्वाण शताब्दी स्मारिका		20—00
69	दयानन्द गुणगान	पन्नालाल पीयूष	5—00
70.	महर्षि दयानन्द संक्षिप्त जीवन चरित्र	प्रेमचन्द शास्त्री	0—75

—कुमारी विद्यावती आनन्द, अवैतनिक अध्यक्ष

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

BOOKS IN ENGLISH AVAILABLE IN STOCK

S. N.	Name of the book	Author's Name	Amount. Rs.—P.
1.	Self Life & Conciousness	Swami Satya Prakash	12—00
2.	Dayanand-An Interpretation	Prof. H. L. Auluck.	1—00
3.	Worship	Pt. Ganga Pd. Upadhaya.	12—00
4.	Parables and Dialogues from Upnishadas.	Swami Satya Prakash.	50—00
5.	Light of Yoga	Sh. N. D. Kapur	15—00
6.	The Bakhshali Manuscript	Swami Satya Prakash	50—00
7.	Sulba Sutras	—do—	55—00
8.	Shastra Navanitam	Pt. Nardev Vidyalankar	51—00
9.	History of the Assassins	Swami Shraddhanad	30—00
10.	A case for Hindu State	Prof. Balraj Madhok	1—00
11.	Christianity in India	Pt. Ganga Pd. Upadhaya	8—00
12.	Light of truth	—do—	55—00
13.	Light of Truth	Dr. Chiranji Lal Bhardwaj.	20—00
14.	Vedic Sandhya	Acharya Vaidya Nath Shastri	1—50
15.	Mahatma Hans Raj	Shri Som Nath	1—00
16.	Havan Mantras	Acharya Vaidya Nath Shastri	3—00
17.	Superstition	Pt. Ganga Pd. Upadhaya	8—00
18.	Dayanand-His Life & Work	Prin. Suraj Bhan	5—50
19.	I and my God	Pt. Ganga Pd. Upadhaya	8—00
20.	Speeches, Writings and Addresses. Vol. I	Swami Satya Prakash	30—00
21.	—do— Vol. II	—do—	30—00
22.	Vedic Sandhya	—do—	4—00
23.	Vedic Concept of Yoga Meditation.	Devendra Kapoor.	30—00
24.	Rig Veda Samhita Vol. 1 to 10.	Swami Satya Prakash	50—00
5 2	The League Assaults on Satyarth Prakash	C. Parameswaran	1—00

President, K. Vidyawti Anand.

सामाजिक जगत्

करनाल में बलिदान शताब्दी

करनाल (हरियाणा) : आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नयी दिल्ली के तत्वावधान में प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा करनाल आगामी 5, 6 व 7 अक्तूबर को, महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह आयोजित कर रही है। समारोह में देश व धर्म के लिये प्राणोत्सर्ग करने वाली सुप्त मृत्युंजयी परम्परा के स्वाभिमान फिर से उद्दीप्त करने वाले देश के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान, धर्माचार्य और कलाविदों से आमंत्रित किया गया है। विशेष यज्ञ 30 सितम्बर से प्रारंभ हो जायेगा, जिसके ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी होंगे। 2, 3 व 4 अक्तूबर को आर्य युवकों का प्रशिक्षण शिविर लगेगा तथा 4-6 अक्तूबर को भव्य शोभा-यात्रा का आयोजन है।

महाविद्याय के पास शराब ठेका

कँवारी (हिसार) : यहाँ ग्राम बालावास मे 4 मास से चल रहे "ठेका बन्द करो" आन्दोलन के सिलसिले में, आर्य प्रतिनिधि सभा (हरियाणा) के प्रख्यात भजनोपदेक पं० सुमेरसिंह की भजन मंडली ने 6 अगस्त को शराबबन्दी का प्रचार किया। समायोजन मे कँवरी समाज के प्रधान ने लोगो से शराब न पीने की जोरदार अपील की। असामाजिक तत्वों की तीखी आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि जितना आग्रह उनका दुष्कर्मों की ओर है उतना यदि भले कामों की ओर हो तो अल्पावधि में ही समाज व जन-जीवन सुखमय बन सकता है।

सफलता न मिलने तक उक्त "ठेका बन्द करो" आंदोलन जारी रखने का संकल्प दुहराते हुए उन्होने कहा कि जो सरकार यहां पानी नही दे सकती उसे यहां शराब की दुकान खोलना क्या शोभा देता है? के ठेके पास स्थित नलवा महाविद्यालय मे पढ़ने वाले गरीब मजदूर किसानों के बच्चों के इस वर्ष के दयनीय परीक्षाफल (111 छात्रों में से कुल 4 उत्तीर्ण) का उल्लेख करते हुए देश और समाज के व्यापक हित में अविलम्ब ठेका हटाने की मांग की।

आर्य युवक सम्मेलन

मुरादाबाद : स्थानीय आर्य वीर दल प्रथम बार आर्य समाज मंदिर, रेलवे हरथला कालोनी में 26 अगस्त को आर्य युवक सम्मेलन आयोजित कर रहा है। श्री विश्वपाल जयंत का शारीरिक प्रदर्शन तथा सायं 7 बजे से विचार गोष्ठी व भावी योजना निर्धारण कार्यक्रम रखा गया है।

शहीद परिवार सहायता निधि

अजमेर : पंजाब की सैनिक कार्यवाही के दौरान शहीद हुए सैनिकों के कल्याण हेतु आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा संगृहित सहायतानिधि में आर्य समाज अजमेर ने 1000 रु० की राशि प्रेषित की है।

निःशुल्क होम्यो चिकित्सालय

हाँसी (हरियाणा) : अन्न क्षेत्र सेवा समिति 1 फरवरी से नगर के गरीब, असहाय व विकलांगों को एक समय भोजन की व्यवस्था कर रही थी। समिति ने अब 4 अगस्त से समाज भवन में नि.शुल्क होम्योपैथिक औषधालय प्रारंभ किया है। योजना का उद्घाटन श्री देशराज ढींगड़ा ने किया।

देशद्रोही गतिविधियों पर आक्रोश

नयी दिल्ली : आर्य समाज दरीयागंज की एक सभा मे "पाकिस्तान व खालिस्तान जिन्दाबाद" के नारे लगाने वाले तथाकथित खालिस्तान समर्थक उग्रवादियों व पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों के संयुक्त जलूस तथा समाज मंदिर हजूरी बाग व आर्य पुत्री पाठशाला के भवनों को जलाये जाने पर तीव्र रोष प्रकट किया है। अपदस्थ देशद्रोही डा० फारूक अब्दुला सरकार तथा पुलिस की निष्क्रियता की घोर निन्दा करते हुए शाह सरकार से 50 लाख रु० की क्षतिपूर्ति की माग की गयी।

महात्मा आर्य भिक्षु का प्रवचन

टंकारा : आर्य समाज मंदिर टंकारा मे 3 व 4 अगस्त को आर्य वानप्रस्थाश्रम (हरिद्वार) के प्रधान श्री आर्यभिक्षु का प्रवचन हुआ। प्रातः महर्षि दयानन्द स्मारक महालय मे भी उनका प्रवचन हुआ तथा मोरवी के पटेल कन्या छात्रावास मे भी उनके प्रवचन का विशेष कार्य क्रम रखा गया।

बाल मंदिर का वार्षिकोत्सव

टंकारा : स्थानीय आर्य समाज द्वारा आयोजित बाल-मन्दिर का चतुर्थ वार्षिकोत्सव श्रीमती बहन त्रिवेदी की अध्यक्षता मे 26 जुलाई को प्रथम बार महिला सम्मेलन के रूप में मनाया गया। बच्चों के कार्यक्रम के अलावा महिलाओं ने दहेज अस्पृश्यता, बाल-शिक्षा विषयों पर चर्चा की।

स्वतन्त्रता-दिवस समारोह

नई दिल्ली : स्थानीय एल्डरमैन श्री मोहन द्वारा प्रातःकाल ध्वजारोहण के साथ डी० ए० बी० पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ में स्वतन्त्रा-दिवस समारोह मनाया गया। उन्होंने दो वर्षों में हुई स्कूल की प्रशंसा की और काउंसिलर के नाते पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। बच्चों ने आधे घंटे का सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

श्री कृष्णदेव दिवंगत

60 वर्ष से अधिक की अवधि तक पूर्वी अफ्रिका एवं इंगलैंड के प्रवासी भारतीयों एवं विदेशी नागरीकों के मध्य वैदिक धर्म व आर्य समाज के निष्ठावान् प्रचारक 90 वर्षीय श्री कृष्णदेव कपिल का 31 जुलाई को लन्दन में निधन हो गया। वैदिक सिद्धातों के प्रचार एवं आर्य समाज के कार्यों में सदैव अग्रणी श्री कपिल का सारा जीवन निर्धनों, असहाय व पददलितों की सेवा में समर्पित रहा। उनके निधन से विदेश-स्थित आर्य-समाज के कार्यकर्ताओं की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ की अध्यक्षता मे महाशय कृष्ण हाल जोरबाग मे आयोजित एक शोक-सभा मे सर्वश्री रामनाथ सहगल, रामलाल मलिक, प० जैमिनी शास्त्री नवनीत लाल एडवोकेट, ने ईश्वर से उनकी आत्मा की सद्‌गति हेतु प्रार्थना व उनकी पुत्री श्रीमती कपिला हिंगोरानी, एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट और उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की।

आर० के० पुरम में दो कमरों का शिलान्यास

नयी दिल्ली : टंकारा सहायक समिति दिल्ली एवं आर्य समाज ग्रेटर कैलाश के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश बहल द्वारा प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण के साथ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल आर० के० पुरम, में स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। आगंतुक अभिवादको ने छात्र/छात्राओं द्वारा प्रस्तुत आधे घंटे के सांस्कृतिक कार्यक्रम को काफी पसन्द किया। इस अवसर पर कुवैत से सपरिवार पधारी श्रीमती विनोद भसीन ने पूर्व प्रदत्त 40 हजार रुपये की दान-राशि से समर्पित दो कमरों का शिलान्यास किया। एक कमरा कुवैत स्त्री-सत्संग तथा दूसरा स्व० श्री ओम प्रकाश जी भसीन की स्मृति मे बन रहा है।

पर्वतांचलों में संगठन तोड़ने का षडयन्त्र

पंचपुरी (गढ़वाल)/यहा गत माह के अन्त में समाज प्रधान श्री ढिण्डूराम आर्य की अध्यक्षता मे विकास खण्ड बीरोंखाल व थली सेंड की बहुसंख्यक आर्य जनता व सामाजिक आर्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में आर्य सम्मेलन हुआ। सम्मेलन मे, आर्य संगठन को छिन्न-भिन्न करने वाले स्थानीय तत्वों की गतिविधियों पर रोष प्रकट किया गया।

—श्री गंगानगर (राजस्थान) : यहां ग्राम केहरवाला में श्री रामचन्द्र आर्य "विद्यावाचस्पति" के निवास पर यज्ञ व सत्संग समारोह के साथ श्रावणी पर्व मनाया गया। बड़ी संख्या मे ग्रामीणो और छात्रों ने समारोह में भाग लिया।

वार्षिक चुनाव

कांचरापाड़ा (प० बगाल) : आर्य समाज कांचरापाडा, 42 परगना, में, सरक्षक श्री रामधनी दास; प्रधान : श्री राजकुमार सिंह आर्य, मत्री : श्री आत्मानन्द आर्य एवं कोषाध्यक्ष : श्री चंद्रदेव सिंह आर्य निर्वाचित हुए।

उपदेशक महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

टंकारा : महर्षि की जन्मस्थली में यहाँ मंगलवार 17 जुलाई को प्रातः साढ़े आठ बजे टंकारा ग्राम के गण्यमान्य व्यक्तियों, महाविद्यालय के उपाचार्य, प्राध्यापको एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति में आर्य-वीर दल टंकारा के आर्य-वीरों के बिगुल-वादन के साथ नयी-दिल्ली के श्री गुरुचरण दास जी आर्य द्वारा ध्वजारोहण से वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। महाविद्यालय के विद्यार्थियो ने उक्त अवसर पर एक वृहत् यज्ञ भी सम्पन्न किया।

आर्य समाज टंकारा के प्रचारक व मंत्री श्री पं० कृष्णदेव की अध्यक्षता में प्रारंभ हुए अधिवेशन में बहुसख्यक टंकारा निवासियों सहित महाविद्यालय के प्राध्यापकों एव विद्यार्थियो ने भाग लिया। उपाचार्य श्री हरिओ३म् और ट्रस्ट सहायक व्यवस्थापक श्री ध्यानपाल सिंह आर्य ने कहा कि देश का नव-निर्माण उपदेशक ही कर सकते हैं। सभाध्यक्ष ने अपने जीवन के कड़वे-मीठे अनुभवों के साथ विद्यार्थियों को प्रचार के ढंग से अवगत कराते हुए कठिनाइयों से टकराने में अडिग रहने की प्रेरणा दी।

आर्य समाज मन्दिर व कन्या विद्यालय के पुर्ननिर्माण की माँग

शाहपुरा आर्य समाज ने यहाँ पारित एक प्रस्ताव मे भारत सरकार द्वारा पंजाब की सैनिक कार्यवाही का स्वागत करते हुए स्वर्ण मन्दिर मे शहीद हुए सैनिको को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही श्रीनगर (कश्मीर) में आतकवादियो द्वारा आर्य समाज मदिर व कन्या विद्यालय जलाने तथा फारुक अब्दुल्ला सरकार द्वारा अपराधियों को दण्डित न करने का तीव्र विरोध करते हुए भारत सरकार से अपराधियो के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने तथा समाज व कन्या विद्यालय के पुर्ननिर्माण कराने की जोरदार माँग की।

—दिल्ली : स्थानीय नशाबन्दी समिति ने शराब पीने से मानव-पतन का सजीव रेखाचित्र उजागर करने वाली विकास फिल्म्स की एक रील की डाकूमेंटरी 'नशा' का हार्दिक स्वागत किया है। सोमवार 13 अगस्त सायं 5 बजे महादेवी रोड, नयी दिल्ली स्थित फिल्म डिवीजन ऑडिटोरियम मे उक्त फिल्म पर्दशित की गयी।

[यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०६)

पंजाब : तूफान के दौर से

अनेक रहस्यों का उद्घाटन करने वाली पुस्तक

ले०—क्षितीश वेदालंकार

धड़ाधड़ आर्डर आने शुरू

फोटो कम्पोजिंग में पुस्तक छप रही है

मूल्य-२० रु०, अजिल्द
मूल्य-३० रु०, सजिल्द

३० अगस्त से पहले रुपया भेजने वालों को क्रमशः १५ और २५ रु० में

प्राप्ति स्थान—आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१

कृष्णचन्द्र मेहता का स्वर्गवास

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के सुयोग्य और प्रतिभाशाली स्नातक, प्रसिद्ध पत्रकार, श्री कृष्णचन्द्र मेहता वेदालंकार का 67 वर्ष की आयु मे अकस्मात् हार्ट फेल हो जाने से 14 अगस्त को स्वर्गवास हो गया। वे 'माहेश्वरी', 'नवराष्ट्र' और 'अर्जुन' के सम्पादक रहे और बाद में 'हिन्दुस्तान' दैनिक के अनेक वर्षों तक सहायक सम्पादक रहे। 'हिन्दुस्तान' से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् आजकल वे 'विश्वात्मा' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन कर रहे थे। 24 अगस्त को उनके निवास स्थान एस—298, ग्रेटर कैलाश मे शान्ति यज्ञ और शोक सभा हुई जिसमें उनके परिवारिक जनों के अलावा पत्रकार काफी संख्या मे उपस्थित थे। उनकी पत्नी, दो पुत्रियां और एक पुत्र है। वे गुरुकुल मे हमारे सहपाठी थे। 'आर्यजगत' की ओर से उनके शोक-संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना। —क्षितीश वेदालंकार

गुरुकुल गौतम नगर में श्रावणी पर्व : श्रीमती भसीन द्वारा २१ हजार रु० दान

श्री मद्दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतम नगर मे 12 अगस्त को नव-निर्मित भव्य यज्ञशाला में श्रावणी के उपलक्ष्य मे यज्ञ और नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार आचार्य प्रवर श्री पं० हरिदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस समय गुरुकुल में 95 ब्रह्मचारी है। अपनी गौशाला है जिससे ब्रह्मचारियों को ताजा दूध की सुविधा है। कुवैतनिवासिनी श्रीमती विनोदभसीन ने अपने पति की स्मृति मे 21 हजार रु० दान देकर एक नया कमरा बनवाया है जिसका इस दिन उन्हीं के हाथों यज्ञाग्नि के प्रवेश द्वारा उद्घाटन हुआ। वेदो के प्रसिद्ध अध्येता श्री पं० मनोहर विद्यालंकार ने गुरुकुल को उसी दिन मिले दूरभाष से प्रथम फोन करके उसका विमोचन किया और वेद की सात मर्यादाओ के सम्बन्ध मे सुन्दर प्रवचन दिया। 'आर्य जगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने गुरु और शिष्य के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए गुरुकुलीय आदर्शों का विवेचन किया। श्री रामनाथ सहगल ने कुशलता पूर्वक समारोह का संचालन किया। दिल्ली की अनेक समाजों के अधिकारी और कार्यकर्ता इस समारोह में उपस्थित थे। गुरुकुल की प्रगति को देखकर सब ने सन्तोष प्रकट किया और उसकी आर्थिक सहायता का आश्वासन दिया।

योग्य वर चाहिये

(1)

आर्यसमाज के प्रसिद्ध दिवंगत नेता की पौत्री, वैदिक विद्वान की पुत्री के लिए वर की आवश्यकता है। भल्ला (खत्री), आयु 29, शिक्षा एम० ए० (फिलोसोफी) स्वर्णपदक प्राप्त। एम० फिल, लेक्चरर। गृह कार्यों मे कुशल। जाति बंधन नही। पत्रव्यवहार—मनोहर विद्यालंकार, 522 ईश्वरभवन, खारी बावली, दिल्ली-6

(2)

25 वर्षीय, एम०ए०, बी० एड०, कद 5 फुट, डी०ए० वी० पब्लिक स्कूल में शिक्षिका, वेतन 650 रु० मासिक, शाहदरा मे निजी मकान, सुन्दर सुशील गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। सम्पर्क करे—रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—1

(3)

आवश्यकता है एक सुयोग्य सम्पन्न स्वस्थ आर्य वर की। कन्या 5 फीट 6 इंच, हिंदी भाषी, स्वस्थ, सुन्दर-आकर्षक एवं दिल्ली से एम० ए० (प्रथम वर्ष)। माता-पिता गुरुकुलों के स्नातक, पिता-पूर्व संसद सदस्य एवं उच्चपदासीन, आर्य समाज में ख्याति प्राप्त। जाति, और प्रान्त की बाधा नही। विवरण के साथ पत्र व्यवहार करें—

—ब्रह्मदत्त स्नातक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, दिल्ली-2

एशियाड सभागार में आर्यसमाज का प्रथम समारोह

२ सितंबर के समारोह के लिए राष्ट्रपति से प्रार्थना

एशियाड ग्राम मे नव- निर्मित भव्य सभागार में देश के उच्चतम सांस्कृतिक और राजनैतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। कभी आर्य समाज का भी कोई कार्यक्रम वहाँ हो पाएगा, यह किसने सोचा था। तालकटोरा स्टेडियम में महात्मा हंसराज दिवस का आयोजन करने के पश्चात् अब प्रादेशिक सभा और डी० ए० वी० कालेज कमेटी ने अपना दो सितम्बर का समारोह इसी शानदार सभागार में मनाने का निश्चय किया है। उस दिन प्रो० वेदव्यास जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उन्हें दस लाख रु. की थैली भेंट की जाएगी। वह राशि आगामी वर्ष डी० ए० वी० शताब्दी समारोह के विविध कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए होगी।

इसी दिन मुख्य अतिथि को शहीद परिवार सहायता निधि मे एकत्रित राशि भी भेंट की जाएगी।

इस समारोह के लिए सूचना मन्त्री श्री हरकिशन लाल भगत, विदेश राज्य मन्त्री श्री रामनिवास मिर्धा, डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती और श्री रामगोपाल शालवाले की स्वीकृति आ चुकी है। [समारोह में मुख्य अतिथि बनने के लिए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी से प्रार्थना की जा रही है।]

करनाल में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के लिये अपील

11 अगस्त सांय 4 बजे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे एक विशेष बैठक हुई जिसमें 1985-86 मे होने वाली डी० ए० वी० कालेज कमेटी की शताब्दी पर विचार विमर्श हुआ। करनाल से डा० गणेशदास जी व प्रो० वेदसुमन आदि पधारे थे। उन्होंने करनाल में 5-6-7 अक्तूबर को महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी को सफल बनाने के लिए दिल्ली निवासियों से ऋषि लंगर में एवं अन्य प्रकार से सहयोग देने की प्रार्थना की। श्री रामभज बत्रा, श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया, श्री मुलखराज भल्ला, श्री हरवंश सिंह खेर, श्रीमती सरला मेहता इत्यादि ने तन-मन-धन से पूरा-पूरा सहयोग देने का वचन दिया। दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओ, प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ताओ से प्रार्थना है कि वे ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल चावल, घी इत्यादि सामग्री तथा राशि नकद, चेक, बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भिजवाने की कृपा करें।

दरबारीलाल	रामनाथ सहगल	रामलाल मलिक
कार्यकर्त्ता-प्रधान	सभा-मन्त्री	व्यवस्थापक "आर्य जगत्"
आर्य प्रादेशिक—प्रतिनिधि सभा,		
चौ० प्रताप सिंह	डॉ० गणेशदास आर्य	श्रीमती सरला मेहता
प्रधान-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा-हरियाणा	मन्त्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा-हरियाणा	प्रधान प्रान्तीय महिला सभा

ऋग्वेद भाष्य खण्ड ३ अंग्रेजी में प्रकाशित

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेद भाष्य के स्वामी सत्यानन्द सरस्वती कृत अंग्रेजी अनुवाद का तृतीय खण्ड टिप्पणी सहित (सम्पादक-पंडित ब्रह्मदत्त स्नातक एम० ए०) श्रावणी पर प्रकाशित हो गया है। इसके पहले 2 खण्ड पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं।

सजिल्द 816 पृष्ठों की इस पुस्तकों का मूल्य मात्र 65) रुपए। प्रथम एवं द्वितीय खण्डों का मूल्य 80) मात्र।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री कृत अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद दो खण्डों में मूल्य 130) मे हाल में प्रकाशित हो चुका है।

वेद प्रेमियों एवं संस्थाओं को रियायत।

पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—110002

—शाहपुरा (राजस्थान) : आर्यसमाज शाहपुरा, जिला भीलवाड़ा (राजस्थान) के निम्नपदाधिकारी चुने गये : आजीवन संरक्षक—राजाधिराज श्री सुदर्शन देव जी, आर्य नरेश; प्रधान श्री मार्गसिंह त्यागी; उपप्रधान—श्री राम[illegible] देवी; मंत्री—श्री अम्बालाल आर्य; उप-मंत्री—श्री बंशीलाल तोषी व श्री सत्यनारायण तोतमिया; कोषाध्यक्ष—श्री रामदयाल जी डीपा; पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामजीदास जी डीपा।

मुद्रक प्रकाशक - श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली में [illegible] नई दिल्ली से प्रकाशित। स्थान—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ३६, रविवार, २ सितम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | भाद्रपद कृष्णा १४, २०४१ वि०

डी० ए० वी० शताब्दी कार्यक्रमों की रूपरेखा

ग्राम विकास, हरिजनोत्थान और प्रकाशन आदि के लिए ५ करोड़ रु० एकत्र करने का निश्चय

डी० ए० वी० कालिज ट्रस्ट तथा प्रबंधकर्त्री समिति का पंजीकरण 1885 के उत्तरार्ध में हुआ। पहली डी०ए०वी० संस्था (डी०ए०वी० हाई स्कूल) लाहौर में 1 जून 1886 को अस्तित्व में आई जिसके मानद प्राचार्य थे लाला हंसराज। इस प्रकार 1985-86 में हम अपनी प्रथम शताब्दी पूरी कर रहे हैं। सभी डी०ए० वी० संस्थाएं गहन आत्म-विश्वास और महती आकांक्षा के साथ उस स्मरणीय अवसर की प्रतीक्षा में हैं।

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने आगामी 2 वर्षों की अवधि में वित्तीय एव अन्य संसाधनों की उपलब्धि के उच्च लक्ष्य निर्धारित किये हैं। अपनी पिछली उपलब्धियों के मूल्यांकन के साथ ही पिछले एक शतक मे समाज किस संकल्प को पूरा नहीं कर पाया, उसके विश्लेषण और परीक्षण का भी यह एक उपयुक्त अवसर होगा। नवम्बर 1985 से 16 अप्रैल 1986 की अवधि मे दिल्ली के बाहर की डी०ए०वी० संस्थाएं स्थानीय स्तर पर शताब्दी समारोह मनायेंगी। शताब्दी के केन्द्रीय कार्यक्रम का आयोजन 16 अप्रैल 1986 मे महात्मा हंसराज के जन्म-दिवस से दिल्ली में प्रारम्भ होकर 1 जून 1986 को समापन होगा

उग्रवादियों का हमला

इसमें संशय नहीं कि शताब्दी समारोह की गौरवपूर्ण सफलता के लिये भारत का सारा डी० ए० वी० समुदाय सोत्साह अपना सक्रिय योग देगा। तथापि समस्त डी० ए० वी० संस्थाओं की प्राचीनतम और बृहत्तम संस्थाओं की भूमि पंजाब की जटिल समस्या आज हमारे सामने है। समिति सर्वदा सक्रिय राजनीति से दूर रहती आयी है। उसी नीति के अनुसार डी० ए० वी० संस्थाओं ने पंजाब के वर्तमान अकाली आंदोलन में कोई भाग नही लिया फिर भी डी० ए० वी० संस्थाओं की सामान्य गतिविधियों मे भी अड़चनें पैदा की गईं। स्वर्ण मदिर में सैनिक कारंवाई के तीन महीने पूर्व हमारी संस्थाओं पर उग्रवादियों के तीन आक्रमण हुए: एम० जी०, डी० ए० वी० कालेज भटिंडा पर आधी रात को हमला हुआ तथा पर्याप्त रिकार्डों के साथ दो कमरे अग्निकाण्ड मे नष्ट हो गए। उग्रवादियों ने बटाला स्थित एस० एल०वी० बावा डी० ए० वी० कालेज के प्राचार्य के आवास पर भी हमला किया। सौभाग्य से, प्राचार्य डी० वी० पसरीचा संस्था के कार्य से दिल्ली आये हुए थे। अपना इरादा पूरा न कर पाने की खीझ में उग्रवादियों ने महाविद्यालय के दो कमरों और अभिलेखों में आग लगा दी। कालिज के भवनों को जलाने के दृढ निश्चय से काफी मात्रा में मिट्टी का तेल लेकर तीन आतंकवादी डी० ए० वी० कालेज जालधर पहुचे। मुख्य प्रवेश द्वार पर नियुक्त चौकीदार को धमकी दी कि शोर मचाया, तो गोली मार दी जायेगी। धमकी न मानने के फलस्वरूप उसे दो गोलियाँ मार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। सौभाग्य से उसके प्राण बच गये सशस्त्र आतकवादियो के सामने उसकी निडरता ने महाविद्यालय को विनाश से बचा लिया। जालंधर, डी० ए० वी० संस्थाओं में सबसे प्राचीन और बड़ा है। डी० ए० वी० विद्यालय कादियां पर भी हमला हुआ और सस्था को आग लगाने की कोशिश की गयी।

इस प्रकार निःसंदिग्ध रूप से स्पष्ट हो जाता है कि सिख आतन्कवादियो ने डी० ए० वी० संस्थाओ को खास तौर पर लक्ष्य बनाया था। और यह तब, जबकि डी०ए०वी० समिति ने प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रूप में वर्तमान संघर्ष मे कोई भाग नही लिया। पजाब और चंडीगढ की हमारी सस्थाओ में सिख छात्र और अध्यापक पर्याप्त संख्या मे है। उन्हे सभी प्रकार की सुविधाये और अवसर देने मे कोई भेदभाव नही बरता जाता। यह एक कटु सत्य है कि सन्त लोगोवाल जैसे उदारवादी अकाली नेता ने भी आतंकवादियों की बर्बरताओं के विरुद्ध आवाज नहीं उठायी। उनके मौन का इसके अतिरिक्त और अर्थ भी क्या लगाया जा सकता है कि इन गर्हित गतिविधियो में अकाली नेताओं का अन्ततः प्रच्छन्न समर्थन तो था ही।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रो० वेद व्यास जी शतायु हों।

2 सितम्बर को एशियाई खेल गांव सिरी फोर्ट के सभागार मे डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान आदरणीय प्रो० वेद व्यास जी का उनके 82 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे भव्य अभिनन्दन समारोह हो रहा है। इस अवसर पर हम "आर्य जगत्" की ओर से और उसके समस्त पाठको की ओर से उनके शतायु होने की कामना करते है। परम पिता से प्रार्थना है कि चिरकाल तक आर्य समाज को और "आर्य जगत्" को उनका स्नेह पूर्ण आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे।

प्रधान संपादक—स्वामी सरस्वती   सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार   व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

आँधियों के साथ हे अग्नि, तुम आओ

—डा० रामनाथ वेदालंकार—

अभी उस दिन नगर में आग लग गई। क्षण भर में सब कुछ स्वाहा हो गया। जिसने देखा उसके मुख पर यही था कि बहुत बुरा हुआ, करोड़ों की हानि हो गई। पर यह क्या? मैं तो अग्नि का निमन्त्रण देकर बुला रहा हूं, और वह भी अकेले अग्नि को नहीं, किन्तु आँधियों के साथ।

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्रहूयसे।

मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ऋग् 1.19.1

—"आँधियों के साथ हे अग्नि, तुम आओ, मेरे सुन्दर यज्ञ में। गौओं की रक्षा के लिए मैं तुम्हें पुकार रहा हूं।" मेरे पास गौएं है, मैं उनका गोपाल हूं। उनकी रक्षा करनी है, उन्हें खाई-खड्डे में गिरने से बचाना है। पर आँधियों के साथ अग्नि आयेगी तो गौओं की रक्षा कैसे होगी? वे झुलस नहीं जायेंगी क्या? नहीं, यहां तो सभी कुछ विलक्षण है। ये आँधियां सामान्य आँधियां नहीं हैं, अग्नि सामान्य अग्नि नहीं है, यज्ञ भी सामान्य यज्ञ नहीं है, और गौएं भी सामान्य गौएं नहीं हैं।

यह मेरा जीवन ही यज्ञ है, जैसा कि उपनिषत्कार ने कहा है—"पुरुषो वै यज्ञः"। उसे हिंसारहित होना चाहिए, यही सूचित करने के लिए उसका नाम "अध्वर" है। मेरे इस यज्ञ की गौएं हैं मेरी इन्द्रियां। वे अच्छे-बुरे सब प्रकार के सांसारिक विषय रूपी चारागाहों की ओर भागती हैं। कुविषयों की ओर जाने से उन्हें रोकना है, क्योंकि उस मार्ग में विनाश है, खाई-खड्डे हैं, जिनमें गिरकर वे लूली-लंगड़ी हो जायेंगी, निस्तेज हो जायेंगी। इसके लिए मैं "अग्नि" को पुकारता हूं। अग्नि हैं तेजोमय प्रभु। वे आकर अपने तेज की एक चिनगारी मेरे अन्तःकरण में गिरा दें, उसे ज्वाला का रूप दे लूंगा मैं, अपनी प्राण-रूप आँधियों में। जब वह अग्नि प्रज्वलित होगी तब उसके आलोक से सब इन्द्रियां आलोकित हो उठेंगी और कुमार्ग में जाने से बच जायेंगी। इसी लिए मैं पुकार रहा हूं—हे अग्नि, तुम प्राणों की आँधियों के साथ मेरे जीवन यज्ञ में आओ।

समाज-संगठन भी एक यज्ञ है। उसे भी "अध्वर" अर्थात् हिंसारहित होना चाहिए। यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की हिंसा में या उसे हानि पहुंचाने में लगा रहेगा तो समाज की उन्नति कैसे हो सकेगी। समाज की बहुत सी गौएं हैं जिनकी रक्षा करनी अभिप्रेत है। "गौ" शब्द सब शुभ, पवित्र, स्पृहणीय वस्तुओं, तथा शक्तियों का प्रतीक है। वेदवाणी शिक्षा, बुद्धि, विवेकशीलता, सचाई, ईमानदारी, त्यागमयता, धार्मिकता प्रेमभावना, सहृदयता, सज्जनता, क्षमाशीलता, धीरता, पवित्रता, समृद्धि आदि की गौएं समाज में रहती हैं। इन गौओं से समाज रूपी यज्ञ को पोषण तथा बल प्राप्त होता है। इन गौओं का दूध और घृत समाज को प्राप्त न हो तो समाज दुर्बल, अशक्त और निस्सार हो जाए। पर अनेक विरोधी शक्तियां इन गौओं को समाज से छीनना चाहती हैं। वे विरोधी शक्तियां हैं स्वार्थपरता, चोरी, भ्रष्टाचारिता, द्वेष-भावना आदि। इन विरोधी शक्तियों को परास्त करने तथा गौओं की रक्षा करने के लिए आवश्यकता है अग्नि तथा आँधी की। समाज के सदस्यों के अन्दर दृढ़ संकल्पना, उत्साह और प्रबल भावना की अग्नि प्रदीप्त होनी चाहिए। साथ ही आँधी भी आनी चाहिए। आज समाज से चोरबाजारी भ्रष्टाचार आदि दूर इस कारण नहीं हो रहे हैं क्योंकि उनके विरोध की आँधी नहीं उठ रही। आँधी उठनी चाहिए इस बात की कि इन दुर्गुणों को हमें समाज से समाप्त करना है और समाज की जो पूर्वोक्त गौएं हैं, उनकी रक्षा करनी है। जब आँधी उठेगी, वातावरण वैसा बनेगा तब प्रत्येक व्यक्ति के हृदय और वाणी में इन त्रुटियों को समाप्त करने की ही बात होगी। उस समय इन बुराइयों को करने का किसी का साहस ही नहीं होगा। इसलिए मैं पुकारता हूं-हे अग्नि! समाजयज्ञ की गौओं की रक्षा के लिए तुम आओ, आँधियों के साथ आओ।

तीसरे, राष्ट्र भी एक यज्ञ है। वह भी "अध्वर" है क्योंकि उसका लक्ष्य किसी की हिंसा करना या हानि पहुंचाना नहीं है। उसकी अनेक भूमियां ही गौएं है, जिनकी आक्रामक शत्रु से रक्षा अभीष्ट है। इसके लिए भी "अग्नि" तथा "आंधियों" की आवश्यकता है। आंधी या "मरुत" वीर सैनिक हैं, क्योंकि वे आँधियों के समान शत्रु पर टूटते हैं। "अग्नि" है सेनापति—अग्निर्वै देवानां सेनानीः। अतः हम राष्ट्रभूमि रूपी गौओं की रक्षार्थ सैनिक रूपी झंझावातों के साथ सेनानी रूपी अग्नि को पुकारते हैं -

ये महो रजसो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुह :

मरुद्भिरग्न आ गहि ऋग् ॥ 1.18.3

—जो विशाल भूमण्डल के कण-कण की जानकारी रखते हैं, सबके साक्षात् देव हैं, राष्ट्र से द्रोह या विश्वासघात न करने वाले हैं, उन वीर सैनिकों के साथ हे सेनानी, तुम आओ।

य उग्रा अर्कमानृचुरनाधृष्टास ओजसा।

मरुभिरग्न आ गहि ऋग् ॥ 1.19.5

—जो उग्र हैं, "सूर्य" को आदर्श रूप में पूजते हैं, जो ओज के कारण अपराजेय हैं, उन वीर सैनिकों के साथ हे सेनानी, तुम आओ।

ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः।

मरुद्भिरग्न आ गहि ऋग् ॥ 1.19.5

—जो शुभ-चरित्र हैं, घोर रूप वाले हैं, हिंसक शत्रु को खा जाने वाले हैं, उन वीर सैनिकों के साथ हे सेनानी, तुम आओ।

आँधियों के साथ हे अग्नि, तुम आओ। तुम्हें हम अपने जीवन में, तुम्हें हम अपने समाज में, तुम्हें हम अपने राष्ट्र में उत्सुकता के साथ पुकार रहे हैं।

पता—1.116 फूलबाग पंतनगर (नैनीताल)

शुद्ध सस्वर वेद पाठ एवं मेरा अनुभव

—रामस्वरूप बेली सिद्धान्त शास्त्री—

कई वर्ष पूर्व आर्य समाज मन्दिर शाहपुरा के तत्वावधान में पं० वीर सेन जी वेदश्रमी इन्दौर वालों के द्वारा एक शुद्ध एवं सस्वर वेदपाठ शिक्षण शिविर का आयोजन रखा गया था। उसमें मेरे अतिरिक्त समाज के कई सदस्यों ने शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् भी स्थानीय पं० हरिश्चन्द्र जी प्रज्ञाचक्षु वेदाचार्य के संसर्ग में आकर वेदाध्ययन करते रहे। एवं उन्हीं दिनों स्वामी मेधार्थी जी ने तो मुझे वेदपाठी तक की उपाधि प्रदान कर दी। फलस्वरूप मेरा उत्साह बढ़ गया और मैं स्वयं अपने को शुद्ध वेदपाठ करने वाला समझने लगा एवं समाज के सदस्य भी मेरी प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

लगभग 15 वर्ष पूर्व मैंने अपने घर पर पं० वीर सेन जी वेदश्रमी के आचार्यत्व में "श्री यज्ञ" का आयोजन किया। उसका प्रत्यक्ष शुभ फल मुझे उन्हीं दिनों प्राप्त हुआ था। अब मेरी इच्छा हुई कि मेरी षष्टि-पूर्ति के उपलक्ष में एक विशेष यज्ञ का आयोजन करूं। इसी अभिलाषा को लेकर मैं दिनांक—15 जुलाई को इन्दौर पहुंचा एवं पं० वीर सेन जी के समक्ष अपनी इच्छा प्रकट की तो सर्व प्रथम वेदश्रमी जी ने मुझे गायत्री मंत्र सुनाने के लिये कहा।

मैंने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया। फिर इसी मंत्र को उन्होंने ध्यान-पूर्वक सुनाने को कहा। मुझे केवल इसी मंत्र में जो अनेक प्रकार से उच्चारणदोष या अशुद्धियां मेरी हो रही थीं, वेदश्रमी जी ने बारम्बार सुधारा। मैं स्वयं अपने गायत्री मंत्र के उच्चारण को शुद्ध समझता था। मुझे यह भी आश्चर्य हुआ कि मैंने अपने गत काल में 'सिद्धान्त कौमुदी' पढ़ी है एवं संस्कृत भाषा का भी अभ्यास किया है, तो भी अशुद्धियां हैं। अतः मैंने निश्चय किया कि कम से कम दैनिक प्रयोग में आने वाले संध्या एवं हवन मंत्रों का तो शुद्ध पाठ पुनः सीखना ही चाहिये। इसी उद्देश्य को लेकर मैं 1 सप्ताह इन्दौर ठहरा एवं नित्य प्रति 3-4 घंटा पंडित जी के सान्निध्य में बैठ कर शुद्धपाठ सीखना प्रारंभ किया तो सहसा मुझे भर्तृहरि का यह श्लोक स्मरण हो आया :

कि यदा किञ्चोहं......ध्यपगतः ॥

इस सब स्थिति को अनुभव करके मुझे यह अत्यावश्यक प्रतीत हुआ कि दैनिक व्यवहार में आने वाले मंत्रों के शुद्ध एवं सस्वर अभ्यास के लिये स्थान स्थान पर शिविरों का आयोजन श्री पं० वीर सेन जी वेदश्रमी के सान्निध्य में होना चाहिए। यह कार्य सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय सभाएं, आर्य संस्थाएं एवं प्रमुख आर्य समाजों को अवश्य करना चाहिए।

शुद्ध एवं सस्वर मंत्र-पाठ के लिये सभी ऋषिमुनियों ने स्पष्ट लिखा है और अशुद्ध मंत्र तथा स्वर-दोष युक्त मंत्र-पाठ की हानियां भी बताई हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सौवर, सत्यार्थ प्रकाश एवं संस्कार विधि में शुद्ध एवं सस्वर मंत्र-पाठ का ही प्रतिपादन किया है। अतः आर्य जनों को यह कार्य अवश्य अविलम्ब करना चाहिये।

यहां इन्दौर में पं० वेदश्रमी जी ने शुद्ध एवं सस्वर मंत्रों के अभ्यास के लिये जो "अभ्यास कैसेट" तैयार किये हैं वे भी बहुत उपयोगी हैं। उनके द्वारा घर बैठे सस्वर एवं शुद्ध मंत्राभ्यास में बहुत प्रगति हो सकती है।

पता—आर्य समाज शाहपुरा, जि० भीलवाड़ा (राज०)

सुभाषित

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शससि ।
परेहि न त्वा कामये वृक्षात् वनानि सचर ।
गृहेषु गोषु मे मन ॥

अथर्व ६/४५/१

हे मन मे उठने वाले पाप ! दूर हो जा । लुभावने दृश्य दिखाकर मुझ पाप की ओर क्यो प्रवृत्त करता है ? परे हट निजन वनो को भाग जा । प्रिय पारिवारिक जनो मे गौ आदि पशुओ मे तथा वेदवाणी मे मेरा मन लगा रहे ।

सम्पादकीयम्

राम की राम से भिड़न्त

37 साल के बाद इस बार 15 अगस्त के स्वतन्त्रता दिवस पर आन्ध्र प्रदेश में एक ऐसा नाटक हुआ जिसे देखकर सारा देश स्तब्ध रह गया । इतिहास मे राम और रावण का युद्ध विख्यात है । विज्ञ लोग कहा करते हैं— राम रावणयार युद्ध राम रावणयोरिव —अर्थात् राम और रावण के युद्ध की तुलना किसी और युद्ध से नहीं की जा सकती । परन्तु इस बार के सघष मे राम और रावण नही थे— दनो ओर राम ही राम थे । यह भिडन्त भी अपने आप मे अनुपम थी । उसकी तुलना शायद अन्यत्र कहीं नही मिलेगी । एक तरफ थे आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल रामलाल और दूसरी ओर थे आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री रामाराव । दनों ओर राम ही राम । बेचारे रामाराव अपना आपरेशन करवाने अमरीका क्या गये कि भाग्य नगर की छलिया राजनीति ने उनका भाग्य ही बदल दिया ।

रामाराव के मन्त्री मण्डल में मुख्यमन्त्री के पश्चात प्रमुखता प्राप्त वित्तमन्त्री भास्कर राव ने रामलाल की सेवा मे हाजिर होकर अपने साथ 91 विधायक होने का दावा पेश किया । काग्रेस विधायक दल के 57 सदस्यो ने जो रामाराव को अपदस्थ करने वाले किसी भी व्यक्ति का समथन करने को तैयार बैठे थे साथ मे अपना कन्धा लगाया और 15 अन्य विधायको ने इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने के लिए सहष अपने सहयोग का हाथ बढाया । इस प्रकार 163 की सख्या पूरी होते ही राज्यपाल ने अपना फतवा दे दिया कि भास्कर राव को बहुमत प्राप्त है इसलिए उनको मुख्य मंत्री बनाया जाता है । जब लका के इस विभीषण काण्ड का रामाराव को पता लगा वे भी अपने समथक विधायको की सेना लेकर राजभवन पहुचे । परन्तु राज्यपाल रामलाल क्योकि भास्कर राव के दावे पर आश्वस्त थे इसलिए उन्होंने रामाराव की बात पर कान नहीं दिया । रामाराव ने कितना ही कहा कि बहुमत का निणय करने के लिए असली स्थान विधान सभा है आप दो दिन के अन्दर ही विधान सभा का अधिवेशन बुला लीजिए और उसमें बहुमत का निश्चय करके दूध का दूध और पानी का पानी कर लीजिए । परन्तु बादशाह के प्रति अपनी वफादारी मे अन्य सब दर बारियो के रिकाड को तोडने वाले रामलाल ने रामाराव और उनके समथको को गिरफ्तार कर लिया और रामाराव को बर्खास्त करके भास्कर राव को मुख्यमन्त्री पद की शपथ दिलवा दी ।

आन्ध्र प्रदेश मे पहली बार काग्रेस को धूल चटाने वाले तेलगुदेशम पार्टी के अभिनेता से नायक और सूत्रधार बने रामाराव जो विभिन्न देवताओ और अवतारो का अभिनय करते करते अपने आपको किसी अवतारी पुरुष से कम नही समझते इतनी आसानी से अपनी पीठ जमीन से क्यों लगने देते । अपनी नाटकीय कुशलता का उन्होने यहां भी परिचय दिया और आन्ध्र प्रदेश के रण क्षेत्र से ह्वील चेयर पर पलायनकर भारत की राजधानी मे आकर राष्ट्रपति के सामने गुहार लगाई । वे अपने साथ 162 विधायकों को लाये थे जिनमे से हरेक के हाथ में उसका परिचय पत्र भी था । उन्होने राष्ट्रपति से आग्रह किया कि इन विधायकों की सख्या गिनकर अपनी तसल्ली कर लीजिये और फिर देखिए कि आपके एक सामन्त सेनापति ने किस प्रकार कमर के नीचे वार करके कुश्ती के नियमो का उल्लघन किया है । परन्तु राष्ट्रपति ने गिनने से इन्कार कर दिया । लोकसभा में प्रधान मन्त्री ने भी बडी मासूमियत से कहा कि मुझ तो इस सारे काण्ड का पता ही अखबारों से लगा इसलिए मेरे हाथ तो डिटोल से धुले हुए हैं । कौन अल्प मत में और कौन बहुमत में—इसका फैसला आन्ध्रप्रदेश की विधान सभा ही करेगी ।

जब रामाराव दिल्ली के दरबार में अपने समर्थक विधायकों का प्रदर्शन कर रहे थे, तब उसी समय भास्कर राव ने भी आन्ध्रप्रदेश में राज्यपाल के सामने अपने समर्थक 161 विधायक उपस्थित कर दिये । इस प्रकार रामाराव और भास्कर राव दोनों के समर्थकों की मिलाकर संख्या 325 बैठती है, जबकि राज्य सभा में विधायक कुल 295 हैं । ये तीस अतिरिक्त विधायक कहा से कसे आ गये इसका जवाब न भास्कर राव के पास है न रामाराव के पास । इसका जवाब सिनेमा घर मे पद पर दिखाई जाने वाली फिल्मे ही दे सकती हैं । आकाश मे छिपे किसी देवता ने अपना हाथ हिलाकर जादू का मन्त्र पढा और 30 नये विधायक सशरीर धराधाम पर भेज दिये और उनको यह चमत्कारी शक्ति प्रदान कर दी कि तुम एक ही समय दिल्ली और हैदराबाद दोनो जगह उपस्थित रह सकते हो । जब सिने-लोक मे ऐसे चमत्कार रोज होते हैं तो एक चमत्कार बाहर के लोक मे भी क्यो न हो !

आन्ध्र प्रदेश के इस नाटक से विपक्षी दलो मे जान पड गई । गरम लू से झुलसे कुकुरमुत्तो पर जसे बारिश के छीटे पडने से रौनक आ जाती है वसे ही सब विपक्षी दल तनकर खड हो गये और दिल्ली के रामलीला मदान मे विशाल सभा करके उन्होने पुन सन 1975 का दृश्य उपस्थित कर दिया । उस समय के हीरो बाबू जयप्रकाश थे और इस समय के हीरो नतारा रामाराव । परन्तु दोनो नायको मे एक विशेष अन्तर भी है । जयप्रकाश सत्ता के आकाक्षी नही थे । वे तो काग्रेस के विकल्प के रूप में भ्रष्टाचार मुक्त समग्र क्रान्ति का जीवन दशन लेकर जनता जनादन के समक्ष उपस्थित थे । अब काग्रेस के विकल्प के लिए न तो वसे सिद्धान्तो की कहीं चर्चा थी और न विपक्षी दल का कोई नेता सत्ता के मोहपाश से मुक्त था । फिर भी इस सारे नाटकीय काण्ड ने बिजली का एक झटका तो दिया । बिजली का झटका हमेशा क्षण स्थायी होता है । उस एक क्षण मे ही वह आर या पार करने की सामथ्य रखता है । वह क्षण बीत जाने के बाद झटके की केवल त्रासदायी स्मृति ही शेष रह जाती है । इस झटके को विपक्षी दल कितना स्थायित्व प्रदान कर पाते हैं और भविष्य मे कितना भुना पाते हैं यह भविष्य ही बतायेगा ।

हम शुरू से ही अनुभव कर रहे थे कि इस नियम विरुद्ध खेल मे रैफरी के पक्ष पात से मिलने वाली जीत पर खेल सही सही जम गया तो वह वाह और अगर खेल बिगड गया तो बेचारे राज्यपाल की खर नहीं । तुरन्त उसी को बलि का बकरा बनना पडगा । वही हुआ भी । जसा सोचा था वैसा खेल जम नही पाया । और चौहान कुल दीपक लकडी चोरी के काण्ड मे हिमाचल के मुख्यमन्त्री पद से त्यागपत्र देने को बाध्य होकर आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल का पद प्राप्त करने वाले श्री रामलाल को इस पद से भी इस्तीफा देकर अपनी वफादारी की कीमत चुकानी पडी । इससे भी क्या फक पडता है । नीतिकार कह गये हैं— कुर्वन्नपि व्यलीकानि य प्रिय प्रिय एव स — विपरीत आचरण करने पर भी जो प्रिय है वह तो प्रिय रहेगा ही । ऐसी वफादारी से तो प्रिय पात्र होने की पात्रता और बढती ही है घटती नही ।

राम और राम की इस भिडन्त मे पहले एक राम हारे थे तो अब उसी राम ने दूसरे राम को पटकनी खिला दी । एक भिडन्त समाप्त हुई । इसका अगला सीन आन्ध्र प्रदेश की विधान सभा मे देखिए । वह शो कब होगा इसकी तारीख अभी घोषित नही हुई है ।

दो रामो की इस भिडन्त में बेमौत मारा गया बेचारा लोकतन्त्र । किस तरह रामाराव के चरणो मे लोटने वाले विधायको न एक रात मे ही पासा पलट के भास्कर राव का समथन शुरू कर दिया यह देखकर रामाराव भी चौंक गये । अब दनो ओर से पूरी किलेबन्दी और घराबन्दी है । एक दसरे के किले मे सध लगाने की कोशिश की जा रही है । देखना यह है कि विधायक गण लोकतन्त्र की गरिमा स्थापित करने के लिए अपने चारित्रिक आदश का मानदण्ड प्रस्तुत करगे या 15 0 लाख रुपए की अनायास प्राप्त होने वाली राशि से जन्म भर ऐश करने का रास्ता अपनाकर आया राम गया राम के अभियान मे नया आयाम जोडगे ।

चार अधिष्ठाता चाहिये

गुरुकुल कांगडी विद्यालय के छात्रावास के लिए चार अधिष्ठाताओं की आवश्यकता है जो सेवा निवृत्त किन्तु स्वस्थ हों । आयु विचारो का होना आवश्यक है । प्रार्थी व्यक्तिगत रूप से भट करें अथवा पत्र व्यवहार कर ।—सत्यकाम विद्यालंकार आचार्य गुरुकुल कांगडी (हरिद्वार)

डी. ए. वी. कार्यक्रम......

(पृष्ठ १ का शेष)

पजाब व चडीगढ़ के कानून व्यवस्था-अधिकारियों की सहायता हेतु केन्द्र ने सेना भेजने का कडा कदम उठाया उससे न केवल विषम परिस्थिति काबू मे आयी, बल्कि स्थिति सामान्य होने की भी आशा हो गयी है। फिर भी भविष्य के बारे मे कुछ कहना कठिन है। श्रीनगर से भी गभीर समाचार मिले। सिखों ने बडी सख्या मे पाक समर्थक तत्वो के साथ मिलकर आर्य समाज मन्दिर और वजीर बाग स्थित देवकी आर्य कन्या विद्यालय को जलाकर लगभग 30 लाख रुपये की क्षति पहुचायी। आय और डी०ए० वी० समुदाय के लिये यह एक गभीर चेतावनी है। दोनो पक्ष यदि सद्भावना से काम लें, तो हिन्दुओ और सिखो के पारस्परिक सबध पुन पूर्ववत् सामान्य होना कोई बडी बात नही। यदि ऐसा नही होता, तो आर्य समाज और डी० ए० वी० सगठनो को अपनी और अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए ठोस व्यवस्था करना आवश्यक हो सकता है। यदि अन्तत यह अग्नि परीक्षा उन पर थोपी ही गयी तो हमे पूरा विश्वास है कि इस बर्बरता से भी वे सफलता से निबट सकेंगे। वैसे, हालात के वैसा मोड लेने से निश्चित है कि शताब्दी समारोहो की तैयारियो को काफी धक्का पहुचेगा।

५ करोड रु० का लक्ष्य

समिति ने आगामी दो वर्षों की अवधि मे शताब्दी कोष के लिए 5 करोड रु० एकत्र करने का लक्ष्य रखा है। लक्ष्य ऊंचा है। इस लक्ष्य तक पहुचने के लिए समिति के सदस्यो और डी० ए० वी० सस्थाओ के प्रमुखो को अपनी पूरी ताकत लगानी पडेगी। नकोदर, यमुनानगर, जालन्धर और चडीगढ डी०ए०वी० सस्थाओ के कई दल कोष सग्रह के निमित्त विदेशो में बसे भू० पू० छात्रों और आर्य समाजियो से सम्पर्क करने के लिये विदेश यात्रा की योजना बना रहे हैं। उद्योग और व्यापार मे लगे अपने सहयोगियो के साथ ही छात्रो के अभिभावको से भी दान सग्रह का प्रयास किया जायेगा।

भू० पू० डी० ए० वी० छात्रो की निर्देशिका

डी० ए० वी० के भूतपूर्व छात्रो की एक निर्देशिका के प्रकाशन की भी योजना है। प्राचार्य बी० एस० बहल और डा० बी० पी० सेठ को सस्था प्रमुखो के सहयोग से यह कठिन कार्य पूरा करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। ऐसी निर्देशिका तैयार करने—खासतौर पर उन लोगों के के सबध में जो विदेशों में बस गये हैं, वस्तुत एक कठिन कार्य है। फिर भी, निर्देशिका लगभग एक वर्ष मे प्रकाशित हो जायेगी, और भविष्य मे समय-समय पर इसे सशोधित किया जायेगा। भू० पू० छात्रो से अपनी पूर्व शिक्षण-सस्थाओं के सम्बन्धो की इस उपयोगी-शृ खला को सद्य प्रकाशित डी० ए० वी० पत्रिका 'आर्यन हेरिटेज' और भी सुदृढ़ बनायेगी

पब्लिक स्कूलो की माग

गत 5 वर्षो मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो की सख्या तेजी से बढकर 10 से 75 तक हो गयी। इसमे से—कुलाची हसराज माडल स्कूल (अशोक विहार दिल्ली), हसराज माडल स्कूल, (पजाबी बाग नयी दिल्ली), दयानन्द माडल स्कूल (जालधर) जवाहर विद्या मदिर (रांची), डी०ए० वी०पब्लिक स्कूल(बोकारो), डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल (भुवनेश्वर उडीसा), महाराज हरी सिंह ऐग्रीकल्चरल कालेजियट स्कूल (नागवनी, जम्मू) इत्यादि विशाल प्रतिष्ठा प्राप्त पब्लिक स्कूल माने जाते हैं। हमें विश्वास है कि जून 1986 तक इनकी सख्या 100 या इससे भी अधिक तक पहुच जायेगी।

डी ए वी. प्रगति का इतिहास

निम्न पूरक खण्डों सहित, 1895 से 1986 तक की अवधि मे डी० ए० वी० आन्दोलन का इतिहास लिखने की योजना है—

(अ) डी०ए०वी० की मूर्धन्य विभुतियों-महात्मा हसराज, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, प्रि० साई दास, प्रि० दीवान चद, प मेहरचन्द, बख्शी टेकचन्द, ला मेहरचन्द महाजन, बख्शी रामरतन, आ विश्वबन्धु, प भगवतदत्त, डा जी एल दत्त, श्री सूरजभान आदि के सक्षिप्त जीवन वृत्त। इस खण्ड के उत्तरार्ध मे अन्य प्रमुख और समर्पित डी ए वी कार्यकर्ताओ के सम्बन्ध में सक्षिप्त इति वृत्तात्मक टिप्पणियाँ दी जायेंगी।

(ब) डी ए वी कालिज। (स) डी ए वी सहायता-प्राप्त विद्यालय (द) डी ए वी पब्लिक स्कूल। (य) दयानन्द आयुर्वेद महाविद्यालय। (र) डी ए वी तकनीकी सस्थान। (ल)विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-सस्थान और डॉ० स्टर्न वैक प्रतिष्ठान, होशियारपुर, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक और प्राच्यविद्या शोध सस्थान, हसराज महाविद्यालय, दिल्ली तथा ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार। (व) डी० ए० वी० प्रबन्धन विषय। (श) डी० ए० वी० ग्राम विकास सेवा केन्द्र। (स) पूर्वी राज्य और बिहार में आदिवासियो मे शैक्षिक कार्य।

ग्राम विकास सेवा केन्द्र

दो वर्ष पूर्व डी० ए० वी० समिति के अध्यक्ष ने डी० ए० वी० संस्थाओं को इस आशय का एक पत्रक भेजा था कि "देश मे आर्य समाज समाज सेवा सबंधी गतिविधियों में सदा अग्रणी रहा है और आज समाज सेवा क्षेत्र में ग्राम-विकास सर्वाधिक महत्वपूर्ण गतिविधि मानी जाती है, अत डी०ए०वी० सस्थानों को ग्रामों के सर्वांगीण विकास की योजनाओ में उत्साह और स्फूर्ति भरा योगदान करना चाहिए।" गत वर्ष काफी बडे पैमाने पर प्रारंभ किये गये सामाजिक वृक्षारोपण कार्यक्रम में आशिक सफलता मिली है। अध्यक्ष के अनुरोध पर यमुनानगर के डी० ए० वी० बन्धुओं ने अपने क्षेत्र के 30—40 गावो को चिकित्सा-सुविधा सुलभ करने के लिए और दयानन्द प्रसूति चिकित्सालय हेतु एक सर्वसाधन सम्पन्न मबल चिकित्सा-वाहन उपलब्ध कराने का फैसला किया है।

डी० ए० वी० समिति के एक उपाध्यक्ष, मेसर्स राजपाल एण्ड सन्स के श्री विश्वनाथ, ने ग्राम्यांचलों में सेवा केन्द्र प्रारभ करने की जोरदार अपील डी० ए० वी० सगठनो से की है। हमे पूर्ण विश्वास है कि जून 1986 में शताब्दी समारोह समापन तक हम 50 दयानन्द ग्राम विकास केन्द्र स्थापना के निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर सकेंगे। इसके माध्यम से डी०ए० वी० सस्थाओ के समर्पित व्यवस्थापको, अध्यापकों और छात्रो को एक जरूरतमन्द क्षेत्र में अपनी उपयोगी सेवाएं अर्पित करने का स्वर्ण-सुयोग मिलेगा। स्वास्थ्य और योग केन्द्र, चिकित्सकीय सुविधा, बच्चो का व्याधि-सरक्षण, प्रौढ़-शिक्षा, सामाजिक वानिकी और कृषि-प्रदर्शन फार्म जैसी सुविधाए जुटाने के लिए यह एक व्यापक कार्यक्रम होगा।

हरिजनोत्थान

महर्षि दयानन्द ने अस्पृश्यता को वेद व प्राचीन आर्य मान्यताओं के विरुद्ध बताकर इसकी तीव्र भर्त्सना की है। महात्मा गाधी ने इस अभूतपूर्व अवदान को भारतीय पुनर्जागरण की दिशा में महर्षि का महानतम योगदान ठीक ही निरूपित किया है। 1875 से लेकर 40 वर्षों से ऊपर की अवधि तक अकेले आर्य समाज ने ही अस्पृश्यों की, जिन्हें महात्मा गाधी ने हरिजन सज्ञा दी—समुन्नति का काम किया। आर्य समाज ने अपनी शिक्षा संस्थाओं और अन्य सस्थाओं में उनका खुले दिल से स्वागत किया। फलत, हरिजन समुदाय ने एक दर्जन से अधिक प्राचीन भारतीय सस्कृति और आर्य धर्म के ऐसे पूज्य संन्यासी/उपदेशक समाज को दिये जिनकी गिनती मूर्धन्य विभूतियों में की जाती है। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हरिजनोत्थान जिस उत्साह और लगन से प्रारभ हुआ था, उसमे क्रमश गिरावट आयी है।

डी० ए० वी० संगठन ने इस चुनौती को स्वीकार किया है और कमजोर वर्ग के मेधावी छात्रों को अपनी शिक्षण संस्थाओं, विशेष रूप से पब्लिक स्कूलो में, अवसर देने का फैसला किया है। उन्हें ऊंचे स्तर की निःशुल्क शिक्षा देने के साथ ही अन्य सुविधाएं देने की व्यवस्था भी की जा रही है। सारे भारत में जून 1986 तक कम से कम 1000 हरिजन बालक व बालिकाओं का डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों में प्रवेश का लक्ष्य रखा गया है। यह सुविधा उनके लिये भविष्य में तब तक सुनिश्चित रहेगी जब तक कि उपयोगी नागरिक के रूप में जीवन में सुस्थापित नहीं हो जाते। इसके अलावा प्रतिभाशाली हरिजन छात्रों को अलग से छात्रवृत्ति देने की भी योजना है।

डी० ए० वी० पर्यटन विभाग

छात्र के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास शिक्षा का उद्देश्य है। केवल स्कूली शिक्षा ही इसकी सीमा नहीं है। जिस देश के वे भावी नागरिक बनने जा रहे हैं, उसकी उन्हें पूरी जानकारी होनी चाहिये। पर्यटन इसकी सर्वोत्कृष्ट शिक्षा है। इस विशाल देश की सस्कृति को सुदृढ़ बनाने तथा विविधता मे एकरूपता की आश्चर्यजनक उपलब्धि के लिये प्राचीन भारत मे तीर्थ-यात्राओ का महत्वपूर्ण स्थान था।

डी० ए० वी० सगठन ने इसी दृष्टि से ग्रीष्मावकाश, दशहरा और शीतकालीन अवकाश पर हिमालय तथा देश के अन्य अचलों की यात्राओं का आयोजन करने के लिये एक नियमित पर्यटन विभाग खोलने का फैसला किया है। देश के विभिन्न भागों से जहां हमारे शिक्षक और छात्रो को इसके द्वारा परिचित होने का मौका मिलेगा, वहीं डी० ए० वी० और अन्य राज्यों के इसके समवर्ती सगठनों का पारस्परिक सम्पर्क भी कायम होगा।

प्रकाशन

महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना मे बुद्धिजीवियों को प्रेरित किया था। इसके 10 सिद्धांतों में से एक "सदा सत्य को ग्रहण और असत्य को छोड़ने को उद्यत रहना चाहिए" हमारी धार्मिक धारणाओ की सशक्त अभिव्यक्ति है। अपनी स्थापना के लगभग 50 वर्ष बाद की अवधि में आर्य समाजियो में बौद्धिक गतिविधि काफी प्रखर रही, जिससे काफी महत्वपूर्ण साहित्य का सृजन सभव हो सका पर इसके बाद इसमें काफी ह्रास हुआ। आज जब हमारे पास ऊचे स्तर की आर्य शिक्षण सस्थाए—गुरुकुल, महाविद्यालय, शोध-सस्थान आदि, मौजूद हैं तो साहित्यिक सृजन और शोध कार्य पिछड़ा हुआ क्यों है? इसका एकमात्र कारण, समाज के नेताओं की इस ओर उदासीनता ही कहा जा सकता है। इस संबंध में श्री के० एम० मुंशी के भारतीय विद्या भवन के गौरवपूर्ण योगदान का दृष्टान्त प्रस्तुत किया जा सकता है।

वेद और भारतीय संस्कृति के सर्वांगीण अध्ययन और शोध को प्रेरित करने की दृष्टि से डी० ए० वी० समिति ने प्रकाशन विभाग खोलने का फैसला किया है। सौभाग्य से हमें राजपाल एंड संस के श्री विश्वनाथ की उपयोगी सहायता इस संबंध में सुलभ है। अगले दो वर्षों में इस दिशा में काफी प्रगति होने की आशा है। अगले 25 वर्षों में डी० ए० वी० संस्थान आर्य संस्कृति सभ्यता और धर्म संबंधी साहित्य को समृद्ध बनाने का भरपूर प्रयास करेंगे।

आचार्य विश्व बंधु की [illegible] [illegible] [illegible]

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति

जहां आज भी सरयू, अयोध्या और तक्षशिला विद्यमान हैं

—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

जहां तक धर्म, भाषा और संस्कृति का सम्बन्ध है, अब से छ: सदी पूर्व तक पूर्वी एशिया के प्राय: सभी देश एवं द्वीप भारत के उसी प्रकार अंग थे, जैसे कलिंग, पाण्ड्य, बंग, सौराष्ट्र और केरल आदि। इन्डोनेशिया, मलेशिया, विएतनाम, कम्बोडिया और सियाम (थाईलैण्ड) आदि में भारतीयों ने अपने अनेक उपनिवेश स्थापित किये, और यहां के— निवासियों को अपने धर्म में दीक्षित कर भारतीय संस्कृति के रंग में रंगा था। इन देशों के राजाओं के नाम भारतीय थे। वे राज्य के कार्य के लिये प्रधानतया आर्य भाषाओं का प्रयोग करते थे, और अपने शिलालेखों को ब्राह्मी व अन्य भारतीय लिपियों में उत्कीर्ण कराते थे, संस्कृत के सैकड़ों अभिलेख इन देशों से उपलब्ध हुए हैं।

इन देशों के प्राय: सभी निवासी शैव, वैष्णव, बौद्ध आदि धर्मों के अनुयायी थे। वहां बहुतसे ऐसे मठ, आश्रम और विहार विद्यमान थे जिनमें वैदिक, पौराणिक तथा बौद्ध साहित्य का पठन-पाठन हुआ करता था। इन देशों के राजाओं तथा सम्भ्रान्त लोगों द्वारा कितने ही मंदिरों और चैत्यों का निर्माण कराया गया था, जिनमें शिव, विष्णु, ब्रह्मा. गणेश, बुद्ध, बोधिसत्व आदि की मूर्तियां प्रतिष्ठापित थीं। इन मन्दिरों व चैत्यो के भग्नावशेष आज भी बड़ी संख्या में इन देशों में विद्यमान हैं। कुछ मन्दिर तो अब भी सुरक्षित दशा में हैं।

इस क्षेत्र में भारतीयों द्वारा अपने उपनिवेश स्थापित करने की प्रक्रिया शुंग—सातवाहन युग में प्रारम्भ हुई थी, और गुप्त साम्राज्य के समय (पाचवी—छठी सदी) तक इसका चरम विकास हो गया था। प्राय: तेरहवी और चौदहवीं सदी तक पूर्वी एशिया के ये भारतीय राज्य कायम रहे, और उनके प्रतापी राजाओं के संरक्षण में शैव, वैष्णव आदि धर्मों तथा भारतीय कला एवं संस्कृति का वहां भली भांति विकास होता रहा।

भारतीय नाम परंपरा

भारत के जिन प्रदेशों से लाकर लोग इस क्षेत्र में बसते थे, अपने नगरों व बस्तियों के नाम वे मातृभूमि के अपने पुराने नगरों व जनपदों के नाम पर ही रखा करते थे। बंग देश से गये लोगों ने सुमात्रा द्वीप के पूर्वी सिरे पर नये बंग की स्थापना की थी, जो अब "बंका" कहाता है। इसी प्रकार आधुनिक "क्रा" की स्थलग्रीवा में नये तक्षशिला का निर्माण किया गया था। जावा (यवद्वीप) में बसे भारतीयों ने वहां की सबसे बड़ी नदी को "सरयू" नाम दिया, और अधिक पूर्व में जाकर नई चम्पा नगरी स्थापित की। भारत के अंग जनपद की राजधानी का नाम चम्पा था। वहां के गये भारतीयों ने उसी के नाम पर अपने नये उपनिवेश का नाम चम्पा रखा। वहां के राजा एक शक्तिशाली साम्राज्य का निर्माण करने में समर्थ हुए। इसके विविध प्रान्तों के नाम पाण्डुरंग, अमरावती और विजय तथा चम्पा के राजाओं के नाम विक्रान्त वर्मा, इन्द्र वर्मा आदि थे। उनके राज्य में पौराणिक हिन्दू धर्म का प्रचार था। यही दशा "पूर्वी एशिया के अन्य राज्यों की भी थी। जावा (यवद्वीप) के एक राजा संजय (आठवीं सदी) के सम्बन्ध में एक शिलालेख मे ये पंक्तियां विद्यमान हैं :—

राजा शौर्यगुणैर्यो रघुरिव
विजितानेकसामन्त चक्र:।
राजा श्री संजयार्को रविरिव
यशस्विर्गदिगन्तख्यातलक्ष्मी :॥

—राजा संजय रघु के समान शौर्य सम्पन्न था, और रघु की तरह उसने भी अनेक सामन्त राजाओं को जीत कर अपने अधीन किया था। सूर्य के समान उसकी कीर्ति दिग्दगन्त में सर्वत्र व्याप्त थी। सजय के समान कितने ही अन्य ऐसे राजा— पूर्वी एशिया के देशो में हुए, जिन्होने भारत के गुप्तवंशी सम्राट् समुद्र गुप्त के पदचिन्हों पर चल कर दूर-दूर तक विजय यात्राएं की, और जिनके वीरकृत्यों की प्रशस्तियाँ शिलाखडों पर उत्कीर्ण हैं। ये राजा केवल वीर व विजेता ही नही थे, अपितु परम विद्वान् भी थे। जावा के सिंहसारि वंश के राजा कृतनगर (तेरहवी सदी) के व्यक्तित्व को एक अभिलेख में इस प्रकार वर्णित किया गया है :—

षडंगवत्‌ सम्पूर्णो
धर्मशास्त्र विदां वर :।
प्रज्ञारश्मि विशुद्धांग :
सम्बोधि ज्ञान पारग :॥

—वह धर्मशास्त्र के वेत्ताओ मे श्रेष्ठ, सम्पूर्ण तत्वों का ज्ञाता, ज्ञान के प्रकाश से आलोकित तथा सम्बोधि ज्ञान में पारंगत था।

भारतीय मूल के राजा

पूर्वी एशिया के विविध भारतीय राजवंशों तथा राजाओ के नामों का उल्लेख कर सकना इस लेख में सम्भव नही है। यहां इतना निर्दिष्ट कर देना ही पर्याप्त है कि जैसे भारत में पाल, चालुक्य, राष्ट्रकूट, चन्देल, परमार, गुर्जर—प्रतिहार आदि राजवंशो के विविध राज्य विद्यमान थे, उसी प्रकार इन्डोनेशिया, विएतनाम, थाईलैण्ड- मलेशिया, कम्बोडिया आदि में सर्वत्र ऐसे राजवंशो का शासन था, जिनके राजा भारतीय मूल के थे और जिनकी धार्मिक राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं व मान्यताएं पूर्णतया भारतीय थीं। भारत के व्यापारी भी इन देशों में व्यापार के लिये जाते-आते रहते थे, और अपनी पण्य वस्तुओं को वहां बेच कर अपार धनराशि कमाया करते थे।

पूर्वी एशिया के इन देशों में बहुमूल्य धातुओं के अतिरिक्त गरम मसाले, चीनी कीमती काष्ठ आदि प्रभूत मात्रा मे होते थे। इनके क्रय-विक्रय से प्रचुर धन कमाया जा सकता था। इसी कारण सियाम (थाईलैण्ड), (मलाया) और बर्मा को भारतीय लोग स्थूल रूप से सुवर्ण भूमि कहा करते थे, और इण्डोनेशिया के जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्नियो आदि द्वीपो को "सुवर्ण द्वीप"। 'कथा—सरित्सागर', 'बृहत्कथा मंजरी' आदि प्रचीन ग्रन्थों में उन भारतीय व्यापारियो की साहसपूर्ण कथाओ का विशद वर्णन है, जो यात्रा की कठिनाइयो की परवाह न कर स्थलीय तथा समुद्री मार्गों से इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे। समृद्ध भारतीय व्यापारियों द्वारा भी वहा अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया गया। उनके उत्कीर्ण कराये अनेक संस्कृत शिलालेख भी इन देशों मे विद्यमान हैं।

बाली में हिन्दू धर्म

पूर्वी एशिया के विशाल क्षेत्र में अब बाली ही एक ऐसा द्वीप है जहां के प्राय: सब निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। यहाँ वेदशास्त्रों, पुराणों एवं रामायण-महाभारत का पठन-पाठन होता है। यहाँ हिन्दू पद्धति से पूजा-पाठ व कार्मकाण्ड का अनुष्ठान किया जाता है और लोग सत्य-सनातन वैदिक धर्म की मान्यताओं को स्वीकार करते हैं। इस द्वीप का क्षेत्रफल सवा दो हजार वर्गमील के लगभग है, और जनसख्या 25 लाख से कुछ अधिक है। इस छोटे-से प्रदेश मे 4105 हिन्दू पूजास्थल हैं।

यह आश्चर्य व खेद की बात है कि भारत के हिन्दुओं का दक्षिण—पूर्वी एशिया के लाखो हिन्दुओ के साथ इस समय कोई भी सम्बन्ध व सम्पर्क नहीं है। न भारतीय हिन्दू इस क्षेत्र के मन्दिरो तथा तीर्थ स्थानो के दर्शन के लिये जाते है, और न बाली आदि के हिन्दू भारत मे तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। आवश्यकता इस बात कि है कि बाली और जावा के हिन्दू अपना सम्बन्ध स्थापित करे, और दोनो मे परस्पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान का पुन: प्रारंभ किया जाए।

पता—आर्य स्वाध्याय केन्द्र, ए 1/32 सफदरजंग एनक्लेव नई दिल्ली—29

मानसूनों से

—कविवर प्रणव शास्त्री महोपदेशक—

ओ मानसूनो ! बरसते जाओ, चमन में फिर से बहार आये॥

मतान्ध आधी अंधेरियों ने चमन को ऐसा झटका दिया है
समस्त सधवा सुहागिनों का सिन्दूर नभ मे लटका दिया है।
सरस्वती भी स्वजीवनी की स्वतंत्र वीणा बजा न पाये॥

भभक उठी थी नृशंसता की महा जलन की कठोर ज्वाला
विनास ताण्डव दिखा रहा था, प्रबन्ध पहिने था मुण्डमाला
विडम्बना थी सुरा नशे में कि अपने कैसे हुए पराये॥

उखड़ गये थे विटप अनेको सुमन सजीले कुचल गये थे
ललित लताएं धरा पै सोई नवीन अंकुर मसल गये थे
खिजाँ का गलबा हुआ था गालिब पिकी न अपने तराने गाये॥

सघन घटा बन विचार बरसो, तपन धरा की सकल मिटा दो
न राग ईर्ष्या का बोलबाला सुधासनेही सुधार ला दो
सभी सुरक्षा सदन में बैठे स्वगान-गौरव ही गुनगुनाये॥

विधान लघुता का त्याग करके विशालता का महल पुराना—
सजा दो सेवास्वसाधना से मनुष्यता का वहीं खजाना।
अमृत-सरो के मनों में सुख की प्रसन्नता की तरंग आये॥

लगाओ घावों पै शान्ति मरहम, फटे दिलों को तुरन्त सी दो
विवेक ये ही बड़ा सभी से, जिला सभी को सदा ही जीयो
यही है मानव स्वधर्म प्यारा, न उग्रता को कभी मनाये॥

न हो परस्पर विभेद किंचित सभी समाएं समानता में
सदैव संयम की धारणा हो, न डूब जायें विलासिता मे
स्वराष्ट्र की शुचि अखण्डता की ध्वजा गगन में 'प्रणव' उठाये।

पता—शास्त्री सदन रामनगर [कटरा] आगरा-२८२००६

'इद्ध' पद विषयक समाधान

—डा० विक्रम कुमार विवेकी व्याकरणाचार्य—

5 अगस्त 1984 के अंक में म० म० आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास का "यज्ञ विषयक प्रश्नों का स्पष्टीकरण" लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें "अयन्त इध्म आत्मा" मन्त्रान्तर्गत 'इद्ध' पद पर जिज्ञासा प्रकट की गई है कि इसका क्या स्वरूप है ? अनेक विद्वानों के मत भी स्पष्टीकरण में दर्शाये गये है।

हमारे मत मे 'इद्ध' पद नाम रूप है और प्रातिपदिक है। तथा इस मन्त्र में सम्बोधन में एक वचनान्त पद है। जिइन्धी दीप्तौ' धातु का यह क्त प्रत्ययान्त रूप है। पण्डित जी ने अपने स्पष्टीकरण मे लिखा है कि—"पाणिनि के सूत्रो से सिद्धि बताने की आवश्यकता नही है", अत. हम इस कार्य में नहीं पड़ेंगे। हम कहना चाहेंगे कि अनेक गृह्यसूत्रों मे प्रस्तुत पाठ मे भेद है। भारद्वाज गृह्यसूत्र (1.4.5), हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र (1.2.11) तथा जैमिनीय गृह्यसूत्र (1.3.11) मे 'इद्ध' के स्थान पर 'इन्द्धि' पाठ है। पाणिनिसूत्रों से 'इन्द्धि' पद स्पष्टतया सिद्ध हो जाता है जिसका अर्थ है—'प्रदीप्तो भव'। परन्तु आश्वलायन गृह्यसूत्र (1.10 12) व आग्निवेश्य गृह्यसूत्र 1.1.1.43; 1.5.1.34) में जहां 'इद्ध' रूप मिलता है वहां यह क्रियापद न होकर नामपद है तथा 'कृत्तद्धितसमासाश्च' (पा० 1.2.46) सूत्र से प्रातिपादित है।

सम्पूर्ण मन्त्र के अर्थ की संगति निम्न प्रकार से लगायी जा सकती है—

मन्त्र—अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥

अन्वय—जातवेदः, अयम् आत्मा ते इध्मः। तेन (आत्मेध्मेन, त्वम्) इध्यस्व वर्धस्व। इद्ध (हे प्रज्वलित अग्ने तेमात्मेध्मेन) वर्धय च। अस्मान् प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन च समेधय। स्वाहा।

अर्थ अति स्पष्ट है। यहां 'इद्ध' पद का अर्थ होगा—हे प्रज्वलित (अग्ने)। अथच मन्त्र में 'वर्धय' और 'समेधय' दोनों पद समानार्थक होते हुये भी अधिक पदत्व दोष से रहित हैं। उपर्युक्त मन्त्र में दोनों पद पृथक् स्थानों में पठित हैं। एक पद मन्त्र के द्वितीय पाद में है तो अन्य पद मन्त्र के चतुर्थपाद में है और दोनों पद समानार्थक होते हुये भी मन्त्र में द्विधा अपेक्षित हैं। यदि अन्वय दोनों पदों को साथ में रखकर किया जाये तो भी समानार्थक दोनों पद अर्थबाहुल्य को ही प्रकट करेंगे। अर्थात् "बढ़ाओ और अच्छी तरह से बढ़ाओ" यह अर्थ होगा, जो अनर्थ नहीं है। वेदों के अनेक मन्त्रों में अधिक पद होते हैं पर वे भावाभिव्यक्ति व भावनाभिव्यक्ति को ही स्पष्ट करते हैं।

आजादी और हमारा कर्त्तव्य

—राजकुमार एम० ए०, बी० एड—

हमारे देश भारतवर्ष की गणना प्राचीन काल से ही संसार के महान् तथा समृद्धिशाली देशो में होती रही है। इसे 'सोने की चिड़िया' भी कहा जाता था। आध्यात्मिक, साहित्यिक, ज्ञान-विज्ञान तथा कला मे तो इसका कोई मुकाबला ही नही था और इसे 'जगद्गुरु' की उपमा प्राप्त थी। राम, कृष्ण, बुद्ध, गुरु नानक, अशोक, गांधी, नेहरू तथा शास्त्री जैसी महान् विभूतियां इस देश में समय-समय पर अवतरित हुईं जिन्होने इस देश की पवित्रता, मान-मर्यादा तथा स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आज यदि हम देश के मानचित्र की ओर देखें—काश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक, भारत एक है। इसमें रहने वाले सभी भारतीय हैं, चाहे वे किसी भी प्रान्त, धर्म, भाषा तथा रंग से सम्बन्ध क्यों न रखते हो। वे अपने आप को भारतीय समझते हैं और भारत भूमि को अपनी मातृ-भूमि समझते है। इस सब का श्रेय इन महान् विभूतियों को है।

हमारा देश लगभग एक हजार वर्ष तक विदेशियों का गुलाम रहा। इसका तात्पर्य यह नही कि विदेशी आक्रमणकारी हमसे अधिक शक्तिशाली और साधन सम्पन्न थे। प्राचीन इतिहास का यदि हम अवलोकन करे तो हम इस परिणाम पर पहुंचेगे कि देश के लोगों की आपसी फूट और वैर-विरोध ने इसे गुलाम बनाया। पृथ्वीराज चौहान के साथ आपसी कलह, फूट और द्वेष का जयचन्द ने इस प्रकार बदला चुकाया कि देश को विदेशी आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी की झोली मे डाल कर इसे पराधीनता की शृंखलाओं में ऐसा जकडा कि लाख प्रयत्न करने पर भी लगभग 1000 साल तक देशवासियों को गुलामी का कड़वा घूंट पीकर रह जाना पड़ा। इस कुकृत्य के लिए इतिहास जयचन्द सरीखे गद्दारों को कभी भी मुआफ नही करेगा।

देश को आजाद करवाने की कोशिशें राष्ट्र वीरों द्वारा समय-समय पर की जाती रही। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम जो कि भारतवासियों द्वारा स्वतंत्रता के लिए किया गया प्रथम प्रयास था, इसका ज्वलत प्रमाण है। मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहिब, तांत्याटोपे और रानी लक्ष्मी बाई ने जिस प्रकार इस संग्राम का नेतृत्व किया, वह अद्वितीय है। लगभग 90 साल बाद गांधी जी के नेतृत्व में हमने जो आजादी प्राप्त की, उस शुभ-कार्य का यह श्री गणेश था और देश की आजादी प्राप्त करने मे यह एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

1885 ई० में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना हुई। शुरू-शुरू में इसका उद्देश्य सरकार से सहयोग करना था। लेकिन बाद में जब लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, पं० मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपत राय, पं० जवाहर लाल नेहरू और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसे नेताओं का सहयोग मिला तो इस पार्टी ने देश की आजादी के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। तिलक ने देश की जनता का आह्वान इस प्रकार किया, "स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे" गांधी—"अपने देश के लोगों द्वारा चलाया गया कुशासन भी अंग्रेजों के सुशासन से अच्छा है।" लाला लाजपत राय—मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील का काम देगी।" नेताजी सुभाष चन्द्र बोस—"तुम मुझे खून दो में तुम्हें आजादी दूंगा।" इन जय घोषों का लोगों के दिल पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपना तन-मन-धन लगाकर आजादी प्राप्त करने के पवित्र यज्ञ में अपना महत्वपूर्ण योगदान डाला।

1920 ई० में गांधी जी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेता बन गए और इस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन की बागडोर उनके हाथों में आ गई। महात्मा गांधी शांति के महान्-दूत और पुजारी भी थे और उन्होंने शांतिपूर्ण ढंग से ही देश को आजाद करवाने का आन्दोलन जारी रखा। गांधी के नेतृत्व मे सरदार पटेल, डा० राजेन्द्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, पं० जवाहर लाल नेहरू, मौलाना आजाद और श्री लाल बहादुर शास्त्री सरीखे नेताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार भगत सिंह, राज गुरु, सुखदेव, बी० के० दत्त के प्रयत्न रंग लाए और अंततः भारत 15 अगस्त 1947 ई० को आजाद हो गया।

जनता का राज्य

26 जनवरी 1950 ई० को भारत एक संप्रभु लोकतंत्रात्मक गणराज्य बना। देश की जनता संप्रभु है। जनता जिस पार्टी की नीतियों और प्रोग्रामों को पसन्द करें उसके हाथों में शासन की बागडोर सौंप देती है। कांग्रेस और जनता पार्टी के हाथों में शासन-सत्ता सौंप कर जनता इसका परीक्षण कर चुकी है। देश में एक ऐसे कल्याणकारी शासन की स्थापना की गई है जिसमें सामाजिक और आर्थिक न्याय, विचारों की आजादी, किसी भी धर्म को अपनाने की आजादी तथा अपने-अपने तरीकों से पूजा-पाठ करने की आजादी दी गई है। शासन प्रबंध के मामलों में भाग लेने के सभी नागरिकों को एक जैसे अवसर प्रदान किये गये हैं। कोई भी नागरिक चाहे वह हिन्दू है, मुस्लिम, सिख या ईसाई, शासन प्रबंध में अपनी योग्यता के आधार पर भाग ले सकता है। देश की इस धर्म-निरपेक्ष नीति का ही यह परिणाम है कि आज अल्पसंख्यक वर्गों मे से दो मुसलमान तथा एक सिख राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद को सुशोभित कर सके हैं।

आजादी के बाद

आज हमारा देश अपनी आजादी के 37 वर्ष पूरा करके 38 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जब हम गुलाम थे तो हमारा लक्ष्य आजादी प्राप्त करना था। आज इस आजादी को स्थिर करना हमारा लक्ष्य है। हमने राजनीतिक आजादी तो प्राप्त कर ली, परन्तु आर्थिक और नैतिक आजादी अभी हमने प्राप्त करनी है। हमारे देश में अधिकांश लोग ऐसे हैं जिनकी मूल-भूत आवश्यकताएं—खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए कपड़ा और रहने के लिए मकान—अभी तक पूरी नही हो सकीं। उनका जीवन-स्तर बहुत निचा है। साम्यवादी देशों, रूस और चीन की मिसालें हमारे सामने हैं जिन्होंने कि लाल-क्रांति के पश्चात् प्रत्येक क्षेत्र में आशातीत सफलताएं प्राप्त की हैं।

आजादी के बाद हमारे देश के लोगों के नैतिक चरित्र में भी गिरावट आई है। आज कल चारों तरफ जिधर देखो, उधर ही भ्रष्टाचार का बोलबाला है। योग्य और कर्मठ व्यक्ति उचित अवसर प्राप्त नहीं कर सकते, जबकि इने-गिने अवसरवादी व्यक्ति अपना काम निकाल लेते हैं।

आज कल देश के कुछ भागों में असंतोष की लहर दौड़ रही है। लोगों में प्रांतीयता, जातिपात और धर्म के भेदभाव पैदा किये जा रहे हैं। पिछले कुछ समय से पंजाब, जम्मू-कश्मीर, आसाम और नागालैंड में जो घटनाएं घटित हो रही हैं उनसे देश की आजादी किसी भी समय खतरे में पड़ सकती है। सारे देश की रचना एक शरीर के समान है। जिस प्रकार शरीर के किसी एक भाग को भी चोट लग जाये तो आदमी बेचैन हो उठता है उसी प्रकार यदि देश के किसी एक

(शेष पृष्ठ ९ पर)

किशोर कुंज

शिक्षक दिवस पर विशेष

आचार्य देवो भव

डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरि द्वार)

भारतीय संस्कृति में आचार्य को बहुत महत्व दिया गया है। वह ज्ञान का दाता है, आचार का शिक्षक है और जीवन का निर्माता है। वह विद्यार्थी को तपस्या-रूपी अग्नि में डालकर लोहे को सोने के रूप मे परिवर्तित करता है। माता-पिता केवल भौतिक शरीर के जनक हैं, परन्तु आचार्य सूक्ष्म और दिव्यज्ञानमय शरीर का जनक है। जिस प्रकार अग्नि में डाली हुई समिधा अग्नि तुल्य हो जाती है, उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि में पड़कर विद्यार्थी भी ज्ञानी, तपस्वी और वर्चस्वी बन जाता है।

प्राचीन परम्परा के अनुसार उच्च-शिक्षा के लिए कठिन परीक्षा ली जाती थी, जो इस कठिन परीक्षा मे उत्तीर्ण होते थे, उन्हें ही उच्च शिक्षा दी जाती थी। उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक था कि विद्यार्थी में ज्ञान-पिपासा हो, जिज्ञासु वृत्ति हो और कठिन साधना की क्षमता हो। ये गुण, आचार, संयम, तपस्या और लक्ष्य-निष्ठता से आते हैं। आचार्य इन गुणों की सृष्टि करता था, अतः आचार शिक्षक को आचार्य कहा गया है।

निरुक्तकार आचार्य यास्क का कथन है कि......

आचार्य : कस्मात् ? आचार्य आचारं ग्राहयति।

आचिनोति अर्थान् आचिनोति बुद्धिम् इति वा ?

(निरुक्त १-४)

—जो आचार की शिक्षा देता है, जीवनोपयोगी विषयों का संकलन करता है और बुद्धि विकसित करता है, उसे आचार्य कहते हैं।

अथर्ववेद का कथन है कि जो स्वयं संयमी जीवन बिताते हुए छात्रों को संयम की दीक्षा देता है, वह आचार्य है।

आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते।

अथर्व० ११-५-१७

अथर्ववेद कांड ११-सूक्त ५ में आचार्य और विद्यार्थी के कर्त्तव्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है। विद्यार्थी भावी राष्ट्र निर्माता है। राष्ट्र के निर्माण और विकास का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व उस पर होता है। अत. वह जितनी कठोर तपस्या और साधना की अग्नि से निकला होगा, राष्ट्रीय विकास में उतना ही महत्वपूर्ण योग दे सकेगा। अथर्वेद का कथन है, ब्रह्मचारी अपनी तपस्या और पुरुषार्थ से सारे लोकों को तृप्त करता है...

ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकान् तपसा पिपर्ति।

११-५-४अथर्व०

—गुरु के समीप रह कर ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार और संयम की शिक्षा प्राप्त करने के कारण विद्यार्थी को अन्तेवासी कहा जाता था। बृहस्पति स्मृति में व्यावहारिक, प्रयोगात्मक और संगीत आदि से संबद्ध विषयों के अध्ययन के लिए गुरु के समीप रह कर प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य बताया गया है। मनु ने शिक्षक के तीन भेद दिए हैं——आचार्य, उपाध्याय और गुरु। वेदों और शास्त्रों के शिक्षक को आचार्य कहते थे। वेद और वेदांगों के किसी विशेष अंग को पढ़ाने वाले को उपाध्याय कहते थे। वह वैतनिक अध्यापक होता था। विविध संस्कारों के कराने वाले तथा विविध विषयों को पढ़ाने वाले को गुरु कहते थे। यह भेद बाद में लुप्त हो गया और शिक्षक मात्र के लिए गुरु शब्द का प्रयोग होने लगा।

आचार्य को माता और पिता से उच्च स्थान इसलिए दिया गया है, क्योंकि आचार्य ही ज्ञानदाता है, चरित्र-निर्माता है और भावी जीवन का प्रकाश-स्तम्भ है। महाभारत में कहा गया है कि...

गुरु र्गरीयान् पितृतो
मातृतश्चेति मे मतिः ॥

—गुरु का स्थान माता और पिता से उत्कृष्ट है। पिता-माता और आचार्य ये तीनों देववत् पूज्य हैं, अतएव तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है कि...

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव,
आचार्य देवो भव।

(तैत्ति०१-११-२)

मनु का कथन है कि इन तीनों का सदा आदर करना और इनकी सेवा करना परम तप है।

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्या-
दाचार्यस्य च सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु
तप : सर्वं समाप्यते।

मनु० २-२२८

—मनुष्य में मनुष्यत्व की शिक्षा देने वाला, जीवन के लक्ष्य को बताने वाला, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का बोध कराने वाला, शास्त्रीय और व्यावहारिक विषयों की शिक्षा देकर ब्रह्मतत्व तक का ज्ञान कराने वाला केवल गुरु ही है। वही अज्ञान के गर्त से मानव का उद्धार करता है, पापों से बचाता है, सत्कर्मों की शिक्षा देता है, दुर्गुणों, दुर्विचारों से पृथक् करके सद्गुणों की ओर अग्रसर करता है, संसार के घोर अंधकार में ज्ञान का प्रकाश देता है और जीवन की भयंकर समस्याओं से मुक्त करते हुए जीवन के चरम लक्ष्य अमरत्व तक पहुँचाता है। अतएव आचार्य और गुरु के लिए सभी मनीषियों ने अपनी प्रणामांजलि अर्पित की है।

अज्ञानान्धस्य लोकस्य
ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन
तस्मै श्री गुरवे नम.।

शास्त्रीय भाषा में ज्ञानहीन को बालक कहा गया है और ज्ञानदाता को पिता। आचार्य वेदों का ज्ञान देता है, अतः उसे पिता भी कहा गया है। मनु का कथन है कि...

अज्ञोभवति वै बाल:
पिता भवति मन्त्रदः।
अज्ञं हि बालमित्याहुः
पितेत्येव तु मंत्रदम्,
वेदप्रदानादाचार्यं-
पितरं परिचक्षते। मनु०

पुरुषोत्तम रामचन्द्र को तेजस्वी और यशस्वी बनाने का श्रेय बाल्मीकि ऋषि को है। गुरु कृपा से ही आरुणि ब्रह्मवेत्ता हुआ और एकलव्य महान् धनुर्धर हुआ। गुरु विरजानन्द की कृपा से स्वामी दयानन्द परम सुधारक हुए। रामकृष्ण परमहंस के आशीर्वादों से स्वामी विवेकानन्द कर्मयोगी और यशस्वी हुए। देश और विदेश के सभी महात्माओं के प्रेरणास्रोत उनके गुरु रहे है। सभी कवि संगीतज्ञ, राज-नीतिज्ञ, विद्वान्, विचारक, अन्वेषक और तत्वज्ञ अपने गुरुओं की प्रेरणा से ही अपने क्षेत्रों मे अपना नाम अमर कर गए हैं।

आचार्य की चारित्रिक पवित्रता ही उसे इतना ऊंचा स्थान प्रदान कर सकी है। दीक्षान्तोपदेश में आचार्य स्वयं कहता है कि—हमारे सद्गुणों का ही तुम जीवन में आचरण करना, अन्यों का नहीं। जीवन मे शुभ गुणों को ही अपनाना, दुर्गुणों को नहीं।

यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवित-व्यानि नो इतराणि।
यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। तैत्ति० १-११-२

यह जीवन की पवित्रता ही छात्रों को प्रभावित करती थी। यह अनुशासन की शिक्षा आचार से प्राप्त होती थी। निष्काम सेवा, निष्काम भाव से विद्या का प्रसार, निःस्वार्थभाव से प्रेम, छात्रों की ज्ञानोन्नति में प्रसन्नता की अनुभूति और 'शिष्यादिच्छेत् पराभवम्' शिष्य से पराभव की कामना जैसी विशुद्ध भावना, उसे आचार्यत्व से देवत्व तक पहुंचाती है। अनुशासित आचार्य के शिष्यों ने ही संसार मे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतक क्रान्तियां की हैं। आचार्यों के अनुशासन ने ही विश्व को देशभक्त, क्रान्तिकारी, समाजसेवी, आत्मबलिदानी व्यक्ति दिए हैं। आचार्य का महत्व जितना भी वर्णन किया जाए, थोड़ा है। आचार्य क्रान्तदर्शी, तत्वज्ञ, विचारक और युग-निर्माता है। वह भावी पीढ़ी का प्रेरणा-स्रोत है।

पता—विश्वशास्त्री अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर, वाराणसी।

मातृशक्ति का सम्मान

एक दिन स्वामी जी व्याख्यान के बाद कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं पंडितों के साथ भ्रमण करने जा रहे थे। मूर्तिपूजा पर चर्चा चल रही थी। आगे एक देवालय आ गया। वहां छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे, जिनमें एक लड़की भी थी। स्वामी जी ने एकाएक सिर नीचा कर लिया और फिर आगे बढ़ गये। एक साथी पंडित ने कहा—'स्वामी जी! मूर्तिपूजा का खंडन चाहे जितना करें, पर देवताओं की शक्ति का भी प्रत्यक्ष प्रमाण है कि देवालय के सामने आपका मस्तक आप ही झुक गया।' ऋषि सुनते ही वहीं पर खड़े हो गये और उन बालकों में खेलती हुई एक चार वर्ष की नंगी बालिका की ओर संकेत करके बोले—

"देखते नहीं हो, यह मातृशक्ति है, जिसने हम सबको जन्म दिया है।" यह सुनते ही सब चुप हो गये।

यह थी ऋषि दयानन्द का मातृ-शक्ति के प्रति सम्मान।

—घनश्याम आर्य 'निडर'

आर्य समाज गिरिडीह द्वारा वेद प्रचार

गिरिडीह (बिहार)। स्थानीय आर्य समाज के तत्वावधान में ११ से १६ अगस्त तक रजगढिया धर्मशाला टुंडी रोड जालान धर्मशाला, मफतपुर तथा बगडिया धर्मशाला, पचम्बा में क्रमशः वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। आयोजन में प्रदेश के आर्य विद्वानों ने सम्प्रदाय व आडंबरों के विरुद्ध सत्य और नैतिक सिद्धान्त युक्त कल्याणकारी वैदिक विचारों को अपनाने पर बल दिया।

पत्रों के दर्पण में

आर्य समाज को नया मोड़ दो

12 अगस्त के अंक में डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का लेख 'आर्य समाज को नया मोड़ दो' पढ़ा। कट्टर शाकाहारी और ऋषि तथा समाज के प्रति समर्पित महापंडित डा० सत्यव्रत जी से तर्क की स्पर्धा मैं नहीं कर सकता। पर मेरी धारणा है कि मांसाहार का प्रश्न वैयक्तिक नहीं, धार्मिक है। इसलिए समस्त आर्य समाज का प्रश्न है। डा० महोदय ने मांस-भक्षण और हिंसा को समान माना है, पर यह ठीक नहीं लगता। मैं स्वयं कट्टर शाहाकारी हूं पर पूर्ण अहिंसक होने का गर्व नहीं कर सकता। सत्य-स्वरूप तो केवल एक परमात्मा है। महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी आदि हमारे लिये सत्य के आदर्श तो हैं पर परमात्मा नहीं है। अर्थात् पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा उनके लिये भी असम्भव रही होगी।

मेरे पास सत्यव्रत जी के उत्कृष्ट साहित्य का संग्रह है और उनका मैं प्रशंसक भी हूं। पर, इस लेख ने कण भर का एक संशय उकसा कर सौम्य धक्का जरूर दिया है क्योंकि लेख मे समाज को नया मोड़ देने की अपेक्षा तोड़ देने की बात ही मुखर प्रतीत होती है।—जगदेव सिंह आर्य, 8/ए, आनन्द कोर्ट, डा० रघुनाथ मार्ग बांदरा, बम्बई—50।

(2)

आज के युग में संगठन ही जीवन है। इस दृष्टि से 'आर्यजगत 12 अगस्त के अंक में डा० सत्यव्रत सिद्धांतालकार का "आर्य समाज को नया मोड़ दो" लेख युक्तियुक्त और सामयिक है। वस्तुत प्रादेशिक और प्रतिनिधि सभा मे कोई विशेष अन्तर है ही नहीं। आवश्यकता केवल इतनी है कि महर्षि, स्वा० श्रद्धानन्द और म० हंसराज तथा ला० लाजपत राय के अनुयायी आर्य समाज के लिये कुर्सी-प्रियता का छोटा सा त्याग करे। इससे निश्चय ही डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष तथा दिल्ली में प्रस्तावित महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह काफी सफल और प्रभावी सिद्ध होंगे। मुझे विश्वास है कि आपकी लौह लेखनी और श्री सहगल जी की कार्य-कुशलता का समवेत अभियान इसे शीघ्र ही हल कर सकेगा।

—यज्ञदत्त आर्य, 260 'सी' मियांवाली कालोनी, गुड़गांव, हरियाणा।

गुरुकुल का नया मोड़ कैसा हो?

17 जून के अंक में प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार के लेख "गुरुकुल को नया मोड़ दो..." के संबंध मे मेरा सुझाव है कि सभी गुरुकुलो के अग्रणी एक सम्मेलन बुलायें। इस ज्वलंत समस्या के संदर्भ में उच्चकोटि के विद्वानों, वैज्ञानिकों व शिक्षाविदों को आमंत्रित करके उनके विचार-नवनीत का लाभ उठाया जाय। मेरा यह भी सुझाव है कि हमारे परिवारों को सक्रिय आर्य परिवार बनाना बहुत जरूरी है। इसके लिये पारस्परिक सम्पर्क बढ़ाना आवश्यक है। साथ ही सक्रियता और जागरूकता लाने के लिए योगासन, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ अथवा भावी-पीढ़ी को स्वस्थ और सुखी बनाने वाले अन्य आकर्षक कार्यक्रम रखे जाँय।—सत्यशरण गुप्त, भीम सेन आर्य भवन, अलावलपुर (पंजाब)

प्रगति के रोड़े ये 'बुजुर्ग'!

अपने निजी स्वार्थ के लिए सरकारी कर्मचारियों द्वारा पद और समय का नाजायज फायदा उठाने की बात तो अब आम हो गई है पर यह संक्रमण अब बुद्धिजीवी वर्ग तक भी आ पहुंचा है। सेवा-काल में पर्याप्त कमाई करने वाले कुछ वयोवृद्ध व्यक्ति जरूरतमन्द और योग्य व्यक्तियों के हितो को अनदेखा करते हुए अवकाश प्राप्ति के बाद भी शिक्षासंस्थानों में या अन्यत्र जुगाड़ कर लेते है। हो सकता है कि इस बाध्यता के पीछे आज की कमरतोड़ मंहगाई हो, फिर भी आश्चर्य की बात है कि एक विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण करने के बाद कोई व्यक्ति दूसरे विश्वविद्यालय मे नौकरी पाने की पात्रता कैसे पा लेता है? आयु की परिपक्वता व अनुभव को महत्व जरूर दिया जाना चाहिए, पर राष्ट्रीय विकास के परिप्रेक्ष्य में यह घुसपैठ नए विचारों की प्रगति में बाधा ही बन रही है। —सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, ३५ फिरोजशाह रोड, नयी दिल्ली—१

आदिवासी किसानों के 'जगन्नाथ जी'

'ये कैसे जगन्नाथ हैं'—अग्रलेख पढ़ा। इससे मेरे मन में जो विचार आए, वे लिख रहा हूं। रथयात्रा को हिन्दुओं का पर्व बताकर ये आदिवासियों के उसमें योगदान पर शंका उठाने पर जब मैंने अपने एक मिशनरी बन्धु को बताया कि रथ पर जो बैठे हैं वे हैं 'दारुब्रह्म' तो वे चुपचाप खिसक लिए। इसलिए कि वे जानते थे कि कोल (भूमिज) भाषा में इसका अर्थ है "वृक्ष-देवता"। वृक्ष-देवता (जगन्नाथ जी) ही बिना किसी भेद-भाव के आदिवासियों के संसार का पालन करते हैं। आषाढ़ माह में वर्षा के प्रारंभ के साथ किसान खरीफ की बुआई शुरू करता है और रथ-यात्रा या जन्म-पर्व के साथ "दारु-ब्रह्म" का पालन कार्य भी शुरू होता है। फाल्गुन में होलो (सरहुल) रबी की परिपक्वता तथा चैत्र में साल के फलों की परिपक्वता की निशानी है। इसलिए आदिवसी भी जगन्नाथ जी को हिन्दुओं कीतरह ही पूज्य मानते हैं।

—तारकनाथसिंह, ग्रा० कुचैता, पो० खरगीगढ़।

क्या यह कुरान असली है?

स्वयं कुरान में अल्लाह की निम्न उक्ति सिद्ध करती है कि मुसलमानों की कुरान असली नहीं है—

"वलौ अन्ना कुरआन न सुइयरत विहिलजिवालो
आव कुत्ते अत विहिल अर्जो अवकल्लमा विहिल मौत।"

अर्थात्—यदि अगर कोई ऐसी कुरान होती जिससे पहाड़ अपनी जगह से हटा दिये जाते या इससे मंजिल जल्दी तय हो जाती और मुर्दो के साथ बात करा दी जाती, तब भी ये लोग ईमान नहीं लाते।

इस कसौटी पर कसने से बर्तमान कुरान खरी नही उतरती, क्योंकि उससे पहाड़ चलायमान नहीं होते। मौजूदा कुरान में ऐसी बातें हैं जैसी किसी खुदाई किताब में नहीं होनी चाहिये। —महेन्द्रपाल आर्य (भू० पू० इमाम हाफिज मौलवी सैयद महबूब अली) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, नयी दिल्ली-४४

सदा जगमगाता रहे

वस्तुतः 'आर्य-जगत्' मन तरोताजा करने वाला रंग-बिरंगे फूलों का सुन्दर गुलदस्ता है। आपकी लगन-परिश्रम, निष्ठा व समर्पित भावना से अनुप्राणित यह पत्रिका, पत्रकारिता-जगत में एक दमकते नक्षत्र की भांति अपनी निराली आभा फैला रही है। इसके उज्ज्वल भविष्य के लिये मेरी यही मंगलकामना है कि समाज के कमजोर वर्ग के सफल मार्ग-दर्शक प्रकाश-पुंज के रूप में "आर्य.जगत्" सदा जगमगाता रहे। —श्याम सुन्दर शर्मा, सम्पादक, पालिका समाचार, नयी दिल्ली नगर पालिका, टाउन हाल, नयी दिल्ली-१

मुझे शिकायत है —स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—

1. उन उपदेशकों से, (विशेषतः संन्यासियों और उन गृहस्थों से जो अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो चुके हैं), पर व्यवसायिकों की तरह दक्षिणा की राशि पहले ठहराते या उसके लिये बाद मे झगड़ते हैं।

2. सभाओं तथा समाजो के उन अधिकारियों से जो दक्षिणा देते समय उपदेशक की आवश्यकताओं का ख्याल नहीं करते।

3. उन उपदेशकों से जो वक्तृत्व कला के द्वारा श्रोताओं को मुग्ध करके दक्षिणा प्राप्त करने मे ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझते हैं। अपने आचारण के द्वारा लोगो के जीवन को पवित्र बनाने की जिन्हें चिन्ता नहीं।

4. उन अधिकारियों से जो ज्ञान और आचरण की दृष्टि से ऊंचे विद्वानों की तुलना मे केवल वक्तृत्व कला मे निपुण लोगों का अधिक आदर करते है।

5. उन भजनोपदेशकों से जो एक घण्टे में 10 मिनट भजन गाते और 50 मिनट अनावश्यक भाषण देते हैं जबकि भाषण के लिए अपेक्षित योग्यता वाले विद्वान अलग से नियुक्त होते हैं।

6 उन लोगो से, जो विवाह आदि के अवसर पर बाजे वालों, बिजली वालों और शामियाने बालों आदि को तो हजारों रुपये लुटाते हैं किन्तु पुरोहित को, जिसके बिना संस्कार नहीं हो सकता, दक्षिणा देने मे कंजूसी करते हैं।

7. उन पुरोहितों से, जो समुचित दक्षिणा मिलने पर भी लोभ के वशीभूत होकर अपने पद की प्रतिष्ठा के विरुद्ध आचरण करते हैं।

8. उन अधिकारियो से जो पुरोहित को नौकर समझ कर, उसका आदर नहीं करते।

9. उन पुरोहितों से, जो अपेक्षित योग्यता, चरित्र, तथा कर्त्तव्य परायणता के अभाव में लोगों से आदर की अपेक्षा करते हैं जबकि समाज में आयु, योग्यता सामाजिक स्तर आदि की दृष्टि से अनेक बुजुर्ग लोग होते हैं। उनके बीच रहते हुए विद्वत्ता, व्यवहार कुशलता आदि गुणों के अभाव में केवल मन्त्रपाठ करके संस्कार करा देने मात्र से पुरोहित आदर नहीं पा सकता।

10 उन आर्य समाजों से, जो मन्दिर में बरातों को ठहरा कर कमरों को किराये पर देकर आमदनी बढ़ाने में अपनी सफलता समझते हैं, किन्तु संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों आदि के रहने के लिये स्थान नहीं दे सकते। बैठे बिठाये स्थायी आय के कारण पद लोलुपता बढ़ती है और जनसंपर्क नहीं रहता। आर्य समाज रविवारीय समाज बन कर रह जाता है।

11. उन आर्य समाजों से, जिनकी अधिकांश शक्ति स्कूलों, कालिजों, चिकित्सालयों आदि के संचालन में लगती है। वेद प्रचार, साप्ताहिक सत्संगों में उनकी रुचि नहीं रहती, जिससे सत्संगों में उपस्थिति बहुत कम देखने में आती है।

रेलों से विमान तक : टंकारा से जापान तक

—रामलाल मलिक—

८ सितम्बर को आर्यों का एक दल पूर्वी एशिया और जापान की यात्रा पर जा रहा है। पर जापान की यात्रा पर जाने से पहले मैं आपको 1962 में ले जाना चाहता हूं, जब हम एक रेल्वे की बोगी अहमदाबाद मेल के साथ लगवाकर ऋषि की जन्म भूमि टंकारा गये थे। उस बोगी में श्री देवदत्त मन्त्री—आर्य समाज करौल बाग, श्री दीवानचन्द जी जो बाद में टंकारा ट्रस्ट के कार्यकर्ता प्रधान बने, टंकारा गये।

बार-बार मन में विचार आता था कि एक बोगी ही क्यों पूरे सामूहिक रूप से अगर टंकारा जायें तो आर्य समाज का सन्देश पहुंचाने में सफलता मिल सकती है। सोचा, कि एक स्पेशल ट्रेन का आयोजन किया जाय। 1964 मे आर्य समाज स्पेशल ट्रेन के लिए टंकारा सहायक समिति की ओर से रेल्वे को प्रार्थना पत्र दिया गया। उस वक्त स्पेशल ट्रेनों पर कुछ प्रतिबन्ध थे। यदि उस वक्त टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री मेहरचन्द जी महाजन, चीफ-जस्टिस, प्रधान टंकारा ट्रस्ट सहायता न करते, तो जो ट्रेन हम फरवरी 1965 में चलाना चाहते थे उसमे सफलता न मिलती। आखिर श्री महाजन जी के सहयोग से टंकारा सहायक समिति के तत्वावधान में आर्य समाज के इतिहास में पहली बार फरवरी 1965 में पहली स्पेशल ट्रेन का आयोजन किया गया। इस ट्रेन का प्रोग्राम दिल्ली से अजमेर ब्यावर, मौरवी, राजकोट, जामनगर, पोरबन्दर, अहमदाबाद तथा वापस दिल्ली का बनाया गया था। कुछ ही दिनो में 800 यात्री तैयार हो गए।

प्रथम टंकारा यात्रा

परन्तु कुछ भाई-बहिने भूमि टंकारा जाना चाहते थे। इसलिए उनके लिए दूसरी ट्रेन दिल्ली से टंकारा और वापसी लेने का प्रबन्ध करना पड़ा। ये दोनों ट्रेनें फरवरी 1965 में दिल्ली जंक्शन से टंकारा के लिए रवाना हुई यात्रियों को विदाई देने वालों की दिल्ली जंक्शन के प्लेटफार्म पर इतनी भीड थी कि वहां पर तिल धरने को जगह न रही।

हमें शुभ-कामनाएं अर्पित करने के लिये आदरणीय श्री मेहरचन्द जी महाजन—प्रधान टंकारा ट्रस्ट, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री इत्यादि बड़े से बड़े नेता दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर आशीर्वाद देने आये। इन [illegible] के साथ लाला रामगोपाल जी शालवाले, श्री वीरेन्द्र जी, डॉ० विद्यावती, [illegible] के [illegible] अपने परिवार सहित टंकारा जाने के लिए उपस्थित थे। एक [illegible] बोगी के [illegible] अमृतसर से आये थे। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं रहा जिसके यात्री इन ट्रेनों द्वारा महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा न गये हो। सारे रास्ते मे यात्रियों का कितना स्वागत हुआ इसका विवरण लिखू तो बहुत लम्बा हो जायेगा। केवल इतना लिख दू कि ब्यावर आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने 1500 यात्रियो को आधे घण्टे मे शुद्ध घी का स्वादिष्ट भोजन कराया। ब्यावर आर्य समाज के कार्यकर्ता सब उत्साही नवयुवक थे।

इसके बाद स्पेशल ट्रेनो द्वारा ये यात्राएं आर्य केन्द्रीय सभा के और सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे होती रही। केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे जो यात्राए हुई उस समय उसमें महामंत्री श्री रामनाथ सहगल एव प्रधान श्री नाराणदत्त कपूर थे। हैदराबाद महा-सम्मेलन मे भाग लेने के लिए जो ट्रेन गई उसमें श्री रामनाथ सहगल भी गये थे। इन ट्रेनो मे कई बार हमारे साथ प० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार भी गए जो आज कल "आर्य जगत्" के सम्पादक हैं। पण्डित जी ने इन स्पेशल ट्रेनो में सारे भारत-वर्ष मे जिस उत्साह से आर्य समाज का सन्देश पहुचाया, इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इन ट्रेनो मे हमने दिल्ली से गुजरात, काठियावाड, सोमनाथ मन्दिर, कन्या कुमारी, त्रिवेन्द्रम, मद्रास, जगन्नाथपुरी, कलकत्ता, गोहाटी, काठमाण्डू (नेपाल)—एक तरह से सारे भारत का भ्रमण किया।

मारीशस यात्रा

इस बीच 1973 मे महा सम्मेलन में भाग भाग लेने के लिए दिल्ली से बबई स्पेशल ट्रेन द्वारा और बम्बई से समुद्री जहाज द्वारा मौरिशस गये। आर्य समाज के इतिहास में यह अनोखी घटना थी। इन स्पेशल ट्रेनों का आना-जाना 1975 तक चलता रहा। 1978 में हम लोग केनिया, नैरोबी हवाई जहाज द्वारा गये। 1980 में विमान द्वारा सार्वदेशिक सभा एव प्रादेशिक सभा के तत्वावधान में दिल्ली लन्दन के अतिरिक्त यूरोप के 11 मुल्को में भ्रमण के लिए गये।

1983 में ऋषि निर्वाण शताब्दी पर हमने 6 स्पेशल ट्रेनों के लिए प्रार्थना-पत्र दिया था। 1984 में टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल का विचार था कि एक स्पेशल ट्रेन टंकारा जाये। छ माह पहले प्रार्थना-पत्र देने पर भी रेल्वे-बोर्ड ने बहुत देरी के बाद उत्तर दिया, कि हमारे पास स्टाक नहीं है। तब हमने कुछ यात्रियों को रेलों और बसो में टंकारा में भेजा।

फरवरी 1984 में जब हम टंकारा गये तो कुछ भाइयों और बहिनों का विचार था कि सारा भारत देख लिया, नेपाल, मौरिशस, लन्दन और यूरोप गये अब अगर जापान की यात्रा का प्रोग्राम बनाया जाय तो आनन्द आ जाये। तपोवन देहरादून की यात्रा पर विज्ञापन में मैंने लिखा था कि जापान की यात्रा का प्रोग्राम बनाया जा रहा है। वही प्रोग्राम आपके सामने है-हम 8-9-84 प्रात 5 बजे जापान की यात्रा पर जा रहे हैं। इसकी सफलता के लिए 7-9-84 साय 4 बजे यज्ञ एव सभा का आयोजन किया गया है। हमारा कोई भी शुभ कार्य बिना यज्ञ के नहीं होता, इसलिए जापान-यात्रा से पहले यज्ञ का आयोजन किया गया है।

परमात्मा की अपार कृपा है कि 1965 से लेकर फरवरी 1984 तक जितने यात्री ट्रेनो बसो, हवाई जहाजो मे गये, उतने ही सकुशल अपने घरो को लौटे। अब भी प्रभु के आशीर्वाद से हमारी यह यात्रा वैसी ही सफल होगी, ऐसा विश्वास है।

पता—52/78 रामजस रोड, करोल बाग नई दिल्ली—5' फोन—562510

डी. ए. वी. कार्यक्रम....

(पृष्ठ ४ का शेष)

वैदिक शोध सस्थान (होशियारपुर) विश्व मे वैदिक और अर्वाचीन भारत सबधी अध्ययन का शोध शोध सगठन है। यह सदा ही डी० ए० वी० सस्थानो का सहयोगी रहा है। 5 वर्ष पूर्व यह डी० ए० वी० सगठन मे पूरी तरह शामिल हो गया है। स्व० लुड्विक स्टर्नबैक द्वारा 50 लाख रु० के दान से इसके ससाधनो मे काफी वृद्धि हुई है। विश्वेश्वरानन्द सस्थान, डा० लुड्विक स्टनबैक फाउण्डेशन, इस्टीच्यूट आफ इण्डोलाजी, नयी दिल्ली तथा हसराज महाविद्यालय ने मिलकर हसराज महाविद्यालय दिल्ली के परिसर मे इटरनेशनल इस्टीच्यूट आफ वेदिक रिसर्च एण्ड इण्डोलोजी की स्थापना की है। प्रख्यात इण्डोलोजिस्ट डा० आर० एन० दाडेकर ने 27 मई, 1984 को इसका उद्घाटन किया। डा० स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती इसके मानद निदेशक और डा० दाण्डेकर इसकी शिक्षा परिषद के मानद प्रधान होगे। यह सस्था इण्डोलोजी के क्षेत्र मे दो विशेष परियोजनाओ को हाथ मे लेगी (अ) इण्डोलाजी के अध्ययन मे फ्रेंच विद्वानो का योगदान, तथा (ब) अर्वाचीन भारतीय इतिहास और सस्कृति पर रूसी विद्वानो के प्रचुर शोध कार्य।

अर्वाचीन भारत सबधी अध्ययन के सभी अगो मे—वैदिक स्थापत्य बौद्ध धम, प्राचीन भारतीय उपनिवेश आदि मे फ्रास ने अनेक प्रतिभाशाली विद्वान पैदा किए हैं। पूर्वी एशिया के फ्रांसीसी उपनिवेश, विशेष रूप से फू नान और कबोडिया, कई महान् भारतीय साम्राज्यो की कमस्थली रह चुके हैं। यहां का 150 वर्षों का इतिहास शोध का बहुमूल्य स्रोत है। इस विषय पर फ्रच भाषा मे शोध प्रकाशनों सहित 1000 से ऊपर उच्च स्तर के ग्रथ हैं जिनका दुर्भाग्यवश अग्रेजी अनुवाद न होने से वे अभीतक भारतीय विद्वानो के लिये सुलभ नहीं हो सके है। अकेले अगकोर के विशाल मन्दिर पर ही कई सौ पुस्तकें और पत्रक है। प्रसिद्ध विद्वान डा० एस० फिनाट ने ईश्वरपुर के मदिर की भूमिका मे कहा है कि वह दिन दूर नहीं जब नये भारत के बुद्धिजीवी अपनी सस्कृति के उत्कृष्टतम प्रसून अगकोर मे आराधना के लिये पहुचगे। उक्त नवनिर्मित शोधसस्थान 10-15 वर्षों के अदर इन महत्वपूर्ण ग्रथों के अनुवाद सार, उद्धरण आदि को सर्व-सुलभ बनाने का भगीरथ प्रयास करेगा।

आज कल सोवियत भारतविदो द्वारा अर्वाचीन भारतीय विषयों पर बहुमूल्य शोधकाय हो रहा है। रूस के कई वतमान राज्य भी किसी समय प्राचीन भारतीय सास्कृतिक-उपनिवेश रहे हैं। रूसी विद्वान इन राज्यो के अतीत के अध्ययन के साथ ही भारतीय इतिहास कला और सस्कृति का भी अध्ययन कर रहे हैं। यह सस्थान इस समस्त साहित्य को भी भारतीय तथा अग्रेजी भाषाओ मे अनुवाद आदि के द्वारा भारतीय विद्वानो को उपलब्ध कराने को कृतसकल्प है।

आजादी और..

(पृष्ठ ६ का शेष)

भाग में असतोष और पृथकतावाद पनप उठे तो सारे देश का एक रहना कठिन ही नहीं अपितु असभव भी हो जाता है। हमारा पिछला इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जब देश के लोगो मे आपसी वैर विरोध तथा पृथकतावाद की भावनाएं पैदा हुई, तभी यह देश गुलाम हुआ। एक गुलाम देश का जो हश्र होता है उसे हम अच्छी तरह से देख चुके हैं और जान चुके हैं। हमे कोई भी ऐसी बात नहीं करनी चाहिए जिससे देश की एकता, आजादी और अखडता खतरे मे पड जाये। श्री लाल बहादुर शास्त्री के ये शब्द बडे महत्वपूर्ण हैं कि, आजादी किसी देश की सबसे पवित्र सपत्ति है और इसकी रक्षा करना देश के लोगो का सबसे बडा कर्तव्य और धर्म है।

हमे ईमानदारी के साथ यह प्रण करना चाहिए कि हम देश की एकता, आजादी व अखडता की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देगे और प्राचीन काल मे हमारे देश को जो गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था—उसे प्राप्त करके दिखायेंगे।

पता—आर्य समाज, पट्टी (अ॰)

शहीद परिवार सहायता निधि

जिन सैनिकों ने राष्ट्र को खण्डित होने से बचाने के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी, उनके निराश्रित परिवारो की सहायता के लिए अपने कर्तव्य को पहचानिये और निधि मे तुरन्त अपनी भेंट भेजिये। चैक/ड्राफ्ट/म आ "आर्य—प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

क्रम सख्या	नाम स्थान	राशि
305	श्री काशीराम—गाजियाबाद	101-00
306	आर्य समाज—आनद नगर	500-00
307	पजाब हिन्दू पार्टी—नकोदर	438-00
308	श्री राजीव सचदेवा—दिल्ली	51-00
309	सत्यवती आहलूवालिया—नई दिल्ली	101-00
310	डा० वी० एच० पटेल—नागधरा	51-00
311	आर्य समाज—रतलाम	51-00
312	प० नारायणदवे—केरल	51-00
313	मै० गांधी वुडवूल इण्डस्ट्रीज—मुरादाबाद	150-00
314	कैप्टिन एस०के० सिंह—पोरबन्दर	201 00
315	शकरलाल आर्य—ग्वालियर	100-00
316	टेकचन्द्र—रांची	101-00
317	प्रकाश श्याम सुन्दर—बडौदा	50 00
318	वैद्य बाबूराम शर्मा—बीकानेर	101-00
319	श्री चन्द्रशेखर—मुरादाबाद	100-00
320	आर्य समाज—अनाज मडी शाहदरा दिल्ली	71-00
321	कमलेश नारग—डेराबसी	50-00
322	श्री प० दयाराम शास्त्री—चण्डीगढ़	51-00
323	प० राधा कृष्ण—बरेली कैंट	260-00
324	श्री डी०एन० चोपडा—नई दिल्ली	100 00
325	आर्य समाज—जनकपुरी, नई दिल्ली	101-00
326	श्री कृष्ण वर्मा—लाजपत नगर नई दिल्ली	51 00
327	आय समाज—विक्रमपुरा, जालन्धर	125 00
328	सुश्री राज बत्रा आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर	50-00
329	श्री तिलकराज मल्होत्रा—पानीपत	51 00
330	कन्या गुरुकुल—हाथरस	250-00
331	आय समाज कन्या गुरुकुल—सासनी	250-00
332	आर्य समाज सं० 22—चण्डीगढ	515-00
333	योगेन्द्र कुमार वृद्धिराजा—,	121 00
334	आय समाज—बसतपुर	50-00
335	श्री अमृत लाल बसल—चण्डीगढ	101 00
336	श्री आर०सी० खन्ना एव श्रीमती शकुन्तला खन्ना—चण्डीगढ	101 00
337	श्रीमती ज्ञान देवी—चण्डीगढ़	101 00
	योग—	4546 00

हिसार के दानवीर श्री रामधारी आर्य

हिसार (हरियाणा) यहां, इमारती लकडी के एक प्रमुख व्यापारी श्री रामधारी आर्य जैसा आदर्श परिवार शायद ही कही मिले। सपत्नीक गृहस्वामी पौत्र-पौत्रियो सहित प्रतिदिन घर में प्रात एक साथ हवन, यज्ञ तथा ऋषि ग्रथो का स्वाध्याय करते हैं। भगवान ने इन्हें धन के साथ ही, शिक्षा सस्थाओं, अनाथालयों, विकलागों, अन्ध विद्यालयो, असहाय महिलाओ, गुरुकुलों और आश्रमो को मुक्त-हस्त आर्थिक सहयोग देने वाला उदार हृदय भी दिया है।

हिसार में मनायी गयी 'सत्यार्थ-प्रकाश" शताब्दी के समय ये नगर की प्रमुख समाज के प्रधान थे। उन्होंने इस समय 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक हजार प्रतियाँ नि शुल्क वितरित की थीं तथा वेद के तीन मत्र व समाज के दस नियम सुनाने वाले छात्र-छात्राओं को बड़ी सख्या में पुरस्कार बांटे थे। स्थानीय दयानद कालेज महिला छात्रावास निर्माण के लिये उन्होंने दो लाख रुपये तथा आदिवासी क्षेत्र स्थित स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम, खुटी के लिये स्वय तथा स्थानीय तौर पर आर्थिक सहयोग जुटाने में उल्लेखनीय सहयोग दिया है। इसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।—नारायणदास ग्रोवर, डायरेक्टर डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल्स, मकान न० 16, वार्ड, 1 न्यू मोराबादी, रांची—8

गीता के कृष्ण से प्रेरणा लें

कानपुर स्थानीय आर्य समाज सीसामऊ मे आर्य उप-प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे नगर की सभी समाजों की ओर से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया। सभा प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे वैदिक यज्ञ एव सन्ध्या वन्दन से प्रारभ समारोह मे वक्ताओ ने देश की विषम स्थिति के समाधान के लिये भागवत के गोपी-वल्लभ कृष्ण की जगह गीता के जन-नायक योगीश्वर कृष्ण से प्रेरणा ग्रहण करने पर बल दिया।

आर्य विदेश यात्रा शुभ हो

दिल्ली अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा आगामी ७ सितम्बर को साय ४ बजे आर्य समाज करौल बाग मे भू पू सासद सुश्री सविता बहन की अध्यक्षता मे यज्ञ एव सभा का आयोजन कर रही है। देश के विभिन्न प्रदेशों से दिल्ली बैंकाको, पटईया, पिनांग ,मनिला, टोक्या ओसाका, हांगकांग, कोआलाम्पुर, सिंगापुर की २० दिवसीय यात्रा पर ८ सितम्बर प्रात पालम से रवाना होने वाले आर्य यात्रियों को उक्त सभा में शुभकामना अर्पित की जायेगी।

स्वामी अग्निवेश लन्दन में

लन्दन स्थानीय आर्यसमाज के सत्सग यहाँ सुचारु रूप से चल रहे हैं। वन्देमातरम् भवन मे इस वर्ष गर्मियों मे, स्वामी अग्निवेश, श्री रामकुमार शर्मा, श्री प्रमनाथ कक्कड व श्रीमती [illegible] कक्कड़ के अतिरिक्त अन्य देशों से भी अनेक आर्य विद्वान् व [illegible] पधारे रहे हैं।

सागर विश्वविद्यालय मे दयानन्द चेयर

नागपुर श्रीमती कौशल्या देवी की अध्यक्षता मे म० प्र० एव विदर्भ प्रान्तीय आर्यसमाजो की अन्तरग बैठक मे सागर विश्वविद्यालय मे महर्षि दयानन्द चेयर की स्थापना का निर्णय किया गया। इस हेतु प्रान्तीय तथा अन्य समाजो से एक लाख रु० की निधि सग्रह के लिये श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव के सयोजकत्व मे एक समिति गठित हुई। समिति मे अन्य सदस्य है श्री लक्ष्मीनारायण दुबे, सागर तथा श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल, खण्डवा।

बैठक मे पेट्रो डालर का लालच देकर आदिवासी ग्राम सोनाली मे किये जाने वाले अधाधुन्ध धर्म परिवर्तन पर चिन्ता व्यक्त की गई। इन राष्ट्रविरोधी गतिविधियो को रोकने हेतु वहाँ दयानन्द सेवाश्रम खोलने का निर्णय लिया गया।

दहेज के लिए पत्नी की हत्या सर्वखाप फैसला करेगी

हिसार हिसार की खाप पचायत ने ग्राम निछपडी के बदलू को दहेज के लिए अपनी पत्नी की अप्रैल में हत्या के अभियोग का दोषी ठहरा कर ३१०० रु० का अर्थ-दण्ड एव सामाजिक बहिष्कार का निर्णय दिया था। अभियुक्त द्वारा निर्णय न मानने पर मामला सर्वजातीय सर्वखाप पचायत को उचित निर्णय हेतु भेजा गया है। सर्वखाप पचायत २ सितम्बर को अपना फैसला देगी जिसकी स्थानीय अंचलों में उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है।

वार्षिक चुनाव

आय समाज नौरोजी नगर नई दिल्ली मे श्री कृष्णलाल सहगल, प्रधान श्रीकैलासचन्द्र वार्ष्णेय,मन्त्री तथा श्री हरीशचन्द उतरेजा कोषाध्यक्ष चुने गये।

आय समाज 'ए' ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली के मेजर मनोहरलाल महाजन प्रधान श्री विक्रम नरुला मत्री तथा श्री गोपालकृष्ण बजाज कोषाध्यक्ष चुने गये।

शिक्षक ही बालक का चरित्र निर्माता

खण्डवा (म०प्र०)आर्य समाज सचालित विद्यालयो मे स्वतत्रता-दिवस समारोह पर ध्वजारोहण करते हुए राष्ट्रपति-पुरस्कृत उपजिला पुलिस अधीक्षक श्री डी वी नारमदेव ने कहा कि बालको मे नि स्वार्थ भावनायुक्त चरित्र का विकास उन्हे स्वतन्त्रता का वास्तविक अर्थ बताकर केवल शिक्षक ही कर सकते हैं। बालको ने भाषण, कविता-पाठ व सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

सवर्ण से विवाह पर हत्या

पटना वैशाली जिले के प्रवोधी नरेन्द्र गांव के कुछ सवर्णो ने श्री राजकिशोर ठाकुर की इसलिये हत्या कर दी क्योकि उन्होने एक सवर्ण नवयुवती शीला से वैदिक रीति से विवाह किया था। उनके नवजात शिशु को भी हत्यारों ने नहीं बख्शा। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रदेश सरकार से अपराधियों को कठोरतम दण्ड तथा विधवा को सरक्षण देने की अपील की है।

आर्य अनाथलय फिरोजपुर छावनी में 'रक्षा बन्धन' तथा 'वन महोत्सव'

डिप्टी कमिश्नर द्वारा डी० ए० वी० संस्थाओं की विशिष्ट सेवाओं की सराहना

चित्र-१. प्रि. पी. डी चौधरी तथा श्रीमती चौधरी मुख्य अतिथि सरदार इन्द्रजीत सिंह डिप्टी कमिश्नर का फूलों द्वारा स्वागत करते हुए। **चित्र** २. डिप्टी कमिश्नर महोदय यज्ञशाला की वाटिका में पौधा लगाकर वनमहोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए। **चित्र** ३. मुख्य अतिथि को आश्रम की कन्या राखी बाँधते हुए। **चित्र-**४. डी. ए. वी. हायर सेकेण्ड्री स्कूल की छात्राएं लोक-गीत प्रस्तुत करते हुए। **चित्र-**५. श्री ओ. के. खुल्लर बार-एसोसियेशन के प्रधान, आश्रम की कन्याओं को वस्त्र प्रदान करते हुए। **चित्र-**६. दयानन्द माडल स्कूल की छात्राएं किरण व प्रमिला लोक नृत्य प्रस्तुत करते हुए। **चित्र-**७. सरदार इन्द्रजीत सिंह लोक नृत्य प्रस्तुत करने वाली कन्याओं को पारितोषिक वितरण करते हुए। **चित्र-**८. मुख्य अतिथि अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य अनाथालय की चौमुखी उन्नति की प्रशंसा करते हुए। **चित्र-**९. मुख्य अथिथि द्वारा ७००० रुपए की ग्रान्ट की घोषणा के वाद प्रि० चौधरी उनका धन्यवाद करते हुए।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी में 11 अगस्त को रक्षा बन्धन का पर्व तथा वन-महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रावणी के विशेष यज्ञ से हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रि० पी० डी० चौधरी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष चौधरी ने की। यजमान श्री कुशल कालिया तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आशाराय प्रिन्सिपल (डी०ए० वी. महिला महाविद्यालय फिरोजपुर) थे। यज्ञ में नगर के विशिष्ट व्यक्ति श्री रामचन्द्र आर्य, सुपुत्र श्री अतुल शर्मा, प्रसिद्ध उद्योगपति रविदत्त सानन के सुपुत्र वीरेन्द्र सानन, श्रीमती कान्ता खन्ना तथा डी० ए० वी० संस्थाओं की प्रिन्सिपलों तथा अध्यापिकाओं ने सोत्साह भाग लिया। पंडित देवीराम शर्मा तथा मनमोहन शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

यज्ञ के पश्चात् रक्षा बन्धन के सांस्कृतिक समारोह की अध्यक्षता सरदार इन्द्रजीत सिंह डिप्टी कमिश्नर फिरोजपुर ने की। मुख्य अतिथि का पुष्पहार से स्वागत किया गया।

मुख्य अतिथि ने यज्ञशाला की वाटिका में एक पौधा लगाकर (वन महोत्सव का) उद्‌घाटन किया। प्रि. चौधरी ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए कहा—सरदार इन्द्रजीत सिंह जी एक उच्च कोटि के प्रशासक ही नहीं, अपितु स्वयं सहृदय तथा सुसंस्कृत व्यक्तित्व के स्वामी हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित इस अनाथाश्रम की पावन धरती पर स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मुझे विश्वास है कि उनका आशीर्वाद बच्चों का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस आश्रम में हमारा 5000 वृक्ष लगाने का लक्ष्य है।

इसके बाद अनाथालय, उसके द्वारा संचालित दयानन्द माडल स्कूल दयानन्द गर्ल्स मिडिल स्कूल दयानन्द प्राइमरी स्कूल तथा डी०ए०वी० गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल की छात्राओं ने मनोरंजक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए पुरस्कार वितरण करते हुए अध्यक्षीय भाषण मे डिप्टी कमिश्नर महोदय ने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं ऐसी संस्था मे आया हूं, जहां अनाथ एवं सामाजिक जीवन से ठुकराए उपेक्षित बच्चों को सनाथ और समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरीक बनाने के ध्येय से सेवा की जाती है। यद्यपि मैंने इस संस्था की प्रगति की प्रशंसा सुनी थी, परन्तु आश्रम के सुन्दर, स्वच्छ, शान्त तथा स्वस्थ वातावरण मे आकार मैं आश्चर्य चकित हूं। यह आश्रम किसी भी ओर से अनाथ नहीं लगता और न ही यहां रहने वाले बच्चे अनाथ लगते हैं। ऐसा इन बच्चों के चेहरों से झलकने वाली सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता से आभास होता है। मुझे ऐसा लगता है कि चौधरी साहब के पितृत्व की छाया व श्रीमती चौधरी की ममता बच्चों के जीवन में हरियाली लेकर आयी है। इस सुन्दर व पवित्र महानतम कार्य के लिए ये दोनों अत्यन्त प्रशंसा के पात्र हैं।

डी० ए० सी० आन्दोलन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में तो डी०ए०वी० संस्थाओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जिसके लिए सारा देश इनका ऋणी है माननीय अतिथि ने बच्चों के लिए आश्रम को सात हजार रु० देने की घोषणा की।

बार एसोसियेशन तथा लायंस क्कब ग्रेटर के प्रधान श्री ओकार खुल्लड़ ने अपने भाषण में चौधरी साहब तथा श्रीमती चौधरी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन्होंने तो वास्तव मे आश्रम का कायापलट कर दिया है। मिशनरी स्प्रिट से ये संस्था की व बच्चों की भलाई के लिए निष्ठा से दिन रात जुटे हुए हैं। इन्होंने कहा कि डी० ए० वी० कालेज जालेन्धर मे मुझे इनका शिष्य होने का गौरव प्राप्त है। इन्होंने लायन्स क्लब तथा बार एसोसियेशन की तरफ से बच्चों को वस्त्र वितरण किए। लायन्स क्लब के प्रधान श्री आर.के. गोयल, मन्त्री श्री एस०सी० खेड़ा तथा आर्य नेता श्री रामचन्द्र आर्य ने भी बच्चों को वस्त्र प्रदान किए।

फिरोजपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रविदत्त सानन ने भी 500 रु० देने का वचन दिया। प्रि० पी० डी चौधरी ने मुख्य अतिथि और आश्रम के कार्यकर्तागण व दयानन्द माडल स्कूल, दयानन्द गर्ल्स स्कूल के प्रिन्सिपलों व अध्यापिकाओं का इस उत्सव में सहयोग देने के लिए आभार प्रकट किया।

लन्दन आर्यसमाज शिष्ट-मंडल रूस में

लन्दन : लन्दन प्रोग्रेसिव ग्रुप द्वारा, आर्य समाज लन्दन के प्रधान प्रो. सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज के नेतृत्व में विभिन्न समुदायो के सदस्यो का एक प्रतिनिधि मण्डल 11 अगस्त को सोवियत रूस की सद्भावना यात्रा पर रवाना हो गया है। मण्डल सोवियत रूस में भ्रमण के अतिरिक्त वहां सास्कृतिक व वैचारिक गोष्ठियो मे भी भाग लेगा। ताशकन्द, समरकन्द व लेनिनग्राद के अतिरिक्त देश के कई अन्य अंचलो की द्वि-साप्ताहिक यात्रा के सिलसिले मे साम्यवादी देशो को वैदिक सिद्धान्तो से अवगत कराने की दृष्टि से श्री भारद्वाज अपने साथ प्रचुर मात्रा मे वैदिक साहित्य, हवन-सामग्री तथा अन्य प्रचारोपयोगी वस्तुएं ले गये है।

—जिला आर्य सभा के श्री महेन्द्रपाल वर्मा,प्रधान, श्री आशानन्द आर्य महामंत्री तथा श्रीओमप्रकाश पासी, कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

यू० १०३/१०८ लायसेंस ट पोस्ट विदाउट प्रीपैमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सा० (४०९)

Members of the D. A. V. fraternity and Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha

Cordially invite you

to felicitate Prof. Veda Vyasa, President, D. A. V. College managing Committee.

On his 82nd Birth-day

On sunday, the 2nd september, 1984 at 9-30 A.M.
at Cultural Centre (Auditorium) of Asian Village Complex, Siri Fort Road, New Delhi

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI
has very kindly consented to preside over the function
Sh. Ram Gopal(Shawl Wale)President, Sarvadeshik Sabha, New Delhi
SHRI JAGAN NATH KAUSHAL,
Minister of Law, Justice and Company Affairs.
SHRI H. K. L. BHAGAT,
Minister of State for Information and Broadcasting.
SHRI RAM NIWAS MIRDHA
Minister of State for External Affairs,
have graciously agreed to grace the occasion.

R.S.V.P.	Reception Committee	
Dr. D. P. Seth. Genl. Secy., D. A. V. College Managing Committee.	Darbari Lal, Organising Secy., D.A.V. College Managing Committee,	R.N. Sehgal, Genl. Secy.. Arya Pradeshik Oratinidhi Sabha.
Chairman	& Working President AP. P. Sabha.	

PUNJAB UNIVERSITY SENATE ELECTION FROM GRADUATES' CONSTITUENCY ON SUNDAY THE 23rd SEPT., 1984

KINDLY CAST YOUR

FIRST PREFERENCE VOTE

IN FAVOUR OF

SHRI DARBARI LAL

Organising Secretary

**D. A. V. COLLEGE MANAGING COMMITTEE
CHITRA GUPTA ROAD,
NEW DELHI-110055.**

1. Sh. Veda Vyasa, President, D. A. V. College Mg. Committee, New Delhi.
2. Dr. D. P. Seth, Genl. Secretary, D.A.V. College Mg. Committee New Delhi.
3. Sh. Ram Nath Sehgal General Secretary, Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha, New Delhi.
4. Principal Shanti Narian Vice-President, D. A. V. College Mg. Committee New Delhi.
5. Principal Mohan Lal P. G. D. A. V. College, New Delhi.
6. Principal T. R. Gupta Hans Raj Model School Punjabi Bagh New Delhi.
7. Principal S. Taneja, Kulachi Hans Raj Model School Ashok Vihar, Delhi.
8. Principal G. P. Chopra, Hans Raj College, Delhi

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज लक्कड बाजार, शिमला को एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। पत्र व्यवहार का पता—प० दयाराम शास्त्री, आर्य समाज, सैक्टर 16 डी चण्डीगढ़।

(2) एक सदगृहस्थ पुरोहित की आवश्यकता है, जो वैदिक विचार धारा से ओतप्रोत लगन शील, प्रचारक सुन्दर वक्ता हो। बिजली, पानी आवास की व्यवस्था नि.शुल्क। वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र सम्पर्क करें—[illegible] मंत्री आर्य समाज, नीलोखेड़ी (करनाल)

योग्य वर चाहिए

23वर्षीय, बी०ए० पास, ब्यूटी कलचर कोर्स किया है, कद 5 फुट 4 इंच, सुन्दर सुशील कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। एक बहिन की शादी मेडिकल अफसर से हुई है। दो भाई हैं। पिता का निजामुद्दीन (दक्षिण दिल्ली) में निजी मकान है। सम्पर्क करे—रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

(२)२८ वर्षीय. ५ फुट ४ इंच, ग्रेजुएट, गुजरांवला (शेखूपुरा) निवासी, सुन्दर सुशील कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। पत्र-व्यवहार का पता—एम. एल. खन्ना, ओ-२४, जंगपुरा ऐक्सटेंशन, नई दिल्ली-१४

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

भारत वर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बन।—प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी

HOLY VEDIC LORES

IN ENGLISH PROSE AND VERSE

Based on discourses on yoga meditation delivered at Pahalgam Kashmir by Shri D. K. Kapoor.

1. **"Vedic Concept of Yoga Meditation"** Price Rs. 30/-
2. **"Lectures on Yoga Meditation, as revealed In The Holy Vedas"** Price Paper Back Rs 40/- DELUXE EDITION Rs. 45/-

Author Raj Yoga Acharya Shri Devendra Kumar Kapoor, B. A. Hons. President Arya Samaj Santa Cruze Bombay.

3. **"Vedic Concept of God"** Price Rs. 30/-

Author Shri Swami Vidyanand Saraswati
Available from.. Allied Publishers Pvt. Ltd., Delhi, Bombay, Calcutta, Madras, Banglore, Ahmedabad, Hyderabad.
Publishers...Deva Vedic Prakashan, 123 Nibbana, Pali Hill, Bandra, Bombay—400050.

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वा.मत्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ३८, रविवार, १६ सितम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | आश्विन कृष्णा ६, २०४१ वि०

बम्बई में हिन्दुस्तान हिन्दू मंच की स्थापना

समस्त हिन्दुत्ववादी संगठनों का एक साँझा राजनैतिक दल

बम्बई। हिन्दू नेताओं का एक राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन बम्बई महानगरी में स्थित पाटीदार बाड़ी घाटकोपर में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से आये लगभग १०० से अधिक हिन्दू नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

हिन्दुत्व की रक्षा को समर्पित प्रमुख नेताओं में श्री बलराज मधोक अध्यक्ष भारतीय जनसंघ दिल्ली, श्री बाल ठाकरे—शिवसेना प्रमुख बम्बई, श्री सी० एम० शाह उप-अध्यक्ष जय रामराज्य पार्टी गुजरात, श्री पवन कुमार शर्मा पंजाब, हिन्दू सुरक्षा समिति जालंधर, श्रीमती राकेश रानी अध्यक्षा दयानन्द संस्थान एव हिन्दू रक्षा समिति दिल्ली, श्री सुव्रत चटर्जी अखिल बंगला नागरिक मंच और बी० एल० ओ०, श्री पी० मी० कल्याण सुन्दरम् तमिलनाडु, हिन्दु फ्रंट मद्रास, श्री दशरथ राव आन्ध्र प्रदेश हिन्दू सेना, ठाकुर ओंकार सिंह चरक अध्यक्ष बार कौन्सिल नई दिल्ली, श्री मदन मोहन जगा हिन्दू नेशनल पार्टी हिमाचल प्रदस बाला राव सावरकर हिन्दू महासभा श्री सदाजीवत लाल जी और ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी विश्व हिन्दू परिषद्, आचार्य आर्य नरेश हिन्दू अवेकनिंग फोरम, श्री आर० एस० सिंह प्रधान देव जन्म भूमि बचाओ समिति उत्तर प्रदेश, आदि सम्मेलन में उपस्थित थे। कैप्टिन देव रत्न आर्य ने सम्मेलन का संयोजन किया।

स्वागताध्यक्ष कैप्टिन आर्य के स्वागत भाषण के बाद सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने किया। श्री सेठ सदाजीवत लाल ट्रस्टी विश्व हिन्दू परिषद् ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। प्रो० बलराज मधोक, श्री बाल ठाकरे, श्री बाला राव सावरकर, आचार्य आर्य नरेश, श्रीमती राकेश रानी, श्री सुव्रत चटर्जी, श्री सी० एम० शाह, ठाकुर ओंकार सिंह, और सरदार अमरजीत सिंह पाल आदि प्रमुख नेताओं के भाषण हुए।

सम्मेलन में सवसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया

हिन्दू नेताओं और देश के विभिन्न भागों से आये हिन्दू संगठनों के प्रतिनिधियों का यह सम्मेलन सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित करता है कि हिन्दू राष्ट्रीय भावना और हिन्दू राष्ट्र के प्रति समर्पित संगठनों का एक सांझा राजनैतिक दल "हिन्दुस्तान हिन्दू मंच" के नाम से स्थापित किया जाये। यह मंच आने वाले चुनावों में एक झंडा, एक निशान और समान चुनाव घोषणा-पत्र के अन्तर्गत चुनाव लड़ेगा। सम्मेलन यह प्रस्ताव भी पारित करता है कि प्रो० बलराज मधोक से इस मंच की अध्यक्षता स्वीकार करने की प्रार्थना की जाय व उन्हें मंच की राष्ट्रीय समिति को नामांकित करने का अधिकार दिया जाय। सम्मेलन ने महाराष्ट्र राज्य का प्रमुख श्री बाला साहिब ठाकरे को और गुजरात राज्य का प्रमुख श्री शंभू महाराज को और उन्हें अपने-अपने राज्य में मंच की राज्य समिति नामांकित करने का अधिकार दिया।

सम्मेलन में यह भी निश्चय हुआ कि अखिल भारतीय हिन्दू मंच उन सभी के लिये खुला है जो राष्ट्र को धर्म, जाति व समुदाय से सर्वोपरि मानते हैं, हिन्दुस्तान को हिन्दू देश एवं हिन्दू राष्ट्र मानते हैं और हिन्दुस्तान की संस्कृति, आचार संहिता, हिन्दू व्यक्तित्व की सुरक्षा के लिये वचनबद्ध हैं।

उपरोक्त अन्य वातों के अतिरिक्त अखिल भारतीय हिन्दू मंच धर्म संसद द्वारा राजनैतिक दल के लिये निश्चित किये गये निम्न निर्देशों को भी लागू करने का पूर्ण प्रयत्न करेगा।

(१) मुसलमान एवं क्रिश्चियनों द्वारा हिन्दुओं के धर्मान्तरण पर वैधानिक प्रतिबंध (२) धर्मान्तरण के लिये आने वाली विदेशी सहायता पर प्रतिबंध। (३) समस्त नागरिकों के लिये समान व्यक्तिगत एवं वैवाहिक कानून। (४) गो माता और उसकी सन्तति के वध पर केन्द्रीय कानून द्वारा पूर्ण प्रतिबंध (५) भगवान श्री राम एवं योगिराज कृष्ण की जन्मस्थली एवं काशी विश्वनाथ मंदिर की हिन्दुओं को वापसी। (६)

(शेष पृष्ठ १२ पर)

कैप्टिन देवरत्न मंत्री बने

बम्बई में हिन्दुत्ववादी विचारधारा के पुरस्कर्ताओं का जो सम्मेलन हुआ उसमें समस्त राजनीतिक दलों का एक सशक्त विकल्प तैयार करने के लिए 'हिन्दुस्तान हिन्दू मंच' की स्थापना की गई। उसके अध्यक्ष श्री बलराज मधोक और मंत्री कैप्टिन देवरत्न आर्य मनोनीत किये गए। यह मंच आगामी चनावों को लक्ष्य करके बनाया गया है। इसकी नीति और कार्यक्रम सम्बन्धी विवरण आगामी अंक में पढ़िये।

श्री सूर्यदेव प्रधान निर्वाचित

नई दिल्ली—९ सितम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भारी बहुमत से आर्य समाज दिवान हाल के प्रधान और आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री सूर्यदेव को प्रधान निर्वाचित कर लिया। इस सभा के अधीन २८ स्कूल और ७ चिकित्सालय भी चलते हैं।

[illegible]—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अज्ञान : अभाव : अन्याय

दुःख और अशान्ति के मूल कारण

—पिशोरी लाल प्रेम—

संसार में जो दुःख और अशांति है इसके तीन मूल कारण है। अज्ञान, अभाव, अन्याय। जब तक इन कारणों को दूर न किया जाए तब तक सुख और शान्ति नही हो सकती।

अज्ञान—अज्ञान के कारण लोग कई प्रकार के मिथ्या विश्वासों में फंस कर बहुत दुःख उठाते है। संसार मे इस समय अनेक प्रकार के मिथ्या विश्वास फैले हुए है। परन्तु मै इस लेख मे केवल कुछ बातो का वर्णन करना चाहता हू।

जो लोग निराकार शुद्ध चेतन सर्वज्ञ ईश्वर के स्थान पर अनेक प्रकार के देवी-देवताओं की जड़ मूर्तियां बनाकर उनकी पूजा करते है, वे घोर अन्धकार को प्राप्त होकर बहुत दुःख उठाते हैं। क्योकि उपास्य देव के गुणो को ही उपासक ग्रहण करता है। इसलिए जड़ मूर्तियों के उपासक जडत्व को ही ग्रहण करते है। इससे यह लोग उस परम आनंद से वंचित रह जाते है जो आनंद, आनंद-स्वरूप सुखस्वरूप परमात्मा की उपासना से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा से अनेक मत-मतान्तर फैल जाते है जिससे आपस में विरोध बढ कर लड़ाई-झगड़े होने लगते है जो कि बहुत ही, दुःख का कारण होते हैं।

जो लोग ईश्वरीय ज्ञान वेद को न मानकर, उसके स्थान पर मनुष्य-कृत ग्रंथों मे विश्वास रखते है और उनमें लिखी हुई सृष्टि नियम के विरुद्ध, विज्ञान और बुद्धि के विपरीत, असत्य कहानियों को सत्य मान लेते है, वे लोग कई और अन्ध-विश्वासों में फंसने से नही रह सकते।

जो लोग राम कृष्ण आदि महापुरुषों को ईश्वर का अवतार मान कर इन महापुरुषो के जीवन से कोई भी शिक्षा ग्रहण नही करते, और इस अन्धविश्वास के कारण कि इन महापुरुषों के नाम की माला जपने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है, यज्ञ परोपकार आदि शुद्ध कर्मों के करने की आवश्यकता नही समझते, वे स्वार्थ परायण बनकर अशुभ कर्मों में फंस जाते है। अशुभ कर्मों के करने से दुःख और अशान्ति तो बढ़ती ही है।

जिन लोगो का विश्वास है कि गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान करने से मुक्ति मिलती है, वे दूर-दूर से यात्रा का कष्ट सह कर कुंभ आदि के मेलों पर इन नदियो में स्नान करने के लिए जाते हैं। कुम्भ आदि पर जाकर क्या दुर्गति होती है, यह बताने की आवश्यकता नहीं। कईयों की जेब कट जाती है, कई स्त्रियों का अपने पतियो से और कई बच्चों का अपने माता-पिता से साथ छूट जाता है। एक-दूसरे को तलाश करने मे बहुत परेशान होते है। स्नान के समय जो धक्कमपेल होती है, उसमें तो कई बेचारों की तो मृत्यु ही हो जाती है, कई घायल हो जाते है, कई दब जाते है, कई नदी में डूब जाते है। तात्पर्य यह कि उस समय प्रलय काल का सा दृश्य दिखाई देता है। ऐसे अवसरों पर पंडे-पुजारी भी भोले-भाले श्रद्धालुओं को खूब लूटते हैं। इस प्रकार यह सस्ती मुक्ति के अभिलाषी लोग अपने समय और धन का नाश तो करते ही है, परन्तु महाकष्टों और दुःखों को भी सहते है।

भूत-प्रेत, डाकीनी-शाकिनी, पिशाच, शैतान आदि कोई सत्ता नही है। वे केवल भ्रम हैं। किन्तु इस भ्रम के कारण भी बहुत से लोग बिना बात के ही डरते रहते हैं। ऐसे लोगों में यदि किसी को कोई सन्निपात, मिरगी अथवा कोई मानसिक रोग हो जाता है और वह अंट-शंट बकने लगता है, तब उस रोगी के किसी रिश्तेदार, किसी वैद्य या डाक्टर से इलाज न करा कर, यह समझ कर कि इस रोगी में कोई भूत-प्रेत घुस गया है, भूत निकालने के लिए कई प्रकार के जादू-टोने, जन्त्र-तन्त्र आदि करा कर जहा अपने धन का नाश करते हैं, वहां रोगी के रोग को भी बढ़ा लेते हैं और कभी उसकी मृत्यु का कारण बनते हैं। इस प्रकार कष्ट उठाते हैं, दुःखी होते हैं।

हमारी अपनी बिरादरी का एक सज्जन पुरुष, जो अध्यापक है, उसका एक छोटा बच्चा बीमार हो गया। उसने कुछ इलाज कराया, परन्तु बच्चे को आराम नहीं आया। तब वह किसी के कहने पर अपने बच्चे को किसी साधु के पास ले गया। साधु ने कहा कि बच्चे के मस्तिष्क पर किसी भूत-प्रेत का प्रभाव है, यदि इसके मस्तिष्क से खून निकाला जाए तो भूत निकल जायेगा और यह ठीक हो जायेगा। पहले तो बालक का पिता घबराया, फिर साधु की बातों में आकर बच्चे को साधु के हाथो में दे दिया। साधु ने बच्चे के मस्तिष्क में चाकू मार कर खून निकाला। बच्चा पहले ही काफी कमजोर था। खून निकलने से बच्चा मर गया। इस प्रकार बच्चे के मरने से बच्चे के पिता को कितना असहनीय दुःख हुआ, इसका वर्णन करना कठिन है। इसका कारण केवल मात्र अज्ञान ही तो है।

फलित ज्योतिष मे विश्वास रखने वाले अपने सब दुःखो का कारण ग्रहों की चाल को ही मानते है। इन लोगों पर कभी शनि और मंगल क्रुद्ध होते हैं। कभी इनमें राहु-केतु घुस जाते हैं। कभी इन पर बुध और बृहस्पति सवार हो जाते हैं। इन ग्रहों से बचने के लिए ये भोले-भाले लोग कई प्रकार के पूजा-पाठ और जाप आदि कराते हैं। इनके अज्ञान का लाभ उठा कर चालाक दंभी और ठग लोग इनको अपने जाल में फंसाकर खूब लूटते हैं। इस प्रकार इनके दुःख दूर न होकर उलटा बढ़ जाते हैं।

ऐसे सम्प्रदाय, जो केवल ईसू-मसीह को ही भगवान का एकमात्र पुत्र और केवल मोहम्मद साहब को परमेश्वर का रसूल मानते हैं और इन पर ईमान लाने को ही स्वर्ग का साधन मानते हैं, उनके मत के अतिरिक्त शेष सब मतों के लोग काफिर हैं, ऐसे सम्प्रदाय संसार में सबसे अधिक अशान्ति फैलाते हैं। अपने को अच्छा अन्यों को बुरा समझना, प्रेम के स्थान पर घृणा का प्रचार करना, इससे अधिक अज्ञान और क्या होगा।"

अभाव—भारत वर्ष में कई वस्तुओं का अभाव है जो दूसरे देशों से मंगवानी पड़ती हैं। परन्तु जन-साधारण की जीवनोपयोगी भोजन-वस्त्र आदि की कमी नहीं है। फिर भी अधिक लोगों को खाने को रोटी, पहनने को वस्त्र, रहने को मकान नहीं मिलता। शीत ऋतु में रात को जब मकान के भीतर रजाई ओढ़ कर भी मनुष्य सर्दी अनुभव करता है, उस कड़ाके की सर्दी में मैंने स्वयं अपनी आँखों से, दिल्ली चाँदनी चौक फव्वारा बस-स्टैण्ड पर कई मजदूरों को रात के समय नीले आकाश की छांव में टाट ओढ़ कर सोये देखा है। ये बेचारे कितने कष्ट में हैं। आँखों में आँसू आ जाते हैं। जब मनुष्य के बच्चे भूख से बिलख रहे हों और वह उन्हें रोटी न दे सके, जब मनुष्य की स्त्री फटे-पुराने चीथड़ों में शीत से ठिठुर रही हो और वह उसे वस्त्र न दे सके, जब मनुष्य की सन्तान या उसकी पत्नी या वह स्वयं बीमार हो, किन्तु दवाई का प्रबन्ध न हो सके, जो मनुष्य अपने बच्चों को पढ़ाना चाहता हो, परन्तु पढ़ाई का खर्च पूरा न कर सकता हो, जब मनुष्य पर कोई दुःख-सुख आ जाए और कोई उसकी सहायता करने वाला न हो, ऐसी अवस्था में उसका हृदय फटेगा नही, तो क्या होगा? भारत वर्ष में अधिक संख्या ऐसे लोगो की है जिनकी धन के अभाव के कारण साधारण आवश्यकतायें भी पूरी नही होती। इससे इनका मन दुःखी और अशान्त हो जाता है। इनकी आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है और जब इनको धैर्य देने वाला भी कोई नहीं होता, तब ये अभागे मनुष्य या तो आत्म-हत्या कर लेते हैं, या ईसाई पादरियों अथवा मौलवियों के जाल में फंसकर अपने पूर्वजों का धर्म गंवा बैठते हैं और भारतवर्ष के लिए कई प्रकार की उलझनें उत्पन्न कर देते हैं।

अन्याय—महर्षि स्वामी दयानंद ने लिखा है कि पापी दुराचारी चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसका वाणी से भी सत्कार नहीं करना चाहिए, और धर्मात्मा सदाचारी चाहे कितना भी निर्बल-निर्धन क्यों न हो, उसका आदर सत्कार अवश्य करना चाहिए। परन्तु वर्तमान समय में लोग इसके विपरीत चलते हैं। धनवान् व्यक्ति चाहे कितना भी झूठा, फरेबी, बेईमान, दुराचारी और अयोग्य क्यों न हो, फिर भी समाज में उसका अधिक से अधिक सम्मान होता है क्योंकि वह सभाओं और संस्थाओं को दान दे सकता है। बड़े-बड़े नेताओं को पार्टियां दे सकता है। परन्तु निर्धन चाहे कितना भी योग्य, विद्वान्, सदाचारी, धर्मात्मा क्यों न हो, उसका समाज में कोई सम्मान नहीं होता। क्या यह अन्याय नहीं? एक धनवान व्यक्ति बड़े से बड़ा अपराध करके भी घूस देकर दंड से बच सकता है। परन्तु एक निर्धन व्यक्ति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सुभाषित

पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड ।
ताते तो चक्की भली, पीस खाय ससार ॥
न्हाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाय ।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय ॥

माला फेरी काठ की, धागे लई पिरोय ।
मन मे घुण्डी पाप की, नाम जपे क्या होय ॥
जिन खोजा तिन पाइया, पारब्रह्म घर माहि ।
यह जग बौरा हो रहा, इत उत ढू ढत जाहि ॥

सम्पादकीयम्

गोधन : राष्ट्र धन

एक छोटे देहाती किसान की कल्पना करिये जिसके पास तीन-चार बच्चे हैं, पत्नी और एकाध भूखे जानवर हैं। उसके पास भूमि का छोटा-सा टुकडा है और वह बैल खरीदने में असमर्थ है। पति-पत्नी दिन-रात मेहनत करते हैं, पर अपने बच्चो के लिए दूध तो क्या छाछ भी नहीं जुटा सकते। रासायनिक खाद, नये उन्नत किस्म के बीज और ट्रैक्टर की तो वह कल्पना भी नही कर सकता। अपने बच्चो को न वह पाठशाला भेज सकता है और न ही उनके समुचित विकास के लिए पौष्टिक भोजन दे सकता है। उसके सत्यानाश के लिए सरकार ने राजस्व प्राप्ति के नाम पर एक देशी शराब की दुकान उसके पडोस मे खोल दी है, जिसके आकर्षण से बचना उसके लिए मुश्किल है। यदि वह भूमिहीन मजदूर है तो उसकी दुर्दशा का वर्णन करना और भी कठिन है। तब उसे वर्ष के आधे दिनो मे ही काम मिल पाता है, बाकी समय मे उसके पास अपने गुजारे का कोई साधन नही रहता। तब क्या तो वह मेहनत मजदूरी करने के लिए शहर की ओर भागता है या किसी तरह गाव मे ही बडी मुश्किल से अपने दिन गुजारता है।

अब तक हमारे जितने विकास कार्यक्रम और पचवर्षीय योजनाए बनी हैं, वे सब भी देहाती किसान की इस हालत को नही बदल सकी। बड़ किसानो की बात छोड दीजिए। हरित क्राति का जो भी कुछ लाभ मिला है वह केवल उन बडे किसानो को ही मिला है, जिनकी सख्या देश मे १० प्रतिशत से अधिक नही है। हमारा देश कृषि प्रधान कहलाता है और इसकी ७३ प्रतिशत आबादी कृषि कार्य पर निर्भर है। इनमे से १० प्रतिशत को छोडकर शेष ६३ प्रतिशत किसान आधुनिक वैज्ञानिक यान्त्रिक साधनो का उपयोग करने में असमर्थ हैं। ये यान्त्रिक साधन न दूध दे सकते हैं न बैल और न गोबर। मशीने देहाती जनता की जिन्दगी का भावनात्मक अग भी नही बन सकती। 'गरीबी हटाओ' नारो ने अगर कुछ किया तो यही कि हमारी आखो मे अगुली डालकर हमे यह बता दिया कि हमारे देश के अपने ही भाई-बहिन लगभग ५० प्रतिशत की सीमा तक गरीबी की रेखा के नीचे जीवित रहने को मजबूर हैं। विकास और प्रगति के समस्त आयोजनो पर यह बडी कटु टिप्पणी है कि देश ने औद्योगिक प्रगति के राजमार्ग पर जिस तेजी से दौड लगाई उसने विषमता की खाइयो को और गहरा कर दिया। अब भी हमारे योजना—निर्माता उन गरीब देहाती किसानो के बजाय नव-धनाढ्य किसानो की दृष्टि से ही योजनाय बनाते हैं और देहाती किसान उनकी आखो से ओझल हो जाता है।

अगर किसानो की हालत सुधारनी है तो हमे पश्चिम की नकल छोड कर भारत की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को पुनर्जीवित करना होगा। उस ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का यदि कोई केन्द्र-बिन्दु है, तो वह गाय और बैल है। गाय के साथ जो पूजा की बुद्धि जुडी हुई है, उसको माता या उसके शरीर मे समस्त देवताओ का निवास मानने की भावना है, उसका धार्मिक और सास्कृतिक आधार चाहे कितना ही पुष्ट क्यो न हो, पर यहा हम उसकी चर्चा नही करना चाहते। केवल राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कहना चाहते हैं कि गोधन हमारा राष्ट्रीय धन है और जब तक हम उसकी उपेक्षा करते रहेगे तब तक राष्ट्र की दरिद्रता कभी दूर नही हो सकती। गौ-हत्या के विरोध में केन्द्रीय सरकार द्वारा कानून बनाये जाने की माग को जो लोग धार्मिक रूढिवाद का नाम देते हैं, क्या उनको यह बताना जरूरी है कि अब प्रगतिशील विचारक ही शराब विरोधी, सिगरेट विरोधी और प्रदूषण विरोधी आन्दोलन चला रहे हैं, क्योंकि स्वस्थ मानव जाति के विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। स्वय विश्व स्वास्थ्य सगठन की ओर से स्तन पान के पक्ष में प्रचार किया जा रहा है और डिब्बाबन्द कृत्रिम शिशु आहारो के विरुद्ध तीव्र अभियान चलाया जा रहा है।

इसके अलावा देश में जो भयंकर ऊर्जा सकट पैदा हो गया है उसके [illegible] का उपाय भी गोधन की वृद्धि ही है। विश्व मे [illegible] के जितने [illegible] हैं, [illegible] बिना [illegible] नहीं। [illegible] की कमी से हमे चार करोड टन कच्चा तेल प्रतिवर्ष मिलना बन्द हो जायेगा। अरबो रुपए की मशीने भी बेकार हो जायेंगी। डीजल पेट्रोल के बिना ट्रैक्टर चलने बन्द हो जायेंगे। बसो और ट्रको के बन्द होने से माल ढुलाई ठप्प हो जायेगी। डामर के अभाव मे सडके खराब हो जायेंगी। रासायनिक खाद न मिलने से खेती चौपट हो जायेगी। और अन्त मे, ऊर्जा के अभाव मे देश को महान् सकट का सामना करना पडेगा।

गाय के शरीर का कोई भी अश ऐसा नही जो उसके जीवित रहते या उसकी मृत्यु के बाद भी मनुष्य जाति के हित मे प्रयुक्त न होता हो। जैसे गोवश बेकार नही, वैसे ही गोमूत्र और गोबर भी बेकार नही। एक क्विटल गोबर और गौमूत्र से ५० क्विटल खाद तैयार हो सकती है। इसके अलावा बहुत कम मूल्य मे घरेलू उपयोग के लिए गैस और ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। गोबर से कितनी ऊर्जा मिल सकती है उसका हिसाब लगाने पर पता लगा कि १६ करोड पीपे कच्चे तेल के बराबर ऊर्जा केवल गोबर से ही प्राप्त की जा सकती है। भारत को प्रति-वर्ष ५ अरब रुपया केवल कच्चे तेल पर ही खर्च करना पडता है। रासायनिक खाद से भूमि की उर्वरा शक्ति पर बुरा असर पडता है, सो अलग। (इस प्रकार देश की नैया को इस मृत्यु-वैतरणी से पार करने के लिए एकमात्र गोवश की रक्षा ही उसका साधन है।

एक गाय अपने बीस वर्ष के जीवनकाल मे एक लाख पचपन हजार पौण्ड दूध सोलह बैल, ५०० टन गोबर और २०० टन मूत्र देती है। एक गाय अपने पूरे जीवन काल मे इक्यावन हजार व्यक्तियो का पेट भरती है। उससे उत्पन्न बैल तीन हजार क्विटल अनाज पैदा करते है जिससे एक बार मे २१ हजार मनुष्यो का पेट भरता है। उन बैलो से ४०० एकड भूमि उर्वरा होती है। गाय से बैल और बछडे से और उनसे पुन गाय एव बैल उत्पन्न होते है। दूध, घी एव प्राकृतिक खाद का यह स्रोत निरन्तर जारी रहता है। इसके साथ ही गाय के साथ भावनात्मक सम्बन्ध बना रहने से जीवन मे अपराध वृत्ति मे कमी आती है।

अब खेती के लिए किसानो को बैल मिलना तो दूभर हो ही गया। उल्टे मुनाफाखोर व्यापारी, सरकारी वित्त विभाग द्वारा विदेशी मुद्रा प्राप्त कराने के लिए गोमास के निर्यात मे एक दूसरे से होड करने लगे है। प्रति-वर्ष गोमास के निर्यात की मात्रा निरन्तर बढती चली जाती है और पिछले बीस सालो मे ही यह दो हजार टन से बढते-बढते एक लाख टन तक पहुच चुकी है। इसमे कोई सन्देह नही कि देश को विदेशी मुद्रा की भी आवश्यकता है, परन्तु हमारे राष्ट्र मे जिस तरीके से यह सब कुछ हो रहा है वह सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी को मारने के बराबर है।

पिछले दिनो सरकार ने विभिन्न राज्यो को पत्र लिखकर गोहत्या के विरोध मे कानून बनाने का उनको परामर्श दिया है। उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार यह दायित्व राज्यो का ही है। परन्तु हम समझते हैं कि—सविधान ने जो अधिकार केन्द्र को दे रखे है उनके अनुसार केन्द्र को ही गोहत्या के निषेध के लिए कानून बनाना चाहिए और सब राज्यो को उस पर अमल करना चाहिए। राज्यो को नीति निर्देशक सिद्धान्त एक तरह से नैतिक आश्वासन ही तो हैं। कुछ राज्यो के कानूनो मे कुछ वैधानिक त्रुटियाँ रह गई हैं—जिनके कारण मुनाफाखोर व्यापारी किसी न किसी बहाने गोवश का विनाश करते हैं। उस सबको रोकना और कानूनी अडचनों को दूर करना भी केन्द्र का ही काम है। राज्यो के ऊपर छोड कर केन्द्र अपनी जिम्मेवारी से नही बच सकता।

इसलिए यदि किसानो की समस्या सुलझानी है, बैल की सुविधा प्रदान करनी है, सस्ती खाद देनी है, ई धन बचाने को गैस सयत्र लगाने की सुविधा देनी है और पर्यावरण को दूषित होने से बचाना है तो इन सबका एकमात्र इलाज यही है कि गोवध बन्दी के लिए केन्द्रीय कानून बने और गोवश की रक्षा के लिए सब तरह का प्रयत्न किया जाय। गोधन ही हमारा असली राष्ट्र धन है।

१४ सितम्बर हिन्दी दिवस पर

राष्ट्र भाषा हिन्दी का महत्व

—प्रो० भद्र सेन, होशियारपुर—

भारतीय राष्ट्र भाषा का इतिहास इस बात का साक्षी है, कि बगाल, गुजरात, महाराष्ट्र आदि अहिन्दी भाषी प्रदेशो के महापुरुषो ने देश की एकता और सारे राष्ट्र की एक साझी भाषा की सिद्धि के लिए हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप मे मान्यता दी। क्योकि यह सर्वविदित बात है कि उन्नीसवी शताब्दी मे तात्कालिक परिस्थितियो के प्रभाव से ब्रज और अवधी ने आधुनिक हिन्दी का रूप धारण किया। तब यह न केवल हिन्दी प्रदेशो की भाषा ही थी, अपितु सारे देश की सम्पर्क भाषा के रूप मे भी सामने आई। जैसे-जैसे सेना, रेल, डाकतार आदि राष्ट्रीय स्तर की चीजें प्रचलित हुई, वैसे-वैसे ही हिन्दी साहित्यिक भाषा के साथ-साथ साझी भाषा के रूप मे भी सामने आई। इसी प्रभाव से प्रभावित होकर तात्कालिक धार्मिक नेताओ, समाज सुधारको और स्वाधीनता सग्राम के सेनानियो ने हिन्दी के इस रूप को स्वीकार किया। उन दिनो स्वाधीनता सग्राम हिन्दी को राष्ट्र भाषा मानकर और मुख्य माध्यम बनाकर लडा गया। अतएव भारतीय सविधान के निर्माताओ ने बहुमत से हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप मे स्वीकार किया।

किसी राष्ट्र की शक्ति उसकी जनता की एकता मे ही निहित होती है और उसी पर राष्ट्र की अखण्डता तथा प्रभुता आधारित है। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है, जब जनता मे भावनात्मक एकता हो। इसके लिए परस्पर भावो का आदान-प्रदान होना जरूरी है। इस दृष्टि से विचारणीय बात यह है कि भारत एक प्राचीन और विशाल देश है। यहा १४ मान्यता प्राप्त भाषा हैं और केन्द्रीय तथा प्रादेशिक रूप मे ३१ राज्य हैं जिनमे भाषा, भूषा, भोज्य, सम्याचार आदि की परस्पर अनेक प्रकार की विविधता है। इस विविधता पूर्ण महान् भू-भाग को एक सूत्र म पिरोने के लिए एक राष्ट्र-भाषा का होना बहुत जरूरी है।

गत वर्ष दिल्ली मे किसान, मजदूर आदि अनेक रैलिया हुई। इनमे अनेक प्रान्तो के विविध भाषा भाषी लोग सम्मिलित हुए। वे सब एक आकाक्षा भावना, विचार, लक्ष्य रखते हुए भी एक भाषा के बिना परस्पर एक ज्ञापन एव एक कार्यक्रम पर कैसे सहमत हो सकते थे। इन विविधताओ मे एकता के भाव को सप्रेषित करने के लिए हिन्दी एक सक्षम भाषा है, क्योकि वह एक बडे भारतीय जन-मानस द्वारा बोली और समझी जाती है।

लोकतन्त्र का वाहन

आज सर्वत्र लोकतन्त्र अपनी श्रेष्ठता के कारण स्पृहणीय हो रहा है, यतो हि लोकतन्त्र मे ही सबको समता, स्वतन्त्रता, सुरक्षा और न्याय सुलभ होता है अर्थात् लोकतन्त्र के समता आदि मूल आधार हैं। इन्ही भावनाओ की उपलब्धि से राष्ट्र मे एकता, अखण्डता और अपनत्व उजागर होता है। प्रजातन्त्र की सफलता के लिए प्रजा मे प्रजातन्त्र की भावना होना जरूरी है। जनता मे प्रजातन्त्र पद्धति का प्रशिक्षण या भाव लोकभाषा द्वारा ही सरलता से प्रसारित किया जा सकता है। क्योकि जनता मे जन भाषा ही भाव सप्रेषण का माध्यम बन सकती है। अत लोक भाषा के माध्यम से ही लोकतन्त्र के नागरिको मे देश, सविधान तथा लोकतन्त्र से सम्बद्ध भाव सरलता से भरे जा सकते हैं। तत्सम्बद्ध भावनाओ के बिना स्वतन्त्रा और प्रजातन्त्र की अनुभूति नही हो सकती। भारत के अधिकतम नागरिको द्वारा बोली और समझी जा सकने के कारण हिन्दी ही सच्चे अर्थो मे एक लोक भाषा है।

सरल और वैज्ञानिक

हिन्दी भाषा भारतीय भूमि की ही उपज है। यह भारतीय इतिहास, परम्परा, सम्यता, सस्कृति, धर्म और साहित्य के भावो से अनुस्यूत है। यह सीखने मे सरल, श्रवण एव उच्चारण मे सरस, सर्वविध भाव अभिव्यक्ति मे सबल, विविध विषयो के साहित्य से समृद्ध, शब्द भण्डार से भरपूर तथा वैज्ञानिक है। हिन्दी भाषा भारत की प्राचीन आदि भाषा सस्कृत की पुत्री है। अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओ के साथ सस्कृत सरस्वती का रस हिन्दी भाषा मे भी प्रवाहित है। आधुनिक भारतीय भाषाओ की पारस्परिक समानता से भी यह सपृक्त है। सहस्राधिक वर्षों से प्रचलित हिन्दी सर्वथा एक सशक्त, सरस, सरल और वैज्ञानिक भाषा होने के कारण ही सर्व स्वीकरणीय है।

भाषा की दृष्टि से भारत की स्थिति सोवियत रूस से मिलती है। जैसे वहा साझी भाषा के रूप मे राष्ट्र भाषा का स्थान रूसी को प्राप्त है और वह वहा सर्वत्र प्रचलित है, वैसे ही भारत मे यही स्थिति हिन्दी की है। सबसे उत्तम उदाहरण तो इजराइल का है जिसने दो हजार साल पुरानी अपनी हिब्रू को कुछ समय मे ही अपनी राष्ट्र भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित कर दिया है।

प्रयोग से हो सार्थकता

यह एक सचाई है कि जब हम इस ससार मे आए थे, तब हम कोई भाषा साथ लेकर नही आए और जब यहा से जायेगे तब भी कोई भाषा साथ लेकर नही जायेंगे। यहा आकर जैसो मे रहते हैं, वहा आपस के व्यवहार को चलाने के लिए वहा की भाषा को सीख लेते हैं। अत आपस मे बोल चाल एव भाव बोध ही भाषा का प्रयोजन है। तब किसी विशेष भाषा का मोह क्यो? केवल अपेक्षा और गुण के आधार पर किसी भाषा को अपनाना चाहिए। कैसी विचित्र बात है कि एक तरफ तो ४० प्रतिशत से अधिक भारतीय जनता गरीबी की रेखा से नीचे जी रही है और दूसरी ओर गरीब देश का उधार से प्राप्त धन भी १५-१६ भाषाओ पर व्यय हो रहा है। क्यो न चीन की तरह एक भाषा से अधिक से अधिक कार्य चलाकर शेष धन से भूखो का पेट भरने की पहल न की जाए।

अत सविधान के सम्मान, सारे देश की एकता, लोक भाषा के प्रोत्साहन और हिन्दी भाषा के प्रेम की यह माग है कि भाषा के प्रयोग की दृष्टि से हम अपने आपको सर्वात्मना हिन्दी भाषी सिद्ध करें, क्योकि व्यवहार मे आने पर ही कोई भाषा सार्थक होती है। हम जिस भाषा को भी अमर देखना चाहते हैं, उस भाषा का गौरव और सम्मान के साथ प्रयोग करें, अन्यथा गौरव तथा सम्मान के अभाव मे उसके प्रयोग मे हरेक को सकोच अनुभव होगा।

राष्ट्र भाषा हिन्दी का भविष्य निर्धारण करने मे एक उज्ज्वल पहलू भी है—हिन्दी चल चित्र। हिन्दी के चल चित्र सबसे अधिक सख्या मे बनते हैं, और सारे भारत और विदेशो मे प्रदर्शित होते हैं। भारत के सभी प्रान्तो मे वे समान रूप से लोकप्रिय हैं। हिन्दी चल चित्रो के प्रभाव से सिनेमा सम्बन्धी पत्रिकाये और इनके साथ कहानी, उपन्यास, जासूसी पत्रिकाये और पुस्तकें भी हिन्दी के प्रसार का एक सबल साधन बन चुकी है। अब तो हिन्दी के दैनिक पत्रो की कुल संख्या और प्रकाशन सख्या भी कम नहीं है।

अत अब तो वस्तुत जरूरत इस बात की है, कि हम अपने हिन्दी प्रेम को चरितार्थ करने के लिए सच्चे अर्थो मे हिन्दी के प्रयोग को सबसे अधिक महत्व दें। ●

प्रो० वेदव्यास दीर्घायु हो!

अमृतसर आर्य समाज, पट्टी ने प्रख्यात शिक्षा-शास्त्री, महान् न्यायविद्, समाज सेवी विभूति प्रो० वेदव्यास जी के ८२वें जन्म दिवस पर समाज व आर्य युवक परिषद् की ओर से प्रेषित शुभ कामना सदेश मे कहा है—"प्राचीन और आधुनिक सम्यता-सस्कृति को जोडने वाली कडी प्रो० वेदव्यास का सारा जीवन समाज व इसकी शिक्षण सस्थाओ के प्रति समर्पित रहा है। डी० ए० वी० स्कूल खोलने, धर्म शिक्षको की अनिवार्य नियुक्ति तथा डी० ए० वी० आदोलन से सम्बन्धित छात्रो व अन्य लोगो की डायरेक्टरी प्रकाशन जैसे आपके निर्णयो से, समाज व डी०ए० वी० आदोलन को स्थायी आधार मिलने की पूरी आशा है। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपको दीर्घायु प्रदान करें ताकि अज्ञानान्धकार-निवारण मे सलग्न आर्य-सस्थाओ को आपका अधिकाधिक मार्ग-दर्शन मिलता रहे।

महिला समाज गठित

खडवी आर्य समाज ने वेद-प्रचार मास के अन्तर्गत प० रामचन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे महिला समाज का गठन किया। महिला समाज मे प्रधान—श्रीमती शान्ति खण्डेलवाल, मत्राणी श्रीमती चन्द्रकान्ता पालीवाल तथा कोषाध्यक्ष—कु० पुष्पलता भार्गव निर्वाचित हुई।

जाति-भेद हिंदू समाज का अभिशाप है

गाजियाबाद स्थानीय आर्य समाज ने, अपना जीवन तक संकट में डालकर लगभग ढाई हजार अपहृत कन्याओ व महिलाओ को गुण्डों के चंगुल से मुक्ति दिलाने वाले साहसी आर्य नेता श्री देवीदास आर्य (कानपुर का एक जन-सभा मे भव्य स्वागत किया। श्री आर्य ने जाति-भेद को हिन्दू समाज का अभिशाप बताते हुए कहा कि यह भेद न मिटाया गया तो हिन्दू समाज ही अस्तित्वहीन हो जाएगा। उन्होंने यह भी सखेद इंगित किया कि एक महिला के एकछत्र राज्य के स्वतत्र भारत से तो परतत्र भारत मे महिलाए अधिक सुरक्षित थीं। आज तो ५ वर्ष की कन्या भी आज के रावणों से सुरक्षित नहीं। इसके पूर्व महादयानन्द संन्यास आश्रम में स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने कहा कि श्री आर्य की कोशिश से समाज गौरवान्वित हुआ है।

जादूगरी जादूगर की

—आचार्य शिवराज शास्त्री—

जादूगर वह होता है जो दर्शक को अपने विचार व आस्था परिवर्तन करने को बाध्य कर दे।

ऋषिवर दयानन्द भी अपने युग के एक ऐसे ही महान् जादूगर थे। उनके काल में भारतवर्ष विभिन्न सम्प्रदायों का एक विचित्रालय बना हुआ था। प्रायः सभी सम्प्रदायों के पास विचारों के नाम पर जो कुछ था उसमें ईश्वर, धर्म एवं अन्य आचार-विचार के सम्बन्ध में प्राचीन भारतीय वैदिक-पद्धति का नितांत परिवर्तित रूप था। युग-युगों से विश्व की प्राचीनतम आर्य जाति जिस वेद धर्म को सर्वतोभद्र मानती थी उसके स्थान पर नाना प्रकार के पत्थर और धातुओं की प्रतिमाओं का पूजन, कथा, उनकी बहुविध उपासना, मानव का ध्येय बन गई थी। भारतवर्ष की इस दुर्दशा का लाभ उठाकर सभ्यता और संस्कृति से दरिद्र ईसाई और मुसलमानों ने आर्य जाति के वंशधरों को उनकी मान्यताओं की हीनता का प्रदर्शन कर उन्हें ईसा की भेड़ें और मुहम्मदी धर्म का आहार बना डाला। लाखों आर्य-पुत्र धर्म-विमुख होकर ईसाई और मुसलमान बन गये। इस प्रकार देश में अखण्ड आर्य वंश के अतिरिक्त दो नए वंश प्रचलित हुए जो अपना सम्बन्ध अरब और पाश्चात्य देशों से बतलाने लगे।

देव दयानन्द ने इस दुर्दशा को देखकर ऐसी विकट परिस्थिति में सिंह के समान वेद विरोधियों को ललकारा।

आर्य जाति के वंशधरों को उनकी जड़-उपासना से विमुख कर चेतन-तत्व, ईश्वर-जीव का वास्तविक स्वरूप समझाया एवं उन्हें अपने आपको विदेशी और विधर्मी लोगों के सन्मुख ललकारने को तैयार किया।

महान् आश्चर्य है कि ऋषि दयानन्द के इस प्रयत्न का प्रभाव न केवल समस्त आर्य (हिन्दू) जाति पर पड़ा, अपितु मुसलमान और ईसाइयों को भी अपने विचारों, सिद्धान्तों एवं मान्यताओं में मौलिक परिवर्तन करने पड़े ताकि; वे प्रबुद्ध हिंदू जाति के सामने टिकने की तैयारी कर सकें। वह दो शक्तियों का अद्भुत संघर्ष था जो भारतीय इतिहास की अमर-कहानी के रूप में आज भी सुरक्षित है।

ऋषि दयानन्द से पूर्व सारे हिंदू सम्प्रदाय परमात्मा को साकार, एक देशी, काल विशेष में उत्पन्न मानते आ रहे थे। उपास्य मूर्तियों का इतिहास-विशेष था जो पुराणों और अन्य लोक प्रचलित पुस्तकों द्वारा अनुमोदित था। ऋषि दयानन्द के प्रचार एवं पाखण्ड-खण्डन के परिणामस्वरूप सभी सम्प्रदायों ने कहना प्रारम्भ कर दिया कि :—"परमात्मा निराकार तो है ही, साकार भी है।"

इसका अनुमोदन करने के लिए अपने-अपने आचार्यों के ग्रन्थों से विशेष-विशेष प्रमाण प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिए।

वेद-अनुमोदित निराकार ईश्वर में जनता जनार्दन की बढ़ती आस्था को देख मूर्ति के उपास्य स्थलों में ही गीता, उपनिषद्, रामायण, महाभारत के अतिरिक्त हिन्दी भाषा के उन विद्वानों की कविताओं की भी कथा-वार्ता होने लग पड़ी जो अपने काल में मूर्ति-पूजा के कट्टर विरोधी व निकारवाद के प्रबल समर्थक थे।

गीता में कहा है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन
तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि
मायया॥

—विश्व का निर्माता जगदीश्वर सभी प्राणियों के हृदय में निवास करता है और समस्त प्राणियों के संचालन का कार्य ऐसे करता है जैसे एक यंत्र-चालक (ड्राइवर) अपने यंत्र का।

जिन योगिराज कृष्ण के गीता के उपदेश को परे फेंककर उनके चित्रों की उपासना के लिए अनेक मन्दिरों की रचना की गई थी, उन्हीं मन्दिरों में कृष्ण के आध्यात्मिक स्वरूप को जनता जनार्दन के हृदयंगम करने के लिए निराकार के पोषक कृष्णामृत उपदेशों की स्थापना होने लगी। यह वही कृष्णामृत है जिसके महात्म्य में कहा गया है—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा
गोपालनन्दनः।

—सारी उपनिषदें गाय स्वरूप हैं जिनका दुग्ध दुहने के लिए श्री कृष्ण ने गोपाल का रूप धारण कर उस दुग्धामृत का पान गीता उपदेश के रूप में सबको कराया।

भला बताए, उपनिषदों की निराकार उपासना का वर्तमान हिंदू धर्म के साकार देवी-देवताओं एवं उनके षोडश पूजा-उपचार के साथ क्या सम्बन्ध ? इसे ऋषिवर दयानंद का जादू ही कहा जा सकता है जो पौराणिक जगत् के सिर पर चढ़कर बोल उठा। श्री रामचन्द्र के जीवन चरित्र रामायण के अमर रचयिता गोसाईं तुलसीदास के ये वाक्य भी जन-जन के हृदय में घर करने लगे :—

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु करम करै विधि नाना॥

—इतिहास की गुत्थियों को सुलझाने के लिए रामलीला का कोई महत्व हो सकता है, परन्तु विश्व-विधायक, जगदुत्पादक, स्थिति कारक, संहारक, जगदीश्वर की उपासना में राम के साकार स्वरूप की उपासना का क्या महत्व ? वे तो स्वयं अपने जीवन भर जिस निराकार तत्व की उपासना वेद-शास्त्रों के आधार पर किया करते थे उसका वर्णन गोसाईं तुलसीदास जी ने इन शब्दों में किया है :—

बिगत दिवस मुनि आयसु पाई।
संध्या करन चले दोउ भाई॥

—अर्थात् सायंकाल होने पर ब्रह्मनिष्ठ मुनियों की आज्ञा पाकर रामचन्द्र-लक्ष्मण दोनों भाई लीलामय निराकार भगवान की संध्योपासना के लिए एकान्त स्थान की ओर चले गये। राम स्वयं तो निराकार की उपासना करें, पर हम साकार राम की उपासना करें, यह कैसी विडम्बना ? ऋषि दयानन्द के पश्चात्वर्ती प्रायः सभी हिन्दी-संस्कृत के कवियों की रचना का आधार जगन्नियन्ता के निराकर स्वरूप की उपासना हो गया। परमात्मा का साकार स्वरूप गौण व विवादास्पद बन गया। अर्थात् परमेश्वर का निराकार स्वयंसिद्ध है जिसमें किसी मत-मतान्तर को ननुनच करने को स्थान नहीं रहा। प्रायः सभी सम्प्रदायों के प्रचारक अपने-अपने आचार्यों के विशिष्ट काव्यों को दिखला-दिखला कर विश्वनियन्ता के निराकार स्वरूप की सिद्धि करने लग पड़े। यह चमत्कार ऋषि दयानन्द का ही कहा जा सकता है।

दूसरी ओर हिंदू (आर्य) धर्म पर आक्रमण करने वाले विदेशी ईसाई, मुस्लिम सम्प्रदायों ने भारतीयों के अन्दर भारतीय धर्म व परम्पराओं के विरुद्ध भाव भरने प्रारम्भ कर दिये थे। वे भारतीय मुस्लिमों को सिखाते थे—

मेरी जान अब तो न तन में रहेगी।
यह बुलबुल अब चमन में रहेगी॥

—उन्हीं मुसलमानों ने जब भारतीय ज्ञान-गौरव का अनुभव किया तो उसके बड़े से बड़े अल्लामा सर मुहम्मद इकबाल एम० ए०, पी० एच० डी०, बार-एट ला जैसे महाकवि गा उठे—

चीरे अरब को आई,
ठंडी हवा जहां से।
मेरा वतन वही है,
मेरा वतन वही है॥
नूहे नबी का आकर,
ठहरा यहां सफीना।
बन्दे कलीम इसके,
परवत यहां के सीना॥
मेरा वतन वही है।
मेरा वतन वही है॥

—अरब के रेगिस्तान की प्रशंसा करने के बजाय इकबाल ने भारतीय पर्वत हिमालय की प्रशंसा में गीत गाना प्रारम्भ कर दिया—

ऐ हिमालय ए फसीले,
किश्वरे हिन्दोस्तां।
ऐ हिमालय दास्तां,
उस वक्त की कोई सुना॥
मस्कने इब्नाए आदम,
जब बना दामन तेरा।

—भारतीय वैदिक सिद्धान्त आवागमन को न मानने वाले मुसलमानों को विवश किया कि वह स्वीकार करें कि—

मौत इस जिन्दगी का वकफा है
यानी आगे चलेंगे दम लेकर।

—जो मुसलमान स्वर्ग व नर्क को स्थान विशेष पर मानते थे उन्हें समझाया कि—

अमल से जिन्दगी बनती है
दोजख भी जहन्नम भी।
ये खाकी अपनी फितरत में
न नूरी है न नारी है।

—ऋषि दयानन्द के परम भक्त अलीगढ़ विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद साहब ने अपने विशेष कुरान भाष्य में लिखा—

"एक कूढ़ मगज मुल्ला यह समझता है कि स्वर्ग या नर्क किसी विशेष स्थान पर हैं। स्वर्ग में शहद व दूध की नदियां बहती हैं व हूरोगुलमान उसे प्राप्त होंगे।"

इसी प्रकार के उर्दू, अरबी, फारसी से सैंकड़ों उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिन्हें पढ़कर विश्वास हो जाता है कि ऋषि दयानन्द के विचारों का महान् प्रभाव मुसलमान विचारकों की विचारधारा पर हुआ और उन्होंने इस्लाम की प्रचलित विचारधाराओं को एकदम बदलकर नई दिशा प्रदान की।

अपने आपको दूसरा ईश्वरीय संदेश का सन्देशवाहक कहने वाले सर सैयद अहमद के घनिष्ट मित्र मौलाना अल्ताफ हुसेन हाली ने लिखा—

वह दीने हजाजी का बेबाक बेड़ा,
निशां जिसका अफजाए
आलम में चमका।
किए पै सिपर जिसने सातों
समुंदर।
वह डूबा दहाने में गंगा के
आकर॥

—इस्लाम में सुधारवाद का प्रबल आन्दोलन करने वाले मिर्जाई

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पत्रों में प्रतिबिम्बत

ऋषि दयानन्द की स्वदेशहित चिंता एवं स्वदेश–भक्ति

—डॉ० कमल पुंजाणी—

ऋषि दयानन्द अपने समय के सबसे बड़े स्वदेश हितचिन्तक एव स्वदेशभक्त थे। भारत की पराधीनता भरी निद्रा मे ऋषि ही पहले पुरुष थे जिन्हे भारत में 'स्वराज्य' और 'स्वदेशोन्नति' का यथार्थ ध्यान आया। 'समग्र सावरकर वाङ्मय', 'भारतीय स्वाधीनता सग्राम' और 'आर्य समाज आदि ग्रथो के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महादेव गोविन्द रानाडे, गोपाल राव हरि देशमुख आदि ऋषि के समकालीन नेता भी अग्रेजी राज्य की स्तुति से नहीं बच पाये थे जबकि ऋषि ने पूरी निर्भीकता से अपने अमर ग्र थ सत्यार्थ-प्रकाश' मे उदघोषित कर दिया था कि—"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।'

इसी प्रकार की स्वदेशहित चिन्ता एव स्वदेशभक्ति ऋषि दयानन्द के पत्रो एव विज्ञापनों मे भी दृष्टिगत होती है। 'सत्याथ प्रकाश' और अन्य ग्रन्थों में वर्णित ऋषि की स्वदेशभक्ति की चर्चा तो अनेक लोगों ने की है, परन्तु पत्रो मे प्रतिबिम्बित ऋषि की स्वदेश-हित चिन्ता एव स्वदेशभक्ति की ओर बहुत कम लोगो का ध्यान गया है। यहां हमने उसी दिशा मे किंचित प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

जिन पत्र-प्रेमी पाठकों ने ऋषि के पत्रों का गहराई से अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि हर तीसरे-चौथे पत्र में ऋषि ने स्वदेश के लिए अपनी चिन्ता व्यक्त की है। सवप्रथम प०गोपालराव हरि देशमुख के नाम लिखे ११अप्रैल १८७५ के पत्र को लें, जिसमे बम्बई में स्थापित आर्य समाज की सूचना देते हुए आर्यजनों के मन में समुद्भूत 'स्वदेशहित' की भावना से प्रसन्नता व्यक्त की गई है तथा उसकी उत्तरोत्तर उन्नति की शुभ-कामना प्रकट की गई है। देखिए—

"·· अत्यन्त आनन्द की बात है कि आप लोगो के ध्यान मे स्वदेशहित की बात निश्चित हुई है। परमात्मा के अनुग्रह से उन्नति नित्य इसकी होय। ·"

[ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग १सपा० भगवद्दत, पृ०५७]

स्वदेशहितचिन्ता और स्वदेशोन्नति के समान 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग भी ऋषि दयानन्द के अनेक पत्रो एव विज्ञापनो मे मिल जाता है। इस सम्बन्ध में १४माच १८८२ को गोरक्षा अभियान हेतु बम्बई से प्रेषित विज्ञापन पत्र मिदम्' का निम्नोक्त अश द्रष्टव्य है

' जिसके स्वराज्य व देश में ब्राह्मण आदि मनुष्य की जितनी सख्या हो उतनी सख्या लिख के अर्थात् इतने सौ, हजार, लाख व करोड मनुष्यो की ओर से मैं अमुक नामा पुरुष सही करता हू इस प्रकार एक श्रीयुत महाशय प्रधान पुरुष की सही में सब-साधारण आय पुरुषों की सही आ जाएगी। "

[ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, भाग-2,सपा, भगवद्दत्त पृ०५४]

उपर्युक्त दोनो उदाहरणों से प्रकट होता है कि ऋषि स्वदेशहित के लिए सतत चिन्तित एव प्रयत्नशील थे। उनके 'स्वराज्य' और 'स्वदेशहित' के सत्प्रयासों से प्रेरित प्रभावित होकर ही 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' मत्र के उद्गाता लोकमान्य तिलक ने ऋषि दयानन्द को स्वराज्य का सर्व प्रथम सन्देश वाहक, कहा है।'

एक अद्वितीय उदाहरण

ऋषि दयानन्द की स्वदेशहितचिन्ता का एक अद्वितीय उदाहरण ८ अगस्त १८८१ को सेठ कालीचरण के नाम लिखे गए पत्र में मिलता है। यह पत्र मुख्यत' मु शी बखतावरसिंह के हिसाब-सम्बन्धी है किन्तु प्रसगत ऋषि ने अपने जीवनोद्देश्य तथा जीवनादश का सकेत भी कर दिया है। यथा

"सेठ कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि अब हमने मु शी बखतावरसिंह के समय से सब कागजात काशी से मगवा कर देखे और हिसाब की जांच-पड़ताल की १ ··· जो वह यहा आ जावा और पञ्चायतें करके हिसाब का फैसला कर दिया तो अच्छा है, नहीं तो यह मामला अदालत में अवश्य आवेगा। आप फिर हम को कोई दोष न देना, क्योंकि हमने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण अपने समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड कर यह काय ग्रहण किया है। —"

[ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, भाग -१,पृ०४७१८०]

इससे स्पष्ट होता है कि ऋषि दयानन्द समाधि और ब्रह्मानन्द से भी स्वदेशहित तथा स्वदेशोन्नति को अधिक महत्व देते थे। ऋषि की स्वदेशभक्ति का ऐसा अनुपम उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

स्वदेश-गौरव की रक्षा

ऋषि दयानन्द स्वदेश-गौरव के महत्व से पूर्णत' परिचित थे। स्वदेश-गौरव की रक्षा और अभिवृद्धि के लिए वे सदैव कार्यशील थे। अपने शिष्यों और भक्तो को प्रत्यक्ष तथा पत्रों द्वारा यही उपदेश देते थे कि उन्हें स्वदेश-गौरव की रक्षा के लिए सक्रिय एवं सतर्क रहना चाहिए।

आद्यक्रान्तिकारी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ऋषि के पट्टशिष्य थे। जब ऋषि को ज्ञात हुआ कि श्यामजी संस्कृत पढ़ाने के लिए इगलैण्ड जाने वाले हैं, तब उनको राष्ट्र-गौरव की रक्षा का परामर्श देते हुए ऋषि ने लिखा

"श्री श्याम जी कृष्ण वर्म्मा, आनन्द रहो।

विदित हो कि हमने सुना है कि आपका इरादा सस्कृत पढ़ाने के लिये इगलैण्ड जाने का है, सो यह विचार बहुत अच्छा है। परन्तु आपको पहिले भी लिखा था, और अब भी लिखत हैं कि जो हमारे पास रहकर वेद और शास्त्र के मुख्य-मुख्य विषय देख लेते तो अच्छा होता। अब आपको उचित है कि जब वहां जावें तो जो आपने अध्ययन किया है उसी में वार्तालाप करें। और कह देवें, कि मैं कुल वेदशास्त्र नहीं पढ़ा किन्तु मैं तो आर्यावर्त देश का एक छोटा विद्यार्थी हू। और कोई बात का काम ऐसा न हो कि जिससे अपने देश का ह्रास होवे, क्योंकि वे लोग सस्कृत पढ़ाने वाले की अत्यन्त इच्छा रखते हैं। "

[ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग-१ पृ० १५३]

१५ जुलाई १८७८ को लिखा गया यह पत्र ऋषि की स्वदेशभक्ति तथा स्वदेश प्रेम का उत्तम नमूना है। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपने पथ प्रदर्शक के सत्परामर्श का पूर्णरूप से पालन किया और विदशों मे आर्यावर्त का गौरव बढाया। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए 'आर्यमर्यादा, और वीर प्रताप' मे धारा-प्रवाह रूप में प्रकाशित श्री वीरेन्द्र जी की "क्रांति के अग्रदूत श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा" शीर्षक लेखमाला दर्शनीय है।

स्वदेशहित कार्य से अपूर्व प्रसन्नता—

स्वदेशहित चिन्तन ऋषि दयानन्द के जीवन का अभिन्न अंग था। स्वदेशहित के कार्य के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। जब कभी ऐसा कार्य उनके द्वारा अथवा उनकी प्रेरणा से सम्पन्न होता था तो उन्हें उससे अपार प्रसन्नता का अनुभव होता था। बड़े से बड़ा जोखिम उठाकर भी वे देशोन्नति के कार्य के लिए उद्यत हो जाते थे। जब शाहपुराधीश को 'मनुस्मृति' में वर्णित राजाओं के कर्तव्यों का बोध करा रहे थे, उस समय जोधपुर राज्य से रावराजा तेजसिंह ने उन्हें पत्र भेज कर जोधपुर पधारने और महाराजा जसवन्तसिंह को उपदेश देने का निमन्त्रण भेजा।

इस निमन्त्र-पत्र से ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा कि यदि उनके उपदेश से प्रभावित होकर जोधपुर-नरेश के मन में स्वदेशहित की भावना जाग्रत होगी तो देश के अन्य राजाओं को देशोन्नति के लिए प्रेरित करना सरल हो जायेगा। उन दिनों भारत की देशी रियासतों में राजस्थान का जोधपुर राज्य सबसे अधिक पतनशील अवस्था प्राप्त कर चुका था। ऋषि ने रावराजा तेजसिंह के पत्र का जो उत्तर दिया, उसके कुछ अश यहाँ हम उद्धृत करते हैं

"श्रीयुत रावराजा श्रीमान् तेजसिंह जी आनन्दित रहो।

श्रीमान् का पत्र सवत १९४०वैशाख वदी ३ रविवार का लिखा मेरे पास वैशाख बदी-८ सोमवार को पहुचा जिसके साथ मु शी दामोदरदास जी का भी पत्र था। बांचकर बड़ा आनन्द हुआ। मैं आनन्द पूर्वक जोधपुर आने का निमन्त्रण स्वीकारता हू। और श्रीमान् महाशय महोदय जोधपुराधीश, श्रीमान् महाराज श्री प्रतापसिंह जी तथा आपको अनेक धन्यवाद देता हू कि आप लोगों ने मेरे वहां जोधपुर में आने के लिए प्रीति प्रकाश की। अत मुझको दृढ़ निश्चय इस बात से हुआ कि आर्यावत्त की उन्नति होने का समय आया है। जब श्रीमान् जोधपुराधीश आदि की वैदिक सत्य धर्म और सनातन राजनीति पर प्रीति हुई है। पुन हम लोगों के सौभाग्य के उदय होने में कुछ सन्देह नहीं। ···"

"मैं जैसा सत्य धर्म की उन्नति और स्वदेश का उपकार होने में प्रसन्न होता हू वैसा किसी अन्य बात पर नहीं।···"

[ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, भाग-२, पृ० १६-१९६]

उपर्युक्त पत्रांशों से हम देख सकते हैं कि स्वराज्य और स्वदेशोन्नति ऋषि दयानन्द के जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न था, जिसे साकार करने के लिए उन्होंने समाधिजन्य ब्रह्मानन्द का परित्याग कर लोगों के पत्थर खाये अपमान के घूट पिये और अन्त में अपना बलिदान देकर स्वदेश प्रेमियो का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वातन्त्र्य-सग्राम के प्रणेता और प्रखर देश-भक्त ऋषि दयानन्द को कोटि-कोटि नमन!

पता १-११-२आर,टी, जाडेजा एस्टेट जामनगर (गुजरात)

नेत्र-चिकित्सा शिविर लगेगा

मेरठ आर्य समाज की ओर से ३१ अक्तुबर से ४ नवम्बर तक स्थानीय शर्मा उद्यान में निःशुल्क नेत्र-चिकित्सा शिविर आयोजित होगा। इसमें आंख, नाक, कान, गले के आपरेशन होंगे। तथा ··· का परीक्षण भी होगा। शिविर ··· भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होगी

किशोर कुंज

लोकोक्तियों में मौसम विज्ञान

—राज कुमार जैन—

हमारे पूर्वजों के समक्ष प्रचलित लोकोक्तियां ही वर्षा सम्बन्धी सही व प्रामाणिक जानकारी दे देती थीं। आज ये ही लोकोक्तियां कृषकों के लिए पथ-प्रदर्शन कार्य कर रही हैं। वर्षा के सम्बन्ध में यहां कुछ ऐसी ही कहावतें दी जा रही हैं, जो किसानों के लिए उपयोगी होंगी।

"अद्रा चौथ, मघा पंचक"

वर्षा के लिए आर्द्रा नक्षत्र ही है। आर्द्रा बरस गया तो, पुष्य, पुनर्वसु और श्लेषा ये सभी बरसेंगे। इसी प्रकार यदि मघा बरसता है, तो मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा ये पाँचों बरसेंगे।

आदि न बरसे आदरा,
हस्त न बरस निदान।
कहै घाघ सुन भड्डरी,
भये किसान पिसान॥

यदि वर्षा के आरम्भ में ही आर्द्रा नक्षत्र की वर्षा न हुई और अंत में हस्त अथवा हस्त नक्षत्र के अन्तिम भाग की वर्षा न हुई तो ऐसी दशा में किसान कष्टों से पिस जाता है।

आओ बौवा बहै बतास।
तब होवै बरखा के आस।

जब वर्षा ऋतु में कभी इधर, कभी उधर, कभी तेज, कभी मंद-अनिश्चित वायु चले, तो जानो वर्षा अवश्य होगी।

उत्तर चमके बीजुरी,
पूरब बहतो बाउ।
घाघ कहै सुन भड्डरी,
बरधा भीतर लाउ॥

यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो और पुरवा हवा चलती हो, तो घाघ कवि के अनुसार बैलों को भीतर ले आना चाहिए क्योंकि वर्षा अवश्य होगी।

एक पानी जो बरसे स्वाती।
कुरमिन पहिरै सोने कै पाती॥

यदि स्वाती नक्षत्र की वर्षा एक बार भी हो जाए तो किसान की स्त्री अवश्य ही स्वर्ण के गहने पहनेगी, अर्थात् खेती उत्तम होगी।

एक बूंद जो चैत में परै।
सहस बूंद सावन में हरै॥

यदि चैत्र मास में एक बूंद अर्थात् थोड़ा भी पानी पड़ जाए तो उससे हजार गुना जल की हानि सावन के महीने में होती है अर्थात् सूखा पड़ जाएगा।

करिया बादर जिउ डेरवावैं।
भंवरे बादर पानी आवैं॥

काले बादल केवल जी को डराने वाले होते हैं, पानी नहीं बरसाते। पानी तो भूरे बादलों से आता है।

खन पुरवैया खन पछियाव।
खन खन बहै बबूरा बाव॥
जो बादर बादर में जाप।
घाघ कहै जल कहाँ समाय॥

यदि क्षण में पुरवा और क्षण में पछुआ हवा चलती हो, क्षण-क्षण में वायु का बवंडर उठ रहा हो और बादल से बादल टकराते हों, तो समझो कि वर्षा पर्याप्त होगी।

चित्रा बरसै तीन जाय,
मैथी, मास, उखार॥

चित्रा नक्षत्र की वर्षा अच्छी नहीं कही जाती क्योंकि इस वर्षा से तीन फसलें उड़द, मेथी और ईख नष्ट हो जाती हैं।

चमके पच्छिम उत्तर ओर।
तब जानो पानी है जोर॥

जब पश्चिम और उत्तर के बादलों में बिजली की चमक बार-बार हो तब यह जानना चाहिए कि पानी का जोर अवश्य होगा।

चैत के पछिवां भादो जला।
भादो पछिवां माघक पला।

यदि चैत के महीने में पछुवा वायु बहे तो जानो भादो मास में वर्षा अवश्य होगी और यदि भादों के महीने में पछुवा वायु बहे तो जानो कि माघ में अवश्य पाला पड़ेगा।

जो बरखा चित्रा में होय।
सगरी खेती जावै खोय॥

यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा हो तो उससे सारी खेती नष्ट हो जाती है। क्योंकि चित्रा नक्षत्र की वर्षा अच्छी नहीं कही जाती है।

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो जानो बरखा कै आसा॥

जिस वर्ष जेठ का महीना ऐसा तपता है कि मनुष्य गर्मी के कारण व्याकुल होने लगे तो यह जानना चाहिए कि उस वर्ष वर्षा अच्छी होगी।

जो कहुं मग्घा बरसै जल।
सब नाजो में होगा फल॥

यदि कहीं मघा नक्षत्र में जल बरस गया तो यह जानना चाहिए कि सभी अन्नों में दाने पड़ेंगे अर्थात् वे पुष्ट होंगे और फसल अच्छी होगी।

ढोकी बोलै जाय अकास।
अब नाहीं बरखा के आस॥

ढोकी नामक पक्षी यदि आकाश में बोलता हुआ उड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि अब वर्षा की आशा नहीं है।

तपै मिरगसिर जोय,
बरखा पूरन होय॥

यदि मृगशिरा नक्षत्र खूब तपता है, तो वर्षा काफी अच्छी होगी।

दिन में गरमी, रात मे ओस।
कहै घाघ बरखा सौ कोस॥

यदि दिन में गर्मी हो और रात में ओस पड़े तो यह समझना चाहिए कि वर्षा अभी काफी दूर है।

बहन और चाचा की मृत्यु

ऋषि दयानन्द का बचपन का नाम मूल जी था। एक दिन रात के समय मूल जी अपने अन्य पारिवारिक जनों के साथ पड़ोस में कोई लोकरंजनकारी कार्यक्रम देख रहे थे कि सेवक ने हांफते हुए आकर कहा कि तुम्हारी छोटी बहिन अचानक प्राणघातिक रोग से ग्रस्त हो गयी है।

रोगी बहन की चिकित्सा के लिए सभी उपाय किए गये। परन्तु दो घण्टे के अन्दर ही वह कराल-काल का ग्रास बन गई। सारा परिवार शोक-मग्न हो गया। माता-पिता तथा अन्य निकट सम्बन्धियों की आंखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। जब स्वजन और बन्धु-बान्धव करुण-क्रन्दन कर रहे थे, तब किशोरावस्था की देहली को पार करता हुआ मूलशंकर जड़वत् दीवार से लगा खड़ा था। जीवन में उसका यह प्रथम मृत्यु-दर्शन था। शोक के प्रबल आघात ने इतना स्तब्ध कर दिया कि उसकी आंखों से आंसू की बूंद तक नहीं निकली, पर हृदय में ज्वार-भाटे की सी उथल-पुथल प्रारम्भ हो गयी।

उसने सोचा, क्या पृथिवी पर सबको इसी तरह एक न एक दिन मरना है? मैं भी मरूंगा? क्या ऐसा कोई उपाय नहीं है, जिससे मृत्यु की इस विभीषिका से और आवागमन के चक्कर से छुटकारा मिल सके? उसने वहीं खड़े-खड़े संकल्प किया कि मैं मृत्यु-क्लेश से मुक्ति का उपाय खोजकर छोड़ूंगा, इसके लिए चाहे मुझे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।

कुछ ही दिनों बाद मूलशंकर के चाचा का भी देहावसान हो गया। चाचा बहुत सज्जन, अच्छे विद्याव्यसनी पंडित और मूल जी से अत्यन्त स्नेह करने वाले थे। मूल जी ने सोचा, संसार की सारी वस्तुएं जब इतनी अस्थिर और नाशवान् हैं, कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की बूंद के समान चंचल हैं, तब सामान्य सांसारिक जनों की तरह शरीर-धारण का प्रयोजन ही क्या है?

शोक के इस दूसरे आघात ने मूल जी के मन में जहां वैराग्य की भावना को दृढ़ कर दिया, वहां मानसिक संकल्प को भी और दृढ़ कर दिया।

—घनश्याम आर्य 'निडर'

पत्रों के दर्पण में

हालैंड के एक हिन्दू संगठन की मार्मिक अपील

शिवाजी जैसे शूरवीर ने जिस धर्म के लिए अपना जीवन उत्सर्ग किया, महर्षि दयानन्द ने जिस धर्म को महानता में समुद्र और दृढ़ता में लोहे जैसा बताया, बाद में उसी अत्यन्त प्राचीन हिन्दू धर्म को महात्मा गांधी ने अनगिनत आक्रमणों और अत्याचारों की टकराहट में थोड़ा थक-सा गया बताते हुए भी इसके शीघ्र पुनर्जागरण का विश्वास व्यक्त किया। आज तक का अनुभव भी यही बताता है कि हिन्दू समाज की संरचना ही एक ऐसे स्वचालित यंत्र जैसी है जो अपनी टूट-फूट की मरम्मत और क्षतिपूर्ति स्वयं कर लेता है।

लगभग ग्यारह सौ साल पहले हमारे श्रद्धेय पूर्वज हिन्दुस्तान से सुरीनाम और अन्य देशों में जाकर बसे। वहाँ उनकी सन्तानों पर क्या बीती – यह संघर्ष भरा इतिहास हमारी गौरवपूर्ण थाती है। जहाँ-जहाँ हम गये, हमने जंगल-झाड़ियों को खून-पसीना एक करके साफ किया और धरती-माता का स्वर्णिम रूप निखारा। बदले में हमें मिला क्या – युगाण्डा (अफ्रीका) में पचास हजार हिन्दुओं की धन-दौलत छीन कर इदी अमीन ने उन्हें खदेड़ दिया, दो वर्ष पूर्व केनिया (पूर्वी अफ्रीका) में हिन्दू समाज की सम्पत्ति लूटी गयी, गुयाना में संख्या-बहुल होते हुए भी हिन्दुओं की जर-जोरू और जमीन लुट रही है और हालैंड में (जहाँ का मैं निवासी हूं) जहाँ तुर्किस्तान और मोरक्को आदि के लोग स्थानीय स्थिति का फायदा उठा कर आगे बढ़ गये, परन्तु अपनी आंतरिक विश्रृंखलता और उहापोह में डूबे हम हिन्दू, ईसाइयत के धार्मिक षड्यंत्र के शिकार बने, अपनी हिन्दुत्व की पहचान, अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक धरोहर लुटाते स्वयं मिटते जा रहे हैं। आपके माध्यम से हिन्दू समाज के संगठन के लिये मैं अपनी मूल-समाज से तन-मन-धन से सहायता की अपील कर रहा हूं कि

नए स्तम्भ शुरू करें

'आर्य-जगत्' के अधिकाधिक प्रसार की दृष्टि से मेरा सुझाव है कि इसमें तीन नये स्थायी स्तम्भ प्रारम्भ किये जायें—(१) शंका-समाधान या प्रश्नोत्तर, (२) वैवाहिक तथा (३) आर्य उद्योगों और व्यापारों की सेवा-नियोजन सम्बन्धी आवश्यकताएं। अर्वाचीन युग की वैदिक शास्त्रार्थ परम्परा के रूप में शंका-समाधान स्तम्भ वैदिक सत्य संबंधी सभी शंकाओं का नीर-क्षीर निर्णय देगा। वैवाहिक व सेवा-नियोजन सम्बन्धी स्तंभ, सम्बन्धित समस्याओं का समाधान दे पाने के अलावा एक वृहत् पारिवारिक सन्निकटता का सृजन करेंगे। पहला स्तंभ जहाँ परलोक संवारेगा, वहीं शेष दो हमारा इहलोक संवारने का काम करेंगे। —रामचन्द, १५/२१६, मालवीय नगर, नई-दिल्ली।

पुष्कर में शिलालेख

मैंने ब्रह्मा के मन्दिर में उत्कीर्ण किस पत्र में क्या लिखा, शायद इसकी अभिज्ञता के बगैर ही श्री कश्यपदेव जी ने २६ अगस्त के अंक में मेरी लेखनी के प्रमाद पर विस्मय व्यक्त किया है। मेरा अभिप्राय था कि पुष्कर की अपनी दो बार की यात्रा में प्रथम बार स्वामी दयानन्द परिव्राजक-रूप से उक्त मंदिर में ठहरे। वेद भाष्य लेखन १८७७ में प्रारम्भ हुआ और दूसरी यात्रा १८७८ में वे जोधपुर घाट नाथ जी के दरीचे में ठहरे थे। इस दृष्टि से महर्षि के जीवन-चरित के सम्यक् अनुशीलन बगैर केवल किंवदन्तियों के आधार पर ही उक्त मन्दिर में रहकर वेदभाष्य करने का शिलालेख में उल्लेख युक्तियुक्त नहीं। अब कश्यप जी बतायें कि लेखन में क्या प्रमाद था? मेरा पत्र धर्मयुग में छपा था। – डा० भवानीलाल भारतीय, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़-१४।

आर्यों का राजनीतिकमंच आवश्यक

एक ओर जहां देश के राजनीतिक दल आत्मघाती वातावरण बना रहे हैं वहीं अपना निजी राजनीतिक आधार न होने से आर्यसमाज को अपने कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में इन्हीं का सहारा लेना पड़ता है। इसीलिये पार्टियों और समाचार-पत्र भी समाज की गतिविधियों की उपेक्षा करते हैं। अतः आर्य नेताओं से अनुरोध है कि जन-सम्पर्क हेतु एक सशक्त निजी राजनीतिक मंच की आवश्यकता की दृष्टि से एक आर्य सम्मेलन बुलाकर कोई ठोस कदम उठायें।—ओ० पी० भाटिया, जयपुर।

आर्य बालकों की निराली शान

आकाशवाणी रोहतक सायं ७ बजे "ग्राम-कार्यक्रम" में वीरवार को बच्चों का कार्यक्रम देता है। इसमें बच्चे स्वरचित कहानी, कविता, चुटकुले कुछ न कुछ सुनाते हैं। परन्तु यहां भी आर्य संस्कारों में पले बालकों के उद्गारों में अन्तर स्पष्ट सुना जा सकता है। आर्य परिवारों के बच्चे जहाँ बड़े जोश के साथ महापुरुषों या देशभक्ति की कविता या संक्षिप्त भाषण-प्रस्तुत करते हैं वहीं अन्य बालक उलटे-सीधे चुटकुले या कहानियों तक ही सीमित रहते हैं।—जयदेव आर्य, ग्रा० गुन्दियाना, जि० कुरुक्षेत्र, हरियाणा।

टी० वी० माध्यम से प्रचार

आज जब टी० वी० का प्रसार ७० प्रतिशत आबादी के लिए सुलभ हो चुका है, तब आर्य समाज इस माध्यम को क्यों नहीं अपनाता? टेण्टों वालों की जेबों में समाज का पैसा आ रहा है। पर प्रचार की स्थिति शून्य है। विश्वास है कि इस सुझाव पर ध्यान दिया जायेगा।—ओम प्रकाश 'अंशु', करनाल।

धर्म रक्षार्थ समाज पहले करे

प्रधान मंत्री की सामयिक कार्यवाही से पंजाब बच तो गया, पर उग्रवादियों की सक्रियता अभी भी बरकरार है। देश के हर भाग में बहुसंख्यक समुदाय अत्याचार और ज्यादतियों का शिकार है। कश्मीर में समाज मंदिर तोड़ा गया और फारुख साहब ने उसे दुबारा न बनाने की सलाह दी कि बना तो फिर तोड़ा जा सकता है। और, कृष्ण जन्माष्टमी मनाने पर भी पाबन्दी लगी! केन्द्रीय सरकार सब कुछ देखकर भी खामोश है। धर्म की रक्षा के लिये समाज को ही सभा और 'आर्य जगत्' के माध्यम से सरकार को समुचित कार्य ाही के लिये बाध्य करने की पहल करनी चाहिये। —सत्य शरण गुप्ता, भीम सैन आर्य भवन, असावलपुर।

दुःख और अशांति......

(पृष्ठ २ का शेष)

यदि किसी अपराध के संदेह में भी पकड़ा जाए तो इसका छुटकारा कठिन होता है। निर्धन की न कोई जमानत देता है, और न उसके लिए कोई गवाही देता है। यह कितना घोर अन्याय है। जो लोग प्रातः से सायं तक परिश्रम अथवा मजदूरी करते हैं उन्हें तो भर-पेट रोटी नहीं मिलती, परन्तु जो कुछ भी काम नहीं करते उन्हें अधिक खा-खा कर अजीर्ण हो जाता है।

सत्य तो यह है कि अमीर के कुत्ते भी गदेलों पर आराम करते हैं, कारों में घूमते हैं, दूध और मक्खन खाते हैं। परन्तु गरीब के बच्चों के भाग्य में रूखी रोटी भी नहीं होती। समाज का इससे अधिक अन्याय और क्या हो सकता है ?, सवर्ण हिंदू हरिजनों पर कितना अत्याचार करते हैं ? यदि हरिजन बन्धु कानून का सहारा लेना चाहें तो उन्हें डराया-धमकाया जाता है और वे भय के कारण चुपचाप अत्याचार सहन करते रहते हैं। कई युवक बिना दहेज के किसी निर्धन कन्या से विवाह नहीं करना चाहते चाहे वह कितनी भी सुन्दर, सुशील और योग्य क्यों न हो। क्या यह पुरुष जाति का स्त्री जाति के प्रति घोर अन्याय नहीं ? बड़े-बड़े साहूकार गरीबों को अधिक से अधिक ब्याज पर उधार देकर आयु-पर्यन्त उनका खून चूसते हैं। क्या यह कम अत्याचार है ?

प्रातःकाल सूर्य उदय होने से पूर्व सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानव के फैशन और पेट के लिए लाखों गौएं कट जाती हैं। क्या यह अन्याय अत्याचार की पराकाष्ठा नहीं ? यह कितना घोर पाप है ? काला धन्धा करने वालों, घूस लेने और देने वालों, वस्तुओं में मिलावट करने वालों, चोर, डाकू, ठग धोखेबाजों के बढ़ने का कारण केवल मात्र अन्याय ही तो है। यदि न्यायानुसार इन अपराधियों को कड़ा दंड दिया जाए तो ऐसे लोग भी सुधर सकते हैं।

सारांश यह है कि प्रत्येक बलवान निर्बल पर अत्याचार करता है। धनवान् निर्धन का खून चूसता है। गुण्डे और बदमाश लोग शरीफ लोगों को सताते हैं। चालाक लोग भोले-भाले लोगों को ठगते हैं। जिधर भी देखो अन्याय और अत्याचार ही दिखाई देगा।

पाठक वृन्द, मैंने संक्षेप से इस लेख में अज्ञान, अभाव और अन्याय के विषय में कुछ निवेदन किया। दुःख और अशान्ति के ये मूल कारण हैं। इन कारणों को दूर करने से ही सुख और शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। प्रत्येक आर्य नर-नारी का एवं मनुष्य मात्र का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह अज्ञान, अभाव और अन्याय के विरुद्ध लड़े ताकि संसार में सुख और शान्ति चिरस्थायी हो सके।

पता—पो० ददाहू, रेणुका (हि० प्र०)

जादूगर की जादूगरी......

(पृष्ठ ५ का शेष)

सम्प्रदाय के प्रवर्तक मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने तो यहां तक स्वीकार किया—

"हम खुदा से डरकर यह स्वीकार करते हैं कि वेद ईश्वरीय पुस्तक है जो सृष्टि के आदि में परमात्मा ने मानव मात्र के कल्याण के लिए पैदा किए।"

भारत को ईसाइयत के प्रभाव में लाने का स्वप्न देखने वाले पाश्चात्य प्रचारकों ने ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर भारत की प्रशंसा के गीत गाने प्रारम्भ कर दिए। कोल ब्रुक ने लिखा :—

There is very little of high thought and inspiration in christianity which cannot be traced to one or other successive influence of Hindu ideas, either to Hinduized hellenism of pathagoras and plato, the hinduized mezuism of goatics, to the hinduized judaism of kabbalists, to the hinduized mahamadenism of moorish philosopher soceania mission of new England transcendelalist.

"ईसाईयत में ऐसा कोई उत्साह देने वाला उच्च विचार या उपदेश नही जिसे हिन्दुओ की महान् विचारधाराओं में से ग्रहण किया हुआ न माना जा सके। वह चाहे पाइथागोरस एवं प्लेटो का दार्शनिक सिद्धांत हो, चाहे जुआस्टिकों या मूरों का अथवा कब्बालिस्टों का नैतिक सिद्धान्त, चाहे इंग्लैण्ड का जन्मोत्तरवाद, सभी हिन्दू धर्म की महान् विचारधाराओं से प्रभावित दिखाई देते हैं।"

अलू दुबियस लिखता है—

India is world's cradle thense it is that common mother, in sedinng his children even to the utmost west, has unfading testimoney of our origin, manu inspired Hebrew, Greek and Roman Law and Fconomic regulations.

भारत संसार का पलना है, इसलिए वह सबकी सांझी माता है, क्योंकि उसी ने अपनी सन्तानों को सुदूर पश्चिम तक में भेजा। इसलिये भारत हमारी ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं का आदि स्रोत सिद्ध होता है। मनु ने ही हिब्रू, ग्रीक और रोमन कानून को और आर्थिक नियमों को प्रेरणा दी है।

यह सब जादूगरी देव दयानन्द की ही है जो हमें गुलामी से निकालने तथा नारकीय जीवन से बचाने आया था। आज भी उसका जमाया पौधा "आर्य समाज" उस कार्य को कर रहा है।

पता—१६ शिवकुंज मजास रोड, बम्बई-६०

रामगोपाल शालवाले के निवास पर आतंकवादी फेरे

दिल्ली : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक विज्ञप्ति के अनुसार दिल्ली में भी आतंकवाद पैदा करने के प्रयासों के आसार जान पड़ने की आशंका की सूचना प्रधान-मंत्री व गृह मंत्री को दी गई है।

घटनाक्रम में बताया गया है कि २ सितम्बर को मध्याह्न में कार में बैठे हुए कुछ सिखों ने सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के कृष्णनगर स्थित निवास के दो-तीन चक्कर लगाकर भवन का भली-भांति जायजा लिया। सुरक्षा पुलिस गारद के जवानों द्वारा पूछताछ हेतु रोकने की कोशिश पर वे भाग निकले। स्थानीय तौर पर कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था के साथ ही पंजाब तथा अन्य स्थानों की सुरक्षात्मक गतिविधियों में ढील न बरतने का सरकार को ध्यान दिलाया गया है।

आर्यसमाज गांधीनगर

आर्य समाज गांधी नगर में १७ सितम्बर से २३ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जाएगा जिसमे श्री वेदव्यास के भजन और श्री प्रेमभिक्षु की कथा होगी। १७ और १८ सितम्बर को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी सम्बन्धी फिल्म दिखाई जाएगी।

दयानन्द बलिदान शताब्दी का प्रस्तावित कार्यक्रम

करनाल (हरियाणा) : आ० प्रा० प्र० उपसभा ने राष्ट्रीय अखण्डता हेतु नैतिक-उत्थान की भावना प्रदीप्त करने की दृष्टि से ७ अक्टूबर तक प्रान्तीय स्तर पर महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी मनाने का निश्चय किया है। विभिन्न प्रांतों के बहुसंख्यक अभ्यागतों के अतिरिक्त २८ सितम्बर से ४ अक्टूबर के मध्य पाँच-पाँच सौ युवक-युवतियों के योग प्रशिक्षण शिविर, महर्षि दयानन्द के ब्रह्मत्व में ४ से ७ अक्टूबर तक विशेष यज्ञ तथा ६ अक्टूबर को देश के शीर्ष साधु-संन्यासियों के नेतृत्व मे नगर में एक भव्य शोभा-यात्रा कार्यक्रम में सम्मिलित हैं। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री (हरियाणा) भी एक सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

शहीद परिवार सहायता योगदान

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, लेखानुभाग देहरादून, मोहकमपुर के श्री मनमोहन कुमार आर्य ने, १८७ व्यक्तियों से संगृहीत ११२३ रु० की प्रथम किस्त अमृतसर शहीद परिवार सहायता कोष में भेजी है।

—कलकत्ता आर्य समाज ने देवकी आर्य कन्या पाठशाला व हजूरी बाग (श्रीनगर) के भवनों के पुनर्निर्माण तथा पंजाब सैनिक-अभियान के हुतात्मा सैनिक परिवारों की सहायतार्थ क्रमशः ५६३५ रु० (४२ व्यक्तियों का दान) व ५०० रु० की सहयोग-निधि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग, नई दिल्ली को भेजी है।

हिन्दी व अध्यात्म की कक्षाएं

आर्य समाज, नैरोबी (अफ्रीका) ने पार्कलैण्ड स्थित महर्षि दयानन्द भवन मे बच्चों और प्रौढ़ों के लिये प्रत्येक बुधवार से शुक्रवार तक हिंदी व अध्यात्म की सायंकालीन कक्षाएं प्रारम्भ की है। उक्त कक्षाएं काफी सफल सिद्ध हुई हैं और उपस्थिति दिन-ब-दिन बढ़ रही है। हिन्दी की कक्षाओं में वर्ण-बोध स्तर के विद्यार्थियों के अलावा कुछ हिन्दी जानने वाले विद्यार्थी भी अपना ज्ञान और बढ़ाने के लिए सम्मिलित हो रहे हैं।

—आर्य समाज बरवटपुर शाहपुर के वार्षिक चुनाव मे प्रधान—श्री गयाप्रसाद मेहता, मंत्री—श्री रामगोपाल तिवारी व कोषाध्यक्ष—श्री मोहनलाल कोठारी निर्वाचित हुए।

दयानंद जन्म-स्थान टंकारा को विश्व-दर्शनीय बनावें

लाला जगन्नाथ जी रंगवाले, पानीपत द्वारा एकत्र दान की सूची

श्री जगन्नाथ जी "रंगवाले" पानीपत दो वर्ष पूर्व बस लेकर महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा पधारे थे। उन्होंने ट्रस्ट के सामने एक योजना रखी कि टंकारा को विश्व-दर्शनीय स्थान बनाया जाये। ट्रस्टियों ने सहर्ष उनकी योजना स्वीकार की और उन्हें इसका संयोजक बनाया। इस कार्य हेतु वह कुछ समय से दान एकत्र कर रहे हैं। अभी तक उन्होंने 60 हजार की राशि एकत्र कर ली है। उनकी योजना 5 लाख रुपए की है। उनके प्रयत्नों से जो दान एकत्र हुआ है, उसकी सूची प्रकाशित की जा रही है। जो सज्जन इस कार्य हेतु दान देना चाहें वे उनको या ट्रस्ट कार्यालय आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 के पते पर भी राशि भिजवा सकते हैं। दानियों की सूची निम्न प्रकार है—

नाम	दान राशि रु० पै०
श्री बलदेव जी चैरीटेबल ट्रस्ट-मद्रास	11000
श्रीमती माता यशोधा रानी-मद्रास	1100
श्री नवीन सरजीकल मद्रास	500
श्री बजाज सरजीकल मद्रास	1000
श्री पाईनीयर मद्रास लिमिटेड	501
श्री जगदीश चन्द्र जी मद्रास	1000
श्री बी० बजाज मद्रास	1000
डॉ० सत्यपाल जी घरोण्डा	1001
जगन्नाथ एण्ड सन्स "रंगवाले" पानीपत	1000
श्री सुभाष चन्द जी बल्लभगढ़	1000
हितकारी साबुन उद्योग बल्लभगढ़	500
उत्तम केमीकल उद्योग	500
श्री भीमसेन जी विद्यालंकार	500
श्री अशोक चन्द्र जी ग्रोबर-मद्रास	1183
श्री सत्यपाल जी मंत्री गुड़गांवा	500
श्री जगदीश चन्द जी डूढ़ेजा	501
राम दित्तामल गंगाराम-करनाल	1100
श्री राम दित्तामल गंगाराम कुरुक्षेत्र	1100
ट्रेड ग्रुप्स चण्डरगढ़	1100
श्री मदन लाल लखनऊ	500
श्री राम प्रकाश जी पठानकोट	500
श्री गणेश दास जी अग्निहोत्री-दिल्ली	600
यूनाइटेड उलन मिल्ज-पानीपत	501
श्री मुन्शीराम जी	500
श्री कपूर चन्द कन्हैयालाल-पानीपत	501
ममता देवी सुपुत्री श्री देशबन्धु भूटानी-पानीपत	501
श्री बोधराज जी बल्लभगढ़	501
श्री बी० आई० आनन्द-दिल्ली	501
स्त्री आर्य समाज-माडल टाउन-दिल्ली	200
आर्य समाज-माडल टाउन	321
आर्य समाज-चूना मण्डी, दिल्ली	250
श्रीमती भाग्यवती जी-घरोण्डा	250
श्री काशी राम-गाजियाबाद	250
माता लाजवंती	400
डॉ० नेहचलदास जी पानीपत	250
श्री आकाश उद्योग बल्लभगढ़	251
सदना—बल्लभगढ़	251
शक्ति निगम—बल्लभगढ़	200
आर्य बन्धु बल्लभगढ़	200
सत्यदेव कुलभूषण	200
आर्य समाज—एन० डी० ए० रमजकवासला	335
आर्य समाज—घरोण्डा	101
श्री पुरुषोतम दास जी मंत्री—आर्य समाज—घरोण्डा	101
श्री नन्दलाल जी घरोण्डा	101
श्री ज्ञानचन्द जी—घरोण्डा	151
श्री रामलाल जी,	101
श्री देशराज जी	101
श्री बाबूलाल जी	101
श्री गिरधारी लाल जी	101
श्री ओम् प्रकाश जी	101
आर्य समाज—पटेल नगर, पानीपत	134
श्री के० एल० देहरादून	101
श्री जगदीश चन्द मिनोचा पानीपत	101
श्री रामलाल जी आहुजा—करनाल	100
कंवर ब्रिज भूषण देहरादून	101
श्री किशोरी लाल शिवचरण लाल दिल्ली	251
श्री सुदेश मित्र दिल्ली	101
श्री नन्दलाल जी मलिक—अमृतसर	101
श्री उत्तम चन्द जी करनाल	201
श्री मूलचन्द जी करनाल	101
श्री राम स्नेही जी पानीपत	151
डॉ० रमेश चन्द्र जी छावड़ा	101
श्री ओ३म् प्रकाश जी गुप्ता पानीपत	101
श्री कृष्ण लाल जी मलिक दिल्ली	100
श्रीमती बसन्ती देवी जी	100
श्री डी० एन० बुधराजा गुड़गांव	101
गुप्त दान—सोनीपत	101
डॉ० गिरधारी लाल	101
आर्य समाज आर० के० पुरम् दिल्ली	101
श्रीमती राजकपूर—पानीपत	159
यूनाइटेड स्टील प्रेडिक्शन—पानीपत	101
डॉ० रामलाल जी—पानीपत	150
श्री शांतूलाल जी नारंग—पानीपत	106
श्री राकेश जी नारंग—पानीपत	101
श्री जगदीश चन्द जी धवन पानीपत	101
श्रीमती सावित्री देवी जी	101
श्री राम प्रकाश जी माडल टाउन, पानीपत	101
श्री राम कृष्ण जी सेठी रिटायर्ड पोस्ट मास्टर	101
श्री ओ३म् प्रकाश जी आर्य ताबडू	101
स्त्री आर्य समाज—ताबडू	101
श्री शिव दयाल जी सोहना	101
श्री ओ३म् प्रकाश जी सोहना	101
श्री दीपचन्द जी घरोण्डा	50
श्री सुन्दर लाल जय भगवान—घरोण्डा	51
श्री हरीचन्द जी	51
स्त्री आर्य समाज—घरोण्डा	51
श्री हरभगवान दास जी	51
श्री धर्मपाल जी घरोण्डा	51
डॉ० रामलाल जी गोहाना	50
श्री मोती लाल जी देहरादून	50
श्री लक्ष्मण देव जी	51
श्री आत्म प्रकाश जी तपोवन देहरादून	51
श्री हीरालाल जी—करनाल	51
श्री वजीरचन्द जी	51
श्री जानकी दास मोती दास—सिरसाना	51
श्री शगुन चन्द जी	51
श्री आर० एन० मेहता—बहादुरगढ़	51
श्री रमेश चन्द जी गुगलानी—फरीदाबाद	50
श्री के० पी० अग्रवाल—थर्मल प्लांट	51
श्री देवराज जी बजाज—पानीपत	51
श्री वी० के० शर्मा	51
श्री गणपत राय जी खुराना—पानीपत	51
डॉ० आर० एन० चौधरी पानीपत	51
डॉ० एस० डी० खुराना पानीपत	51
श्री हंसराज जी पटियाला	51
श्री शान्ति स्वरूप जी दिल्ली	50
चौ० नन्दलाल आहूजा—ताबडू	51
श्री मेघराज जी आर्य—पानीपत	51
रैयको इण्डस्ट्रीज—पानीपत	53
श्री कैलाश चन्द जी अतेजा—पानीपत	51
श्रीमती विमला देवी जी गान्धी—पलवल	60
श्री रामचन्द जी महता—करनाल	50
श्रीमती सुदर्शन चौधरी—देहरादून	60
श्री कृष्ण लाल जी—पानीपत	50
श्री गुरबचन लाल जी, बाबरपुर	51
श्री सुभाष चन्द जी घरोण्डा	100
श्री केवल कृष्ण जी	100
श्री अमरनाथ जी—पानीपत	100
श्री रामकिशन जी बत्रा पानीपत	100
सुभाष चन्द्र जी—थर्मल प्लांट	101
श्री देवराज जी डावर—पानीपत	101
श्री गोविन्द राम जी—देहरादून	55
डॉ० बलराज जी समालखा	51
श्री ओ३म प्रकाश समालखा	51
श्री मोहनलाल जी समालखा	51
श्री वाई० पी० भाटिया देहरादून	51
स्त्री आर्य समाज—धाम वाला	51
श्री विजय प्रताप भण्डारी	101
श्री बसन्त लाल जी—करनाल	51
श्री वेद प्रकाश जी नारंग	51
श्री केशरदास जी नारंग—करनाल	51
श्री धर्मवीर जी भाटिया—पानीपत	51
श्री सुखबीर सिंह जी ईसरावा	51
श्री जनता खाद्य भण्डार ईसराबा	51
श्री रामतीर्थ जी घरोण्डा	21
श्री महेन्द्र पाल जी	21
श्री प्रमोद कुमार	21
ओ३म प्रकाश राज कुमारी	21
श्री दरबारी लाल जी	21
श्री चमन लाल जी	21
श्री रामजी दास जी	21
श्री विद्याव्रत जी शास्त्री—रोहतक	21
डॉ० डी० पी० जी० देहली	25
श्री ओम प्रकाश जी सिरोहा	25
श्री ओ० पी० यादव—दिल्ली	25
श्री रामचन्द्र जी शर्मा	25
श्री ओम प्रकाश जी	21

(शेष अगले अंक में)

प्रो० वेदव्यासजी के जन्म दिवस समारोह की सचित्र झांकी

समारोह के अध्यक्ष स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती। दूसरे चित्र में प्रो० वेदव्यास जी को १२ लाख रु० की थैली भेंट की जा रही है, साथ में खड़े हैं, श्री दरबारी लाल। तीसरे चित्र में प्रो० साहब से शहीद परिवारों की सहायता के निमित्त एक लाख रु० की राशि प्राप्त करने के बाद विदेश राज्य मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा उनको धन्यवाद दे रहे हैं।

श्री धर्मपाल सेठ (डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा के महा-सचिव) अभिनन्दन पत्र पढते हुए। क्रमश: श्री राम गोपाल शालवाले, श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी और प्रो० शेर सिंह प्रो० साहब के गुणों की प्रशंसा करते हुए उनके स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करते हुए।

श्री धर्मवीर (भूतपूर्व राज्यपाल), डा० कर्ण सिंह, श्री हंसराज खन्ना (पूर्व मुख्य न्यायाधीश) और श्री राम निवास मिर्धा अपनी शुभकामना प्रकट कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाहा प्रो० साहब को माल्यार्पण करने के पश्चात् उनसे स्नेह पूर्वक भेंटते हुए। आर्य प्रादेशिक सभा के महामंत्री श्री रामनाथ सहगल प्रो० साहब को माला पहनाने के पश्चात् श्रद्धापूर्वक उन्हें नमस्कार कर रहे है और प्रो० साहब उनकी पीठ थपथपा रहे हैं। तीसरे चित्र में प्रो० शेर सिंह और चौथे चित्र में श्री पं० शिव कुमार शास्त्री मिर्धा जी का स्वागत कर रहे हैं।

यू० १०३/१०८ लायसेंस ट पोस्ट विदाउट प्रीपेमेण्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०६)

पहले चित्र मे मच पर बैठे हुए विशिष्ट जनो की और दूसरे चित्र में सभागार मे दूर तक बैठे श्रोताओ की एक झाकी।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से २१ हजार रु० प्रधानमंत्री को भेंट

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा की बहनो के एक शिष्ट मडल ने प्रधान मंत्री से मिलकर पजाब की सैनिक कारवाई मे शहीद हुए जवानो के परिवारो की सहायता के लिए उन्हे २१,००० की राशि भट की। शिष्टमडल ने प्रधान मंत्री को अपनी सभा के सेवा-कार्यों का सक्षिप्त परिचय देते हुए पजाब को आतकवादियो से मुक्त कराने के अभियान को उचित बताया और उनके साहसकी सराहना की तथा राष्ट्रहित के प्रत्येक कार्य मे अपने पूण सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रधान मंत्री आर्य महिलाओ के शिष्ट-मडल से मिलकर बहुत प्रसन्न हुई, और उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।—मन्त्री प्रकाश आर्या और प्रधाना सरला मेहता।

बम्बई में हिन्दू मच

(पृष्ठ १ का शेष)

अल्पसख्यक आयोग के स्थान पर मानवाधिकार आयोग का गठन। (७) घुसपैठियो को कडी से कडी सजा। (८) सविधान की धारा ३७० एव अन्य कोई भी ऐसी धारा जो राष्ट्र की एकता के विरुद्ध किसी एक राज्य या समुदाय को विशेषाधिकार प्रदान करती हो उसमे उचित सशोधन। (९) अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय का राष्ट्रीयकरण एव समस्त केन्द्रीय विश्वविद्यालयो के लिये समान कानून एव आचार सहिता। (१०) परिवार नियोजन कायक्रम समस्त समुदायो एव धर्मावलम्बियो पर समान रूप से लागू हो। (११) बगला देश के हिन्दुओ तथा अन्य गैर मुस्लिम एव अल्पसख्यक समुदाय के नागरिको के हितो की रक्षा के लिए बगला लिबरेशन आर्गेनाइजेशन की मागो का समर्थन। (१२) श्रीलका एव विश्व के विभिन्न इस्लामिक देशो मे तमिल हिन्दुओ के प्रति भेदभाव पूण व्यवहार का उन्मूलन एव उनके मानवीय अधिकारो को पुन दिलाने का पूर्ण प्रयत्न।

यह मच किसी भी प्रकार के साम्प्रदायिक विस्तारवादी समुदायो के साथ कोई समझौता नहीं करेगा।

अखिल भारतीय हिन्दू मच ने इस बात को स्वीकार किया कि सिख-हिन्दू जाति के अभिन्न अग हैं। पजाब मे हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओ के कारण सिख एव हिन्दू समुदाय के बीच जो खाई पैदा हो गई है यह मच उसे भरने की पूरी कोशिश करेगा।

हमे आशा है कि राष्ट्रीय भावनाओ से ओत प्रोत भारत का हर नागरिक देश मे शासन कर रही काग्रेस (आइ) पार्टी एव अन्य विपक्षी दलो के विरुद्ध इस राष्ट्रीय हिन्दू विकल्प का प्रसन्नता के साथ स्वागत करेगा।

हम हर भारतीय राष्ट्रवादी से अनुरोध करते हैं कि वह इस अखिल भारतीय हिन्दू मच को अपना सक्रिय योगदान और सहयोग प्रदान करे।

—भारत कल्याण मच की ओर से, सदाजीवतलाल चन्दूलाल द्वारा प्रसारित

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वा.मत्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौं० या ५० डालर | वर्ष ४७, अक ४०, रविवार, ३० सितम्बर १९८४ | दूरभाष ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | आश्विन शुक्ला ६, २०४१ वि

रामाराव आन्ध्र प्रदेश के पुन: मुख्यमंत्री बने

हैदराबाद, । इस वर्ष स्वाधीनता दिवस के अवसर पर आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री रामलाल ने सवैधानिक और लोकतान्त्रिक मूल्यों को ताक पर रख कर रामाराव को मुख्यमंत्री पद से हटा दिया था और उनके स्थान पर भास्कर राव को मुख्यमंत्री बनाकर उन्हें विधान सभा मे अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए एक मास का अवसर दिया था। वह अवधि पूरी हो जाने पर भी भास्कर राव जब अपना बहुमत सिद्ध नही कर सके, तब नए राज्यपाल श्री शकरदयाल शर्मा ने श्री रामाराव को वापिस बुलाकर पुन मुख्यमत्री बना दिया। श्री रामाराव ने 20 सितम्बर को ही विधान सभा मे अपना बहुमत भी सिद्ध कर दिया। इस अभूतपूर्व घटना को सारे देश मे लोकतत्र की अभूतपूर्व विजय माना जा रहा है।

राज्यपाल ने श्री रामाराव को भी अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए एक मास की अवधि दी थी, किन्तु श्री रामाराव ने महीने भर तक प्रतीक्षा करने के बजाय चार दिन के अन्दर ही अपना बहुमत सिद्ध कर दिया। आन्ध्रप्रदेश के घटना चक्र से इका की छवि को गहरा धक्का लगा है।

आर्य नेता पश्चिमी जर्मनी से लौटे

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ पश्चिमी जमनी मे हुए विश्व धार्मिक एकता सम्मेलन मे शामिल होने के लिए 13 सितम्बर को दिल्ली से रवाना हुए थ। उनके साथ आन्ध्रकेसरी श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् और आध्रप्रदेश के भूतपूर्व नगराध्यक्ष श्री कृष्णलाल भी गए थे। श्री ओमप्रकाश त्यागी अमरीका से सीधे वहा पहुच गए थे। इनके अलावा आर्य समाज के कुछ चुने हुए वैदिक विद्वान् भी इस सम्मेलन में आमन्त्रित थ। यह पहला अवसर था जब आय समाज के नेताओ और विद्वानो को आय समाज के प्रतिनिधि के रूप मे इस प्रकार विदेश मे आमन्त्रित किया गया हो। इन सबका आने-जाने का मार्ग व्यय और होटल-निवास आदि का समस्त व्यय सम्मेलन की ओर से ही किया गया था। आर्य समाज के इतिहास की यह अनुपम घटना थी।

श्री शालवाले तथा उनके साथी 23 सितम्बर को वापिस पालम हवाई अड्डे पर दिल्ली पहुच गए। जिस तरह 13 सितम्बर को इन महानुभावो के जाने से पहले आर्य समाज हनुमान रोड मे उनको भावभीनी विदाई दी गई थी, उसी प्रकार 23 सितम्बर को प्रात 9 बजे पालम हवाई हड्डे पर आर्य जनता ने उन सबका स्वागत किया और उन्हे पुष्पमालाओं से लाद दिया।

उनकी यात्रा का और सम्मेलन का सक्षिप्त विवरण सम्भवत आय जगत्' के आगामी अक मे दिया जा सकेगा।

विश्व धर्म शांति सम्मेलन में आर्य समाज का प्रतिनिधत्व

अगस्त के अन्तिम सप्ताह में नैरोबी में विश्वधर्म शान्ति सम्मेलन हुआ जिसमें 60 देशों के लगभग 500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अफ्रीकी देशों के हिन्दुओ की ओर से इस समय नैरोबी में आर्य समाज के प्रचार में रत डा० वेदीराम शर्मा ने प्रतिनिधित्व किया। सम्मेलन का उद्घाटन उन्हीं के प्रपत्र वाचन से हुआ। उनके प्रपत्र का विषय था—'वैदिक धर्म टू यूनिवर्सल हा [illegible]।' स्थानीय पत्रों में उनका यह प्रपत्र और चित्र प्रकाशित भी हुआ। चित्र में डा० वेदीराम अपना प्रपत्र सम्मेलन में पढ रहे हैं। सम्मेलन में उपस्थित कुछ प्रतिनिधियों का विवरण इस प्रकार है—(बाएं से) बिशप प्रो० अनास्तेसियस यजमुतेतोस (क्रिश्चियन) के० एस० [illegible] (नैरोबी के गुरुद्वारों के [illegible] महासचिव), डा० वेदीराम शर्मा (वैदिक मिशनरी, हिन्दुओं के प्रतिनिधि), [illegible] (अफ्रीकी चैप्टर प्रेजिडेट), अल-हज अकेद कातेरेगा (अफ्रीकन चैप्टर के मुस्लिम सहायक महासचिव), न्येरी के बिशप जी एम गातिमु और वेसमान महारोनी (नैरोबी यहूदी सगठन के प्रतिनिधि)।

इस सम्मेलन मे डा० वेदीराम के प्रपत्र पर ईसाई बिशप और मुस्लिम प्रतिनिधि ने पूछा कि यदि हिन्दू धर्म [illegible] उदार है तो क्या हम बपतिस्मा लेकर और नमाज पढते हुए भी अपने आपको हिन्दू कह सकते है? श्री वेदीराम का उत्तर था—'क्यो नही? उपासना-पद्धति या पूजा पद्धति की हिन्दू धर्म मे हरेक को स्वतत्रता है शर्त केवल यही है कि भारत के राम-कृष्णादि प्राचीन पूर्वजों मे, भारतीय इतिहास मे और भारतीय सस्कृति मे आस्था हो। जो अपने बाप या अपने पूर्वजो मे अनास्था रखे, वह सत्य का उपासक नही।"

[illegible]—अमर स्वामी सरस्वती   [illegible]—क्षितीश वेदालंकार

आओ सत्संग में चलें

प्रभु कहां है ? देखो, यहां है

—डॉ० रामनाथ वेदालंकार—

क्व स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो
अनानतः ।
ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥

साम०पू० १४२

(क्व स्यः) कहाँ है वह (वृषभः) वर्षक, (युवा) तरुण, (तुविग्रीवः) बहुत ग्रीवाओं वाला. (अनानतः) अपराजेय (ब्रह्मा) परमेश्वर। वह कहीं दीखता तो है नहीं, अतः (कः तम्) कौन उसे (सपर्यति) पूज सकता है ?

तुम कहते हो, संसार में कोई है जो "वृषभ" है, वर्षा करने वाला है। उसी के नियमों के अनुसार समुद्र से पानी वाष्प बनकर आकाश में बादल के रूप में एकत्र होता है और बरसता है। वह पानी सब प्राणियों का कल्याण कर नदियों के द्वारा फिर समुद्र में पहुंच जाता है, और समुद्र से पुनः बादल बनकर बरस जाता है। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। और यह पानी की वर्षा ही क्या, वह तो अनन्त पदार्थों की वर्षा करने वाला है। वह हमे गर्मी पहुंचाने के लिए भूमि पर सूर्य-किरणों की वर्षा करता है, हमें प्राण देने के लिए वायु की वर्षा करता है, हमारे लिए धन-धान्य की वर्षा करता है, हीरा-मोती, सोना-चाँदी की वर्षा करता है, और इन सबसे बढ़ कर हमारे ऊपर सद्गुणों की वर्षा करता है, सब प्राणियों पर अपने न्याय, दया सुख आदि की वर्षा करता है। पर हम पूछते हैं—वह है कहां ?

तुम कहते हो संसार में कोई है जो "युवा" है, सदा से युवा रहा है और आगे भी सदा युवा ही रहेगा। हम सांसारिक प्राणी जन्म लेते हैं, फिर क्रमशः बचपन, यौवन और बुढ़ापे की अवस्थाओं को पार करते हुए एक दिन इस संसार को छोड़कर चले जाते हैं। पर वह ऐसा नही है। वह सदा तरुण है। कोई ऐसा समय नहीं था जब वह बच्चा रहा हो, बच्चे की तरह अल्पशक्ति वाला रहा हो और कभी ऐसा समय नहीं आयेगा जब वह बूढ़ा हो जाये, बूढ़े की तरह अशक्त हो जाये। वह अजर है, अमर है। पर वह है कहाँ ?

तुम कहते हो संसार मे कोई है जो 'तुविग्रीव" है, अनन्त ग्रीवाओं वाला है, ग्रीवा के जो निगलना और उपदेश देना रूपी व्यापार हैं उन्हें अनन्त रूप से करने वाला है। जैसे प्राणी अपनी ग्रीवा से ग्रास को निगलते हैं वैसे ही वह समय आने पर प्रत्येक पदार्थ को निगलता है और प्रलयकाल में सारे जगत् को ही कवलित कर देता है। जैसे हम अपनी ग्रीवा से बोलकर दूसरे को उपदेश करते हैं, वैसे ही वह हम सबके मनों में ज्ञान का उपदेश करता है और आदि सृष्टि में भी उसी ने हमारे लिए वेद का उपदेश किया था। पर वह है कहां ?

तुम कहते हो संसार में कोई है जो "अनानत" है, अपराजेय है, विश्व को बड़ी से बड़ी शक्ति से हार नहीं मानने वाला है। वह किसी के आगे नही झुकता, उसके आगे सब झुकते हैं। ये उत्तुङ्ग पर्वतशिखर उसके आगे झुकते हैं, ये नदी-नद-समुद्र उसके आगे झुकते हैं, ये सूर्य-चांद-तारे उसके आगे झुकते हैं। वह है कहां ?

तुम कहते हो संसार में कोई है जो "ब्रह्मा" है, जो विशाल है, जो बृहत् शक्ति वाला है, जो बहुत समृद्ध है। पर हम पूछते है—वह है कहाँ ?

तुम कहते हो उस 'वृषभ' की, उस 'युवा' की, उस 'तुविग्रीव' की; उस 'अनानत' की, उस 'ब्रह्मा' की पूजा करो, आराधना करो। पर हम पूछते हैं–कौन, कैसे उसकी आराधना कर सकता है ? आराधना तो उसकी की जाये जिसे देखकर आँखें तृप्त हो सकें, जिसकी अमृतवाणी से कान तृप्ति पा सकें, जिसके चरणों की धूल से मस्तक धन्य हो सके। उसका कोई ठिकाना बताओ, उसका कोई रूप बताओ, उसकी कोई निशानी बताओ, जहाँ जाकर, जिस रूप को देखकर, निशानी को पहचान कर हम उसके दर्शन पायें, उसकी आराधना करें।

क्या कहते हो ? किसी गुरु की शरण में जाओ। मुझे तो कोई गुरु नहीं दीखता। मैं कहाँ जाऊं, मैं किसके द्वार पर जाकर टक्कर मारूं। अरे, सहसा यह किसका गम्भीर स्वर आकाश में गूज रहा है—

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च
नदीनाम् ।
धिया विप्रो अजायत ॥

साम०पू० १४३

(गिरीणाम्) पर्वतों के (उपह्वरे) एकान्त में, (नदीनां च) और नदियों के (संगमे) संगम पर (धिया) ध्यान के द्वारा (विप्रः) विप्र प्रभु (अजायत) हृदय में प्रकट होता है।

क्या तुम प्रभु के दर्शन करना चाहते हो ? यदि ऐसा है तो चलो। थोड़ी देर के लिए तुम्हें संसार के दूषित विषैले वातावरण से दूर हटना होगा। ऐसे वातावरण में चलना पड़ेगा जहाँ ध्यान भंग करने के लिए सांसारिक कलह, कटुता और अशांति का नृत्य न होता हो, शान्ति का साम्राज्य हो। वहाँ दर्शन कर लेने के पश्चात् फिर वह सर्वत्र दिखाई पड़ने लगेगा। फिर तुम सांसारिक कोलाहल और चीत्कार के बीच भी उसकी हंसती हुई मुखमुद्रा का दर्शन कर सकोगे।

तो पर्वतों के एकान्त में चलो, नदियों के संगम पर चलो। पर्वत के नीचे खड़े होकर जरा गगनचुम्बी चोटियों की ओर तो निहारो। क्या ये चोटियां सिर ऊपर किये हुए तुम्हें उसी प्रभु की महिमा गान करती हुई प्रतीत नहीं होतीं ? पर्वत के इन स्वच्छ झरनों की ओर तो देखो। क्या कलकल करते हुए ये झरने तुम्हें उस प्रभु के ही गीत गाते प्रतीत नहीं होते ? वन के इन सुरभित वृक्षों और लता-कुंजों की ओर तो दृष्टि डालो। क्या ये तुम्हें उसी प्रभु का संकेत करते प्रतीत नहीं होते। लता-कुंजों पर फुदक कर चहकती हुई इन चिड़ियों को तो देखो। क्या ये तुम्हें उसी प्रभु की चर्चा करती प्रतीत नहीं होतीं ? पर्वतीय उपवन के पुष्पित तरुओं पर उड़ती हुई रंग-बिरंगी तितलियों को तो देखो ! क्या ये उसी प्रभु के रूप-रंग की झांकी देती हुई प्रतीत नहीं होतीं ?

आओ, इन नदियों के संगम की ओर भी देखो। विपुल वेग के साथ दौड़कर एक-दूसरी के साथ मिलती हुई धारायें क्या उसी प्रभु के मिलन का संदेश नहीं दे रहीं ? क्या ये धाराएं अपने तरंग रूपी हाथों को उठा-उठाकर प्रभु-दर्शन के लिए तुम्हें नहीं बुला रहीं ?

अब थोड़ी देर के लिए इस शांत वातावरण में अपनी आँखें बन्द करके भी देखो। क्या अन्दर किसी ज्योति के दर्शन नहीं होते ? क्या ऐसा प्रतीत नहीं होता कि किसी स्रोत से आनन्द का प्रवाह तुम्हें अनुपम, अवर्णनीय आनन्द-रस से अभिषिक्त कर रहा है ? यदि ऐसा अनुभव होता है तो तुम्हें प्रभु के दर्शन हो गये। अब तुम सर्वत्र प्रभु को देख सकोगे। अब तुम स्वयं कहोगे—प्रभु यहाँ भी है, वहाँ भी है; इधर भी है, उधर भी है; पूर्व में भी है, पश्चिम में भी है; उत्तर में भी है, दक्षिण में भी है; नीचे भी है, ऊपर भी है; पृथ्वी में भी है, अन्तरिक्ष में भी है। वह पेड़-पौधों में है; बादल में है, बिजली में है, फूल-पत्तियों में है; नदी-नीर में है, सागर में है, सूर्य में है, चाँद में है, जड़ में है, चेतन में है, कण-कण में है, सर्वत्र है।

प्रभु क्योंकि चर्मचक्षुओं से दीखता नहीं, इसलिए है ही नहीं, तुम्हारे मन में उठी हुई यह शंका कोई नवीन नहीं है, यह तो सनातन है। वेद स्वयं कह रहा है—

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरम्,
उतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवामिनाति,
श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ॥

ऋग्वेद २-१२-५

(यं स्म पृच्छन्ति) जिसके विषय में लोग पूछते हैं कि (कुह सः इति) वह कहाँ है, (उत ईम् एनम् आहुः) तथा कुछ लोग इसके विषय में कहते हैं कि (न एषः अस्ति इति) वह तो है ही नहीं, किन्तु (सः) वह तो (अर्यः) नास्तिक शत्रु की (पुष्टीः) पुष्टियों को समृद्धियों को (विजः इव) झकझोर डालने वाले हिंसक जन्तु के समान (आमिनाति) नष्ट कर देता है, (जनासः) हे मनुष्यो, (सः इन्द्रः) वह प्रभु है। (अस्मै श्रद्धत्त) उसमें श्रद्धा करो।

बहुत से मनुष्य सन्देह की भावना के साथ आ-आकर पूछते हैं—यदि प्रभु है तो कहाँ है ? दूसरे कुछ लोग इससे भी आगे बढ़ जाते हैं और वे ताल ठोक कर कहते हैं कि प्रभु नाम की वस्तु संसार में कोई नही है। पर इन दोनों कोटि के मनुष्यों के जीवनों में अनेक ऐसे अवसर आते हैं कि उनका अपना अन्तःकरण ही कहता है कि प्रभु है, अवश्य है।

एक बार नौका में बैठ कर ऐसे ही नास्तिकों की एक टोली नदी पार कर रही थी। अकस्मात् भंवर में पड़कर नौका डगमगाने लगी। मल्लाह ने सुना, सबके मुख पर एक ही शब्द थे—हे भगवन्, रक्षा करो। हे प्रभो, रक्षा करो।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बुद्धिमानी

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् ।
कोऽपि तद्वेद यत्रासौ मृत्युना नाभिवीक्षितः ॥
एतावत्[illegible] भूतानां प्राज्ञलक्षणम् ।
कालयुक्तोऽप्यनुभयविच्छेद सुखं समाचरेत् ॥
महा० अ० १७५, १६४

कल का कार्य आज ही कर डाले। वह क्षण या वह स्थान कौन जानता है जहाँ मृत्यु की दृष्टि न पड़ी हो। मनुष्यों के लिए बुद्धिमानी की पहचान यही है कि धर्म के फल में विश्वास करके उस पर आचरण आरम्भ कर दे। जो समय के अनुरूप कर्तव्य और अकर्तव्य की पहचान कर लेता है, वही बुद्धिमान् है।

सम्पादकीयम्

ये कौन से जीवनमूल्य हैं ?

पिछले दिनों दूरदर्शन की रजत जयन्ती बड़ी धूम-धाम से मनाई गई और इस अवसर पर सारे देश में दूरदर्शन का जाल बिछाने की एक व्यापक योजना भी तैयार की गई। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष के अन्दर-अन्दर १८० नये दूरदर्शन ट्रांसमीटर लगाने का निश्चय भी किया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक दूसरे दिन देश में एक नया दूरदर्शन केन्द्र खुल जायेगा। बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अलावा यह नया २१वाँ सूत्र है जिस पर सबसे अधिक ध्यान दिया जा रहा है। प्रधान मंत्री ने भी यह कह दिया है कि अब दूरदर्शन कोई विलासिता की वस्तु नहीं है, जिस प्रकार शहरों के लोगों को दूरदर्शन के द्वारा मनोरंजन का अधिकार है उसी प्रकार देहात की जनता को भी है। इसलिए भारत सरकार कम से कम इस दृष्टि से देहाती जनता को शहरी जनता से पीछे नहीं रहने देना चाहती। ऐसा लगता है कि देश की गरीबी हटाने का सारा कार्यक्रम नये दूरदर्शन केन्द्र खोलने के कार्यक्रम मे समाहित हो गया है। स्पष्ट है कि दूरदर्शन की सुविधा का उपयोग करने वालों को गरीब कहना किसी को भी शोभा नहीं देगा।

दूरदर्शन के इस विस्तार के समर्थन मे यह तर्क भी दिया गया कि दृश्य और श्रव्य अर्थात् आख से देखने योग्य और कान से सुनने योग्य माध्यम से जितनी आसानी से मनुष्य को शिक्षित किया जा सकता है उतनी आसानी से किसी और माध्यम से नहीं। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। पर दूरदर्शन के रूप में इस माध्यम का जनता को शिक्षित करने में किस प्रकार का योग होगा यह उस नई पीढ़ी से पता लग सकता है जो आजकल के दूरदर्शन युग मे जन्मी, पली-पुसी और बढ़ी है। पहले यही मनोवैज्ञानिक तर्क सिनेमा के सम्बन्ध में दिया जाता था। पर धीरे धीरे सिनेमा जनता को शिक्षित करने के बजाय और सात्विक भावोद्रेक जगाने के बजाय जिस प्रकार फहड अश्लीलता और हिंसा बढ़ाने लगा और जनता में असामाजिक तत्वों के प्रति सहज रुचि जगाने लगा उसके कारण भले और समझदार लोग सिनेमा मात्र को ही बुरा कहने लगे। 'बम्बईया फिल्म' शब्द तो जैसे सभ्य शिक्षित वर्ग में एक तिरस्कार और विद्रूपता की निशानी ही बन गया। पर जब दूरदर्शन के माध्यम से 'बम्बईया' फिल्मों वाला जहर घर बैठे आप तक पहुँचने लगे तो आप उससे कहाँ तक बच पायेंगे। आप अपनी बात छोड़िये, आपके बाद आने वाली जो नई पीढ़ी है अर्थात् आपके बच्चे, वे तो इस जहर को बचपन से ही पीने के अभ्यस्त हो जायेंगे।

दूसरा तर्क यह दिया गया कि दूरदर्शन के माध्यम से ग्रामीण जनता में सामुदायिक भावना का विकास होगा। पहले कभी भारत के देहातो में पचों और पंचायत को महत्व प्राप्त था। आधुनिक राजनीति ने उस पंचायत प्रणाली में भी वैमनस्य प्रधान दलीय और व्यक्तिगत राजनीति का समावेश कर दिया और वहाँ भी केवल सत्तारूढ़ दल के जी हुजूरियों का ही बोल-बाला हो गया, तो जैसे देहात से न्याय भी उठ गया। जैसे पहले पचों के न्याय पर जनता की श्रद्धा होती थी, अब वैसी श्रद्धा नहीं रही। क्योंकि अब [illegible] ही न्याय कर्ता नहीं रहे बल्कि किसी इस या उस महत्वपूर्ण व्यक्ति के [illegible] मात्र बनकर रह गये। एक तरफ हमारी राजनीति ग्रामीण जनता की सामूहिक भावना को तोड़ती जा रही है, दूसरी ओर [illegible] विकास करना चाहती है। ये दोनों विरोधी बातें एक ही साथ कैसे पूरी होंगी। सामुदायिक सहयोग का वास्तविक तरीका तो ग्रामीण [illegible] में और विकास कार्यक्रमों मे सामूहिक श्रम का योगदान [illegible]। पर [illegible] विकास कार्यक्रम ऊपर से अफसरों द्वारा [illegible] ग्रामीण जनता की [illegible] से [illegible] होते हैं।

सबसे बड़ा खतरा यही है कि जिनको आप आधुनिक जीवन मूल्य कहते हैं, वे उद्योग प्रधान उपभोक्ता संस्कृति की देन हैं और उनमे पाश्चात्य जीवन की नकल ही प्रधान है। जो अन्तर सभ्यता और संस्कृति मे है वही अन्तर प्राचीन और आधुनिक जीवन मूल्यों मे है। आधुनिक जीवन मूल्य सभ्यता-प्रधान हैं, और प्राचीन जीवन मूल्य संस्कृति-प्रधान हैं। सभ्यता का सम्बन्ध बाह्य परिवेश से है और संस्कृति का सम्बन्ध आंतरिक परिवेश से। यही से मूल्यों में अन्तर प्रारम्भ हो जाता है। आधुनिक फैशन की दुनिया में जिसको आप पूर्ण सभ्य मनुष्य या 'परफैक्ट जन्टिलमैन' कहते हैं, सम्भव है वह सांस्कृतिक दृष्टि से बिलकुल कोरा हो। और जो सांस्कृतिक दृष्टि में परिपूर्ण हो, वह आपकी आजकल की दुनिया के सभ्य मनुष्य की परिभाषा पर खरा न उतरे। क्योंकि—स्वामी विवेकानन्द के कथनानुसार पश्चिमी सभ्यता में मनुष्य को सभ्य बनाने वाले केवल दर्जी द्वारा सिले कपड़े होते हैं जबकि भारतीय सभ्यता के माप-दण्ड के अनुसार अपटूडेट फैशनेबल कपड़े नहीं, बल्कि सदाचार ही मनुष्य को सभ्य बनाता है।

जिनको आप आधुनिक जीवन मूल्य कहते हैं वे भारतीय जनता को उसके मूल से उखाड़कर पश्चिम का नकलची बना रहे हैं। आप दूरदर्शन पर "लूसी" और "यस मिनिस्टर" तथा ऐसे ही अन्य अंग्रेजी प्रोग्राम दिखाते हैं, जिनमें विदेशी मनोरंजन विदेशी रहन-सहन तथा विदेशी जीवन की झलक भले ही हो, परन्तु उनका भारतीय संस्कृति से कही दूर का भी वास्ता नहीं होता। कभी-कभी तो ऐसा भी लगता है इन प्रोग्रामो को देखकर कि यह दूरदर्शन भारत का नहीं, किसी और देश का होगा। जो भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए और लोक कथाओ के भण्डार के लिए विख्यात है, वही भारत के दूरदर्शन पर सबसे अधिक नदारद है। चाहे चित्रहार हो, चाहे फिल्म हो चाहे मनोरंजन के अन्य कार्यक्रम हों परन्तु उन सब मे भारतीय संस्कार सम्पन्न मानस का और सुरुचि सम्पन्नता का अभाव होता है। कभी-कभी कोई अच्छे कार्यक्रम भी आ जाते है परन्तु उनकी संख्या विशाल रेगिस्तान में छोटे से नखलिस्तान की तरह है जबकि होना इससे उल्टा चाहिए।

यह जानकर तो और भी आश्चर्य होता है कि जर्मनी से या पश्चिम के किसी अन्य देश से जो कूड़ा-कचरा फिल्में मुफ्त में प्राप्त होती हैं वे भी बिचौलियों से अच्छा खास दाम देकर खरीदी जाती हैं। कहा जाता है कि ऐसे सौदो में मेज के नीचे हाथ मिलाकर काफी पैसे का लेन-देन भी होता है। कनाडा और न्यूजीलैण्ड जैसे देश अपने यहा खपत के बाद बचे मक्खन का "बटर ऑयल" बनाकर गरीब देशों की सहायता के नाम पर भारत को उपहार के रूप मे भेजते हैं, हमारे आका उसी मुफ्त बटर आयल को यहा शुद्ध देसी घी के नाम से बेचकर अच्छा पैसा बना लेते हैं। विदेश इसलिए खुश कि—उन्होंने गरीब देश की सहायता कर दी और गरीब देश के अधिकारी इसलिए खुश कि उसने उससे भी कमाई कर ली और आम जनता इसलिए खुश कि जो देसी घी महगाई की हद छूकर दुलभ हो गया उसे यह विदेश से आया घी कम से कम आधी कीमत पर मिल तो गया। ऐसा पुण्य का कार्य भारत के सिवाय और कहा सम्भव है! पर अब तो वह "बटर आयल" भी आकाश कुसुम हो गया।

प्रश्न केवल यही है कि जिन जीवन मूल्यो की शिक्षा हम अपनी जनता को देना चाहते हैं, पहले उनके बारे मे हम स्वय स्पष्ट हो लें और उसके बाद जनता में उसका प्रचार करें अन्यथा यह टी० वी० का विस्तार भारत में टी० बी० (तपेदिक) का विस्तार मात्र होकर रह जायेगा।

मारिशस में भारतीय मूल के लोगों का वर्चस्व

—प्रह्लाद रामशरण—

किसी भी जाति के जीवन मे डेढ सौ वर्ष बडा महत्व रखते है। मारिशस मे भारतीय आप्रवासियो का इतिहास सघर्षमय रहा है। १८३४ मे जिन मजदूरो ने मजूरी के लिए भारत छोडा था, उनको मारिशस पहुचकर अपने जीवन-यापन के लिए रोज सघर्ष करना पडता था। बाद मे उन्होने अपनी सस्कृति और सामाजिक व्यवस्था को कायम रखने के लिए सघर्ष किया। इन सघर्षों मे भारत के धार्मिक ग्रन्थो और वहाँ के प्रौढ लोक साहित्य ने उनकी शक्ति को मजबूत किया था।

बीसवी शती के प्रारम्भिक वर्षों मे मारिशस के भारतीयो ने दो नये मोर्चों पर लडाई शुरू की। बीसवी शती के प्रथम चरण तक आर्थिक एव औद्योगिक समानता के लिए सघर्ष किया और सन् तीस के बाद अपने राजनीतिक अधिकारो को हासिल करने के लिए लडाई छेडी थी। इस दृष्टि से सन् १९०९, १९२६ और १९३५ का बडा महत्व है।

१९०९ मे डाक्टर मणिलाल ने मारिशस के पीडित भारतीयो को एक समाचार पत्र—'हिन्दुस्तानी' दिया था। दो सशक्त सामाजिक सस्थाओ को जन्म दिया। यगमैन हिन्दू ऐसोसियेशन और आर्य समाज की स्थापना मे उनका हाथ रहा है। उक्त कार्यों से मारिशस के भारतीयो मे नई चेतना आई। आर्य समाज की स्थापना मे सबसे बडा योग डा० चिरजीव लाल भारद्वाज का रहा।

१९२६ मे भारतीय मूल की दो सतानो को प्रथम बार मारिशस की विधान परिषद् मे निर्वाचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इससे पहले १९२१ से ही आर० के० बुधन मनोनीत सदस्य के रूप मे ही उक्त विधान सभा मे बैठते थे। राज कुमार गजाधर और धनपत लाल के निर्वाचन से स्थानीय राजनीति मे उथल-पुथल स्वाभाविक थी।

१९३५ मे भारतीय आगमन की शताब्दी का समारोह भव्य रूप से दयानन्द धर्मशाला मे मनाया गया। भारत से श्री स्वामीनाथन् को इस महोत्सव मे विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था।

मारिशस में भारतीय आप्रवासियों के डेढ़ शती समारोह के उपलक्ष्य में

उपर्युक्त तीनो अवसरो पर भारत के शुभ-चितको का सहयोग प्राप्त था (१९०९ मे मणिलाल डाक्टर जी का, १९२६ मे महाराज कुवर सिह जी का) और १९३५ मे स्वामीनाथन् जी का। किन्तु इनके अलावा भारत मे श्री बनारसी दास चतुर्वेदी, देशबन्धु ऐन्ड्रूज, श्रीनिवास शास्त्री तथा श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने प्रवासियो की दयनीय स्थिति के निवारण के लिए बहुत प्रयत्न किया। इसी सिलसिले मे प० बनारसी दास चतुर्वेदी ने १९१८ मे "प्रवासी भारतवासी" नाम की पुस्तक लिखकर प्रवासियो की समस्याओ को ससार के सामने रखा था। उन्होंने ही १९३५ मे ही कहा था कि मारिशस के भारतीयों को अपने राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए एक राजनीतिक दल की स्थापना करनी चाहिए।

१९३५ के बाद की घटनाओ से लगता है कि प० बनारसी दास चतुर्वेदी के परामर्श का यहाँ के भारतीयो पर खूब असर हुआ। क्योकि १९३६ में जब गैर भारतीयो ने मजदूर आदोलन का श्री गणेश किया तब प्रवासियो ने उसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। १९३५ से ही जि व्यक्ति ने मारिशस की राजनीति को एक दिशा दी, और उसका नेतृत्व किया, वह और कोई नही, भारतीय मूल के एक सपूत हैं, जिन्हे सब लोग चाचा रामगुलाम कहकर उनके प्रति अपना आदर प्रकट करते हैं।

भारतेतर देशो मे मारिशस ही वह देश है जहाँ भारतीय मूल के दो व्यक्तियों को वहाँ का प्रधानमत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त है। यही वह देश है जिसे "छोटा भारत' कहा जाता है। यही नही, यही वह देश है जहाँ डेढ़ शती पूर्व जो शर्तबन्द मजदूर, मजूरी करने आये थे, आज उन्ही की सतानें देश के उच्च से उच्च पदों पर कार्य कर रही हैं।

डा० रामगुलाम को मारिशस के राष्ट्रपिता होने का गौरव प्राप्त है। ये १९४० से १९८२ तक मारिशस की विधान परिषद मे सदस्य रहे। पहले मनोनीत सदस्य के रूप में फिर १९४८ मे निर्वाचित सदस्य की हैसियत से ही नही, बल्कि मजदूर दल के नेता के रूप में, इन्होंने ही १९६८ मे मारिशस को आजादी दिलायी थी। १९६८ से १९८२ तक इन्होने मारिशस के प्रधान मत्री का पद सम्भाला था। १९८३ से ये मारिशस के गवर्नर जनरल बने हैं। श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ मारिशस के द्वितीय प्रधान मत्री हैं। इन्होने १९८२ से प्रधान मत्री का पद सम्भाला है। इनके नेतृत्व मे मारिशस की राजनीति मे महान् परिवर्तन आया है। इनकी सूझबूझ से ही वर्तमान समय की चुनौतियो का सामना, मारिशस कर रहा है।

श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ की सरकार ने ही भारतीय आप्रवासी और दास प्रथा के अन्त की डेढ शती समारोह के आयोजन के लिए एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया है। इस समारोह के जरिए सरकार यह चाहती है कि देश की युवा पीढी अपने पूर्वजो के सघर्षमय जीवन के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करे।

फूलियार कोठी पर समारोह प्रारम्भ

मारिशस के भारतीय आप्रवासियो के इतिहास मे १९८४ ऐतिहासिक वर्ष होगा। मारिशस सरकार के तत्त्वावधान मे एक राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ है जो महात्मा गाधी सस्थान और शिक्षा मन्त्रालय के सहयोग से भारतीय आप्रवासी आगमन की डेढ शती समारोह का आयोजन कर रही है।

२७ सितम्बर १९८४ से देश के उत्तर प्रान्त की आब्वानेत कोठी पर जिसे फुलियार कोठी भी कहते हैं, एक सप्ताह का सास्कृतिक कार्यक्रम शुरू हो रहा है। इस महोत्सव को सफल बनाने के लिए उत्तर प्रात के आस-पास के गाँवो के सामाजिक एव सास्कृतिक सगठनो एव कुछ समाज सेवको को सम्मिलित करके एक प्रान्तीय समिति बनायी गयी है। इसी समिति के द्वारा यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

आप्रवासियो के आगमन के सम्बन्ध मे मारिशस के चार-पाँच शोधार्थी, राष्ट्रीय अभिलेखालय मे खोज कार्य कर रहे हैं। वे कुछ नये तथ्य सामने लाये हैं, जिसके आधार पर बताया जाता है कि १८३४ मे भारतीय मजदूरो के जो दो जत्थे लाये गये थे उन्हें आत्वानेत कोठी पर नही, बल्कि उसके आस-पास की अन्य कोठियो पर भेजा गया था।

डेढ शती पूर्व मजदूरो की प्रथम टोली मे बिहार के ३६ मजदूर थे जो २ अक्तूबर १८३४ को पोर्ट लुई के कुली घाट पर उतरे थे। दूसरी टोली मे बम्बई और कलकत्ता के ३९ मजदूर थे जो २ नवम्बर १८३४ को मारिशस लाये गये थे। इन दोनो टोलियो के मजदूरो को फुलियार के आस-पास की कोठियो पर भेज दिया गया था। इन ७५ मजदूरो को जिन कोठियो पर भेजा गया था उनकी देखभाल हन्टर आरबीनो कम्पनी करती थी।

इस उपलक्ष मे २० अगस्त ८४ को मारिशस के महा-डाकपाल ने चार टिकट जारी करके इस महोत्सव की शुरुआत कर दी। दूसरा महत्वपूर्ण कार्यक्रम २७ अगस्त से २ सितम्बर तक चला। इसको सफलता पूर्वक मनाने के लिए सरकार ने श्री उत्तम विष्णु दयाल की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया है। इसी समिति द्वारा एक स्मारिका तैयार की जा रही है। महात्मा गाधी सस्थान और शिक्षा मन्त्रालय के सहयोग से एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन अक्तूबर में होगा जिसमें देश-विदेश के बहुत सारे प्रतिनिधि भाग लेंगे। भारत के राष्ट्रपति के आगमन की घोषणा हो चुकी है। इस अवसर पर इस विषय से सम्बद्ध एक भव्य प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जाएगा।

सोमवार २७ अगस्त १९८४ को दिन मे एक से तीन बजे तक शिक्षा मन्त्री माननीय आ० परसुरामन द्वारा समारोह का उद्घाटन हुआ। तदुपरान्त स्कूली-बच्चो की एक रैली हुई जिसके अन्तर्गत विविध सास्कृतिक कार्यक्रम पेश किये गए।

मगलवार २८ अगस्त को 'महिला दिवस' हुआ। महिला-मंत्रालय द्वारा एक सम्मेलन हुआ। जिसमें देश के सभी महिला सगठनों ने भाग लिया। देश के उत्थान मे महिलाओं के सहयोग का आकलन किया गया।

बुधवार २९ अगस्त को 'किसान दिवस' हुआ जिसमें कृषि के क्षेत्र में अब तक हुई प्रगति के अलावा छोटे किसानो के जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए उनकी समस्याओं पर विचार किया गया।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साहित्य द्वारा आर्य समाज के प्रचार की योजना

—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार—

हमारे साहित्य को दो भागों में बांटा जा सकता है। एक साहित्य ट्रैक्टों के रूप में है। आर्य समाज की विचारधारा पर सैकड़ों ट्रैक्ट छपे हुए हैं। इनमें जो समयानुकूल हैं, उन्हें हमें घर-घर मुफ्त पहुंचाना चाहिये जैसा ईसाई लोग करते हैं। दूसरा साहित्य वह है जो उच्च-कोटि का है, जिसे मुफ्त नहीं बांटा जा सकता, परन्तु जो आर्य समाज की निधि है जिसमें वेद, उपनिषद्, गीता, इनके भाष्य तथा वैदिक-विचारों को स्पष्ट करने वाले ग्रन्थ आदि आते हैं जिनका व्यक्ति घर बैठे स्वाध्याय कर सकता है। ऐसे ग्रन्थ उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी में हो सकते हैं। इनका अनेक व्यक्तियों को पता तक नहीं है।

आर्य समाज के कार्य को गति देने के लिए अपनी [illegible] को साप्ताहिक सत्संगों तक ही सीमित न रखकर आवश्यक है कि हम ऐसे कदम उठायें ताकि समाज का साहित्य घर-घर पहुंच सके। ताकि समय मिलने पर या समय निकाल कर गृहस्थी माता स्वयं तथा उनके पुत्र-पुत्रियां एवं मित्रगण उस साहित्य से लाभ उठा सकें। सत्संगों में कई आते हैं, कई नहीं आते। इसके अतिरिक्त हमें सिर्फ आर्य समाज के सदस्यों तक ही अपने को सीमित नहीं रखना, सभी के यहां पहुंचना है। उत्तम साहित्य का चुनाव भी हर-कोई नहीं कर सकता, न हर-कोई धार्मिक तथा सामाजिक साहित्य की खोज में भागा फिरता है। कई लोग पूछा करते हैं कि कौन-सा ग्रन्थ पढ़ें? जो संस्था अपना प्रचार करती है वह सत्संग के अलावा अपना साहित्य घर-घर पहुंचाने का भी प्रयत्न करती है। ईसाइयों ने इस दिशा में बहुत प्रगति की है। कई आर्य-समाजों ने अपने यहां आर्य साहित्य की बिक्री का भी प्रबंध किया हुआ है। दीवान हाल आर्य-समाज के हाल में सार्वदेशिक सभा ने अपने सम्पूर्ण साहित्य की बिक्री का प्रबंध किया है, परन्तु सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य के अलावा अन्य व्यक्तियों तथा संस्थाओं ने भी अत्यन्त उच्च-कोटि का आर्य सामाजिक तथा वैदिक-साहित्य प्रकाशित किया है, जिसका महत्व किसी प्रकार कम नहीं है। इसी प्रकार कई आर्य समाजें सिर्फ पुस्तकालय खोल कर ही सन्तुष्ट हो जाती हैं। पर पुस्तकालय का समय सबको अनुकूल नहीं पड़ता। कुछ समाजों का अपना बिक्री-विभाग भी है परन्तु इसमें भी आर्य समाज का उच्च-कोटि का साहित्य है—यह सन्देहास्पद है। आर्य समाजें फिलहाल बिक्री-विभाग की विस्तृत योजना को चलाने में कदम नहीं बढ़ा सकतीं क्योंकि बिक्री-विभाग खोल देने की योजना में बहुत अधिक व्यय तथा प्रबन्ध करने की आवश्यकता है। अनेक आर्य समाजों ने पुस्तकालय तो खोले हैं, परन्तु उनका उचित उपयोग नहीं हो रहा है। जमाना ऐसा है कि लोग घर बैठे सब काम चाहते हैं। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए मैं समझता हूं कि निम्न योजना को आधार बनाकर काम शुरू कर देना उचित होगा।

लघु तथा बृहत्—दोनों प्रकार के आर्य-साहित्य का प्रचार करने के उद्देश्य से निम्न योजना को प्रत्येक आर्य समाज क्रियान्वित कर सकती है:

१. प्रत्येक आर्य समाज ट्रैक्ट तथा उच्च-कोटि के आर्य साहित्य की सूची बना कर प्रचार-कार्य तथा स्वाध्याय के योग्य पुस्तकों को घर-घर पहुंचाने की व्यवस्था करें।

२. कुछ विद्वानों की एक उप-समिति नियुक्त की जाये जो सूची को तैयार करे। इस उपसमिति के मार्गदर्शन हेतु कोई एक विद्वान् संयोजक नियुक्त किये जायें। उपयुक्त यह होगा कि स्थानीय आर्य-समाज के पुरोहित विद्वानों से संपर्क स्थापित कर इस सूची को तैयार करें।

हर हालत में इस समिति में ऐसे स्थानीय विद्वानों को रखा जाये जो स्वयं स्वाध्यायशील हों या अन्य विद्वानों से इस दिशा में संपर्क स्थापित कर सकें।

३. फिलहाल ट्रैक्टों को आर्य समाज अपने धन से खरीदे या प्रकाशित करे और अन्य उच्च-कोटि की पुस्तकों को प्रकाशकों तथा लेखकों से १ मास के लिए उधार लेने का प्रयत्न करे। प्रयत्न किया जाये कि यह धन-राशि दान के रूप में किसी सज्जन से प्राप्त कर ली जाये अथवा आर्य समाज के फंड से इतनी या जितनी उचित समझी जाये—(जो ५० रु० प्रतिमास से कम नहीं हो)—ट्रैक्टों के वितरण में व्यय की जाये।

४. जिन विशिष्ट पुस्तकों को घर-घर पहुंचाने की योजना बनानी हो उनके लेखकों तथा प्रकाशकों से संयोजक महोदय सम्बन्ध स्थापित करके यह निश्चय करें कि वे प्रचारार्थ अपनी पुस्तकों पर ज्यादा-से-ज्यादा क्या कमीशन देंगे? ३० प्रतिशत पर पुस्तकें एक मास के लिए उधार प्राप्त की जायें। इस सम्बन्ध में अंतिम निश्चय उपसमिति पर छोड़ दिया जाये।

५. शुरू-शुरू में ट्रैक्टों के अलावा सिर्फ उन पुस्तकों का चयन करें, जो उधार मिल सकें। उनसे कार्य प्रारंभ किया जाये। धीरे-धीरे उपयुक्त पुस्तकों की संख्या बढ़ाई जाये और उन्हें घर-घर पहुंचाया जाये।

६. आर्य समाज के सेवक के पास चन्दा एकत्रित करने के अलावा पर्याप्त समय रहता है। इस साहित्य को घर-घर ले जाकर दिखलाना और जो उसे खरीदना चाहें उन्हें पुस्तकें बेचने का काम आर्य समाज का सेवक करे। यह कार्य सिर्फ आर्य समाजी घरों तक ही नहीं, जहां तक सम्भव हो ज्यादा-से-ज्यादा घरों तक सम्पर्क स्थापित किया जाये।

७. पुस्तकों को सम्भालकर रखने की जिम्मेवारी आर्य समाज के सेवक की रहे। जहां सेवक न हो वहां आर्य समाज का पुस्तकालयाध्यक्ष यह सेवा कार्य करे।

८. अगर आर्य समाज का सेवक यह कार्य करे तो बिक्री का १५ प्रतिशत आर्य समाज के सेवक को दिया जाये ताकि वह इस कार्य को रुचि-पूर्वक करे।

९. जब कार्य बढ़ जाये तब इस कार्य को स्थिर रूप देने के लिये नवीन योजना बनाई जाये।

१०. इस योजना को क्रियान्वित करने के लिये मिलने तथा पत्र-व्यवहारादि में संयोजक को जो व्यय करना पड़े उनके लिये अंतरंग सभा द्वारा ५० रु० स्वीकृत किया जाये। □

प्रभु कहाँ है......

(पृष्ठ 2 का शेष)

क्वेटा में भूकम्प आया। भूमि हिल उठी, दीवारें गिरने लगीं, मकान धराशायी हो गये। एक गिरी हुई दीवार के नीचे दबे हुए दो शिशु दो दिन बाद मलबा हटाने पर हंसते हुए बाहर निकल आये। वे एक गिरी हुई टीन के नीचे सुरक्षित थे। एक नास्तिक के मुख से निकल पड़ा—ईश्वर, तेरी लीला अपार है। 'जाको राखे साइयां मार सकै ना कोय।'

एक विदेशी विद्वान् कट्टर नास्तिक थे। उन्होंने अपने भवन की दीवार पर [illegible] "God is nowhere" [illegible] रुग्ण अवस्था में वे अपने भवन में शय्या पर पड़े हुए थे। दीवार पर लिखा हुआ वह वाक्य उनके नेत्रों के सम्मुख था। अकस्मात् उनके होठों ने बुदबुदाया—"God is now here" ईश्वर इस समय मेरे निकट है।" सुनने वालों ने हैरान होकर सुना।

महर्षि दयानन्द मृत्युशय्या पर पड़े हुए थे। परम नास्तिक गुरुदत्त उनके समीप थे। असह्य कष्ट के समय भी महर्षि के मुख पर मुस्कुराहट व्याप रही थी। उनके मुख से शब्द निकले—"ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की" और शरीर त्याग दिया। अहो, अपार मृत्यु-कष्ट के समय भी इतना धैर्य! क्षण भर में गुरुदत्त नास्तिक से आस्तिक हो गये।

क्या ये घटनायें सिद्ध नहीं करतीं कि तुम्हारे मन में प्रभु के प्रति जो सन्देह प्रस्फुटित हुआ है, वह एक न एक दिन अवश्य विलीन हो जायेगा। जीवन में देखी, सुनी या अनुभव की हुई कोई छोटी-सी भी घटना तुम्हें नास्तिक से आस्तिक बना देगी।

और देखो, नास्तिकता का दम भर कर संसार में उत्पात मचाने वाले बड़े-बड़े धर्मद्रोही लोगों को, जो पनपते और फूलते-फलते प्रतीत होते थे, प्रभु ने ऐसे कंपा डाला जैसे भेड़िया भेड़ को कंपा डालता है। हिरण्यकशिपु और कंस की अहम्मन्यता चिरस्थायी नहीं रह सकी। इसलिए मैं तुम्हें कहता हूं—प्रभु में श्रद्धा करो, प्रभु में विश्वास लाओ—"श्रदस्मै धत्त।"

प्रभु की गुणगाथा मैं तुम्हें कहां तक सुनाऊं? वेद और शास्त्र इससे भरे पड़े हैं। तुम्हारा मन थका हुआ सा, कुछ अजीब दुविधा में पड़ा हुआ है। तुम कुछ ऐसी स्थिति में पड़ गये हो कि प्रभु की सत्ता के विषय में "हाँ" भी नही कर सकते हो और "ना" भी नही। मैं तुम्हारे अन्तर्द्वन्द्व को समझ रहा हूं। ठीक है, तर्क से, युक्ति से प्रभु को हृदयंगम करा सकना कठिन है। तो भी मैं समझ रहा हूं, तुम्हें मेरा यह सब कहना व्यर्थ नहीं लगा है। मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि तुम्हारे हृदय-द्वार के कपाटों के बीच में एक पतली-सी रेखा उत्पन्न हो गई है और उसमें से प्रभु-प्रकाश की एक सूक्ष्म किरण तुम्हारे हृदय में प्रविष्ट हो रही है। बस, इतना ही पर्याप्त है। कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए इतना ही कर सकता है। अगला कार्य प्रभु स्वयं करेंगे।

पता—१/११६, फूलबाग,
पंतनगर (नैनीताल)

महर्षि फिल्म : 'आर्यसमाज में सुभद्रा-हरण'

—म० म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास, एम० ए० वेदाचार्य—

रैवतक पर्वत पर यादवों के मेले में राजकुमारी सुभद्रा भी आई हुई थी। भगवान् कृष्ण के परममित्र अर्जुन भी मेला देखने आए हुए थे। बलराम, उद्धव, सात्यकि आदि सब यादव उस मेले में थे।

अर्जुन सुभद्रा पर मोहित हो गया और सुभद्रा को भगा कर ले गया। यह समाचार मिलते ही यादवों में रोष फैल गया। मेले में खतरे का घण्टा बज उठा। यादव सेना अर्जुन पर आक्रमण को तैयार हो गई। चारों ओर द्वन्द मच गया। बलराम बहन के अपहरण से आपे से बाहर हो रहे थे। पर, भगवान् कृष्ण शान्त बैठे थे।

कुछ वृद्ध लोगों ने कहा कि यह बात समझ में नहीं आती कि सर्वत्र रोष और असन्तोष व्याप्त है पर बहन तो सुभद्रा कृष्ण की भी है और इन्हीं का मित्र अर्जुन सुभद्रा को भगा कर ले गया। ये चुप क्यों बैठे हैं ? सब मिलकर भगवान् कृष्ण के पास गये और कहा कि क्या आपको नहीं मालूम अर्जुन राजकुमारी सुभद्रा को भगा कर ले गया। आप चुप बैठे हैं। भगवान् कृष्ण ने कहा कि ले गया तो ले जाने दो। यह भी तो सोचो, सुभद्रा का विवाह करना था या नहीं !

यादवों ने कहा कि विवाह तो करना ही था। कृष्ण बोले कि अर्जुन से अधिक अच्छा वर सुभद्रा के लिये और कोई नहीं हो सकता। उसका यदि स्वयम्वर करते तो पता नहीं सुभद्रा किसका वरण करती ? और यदि जबरन सुभद्रा की इच्छा के बिना अर्जुन से विवाह करते तो यह अनुचित होता क्योंकि—

"प्रदानमपि कन्यायाः पशुवत् को ऽनुमन्यते" और अगर फिर भी अर्जुन की इस हरकत पर उसे सजा देना चाहते हैं तो चलो मैं भी चलता हूं। अर्जुन से युद्ध करो, पर यह सोच लो कि अर्जुन महा धनुर्धर है। यदि युद्ध में हारे तो बहन भी गई और बेइज्जती भी हुई। इसलिये मेरी सम्मति यही है कि सब दौड़ कर चलो और अर्जुन से कहो कि हम स्वयं सुभद्रा का विवाह तुम्हारे साथ करने को तैयार हैं। लौट आओ। भगवान् कृष्ण बोले फिर आगे जैसी आप सबकी इच्छा हो, निश्चय करो। मैं तैयार हूं। कृष्ण की बात सबने मान ली और वैसा ही किया गया।

ठीक यही स्थिति महर्षि फिल्म की है।

१—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के आर्य युवकों की ओर से एक जवाबी कार्ड सब जगह भेजा गया कि भगवान् देव सांसद महर्षि फिल्म बना रहे हैं। आर्य जगत् में बहुत रोष और असन्तोष फैल रहा है। और लिखा था कि आप इस पर हस्ताक्षर कर दें कि हम फिल्म के खिलाफ हैं। यह जवाबी कार्ड मेरे पास भी आया।

२—फिर समाचार मिला कि उन्हीं आर्य युवकों ने भगवानदेव की कोठी पर जाकर भगवानदेव का पुतला जलाया।

३—परोपकारिणी सभा की बैठक धन संग्रहार्थ दिल्ली में हुई। उनके एजेन्डा में महर्षि फिल्म का विषय था भी नहीं। कुछ दिल्ली के व्यक्ति भी विशेष विचारार्थ बुलाए गए थे जो परोपकारिणी सभा के सदस्य नहीं थे। धन संग्रह की बात समाप्त होने पर स्वामी ओमानन्द ने महर्षि फिल्म की चर्चा छेड़ी। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जो परोपकारिणी के सदस्य नहीं हैं उन्होंने महर्षि फिल्म के विरुद्ध प्रस्ताव रखा और पास हुआ।

परोपकारिणी सभा की तदर्थ समिति बन गई। लेटर हैड तदर्थ समिति के छपे और तदर्थ कार्यालय १४/१६ माडल टाउन स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की कोठी बन गया।

३—आर्य समाज के सौ वर्ष से अधिक के इतिहास में हमने कोई घटना नहीं सुनी कि किसी का पुतला जलाया गया हो। यह तांत्रिक प्रयोग है। तांत्रिक अभिचार कर्म में इसका प्रयोग करते हैं जो हमारे सिद्धांत के विरुद्ध है।

४—आर्य युवक परिषद् के युवक आर्य समाज की नीति-रीति में निर्णायक नहीं हो सकते। अधिक से अधिक वे यह कर सकते थे कि आर्य युवक परिषद् की मीटिंग करके फिल्म के सम्बन्ध में अपना विचार सार्वदेशिक सभा को भेज देते।

५—परोपकारिणी सभा के विधान में तदर्थ समिति या तदर्थ—कार्यालय बनाने की चर्चा कहीं नहीं है।

६—परोपकारिणी सभा की बैठक फिल्म पर विचार करने के लिये दिल्ली में बुलाई गई यह समाचार असत्य है। परोपकारिणी सभा की दिल्ली में मीटिंग निर्वाण शताब्दी के आय-व्यय की जांच के लिए हुई। हम लिख चुके हैं कि उनके एजन्डा में यह विषय ही नहीं था। ओमानन्द जी ने चर्चा छेड़ी।

राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री को ज्ञापन की तैयारी होने लगी।

४ - फिल्म यदि दिखाई गई तो उसको जबरन बन्द कराने के लिये आन्दोलन होने लगा।

५—समाचार पत्रों में लोग अपने-अपने प्रस्ताव छापने लगे कि हम भी महर्षि भक्त हैं।

६—महर्षि द्वारा निर्दिष्ट रामलीला विरोध के उदाहरण फिल्म पर घटाये जाने लगे।

कृष्ण का मौन—कृष्ण का मित्र अर्जुन सुभद्रा को भगा ले गया और कृष्ण मौन। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा के प्रतिष्ठित सदस्य आचार्य भगवान् देव फिल्म बना रहे हैं और सार्वदेशिक सभा मौन। अतः इन कृष्ण जी से तो पूछो कि क्या कहते हो ?

हमारी सम्मति १—हमें यह लीला देख कर अत्यन्त दुःख हो रहा है कि यह सब असंवैधानिक और अव्यवस्थित अशास्त्रीय है।

२—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के आर्य युवक त्यागी तपस्वी महर्षि भक्त और आर्य समाज के लिये जीवन अर्पण करने वाले हैं। पर इनका दुरुपयोग किया जा रहा है।

प्रस्ताव रखा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने। यह असंवैधानिक है। परोपकारिणी सभा में प्रस्ताव परोपकारिणी सभा का सदस्य रखता। चाहे ओमानन्द जी रखते या अन्य। स्वामी विद्यानन्द जी परोपकारिणी के सदस्य नहीं। वे प्रस्ताव नहीं रख सकते।

७—परोपकारिणी सभा और सार्वदेशिक सभा, एक ही संगठन में निर्णायक दो नहीं हो सकते।

८—परोपकारिणी सभा के तीन ही उद्देश्य हैं—उनमें यह विषय नहीं आता।

९—फिल्म बने न बने, यह निर्णय देना सार्वदेशिक सभा के उद्देश्यों के अन्तर्गत ही आता है। अतः इस विषय में निर्णायक सार्वदेशिक सभा हो सकती है, परोपकारिणी सभा नहीं।

१०—सार्वदेशिक सभा ने अपना लिखित वक्तव्य दिया है कि परोपकारिणी सभा ने अपने क्षेत्र से बाहर यह काम किया है।

तो आखिर क्या करना चाहिए—

१—हमारा मत यह है कि महर्षि फिल्म बने या न बने इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा अब निर्णय करे या पहले निर्णय किया हो, तो उसकी शैली यह होनी चाहिये—न यह विषय पहले सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के विचारार्थ योग्य है कि अवस्थानुकृति वैदिक है या अवैदिक। अनुकर्ता कभी मूलपुरुष के समान नहीं हो सकता। शंकराचार्य या महात्मा गांधी की फिल्म का अभिनेता शंकर या गांधी के समान नहीं हो सकता फिर भी शंकर के अभिनेता ने प्राणायाम गायत्री जप आदि प्रदर्शित किया।

२—सार्वदेशिक धर्मार्य सभा अवस्थानुकृति वैदिक है या अवैदिक इस पर विचार करके यह भी विचार करे कि रामलीला में जो लड़के स्वांग करते हैं यह उदाहरण फिल्म पर लागू है या नहीं, क्योंकि महर्षि के काल में फिल्म उद्योग नहीं था।

३—क्या भरतमुनि का नाट्य शास्त्र अवैदिक है, यह भी धर्मार्य सभा निर्णय देवे।

४—अवस्थानुकृति पर सारी याज्ञिक प्रक्रिया आधारित है, इसमें उसमें धर्मार्य सभा भेद करे।

५—जो भी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा निर्णय करे वह निर्णय सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग को भेजे। मैं भी सार्वदेशिक धर्मार्यसभा में अब तक हूं। वहां बैठकर मैं भी विचार करूंगा अभी से मैं क्या करूं।

६—सार्वदेशिक धर्मार्यसभा के धर्माधिकारी जिस विद्वान् को इस विषय पर विचार करने योग्य समझेंगे विशेष रूप से विचार में सम्मिलित करेंगे। आचार्य सुदर्शनदेव, पं० राजबीर शास्त्री, पं० रामनाथ वेदालंकार, पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक, पं० वीरसेन जी वेदश्रमी तथा अन्य वेदोपाध्याय गुरुकुलों से बुलाये जा सकते हैं।

७—तब सार्वदेशिक सभा परिपत्र प्रकाशित करे। दोनों पक्षों को आर्य जगत् में प्रसारित करे—

एक पक्ष—रामलीला का विरोध महर्षि ने किया उनका कोई अनुकरण कर फिल्म बनावे। महर्षि का यह इसलिए अपमान है।

दूसरा पक्ष—आज महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को सीमित दायरे में रखा हुआ है। शंकराचार्य महात्मा गांधी आदि के अनुयायियों ने फिल्म उद्योग के द्वारा शंकर और गांधी को विश्व में फैला दिया है। महर्षि को और उनके कार्यों को फिल्म द्वारा विश्व में फैलाओ।

८—दोनों पक्षों के बारे में आर्य जगत् की सम्मति को सम्मुख रखकर धर्मार्यसभा के निर्णय को लेकर अनुकूल या प्रतिकूल सार्वदेशिक सभा जो भी निर्णय देवे वह आर्य जगत् को मान्य हो।

९—हमें विश्वास करना चाहिये कि सार्वदेशिक सभा के प्रतिष्ठित सदस्य सार्वदेशिक सभा के निर्णय के अनुसार फिल्म बनाने में प्रवृत्त होंगे या उसे छोड़ देंगे।

१०—आर्य समाज केवल विचारों से अनुप्राणित संगठन है। यह [illegible] व्यक्तियों का समुदाय नहीं [illegible] गम्भीरता से विचार [illegible]। [illegible] —१० [illegible] [illegible]

किशोर कुंज

स्वस्थ सुन्दर दीर्घायु की उपलब्धि कैसे हो ?

—बी० डी० ओबाल—

प्र०—आयु से क्या अभिप्राय है ?

उ०—जन्म से मरण पर्यन्त के समय को जीवन काल आयु कहते हैं।

प्र०—स्वस्थ किसको कहते हैं ?

उ०—आहार द्रव्य के आमाशय में सर्व प्रथम उत्पन्न मूल रस को दोष धातु, मल तथा [illegible] सब मिल कर अपने गुण धर्मों से सन्तुलित अवस्था में शरीर के अनुकूल धारण पोषण करें तथा आत्मा, मन, और एकादश इंद्रियां प्रसन्न रहें है आधी की इस अवस्था को स्वस्थ कहते हैं।

प्र०—सुन्दर किसको कहते हैं ?

उ०—मनोहर वस्तु को सुन्दर कहते हैं। जिसे जिस वस्तु पर मन की आसक्ति होने पर मन उसमें तल्लीन हो जाए उसको सुन्दर या मनोहर कहते हैं।

प्र०—दीर्घायु कैसी होती है ?

उ०—जीवन काल में विघ्न बाधाओं के बिना, सुखद आनन्दमय दीर्घ जीवी जीवन के बीतने को दीर्घायु कहते हैं।

प्र०—सृष्टि से उत्पन्न होने वाले पाञ्च-भौतिक पदार्थ की उत्पत्ति का मूल कारण क्या है ?

उ०—पांच तत्वों वाले 5 महाभूतों का समवाय सम्बन्ध मूल कारण है।

प्र०—भूत क्या होता है ?

उ०—जिस पाञ्च भौतिक तत्व में स्वयं उत्पन्न होने की क्षमता हो तथा अपने गुण धर्मों को उत्पन्न करने की शक्ति हो उसको भूततत्व कहते हैं।

प्र०—ये 5 तत्व जब पृथिवी के गर्भ में होते हैं पृथिवी इनको सृष्टि निर्माण के लिये चार भागों में विभक्त करती है।

(1) जरायुज, (2) अण्डज, (3) स्वेदज, (4) उद्भिज,

जरायुज—

जो गर्भाशय की झिल्ली से उत्पन्न होते हैं उनको जरायुज कहते हैं। जरायु मां की गर्भाशय की झिल्ली को कहते हैं, इसमें जो [illegible] रहकर इसमें से [illegible] पैर के साथ बाहर आता है।

इसी प्रकार अण्डों से उत्पन्न होने वालों को अण्डज कहते हैं—पक्षी, सर्प, आदि। स्वेदज पसीने से उत्पन्न होने वाले प्राणी, मच्छर, जूं, लिखा आदि होते हैं। उद्भिज का अर्थ है पृथिवी को भेदन कर ऊपर आना—जैसे पेड़, लता, वनस्पति। पृथिवी में उत्पन्न होने के [illegible] [illegible] पाञ्च भौतिक [illegible] पदार्थ कहते हैं। अतः मानव शरीर को भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिये [illegible] (कारण) [illegible] हैं।

आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य,।

आहार —

'जैसा खाये अन्न वैसा बने मन।

तमोगुणी अन्न को सतोगुण की विधि में बनाकर खाने से तथा आहार विहार सत्संग स्वाध्याय, यम, नियम, तप से मन को सत्वशील बनाना चाहिये। मन को सात्विक बनाने के लिये सात्विक आहार-विहार सर्व प्रथम है।

भोजन —

जिस देश में, जिस ऋतु में जो खाद्यान्न उत्पन्न होता है उसको विधि पूर्वक सफाई से बनाकर सन्तुलित अवस्था में शरीर के अनुकूल, भूख लगने पर प्रात साय दो बार विधि पूर्वक खाए।

बिना भूख के खाना विष बनता है। शरीर के लिये भोजन खूब चबाकर खाना बीच में थोडा-थोडा पानी पीना आवश्यक है अधिक सूखा या कठोर भोजन न करें। भोजन के पहिले या भोजन के बाद में पानी नहीं पीना चाहिये उससे मन्दाग्नि होती है।

भोजन कम तथा निश्चित मात्रा में करना चाहिये, भोजन में घी, दूध, दही, फल,सूखे मेवे अपने सामर्थ्य के अनुसार लेना चाहिये, मूली, गाजर, सलजम, ककडी अति लाभदायक हैं।

निद्रा —

प्रात काल से साय काल तक प्राणी परिश्रम करके थक जाता है तो उस थकान को दूर करने के लिये सोने के लिये रात्रि बनाई गई है। मनुष्य को रात्रि के दस बजे से प्रात चार बजे तक छ घण्टे जरूर सोना चाहिये।

चार बजे प्रात काल का समय ब्रह्म-मुहूर्त कहलाता है। इस को अमृत-बेला या देवकाल या सात्विकाल भी कहते हैं।

दिन भर भूतल की गन्दगी या दूषित वायु को सूर्य किरणें आकाश की ओर खींचती हैं।

समस्त भूमण्डल के प्रदूषण को लता-वृक्षादि अपने में लीन कर जाते हैं। उपर से चन्द्रमा की किरणें स्निग्ध, शीतल, अमृत जल से भूमण्डल को तृप्त कर अमृतमय बना देती हैं।

अत ब्रह्ममुहूर्त मे किया स्वाध्याय, योग, जप तप व्यायाम तथा क्रिया सिद्धि सर्वदा सफल होती होती है अत ब्रह्म मुहूर्त मे उठने से प्राणी दीर्घ जीवी होता है।

ब्रह्मचर्य —

ब्रह्मचर्य का सही अर्थ है अनन्त ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति के लिये सतत आचरण।

सर्वव्यापक ज्ञान ज्योति की उपलब्धि के लिए ब्रह्मचर्य की आवश्यकता होती है।

इसके साधन हैं —

स्वाध्याय, योग व्यायाम, ज्ञान, इन्द्रिय निग्रह।

इस प्रकार आयुर्वेद से स्वस्थ सुन्दर दीर्घायु की उपलब्धि होती है।

पता — A 3/12 तिब्बिया कालेज
करोल बाग, नई दिल्ली —5

ऋषि दयानन्द आये थे —शान्ति देवी—

नहीं छोटा बड़ा कोई सभी जन आर्य गुणधारी
जो बिछुड़े हैं शतों द्वारा उन्हें अपनाने आये थे।

भाषा वेद वाणी ही हमारे धर्म की रक्षक
सोम रस की लता बनकर सकल भारत में छाये थे।

बने वह मन्त्र द्रष्टा थे प्रभु भक्ति के उपदेष्टा
वही पूजन विधि प्यारी बनाने जग में आये थे।

यह भारत भूमि आर्यों की सकल विज्ञान दाता है
वेद वाणी कल्याणी भक्तों के मान लाये थे।

लिये यहां ज्ञान दीपों को है भक्ति द्वार पर बैठी
आत्मिक ज्ञान की गंगा बहाने जग में आये थे।

दिवाकर से थे तेजस्वी हरा अन्धकार भारत का
छवि सुहावनी सुन्दर प्रभु कृपा से पाये थे।

कलायें तर्क की सारी शशि की भांति शीतल बन
शील सौजन्य की पूनम वो बन कर नभ मे छाये थे।

विश्व कल्याण की खातिर तपस्या की बड़ी भारी
मानस भवन की ज्योति बन हृदय सब के समाये थे।

पता — C/o पी० एन चदनिया
542/3 (1) प्रेमगज बाजार झांसी (उ०प्र०)

गृह-त्याग

मूल शंकर ने एक अपने मित्रों के सामने अपने हृदय का यह सकल्प व्यक्त किया—'मेरी विवाह करने की इच्छा बिल्कुल नहीं है, इसलिए वाग्दान अभी न किया जाय। जब किसी सूत्र से उनके पिता कर्षन जी को यह बात पता लगी, तब उन्होंने तुरन्त मूल जी को बुलाया और गम्भीर होकर कहा—'यह मैं क्या सुन रहा हू ?

मूल जी ने कहा—'जो आप सुन रहे हैं, ठीक ही सुन रहे हैं। मैं विवाह नहीं करूंगा।'

पिता जी अपने पुत्र की अन्य सभी बातें सुन सकते थे, पर विवाह न करने की बात नहीं सुन सकते थे। यह बात उनके लिए असह्य थी। उधर माता ने अपने पुत्र का जब यह निश्चय सुना तो उन्होंने भी शोकाकुल होकर अपना सिर पीट लिया।

मूल जी ने शान्त भाव से अपने माता पिता से कहा—'मैं विवाह नहीं करूंगा। मेरा एक और भाई है आप लोग उसका विवाह करके उससे वंश चलाने की भी आशा रखिये। घर में रहना मेरे लिए कठिन है। मैं तो योगियों की खोज करके योगाभ्यास करूगा।

मूल जी के मुख से कर्षन जी से कहा—'आप लोग इसके पर कड़ी निगरानी रखें। धीरे-धीरे इसकी बुद्धि ठिकाने आ जायेगी। निगरानी रखने के लिए एक रक्षक नियुक्त कर दिया।

माता ने मूलशंकर के मन को ठिकाने के लिए, जिस लड़की से विवाह की चर्चा चल रही थी, उसे और उसकी मां को अपने घर बुलवा लिया। उन्होंने मूल जी को कुछ आभूषण उपहार में दिये। मूल जी ने वे आभूषण वापस करते हुए कहा—'आप लोग मेरे जीवन की साधना में बाधा मत डालिए बल्कि मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरा जीवन-व्रत पूरा हो'

मूल जी के इस वार्तालाप से बात न टली घर में विवाह की तैयारियां जोर शोर से प्रारम्भ हो गयीं। उसी प्रबल आवेग से मूलशकर का मन, गृह-त्याग के लिए उद्विग्न रहने लगा। इस समय मूल जी बाईसवें वर्ष में प्रवेश कर रहे थे। तीन वर्ष पहले मूल जी के मन में जो वैराग्य-वृत्ति धूम्रमाला के रूप में अवतीर्ण हुई थी, अब वह प्रचण्ड ज्वाला के रूप में फूट पड़ी।

मूलशकर ने सन् १८४६ में, विवाहोत्सव की तैयारियों में मग्न धनधान्य-पूर्ण गृह को, माता-पिता के पूर्ण प्रेम को, स्वजन-सम्बन्धियो के सरस स्नेह को, और सबसे बढ़कर उद्दाम यौवन के सम्मुख खड़े विकसित वसन्त को तिलाञ्जलि दे दी। रात्रि के उस सुनसान प्रथम प्रहर मे गृहत्याग करते हुए उनके मन में क्या-क्या भाव उठ रहे होंगे, इसे या तो दयानन्द की आत्मा जाने या परमात्मा जाने।

—घनश्याम आर्य 'निडर'

पत्रों के दर्पण में

इन धर्मवीरों पर भी ध्यान दें

देश की अखण्डता की रक्षा में अपने प्राण झोकने वाले वीरो के परिवारो की सहायतार्थ 'शहीद परिवार सहायता-निधि' में योगदान हेतु 'आर्य-जगत्' के अतिरिक्त समाज के दीगर सगठनो द्वारा व व्यक्तिगत अपीलें की गयी। दूसरी ओर जलते हुए आर्य समाज मदिर से बाहर से बन्द किये गये किवाडो को चीर कर केवल तन के कपडों मे बच निकलने वाले सेवक व पुरोहित जैसे कुछ अन्य वीर भी ऐसे जरूर होगे जो जाने या अनजाने इस ज्वाला मे आहुति बने होंगे। उनके भी परिवार होगे ! क्या इन परिवारों के प्रति भी कोई लखनी सवेदनशील नही होगी ? धर्म की वेदी पर वे आहुति तो बने, पर शायद उनकी असहाय गृहस्थी और बिलखते बाल-गोपालो को किसी की सहायता और हमदर्दी नही मिलेगी। ऐसे ही एक व्यक्ति है श्री नेत्रपाल जो आर्य समाज हजूरी बाग के पुरोहित थे। अनुरोध है कि ऐसे धर्मवीरो को भी आपकी सशक्त लेखनी अपना लौह-संबल दे।

—कृष्णदेव मदान, ८६७, मढ़ाताल, जबलपुर (म० प्र०)

नास्तिक भी धर्म मानने को मजबूर

इस ससार मे जड व चेतन निहित प्रत्येक अणु-परमाणु का अपना-अपना विशिष्ट धारक धर्म है। अग्नि का धर्म जलाना व पानी का धर्म है गलाना। आज की प्रयोगशालाए भी इन्हीं विशिष्ट धर्मों का परीक्षण करती हैं। उसी प्रकार वेद ने धर्म के दस लक्षणो मे पहला बताया 'धृति' अर्थात् धैर्यवान् साहसी होना। यह मानव का प्रथम धर्म है। सत्य —पृथ्वी का घूमना, अग्नि की दाहकता आदि भी ऐसे सत्य धर्म हैं जिनको नकारा नहीं जा सकता। नास्तिक भी उसे अमान्य नहीं कर सकता। विज्ञान भी धीरे-धीरे इस ब्रह्माण्ड को चलाने वाली किसी अव्यक्त ब्रह्माण्डेतर-सत्ता की मान्यता पर पहुचता जा रहा है। —जोधासिह राठौर, नागदा (म० प्र०)

बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना

१६ सितबर के अक मे प्रकाशित तुलसी के निम्न दोहे—

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना
कर बिनु करम करै बिधि नाना

पर शका उठती है कि वैदिक मान्यताओ के अनुसार जब ईश्वर सर्व-व्यापक है तो बिना पैरो के वह कहाँ से कहाँ जाता है ? यह बात गले से नीचे नही उतरती। कृपया "आर्य जगत्" मे आर्यजनो के समाधान हेतु उत्तर देने का कष्ट करें। —रामचद्र, मालवीय नगर, नई देहली-१७।

[समाधान—

परमात्मा को सर्व-व्यापक होने से कहीं गति करने की आवश्यकता नहीं इसलिए उसे मानवादि प्राणियो की तरह पैरों की भी आवश्यकता नहीं। सर्व व्यापक का अर्थ यही है कि ईश्वर पहले ही सर्वत्र गया हुआ है —विद्यमान है। सर्वत्र गये हुए' भाव को बताने के लिए ही गति का औपचारिक प्रयोग किया जाता है, जैसे यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के ५वें मत्र मे कहा है —'तदेजति तन्नैजति।' 'एजति' के साथ ही 'न एजति' कहने से 'बिनु पग चलै' की बात पूरी तरह समझ में आ सकती है।—स०]

विपक्ष को सद्बुद्धि कब आएगी ?

विपक्षी दलो मे कई बार उफान आये, और इमरजेन्सी तो एक ऐसा ईश्वर प्रदत्त चमत्कार था कि उसके फलस्वरूप जनता ने पूरी सत्ता विपक्ष को सौंप दी। पर अफसोस ! विपक्ष के नेताओ ने उक्त दैवी सुयोग को पद-लिप्सा की खातिर गवा दिया और अपनी स्थिति "पुनर्मूषको भव" की बना ली। ऐसा ही एक अवसर ईश्वर ने आन्ध्र मे रामा राव की बर्खास्तगी और फिर बहाली के रूप मे दिया है। विपक्ष यदि सार्थक ढग से इसका लाभ उठाना चाहे तो उसे महर्षि दयानन्द की सलाह—'जो सर्वमान्य सत्य विषय हैं उनमे सब एक हो। झगडा झूठे विषयो मे होता है" पर अमल करने के सिवा अन्य काम्य मार्ग नही मिल सकता। विपक्ष यदि महर्षि के त्याग-बलिदान भरे जीवन से प्रेरणा लेकर निःस्वार्थ भाव से आगे आवे तो देश का कुछ भला कर सकता है। —गौरी शकर शर्मा २६ बैंक आवास, सुभाष पार्क के सामने, आगरा-१०

अनधिकृत अर्थ-संग्रह से सावधान !

मुझे पता चला है कि प० रामशास्त्री नामक कोई नवयुवक बिना मेरी अनुमति, मेरे नाम से अर्थ-सग्रह कर रहा है। मैं सभी आर्य-जनों को सतर्क करना चाहता हू कि मैं इसका उत्तरदायी नही हू।

—ब्र० आर्य नरेश, चंडीगढ़।

राष्ट्रपति शासन प्रणाली और आर्य समाज

सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल द्वारा श्री बसंत साठे द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रपति शासन-प्रणाली के अनुमोदन के साथ समाज द्वारा कई वर्ष पूर्व यह मांग उठाने सम्बन्धी समाचार का सार्वदेशिक पत्र में (९ सितम्बर) प्रकाशन विस्मयकर है। आर्य समाज ने [illegible] रूप से ऐसा समर्थन कब दिया ?

व्यक्तिगत विचारों की बात अलग है। पर, विवादास्पद । राजनीतिक विषयो पर किसी को भी पूरे समाज पर अपना मतामत थोपने का अधिकार नहीं। यह कथन उस समय और भी हास्यास्पद हो जाता है जब इस प्रणाली की तुलना वेद-प्रतिपादित 'इन्द्र' संज्ञक राष्ट्राध्यक्ष से की जाती है।

समाज की ओर से यह एक-पक्षीय वक्तव्य क्यों दिया गया और इसकी क्या गारटी है कि उक्त प्रणाली के तहत सिक्किम और आंध्र जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होगी ? —विनय मोहन माथुर, १५२ [illegible] ग्राम, लुधियाना।

जहां आज भी सरयू और अयोध्या है...

आर्य जगत् में (२ सितम्बर) "जहां आज भी सरयू, अयोध्या..." पढकर एक सुखद अनुभूति हुई, साथ ही खेद भी कि सार्वदेशिक, प्रादेशिक आदि सस्थाओं के रहते भी इडोनेशिया जैसे देश में समाज का कोई संगठन नही जहाँ लाखों की सख्या में हिन्दू निवास करते हैं और ऐसी बहुमूल्य सास्कृतिक धरोहर आज भी मौजूद है। समाज यदि समय रहते कदम नहीं उठाता तो इण्डोनेशिया मे हिन्दुओ का अस्तित्व मात्र इतिहास के पन्नों तक ही शेष रह जायेगा।

—ज्ञान चन्द गोयल, उप मन्त्री, आर्य वीर दल, मालव, हरियाणा।

मिथ्या आरोप का प्रतिवाद क्यो नहीं ?

पिछले कुछ अरसे के दौरान आर्य समाज और दयानन्द पर अश्लीलता की हद तक अपवाद मढने वाली दो पुस्तकें—"दयानन्द गाली पुराण" (मेरठ) व 'सीता स्वरूप निर्णय' छपी। आश्चर्य ! दयानन्द की विरासत वहन करने वाला समाज का इतना विशाल संगठन इसका अब तक मुँह तोड उत्तर तक न दे सका !! हमारे नेतृत्व को इस प्रकार के आधार-हीन मिथ्या आरोपो के सम्बन्ध मे बिना तुर्की-ब-तुर्की प्रतिवाद किये इस प्रकार के अमर्यादित अकारण मौन की उस सभावित प्रतिक्रिया का भी ध्यान रखना चाहिये जो समाज के अस्तित्व और सगठन पर "मौन स्वीकृति लक्षण" के रूप मे हो सकती है।

— यशपाल आर्य, मदाना खुर्द, रोहतक (हरियाणा)।

पृथकतावाद पर सम्मिलित प्रहार जरूरी

धर्म व देश की रक्षा व अखण्डता के लिये सभी देशप्रेमी व आर्यों को उसी प्रकार हरिजनो को साथ लेकर चलना होगा जैसे लगभग सौ वर्षों तक चलने वाली स्वतन्त्रता की लडाई में लिया गया था। इसके लिये हरिजन मात्र आर्य समाज का चिर आभारी रहेगा। आज भी पृथकतावाद पर निर्णायक प्रहार हम सबकी सम्मिलित एकता ही कर सकती है।

—शिवनाथ आर्य, आर्य टेलर, देहरादून।

श्री बलबीर सिंह बेधड़क नहीं रहे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, ग्राम्य सरलता के प्रतीक, कार्य में लौह-पुरुष, विलक्षण सगठनकर्त्ता, एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व युक्त वक्ता एवं संगीतज्ञ श्री बलबीर सिंह बेधड़क आज हमारे बीच नहीं रहे। उन्हीं के पुरुषार्थ और प्रयास का फल है गढ़मुक्तेश्वर में प्रति वर्ष भरने वाले मेले में लगने वाला विशाल वेद-प्रचार कैम्प ! बृजघाट का विशाल स्व० प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति भवन उनके दृढ-सकल्प का जीवन्त कीर्तिमान है। राजनीति के क्षेत्र में भी उनका प्रभाव इतना था कि चौ० चरणसिंह के समर्थक होकर भी वे सदा दो टूक बात कहते थे। सभा द्वारा नियुक्त मुख्य निरीक्षक के रूप में विभिन्न समाजों के विवादों को युक्तियुक्त ढंग से निपटाने में उनका योगदान स्मरणीय है। —इन्द्रराज, मंत्री-आर्य प्रति० सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

पाखण्ड-खंडन स्तंभ जरूरी

महर्षि दयानन्द के निर्वाण का शतक पूरा होने पर भी मुक्ति-[illegible] आज योगेश्वर आदि तथाकथित अवतारों का पाखण्ड-वाद मानने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। अंधविश्वास का [illegible] गहराता जा रहा है। मेरा सुझाव है कि समाज के सभी पत्रों में इस बढ़ते पाखंड पर [illegible] की दृष्टि से एक-एक स्वतन्त्र स्तम्भ रखा जाय। —[illegible], जीन्द।

अमेरिका में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना

लासएंजिल्स से 9-9-84 को सार्वदेशिक सभा के रामगोपाल के नाम भेजे पत्र में श्री स्वामी जी ने सूचना दी है कि वहां 7 आर्य समाजों ने अपनी प्रतिनिधि सभा बना ली है। लासएंजिल्स में आर्यसमाज का भवन बहुत ही अच्छा है। श्री स्वामी जी की देख-रेख और मार्ग-दर्शन में विधान का निर्माण हुआ है। स्वामी जी 12 सितम्बर को न्यूयार्क और वहां से 15 सितम्बर को टोरन्टो (कनाडा) में 1 सप्ताह रहे।

एशिया की सांस्कृतिक यात्रा पर रवाना

दिल्ली नैपाल बिहार प्रांतीय आर्य वीर दल के सचालक श्री रामाज्ञा वैरागी, सा० आ० वी० दल सचालक श्री बाल-दिवाकर हस के साथ विशेष मत्रणा पर बनाये कायक्रम के अनुसार डा० श्री सत्यकेतु विद्यालकार के नेतृत्व मे 21 सितम्बर को एशियाई देशो की यात्रा पर रवाना हो गये। विदेशो मे दल की योजनाओं के क्रियान्वयन मे इस यात्रा में वहा के तीर्थ और मन्दिरो को देखने के अलावा प्रमुख स्थानो के नवयुवक नवयुवतियो के सहयोग से आर्य वीर दल की नई शाखाए खोलकर उन्हें योगासनो व विभिन्न व्यायामो की जानकारी देंगे। यात्री दल 6 अक्टूबर को वापिस दिल्ली पहुचेगा।

आ०प्र० सभा उ०प्र० के पदाधिकारी मनोनीत

लखनऊ डी० ए० वी० कालेज सभागार, लखनऊ मे समवेत ७०० प्रतिनिधियो के सर्वसम्मत अनुरोध पर सार्वदेशिक सभा प्रधान—श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के पदाधिकारियो की घोषित सूची के अनुसार प्रधान—श्री इन्द्रराज, कार्यकर्त्ता प्रधान—श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, उप-प्रधान—श्रीमती सतोषकुमारी कपूर, श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री—श्री मनमोहन तिवारी, उप-मन्त्री—श्री जयनारायण अरुण, श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा, श्री लालबहादुर शर्मा व श्री मंगलदत्त शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रकिरण शर्मा, स० कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र कुमार; पुस्तकाध्यक्ष—डा० आनन्द प्रकाश तथा सह-पुस्तकाध्यक्ष—श्री विजयपाल शास्त्री मनोनीत हुए।

वैदिक विचारधारा विश्व-कल्याणी

बैजनाथपारा (रायपुर, म०प्र०), स्थानीय समाज मन्दिर में आयोजित एक सामूहिक यज्ञ के बाद विराट् हिन्दू समाज के मन्त्री, हरिजन नेता श्री चिन्तामणि ने एक सत्संग-सभा में राष्ट्रीय-एकता के लिये मौजूदा अस्पृश्यता की भावना को ईश्वर व मानव विरोधी बताया। अतीत के गौरव से प्रेरणा, वर्तमान कमजोरियो के प्रति जागरूकता तथा भविष्य के लिये आत्मविश्वास के सवर्धन वाली वैदिक विचारधारा को ही उन्होंने विश्व-कल्याणकारी बताया।

समाज-मन्दिर का उद्घाटन

फिरोजपुर झिरका (गुडगांवा) वेद-प्रचार मण्डल मेवात के प्रधान ने २ सितम्बर को बीमा के सद्योनिर्मित समाज मदिर का उद्घाटन किया। निर्माणार्थ पाँच हजार रुपये दान देकर इसकी आधार-शिला रखी थी। इतने अल्प समय मे ही मन्दिर का निर्माण स्थानीय कार्यकर्ताओ के अभूतपूर्व उत्साह का परिचायक है। वृष्टि के बावजूद कार्यक्रम मे भारी उपस्थिति इस क्षेत्र मे आर्य समाज की लोकप्रियता का परिचायक है।

मण्डल के पदाधिकारियो ने समीपस्थ ग्राम घाटा बसई मे निर्माणाधीन एक अन्य समाज मंदिर का भी निरीक्षण किया तथा प्रधान जी ने वहाँ भी ग्यारह सौ रुपये के दान की घोषणा की।

फल्गू मेले पर प्रचार

कैथल के निकट ग्राम फल्गू जिला कुरुक्षेत्र मे २२ से २४ सितम्बर को एक विशाल मेला भरा जिसमे लाखो की सख्या मे नर-नारी सम्मिलित हुए हैं। इस अवसर पर सभा की ओर से वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र के सहयोग से वैदिक धर्म-प्रचार शिविर लगाया गया है। आचार्य देवव्रत जी शास्त्री, स्वामी रुद्रवेश जी तथा सभा की भजनमण्डलिया प० हरिश्चन्द्र जी तथा प० मुन्शीलाल एव सभा के उपदेशक प० सुरेशकुमार विद्यावाचस्पति प्रचारार्थ पहुचे।

— रणजीतसिंह, सभा मन्त्री

आर्य समाज दानापुर का वार्षिकोत्सव

दानापुर (बिहार) स्थानीय आर्य समाज २६ से ३० सितम्बर तक अपना १०४ वाँ वार्षिकोत्सव समारोह स्थानीय डी० ए० वी० हाई स्कूल (श्रीमद्दयानन्द अनाथालय) में मनाने जा रहे हैं। उक्त अवसर पर देश के मूर्धन्य आर्य विद्वानो के प्रवचन तथा शीर्ष आर्य भजनीको के कार्यक्रम के अलावा अध्यात्म कथा तथा २४ से ३० सितम्बर तक वृहद् यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन है।

पं० सत्यदेव शर्मा विद्यालंकार दुर्घटनाग्रस्त

श्री प० सत्यदेव शर्मा विद्यालकार दुपहिया स्कूटर की आकस्मिक टक्कर से 18 सितम्बर को बुरी तरह दुर्घटनाग्रस्त हो गए। सिर, आँखों, एक हाथ और एक पांव में काफी चोट लगी। सिर के घाव में 12 टाके लगे। तीन दिन नर्सिंग होम मे रहकर अब वे घर (एन 31 ग्रेटर कैलाश-1) आ चुके हैं। आराम होने में अभी कई दिन लगेगे। 2 अक्टूबर को उनका 74 वां जन्म दिवस पड़ता है।

मुहम्मद अतीक व शाहिदा महेन्द्र व शारदा बन

अल्मोडा स्थानीय ताडीखेत समाज मन्दिर मे मु० अतीक, आत्मज श्री अब्दुल अजीज, बरेली तथा कु० शाहिदा आत्मजा श्री मु० यामीन हल्द्वानी ने स्वा० गुरुकुलानन्द से वैदिक धर्म की दीक्षा ली। उनके नये नाम क्रमश महेन्द्र व शारदा रखे गये। प० रामदत्त पाडेय के पौरोहित्य मे उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

यजुर्वेद मन्त्र व्याख्या प्रतियोगिता

नई दिल्ली प्रातीय आर्य महिला सभा, आगामी एक अक्टूबर को परम-विदुषी ईश्वर देवी जी की अध्यक्षता मे वेद प्रचार दिवस मनायेगी। समारोह मे वेद-विद् आर्य महिलाओ के लिये यजु० वद अध्याय ३५ के प्रथम ४ मन्त्रो की व्याख्या की प्रतियोगिता का कार्यक्रम रखा गया है।

करनाल शताब्दी के लिए उत्साह

हासी आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर प्रो० रत्नसिंह ने आर्यजनो से अपील की कि ५ अक्टूबर से करनाल मे होने वाली दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह को सफल बनावें। अपील पर निश्चय हुआ कि अधिकतम आर्यजन करनाल पहुचेंगे और अच्छी धनराशि भेंट करेंगे।

शहीद सहायता निधि मे योगदान

बैंगलोर श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा ने शहीद परिवार सहायता निधि मे २०८५ रु० की धनराशि सग्रह करके यहाँ से प्रेषित की है।

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा, हिमाचल प्रदेश के वार्षिक चुनाव मे प्रधान—प्रि० रमेशचन्द्र जीवन मत्री—डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा तथा कोषाध्यक्ष—श्री चद्रकान्त सैनी निर्वाचित हुए।

फूलियार कोठी पर

(पृष्ठ ४ का शेष)

गुरुवार ३० अगस्त को 'युवा दिवस' हुआ। इसमे युवा मन्त्रालय द्वारा किये जा रहे कार्यों का मूल्याकन किया गया।

शुक्रवार ३१ अगस्त को 'सहकारिता दिवस' मनाया गया। इस दिन भारतीय किसानो की सहायता के लिए सहकारिता आन्दोलन के इतिहास पर भी चर्चा हुई।

शनिवार १ सितम्बर को देश के सामाजिक एव सास्कृतिक सगठनो द्वारा विविध-सास्कृतिक कार्यक्रम पेश किये गए। मारिशस मे भारतीय सस्कृति के प्रचार-प्रसार मे इन सगठनो का हमेशा से भारी योगदान रहा है।

रविवार २ सितम्बर को 'भारतीय आप्रवासी दिवस' बडी धूमधाम से मनाया गया। उस दिन फुलियार कोठी पर एक मेला लगा जिसमे देश के कोने-कोने से लोग बस-लारी तथा बैलगाडी मे बैठकर वहाँ पधारे। उसी दिन प्रधानमन्त्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने एक अन्य स्मारक का अनावरण किया।

प्रति रात्रि एक से एक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिनमे प्रमुख रूप से नृत्य गीत एव नाटक हुए। इसके अलावा पचायत इन्द्र सभा, रामभजनम कव्वाली विरहा, झूमर, कजरा कसीदा बुझबूल आदि मनोरजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। इन प्रदर्शनो के जरिए पूर्वजो के दैनंदिन जीवन पर झाकियाँ पेश करके इतिहास को पुनर्जीवित किया गया।

पता—३० मोरी लियोनार्द स्ट्रीट, बो बासें, मारिशस

सामाजिक जगत

उ०प्र० समाज नेताओं पर घातक हमला

मेरठ विगत 10 सितम्बर को आ०प्र०सभा० के लखनऊ कार्यालय पर जबरन कब्जा करने हेतु कुछ असामाजिक तत्वों ने सभा प्रधान श्री इन्द्रराज व मंत्री श्री मनमोहन तिवारी पर घातक हमला किया। सौभाग्यवश दोनो ही व्यक्ति उपस्थित कर्मचारियों व अन्य व्यक्तियों के कारण बन्दूक एवं छुरे के वारों से बच गये। थाने मे रिपोर्ट हेतु जाने पर वहाँ पूर्व निष्कासित प्रधान आक्रान्ताओं की पैरवी पर दिखे। एक दिन पूर्व पुलिस ने इन्हीं दोनों व्यक्तियो को जीप चोरी के मिथ्या आरोप पर हिरासत में रखने का भी गैर जिम्मेदाराना कार्य किया था।

मेरठ समाज की साप्ताहिक सभा ने इस कुकृत्य पर निंदा प्रस्ताव पारित करते हुए सरकार से आक्रान्ताओं को शीघ्र बंदी बनाने तथा उक्त अधिकारियों के जीवन रक्षा हेतु सुप्रबन्ध करने का अनुरोध किया है।

संस्कृत अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति

दिल्ली दिल्ली विश्वविद्यालय में डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति द्वारा उनकी 39 वी जयती पर आयोजित वेद सगोष्टी के प्रमुख वक्ता डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने अनेक उद्धरणों से सिद्ध किया कि कतिपय स्थलो को छोडकर— जहाँ इतिहास परिलक्षित सा होता है— अधिकाश स्थलो में यौगिक अर्थों द्वारा ही व्याख्या समीचीन ठहरती है। मुख्य अतिथि— निदेशक राष्ट्रीय सस्कृत सस्थान व प्राचार्य लालबहादुर सस्कृत विद्यापीठ डा० मण्डन मिश्र ने भी इसी धारणा की सशक्त पुष्टि की। इस अवसर पर इस वर्ष वेद-विकल्प से सस्कृत एम० ए० परीक्षा की तैयारी करने वाले चार छात्रो को गोष्ठी— अध्यक्ष प्राचार्य, शिवाजी कालेज डा० सूबेसिंह राणा ने छात्रवृत्ति प्रदान की। सगोष्ठी का प्रारभ व समापन श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य के सस्वर वेद-मत्र पाठ तथा शाति पाठ से हुआ। वेदाध्यन हेतु श्री धर्मपाल व एक अन्य सज्जन द्वारा 00 रु० प्रतिमाह छात्रवृत्ति देने की घोषणा की गई।

"विश्व को आर्य कैसे बनायें" लेख प्रतियोगिता

दिल्ली निरतर 23 वर्षों से स्थानीय आर्य युवक परिषद् समय समय पर वैदिक विषयो पर निबध प्रतियोगिताए आयोजित करती आई है। हाल ही मे इसने महर्षि निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में "विश्व को आर्य कैसे बनायें" विषय पर एक अखिल भारतीय लेख प्रतियोगिता रखी थी। लगभग प्राप्त 50 लेखों मे प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान वाले प्रतियोगियो को पुरस्कार स्वरूप क्रमश पाच तीन व दो सौ रुपये की धनराशि प्रदान की गई।

परिषद् ने उक्त सभी लेखो को पुस्तकाकार प्रकाशित कराया है जिसका

करनाल बलिदान शताब्दी के लिए जनजागरण

कुरुक्षेत्र (हरियाणा) आ०प्रा०प्र० उप-सभा, करनाल द्वारा आयोजित महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह की अवधि में जिला वेद प्रचार मण्डल के मंत्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी के नेतृत्व में आर्य वीरों द्वारा 29 सितम्बर से 5 अक्टूबर तक विशाल जन-जागरण यात्रा का कार्यक्रम रखा गया है। उक्त ऐतिहासिक यात्रा के अनुसूचित ग्राम हैं— कैंथल, तितरम, हरसोला, रलीगल, माबरा, खेरदा, भाणा, करोडा पाई, फतेहपुर, पुण्डरी, बरसाना साँच, रसीना, बस्तली, ओगंद, गोंदर और दाहूपुर। इसके अलावा रास्ते में पडने वाले सभी गाँवों में शोभायात्राए निकलेंगी। समापन कार्यक्रम डी० ए० वी० कालेज करनाल के विशाल मैदान में होगा।

आर्य समाज हनुमान रोड

नई दिल्ली स्थानीय हनुमान रोड समाज 6 से 14 अक्टूबर तक अपना 62वाँ वार्षिकोत्सव मना रही है। समारोह का प्रारंभ प० राजगुरु शर्मा की अध्यक्षता मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ से होगा। इसके अतिरिक्त महिला-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, स्वा० डा० सत्यप्रकाश सरस्वती की अध्यक्षता में वेद-सम्मेलन, डा० प्रशांतकुमार वेदालकार की अध्यक्षता मे आर्य युवक सम्मेलन के प्रभावोत्पादक कार्यक्रमो का समावेश है। भाषण प्रतियोगिता-समारोह का विशेष आकर्षण है उ०मा० विद्यालयो तथा कालेजो तथा विश्वविद्यालयों के पृथक वर्गों के लिये क्रमश 'राष्ट्रीय एकता के आद्य सस्थापक महर्षि दयानद' तथा 'एक राष्ट्र, एक भाषा एक धर्म के मूलमन्त्र दाता महर्षि दयानंद" विषयो पर समाज प्रधान श्री राममूर्ति कैला के दिवगत पुत्र की पुण्य स्मृति में 13 अक्टूबर को आयोजित राकेश कैला स्मारक भाषण प्रतियोगिता।

आदर्श दान

लुधियाना जिला आर्य सभा मन्त्री श्री रामप्रसाद आर्य ने अपने इगलैंड स्थित पुत्र बलराज बलदेव सम्राट के पुत्र व पुत्री के मुण्डन-सस्कार पर 750 रु० का दान दिया। इसमें 501 रु० श्री साधुराम (हरिजन) की सुपुत्री के विवाह हेतु दिये गये।

आर्य समाज लाजपतनगर

नई दिल्ली लाजपतनगर समाज द्वारा 17 से 24 सितम्बर तक वार्षिकोत्सव मनाया गया। समारोह में प० रामकिशोर जी वैद्य के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ से आरम्भ समायोजन मे, रामायण कथा भजन प्रवचन, कवि सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्य स्त्री समाज वार्षिकोत्सव एवं आर्य युवक सम्मेलन आदि के कार्यक्रम प्रभावोत्पादक रहे।

श्रीमती सुशीला देवी कोचर की पुण्यतिथि

बम्बई कैप्टन जे०आर० कोचर ने यहाँ अपने निवास पर अपनी स्व० पत्नी श्रीमती सुशीलादेवी कोचर की प्रथम पुण्यतिथि पर गुरुकुल एटा के उपाचार्य श्री रामदत्त शर्मा के ब्रह्मत्व में सामवेद शतक की विशेष आहुतियों सहित बृहद् यज्ञ का आयोजन किया। इस अवसर पर श्री कोचर ने विभिन्न आर्य सस्थाओं को एक हजार रु० के दान की घोषणा की।

गुरुकुल महाविद्यालय में संस्कृत सम्मेलन

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे श्रावणी पूर्णिमा पर "सस्कृत दिवस" महामण्डलेश्वर डा० श्याम सुन्दर दास शास्त्री की अध्यक्षता एव डा० सत्यव्रत शास्त्री 'अजेय' के सयोजन में में सम्पन्न हुआ। प्रमुख वक्ता डा० विष्णु दत्त जी राकेश ने कहा कि—"सस्कृत सब भाषाओ की जननी है। आधुनिक भारत के निर्माण में सस्कृत की बडी महत्वपूर्ण भूमिका है।" अन्य वक्ताओं में डा० गौरी शकर आचार्य (भूतपूर्व शिक्षा मंत्री राजस्थान) डा० नारायण मुनिचतुर्वेद डा० निगम शर्मा, आचार्य हरिगोपाल आदि ने सस्कृत की सार्वभौम सत्ता का प्रतिपादन किया एव विद्या भास्कर सुरेन्द्र कुमार, संजीव कुमार मर्मन आदि ने सगीत-स्वर-लहरी के साथ सस्कृत-गीतिका प्रस्तुत की। रात्रि मे कवि-गोष्ठी हुई जिसमें पजाब में सैन्य प्रवेश के सन्दर्भ मे अजेय' जी की 'जयती भारतीय सैन्यम्" रचना विशेष रूप से सराही गई।

स्कूल भवन का शिलान्यास

नई दिल्ली आर्य समाज मंदिर बाई' ब्लाक, सरोजनी नगर में आगामी 2 अक्तूबर को श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती भवन का शिलान्यास प्रख्यात उद्योगपति श्री रतनचन्द सूद करेंगे। स्वा दीक्षानन्द सरस्वती समारोह मे आशीर्वाद देंगे।

आदर्श अन्तर्जातीय विवाह

भोपाल स्थानीय आदर्श विवाह मण्डल द्वारा पिछले दिनों अपने प्रधान कार्यलय में जिम्नास्टिक कोच श्री रमेश पटेल व कु० सुनिता सगोत्र लेक्चरार का आदर्श अन्तर्जातीय विवाह हरिचन्द्र विद्यावाचस्पति ने सपन्न कराया। मण्डल ने दहेज आदि सामाजिक कुरीतियो व अंधविश्वासों को मिटाने की दृष्टि से 130 युवतियों व 150 युवकों को अपना सदस्य बनाया है जो उक्त कुरीतियों पर प्रहार करने को कृत-सकल्प हैं। उक्त विवाह, मण्डल की 85 वीं उपलब्धि है।

—पानीपत (हरियाणा) स्थानीय माडल टाउन समाज का 23वां वार्षिकोत्सव 7 से 9 सितम्बर तक मनाया गया। श्री ओमप्रकाश शास्त्री (जालंधर) की वेदकथा के अलावा, नगर में शोभा-यात्रा, महिला सम्मेलन, राष्ट्र-एकता सम्मेलन, वेद सम्मेलन आदि सफल कार्यक्रमों में आचार्य सत्यप्रिय आदि कीर्ति आर्य विभूति ने भाग लिया।

पावन वेद सप्ताह

लुधियाना स्थानीय (फोकल प्वाइन्ट) समाज ने 2 से 9 सितम्बर तक पावन वेद सप्ताह मनाया। महोपदेशक स्वा० सच्चिदानन्द सरस्वती द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी की शैली में सरल व सरस वेद मत्रों की व्याख्या के कारण समारोह में उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

शुद्धि एव अन्तर्जातीय विवाह

पुष्कर (राज०) पिछले दिनो स्थानीय वैदिक सत्संग आश्रम ने सभ के स्थानीय कार्यकर्ता के सुपुत्र दिनेश शर्मा और एक सुशिक्षित इसाई युवती का अन्तर्जातीय विवाह यज्ञोपवीत धारण सहित सम्पन्न कराया। शुद्धि के बाद युवती का नाम करण चन्द्रिका देवी किया गया। पर लडके के इसाइयों के चगुल में जाने की आशका बताकर आश्रम ने दिनेश के पिता को उक्त शुद्धि और विवाह के लिए सहमत कर लिया।

वैदिक धर्म महासभा

कवरी (हरियाणा) समाज में अंकुरित दूषित प्रवृत्तियो से पृथक रहकर विशुद्ध वैदिक धर्म के प्रचार हेतु ग्राम नलवा हिसार मे डा० सुदर्शन देव आचार्य की अध्यक्षता मे वैदिक धर्म महासभा का गठन किया गया। प्रधान—स्वा० रत्नदेव जी (कुलपति गुरुकुल कुम्भाखेडा), महामंत्री डा० सुदर्शन देव आचार्य (महर्षि वेदभाष्य के व्याख्याकार), मंत्री— बहन कलावती शास्त्री एम०ए० चुनी गयी।

ब्र० आर्य नरेश द्वारा वेद-प्रचार

दीना नगर (हि० प्र०) पजाब, जम्मू कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में राष्ट्र-सुरक्षा व वेद-प्रचार अभियान के सिलसिले में ब्र० आर्य नरेश ने कठुहा, नूरपुर आदि विभिन्न क्षेत्रों में टेपरेकार्डर आदि की सहायता से तूफानी दौरे किये। काफी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने रोज हवन व सन्ध्या करने की प्रतिज्ञा की। स्वामी सुमेधानंद प्रचार कार्य में उनके साथ रहे।

निःशुल्क नेत्र-शिविर

नई दिल्ली माता चनणदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनकपुरी में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के 68 वें जन्मदिवस पर 23 सितम्बर को प्रातः प्रथम निःशुल्क नेत्र-शिविर आयोजित किया जिसका उद्घाटन भारत सरकार की [illegible] कुमारी [illegible] ने किया।

मानवती आर्यकन्या हाई स्कूल, हांसी

१५ अगस्त १९८४ को समस्त कार्यक्रमों में प्रथम आने पर मा० आर्य कन्या हाई स्कूल, हाँसी, को **हाँसी उपमण्डल का श्रेष्ठतम** विद्यालय घोषित किया गया श्रेष्ठतम विद्यालय का विजयोपहार एस०डी०एम० हाँसी से प्राप्त करती हुई विद्यालय की छात्राएं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम आने पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती हुई छात्राएं। शिक्षा एवम सामाजिक क्षेत्र में श्रेष्ठतम सेवाओं के लिए कु० विजया—मुख्याध्यापिका, को सम्मानित करते हुए उपमण्डल अधिकारी श्री देसराज ढीगरा।

ज्ञानशील : महात्मा हंसराज विशेषांक

डी० ए० वी कालेज अम्बाला शहर के प्राचार्य पी० के० बंसल को 'महात्मा हंसराज विशेषांक' की प्रथम प्रति भेंट करते हुए मुख्य सम्पादक प्रो० धर्मवीर सेठी।

संस्कृत व संस्कृति अभी सप्राण है

झोलाझाल (उ० प्र०) : गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों के वेदपाठ व संस्कृत संभाषण से 9 सितम्बर को आश्रम में पधारे जनरल मैनेजर, मेरठ उद्योग केन्द्र श्री बी०बी०एल० श्रीवास्तव अपने को गौरवान्वित अनुभव किये बिना न रह सके। भारतीय संस्कृति एवं देव भाषा के इस विस्मयकारी पुनरुज्जीवन की लहलहाती बोल से आह्लादित होकर उन्होंने विद्यार्थियों के लिये एक हाकी सेट प्रदान किया कि भविष्य में सारी खेल सामग्री की आपूर्ति का भी आश्वासन दिया।

प्रभाकर (ओ० टी० सचालिका एवं अध्यापिका कन्या गुरुकुल, गनीयार) तथा कोषाध्यक्ष—श्री अतर सिंह आर्य (प्रधान, हरियाणा नशाबन्दी समिति) चुने गये।

भारतिय युवा जागृति मंच

दिल्ली: राजधानी के युवा-वर्ग ने श्री जगदीश प्रसाद वर्मा की अध्यक्षता में भारती युवा जागृति मच का गठन किया। अध्यक्षता—श्री संजय जैन, महामंत्री—श्री कमलकिशोर आर्य कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश वर्मा, संगठन मंत्री—श्री सुरेश कुमार चौहान, संयोजक—श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा तथा मंच संचालक—श्री पवन शर्मा नियुक्त किये गये।

अम्बाला में धर्म शिक्षा के प्रति उत्साह

प्रो० रत्न सिंह की प्रेरणा का सुफल

6 सितम्बर को डी० ए० वी० कालेज अम्बाला नगर के आर्य युवक समाज की ओर से एक सभा का आयोजन किया गया। आर्य युवक समाज के अध्यक्ष डा० वेद प्रकाश वेदालंकार ने ने प्रो० साहब का स्वागत किया। प्रो० रत्न सिंह ने अपने शिक्षा क्षेत्र के आधार पर अनुशसन और सयंम पर बल दिया। महर्षि दयानन्द के जीवन से घटनाएं उदधृत करके प्रो० साहिब ने विद्यार्थीयो को समझाया कि गुरू और शिष्य के बीच किस प्रकार के सम्बन्ध प्राचीन भारत में हुआ करते थे। अपनी ओजस्विनी वाणी मे उन्होंने विद्यार्थीयो से अभ्यर्थना की कि महर्षि दयानन्द के नाम पर सर्वप्रथम खोली गई इस सस्था के विद्यार्थीयो के लिए हड़ताल शब्द का तो कोई अर्थ ही नही होना चाहिए। सभी विद्यार्थीयों एवं प्राध्यापको ने उनके विचार को मन्त्र मुग्ध होकर सुना।

प्रो० साहिब ने आचार्य पी० के० बन्सल से अनुरोध किया कि छात्रावास मे रहने वाले सभी विद्यार्थीयो को सत्यार्थ प्रकाश एवं दो मित्रों की बाते नामक पुस्तक की एक एक प्रति दी जाए। आचार्य महोदय करतल ध्वनि के बीच इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया और आचार्य महोदय ने यह भी जानकारी दी कि उनके कालेज मे आर्य युवक समाज एव आर्य वीर दल सक्रिय रूप से कार्य कर रहे है, तथा आर्य समाज के विचारों को प्रचारित एव प्रसारित करने का हर सम्भव प्रयत्न किया जा रहा है। अगले दिन प्रो० रत्न सिंह जी ने डी०ए० वी० कालेज अम्बाला नगर के प्राध्यापक मण्डल की एक विशेष बैठक को सम्बोधित किया। उसमे भारतीय सास्कृतिक इतिहास की पृष्ठ भूमि बतलाते हुए स्पष्ट किया कि किस प्रकार अंग्रेज शासको ने हमारे इतिहास और ग्रन्थों को दूषित किया था। मैकाले की शिक्षा सम्बन्धी नीति तथा मैक्समूलर के वेद भाष्य सम्बन्धी षडयन्त्रो का उल्लेख किया। आधुनिक युग में शिक्षण संस्थाओं मे किसी न किसी प्रकार की धर्म शिक्षा एव नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। यह कालेज महर्षि दयानन्द की पावन स्मृति मे स्थापित प्रथम संस्था है इसलिए इसका उत्तरदायित्व और भी बढ जाता है। इस संस्था को स्थापित हुए सौ वर्ष होने जा रहे हैं और शीघ्र ही इसकी शताब्दी मनाई जाएगी। स्वाभाविक है कि लोग इसके सौ वर्षों के कार्य मे अपनी रुचि प्रकट करेंगे। इसलिए इस महाविद्यालय के आचार्य एवं प्राध्यापको का कर्तव्य बन जाता है कि अन्य महविद्यालयो के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करे।

अंत में आचार्य जी ने प्रो० साहिब को आश्वासन दिया कि इस वर्ष कम से कम चार पाच सौ विद्यार्थी धर्म शिक्षा की परीक्षा देंगे और इस कालेज के विद्यार्थी एव प्राध्यापक प्रो० साहिब की आशाओ अनुपम बनने का भरसक प्रयत्न करेगे।

—टेकावाली (फिरोजपुर): स्थानीय आर्य समाज के वार्षिक चुनाव में प्रधान—श्री रामप्रकाश नैय्यर, मंत्री—श्री हरीशचन्द्र ग्रोवर तथा कोषाध्यक्ष—श्री सत्पाल शर्मा निर्वाचित हुए।

करनाल मे दयानन्द बलिदान शताब्दी

करनाल में ५-६-७ अक्तूबर को विशाल पैमाने पर महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है जिसमे १ से ७ अक्तूबर तक यज्ञ, ६ को शोभा यात्रा और अनेक महत्त्वपूर्ण सम्मेलनो का आयोजन किया गया है।

यू० १०३/१०८ लाइसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०१)

करनाल में ऋषि बलिदान शताब्दी पर शोभा यात्रा में शामिल हों

समस्त आर्य जगत् की ओर से ५, ६, ७ अक्टूबर १९८४ को महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी करनाल में मनाई जा रही है। इस सम्बन्ध में तैयारियां जोर-शोर से चल रही है। वहां ठहरने भोजन आदि की व्यवस्था नि:शुल्क होगी। ६ अक्टूबर शनिवार को दोपहर २ बजे एक विशाल शोभा-यात्रा निकलेगी। मेरी समस्त आर्य समाजों, स्त्री समाजों एवं डी० ए० वी० संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी संस्थाओं के समस्त सदस्यों सहित पधारने की कृपा करें। कृपया निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें।—

१. अपनी आर्यसमाज और अपनी संस्था का नाम पटल साथ लावें।
२. हर समाज संस्था के पास "ओ३म्" के झण्डे अवश्य हों।
३. अगर पुरुष वर्ग केसरी पगड़ी और महिला वर्ग केसरी दुपट्टे का प्रबन्ध शोभा-यात्रा के लिए कर सकें, तो शोभा यात्रा शोभा और भी बढ़ जायेगी।
४. जिन-जिन संस्थाओं के पास अपने बैण्ड हों, वे अवश्य साथ लावें।
५. जिन संस्थाओं में "स्काउट्स" और एन. सी. सी. हो, अपनी टोली सहित शोभा-यात्रा में शामिल हों।
६. आर्य वीर दल एवं युवक परिषद् अपने गण-वेष में रहें।
७. जिनके पास अपनी मोटर गाड़िया एवं स्कूटर हों वे "ओ३म्" के झण्डे लगाकर शोभा-यात्रा में सम्मिलित हों।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस ओर ध्यान देंगे तो शोभा-यात्रा स्मरणीय हो सकती है। इस सम्बन्ध में और कोई जानकारी लेनी हो तो आर्य प्रादेशिक सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली अथवा डा० गणेश दास, मन्त्री —आर्य [illegible] सभा हरियाणा, डी. ए. वी. महिला कालेज, करनाल से ले [illegible]

[illegible] ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह

१२-१३-१४ अक्तूबर १९८४ को अलवर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह राजस्थान प्रान्तीय स्तर पर मनाया जा रहा है। राजस्थान का सिह द्वार अलवर वह स्थान है जहां पर गुरुवर स्वामी विरजानन्द ने काफी अरसे तक निवास किया था और यहाँ के महा राजा विनय सिह जी को संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी थी। इस समारोह में भिन्न-भिन्न आयोजन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, पिछड़ा वर्ग उत्थान सम्मेलन, श्रद्धांजलि समारोह, विशाल शोभायात्रा, प्रदर्शनी तथा ऋषि लंगर आदि किये जा रहे हैं।

यह सम्मेलन स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता में हो रहा है जिसमें सर्व श्री स्वामी ओमानन्द जी, लाला रामगोपाल, डा० कर्णसिह, श्री बलराम जाखड अध्यक्ष लोकसभा, श्री रामचन्द्र विकल, सांसद, प्रो० शेरसिह, श्री ओमप्रकाशजी त्यागी, [illegible] शास्त्री, श्री रामनिवास मिर्धा केन्द्रीय राज्यमन्त्री, भगवान शर्मा सांसद, रामनाथ सहगल, श्री पृथ्वीसिह आजाद, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री वीरेन्द्र अध्यक्ष पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, राजगुरु जी शर्मा, रामलाल जी मलिक दत्तात्रेय आर्य, बालदिवाकर हंस, चिन्तामणि शास्त्री, तथा सारे भारत वर्ष से अनेक सन्यासी गण, आर्य नेता उपदेशक तथा, विद्वान् व आर्य नर-नारी कापी संख्या में ऋषि को श्रद्धांजलि अपित करने हेतु, पधार रहे हैं।

अलवर देहली अहमदाबाद रेलवे मार्ग पर देहली जयपुर के मध्य स्थित है जहां देहली जयपूर आगरा मथुरा गुड़गांवा आदि से हमेशा बस आती रहती हैं।

वैदिक विद्या मन्दिर के विशाल प्रांगण में ७० फुट लम्बी व ७० फुट फुट ऊंची संगमरमरीय यज्ञशाला का निर्माण पांच लाख रुपये की लागत से किया जा रहा है जो लगभग पूरी हो चुकी है। यह भी आर्य जनता का, आकर्षण केन्द्र होगा।

महासम्मेलन में अनेक नगरी के आर्य वीर दल, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियां, बड़ौदा की घुड़सवारी करने वाली छात्राएं, अनेक झांकियां, महाविद्यालय के छात्र-छात्रायें तथा प्रदर्शनी व अनेक भजन मण्डलियां भाग लेने आ रहे हैं। —छोटूसिह एडवोकेट

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में ऋषि लंगर के लिये अपील

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, नई दिल्ली (फरीदाबाद) में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी १२,१३,१४ अक्टूबर, शुक्र, शनि, रविवार १९८४ को मनाई जा रही है। इस शताब्दी में पधारने वालों के लिए ऋषि लंगर की नि:शुल्क व्यवस्था होगी।

मेरी आर्य जगत से विशेषकर दिल्ली की आर्य समाजों, स्त्री आर्य-समाजों से प्रार्थना है कि—वे इस ऋषि लंगर के लिए अधिक से अधिक सामग्री गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, को भेजने की कृपा करें।

आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वे अपने आर्य समाज की बस करके वहां अवश्य पहुंचने की कृपा करें।

१२ अक्तूबर को विशाल शोभा यात्रा १-०० बजे दसहरा मैदान फरीदाबाद [illegible] से फरीदाबाद शहर होते हुए गुरुकुल [illegible]। हमें इसमें भी अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होना है।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

भारत वर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बनें। —प्रि० पी० डी० चौधरी, मनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपूर छावनी

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियों के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमाचल की ताजी जड़ी-बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है, जो कि उत्तम, कीटाणु नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वों से युक्त है। वह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४) प्रति किलो।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं। वह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी, लकसर रोड
डाकघर गुरुकुल कांगड़ी २४९४०४, हरिद्वार (उ०प्र०)

दहेज उन्मूलन का एकमात्र उपाय अन्तर्जातीय विवाह

जब महर्षि दयानन्द ने देश की शोचनीय दशा पर दृष्टिपात किया तो उनको अत्यन्त दुख हुआ और उन्होंने एक दृढ़ सकल्प लिया कि मैं अपने देश की दशा को सुधारने के लिये अथक परिश्रम करूंगा। अनाथों के लिये अनाथालय खुलवाये। दलित का उद्धार किया। बाल-विवाह बन्द कराया। छूत-अछूत, जाति-पाति का बन्धन तोड़ा और साथ ही शादी-विवाह गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार करने का उपदेश दिया।

आज कल ऐसी एक भ्रष्ट प्रथा चली है कि बिना दहेज के विवाह को सम्पन्न नही समझते हैं। प्रतिदिन समाचार पत्रो में पढ़ते हैं कि दहेज थोड़ा लाने के कारण बहुओं को जलाया जाता है। कितना जघन्य अपराध है! इससे बचने के लिये दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाह का आयोजन किया गया है। आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई देहली मे यह कार्य सुचारू रूप से चल रहा है जिसे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा सभा-मंत्री श्री रामनाथ सहगल जी का पूर्ण सहयोग तथा संरक्षण प्राप्त है। इस परोपकार के कार्य में प्रत्येक को सहयोग देना चाहिये ताकि देश इस दहेज रूपी दानव को समाप्त किया जा सके। योग्य वर-वधू की जानकारी प्राप्त करने के लिये कार्यालय में अपना नाम पंजीकृत करायें। मिलने का समय (सायं 5 बजे से 7 बजे तक) —डा०मनदपाल वर्मा अधिष्ठाता, अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ४५ रविवार, ४ नवम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | कार्तिक शुक्ला ११, २०४१ वि०

तस्कर सम्राट् भी राजनीति में

15 सितम्बर को बम्बई में मुसलमान और दलित वर्ग के लोग मिलकर एक नये राजनीतिक संगठन की नीव डाल चुके हैं। इन दोनों वर्गों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर शासन के अन्यायों के खिलाफ लड़ने का फैसला किया है।

इस नये राजनीकि संगठन के नेता हैं—तस्कर सम्राट हाजी मस्तान मिर्जा और करीम लाला जो अपनी तस्करी सम्बन्धी अवैध कार्यवाहियों के कारण सारे देश मे विख्यात है। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता दिलीप (जिनका असली नाम यूसुफ है) भी इस राजनीतिक संगठन के साथ हैं। यह भी कहा जाता है कि महाराष्ट्र के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री अब्दुल रहमान अंतुले पर्दे के पीछे से इस नये मोर्चे का संचालन कर रहे है। राजनीतिक प्रेक्षक चकित हैं कि यह नया संगठन मुस्लिम नेतृत्व के शून्य को भरने के लिए एक नई मुहिम है या मुसलमानों के वोटों को इकट्ठा करके शासन के विरुद्ध कोई नई साजिश की जा रही है।

यह बात जानकार लोगो से छिपी नहीं है कि भिवंडी के दंगे में उक्त दोनों तस्कर सम्राटों का काफी बडा हाथ था और इसलिए इन लोगो को महाराष्ट्र की सरकार ने गिरफ्तार भी किया था। लेकिन फिर कुछ दिन के बाद ही इनको अचानक ही क्यों छोड़ दिया गया, इसका रहस्य आज तक किसी की समझ में नहीं आया।

15 सितम्बर को जब यह मुस्लिम दलित संगठन बना तब अभिनेता दिलीप ने उस बैठक में कहा था—"मुस्लिम कौम अगर इसतरह से बुजदिल है जो अपनी हिफाजत खुद नही कर सकती, तो उसे मर जाना चाहिए। उसकी किस्मत में हलाक होना ही लिखा है। हम अपने दलित भाइयों को विश्वास दिलाते हैं कि मुसलमानो की दोस्ती पर उन को भी नाज होगा, क्योंकि मुसलमान का खून जब जोश मारता है तब उसे शायद अपने आप से भी डर लगने लगता है। आज दलितों और मुसलमानो को साथ आने की सख्त जरूरत है।"

दलित पैन्थर के प्रतिनिधि प्रो० जोगेन्द्र कवाड़े ने इसके जवाब मे कहा था—"मुझे हाजी मस्तान मे एक नायाब इन्सान नजर आया है। दलितो और मुसलमानों पर जो अत्याचार हुए हैं वे काले अक्षरो मे लिखे जायेंगे। अब तक तो दलितों की एकता की वजह से दिल्ली में घंटियां बजती थी, अब जब मुसलमान भी उनके साथ मिल जायेंगे तो वहा घण्टे बज जायेंगे। अबतक मुसलमानों ने दुश्मनों से हाथ मिलाकर कई बार धोखा खाया है, इस बार वे एक दोस्त के गले मिले हैं।" यह मिलाप आगे क्या गुल खिलाता है, यह धीरे-धीरे देखिये।

आर्यसमाज अनारकली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अनारकली का वार्षिकोत्सव 5 से 11 नवम्बर तक मनाया जाएगा। प्रात: 7 से 8 तक गायत्री महायज्ञ। रात्रि 8 से 9 तक श्री पं० शिवकुमार शास्त्री के वेद-प्रवचन। 9 नवम्बर को मध्यान्ह स्त्री आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव। 10 नवम्बर को प्रात: और मध्यान्ह को छात्रों की भाषण और गायन प्रतियोगिता। कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के छात्रों की अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता भी होगी। 11 नवम्बर को प्रात: 9 बजे पूर्णाहुति, 10 से 1 बजे तक विशिष्ट विद्वानों के प्रवचन। 1 से 2 तक ऋषि लंगर। 2 से 5 बजे तक आर्य युवक सम्मेलन में ध्वजारोहण श्री विद्या प्रकाश सेठीद्वारा, मुख्य अतिथि श्री हीरालाल चावला, उद्घाटन डा० धर्मपाल आर्य मंत्री दिल्ली आ० प्र० सं० द्वारा। युवकों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन।—रामनाथ सहगल, मंत्री

'मैं तो पढ़कर अवाक् रह गया'

अमर स्वामी जी महाराज का आशीर्वाद

श्रीयुत पं० क्षितीश जी !

आपकी पुस्तक **'तूफान के दौर से—पंजाब'** पढ़ी। मैं तो इसको पढ़कर अवाक् रह गया। आपने इसमें अत्यावश्यक, अति खोजपूर्ण और बहुत ही अछूती सामग्री दी है। आपने इस समय की बड़ी भारी आवश्यकता और मांग को पूरा किया है। आपने घोर परिश्रम करके आश्चर्यजनक तथ्य खोज निकाले हैं। मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, बधाई और आशीर्वाद देता हूं।

आपकी यह पुस्तक देश के कोने-कोने में पहुंचनी चाहिए। आपने जिस भयंकर अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र का भडाफोड़ किया है उसका सारे देश को पता चलना चाहिए।

देश तथा सरकार को सावधान होने के लिए परमेश्वर सद्बुद्धि तथा बल प्रदान करे।

भवदीय—अमर स्वामी सरस्वती, अध्यक्ष सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मंडल, ज्वालापुर (हरिद्वार)

'प्रताप' के संचालक श्री वीरेन्द्र जी की शुभकामना

प्रिय भाई क्षितीश जी !

आपने बहुत ही अच्छी पुस्तक लिखी है और उस पर खूब परिश्रम किया है। पंजाब के विषय में हाल में ही अंग्रेजी में भी कई पुस्तकें निकली हैं, परन्तु जो कुछ आपने लिखा है, किसी और ने नहीं लिखा। इस पुस्तक में आपने इस समस्या के धार्मिक और राजनीतिक दोनों पक्षों पर अपने विचार प्रामाणिकता और निष्पक्षता से प्रकट किए हैं। यही इसका महत्व है।

मैं चाहता हूं कि यह पुस्तक अधिक से अधिक हाथों में जाए। पंजाब में तो कोई आर्यसमाजी और हिन्दू इसको बिना पढ़े न रहे। मैं अपनी ओर से इस दिशा में भरसक प्रयास करूंगा।

भवदीय
वीरेन्द्र

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

देश को विघटन से बचाओ

दिल्ली में ऋषि निर्वाण दिवस पर कुमुदबेन जोशी का उद्‌बोधन

आर्यसमाज ने स्वतंत्रता आदोलन में भारी योग दिया और आज भी यदि कोई देश की बाहरी अथवा भीतरी शक्ति इसको विखण्डित करने की कोशिश करती है तो भी यहा सस्था आगे बढ़ करके काम करती है। देश मे जो विघटनकारी शक्तिया उभर रही है उनसे निपटने मे भी इम संस्था ने राष्ट्र नेता इन्दिरा गाधी को सहयोग दिया है।

ये विचार रामलीला मैदान में ऋषि दयानन्द निर्वाणोत्सव के अवसर पर केन्द्रीय मत्री श्री कुमुदबेन जोशी ने व्यक्त किए।

समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने घोषणा की कि आर्यजन राष्ट्रहित के ऊपर और कुछ नही मानते। पंजाब की जटिल व कठिन समस्या के दौरान भी आर्यजनो ने भरपूर कोशिश स्थिति को सम्भालने मे की।

इस समारोह मे आर्य नेता श्री क्षितीश कुमार, श्रीशवकुमार शास्त्री और श्री सूर्यदेव ने भी विचार व्यक्त किए। ['नवभारत टाइम्स' से]

फूल भी अंगार भी

—अरविन्द 'प्रियदर्शी'—

संघर्षों में पले हुए हम फूल भी हैं अंगार भी हैं।
मां की ममता का प्यार भी हैं, तरुणाई का शृंगार भी हैं।
पूजा के पुष्प बनाकर हमें समर्पित कर दो,
यदि पद-दलित किया तो फिर भी रही चुनौती,
अवनी से अम्बर तक जलकर धधक उठेंगे।
पंचशील के हैं कपोत पर अग्निदूत साकार भी हैं।
संघर्षों में पले हुए हम फूल भी हैं अंगार भी हैं।
पत्थर से प्रकट करें ईश्वर वह आराधन,
अंतिम सांसों तक सेवाव्रत पालन होगा।
हम भीष्म नहीं जो दु:शासन को सहन करें,
अनुशासन सर आंखों पर जब तक न्यायपूर्ण शासन होगा।
श्रद्धा का आगार हैं हम पर शक्ति की हुंकार भी हैं।
संघर्षों में पले हुए हम फूल भी हैं अंगार भी हैं।

आओ सत्संग में चलें

कृतं लोकं पुरुषो ऽभिजायते

—प्रेमचन्द्र श्रीधर एम० ए०—

महर्षि शाण्डिल्य के इन शब्दों में कितना गूढ ज्ञान छिपा है, यह केवल विचार करने पर ही जाना जा सकता है। जितना गहन चिन्तन इसका किया जाएगा उतनी ही अपने को समझने की सामर्थ्य प्राप्त होगी। यह संसार तो परमपिता परमात्मा का बनाया हुआ है, फिर मनुष्य अपने ही बनाए हुए संसार में कैसे रहता है? यह एक विचित्र पहेली सी मालूम होती है परन्तु यह शाश्वत सत्य है, इसे निश्चय जानिए। तीन अनादि हैं, परमात्मा, जीव और प्रकृति। इनमें प्रकृति को लीजिए। प्रकृति का केवल एक ही गुण है कि यह अनादि है, नित्य है। दूसरा है जीव, यह भी नित्य है और रहेगा परन्तु नित्यता के साथ-साथ इसमें दूसरा गुण है ज्ञान का, अर्थात जीव अनादि है और ज्ञानवान भी। तीसरा है परमात्मा परमात्मा अनादि है, ज्ञानवान् है, परन्तु उसका स्वरूप आनन्दमय है। वह अनादि, सर्वज्ञ और आनन्द का भण्डार है।

अपने कर्मो के अनुसार जीव विभिन्न योनियो मे आकर आनन्द की इच्छा करता है। वास्तविकता यह है कि परमात्मा की स्थिति उस चुम्बक की है जो अपनी आनन्द शक्ति के कारण सदैव जीव रूपी लोहे को अपनी और आकर्षित करता है। जीव को भी आनन्द प्राप्ति की कामना तो है, परन्तु प्रकृति के प्रति जीव का अज्ञानयम मोह उसे आनंद की प्राप्ति से वंचित कर देता है। मनुष्य अपने लक्ष्य से भटक कर परमात्मा से प्राप्त साधन रूप प्रकृति को अपना साध्य मान लेता है और अपने लिए स्वयं बनाई सृष्टि मे निवास करने लगता है।

जर को ही जिन्दगी का
सहारा समझ लिया,
मल्लाह ने किश्ती को
किनारा समझ लिया।
चुन्धिया गई हैं आंखें
भोगों की चमक से,
भोगों को जिन्दगी का
दुलारा समझ लिया ॥

एक मकड़ी की तरह मनुष्य अपने लिए अपने ही शरीर से सुखमय जाल बुनकर तैयार करता है और उसी में फंस जाता है। उससे बाहर आने का कोई मार्ग न पाकर उसमें अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को खो बैठता है।

यह तो सत्य है कि संसार को परमात्मा ने रचा है, परन्तु संसार जीवन के लिए कैसा हो इसका निर्णय तो जीब को स्वयं करना है। इसलिए मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा जैसा संसार अपने लिए बनाता है वैसे हो संसार में वह रहता है। इस लोक में ही नही, अपने भावी जीवन का प्रारब्ध निर्माता भी मनुष्य स्वयं है। परमपिता परमात्मा जीवन का सदा कल्याण चाहते हैं अत: कर्मों के अनुसार न्याय देकर बार-वार इस संसार में जीव को विभिन्न योनियों में जन्म देते है। यह जीव पर **निर्भर** है कि उसका यह संसार कैसा हो? ठीक ही कहा है:—

तेरा करम तो आम है
दुनिया के वास्ते।
मैं कितना पा सका
यह मुकद्दर की बात है ॥

इस स्वयं के द्वारा निर्मित संसार की रचना जीवन के द्वारा अपने विचारों के आधार पर होती है इस लिए हमारे जीवन का प्रथम आधार हैं हमारे विचार। विचार का आधार हैं हमारे संस्कार जो हम अपने समाज से अपने माता-पिता, गुरुओं, सम्बन्धियों और पडोसियों से प्राप्त करते हैं। इन्हीं अच्छे संस्कारों की प्राप्ति शिक्षा का उद्देश्य है। धर्म का लक्ष्य भी मनुष्य के कर्मों को शुभ मार्ग पर प्रेरित करना है—"Religion Providcs a moral base for all the activities of a man"—Mahatma Gandhi.

अच्छे संस्कारों से अच्छे विचार को प्राप्ति और अच्छे विचारो से किए गए कर्मों का फल भी शुभ होता है। इन्ही कर्मों के आधार पर हम अपने लिए नए संसार की रचना करते है इसलिये महर्षि के इन शब्दों में शाश्वत सत्य है। क्यों कि कहा है—

यन्मनसा ध्यायते तद् वाचा वदति
यद् वाचा वदति तद् कर्मणा करोति
यद् कर्मणा करोति तद्भिसम्पद्यते।

हमारे प्रत्येक विचार का अन्त कहां है? कर्म में। और कर्म का परिणाम है हमारी प्रारब्ध, जिसे लोग प्राय: भाग्य का नाम देते हैं, मुकद्दर पुकारते हैं। वेद में आया है—

"क्रतु मय : पुरुष:"

यह मनुष्य अपने ही संकल्पों का बना है।

प्रसिद्ध विद्वान रोमा रोलां के शब्दों में :—

"Action is thc end of thought, a thought which does not look towards action is an abortion and treachery."

कर्म ही विचार की परिणति है, जो विचार कर्म में परिणत नहीं होता वह भ्रूणहत्या और धोखे के समान है।

मनुष्य की परिभाषा देते हुए महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है "मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुख और हानि लाभ को समझे।

इसलिए मनुष्य यह अनमोल शरीर प्राप्त कर ऐसा कोई कर्म न करे जिससे वर्तमान और भविष्य दोनों बिगड़ जाएं और अपने द्वारा बनाए संसार में कष्टमय जीवन जीने पर विवश हो जाए।

नहीं देता कोई किसी को सजाए।
सजा बनके आती हैं अपनी खताएं ॥

प्रभु न्यायकारी और दयालु हैं। हमारे कर्मों के अनुसार फल देना यही उसकी सबसे वड़ी दया है। हमें मानव जन्म मिला है। यह भोगयोनि है और कर्मयोनि भी। यहां हम नया बोते हैं और पुराने वोए को काटते हैं। आवश्यकता केवल मनुष्यता की है। अगर यह नहीं तो कुछ भी नहीं। क्योंकि—

दिल में उलफत नहीं तो कुछ भी नहीं।
गुल में नक्हत नहीं तो कुछ भी नहीं ॥
आदमी में हजार जौहर हों।
आदमीयत नहीं तो कुछ भी नहीं ॥

और अन्त में इसाक वाट्स के शब्दों में:—

"Your little hands were never made to tear each others eyes."

—तुम्हार छोटे-छोटे और कोमल हाथ दूसरों की आखें नोचने के लिए नहीं बनाए गए।

पता—यशोदा निकेतन
३६/ई रणजीत सिंह मार्ग
आदर्श नगर, दिल्ली-११००३३

कोई ऐसा अक्षर नहीं जो बीजमन्त्र न हो, कोई ऐसी जड़ी नहीं जो औषधि न हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो किसी काम का न हो। मनुष्यों को यथायोग्य काम में लगाने वाला ही मुश्किल से मिलता है।

सम्पादकीयम्

चुनावों की सरगरमी शुरू

सन् 1985 के जनवरी मास में चुनाव होने की घोषणा की बड़ी तीव्रता से प्रतीक्षा की जा रही है। अब से कुछ समय पहले तक चुनाव होने या न होने के सम्बन्ध में जो शंका का वातावरण दिखाई दे रहा था, अब उसकी चर्चा सुनाई नहीं देती। सब राजनैतिक दल यही मान कर चल रहे हैं कि चुनाव यथासमय होंगे और उसी दृष्टि से विभिन्न दलों ने चुनावी गठजोड़ और तालमेल प्रारम्भ कर दिये हैं। लोकदल और जनता पार्टी ने मिलकर दलित किसान मजदूर पार्टी का निर्माण किया है। जो विरोधी दल इस पार्टी में शामिल नहीं हैं—जैसे भारतीय जनता पार्टी—वे भी अपने उम्मीदवारों के सम्बन्ध में विभिन्न दलों के सहयोग से सम्मिलित प्रत्याशी खड़े करने की तैयारी कर रहे हैं। समस्त विरोधी दलों ने यह अनुभव कर लिया है कि अलग-अलग रहकर वे शासक दल का मुकाबला नहीं कर सकते इसलिए वे इका को हराने के उद्देश्य से एक जल्दबाजी से भरी भाग दौड़ में लगे हैं।

उधर इका वाले भी चुप नहीं बैठे हैं। विभिन्न राज्यों में वे भी अपनी गोटियाँ फिट करने में जुट गये हैं। कुल मिलाकर इस समय विभिन्न दलों द्वारा आपस की आलोचना प्रत्यालोचना से तबेले में लतियाव का सा आभास होता है। सबके सामने कुर्सी को हस्तगत करने की समस्या ही सबसे प्रमुख है। आश्चर्य की बात यह है कि विरोधी दल भी प्रायः नारा उन्हीं सिद्धांतों का लगाते हैं जिनका प्रचार चिर काल से कांग्रेस करती आई है। धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद प्रजातन्त्र—ये हमारे संविधान के मूलभूत आधार हैं। सब राजनैतिक दल अपने से भिन्न दलों के बारे में यही आरोप लगाते हैं कि भारतीय संविधान के इन मूल आधारों के पोषक केवल हम हैं, और अमुक दल तो केवल जबानी जमाखर्च करता है। सब अपने को दूध का धोया और दूसरे को पाप-पंक में लिप्त बताते हैं। विपक्षी दलों का गठबन्धन भी किसी सिद्धान्त की खातिर न होकर केवल सत्ता प्राप्त करने की लालसा से प्रेरित है। एक बार देश ने बड़ी-बड़ी आशाएं लगाकर 5 दलों के गठबन्धन से बनी जनता पार्टी को शासन सौंपा था। पर जिस तरह उसने आपसी महत्वाकांक्षा की होड़ में जनता की आशाओं पर पानी फेर दिया, वह भारतीय राजनीति का अत्यन्त दुःखद अध्याय है।

हालांकि प्रजातन्त्र के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि शासक दल का कोई विकल्प हमेशा तैयार रहे, अन्यथा शासक दल के अन्दर ही तानाशाही की प्रवृत्ति पैदा होने लगती है। जब से देश आजाद हुआ है तब से पिछले सैंतीस सालों में, केवल तीन वर्षों को छोड़कर सदा कांग्रेस ही सत्ता के सूत्र सम्भालती रही। जब एक बार जनता ने उस कांग्रेस के विकल्प का परीक्षण प्रस्तुत किया तब वह परीक्षण विफल हो कर रह गया। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि कांग्रेस का कोई विकल्प है ही नहीं। अगर विकल्प की सम्भावना नहीं रहेगी तो न तो कभी शासक दल पर अंकुश रहेगा और न ही कभी प्रजातन्त्र सुरक्षित रह सकेगा। इसलिए विकल्प का होना तो अत्यन्त आवश्यक है। पर वह विकल्प क्या हो, यही सबसे बड़ी समस्या है।

जहां विपक्षी दल अपने आप को सशक्त विकल्प के रूप प्रस्तुत करने की बात करते हैं, वहां देश को विघटन की ओर ले जाने वाली कुछ अन्य शक्तियां भी नये सिरे से उभर रही हैं और वे अपने आप को कांग्रेस का विकल्प सिद्ध करना चाहती हैं। इन विघटनकारी शक्तियों में हम उन लोगों का नाम ले सकते हैं जो सदा अपने मजहब को राष्ट्र से ऊपर मानते आये हैं। यह देश का दुर्भाग्य है कि धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त को स्वीकार करने वाले देश में धर्म के नाम पर राजनैतिक पार्टियां बनें और वे चुनाव में हिस्सा लें। स्वयं नेहरू जी के समय देश के राजनेता इस बात के लिए प्रयत्नशील रहे कि सम्प्रदायविशेष के नाम से निर्मित दलों को राजनैतिक मान्यता प्राप्त न हो। परन्तु स्वयं साम्प्रदायिक लोगों के वोटों के आधार पर जीतने वाले राजनैतिक नेता उस दिशा में कामयाब नहीं हो सके।

यह माना जा सकता है कि देश की आजादी से पहले क्योंकि भारत का संविधान नहीं बना था, इसलिए उसमें धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त पर जोर देने की बात भी नहीं थी। पर जब से भारतीय संविधान का निर्माण हुआ और उसमें धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया, उसके बाद से किसी भी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनैतिक चुनाव लड़ने की छूट देना संविधान का सरासर उल्लंघन है। यदि भारत संविधान के इस सिद्धान्त पहलू पर गौर किया जाये तो भारत सरकार का यह कर्तव्य हो जाता है कि किसी भी सम्प्रदाय के नाम पर निर्मित पार्टी को राजनैतिक मान्यता न दे।

साम्प्रदायिक दल कौन से हैं, जिनको राजनैतिक मान्यता प्राप्त है उनके नाम का उल्लेख किए बिना हम केवल यह कहना चाहते हैं कि जिस किसी मजहब के मानने वाले लोग अपने सम्प्रदाय या अपने मजहब को पहले रखते हैं और राष्ट्र को पीछे वे साम्प्रदायिक हैं। राष्ट्रवाद की मुख्य परिभाषा यही है कि जो अपने सम्प्रदाय को राष्ट्र से बड़ा न माने, बल्कि राष्ट्र का सब सम्प्रदायों से बड़ा माने वही राष्ट्रवादी है। यदि किन्हीं साम्प्रदायिक दलों को राजनीतिक मान्यता देनी भी हो तो उनके लिए शर्त रखी जानी चाहिए कि जब तक अमुक सम्प्रदाय के नाम पर निर्मित उस दल में उससे भिन्न सम्प्रदाय के सदस्यों की संख्या 50 प्रतिशत नहीं होगी तब तक उसे राजनैतिक मान्यता नहीं दी जायेगी। चुनाव आयोग को भी इस दिशा में सक्रिय होना चाहिए और स्वयं उसको भी भारत सरकार को सुझाव देना चाहिए कि किसी साम्प्रदायिक दल को राजनीतिक दल के रूप में मान्यता प्राप्त न हो। इतना करने मात्र से ही देश की वर्तमान राजनैतिक समस्याओं का बहुत कुछ समाधान होता नजर आएगा।

परन्तु लगता है कि भारत सरकार अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति की अभ्यस्त होने के कारण इस प्रकार का कठोर कदम उठाने की बात नहीं सोच सकती। इसी बात से आश्वस्त होकर अनेक अल्पसंख्यक साम्प्रदायिक दलों ने नये सिरे से सिर उठाना शुरू किया है। वे भारत सरकार की कमजोरी जानते हैं। उदाहरण के लिए शाही इमाम जिस प्रकार विभिन्न दलों से तालमेल करके किसी न किसी प्रकार अपने 40 के लगभग उम्मीदवार संसद में पहुंचाना चाहते हैं, उसका समाचार आपने प्रथम पृष्ठ पर पढ़ा है। साथ ही हाजी मस्तान और करीम लाले जैसे तस्कर सम्राट भी अपनी अलग पार्टी बनाकर चुनावों के रणक्षेत्र में कूदना चाहते हैं। इसके अलावा विदेशों से मिलने वाले धन का भी आगामी चुनाव में काफी बड़ा रोल होने की सम्भावना है। भारत सरकार ने इसीलिए विदेशों से आने वाले धन पर कुछ अंकुश लगाया है, परन्तु उसे इसमें कितनी कामयाबी मिलेगी यह कहना मुश्किल है।

दिल्ली में हुए अखिल भारतीय मुस्लिम छात्र संघ ने अभी से नारा लगाना शुरू कर दिया है कि भारत को इस्लामी राज्य बनाया जाय। जिस मनोवृत्ति से बड़े पैमाने पर भारत के गरीब हरिजनों का धर्मान्तरण करने की योजना बनाई गई थी, इसका आभास मीनाक्षीपुरम काण्ड में मिल चुका है यह उसी मनोवृत्ति का नया और भयंकर विस्फोट है। इसमें विदेशों की कितनी शह है, यह कहना मुश्किल है। उधर खालिस्तान के पक्षपाती भी अभी तक सर्वथा शान्त नहीं हुए हैं। इसलिए देश के राष्ट्रवादियों के चेतने का अवसर आ गया है। आश्चर्य की बात है कि भारत राष्ट्र का सबसे बड़ा घटक—जिसकी संख्या 85 प्रतिशत से अधिक है वह विशाल हिन्दू समाज अभी सोया पड़ा है और उसमें राजनैतिक चेतना का सर्वथा अभाव है। राष्ट्र के इस सबसे बड़े घटक के जागने का अवसर अब आ गया है।

'तूफान के दौर से—पंजाब' पुस्तक का विमोचन

बृहस्पतिवार, ८ नवम्बर को सायं ५ बजे, विट्ठलभाई पटेल हाउस, रफी मार्ग में भारत सरकार की उपस्वास्थ्यमंत्री कु० कुमुदबेन जोशी उक्त पुस्तक का विमोचन करेंगी और पत्रकार-परिचर्चा में श्री खुशवन्तसिंह, श्री राजेन्द्र माथुर, श्री प्रभाष जोशी श्री के० नरेन्द्र श्री सुरेश सूरी श्री विश्वमित्र उपाध्याय, दीवान द्वारकानाथ खोसला आदि प्रमुख पत्रकार भाग लेंगे। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से इस समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

भारत की भौगोलिक और राष्ट्रीय एकता का महाकवि

—डा० कृष्णलाल—

महाकवि कालिदास का नाम भारतीय साहित्य मे ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र के समान है जिसके बिना भारतीय साहित्य अपूर्ण रह जाता है। परन्तु महाकवि की निस्सगता देखिये कि इन्होने कही भी अपने स्थान और काल का निर्देश नही किया। इसीलिए इनके काल के विषय मे विभिन्न विद्वानो के मन्तव्यों मे शताब्दियो का अन्तर है। पहले विद्वानो ने कालिदास जयन्ती का दिन देवोत्थान एकादशी निश्चित किया क्योकि मेघदूत मे कालिदास ने इसी दिन यक्ष के एक वर्ष के निर्वासन की अवधि की समाप्ति बताई है। अनेक विद्वानो का विचार है कि मेघदूत का कथानक कालिदास के अपने जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना को प्रतिबिम्बित करता है। परन्तु ऐसे युगप्रवर्तक कवि को काल की सीमा मे बाधा नही जा सकता।

विविधता के दर्शन

प्रत्येक प्रदेश भी उन्हें अपना बताकर गौरवान्वित होना चाहता है जबकि कालिदास की कृतियो मे समूचा भारत राष्ट्र एक हो गया है। इसीलिए कोई इनका जन्मस्थान कश्मीर बताते हैं तो कोई बगाल और उडीसा, कुछ इसे गढवाल की पहाडियो पर ले जाते है और कुछ महाराष्ट्र मे। इन्हें हरियाणा के सारस्वत प्रदेश से सबद्ध बताया गया है वही इनका निवासस्थान मध्यप्रदेश में उज्जयिनी को भी बताया गया है। राजस्थान के विद्वानो ने राजस्थान का बताया है तो गुजरात के विद्वान इन्हे गुजरात निवासी बताने का प्रयत्न करते हैं। वास्तव में कालिदास के काव्य मे वह सब कुछ उपलब्ध हो जाता जो भारत के विभिन्न प्रदेशो मे दिखाई देता है। सभी प्रदेशो की विविधता कालिदास की कृतियों मे एकाकार हो गई है।

ऋतुसहार में भारत की छ ऋतुओ का अनुपम हृदय ग्राही—स्थानो, वनस्पतियो एव पशु-पक्षियो की क्रीडाओ का, तथा युवक-युवतियो पर पडने वाले उनके प्रभाव का—मनोहर चित्रण और कमल, पलाश, केतकी, चमेली आदि सभी पुष्पो के द्वारा कालिदास ने भारतीय उद्यान को सजा दिया है। इसी प्रकार सिंह हाथी, हिरण, हस, मयूर, बगुले आदि पशु-पक्षी सब कालिदास के साहित्य मे अपनी क्रीडाओ से आकृष्ट करते दिखाई देते हैं

कुमारसभव का आरम्भ हिमालय वर्णन से हुआ है जो भारत का प्रहरी, भारत की पवित्र नदियों मे जल प्रवाहित करने वाला व विभिन्न औषधियो-वनस्पतियो का जन्मदाता है। सम्भवतया इसीलिए कालिदास ने हिमालय को देवतात्मा' कहा है और बताया है कि किस प्रकार यह पूर्व से लेकर पश्चिम तक उत्तर दिशा मे फैला हुआ है मानो पूर्व बगाल की खाडी से लेकर अरब सागर तक फैला हुआ पृथ्वी को माप रहा है।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराज ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य,
स्थित' पृथिव्या इवमानदण्ड ॥

अभिज्ञान शाकुन्तलम् की जिस मालिनी नदी के तट पर कण्वऋषि का आश्रम है उसे गढवाल मे बताया जाता है। मालविकाग्निमित्रम् की नायिका मालविका विदर्भ देश की राजकुमारी है। मेघदूत मे यक्ष पत्नी तालियॉं बजा-बजाकर मधुर कगनो की आवाज से जिस मोर को नचाती हैं, वह राजस्थान मे आज भी उसी प्रकार युवतियों का प्रिय है। मेघदूत मे तो कालिदास ने रामगिरि आश्रम से अलका तक का जो मार्ग मेघ को बताया है वह कालिदास ने जानबूझ कर भारत के विभिन्न स्थानो का वर्णन करने के उद्देश्य से चुना प्रतीत होता है। उसमे आम्रकूट पर्वत, विन्ध्यपर्वत के चरणो मे फैली हुई रेवा नदी, दशार्ण देश (इसे मालवा के छत्तीसगढ का पूर्वी भाग बताया जाता है) उसकी नदी, वेत्रवती, विदिशा राजधानी, उज्जयिनी, निर्विन्ध्या नदी, शिप्रा नदी उज्जयिनी का महाकाल मन्दिर, देवगिरी पर्वत, चर्मण्यवती नदी, इसे कुछ लोग चम्बल बताते हैं ब्रह्मावर्त सरस्वती और दृशद्वती नदियो के मध्य हस्तिनापुर के पश्चिम में, कुरुक्षेत्र, सरस्वती नदी, कनखल के पास गगा नदी, हिमालय की कन्दराए, कैलास पर्वत, आदि प्रमुख स्थानो का वर्णन करने का अवसर कालिदास को प्राप्त हुआ है। इसके माध्यम से कालिदास ने भारत की भौगोलिक एकता को बडे सुन्दर ढग से प्रदर्शित किया है।

राजाओं के माध्यम से भारत वर्णन

रघुवश में इन्दुमती के स्वयवर में विभिन्न स्थानों से आए हुए राजाओं के वर्णन में कालिदास ने उनके स्थानो का सक्षिप्त वर्णन करने का अवसर नही खोया। उदाहरणार्थ कलिंग देश के राजा हेमागद का वर्णन करते हुए कहा है कि वह महासमुद्र का स्वामी है। इन्दुमती की सखी सुनन्दा के वर्णन मे स्पष्ट कि वह प्रदेश ताड वृक्ष के वनो से परिपूर्ण है और निकट के ही द्वीप मे लौंग की खेती होती है। इसी प्रकार दक्षिण स्थित उरग देश अथवा पाण्ड्य देश के राजा के वर्णन मे कहा है कि समुद्र तट का वह प्रदेश जलीय लताओ से वेष्टित है, वहा सुपारी के और छोटी इलायची के वृक्ष भरपूर हैं। मलयाचल की वह भूमि चन्दन और तमाल वृक्षों से आच्छादित है।

रघु की दिग्विजय

रघुवश के चतुर्थ सर्ग मे रघु की दिग्विजय के प्रसग मे तो कालिदास ने चारो दिशाओ के राज्यो का और वहा की विशेषताओ का क्रमिक वर्णन किया है। यह सम्पूर्ण भारत वर्ष की परिक्रमा है। रघु अपनी दिग्विजय पूर्व दिशा से प्रारभ करते हुए पूर्वी समुद्र के तट पर पहुचते हैं। बग प्रदेश शालिसम्पन्न है। वहा से रघु उत्कल (उडीसा) देश की ओर प्रस्थान करते हैं जो हाथियो से समृद्ध है। कलिंग देश के राजा की वीरता का सुन्दर वर्णन किया गया है। वहा के नारियल के बाहुल्य का वर्णन यहा प्राप्त होता है। उसके पश्चात् सुपारी के वृक्षो से भरपूर दक्षिण के राज्यो व कावेरी नदी का वर्णन है। वहा मलया-चल के समीप की भूमि मे कालीमिर्चों के वनो में उन पर हारीत पक्षी उडते हैं। सारा प्रदेश इलायची और चन्दन के वृक्षों से सुगन्धित है। दक्षिण के पाण्ड्य राजा अत्यत बलिष्ठ हैं। इसके पश्चात् केरल प्रदेश का वर्णन है। स्त्रियो के बाल घुघराले हैं। मुरला नाम की नदी के किनारे केतकी पुष्पों की शोभा का वर्णन है। नागकेसर के पुष्पों का भी सुन्दर वर्णन है। यह प्रदेश हाथियो से समृद्ध है। इसके पश्चात् पश्चिमी दिशा के अन्य राज्यो का वर्णन आता है। यह प्रदेश अगूरो की लताओ से आच्छादित है। पश्चिम दिशा से रघु उत्तर की ओर प्रस्थान करते हैं और वहां अफगानिस्तान का वर्णन है जो अखरोट के वृक्षों से परिपूर्ण है। वहा घोडे उत्तम कोटि के हैं। हिमालय की गुफाओं में सिंहों की गर्जना का, बांसों के ऊंचे वृक्षों का और हिमालय की शीतल वायु का मनोरम वर्णन है। यहां कस्तूरी मृग हैं, देवदारु है, रात को चमकने वाली ओषधियां हैं। इसके पश्चात् रघु लौहित्य नदी पार करके कामरूप अर्थात् असम या प्राग्ज्योतिष पहुंचते हैं। यह प्रदेश भी गज रत्न और सुवर्ण बहुल है। रघु की दिग्विजय प्रत्येक भारतीय के मन में अदम्य शक्ति, निर्भीकता, विजय और उदारता का आदर्श संचारित करती है।

भारत के राष्ट्र-कवि

इस प्रकार हम देखते हैं कि जहां भी कालिदास को अवसर मिला उन्होने भारत के सब प्रदेशों को एकता के सूत्र मे पिरोया है। रघुवश के तेरहवें सर्ग में भी पुष्पक विमान द्वारा लका से अयोध्या लौटते हुए राम के मुख से सीता को मार्ग के समुद्र, वनो, उपवनो, आश्रमों नदियों, पर्वतो आदि के विषय मे बहुत मार्मिक ढग से बताया गया है। इसी प्रसग मे गगा-यमुना के पवित्र सगम का मनोरम वर्णन है जो भारत की समस्त जनता के लिए महत्वपूर्ण है। कालिदास भारत के राष्ट्रकवि हैं। ये किसी एक प्रदेश के नहीं अपितु समस्त भारत के हैं। इनके वर्णन इनके पात्रो की भावनायें पूर्ण भारतीय, प्राकृतिक एव सास्कृतिक परिवेश से अनुप्राणित हैं। उनके शिव और विष्णु दोनों ही अमूर्त परमसत्ता के दो नाम हैं। शिव परिगत शक्ति और स्वयम्भू हैं तो विष्णु दसों दिशाओं में व्याप्त हैं और उनके आकार और प्रकार का कोई अनुमान नही हो सकता। इनका काव्य भारत के जन-जन को आन्दोलित करता रहा है और करता रहेगा। पता—दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली

गोवध प्रतिबधक आदेशों की अवहेलना

कुछ माह पूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी द्वारा सभी मुख्य मन्त्रियों को गोवध प्रतिबंध सख्ती से लागू करने का आदेश देने के बावजूद [illegible] में [illegible] वधशाला व समय के विरुद्ध एक [illegible] में सार्वजनिक रूप से गोवध [illegible]। [illegible] और [illegible] का [illegible] [illegible] जा रहा है।

ऋषि को विष देने के षड्यन्त्र का सूत्रधार कौन ?

—सोमदेव मेहता "टंकारा वाले"—

महर्षि दयानन्द सरस्वती जोधपुर नरेश महाराजा जसवंत सिंह जी के निमंत्रण को स्वीकार कर जब जोधपुर पहुंचे तब श्री जसवंत सिंह जी का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उन्होंने अपने छोटे भाई कर्नल सर प्रताप सिंह जी को स्वागतार्थ भेजा। महर्षि के कुछ जीवन-चरित्र लेखकों का मत है कि महर्षि के जोधपुर निवास के दौरान उनकी सुरक्षा का भार कर्नल सर प्रताप सिंह पर था।

यद्यपि कर्नल सर प्रताप अल्प शिक्षित ही थे तथापि तीव्र एवं विलक्षण बुद्धि प्रतिभा के धनी थे। महाराज पद पर न होते हुए भी किसी भी महाराजा से अधिक सत्ता का उपभोग करते थे। चापलूसी वृत्ति के होने के कारण शासकों के अत्यन्त प्रियपात्र थे।

ब्रिटिश शासकों की चापलूसी के कारण या अन्य कारणों से सन् १९०४ के लगभग गुजरात प्रदेश में स्थित ईडर रियासत के लावारिस की स्थिति में आ जाने के कारण ब्रिटिश शासकों ने कर्नल सर प्रताप सिंह जी को बख्शीश दी थी। उन दिनों श्री राधाकृष्ण एम० ए० कर्नल सर प्रताप के अत्यन्त निकट के परामर्शदाता थे। वे भी उनके साथ ही ईडर रियासत की राजधानी हिम्मतनगर में आकर बसे थे।

कर्नल प्रताप ने अपने जीवन काल में ही अपनी आत्मकथा लिखनी आरम्भ कर दी थी। समयाभाव के कारण तथा अल्पशिक्षित होने के कारण स्वयं लिखने में असमर्थ थे। अतः अपनी जीवन कथा के कुछ सूत्र प्रतिदिन राधाकृष्ण जी को लिखा देते थे जिसे अगले दिन विस्तार पूर्वक लिखकर वे सर प्रताप को दिखा देते थे।

यह आत्मकथा "महाराजा सर प्रतापसिंह जी का स्वलिखित जीवन चरित्र" नाम से वि० सं० १९९६ (सन् १९३९) में प्रकाशित हुई थी। सम्पादक हैं श्रीमान् राधाकृष्ण एम० ए०, भूतपूर्व दिवान, ईडर स्टेट। पुस्तक के मुद्रक थे लाला खुशहाल चन्द जी "खुर्सन्द," वीर मिलाप प्रेस, मोरीगेट, लाहौर (बाद में महात्मा आनन्दस्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए।)

इस मुद्रित हिन्दी आत्मकथा को ध्यानपूर्वक पढ़ने के पश्चात् आश्चर्य युक्त [illegible] का अनुभव हुआ। क्योंकि सर प्रतापसिंह जी का जीवनचरित्र [illegible] महर्षि के एवं आर्य समाज के अत्यन्त निकट थे, इसमें शंका को स्थान नहीं है। उनके महर्षि के साथ पत्र-व्यवहार में से कुछ पत्र "महर्षि दयानन्द के पत्र एवं विज्ञापन" नामक पुस्तक में देखने को मिलते हैं।

ऐसा राजपुरुष अपने स्वलिखित जीवन चरित्र में महर्षि एवं आर्य समाज के साथ के सम्बन्धों की चर्चा गौरवपूर्वक करे, यह स्वाभाविक है। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। उक्त पुस्तक के स्वलिखित जीवनचरित्र प्रकरण में कब प्रथम बार ऋषि दयानन्द के विषय में सुना, कब प्रथम दर्शन किये या ऋषि के उपदेशों का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, उसकी कुछ भी चर्चा नहीं है। न ही आर्य समाजों या आर्य संस्थाओं के साथ के सम्बन्धों की चर्चा है। इतना ही नहीं, सबसे बड़ी आश्चर्यजनक बात तो यह है कि दयानन्द या आर्यसमाज का नाम तक कहीं नहीं लिखा है।

हां, सम्पादक श्री राधाकृष्ण ने अपनी तरफ से पुस्तक के अन्तिम चरण 'परिशिष्ट' में "महाराज सर प्रतापसिंह जी की बातें" लेख में लिखा है कि, "शरीर की बाबत (सर प्रताप) कहा करते थे कि मनुष्य का शरीर चार खम्भों पर स्थिर है। पहला ब्रह्मचर्य, दूसरा नींद तीसरा व्यायाम और चौथा भोजन

"यह बात उन्हें स्वामी दयानन्द ने समझायी थी।" (पृष्ठ १७६)

"दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज लाहौर की आधारशिला रखने के लिये सन् १९०५ में लाहौर पधारे। रविवार आया तो साप्ताहिक सत्संग में शामिल होने का विचार प्रकट किया। कालेज वालों ने बहुत बढ़िया आराम कुर्सी उनके लिये एक कोने में रख दी। जब आप पधारे तो सब के कहने पर भी कुर्सी पर नहीं बैठे, बल्कि सर्वसाधारण के साथ दरी पर बैठ गये। आपने यह भी कहा कि परमात्मा के दरबार में हम सब समान हैं। आर्य समाजी हो, और फिर ऐसी बातें करें यह ठीक नहीं। यह सुनकर, सब चुप हो गये।" (पृष्ठ १७९)

इसी प्रकार पृष्ठ १७९ पर चर्चा है कि महात्मा हंसराज को अपनी ईडर रियासत में आमंत्रित कर उन्होंने स्वयं पानी से महात्मा जी के हाथ धुलाये थे।

उपरोक्त बातों से सिद्ध होता है कि सर प्रताप के ऋषि दयानन्द एवं आर्य संस्थाओं के साथ घनिष्ठ संबंध थे। श्री राधाकृष्ण ने इतनी ही चर्चा की है।

हस्तलिखित प्रति का लेखन कार्य सन् १९०४ में समाप्त हुआ था। उसके ३१२ से ३१३ पृष्ठों पर ऋषिवर को जोधपुर में किस प्रकार एवं किसके द्वारा विष दिया गया था, उसकी चर्चा है। परन्तु यह प्रति संभवतः वर्तमान में किसी भी विद्वान ने स्वयं नहीं देखी है। यह हस्तलिखित प्रति अवश्य ही कहीं न कहीं सुरक्षित होगी इसको खोजकर सत्य की परीक्षा की जानी चाहिये।

जो भी हो, प्रश्न यह है कि ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज या आर्य संस्थाओं की चर्चा सर प्रताप ने अधिक क्यों नहीं की ?

सभी पहलुओं पर विचार करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि, मूल प्रति में ऋषि को विष देने के विषय में ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों या तत्कालीन शासकों की चर्चा रही होगी जिनके कुकर्मों पर प्रकाश पड़ने से सारा संसार उन पर थूकता। विषदाताओं में नन्हीं भगतन एवं पाचक का नाम प्रसिद्ध है, परंतु यह बात ध्यान देने योग्य है कि एक राज्य के विशेष आमंत्रित अतिथि को, जिसे राज्य के सत्ताधीशों का संरक्षण प्राप्त हो, इतनी सरलता से विष देना संभव नहीं था।

सम्पादक के कथनानुसार मूल हस्तलिखित प्रति का लेखन कार्य सन् १९०४ में संपूर्ण हो गया था और वह उर्दू में लिखी गई थी। सम्पादक वर्तमान उपलब्ध पुस्तक के प्रारम्भ में 'अपनी बात' शीर्षक से लिखते हैं "सन् १९०५ में उर्दू से हिन्दी तथा अंगरेजी में अनुवाद करवाया गया। उस वर्ष के अन्त में हिज हाईनेस प्रिंस ऑफ वेल्स (स्व० सम्राट् पंचम जार्ज) भारत पधारे। सर वाल्टर लारेंस (जो सर प्रतात के मुंह बोले भाई थे) स्टाफ चीफ के नियुक्त हुए और प्रिंस ऑफ वेल्स के लौट जाने पर जीवन चरित्र के मसौदे को सर वाल्टर लारेंस के पास संशोधन के लिये भेजा गया। यह मसौदा उनके पास कई बरस तक पड़ा रहा। सन् १९११ में सर प्रताप सिंह को सम्राट के राजतिलकोत्सव में शामिल होने के लिये विलायत से निमंत्रण आया, और वहां से लौटने के बाद शीघ्र ही जोधपुर का रीजेंट बनने के लिये बुलाया गया। क्योंकि उन दिनों महाराजा सुमेर सिंह जी अभी नाबालिग थे, इसलिये उन्होंने रीजेंसी के काल की समाप्ति तक आत्मकथा को प्रकाशित करने का विचार स्थगित कर दिया क्योंकि वह चाहते थे कि आत्मकथा में पूर्ण विवरण होना चाहिए।"

"सन् १९०६ में अंगरेजी का मसौदा सर प्रताप सिंह जी के पूर्व प्राईवेट सेक्रेटरी तथा बाद में जोधपुर स्टेट कौंसिल के सेक्रेटरी बाबू उमराव सिंह के पास छोड़ आया था। उसकी सहायता से मि० वानवार्ट ने १९२६ में सर प्रताप सिंह जी का जीवन चरित्र अंगरेजी में लिखा, जिसे जोधपुर दरबार ने छपवाया" (पृष्ठ ख)

"सर प्रताप सिंह जी के पौत्र हिज हाईनेस महाराजाधिराज कर्नल सर उम्मेद सिंह जी साहब बहादुर की अनुमति से मैं यह पुस्तक प्रकाशित कर रहा हूं।"

उपरोक्त प्रसंगों को ध्यान में रखते हुये निम्न प्रश्न उपस्थित होते हैं:—

१ कर्नल सर प्रतापसिंह जी ने वास्तव में अपनी आत्मकथा में ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज एवं विषदान के विषय में कुछ लिखा था या नहीं ?

२ यदि नहीं लिखा तो क्यों ?

३ यदि कुछ लिखा था तो वह हिन्दी संस्करण में क्यों नहीं है ?

४ क्या यह संभव नहीं कि उन्होंने तो चर्चा की हो, परंतु जीवन चरित्र के मसौदे के संशोधक सर वाल्टर लारेंस एवं अंग्रेजी लेखक मि० वानवार्ट ने सारी चर्चाओं को निकाल दिया हो ?

५ क्या यह सम्भव नहीं कि हिन्दी संस्करण के सम्पादक श्री राधाकृष्ण ने अपने संरक्षक एवं पुस्तक के प्रकाशक ईडर स्टेट के हिज हाईनेस महाराजाधिराज श्री हिम्मत सिंह जी के इशारे पर या अन्य कारणों से सारी चर्चा निकाल दी हो ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिये आवश्यकता है —

१ कर्नल सर प्रताप सिंह की आत्मकथा की मूल हस्तलिखित प्रति, जो उर्दू में लिखी गई थी, को प्राप्त किया जाए।

२ मि० वानवार्ट द्वारा लिखित अंग्रेजी जीवन चरित्र की प्रति जो कि

(शेष पृष्ठ ९ पर)

एक एम० बी० बी० एस० [illegible]

जो जनता की सेवा के लिए संन्यासी बना

पं० रामदत्त पाण्डेय साहित्यरत्न, प्रधान—आर्य समाज ताड़ीखेत

चढ़ते कार्तिक की चतुर्थी 'करवाचौथ' के नाम से जानी जाती है, जब सुहागिन महिलायें अपने पति की दीर्घायु व स्वास्थ्य हेतु बढ़ते हुये चन्द्रमा को अर्घ्य देकर व्रत रखती हैं। डॉ० ज्ञानप्रकाश शास्त्री 'कच्चाहारी' का जन्म करवाचौथ 1992 विक्रमी (मंगलवार, 15 अक्टूबर, 1935 ई०) को शिवमनी-लालमणि ब्राह्मण दम्पति के घर प्रयाग में हुआ था। पं० लालमणि ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की "जन्म शताब्दी मथुरा—1925 ई०" में हर्षोल्लास से भाग लिया था। डा० कच्चाहारी ने पौष पूर्णिमा, 2039 विक्रमी (30 दिसम्बर, 1982) को ओ३मानन्द योग आश्रम" (मनधारा, नर्मदातट-बड़केश्वर, खण्डवा, मध्य प्रदेश) में परमहंस योगी स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती से 'योगसाधना शिविर' में नैष्ठिक-ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली तथा 48 वर्षीय 'आदित्य ब्रह्मचर्य' पूर्ण करने के बाद मकरसंक्रान्ति' 2041 विक्रमी (1984 ई०) को संन्यास-दीक्षा लेकर "स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती" नाम ग्रहण किया।

गुरुकुल में प्रवेश नहीं : गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं

आठ वर्ष की आयु में उपनयन (यज्ञोपवीत) व वेदारम्भ संस्कार के बाद ब्रह्मचारी ज्ञानप्रकाश की नित्य स्नान-ध्यान की प्रवृत्ति बनी। कक्षा-सात उत्तीर्ण साढ़े-दस वर्षीय बालक ज्ञानप्रकाश को पिता ने गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेशार्थ पत्र व्यवहार किया। उत्तर नकारात्मक आया; क्योंकि 9 वर्ष तक के ही बालक गुरुकुल में प्रविष्ट किये जाते थे। बालक के 57 पत्रों का उत्तर भी 7 पत्रों में नकारात्मक रहा। कक्षा-आठ उत्तीर्ण करने के बाद कक्षा-नौ की अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक बालक बार-बार गुरुकुल के लिये भागा। गुरुकुल पहुंचकर गुरु-चरणों में नतमस्तक होकर कक्षा-6 में प्रवेश की स्वीकृति प्राप्त कर ली! गुरु की आज्ञानुसार बालक हर्ष में गेंद की भाँति उछलता हुआ घर पहुंचा गुरुकुल-प्रवेश की कथा सुनाई! कथा, व्यथा बन गई!! पिता ने कक्षा-9 में ही पढ़ने पर बल दिया; बालक का मन उदास रहने लगा; और मन में संकल्प किया, "यदि गुरुकुल में प्रवेश नहीं हुआ, तो गृहस्थाश्रम में भी प्रवेश नहीं करूंगा?' और यह संकल्प आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रेरणा बन गया!

शिक्षा और राजकीय सेवा

हाईस्कूल की परीक्षा गणित व चित्र-कला में विशेषयोग्यता सहित उत्तीर्ण कर इन्टर-साइंस में प्रवेश लिया। प्रयाग विश्वविद्यालय से 1954 ई० में बी०एस०सी० करने के बाद एक हाई स्कूल में अध्यापन कार्य के साथ आयुर्वेद, संस्कृत, प्राकृतिक चिकित्सा, होम्योपैथी आदि में योग्यता प्राप्त की।

1965 ई० में कानपुर मेडिकल कालेज में एम० बी० बी० एस० (अंतिम वर्ष की मेडिसिन-परीक्षा) में बाह्यपरीक्षक ने एक प्रश्न पूछा था—"What is the Secret of Your good health?" (आपके सुन्दर स्वास्थ्य का रहस्य क्या है?) छात्र डा० ज्ञानप्रकाश का विनम्र उत्तर था—"शाकाहार, नियमित व्यायाम और ब्रह्मचर्य!"

चिकित्सालय में सीमाबद्ध अनुभव प्राप्त कर 17 अगस्त, 1966 को 'प्रादेशिक स्वास्थ्य सेवायें—उत्तरप्रदेश' में योगदान किया। कानपुर व ललितपुर में सेवा करने के बाद 9 सितम्बर 1974 से ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) में सेवा आरम्भ की। तब से वहीं कार्यरत हैं।

कच्चाहार कैसे शुरू हुआ?

डा० कच्चाहारी ने अपनी पुस्तक (कच्चाहार-प्रकाश) में 'कच्चाहार' का शुभारम्भ इस प्रकार लिखा है:—"1962 ई० में कई मासों से मैं फलाहार ले रहा था इसी बीच 'हिन्दुस्तान साप्ताहिक' में बिना अग्नि पर पकाये आहार' लेनेवाले स्वामी केशवानन्द योगी का जीवनचरित् पढ़ा। सूर्यपक्व शाकाहार 'कच्चाहार' तथा अग्निपक्व शाकाहार 'पक्काहार' कहलाता है।

'करवाचौथ' 2019 वि० (1962 ई०) को अपने 27वें जन्मदिवस पर एक वर्ष तक कच्चाहारी रहने का व्रत लिया। एक वर्ष बीत गया। पञ्चवर्षीय व्रत भी पूरा हुआ। फिर इसी प्रकार जब ग्यारह वर्ष भी बीत गये, तो निम्नांकित चार संकल्पों में से कोई-तीन पूर्ण होने अथवा पच्चीस वर्ष तक कच्चाहारी रहने का व्रत लिया:—(1) सम्पूर्ण भारत में मद्यनिषेध (2) गोहत्याबन्दी (3) निःशुल्क शिक्षण व्यवस्था एवं (4) स्वयं द्वारा कम से कम एक गुरुकुल की स्थापना।

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के पोषक

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी) के 'स्वराज्य से सुराज्य की ओर' विषयक लेख के अनुसार—"ब्रह्मचर्याश्रम का सम्बन्ध शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक आधार को पक्का कर व्यक्ति को स्वावलम्बी और चरित्रवान बनाने से है। गुरु के कुल (गुरुकुल) में शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही युवक व युवतियां जन-जीवन या राजजीवन में प्रवेश करें। सरकार ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी का सम्पूर्ण व्यय वहन करे तथा समान सुविधा देकर प्रत्येक को योग्यता के आधार पर आगे बढ़ने का अवसर दे। इस प्रकार जन्मगत वर्ण का उन्मूलन होगा, और गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित, वर्ण-व्यवस्था की स्थापना होगी।"

प्राथमिक शिक्षा के बाद बालकों व बालिकाओं को अपने-अपने गुरुकुल में भेज दिया जाना चाहिये। स्वामी जी द्वारा "गुरुकुल ब्रह्मावर्त गंगातट (कानपुर)" की स्थापना 1984 ई० में की जा रही है, जिसे लोक सेवा आयोग द्वारा मान्य "गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार" से सम्बद्ध किया जायेगा। उक्त गुरुकुल के [illegible] की व्यवस्था [illegible]

जीवन सुधारक आर्यसमाज

आर्यसमाज के माध्यम से सनातन वैदिक धर्म (मानवधर्म) के प्रचार-प्रसार में स्वामी गुरुकुलानन्द जी की विशेष रुचि है। ललितपुर जनपद में पांच आर्यसमाजों की स्थापना की। आर्यसमाज ताड़ीखेत (अल्मोड़ा) की स्थापना की। उत्तराखण्ड में आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप का परिचय कराया। स्वामी जी के शब्दों में—"सज्जन-सदाचारी-शिष्ट व्यक्ति को 'आर्य' कहते हैं: दुर्जन—दुराचारी-दुष्ट व्यक्ति को 'अनार्य' (दस्यु, दुष्ट, डाकू) कहते हैं। वास्तव में भ्रष्ट आहार-आचार-व्यवहार वाले व्यक्तियों को तब-तक अछूत माना जाना चाहिये, जब तक उनके गुण-कर्म-स्वभाव में सुधार न आ जाय। चारों वर्ण गुण-कर्म-स्वभाव से होते हैं। मुख्यरूप से अज्ञान दूर करने वाला—ब्राह्मण, अन्याय दूर करने वाला—क्षत्रिय, अभाव दूर करनेवाला—वैश्य और शरीर से सेवा करने वाला शूद्र है। आर्यसमाज कोई मत-सम्प्रदाय नहीं, वरन् सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाली समाज सुधारक एक संस्था है, जिसकी स्थापना सर्वप्रथम बम्बई में 1875 ई० में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई थी। उत्तराखण्ड के सदाचारी, सात्विक वृत्ति के शिल्पकारों को 1945 ई० में महात्मा नारायण स्वामी ने सरकारी कागजात में 'आर्य' घोषित कराया था।

शव दान

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी) एक सौ से अधिक वानप्रस्थ व संन्यासी बनाते हुये गुरुकुलशिक्षा, चिकित्सा सेवा, योगसाधना, मद्यनिषेध आदि हेतु समस्त जीवन अर्पित करेंगे। उन्होंने अपना शव किसी मेडिकल कालेज को एवं आंखें नेत्र बैंक को दान हेतु स्वीकार पत्र लिखा दिया है। मानव-जीवन परोपकार के लिये है—यह उनका जीवन दर्शन है।

पता—आर्यसमाज ताड़ीखेत
(अल्मोड़ा) उत्तर प्रदेश

पुनर्जन्म

अनुपमा

आज की कहानियां
अब कल बनी जायेंगी
वही इतिहास बन जायेंगी।
कल के [illegible] आगर
आज [illegible] पड़ जायेंगे
कल फिर [illegible]
इतिहास में [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

करो अधर्म की बुराई?
आज के इतिहासकारो!
[illegible] मारो,
[illegible] दुर्दशाओं को
[illegible] इतिहास कहकर उभारो।
न्याय अन्याय का फर्क बताओ
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
आज के इतिहासकारो!
[illegible]

पता—[illegible]

किशोर कुंज

मोना का सपना —राजेन्द्र मंजुल—

दादी मां की कहानी सुनते-सुनते ही नींद लेती पड़ी। उन्हीं मोना को नींद आ गई थी। उसकी प्यारी, तोतली बातें अब विश्राम कर रही थीं। कमरा खामोश था और आंखों की दोनों पलकें पूरी तरह बन्द थीं।

नींद में मोना ने महसूस किया, जैसे वह दूर आकाश की ओर उड़ी जा रही है। उसकी छोटी फ्राक हवा में लहरा उठी है, ठीक उस परी की तरह जिसके बारे में थोड़ी देर पहले दादी मां ने कहानी में जिक्र किया था। बड़ा अच्छा और भला-सा लग रहा था उसे।

"बड़ी जल्दी में हो गुड़िया, कहां चल दी अकेले-अकेले ?"

मोना को लगा जैसे उससे ही कोई पूछ रहा हो। भारी विस्मय से, मोना ने अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाई लेकिन उसे कोई भी नजर न आया।

"कौन हो तुम। कहीं परी तो नहीं—पूछा मोना ने। मोना को लगा—जैसे कोई हंस पड़ा है और वह हसता ही जा रहा है।

बड़ा अचंभा सा लगा मोना को, बोली, 'इसमे हसने की कौन सी बात है। तुम आखिर हस क्यों रही हो ? बताओ न, कौन हो तुम ? दूसरी तरफ से आवाज आई 'मोना बेटी तुम अनजाने में बहुत बड़ी गलत फहमी का शिकार हो गयी हो और यह सब हुआ है तुम्हारी दादी मा के कारण हालाकि उनका भी इसमें कोई दोष नहीं। परियों और भूत-प्रेत की कहानिया तुम्हारी दादी ने भी अपनी दादी मा से सुनी होंगी और इस तरह ऐसी कहानियो का यह सिलसिला बहुत पुराना है। इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं, लेकिन अब समय बदल गया है। हमने बहुत प्रगति कर ली है। और तरक्की की दिशा मे हम काफी आगे बढ़ गये हैं। तमाम भ्रम-पूर्ण बातों पर से परदा उठ चला है। इसलिये अब यह बहुत जरूरी हो गया है कि मन और मस्तिष्क पर ऐसी ऊल-जुलूल बहुत सी बातों की छाया तक न पड़े। इस तरह की बातो से तुम बच्चों में भ्रम पैदा होता है। और मन विकृत होकर मस्तिष्क का विकास रुक जाता है। इसीलिये मेरी प्यारी गुड़िया, परियों की तुम्हारी कल्पना भ्रमपूर्ण है और निरी बक-वास है।"

मोना बीच में ही बोल पड़ी—"लेकिन, हमने तो रंग-बिरंगी अच्छी सी कहानियों की किताब पढ़ी थी, उसमें भी तो परियों वाली बात थी।" हां गुड़िया तुम्हारा कहना सही है। कुछ पुराने विचारों के लोग अब भी इस तरह की कहानियां कहते और लिखते हैं जैसी कि तम्हारी दादी कहती है, या फिर तुमने उस किताब में पढ़ा। तुम्हारा सोचना सही है, लेकिन यह सब झूठी और गलत बातें हैं। तुम होशियार हो और सम-झदार भी। तुम्हें ऐसी बातों पर तनिक भी विश्वास नहीं करना चाहिए। अच्छा तो यह है कि परियों या भूत प्रेत वाली कहानियां न तो तुम पढ़ो और न ही सुनो।

मोना को गहरे सोच में डूबा हुआ देखकर वही आवाज पुन: बोली किस सोच मे डूब गयीं तुम। हां, तुम कहीं जा रही थी। अच्छा आज मेरे साथ चलो, थोड़ा सैर करा लाए।

सुगन्ध बिखर रही है इनमे से आवाज हंस पड़ी, बिल्कुल पहली वाली हसी के समान, बोली, 'मोना बेटी तुम बच्चे मानव-बगिया के सुन्दर फूल ही तो हो, बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि तुम लोग फूलों से भी बेहतर हो। फूलो में नाना रग होता है, खुशबू भी हो सकती है लेकिन तुम्हारे समान न तो ये बातें कर सकते हैं, और न चल-फिर ही सकते हैं, इनकी मुस्कुराहट की हम केवल कल्पना भर कर सकते हैं। थोड़े समय बाद ही ये मुरझा जाते हैं जबकि तुम लोग तो हर समय तरो-ताजा-सा दिखाई देती हो। तुम्हारी खिलखिलाहट मे जो गूंज और मधु-

मोना नींद में मुस्करा पडी—ओह कितने सारे फूल हैं। लाल, सफेद, नीले, पीले, गुलाबी और आसमानी। यहा तो पूरी बारात-सी है। कहा से आ गए, इतने ढेर सारे फूल, बताओ न, कौन बनाता है इन्हें ? और बड़ी अजीब बात है, रंग भी, अपने आप इनमें भर जाते हैं। खुशी से झूमती हुई मोना बोली।

आवाज ने पूछा 'मोना रानी, तुम परी बनना चाहती थी न ?'

मोना झट से बोल पड़ी 'नहीं नहीं। अब तो मैं फूल बनना चाहती हूं। देखो न, ये कितने सुन्दर हैं। ऐसा लग रहा है जैसे सब के सब मुस्करा रहे हैं। कितनी प्यारी-प्यारी-सी

रता है, भला इन मूक फूलो मे कहा? तब आखिर तुम फूल क्यो बनना पसद करोगी ? रही बात इनके यहा आने की और रग भाने की तो मोना रानी तुम अभी बहुत छोटी हो। जब तुम बड़ी होगी और विज्ञान से तुम्हारा गहरा परिचय होगा तब यह सब बातें अपने आप तुम जान समझ लोगी।'

फिर थोड़ा रुककर आवाज पुन: बोली, चीजो को देखकर, उनके बारे में अधिकाधिक जानने की तुम्हारी आदत मुझे बहुत अच्छी लगी। इसी का नाम जिज्ञासा है। मैं चाहूंगी कि तुम अपने इस गुण का खूब विकास करो, आगे चलकर इससे तुम्हें बड़ी सहायता मिलेगी।'

'अच्छा बेटी अब बहुत रात हो चली मैं तुम्हें तुम्हारे पापा के पास छोड आती हू।

आवाज के अचानक इस तरह बन्द हो जाने से मोना की आख खुल गई। देखा वह अपने बिस्तर पर है। न तो फूलो की कही बगिया है और न आवाज।

मोना को बडा आश्चय हुआ। अभी-अभी कौन उससे बात कर रहा था। बगल मे लेटे अपने पापा से मोना ने पूछा—पापा मैं कहा हू ? मोना के पापा ने अपनी प्यारी बिटिया को अपने सीने से लगा लिया। बोले, यही तो हो बेटी मेरे पास। क्या सपना देख रही थी ?

नन्हीं मोना की पलकें अपने आप बन्द हो गयी।

सिद्धपुर मेले में वैरागी से भेंट

कार्तिक मे सिद्धपुर (गुजरात) मे एक जबर्दस्त मेला लगता है। ब्र० शुद्ध चैतन्य ने सोचा—शायद वहीं किसी सिद्ध महात्मा के दर्शन हो जाए। शुद्ध चैतन्य सिद्धपुर मेले की ओर चल दिये। वहा एक वैरागी से भेंट हुई जो टकारा के पास ही किसी ग्राम का निवासी था और शुद्ध चैतन्य तथा उनके परिवार से अच्छी तरह परिचित था। दोनो ही एक-दूसरे को देखकर विस्मित हुए। चिरकाल के पश्चात् सुपरिचित स्नेही व्यक्ति को देखकर दोनों ही भाव विभोर हो गये। उस वैरागी ने शुद्ध चैतन्य के गृहत्याग का और ब्रह्मचर्य-वेष धारण का कारण पूछा। शुद्ध चैतन्य ने निष्कपट भाव से सारी कथा कह सुनायी।

वैरागी ने शुद्ध चैतन्य के गृहत्याग की और काषाय वस्त्र धारण की आलोचना की। फिर पूछा—क्या अब तुम घर नहीं जाओगे ?'

'नहीं, मैंने सदा के लिए घर छोड दिया है। अब मैं सिद्ध साधु-महात्माओं की खोज मे हू, जिनसे कुछ ज्ञान प्राप्त करूगा। यह कहकर शुद्ध चैतन्य उस वैरागी से अलग हो गए।

उस वैरागी ने, जो अच्छी तरह जानता था कि जवान बेटे के घर से निकल जाने से माता-पिता कितने परेशान होते हैं, एक पत्र द्वारा सारी कथा कर्षन जी को लिख दी और यह भी लिख दिया कि इस समय मूल जी ब्रह्मचारी के वेष मे सिद्धपुर के मेले में गये हैं।

—घनश्याम आर्य निडर'

उल्टी सीख के चुटकुले

कक्षा मे शिक्षक ने दो बोतल अपनी टेबल पर रखी। एक में शराब और दूसरी में पानी भरा हुआ था। शिक्षक ने उन दोनो बोतलों मे कुछ जीवित जन्तुओ को डाला। जिस बोतल में शराब थी उसके जन्तु मर गये तथा पानी वाली बोतल के जन्तु तैरते रहे। तब शिक्षक ने कहा कि छात्रों इससे आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

एक छात्र ने कहा सर हमे निश्चित रूप से शराब पीना चाहिए क्योकि हमारे पेट मे जितने भी कीडे होंगे वह सभी खत्म हो जावेंगे।

एक बस पर बाहर की तरफ लिखा था कि बीड़ी नं० २७ पीजिये। एक व्यक्ति बस में बीड़ी पी रहा था। चूंकि बस मे लिखा था कि धूम्रपान वर्जित है तथा कण्डक्टर ने उसे बीड़ी पीने से रोका। तब उसने कहा कि मैं बीड़ी नं० २७ पी रहा हू क्योकि बस के बाहर लिखा है बीड़ी नं० २७ पीजिए।

एक महाशयजी बिना टिकिट बस मे खड़े होकर यात्रा कर रहे थे। कण्डक्टर की दृष्टि मे भी एक बिना टिकिट सवारी थी। अत: वह चिल्ला रहा था कि बिना टिकिट कौन बैठा है किंतु वह महाशय चुप ही खड़खड़े सुनते रहे। जब कण्डक्टर ने टिकिट चैक करना शुरू किया तब जिन महाशय के पास टिकिट नही था कण्डक्टर उन पर काफी गम हुआ। तब महाशय जी कहते हैं आप आवाज लगा रहे थे कि बिना टिकिट कौन बैठा है। मैं तो खड़ा होकर यात्रा कर रहा हू।

—महेन्द्र कुमार जैन

पत्रों के दर्पण में

आर्यों का राजनीतिक मंच आवश्यक

श्री भाटिया जी के विचारों से पूर्णत सहमत हू कि आर्यों का राजनैतिक मच होना चाहिए। जिस समाज का राजनीति में बोलबाला नहीं होता वे एक दिन जरूर मिटते हैं। कुछ माह पूर्व जम्मू कश्मीर में समाज सम्पत्तियो का जो विध्वस हुआ वह अपने-आप मे प्रमाण है कि किस प्रकार हमारा समाज इन राजनीतिज्ञों से पिट रहा है। अगर हमारा अपना राजनीतिक मंच होता तो ऐसी नौबत नहीं आती। हम भी ईट का जवाब पत्थर से देते !

दो वर्ष पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक राजार्य सभा की घोषणा की थी। जिसमें देश भर के करीब दो सौ प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। कलकत्ता से मैं भी गया था। निष्कर्ष यह था कि राजार्य सभा अपना कोई उम्मीदवार चुनाव मे न खड़ा करके उन लोगों को वोट देने की अपील करती है जो हिन्दू के हितो का समर्थन करता हो। आखिर हुआ नहीं। आर्यसमाज किसी भी रूप मे अपनी विशिष्टता को न प्राप्त कर सका। निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि इन सब बातो से काम नही चलने का। क्योंकि ये नेता अपनी-अपनी पार्टी में जाने के बाद अपनी पार्टी के घोषणापत्र के अनुसार ही चलेंगे। चुनाव के समय वे आपके वोट प्राप्त करने के लिए आपकी बातो का समर्थन कर देंगे पर इससे आगे कुछ होना नहीं।

मेरी समझ में जब तक अपना कोई अलग राजनीतिक मच नहीं होता तब तक उस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए हमे हिन्दू मच जो भारतीय जनसंघ, शिवसेना, रामराज्य पक्ष आदि का जो सयुक्त साझा राजनीतिक मच हैं, उसको वोट एव समर्थन देकर आगामी लोकसभा के चुनाव में अधिक से अधिक प्रतिनिधियो को भेजकर इस ससद में हिन्दू हितों पर बोलने वाले के अभाव की पूर्ति करना चाहिये।

आर्यों का हित हिन्दुओं से जुडा है। जहां हिन्दू खत्म हो गये, वहाँ आर्यसमाज नहीं है। मंदिर या तो तोड दिये गये अथवा मस्जिद बना ली गई है। आर्य समाज हिन्दू जाति का हरावल दस्ता रहा है। आज भी इस बात की आवश्यकता है कि आर्यसमाजी, चाहे वो भारत का हो या विदेशी, अपने इस उत्तरदायित्व की बागडोर सभाल कर देश जाति पर आए हुए संकट का डटकर मुकाबला करें। —सत्यनारायण आर्य १५६, रवीन्द्र सरणी कलकत्ता ६

हिन्दुओ ! अब तो चेतो

प्रसन्नता हुई कि श्री बलराज मधोक को हिन्दुस्तान हिन्दू मच का प्रधान बनाया गया है। लोगों मे यह विचार घर कर गया है कि हिन्दुओं के वोट केवल हिन्दुओ के प्रतिनिधियो को ही जाने चाहियें। जब तक आर्यसमाज हिन्दू मच की पीठ पर नही होता, और यह नारा नही लगता कि हिन्दू का वोट हिन्दू के लिये, तब तक कोई लाभ नही। अत, जब हिन्दू मच आर्य समाजो की सहमति से बन ही गया है तो अब मौका है कि आर्यसमाजी इसके लिये कुछ कर। क्योकि यही मौका है।—जयदेव गोयल, पत्रकार जीन्द।

राष्ट्र-धर्म-संस्कृति रक्षा

'आर्यों का राजनीतिक मच आवश्यक' शीर्षक से छपा लेख वास्तव मे सामयिक आवश्यकता को प्रतिबिम्बित करता है। यह ध्रुव सत्य है कि कर्मठ, विद्यावदात्, चरित्रसम्पन्न देशभक्त और धर्मात्मा आर्यों के राजनीति से असपृक्त रहने के कारण पराधीन भारत स्वाधीन होते ही तीन भागो मे खण्डित हो गया, और स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३७ वर्ष बाद भी भारत के महान् और महनीय प्राचीन गौरव को चरितार्थ करने की बात तो दूर, अपितु नानाविध आर्थिक-औद्योगिक व तथाकथित विकास-कार्यों के बावजूद अन्त और बाह्य विघातको से देश व धर्म की रक्षा, जैसी की जानी थी, वैसी नही कर पा रहा।

विधिवत् धर्मार्य-सभा और राजार्य-सभा (वर्तमान भाषा में राजनीतिक दल) घटित किये बिना श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे वर्णित राजधर्म को चरितार्थ नहीं किया जा सकता। अत या तो समूचा आर्यसमाज इस विषय मे पहल कर आगे आवे अथवा हिन्दुस्तान हिन्दू मच', जिसके १२ निर्देश वस्तुत: सामयिक और उपयोगी हैं, को ही अपना पूर्ण समर्थन देकर राष्ट्र की, सत्य सनातन वैदिक धर्म की और भारत की गुण-गौरवमयी संस्कृति की रक्षा करें।

—डॉ० जयदत्त शास्त्री मंत्री, आर्य समाज, अल्मोड़ा (उ०प्र०)

मंच को समर्थन

"हिन्दुस्तान हिन्दू मंच" एक नये राजनीतिक दल के उदय की जानकारी से प्रसन्नता हुई। हिन्दू हितों की बाहर व संसद में आवाज उठाने वाले दल की जो कमी अब तक महसूस होती थी उसकी पूर्ति करने वाले इस नये दल को सभी हिन्दू सगठनों व जनों को समर्थन देना चाहिये।

—[illegible] प्रसाद आर्य, मन्त्री आर्य समाज, [illegible], जिला गोड्डा (बिहार)

महर्षि को विष देने के सम्बन्ध में तथ्य

अपने शाहपुरा (भीलवाड़ा) प्रवास में "दयानन्द दिग्विजय" में मुझे महर्षि के प्राणलेवा सिद्ध होने वाले जोधपुर में [illegible] व नन्ही [illegible] के षड्यन्त्र से घोडू मिश्र द्वारा सोते समय, महर्षि को विषाक्त दूध देने का उल्लेख (अनुमान है कि घोडू मिश्र से जगन्नाथ नाम स्वयं महर्षि ने [illegible] किया है) पढ़ने को मिला। इस सिलसिले में, पूर्व [illegible] रियासतों में, भूतपूर्व रियासतो के राजामहाराजाओं के दैनिक कार्यक्रमों का विवरण रखने वाले रोजनामचे, जो अभी भी बीकानेर अभिलेखागार में सुरक्षित हैं, पर उस तिथि के रोजनामचे में ऐसा कोई उल्लेख वहा नहीं मिला। खेद है कि हम महर्षि की निर्वाण शताब्दी मनाकर भी उनके निर्वाण से संबंधित सही तथ्य तक नही पहुच पाये। वैसे, इस समय डा० भवानी लाल भारतीय, श्री राजेन्द्र जिज्ञासु और श्री [illegible] सिंह का जो त्रिकोणात्मक मन्थन चल रहा है, उससे कोई निष्कर्ष निकल सका तो बड़ी उपलब्धि कही जायेगी।—[illegible], बी-४६, गणेश मार्ग, बापू नगर जयपुर।

आर्य जगत् : प्रेरणा का अमूल्य स्रोत

"आर्य जगत" (23सितम्बर) का ऐतिहासिक सम्पादकीयम् पढ़कर मुझे विश्वास है कि हर आँखों के सामने अपना गौरवमण्डित प्राचीन इतिहास अवश्य साकार हो उठा होगा। इसी इतिहास के साथ [illegible] की दयानन्द निर्वाण शताब्दी में साधारण जन को बहुसख्या में पधारने की प्रेरणा देकर आपकी लेखनी ने मणि-कांचन संयोग सा सृजित कर दिया है जिसके लिये हम आपके अत्यंत आभारी हैं पर आपके अद्भुत मस्तिष्क की सहज सजगता की दृष्टि से लगता है कि पंजाब हरियाणा व उत्तर प्रदेश वासियों के साथ ही देहली, राजस्थान, हिमाचल तथा जम्मू काश्मीर की जनता को भी आमन्त्रण न देना सम्भवत मुद्रण की भूल रही है। हमारी प्रभु से कामना है कि आपकी प्रतिभा को सतत समाज कार्यों मे अग्रगामी बनाये रखें ताकि हमें निरतर प्रेरणा का यह अमूल्य स्रोत सुलभ रहे। —[illegible], 76 [illegible] माडल टाउन, पानीपत।

आर्य समाज जोधपुर की शताब्दी कब ?

कुछ आर्य पत्रों मे आर्य समाज जोधपुर की शताब्दी का समाचार छपा है। कई वर्ष पूर्व अपनी जोधपुर यात्रा में वहां के कुछ आर्यों से वार्ता मे मैंने कहा था कि जोधपुर का आर्यसमाज न तो ऋषि दयानन्द के जीवन काल में स्थापित हुआ और ना ही ऋषि के बलिदान के तत्काल बाद। मैंने वहा कहा था कि मैं खोज करके बता सकूगा कि जोधपुर का समाज कब स्थापित हुआ।

अब पुराने आर्य पत्रो के आधार पर मैं निश्चयात्मक रूप से कह सकता हू कि जोधपुर के आर्य भाई बहुत जल्दी कर रहे हैं। उनके समाज की स्थापना शताब्दी अभी बहुत दूर है। वे चाहें तो मैं उसकी स्थापना के समय का समाचार (जो तत्कालीन पत्रों मे प्रकाशित हुआ) उन्हें भेज दू गा।

—राजेन्द्र जिज्ञासु

तुम्ही कहो ओ मीत मेरे ?

—मोहन लाल शर्मा 'रश्मि'—

मनवा कोई शोक में डूबा और कहीं खुशियाली है।
तुम्हीं कहो ओ मीत मेरे कैसी यह दीवाली है॥
सोवन तो हैं महल अटारी [illegible] कोठरियों में।
इनकी तो है रात गुलाबी और उनकी रात में काली है॥
उनके घर मे देखो तो हैं चूल्हे [illegible] पड़े।
यहां ढेर लगे पकवानों के, उनकी [illegible] है॥
आज भी उनके बच्चे तो, वैसे ही चिथड़ों में लिपटे।
और नूतन वस्त्रों में सज कर, [illegible] हैं॥
[illegible] कहीं, मन [illegible]।
मस्ती का प्याला [illegible] कहीं [illegible] है॥
[illegible]
[illegible] 'रश्मि' [illegible] है॥
[illegible]

शाही इमाम की चुनावी सरगरमियां शुरू

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी के उत्तर भारत में लोक सभा की 38 सीटें छांट ली हैं जहां से वे किसी न किसी पार्टी के टिकट पर अपने उम्मीदवारों को जिताने की कोशिश करेंगे। इसके लिए प्रति सीट 5 लाख रुपये का प्रबन्ध किया जा रहा है जिसमें बाहर से काफी मदद मिलने की सम्भावना है।

शाही इमाम अभी हाल में लीबिया गये थे। पिछले चुनावों के समय ही यह चर्चा चली कि लीबिया भारत के चुनावों में गहरी दिलचस्पी ले रहा है। इसीलिए शाही इमाम की हाल की लीबिया यात्रा का बहुत महत्व बढ़ जाता है। पिछले दिनों लीबिया के कर्नल गद्दाफी की बीबी भारत आई थीं तो वह शाही इमाम की ही मेहमान बनी थीं। इसी दौरान शाही इमाम की लीबिया यात्रा का कार्यक्रम भी तय हो गया था।

यह ध्यान रखने की बात है कि कर्नल गद्दाफी ही वे पहले मुस्लिम शासक हैं जिन्होंने मुस्लिम अणुबम का नारा सबसे पहले लगाया था और पाकिस्तान को अणुबम तैयार करने के लिए काफी आर्थिक सहायता देकर उकसाया था।

पिछले चुनावों में उस वक्त कांग्रेस के मुख्य महासचिव श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा ने अपनी ओर से जोड़-तोड़ करके शाही इमाम का इंका से समझौता करवा दिया था। लेकिन अब इमाम साहब की शिकायत है कि मुझसे जो वायदे किए गये थे, वे पूरे नहीं किए गये। इस कारण इस बार शाही इमाम इंका के खिलाफ मोर्चा लगाने की तैयारी कर रहे हैं।

शहीद सहायता निधि

396.	श्री एस० एम० मिगलानी—नई दिल्ली	101-00
397	श्री जगदीशचन्द्र—जुमीनारायणगढ़	51-00
398.	कर्मचारी रा० बीज फार्म—उचानी	121-00
399.	निहाल चन्द्र चौकरी—चण्डीगढ़	51-00
400.	विश्वंभरनाथ—मोतीनगर नई दिल्ली	50-00
401	महेन्द्र कुमार — „ „	50-00
402.	ओम प्रकाश चुसक—„ „	200-09
403	आर्यसमाज —सावन पार्क, दिल्ली	450-00
404	रघुबीर सिंह आर्य—बबनाणा	51-00

Donations Collected by Atul Sharma. Sec Arya Samaj Firozpur City as Under —

1	M/s	Friend Oil Store, FZR City		Rs. 100 00
2.	„	Ravi Dutt & Sons	-do-	Rs 100 00
3	„	Khanna Motors	-do-	Rs 100 00
4.	„	Gupta Oil Store	-do-	Rs 100 00
5	„	GuruNanak Oil Store	do-	Rs 100 00
6.	„	Dharam Singh & Sons	do-	Rs 100 00
7	„	Firozpur Service Station		Rs 100 00
8	„	Professor Colony	-do-	Rs 247 00
9	Shri	Joginder Pal Nayyar	do-	Rs 200 00
10	Shri	Baldev Raj	-do-	Rs. 50 00
11	Shri	Sanjeev	-do-	Rs 31 00
12.	Shri	Behal Singh	-do-	Rs 50 00
13	Shri	Bharat Bhushan	do-	Rs 50 00
14.	Shri.	Satish Kumar	-do-	Rs 50 00
15.	Shri.	Armesh Chander	-do-	Rs 50 00
16.	Shri	Subash Ahuja	-do-	Rs 50 00
17	M/s.	Punjab Motor Store	-do-	Rs 100 00
18.		Nagar Mal Saraf (Chaman Lal Sukhchain Lal)	-do-	Rs 200 00
19	M/s.	Chand Motors	-do-	Rs 100.00
20	„	Amod Motors	-do-	Rs 100 00
21.	„	Vijay Kumar Harcharn Singh		Rs. 50.00
22.	M/s.	Luther Oil Store	-do-	Rs 50 00
23.		Bansi goyal Chaman Lal		Rs. 50.00
24.		Raj Hans Parveen Kumar		Rs. 100 00
25.		Gupt Dan		Rs. 50 00
26.	M/s.	Kumar Machinery Store	-do-	Rs. 50 00
27.		Buta Ram	-do-	Rs. 50.00
28.		Atul Sharma	-do-	Rs. 100.00

चांदनी चौक का नाम श्रद्धानन्द चौक हो

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन मे चादनी चौक के प्राचीन घटाघर चौक की अहमियत से आप भली-भांति परिचित होगें। दिल्ली प्रशासन एव नगर निगम की नीति रही है कि अगर किसी चौक या सडक का किसी महात्मा के जीवन से विशेष सम्बन्ध रहा हो तो उसका नाम उन्हीं के नाम पर रख दिया जाता हैं। फव्वारे का भाई मतिदास चौक एवम् पास ही स्थित नेताजी सुभाषचन्द बोस मार्ग इसके दो नमूने हैं।

स्वामी जी के जीवन में इस चौक के महत्व को ध्यान मे रखते हुए हमारी सस्था घटाघर चौक का नाम बदलवा कर स्वामी श्रद्धानन्द चौक करवाने का प्रयास कर रही है। हमने दिल्ली के उपराज्यपाल महोदय को इसी आशय का एक पत्र भी भेजा है। अपनी इस माग को पूर्ण करवाने के लिये हमें आपके समर्थन की आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि आप हमें एक समर्थन पत्र निम्नलिखित पते पर भेज दें। अथवा प्रसिद्ध समाज सेवी एवम् आर्यसमाजी श्री मामचन्द रिवारिया को देने की कृपा करें।

प्रवीन कपूर, महासचिव युवक चेतना परिषद, दिल्ली शहर
१०५३, गाची गली, फतेहपुरी दिल्ली-६
दूरभाष २५१३३६५।

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ओर से जापान यात्रा

दिल्ली से पटैया पहुचे

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा 1921 में स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर-कमलों द्वारा बनी थी। सभा भवन का शिलान्यास महात्मा गांधी ने किया था। महात्मा नारायण स्वामी देशबन्धु गुप्त महाशय कृष्ण इत्यादि इस सभा के अन्तरग सदस्य थे। स्वामी जी ने सभा भवन के साथ लगे प्लाट दलित जाति को दे दिये और इस कालोनी का नाम आर्य नगर रखा।

रिकार्ड से पता चलता है कि इस सभा के पास 40 के लगभग उपदेशक थे जो सारे भारत में आर्यसमाज का सन्देश देते एव दलित वर्ग की सहायता भी करते थे। उस वक्त स्वामी श्रद्धानन्द बैल गाडी पर जाते थे और रोजाना कम से कम 9 गांवों में आर्यसमाज का प्रचार करते थे।

1921 से लेकर 1984 तक का विवरण देते हुए एक स्मारिका निकाली जायेगी। सभा-मन्त्री श्री बलराम राणा ने जापान यात्रियो को लिख भी दिया है कि अपने पासपोर्ट साइज के फोटो सभा कार्यालय में भेजें। जो जापान यात्रा पर गये उन सबके फोटो स्मारिका में प्रकाशित किये जाएगे। हम 8 सितम्बर को प्रात 10 बजे (बैंकाक के टाइम के अनुसार) दिल्ली से बैंकाक एयरपोट पहुचे। बजाय बैंकाक ठहरने के हम पटैया चले गये। हवाई जहाज के अन्दर ही सब यात्रियों को कार्ड दिये गये जिन पर हर यात्री को अपना पासपोर्ट नम्बर जिस होटल मे ठहरना था उस का नाम, इत्यादि लिखना था।

बैंकाक एयरपोट के बाहर दो वातानुकूलित बसे तैयार थी जिनमे लाउड स्पीकर, टेलीविजन इत्यादि लगे थे। इन बसों मे बैठकर बैंकाक से पटैया पहुच गये। पटैया थाइलैण्ड का एक सुन्दर नगर है जो बैंकाक से लगभग 150 किलोमीटर दूर है। वहा बसें 75 प्रति किलोमीटर प्रति घन्टा की रफ्तार से चलाने का नियम है। फिर हम दूसरे दिन 9 सितम्बर को बैंकाक आर्यसमाज मन्दिर लौट आये।

—रामलाल मलिक

ऋषि को विष दने

(पृष्ठ ५ का शेष)

जोधपुर से प्रकाशित हुई थी, को प्राप्त किया जाए।

महर्षि को विष देने के षडयन्त्र के सूत्रधार कौन थे, यह खोजने के लिये यह आधारभूत एव विश्वसनीय सूत्र बन सकता है।

लेखक को प्रस्तुत सामग्री एकत्र करने मे उपदेशक महाविद्यालय टकारा के तपोनिष्ठ विद्वान् आचार्य सत्यदेव विद्यालकार एव प्रतिष्ठित इतिहासविद् लेखक प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' से प्रोत्साहन एव मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। उसके लिये लखक उनका ऋणी है। गुजरात के एक अत्यन्त छोटे से ग्राम कछौली जि वलसाड की आर्यसमाज के कणधार श्री देवराज भाई वशी एव श्री हेमेन्द्र भाई देसाई आर्थिक भार से मुक्त न करते तो यह ऐतिहासिक सामग्री न जाने कब तक काल के अन्धेरे मे छिपी रहती। मैं दोनो ऋषि भक्तो को वन्दन करता हू। पता—२१९/१२१५ गायत्री नगर, गुजरात हाउसिग बोर्ड चाद खेडा, गाधीनगर

एस०एल० बावा डी०ए०वी० कालेज का शानदार परीक्षाफल

अमृतसर गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय के प्री—मेडिकल व प्री—इ जीनियरिंग परीक्षाफलों में एस० एल० बावा डी० ए० वी० कालेज ने जिले में सर्वोच्च प्रतिमान स्थापित किया है। कालेज की उत्तीर्णता का प्रतिशत विश्वविद्यालय के प्री—इ जी० व प्री मेडिकल के क्रमश 51 6 व 72 3 के विपरीत 68 व 82% रहा है। कालेज छात्र श्री सुरेशकुमार 561/650 अको से सयुक्त प्री—मेडिकल व प्री—इ जी० परीक्षाफल में जिले में प्रथम तथा विश्वविद्यालय के प्री—मेडिकल मे आठवें स्थान पर रहे। कालेज के प्री—मेडिकल मे प्रथम श्रेणी में उत्तीणता (9 छात्र) परीक्षाफल-प्रतिशत जिले भर मे शीष रहा। प्री—इ जी० में भी (11 छात्र) प्रथम श्रेणी व कुल उत्तीर्णता प्रतिशत जिले में सर्वोच्च रहा।

आर्य समाज फरीदाबाद

फरीदाबाद स्थानीय आर्य समाज का अपने भवन का निर्माण, पिछले तीन महीनों में सगृहीत दान-निधि से पूरा हो गया है। भवन के निर्माणार्थ स्व० डालूराम जी सुपुत्र श्री पोसरदास एव उनके उत्साही परिवार के सदस्यों ने सेक्टर 19 में 160 वगगज का एक प्लाट का दान देकर अपनी दानशीलता और समाज प्रेम का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। समाज ने अपना आगामी वार्षिकोत्सव 9 से 11 नवम्बर तक मनाने का निश्चय किया है।

—फरीदाबाद (हरियाणा) स्थानीय श्रद्धानन्द नगर स्थित स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय में स्वामी सत्यानन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न द्विवार्षिक चुनाव में अध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र आर्य, मन्त्री श्री लक्ष्मीचन्द, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश तथा सरक्षक—स्वामी सत्यानन्द स्वामी शक्तिवेश व चौ० कल्याणसिंह (खाद्य व आपूर्ति मन्त्री, हरियाणा सरकार) निर्वाचित हुए।

नि शुल्क आख, नाक, गला चिकित्सा शिविर

मेरठ आर्य समाज, 31 अक्तूबर से 4 नवम्बर तक शर्मा स्मारक मैदान में आंख, नाक, गले का चिकित्सा शिविर आयोजित कर रहा है। औषधियां, चश्मे सहित आवास व भोजन की व्यवस्था नि शुल्क रहेगी। जयपुर के डा० आर०एम० शर्मा व डा० प्रकाश [illegible] का चिकित्सकीय योगदान रहेगा। प्रतिदिन प्रातः स्वामी विवेकानन्द के [illegible] में यजु-कल्प यज्ञ से शिविर आरम्भ होगा।

गंगा मेला प्रचार शिविर

गढ़मुक्तेश्वर : आर्य समाज द्वारा यहां गंगा मेला के अवसर पर 4 से 8 नवम्बर तक सन्तर नं० 7 में प्रचार शिविर आयोजित किया गया है। शिविर में आर्य सम्मेलन, महिला सम्मेलन, गोसंवर्धन सम्मेलन, राष्ट्र सम्मेलन आदि बहुमुखी प्रभावी कार्यक्रम रखे गये हैं। देश के प्रख्यात विद्वान्, सन्यासी एव भजनोपदेशकों के कार्यक्रम भी हैं। प्रतिदिन साय-प्रात कोलाकास, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ सम्पन्न होगा।

विशेष आवासीय व्यवस्था की इच्छुक समाजें अथवा परिवार डेरे तथा छोलदारी आरक्षित करा सकते हैं।

[illegible] का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली : [illegible] केन्द्र का वार्षिकोत्सव, [illegible] दिवस और [illegible] में 21 [illegible] को प्रात: केन्द्र प्रमुख [illegible] की अध्यक्षता में मनाया गया। व्यायाम प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक [illegible] अत्यंत प्रभावशाली रहे।

उक्त केन्द्र 1938 में केवल [illegible] व्यक्तियों से [illegible] की [illegible] में प्रारम्भ हुआ था। वर्तमान में इसकी 100 शाखाएं दिल्ली में तथा हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र व आसाम में भी इसकी दैनिक शाखाएं लगती हैं। केन्द्र [illegible] कार्यक्रम के अतिरिक्त गरीबों को [illegible] और विधवाओं को सिलाई [illegible] वितरित करता है।

—आसनसोल (प० बंगाल) स्थानीय आर्यसमाज के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान—श्री भृगुनाथ प्रसाद, मंत्री—श्री रामसागर सिंह तथा कोषाध्यक्ष—श्री विजय कुमार चौहान चुने गये।

राष्ट्र एकता दिवस का आयोजन

नई दिल्ली किसान व दलित वर्ग प्रवक्ता व संसद सदस्य श्री रामचन्द्र विकल का 68 वां जन्मदिन 8 नवम्बर प्रात: विट्ठलभाई पटेल भवन के प्रांगण में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जायेगा। सरदार हरपाल सिंह (कृषि मन्त्री हरियाणा) समारोह की अध्यक्षता करेंगे तथा विभिन्न प्रदेशों के मुख्यमन्त्रियों सहित देश की सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक संस्थाओं के शीर्ष नेतागण राष्ट्रीय एकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री विकल के दीर्घ आयुष्य की कामना करेंगे।

श्री चिन्तामणि सम्मानित

दिल्ली भारतीय की 150 वीं वर्षगांठ में सम्मिलित होने को गये भारतीय सद्भावना मण्डल के प्रतिनिधि श्री चिन्तामणि को महर्षि वाल्मीकि सोसाइटी की ओर से सम्मानित किया गया।

—[illegible] स्थानीय [illegible] समाज की स्थापना में अध्यक्ष—श्री राम जीवन जी [illegible], मंत्री—श्री [illegible] शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] तथा संरक्षक—श्री [illegible] आर्य निर्वाचित हुए।

—फरीदकोट (पंजाब) : स्थानीय [illegible] समाज की [illegible] की अध्यक्षता में [illegible] [illegible] मंत्री—श्री [illegible] निर्वाचित हुए।

सामाजिक जगत

नेह

ने

A/10 Rockside
112 Walkeshwar Road
Bombay 400006
19 Oct 1984

I am glad to learn that the centenary of the sad demise of Swami Dayanandji is to be celebrated today. I wish I could have joined it but I am otherwise engaged. Swamiji's services to mankind hardly need mention. His life is a torch for us to follow. I wish the celebrations all success

[signature]

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप बम्बई की आर्य समाजों की ओर से ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी मना रहे हैं। मैं अन्य कामों में व्यस्त होने के कारण आपके इस समारोह में शामिल नहीं हो सकूंगा। ऋषि दयानन्द ने मानव जाति की जो सेवा की है, वह भुलाई नहीं जा सकती। मैं आपके इस शताब्दी समारोह की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

—हिदायतुल्ला

करनाल शताब्दी समोराह भव्यतम

पंजाब के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुंजाल ने डा० गणेश दास जी पत्र मे लिखा है—महर्षि निर्वाण समारोह के बारे में मैं यही कह सकता हूं कि—मथुरा, अलवर, मारीशस, दिल्ली, अमृतसर, कानपुर, मेरठ, बनारस, इंगलैण्ड व अजमेर—सभी शताब्दी समारोह देखने का सौभाग्य हुआ पर उदात्त भ्रातृत्व, अनुशासन व्यवस्था, समय पालन, उच्कोटि के आर्य वक्ताओं सन्यासियों व महात्माओ के श्रवण-दर्शन जैसा अनुपम माणि-कांचन संयोग केवल करनाल में ही देखा। इसके लिये स्वागताध्यक्ष श्री वर्मा, प्रो० सुमन, बहिन रूपरेखा सहित आयोजन की सर्वांगीण व्यवस्था के सभी कार्यवाहकों को मेरी हार्दिक बधाई। विशेष रूप से आभारी हैं हम स्वामी सत्यप्रकाश, स्वा० अमर स्वामी सहित अन्य सभी सन्यासी महात्माओं के जिन्होंने अपने उद्गारों से समारोह को भव्यता प्रदान की। प्रो० वेदव्यास, श्री दरबारी लाल, श्री रामनाथ सहगल, लाला रामगोपाल, श्री क्षितीश वेदालंकार आदि की उपस्थिति प्रादेशिक व सार्वदेशिक सभा का संगम बनी। समारोह मे प्रदेश मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय थी।

—सत्यानन्द मुंजाल, हीरो साइकिल प्रा० लि०, जी० टी० रोड लुधियाना—3।

विनय नगर में वेद प्रवचन

आर्यसमाज विनयनगर (सरोजनी मार्केट पार्क) मे 5 से 10 नवम्बर तक रात्रि साढ़े सात से साढ़े नौ तक आचार्य पुरुषोत्तम जी के प्रवचन और श्री सत्य देव के भजन होगे। रोशन लाल गुप्त-मन्त्री

प० गणपति शर्मा की आवक्ष प्रतिमा

चूरू: लोक संस्कृति शोध संस्थान ने यहाँ 28 अक्टूबर को भारत-विश्रुत शास्त्रार्थ महारथी स्व० गणपति शर्मा की आवक्ष मूर्ति का अनावरण व उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डा० परमानन्द सारस्वत रचित शोध—प्रबंध के विमोचन हेतु मनीषी श्रद्धा स्मृति समारोह मनाया। अनावरण डा० भवानीलाल भारतीय व विमोचन डा० ब्रह्मानन्द शर्मा भू०पू० निदेशक राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ने किया।

डी० ए० वी० स्कूल टी० वी० पर

नई दिल्ली डी० ए० वी पब्लिक स्कूल आर० के० पुरम् के प्रा० विजय अरोड़ा व संगीत शिक्षिका मिसेज मेहरा के सफल प्रयास से 22 अक्तूबर को सायंकाल आधा घटे का छोटे बच्चों का टी० वी० (चैनल 2 पर) कार्यक्रम जनता ने खूब सराहा। उक्त स्कूल अभी केवल चौथी कक्षा तक है पर निरन्तर प्रगति कर रहा है।

कपाल मोचन में वेद प्रचार

अम्बाला, जगाधरी के निकट प्रति वर्ष लगने वाले ऐतिहासिक कपाल मोचन मेले पर 4 से 8 नवम्बर तक आ०प्रा० प्र० उपसभा हरियाणा, पं० मोतीराम व्याकरणाचार्य के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ वेद प्रचार शिविर आयोजित कर रही है। इस अवसर पर देश के शीर्ष आर्य भजनोपदेशक व विद्वान पधार रहे हैं।

स्वराज्य मंत्र के प्रथम उद्गाता

4 नवम्बर रविवार को रात्रि 8-15 से 8-30 बजे तक आकाशवाणी दिल्ली, ए, केन्द्र से प्रो० जयदेव आर्य की 'स्वराज्य मंत्र के प्रथम उद्गाता महर्षि दयानन्द सरस्वती, विषय पर एक वार्ता प्रसारित होगी।

आर्यसमाज आजमगढ़ द्वारा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह 15 से 18 नवम्बर तक मनाया जाएगा। —अक्षयमुनि

आर्यसमाज पटेल नगर

आर्यसमाज पटेल नगर के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में 10 नवम्बर तक श्री यशपाल सुधांशु की वेद कथा और 12 नवम्बर तक श्री लक्षपति शास्त्री की अध्यक्षता मे सामवेद यज्ञ होगा।—जैसाराम तनेजा, प्रधान

श्री मती प्रकाशवती दिवंगत

पंडीचेरी. स्व० पं० धर्मवीर वेदालंकार की धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवती का जो दिल्ली नगर निगम मे चुनी जाकर कर्मठ समाज सेविका रही, 18 अक्टूबर को देहावसान हो गया। प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने उनकी मृत्यु पर शोक सदेश भेजा है। प्रभु उनकी दिवंगत आत्म को पूर्णशाति प्रदान करें।

दरियागंज समाज का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली: दरियागज समाज का 10 व 11 नवम्बर को अन्सारी रोड पर वार्षिकोत्सव होगा। समारोह का शुभारंभ 10 नवम्बर को श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा ध्वजारोहण से होगा। इसके पहले 5 से 9 नवम्बर तक सायंकाल भजन व पं रामकिशोर वद्य की वेद कथा होगी। उत्सव मे श्री क्षितीश वेदालंकार, प्रो० बलराज मधोक आदि मूर्धन्य आर्य नेता भी पधार रहे हैं। प० वेदव्यास के मधुर भजनों का विशिष्ट आकर्षण रहेगा।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रीपेमेण्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०१)

तूफान के दौर से—पंजाब : ग्राहकों से निवेदन

उक्त पुस्तक के छपने से पहले जो ग्राहक बन चुके हैं उनकी सेवा में निवेदन है कि पुस्तक की पृष्ठ संख्या बढ़ जाने, बीच में कागज और छपाई की दरें बढ़ जाने, और पुस्तक को बढ़िया से बढ़िया बनाने के संकल्प से छपने के बाद उसकी लागत दुगनी से भी ज्यादा पड गई है। इसका हमें खेद है। फिर भी अपने पूर्व ग्राहकों को हम उसी मूल्य मे देंगे, भले ही हमें कितना ही घाटा उठाना पड़े। परन्तु सामान्य बुकपोस्ट से भेजने में पुस्तक गुम हो जाती है। इसलिए रजिस्ट्री से भेजना ही सुरक्षित है। गत दो सप्ताहों से हम ग्राहकों को सूचित कर रहे हैं कि जो लोग कार्यालय में आकर स्वयं पुस्तक नही ले जा सकते, वे कृपा करके रजिस्ट्री और पैकिंग का खर्च ५ रु० भेज दें तो तुरन्त पुस्तक भेज दी जाएगी। एक सप्ताह तक जिनका ५ रु० प्राप्त नही होगा उन्हे हम उतने की वी० पी० भेजेंगे। कृपा करके आप वी० पी० छुड़ा अवश्य ले। पुस्तक की जैसी मांग है उसे देखते हुए कही आपको दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े।

क्षितीश वेदालंकार
सम्पादक 'आर्यजगत्'

टंकारा का ऋषि मेला

प्रति वर्ष की भान्ति शिवरात्रि पर महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा मे 9-10-11 फरवरी 1985 को ऋषि मेला लग रहा है। इस अवसर पर भारत भर के आर्य सन्यासी, विद्वान, आर्य नेता और आर्य परिवार टंकारा पधार कर महर्षि को श्रद्धांजली देंगे। आर्य परिवारों को टंकरा ले जाने के लिए बसो द्वारा

आर्य यात्रा

की व्यवस्था की गई है, महर्षि जीवन सम्बन्धी मुख्य स्थानो की यात्रा करेंगे। टंकारा : जन्मभूमि व बोध शिवालय, मथुरा : जहाँ गुरू विरजानन्द जी से शिक्षा प्राप्त की आगरा : जहां से प्रचार कार्य शुरू किया, बम्बई : जहा आर्य समाज की स्थापना की, जोधपुर : जहा उन्हे विष दिया गया, माउंट आबू : जहा इलाज के लिए गये, अजमेर : भिनाये कोठी जहा निर्वाण प्राप्त किया, ऋषि उद्यान जहा अन्तिम संस्कार हुआ।

इसके साथ-साथ **गोवा** के रमणीक, सुन्दर स्थानो को भी देखेंगे।

यह बसें 5-2-83 साय 7 बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से चलेंगी और 20-2-83 रात्रि को वापस आयेगी।

आप आज ही 485 रु० प्रति यात्री देकर अपनी सीट रिजर्व करा ले।

नोट—खरीदी हुए टिकट वापस नहीं होंगी। आधी सवारी को सीट नही मिलेगी।

निवास एवं भोजन का प्रबन्ध आर्यसमाजों की ओर से होगा जहा आर्यसमाजो की ओर से प्रबन्ध न होगा, यात्री अपने व्यय करेंगे। यदि डीजल व टैक्स मे वृद्धि हुई तो यात्री को और पैसे देने पड़ेंगे।

विनीत :—

रामनाथ सहगल	गन्धर्वसेन खोसला	रामशरण दास	रामचन्द्र आर्य
मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री	प्रबन्धक यात्रा

टंकारा ट्रस्ट   फोन : 343718, 615195

टंकारा सहायक समिति आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-1

गुरुकुल गौतम नगर का स्वर्ण जयन्ती समारोह

नई दिल्ली. श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, गौतमनगर, अपना स्वर्ण जयन्ती समारोह 8 से 9 दिसम्बर व स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे 18 नवम्बर से 8 दिसम्बर तक चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ आयोजित कर रहा है। श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी योगी व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती प्रतिदिन प्रात. योग साधना करवायेंगे। प्रातः-साय यज्ञ उपदेश के अतिरिक्त रात्रि मे भजनोपदेश की सुन्दर व्यवस्था है।

[illegible]वीर दल प्रदेशीय महासम्मेलन

रोहतक . हरियाणा आर्य वीर दल का प्रदेशीय महासम्मेलन श्री ओमप्रकाश त्यागी की अध्यक्षता मे 3 व 4 नवम्बर को होगा। एक हजार आर्य वीरो-वीरागनाओं का पथचलन तथा राष्ट्र-रक्षा आदि महत्वपूर्ण विषयो पर विविध वैचारिक सम्मेलन होंगे।

गुरुकुल शुक्रताल चलें

गुरुकुल शुक्रताल गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लाखों नर नारी गंगा स्नान के लिए आते हैं। आर्यसमाज का संदेश देने के लिए यह शुभ अवसर है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से गुरुकुल जाने के लिए निम्न कार्यक्रम बनाया गया है—

बसों का प्रस्थान 7 नवम्बर को प्रात. 7 बजे आर्यसमाज करोल बाग से होगा और वापसी 8 नवम्बर को गुरुकुल से दो बजे होगी। दिल्ली सायं 5 बजे बस पहुंचेगी। यदि किसी समाज मे दस से अधिक सवारियां होंगी तो उन्हे वही से ले लिया जायेगा और छोड दिया जायेगा। बसों का प्रति व्यक्ति आने जाने का किराया कुल 32/—होगा। निवास और भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गयी है। सीटों का आरक्षण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय या आर्य समाज करोल बाग में 5/11/1984 तक करा ले।

रामलाल मलिक	सूर्य देव	डा० धर्मपाल
संयोजक	प्रधान	महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15—हनुमान रोड, नई दिल्ली
फोन नं० 562510   264129   310150

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ४६ रविवार, ११ नवम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पंसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | मार्ग शीर्ष कृष्णा ३, २०४१ वि

इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या : शान्तिवन के निकट अन्त्येष्टि : देशव्यापी हिंसा का दौर : राजीव गान्धी नये प्रधानमंत्री बने

नई दिल्ली, ५ नवम्बर। ३१ अक्तूबर को जब सारा देश सरदार पटेल की जयन्ती मना रहा था, तब प्रातः ९ बजकर १० मिनट पर भारत की लोक प्रिय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को उन्हीं के दो सुरक्षा सैनिकों ने १८ गोलियां मारकर लहूलुहान कर दिया।

उन्हें तुरन्त अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में पहुंचाया गया जहां उनको बेहोश करके उनका आपरेशन किया गया उनके शरीर में से ७ गोलियां निकाली जा सकीं उन्हें बचाने के डाक्टरो के सारे प्रयत्न विफल हो गये और उन्होंने साढ़े ग्यारह बजे इन्दिराजी को मृत घोषित कर दिया।

इन्दिरा गान्धी की इस निर्मम हत्या का समाचार सुनकर सारा देश स्तब्ध रह गया। इस अनहोनी की किसी को आशंका नहीं थी। सहसा किसी को विश्वास भी नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों तथ्य की पुष्टि होती गई, त्यों-त्यों जनता शोक, आक्रोश और क्रोध से भर उठी। आयुर्विज्ञान संस्थान में ही भारी भीड़ जमा हो गई। इस गहरे सदमे को न सह सकने के कारण लोग किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। फिर जब क्रोध की लहर आई तो हिंसा पर उतर आये।

विश्वासघात की सीमा

इन्दिरा गांधी की हत्या करने वाले दोनों सिख थे, इसलिए सिखों के प्रति जनता का रोष उमड़ पड़ना अस्वाभाविक नहीं था। उधर अमृतसर में अकाल तख्त के मुख्यग्रन्थी ने जब हत्यारों की निन्दा करने और प्रधानमंत्री की मृत्यु पर शोक प्रकट करने से इन्कार कर दिया, और कुछ सिरफिरे लोगों ने खुशी में मिठाई बांटी और अपने घर में दिवाली मनाई तो किसी भी सहृदय मानव का सन्तुलन बिगड़ सकता था।

धीरे-धीरे हिंसा की यह लहर भारत के लगभग सभी हिस्सों में फैलती गई और एक बार सन् 1947 में देश के विभाजन के पूर्व और पश्चात् का सा दृश्य उपस्थित हो गया। जगह-जगह लूट-मार, आगजनी और हत्या का दौर चल पड़ा। इन्दिरा गान्धी की मृत्यु का समाचार सुनकर जिन राज्यों के मुख्यमंत्री दिल्ली आ गये थे, उन्हें तुरन्त अपने अपने राज्यो मे वापस जाना पड़ा।

आश्चर्य की बात यह है कि हत्या का यह विश्वासघातपूर्ण घिनौना षड़यन्त्र उस समय किया गया जब यहां न राष्ट्रपति थे, न श्री राजीव गान्धी थे, न और वरिष्ठ मंत्री राजधानी मे मौजूद थे। राष्ट्रपति मौरिशस के पश्चात् यमन की यात्रा पर थे और राजीव गांधी बंगाल के किसी देहात मे गये हुए थे। उन्हे लेने के लिए विशेष विमान भेजा गया और वे लगभग दो बजे दिल्ली पहुंच पाये। शाम को 6-30 बजे तक राष्ट्रपति दिल्ली पहुंच गये और वे हवाई अड्डे से सीधे अस्पताल पहुंचे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

समस्त आर्यसमाजों में शोक

हत्या की तीव्र निन्दा : राजीव गांधी का समर्थन

दिल्ली, 5 नवम्बर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक बैठक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में हुई, जिसमें भारत की प्रधानमंत्री और निर्गुट सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा गाधी की उनके सुरक्षा कर्मचारियों द्वारा हत्या किये जाने पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। सभा के विचार से इसके पीछे गहरा सुनियोजित षड़यन्त्र था और इसकी पूरी तरह जांच की जानी चाहिये। सभा ने श्री राजीव गांधी के नये प्रधानमंत्री बनाने को उत्तम निर्णय बताया और आशा प्रकट की कि उनके नेतृत्व में श्रीमती गाधी के अधूरे कामो को पूरा किया जा सकेगा।

इस सभा ने भविष्य के लिए विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा की पूरी जांच करने की माग करते हुए देश एवं विदेश की समस्त आर्यसमाजो से नये प्रधान मत्री श्री राजीव गाधी को पूरा सहयोग देने का अनुरोध किया है।

मत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नयी दिल्ली – 110002

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

स्वामी सत्यप्रकाश जी की कलम से

मेरी इन्दिरा-बलिवेदी पर!!

दिल्ली में एक और आहुति। १९२६ के २३ दिसम्बर को एक व्यक्ति के पागलपन से स्वामी श्रद्धानन्द को शहादत मिली। दूसरे एक पागल ने १९४८ की जनवरी की ३० तारीख को महात्मा गांधी की हत्या की। इतिहास का फिर पुनरावर्तन हुआ। ३१ अक्तूबर को प्रात: काल तीसरे पागल ने मेरी इन्दिरा के क्षीणकाय शरीर को १८ गोलियों के छर्रों से चलनी बना डाला। शायद वह समझ भी न पाई, कि यह सब क्यों कैसे हुआ? अपना ही अंगरक्षक क्या कर रहा है, और क्यों! संसार ने सुना, जाना, और विश्वास किया कि इन्दिरा गई, सदा के लिए गई। श्रद्धानन्द, गांधी, इन्दिरा—तीनों के बलिदान को उत्तरदायित्व उस विषाक्त वातावरण पर है, जो हम सब लोगों का मिलकर बनाया हुआ है, दयानन्द को एक सौ एक वर्ष पहले किसने मारा था—हम सबने मिलकर पिछले अक्तूबर की ही बात है, कि अपने अन्य सहयोगियों के साथ मैं इन्दिरा को महर्षि निर्वाण शताब्दी में सम्मिलित होने का निमंत्रण देने गया था। वे हम लोगों की बात मान गयी। ३ नवम्बर को वे अजमेर पधारी थी। और इस ३ नवम्बर को वे स्वयं निर्वाण लोक की पथिक बन गई।

इन्दिरा को मैं अपनी इन्दिरा कहता हूं। प्रयाग की जो थी। मैं प्रयाग १९१८ जुलाई में आया। नवम्बर १९१७ में इन्दिरा का जन्म हुआ। सन् १९३० के आंदोलन में वे बालकों की वानर-सेना की अगवानी कर रही थी। सन् १९४२ में फीरोज गांधी और मैं एक ही बैरक में नैनी जेल में थे। फीरोज और इन्दिरा की मैत्री सब जानते थे। दोनों का विवाह हुआ। किशोरी इन्दिरा सब की प्यारी थी। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी लेखनी से इन्दिरा का "प्रियदर्शिनी" नाम अपने साहित्य में अमर कर दिया—भाव भरे ऐतिहासिक पत्र लिख कर (ठीक वैसे ही जैसे गणित के क्षेत्र में "लीलावती" के लेखक ने अपनी पुत्री लीलावती के लिए अंकगणित की पुस्तक लिखकर)।

लोग देखते ही रह गए, इन्दिरा प्रधान मंत्री बनी। इन्दिरा पहली महिला प्रधान मंत्री। उसके शासन के मूल्यांकन का यह समय नहीं है। हममें से कुछ उसको समझते, कुछ समझने का प्रयत्न करते, कुछ विरोध करते, कुछ डरते, मेरी उससे परोक्ष आत्मीयता इतनी ही रही, कि वह मेरे प्रयाग की बेटी थी। अप्रतिम थी, अद्भुत थी।

कोई नहीं जानता था कि उसकी इस प्रकार मृत्यु होगी। पंजाब-काण्ड को दोहराना व्यर्थ है। वहाँ की समस्या के सम्बन्ध में कार्यवाही करने से जब सब घबरा रहे थे—उसने अद्वितीय साहस का परिचय दिया। जब सब हताश थे, कोई रास्ता नहीं दीख रहा था—वह प्रखर आलोक के रूप में सामने आई।

मेरे मित्र, इसी 'आर्यजगत्' के सम्पादक क्षितीश जी की नई पुस्तक - "पंजाब-तूफान के दौर से" निकली है। उसमें "क्या आप विश्वास करेंगे"—इस शीर्षक से अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए सन्दर्भ का अन्तिम वाक्य है—

"इन्दिरा गांधी को मारने के लिए ७५ हजार
पौंड के पुरस्कार की घोषणा की गई थी?
(पौंड क्यों, रुपये क्यों नहीं)?"

ये वाक्य इतने शीघ्र सत्य निकलेंगे—कोई नहीं जानता था। मालूम नहीं हत्यारे को पौंड मिले या नहीं, पर बात तो सच हो गई।

मैं ३० अक्तूबर को मारिशस की यात्रा से खुशी-खुशी लौटा था। ३१ अक्तूबर के इस नृशंस हत्याकांड ने नया ही वातावरण पैदा कर दिया। मेरी इन्दिरा, मेरे प्रयाग की इन्दिरा, मेरे देश की इन्दिरा, मानव-मात्र की इन्दिरा! अब केवल इतिहास की चिर-कहानी रह गयी है। संसार के देशों के अधिकारियों ने ३ नवम्बर को दिल्ली में श्रद्धाञ्जलियाँ भेंट कीं, लाखों करोड़ों ने आँसू बहाये। बहुत कुछ लिखा जायगा। ईश्वर राजीव की रक्षा करे—यही कह सकता हूं। दुनिया का पागलपन मिटे।

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

(पृष्ठ १ का शेष)

राजीव गांधी प्रधान मंत्री बने

जिस आपरेशन कक्ष में इन्दिरा गांधी का शव चिरनिद्रा में लीन था, उस कक्ष के पास वाले दूसरे कमरे में मंत्रीमण्डल की एक आपात बैठक बुलाकर राजीव गान्धी को नया प्रधान मंत्री बनाने का निश्चय किया गया। शाम को 7 बजे राष्ट्रपति ने राजीव गान्धी को प्रधान मंत्री पद की शपथ दिलाई और उसके बाद नये प्रधानमंत्री ने तुरन्त राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित करते हुए देश की समस्त जनता से मानसिक सन्तुलन बनाये रखने की अपील की। 3 नवम्बर शनिवार को 4-30 बजे इन्दिरा गांधी की अंत्येष्ठि की घोषणा भी प्रधान मन्त्री को भरे दिल से करनी पड़ी।

उपकारिणि विश्रब्धे शुद्ध मतौ यः समाचरति पापम्।
तं जनमसत्यसंधं भगवति वसुधे कथं वहसि॥

—उपकार करने वाले, विश्वास रखने वाले, शुद्ध हृदय के व्यक्ति के साथ जो पाप करता है, हे भगवती धरती माता! तू उस विश्वासघाती व्यक्ति को कैसे सहन करती है?

1 नवम्बर को तीनमूर्ति भवन में इन्दिरा गान्धी का शव रख दिया गया और देश भर से जनता अपनी प्रिय नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए लाखों की संख्या में उमड़ पड़ी।

शोक और क्रोध के आवेश का विचित्र संमिश्रण था। एक तरफ हिंसा का नग्न तांडव चल रहा था और दूसरी ओर आबाल वृद्ध नर-नारी की आँखें आँसुओं से तर थी। जब पुलिस भी हिंसा की घटनाओं को नहीं रोक सकी तो सेना को बुलाना पड़ा और जिन-जिन स्थानों पर भीड़ भड़क उठी थी, उन सब स्थानों पर कर्फ्यू लगा दिया गया।

राजकीय अन्त्येष्टि

इस बीच विदेशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अन्य विशिष्ट नेता भारत की इस महनीय दिवंगत नेता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दिल्ली पहुचने लगे। 104 देशों के प्रतिनिधि इन्दिरा गांधी की अंत्येष्ठि में शामिल होने के लिए दिल्ली पहुंचे। बहुतों ने अपने शोक सन्देश भेजे। गुट निरपेक्ष राष्ट्रों की नेता होने के कारण उन देशों के जितने प्रतिनिधि इस अवसर पर उपस्थित हुए, उतने शायद ही किसी अन्य विश्व नेता के दिवंगत होने पर उपस्थित हुए हों।

3 नवम्बर को दोपहर 12-30 बजे तीनमूर्ति भवन से पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ इन्दिरा गान्धी की शव यात्रा प्रारम्भ हुई और राजधानी के मुख्य-मुख्य स्थानों से होती हुई 4 बजे के लगभग शान्तिवन पहुची। अपनी प्रिय नेता को श्रद्धांजलि देने के लिए देश के अन्य भागों से कितने ही लोग आये, पर दिल्ली में कर्फ्यू लगा होने और बसें न चलने के कारण बहुतों को दस-दस और पन्द्रह-पन्द्रह मील पैदल चलकर अंत्येष्टि के स्थान तक पहुचना पड़ा।

राजघाट और शान्तिवन के बीच में छः एकड़ के खाली स्थान पर महात्मा गान्धी और जवाहर लाल नेहरू दोनों के सम्मिलित प्रतिनिधि के रूप में उक्त दोनों राष्ट्र नेताओं के दाह स्थलों के बीच में इन्दिरा गान्धी के लिए भी अंत्येष्टि का स्थान चुनकर ठीक ही किया गया।

पिता चले गये, नाना चले गये, छोटा भाई चला गया और अब मां भी चली गई। शेष बचे एक मात्र पुत्र राजीव गांधी के मन में अपनी ममतामयी मां के चन्दन की चिता में रखे शव में अग्नि देते हुए भावों का कैसा ज्वार उठ रहा होगा। शायद इसीलिए शव की परिक्रमा करके राजीव गांधी द्वारा अग्निदान करने के दृश्य को देखकर उस स्थल पर विराजमान सभी लोग भाव विह्वल हो उठे। एक ओर से नारा लगा—"जबतक सूरज चांद रहेगा, इन्दिरा तेरा नाम रहेगा, इन्दिरा तेरा नाम रहेगा"। धीरे-धीरे सारी जनता ने गगनभेदी स्वर से इस नारे से दिशाओं को गुंजा दिया।

शव यात्रा से लौटते ही, अपने हृदय की भावनाओं पर पत्थर रखकर, कठोर कर्तव्य का पालन करते हुए राजीव गांधी ने दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर हुई हिंसात्मक वारदातों के बारे में तुरन्त कड़ा

(शेष अन्तिम पृष्ठ पर)

आर्य प्रादेशिक सभा का शोक प्रस्ताव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग नई दिल्ली के अन्तर्गत सभी आर्य समाजों ने रविवार को अपने-अपने यहां बैठकें करके श्रीमती इन्दिरा गांधी की अकस्मात् मृत्यु पर गहरा खेद प्रकट किया। उग्रवादियों द्वारा उनकी हत्या की तीव्र निन्दा की गई। सभाओं में परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। राष्ट्रीय शोक दिवस (11 नवम्बर) तक सभी समाजों ने निश्चय किया कि उनके उत्सव आदि के सभी कार्यक्रम स्थगित समझे जाएं। इसके अतिरिक्त राजीव-गांधी के प्रधानमंत्री बनने पर सब समाजों ने निश्चय किया कि उनको पूरा-पूरा समर्थन दिया जाये। उनका प्रधानमंत्री बनना देश के भविष्य की दृष्टि से बहुत लाभदायक होगा।

—रामनाथ सहगल, मंत्री

उत्सव स्थगित

आर्यसमाज (अनारकली) मंदिर मार्ग नई दिल्ली को वार्षिकोत्सव जो कि 9, 10, 11 नवम्बर का होना था-वह श्रीमती इंदिरा गांधी के अकस्मात देहावसान पर स्थगित कर दिया गया है।

—रामनाथ सहगल मंत्री

कुछ आवश्यक सूचनाएं

1. दिल्ली में निरन्तर कर्फ्यू लागू रहने के कारण, ११ नवम्बर का अंक केवल ४ पृष्ठ का निकल रहा है।

२. १०-११ नवम्बर को होने वाला आर्यसमाज अनारकली का वार्षिकोत्सव स्थगित कर दिया गया है।

३. टंकारा में ऋषिमेला १०-११ फरवरी को नहीं, १६ १७ फरवरी सन् ८५ में होगा।

४. 'तूफान के दौर से—पंजाब' पुस्तक का विमोचन विट्ठल भाई पटेल भवन में ८ नवम्बर के बजाय १९ नवम्बर को होगा।

सामाजिक जगत्

महर्षि निर्वाण-स्थल पर अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक

अजमेर नला बाजार समाज ने जिस भिनाय कोठी में महर्षि का निर्वाण हुआ था, आर्य जनता के सहयोग से उक्त कोठी के सबधित भाग को खरीदकर 29 व्यक्तिओ के पजीकृत 'महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास' को महर्षि निर्वाण स्मारक भवन निर्माण हेतु सौंप दिया है। इस तीन मजिले भवन पर, यज्ञशाला, दो विशाल हाल, शौचालय, स्नानागार युक्त 24 कमरे एक विशाल पुस्तकालय-वाचानालय एक अतिथिशाला, पाठशाला-भोजनालय तथा धमार्थ चिकित्सालय आदि के निर्माण की मद मे 25 लाख रुपये व्यय का अनुमान है। आर्यजनो के सहयोग से आने वाली दान की राशि से निर्माण कार्य चल भी रहा है तथा याज्ञिको का व कार्यकर्त्ताओ का प्रशिक्षण, वेद प्रचार सेवा का सचालन, अतिथियो, तथा वैदिक धर्मप्रचार मे सलग्न वृद्ध सन्यासियो व वानप्रस्थियो के लिये आवास व चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। स्मारक निर्माण हेतु दान करने की अपील की उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया हुई है।

अल्मोडा ताडीखेत समाज मदिर मे श्री अजनी कुमार गुप्त (कानपुर) व नीलिमा रानी (लश्कर) का विवाह सस्कार महात्मा केहरमुनि की अध्यक्षता तथा प० रामदत्त पाण्डेय के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

हाथरस (उ०प्र०) स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने मे श्री हीरालाल (अभेदमुनि) व श्री हरिदत्त शर्मा (हरिमुनि) को वानप्रस्थ मे दीक्षित करके उन्हे मद्य-निषेध एव परिवार कल्याण काय मे अग्रसर होने की प्रेरणा दी।

मदसौर (म०प्र०) समाज का 48 वॉ वार्षिकोत्सव 18 से 24 सितम्बर तक मनाया गया। समारोह मे स्वामी कर्तव्यानन्द (हैदराबाद), प० शिवकुमार शास्त्री (दिल्ली), प० जयप्रकाश आय (हिसार) व श्री नरदेव आर्य भजनोपदेशक (भरतपुर) का प्रभावी योगदान रहा।

वैदिक यति मण्डल सम्मेलन

दीनानगर दयानन्द नगर, गाजियाबाद वैदिक सन्यास आश्रम मे 10 व 11 नवम्बर को वैदिक यति मण्डल का सम्मेलन आयोजित है। प्रख्यात आर्य सन्यासी वानप्रस्थी सम्मेलन मे आमन्त्रित किये गये हैं।

मुस्लिम परिवार हिन्दू बना

बेतिया (बिहार). ग्राम मे हृदियावारी (प० चम्पारण) के श्री राम व श्री लक्ष्मण तिवारी को जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था, सपरिवार स्थानीय समाजमत्री महन्त प्रसाद आर्य व पुरोहित श्री रामचन्द्र आर्य ने पुनः वैदिक धर्म ग्रहण कराया। नामकरण पूर्व हिन्दू नामों का ही किया गया। बडी सख्या मे ग्रामीणों ने इस कार्यक्रम में सहयोग दिया।

सप्ताहव्यापीजन जागरण यात्रा-

कुरुक्षेत्र महर्षि के बलिदान के 101 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष मे आ० प्रा० प्र० सभा द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह पर कुरुक्षेत्र जिला समाजो के वेद प्रचार मण्डल के सगठन मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी के नेतृत्व मे 101 आर्य युवक तितरम, जखेली, कछाणा काटडा, शेरदा, भाणा, करोडा, पाई, फतेपुर, पुण्डरी, बरसाना, साँच, रसीना, वस्तली गोन्दर, ओगद तथा दादूपुर गावो मे सप्ताह व्यापी जनजागरण अभियान चलाते हुए करनाल पहुँचे। अभियान यात्रा ऐतिहासिक नगर कैथल से 28 सितम्बर प्रात प्रारम्भ हुई थी। सायकिलो पर केसरिया ओउम् ध्वज तथा राष्ट्र अखण्डता प्रेरक आदर्श पट्ट लगाये देशभक्ति पूर्ण गीत व नारे लगाते इन मिशन यात्रियो को पूर्व पुलिस अधीक्षक चौ० सत्यदेव सिंह की अध्यक्षता मे हरियाणा सरकार योजना बोर्ड के अध्यक्ष विधायक चौ० ईश्वर सिंह सहित बहुसख्यक आर्यजनो ने भावभीनी विदाई दी।

गावो की जनसभाओ को क्रातिकारी भजनीक स्वामी रुद्रवेश सहित प्रो० वेद सुमन, आचार्य वेदव्रत आदि ने सबोधित किया। गाँव-गाँव के आबाल वृद्ध जनो ने शराब और दहेज का बहिष्कार तथा धूम्रपान—मासाहार छोडने की शपथें ली। करनाल पहुँचने पर शताब्दी समारोह आयोजको ने दल का भव्य स्वागत किया।

वेद सप्ताह की अभूतपूर्व सफलता

बेतिया जोडा शिवाला, लालबाजार में समाज द्वारा 14 से 18 सितम्बर तक आयोजित वेद सप्ताह मे डा० काशानन्द सरस्वती, शास्त्रार्थ महारथीद्वय सर्वश्री सत्यमित्र शास्त्री (बडहलगज) व गगाधर शास्त्री (पटना) आदि के प्रवचनो तथा महानन्द आर्य (चुनार) व चन्द्रदेव सत्यार्थी (समस्तीपुर) के भजनो से लोगो मे अभूतपूर्व जागृति परिलक्षित हुई।

पौराणिक की चुनौती विफल

बेतिया शीर्ष पौराणिक पडित श्रीकान्त त्रिपाठी निराला की शास्त्रार्थ की चुनौती पर चम्पारण जिला आर्य सभा की ओर से श्री गगाधर शास्त्री (पटना) व श्री सत्यमित्र शास्त्री (बडहलगज) ने राजड्योढी के प्रागण मे शास्त्रार्थ मे भाग लिया। विषय थे—अवतारवाद, मूर्तिपूजा तथा मृतकश्राद्ध। नेपाल जैसे सुदूरवर्ती क्षेत्रो से भी हजारो लोग शास्त्रार्थ सुनने आये।

प्रश्न व आक्षेपो के सटीक उत्तरों में छिद्र न पाकर पौराणिकों मे बौखलाहट देखी गयी। "पितर' शब्द केवल दिवगत का ही द्योतक है और श्राद्ध वेदानुकूल है, दोनों ही बिन्दु वे सिद्ध न कर सके। दूसरी ओर शास्त्री जी ने वेद से लगाकर स्मृति और निरुक्त के अकाट्य प्रमाणो से सिद्ध कर दिया कि पितर शब्द केवल जीवित माता पिता आदि के लिये ही प्रयुक्त होता है व वेदो में 'श्राद्ध' शब्द और उसके मत्र कही भी नही दिये।

दूसरे दिन निर्धारित समयावधि में समाज के दिग्गजो के प्रवचनो का लाभ जनसमुदाय उठाता रहा पर पौराणिक 'निराला' अत तक भी आने की हिम्मत नही जुटा पाये।

जालन्धर का वार्षिकोत्सव

जालन्धर : आर्यसमाज माडल टाउन मे 3 नवम्बर से प्रात योगाभ्यास कार्यक्रम आरम्भ हुआ तथा तथा सायकाल विद्यार्थियो की भाषण, गायन तथा वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं हुई 4 नवम्बर प्रात पूर्णाहुति समारोह मे 51 हवन कुण्डो पर 251 परिवरो ने एक साथ भाग लिया तथा ऋषि लगर के बाद प्रभावशाली वैदिक प्रचार गोष्ठी हुई।

हनुमान रोड समाज का वार्षिकोत्सव

नयी दिल्ली: हनुमान रोड समाज का 62 वा वार्षिकोत्सव 9 से 14 अक्तुबर तक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात प० राजगुरु शर्मा के ब्रह्मात्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा साय उनके वेदोपदेश काफी आकर्षक रहे। अन्य कार्यक्रमो मे महिला सम्मेलन, प्रख्यात साहित्यकार श्री गोपाल प्रसाद व्यास की अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन, स्कूल व कालेज छात्रो की भाषण प्रतियोगिता, स्वामी सत्यप्रकाश की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन डा० सत्यव्रत सिद्धातालकार की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन तथा डा० प्रशात कुमार वेदालकार की अध्यक्षता मे सम्पन्न आर्य युवा सम्मेलन-सभी अत्यत सफल व प्रभावशाली रहे। श्री रामगोपाल शालवाले सहित शीर्ष आय मनीषियो ने कायक्रम मे योगदान दिया।

महर्षि बाल्मीकि जयन्ती

मेरठ आर्य समाज की ओर से 11 अक्तूबर को यहा बुढाना द्वार समाज मदिर मे सम्पादक दैनिक प्रभात' श्री विनोद की अध्यक्षता मे महर्षि बाल्मीकि जयन्ती प्रभावपूण ढग से मनायी गयी। भारी सख्या मे बाल्मीकि युवको ने इसमे भाग लिया। उ० प्र० प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री इन्द्रराज ने देश की युवा पीढी से छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियो को मिटाकर वैदिक धम की रक्षा मे आगे आने पर बल दिया तथा आशा व्यक्त की कि देश के नेता भी राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठ कर हरिजनो के हितो पर ध्यान देंगे।

—बम्बई काकडवाडी समाज के वार्षिक निर्वाचन मे श्री बसतराव आर० पटेल—मेनेजिंग ट्रस्टी, श्री गणपत राय आर्य - प्रधान, श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डय-मत्री तथा श्री करसनदास राणा—कोषाध्यक्ष चुने गये।

ऋषि मेला (दीपावली) —समारोह

अम्बाला छावनी वैदिक प्रचार मण्डल द्वारा गोविन्द नगर मैदान मे 24 अक्तूबर प्रात 8 से 12 बजे तक ऋषि मेला (दीपावली) आयोजित हुआ। नगर पालिका प्रशासक श्री राजेन्द्र पाल ने समारोह की अध्यक्षता की व डा० भवानी लाल भारतीय, ब्र० रामप्रकाश आदि आर्य विद्वानो तथा भजनीक श्री दुर्गादत्त 'तूफान' ने प्रभावी योगदान दिया।

यू० जी० सी० अध्यक्ष गुरुकुल प्रणाली से प्रभावित

हरिद्वार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे 13 अक्तूबर को निरीक्षणार्थ पधारी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्ष परिसर के भव्य व आकर्षक वातावरण तथा पुस्तकालय व सग्रहालय मे भारतीय सस्कृति सम्बन्धी बहुमूल्य सास्कृतिक पाडुलिपियो की सुरक्षा व्यवस्था से प्रभावित हुई। उक्त पाडुलिपियों को माईक्रोफिल्म द्वारा सुरक्षित बनाने का सुझाव देते हुए, गुरुकुल स्नातको के वहाँ उपलब्ध प्रकाशनो द्वारा वैदिक वाङ्मय के तत्वान्वेषण के कार्य को सतोषजनक बताया। श्रीमती शाह ने गुरुकुल की एक बैठक को सबोधित करते हुए इस के उत्कर्ष हेतु समयबद्ध कार्यक्रम बनाने पर बल देते हुए यू० जी० सी० द्वारा उत्कृष्ट स्वरूप को स्थापित करने वाली प्रसार योजनाओ के क्रियान्वयन मे भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया।

देवीदास आर्य का अभिनन्दन

करनाल हरियाणा आ० प्रा० प्र० सभा द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी पर सहस्त्राधिक कन्याओ व महिलाओ की गुण्डों से मुक्ति कराने, विधर्मियो की शुद्धि व अन्य समाज सुधार कार्यो मे अग्रणी आय नेता श्री देवीदास आर्य (कानपुर) का नागरिक अभिनन्दन हुआ। रायबहादुर चौ० प्रताप सिंह की अध्यक्षता मे आयोजित उक्त समारोह मे पजाब सरकार के पूर्व मत्रियो सहित स्वामी ओमानन्द स्वामी सत्यप्रकाश, प्राचार्य मेलाराम बर्क, शास्त्राथ महारथी अमरस्वामी सपादक आर्य जगत् श्री क्षितीश वेदालकार व प्रा० वेद सुमन आदि गणमान्य नताओ की उपस्थिति उल्लेख्य रही।

शताब्दी समारोह मे विभिन्न विषयो पर आयोजित सात सम्मेलनो मे विभिन्न प्रदेशो के हजारो लोगो ने भाग लिया तथा करनाल के इतिहास मे सबसे विशाल शोभायात्रा निकली।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सी० (४०१)

एक युग गया

(पृष्ठ २ का शेष)

कदम उठाया। पुलिस की निष्क्रियता के लिए किसी हद तक उत्तरदायी समझे गए दिल्ली के उपराज्यपाल श्री गवई को हटा-कर श्री वली को नया उपराज्यपाल बनाया नये मंत्री मण्डल की घोषणा की। जिन कठिन परिस्थितियों मे श्री लालबहादुर शास्त्री के स्वर्गवास के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश की बागडोर संभाली थी, इन्दिरा गांधी की मृत्यु के पश्चात फैले अराजकता के आलम के कारण यह कहा जा सकता है कि श्री राजीव गांधी ने सचमुच कांटो का ताज अपने सिर पर धारण किया है।

इन्दिरा गांधी के साथ एक युग समाप्त हो गया। इतिहास की निर्मी भी स्वयं इतिहास बन गई। ऐसी तेजस्वी साहसी और निर्भीक महिला संसार में दुर्लभ है। आनन्द भवन से लेकर परमानन्द धाम तक की उसकी यात्रा कभी फूलों की सेज नही रही। अपने विवाह के 6 महीने पश्चात ही, सन् 1942 में, जिसे बिना मुकदमा चलाये जेल मे लगातार तेरह मास तक नजरबन्द रखा गया, उस नाजुक सी दिखने वाली किशोरी के अन्दर इतना तेज और ओज छिपा होगा, कि वह देश को तोड़ने वाली समस्त विघटकारी शक्तियों का अकेले मुकाबला करके उसे अभूतपूर्व ढंग से इसे जोडे रखेगी और अन्त मे देश की उसी अखण्डता और एकता की बलिवेदी पर स्वयं बलि हो जायेगी, यह किसने कल्पना की थी!

आशा व विश्वास

विपक्षी दल अपनी अहमन्यता में अड़े हुए है। वे दिशाहीनता की स्थिति में है। स्वयं इंका भी अपने आन्तरिक अन्तर विरोधों से कम ग्रस्त नही है और देश के भविष्य का निर्धारण करने वाले चुनाव सिर पर हैं। नवम्बर के मध्य तक सम्भवत: आगामी चुनावों की घोषणा हो जाय। इस विकट परिस्थिति में राजनैतिक प्रशासन को अनुभव शून्य राजीव गांधी ने देश की बागडोर संभाली है। केवल देश ही नही, सारा संसार बडी उत्सुकता से विश्व के इस महानतम लोकतंत्र के नेता का पद संभालने वाले राजीव गांधी की ओर, टकटकी लगाये उत्सुकता से देख रहा है। विश्वास करना चाहिए कि भारत जैसे आदर्शवादी और विश्वप्रेरक महान् देश के प्रधान मंत्री जैसे उत्तरदायित्वपूर्ण पद को इतनी छोटी आयु मे सभालने वाले राजीव गांधी न केवल देश की कोटि कोटि जनता की आशाओ और विश्वास की रक्षा करेंगे, बल्कि राष्ट्र की उन्नति के नए आयाम प्रदान करेंगे।

प्रत्यावर्तित बन्धुओं का स्वागत

देहरादून: तपोवन की सप्ताह व्यापी वृहत्—यज्ञ पूर्णाहुति के अवसर पर एक ईसाई पादरी की शुद्धि पर कैलाश नामकरण किया गया। आश्रम के मंत्री ने गत मास देहरादून समाज में स्वेच्छया वैदिक धर्म मे आये श्री मधुसूदन (पूर्व मकसूद अली) का भी परिचय कराया। दोनों सज्जनों ने अपने गुमराह भाइयों को सत्य मार्ग पर लौटाने के रूप में प्रायश्चित करने का संकल्प लिया। पिछले सप्ताह केरल निवासिनी कु० जोवियन अलैक्जेंडर ने भी वैदिक धर्म ग्रहण किया तथा गीता नाम से केरल के ही आर्य युवक से विवाह किया।

महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह

जोधपुर: जोधपुर में प्रदेश स्तर पर 10 से 12 नवम्बर तक महर्षि निर्वाण शताब्दी मनायी जायेगी। शीर्ष आर्य विद्वान, सन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा अनेक केन्द्रीय व प्रदेशीय नेता समारोह मे भाग ले रहे हैं।

रोगी परीक्षण शिविर

मेरठ: शास्त्री नगर समाज अपना तृतीय वार्षिकोत्सव 17 से 19 नवम्बर तक मना रही है। शीर्ष सन्यासी, उपदेशक एवं भजनीक भाग ले रहे है। इसके पूर्व समाज ने मेरठ मेडिकल कालेज के विशेषज्ञो के सहयोग से 15-16 नवम्बर को नि: शुल्क रोगी परीक्षण शिविर की व्यवस्था रखी है।

—गोपालगंज (बिहार): आर्य समाज के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री जगदीश नारायण आर्य, महामंत्री—श्री लक्ष्मीनारायण राय आर्य, मत्री—श्री जंगबहादुर शर्मा व कोषाध्यक्ष—श्री लल्लन चौधरी चुने गये।

—आसनसोल (पं० बगाल): डी ए०वी० स्कूल में सम्पन्न वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान —श्री मृगुनाथ प्रसाद, मंत्री—श्री रामसागर सिंह व कोषाध्यक्ष - श्री विजय कुमार खेतान चुने गये।

—खण्डवा: रमा कालोनी समाज के निर्वाचन मे संरक्षक—श्री हीरालाल आर्य, अध्यक्ष—श्री रामजीवन यादव, मंत्री—श्री अनोखीलाल तथा कोषाध्यक्ष—श्री प्रेमशंकर गढ़ वाल का चुनाव हुआ।

—खण्डवा: गणेशगंज समाज में प्रधान—श्री गया प्रसाद तिवारी, मंत्री—श्रीराम प्रताप श्रीमाली तथा कोषाध्यक्ष—श्री ताराचन्द जैन निर्वाचित हुए।

सर्व-धर्म-सम भाव का प्रतीक

एक गुरुद्वारा यह भी!

—रूपनारायण—

अगस्त मास में हिमाचल प्रदेश नशाबन्दी समिति द्वारा कुल्लू में आयोजित नशाबन्दी कार्यकत सम्मेलन मे प्रदेश के विभिन्न जिलों से कार्यकता आए हुए। थे। उन्होंने हिमाचल में बढ़ती हुई नशाखोरी के प्रति अपनी चिन्ता व्यक्त की और प्रदेश सरकार से अनुरोध किया कि वह आबकारी नियमों का पूरी निष्ठा व सख्ती से पालन करे जिससे नशाखोरी के बढ़ते हुए वेग को रोका जा सके।

सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात समिति के मंत्री रमेश गुप्ता के आग्रह पर मणीकर्ण के प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पवित्र स्थल का दर्शन करने गया। मणीकर्ण अनेक पौराणिक गाथाओ से सम्बन्धित है। किम्बन्दती है कि भगवान शिव और माता पार्वती ने हजारों वर्ष यहां रहकर तपस्या की थी। यह स्थान कुल्लू से लगभग 40 किलोमीटर दूर अनेक सुदूर एव लम्बी घाटियो के अन्त मे स्थित है। इस ऐतिहासिक स्थान पर गर्म पानी के अनेक चश्में मौजूद हैं जिनमे उबलता पानी सदैव निकलता रहता है। ऐसा कहा जाता है कि इन चश्मों में स्नान करने से व इसका पानी प्रयोग मे लाने से अनेक बीमारियां दूर हो सकती हैं। कुल्लू से मणिकर्ण अब द्वारा पहुंचना सरल हो गया है, अब से 20-25 वर्ष पूर्व तक यह स्थल अगम्य माना जाता था। अनेक ऊंची-नीची व कठिन चढ़ाइयों के उपरान्त ही इस पवित्र स्थल पर पैदल चलकर पहुचना सम्भव था।

मणिकर्ण की घाटिया अभी भी देवदार के सैंकडों—हजारों वृक्षों से आच्छादित हैं। देवदार के पेड़ो के अतिरिक्ति कुल्लू के प्रसिद्ध सेव के पेड भी हजारों-लाखों संख्या मे मौजूद हैं। यह दुर्भाग्य है कि हिमाचल प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में ठेकेदारों, जंगल के रक्षकों एवं राजनेताओं की मिली भगत के कारण लाखों पेड़ काट दिए गए हैं जिनके कारण पर्यावरण में भारी असन्तुलन पैदा हो गया है। कुल्लू के आस-पास के पहाड़ियों से भी पेड़ काट दिए गए हैं जिसके कारण कुल्लू में पहले की अपेक्षा अब गरमी पडनी प्रारम्भ हो गई और गरम मौसम में बिजली के पंखे उपयोग मे लाए जा रहे है। ईश्वर का धन्यवाद है कि मणिकर्ण की घाटी अभी भी जंगल के ठेकेदार की कोप दृष्टि से सुरक्षित है।

उस प्राचीन मन्दिर के अतिरिक्त इस पवित्रस्थल पर एक गुरुद्वारे का भी निर्माण किया गया है जिनका नाम गुरुद्वारा रखा गया है।

किसी समय यहां गुरुनानक देव व गुरु गोविन्द सिंह पधारे थे। इस गुरुद्वारे का निर्माण उन्हीं की स्मृति में किया गया है। यह गुरुद्वार बहुत ही सुन्दर है और पांच मंजिल ऊंचा है। गुरुद्वारे में एक विशेष बात यह है कि इसके अन्दर सिख गुरुओं के अतिरिक्त सभी पौराणिक हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरें सैंकड़ों की संख्या मे प्रदर्शित हैं। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त इस्लाम, बौद्ध एव ईसाई धर्मों से सम्बन्धित भी अनेक चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी का भी एक सुन्दर चित्र प्रदर्शित किया गया है।

इस ऐतिहासिक गुरुद्वारे के संस्थापक तथा संचालक सन्त नारायण हरजी हैं जो लगभग पिछले 40 वर्षों से मणिकर्ण में ही निवास कर रहे हैं। अब इनकी आयु लगभग 80 वर्ष की होगी। इनके सत्प्रयत्नों से ही इस विशाल एवं भव्य गुरुद्वारे का निर्माण सम्भव हो सका है। इस गुरुद्वारे में लगभग दो हजार यात्रियो के ठहरने एव भोजन इत्यादि की व्यवस्था सर्दैव नि: शुल्क उपलब्ध रहती है। एक बहुत ही अच्छी गौ-शाला का सचालन भी किया जाता है जिसमें अच्छी नस्ल की लगभग 20-25 स्वस्थ्य गाएं रहती है। जो गाएं दूध नही देती उनकी भी श्रद्धापूर्वक सेवा की जाती है। गुरुद्वरे की भोजन व्यवस्था मे केवल गाय के घी का ही प्रयोग किया जाता है।

आजकल धार्मिक असहिष्णुता के युग मे मणिकर्ण स्थित इस गौरवशाली गुरुद्वारे से प्रेरणा से प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है कि किस प्रकार यह धार्मिक स्थान सर्वधर्म समभाव के आदर्श का पालन करते हुए मनुष्य मात्र के कल्याण में निरन्तर रत है। इस गुरुद्वारे मे ग्रन्थ साहिब के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मों से सम्बन्धित ग्रंथ भी आदरपूर्वक प्रदर्शित और उनका बहुत ही श्रद्धापूर्वक सम्मान किया जाता है। काश! इस देश के अन्य धार्मिक स्थल भी मणिकर्ण गुरुद्वारे साहिब से प्रेरणा लेकर देश को धार्मिक असहिष्णुता से बचाने का कार्य करते जिसमें इस देश की अखण्डता को सुरक्षित रखना सम्भव हो सके।

ऐतिहासिक गुरुद्वारा हर भारतवासी के लिए प्रेरणा का स्थल है जहां जाकर वे सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की शिक्षा प्राप्त कर इस देश को विघटनकारी शक्तियों से रक्षा करने में सक्रिय हो सकेंगे।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र ओ३म् कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये	विदेश में २० पौ० या ५० डालर	वर्ष ४७, अंक ४७ रविवार, १८ नवम्बर १९८४	दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु०	इस अंक का मूल्य—५० पैसे	सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६०	मार्ग शीर्ष कृष्णा १०, २०४१ वि०

'इस कलंक को हम अपने कर्मों से ही धो सकेंगे'

आर्यसमाज की शोकसभा में श्री बलराम जाखड़ के उद्गार

नई दिल्ली, 11 नवम्बर । "यह विधि का विधान है या हमारे कर्मों का फल है। ऐसा लगता है कि जैसे सारे ससार का गतिचक्र रुक गया है। वे भारतीयता का जीवत प्रमाण थी, वे युगमानवी थी। आज वह घटना स्मरण आती है जब हरिदास जी का घोडा एक डाकू ने भिखारी बनकर चुराया था, तब हरिदास ने कहा था कि भाई किसी को यह मत बताना कि तुमने यह घोडा दीन भिखारी बनकर चुराया है, नही तो जनता गरीबों पर विश्वास करना छोड देगी। आज यही तो हुआ। मेरा पजाब, जहा लाजपतराय, मदनलाल ढीगरा और भगतसिह जैसे लोग हुए, वहा के आदमी ने यह जघन्य अपराध किया। इस कलक को हम अपने माथे से किस प्रकार धो सकेंगे। इसे तो धोना होगा शुद्ध आत्मा से, कर्म से और अपनी तपस्या से।" ये उद्गार प्रकट करते हुए श्री बलराम जाखड भावविह्वल हो उठे और वस्तुतः उनकी आखो मे आँसू बरसने लगे थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दीवानहाल मे अयोजित इन्दिरा जी की शाक सभा मे बोल रहे थे।

केन्द्रीय ऊर्जा मन्त्री पी० शिवशकर ने बुद्धिजीवियो से अनुरोध किया कि वे आत्ममथन करके ऐसे वातावरण का निर्माण करे जिससे लोगों मे आपसी सद्भाव और शान्ति का वातावरण निर्मित हो सके।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि अखंडता, प्रभुसत्ता और राष्ट्र की एकता के लिए इन्दिरा जी ने अपने आपको होम कर दिया। मरते-मरते वे अब रक्तबीज के सिद्धांत को साक्षात कर गई। भारतमाता का कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता।

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश ने सन 1930 मे इलाहाबाद की वानरसेना का स्मरण करते हुए कहा श्रीमती गाधी ने भारत की राजनीति मे एक चमत्कार दिखाया है। समय बताएगा कि इन्दिरा ने वह कुछ किया जो और कोई दूसरा नही कर सकता। पूर्व संसद सदस्य श्री शिव कुमार शास्त्री ने कहा उस वीरांगना के लिए इससे बढकर कोई मौत नही हो सकती थी कि वह देश के लिए बलिदान हो जाए।

दैनिक हिन्दुस्तान के सपादक श्री विनोद कुमार मिश्र ने विश्वास प्रकट किया कि आगामी समय मे हम सब मिलकर श्रीमती इन्दिरा गाधी के बनाए हुए मार्ग पर चलते हुए देश को ऊंचा उठायेगे।

नवभारत टाइम्स के प्रमुख सवाददाता श्री दीवान द्वारिका खोसला ने श्रीमती इन्दिरा गाधी को राष्ट्रमाता की सज्ञा देते हुए अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्रद्धाजलि सभा मे एक प्रस्ताव भी पारित किया गया जिसमे यह माग की गई कि साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वाली राजनीतिक संस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए तथा उन सिख बुद्धिजीवियों की भर्त्सना की जानी चाहिए जो कहते है स्वर्णमदिर की कार्यवाही से सिखो की भावनाओ का भड़कना कि स्वाभाविक था। अन्त मे दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्य देव जी ने मान्य नेताओ का विश्वास दिलाया कि श्री राजीव के नेतृत्व मे राष्ट्रोत्थान के कार्यों मे आर्यसमाज सदैव की भाति अपना सहयोग करते रहेगा। इस अवसर पर चादनी चौक क्षेत्र के पुलिस अधिकारियो श्री ओ० पी० तिवारी, एस० एच० ओ० और श्री एच० एन० कपूर, ए० सी० पी० के जनता की जानमाल की रक्षा करने तथा धार्मिक स्थानो को कोई क्षति न पहुचने देने के लिए सराहना की गई।

—धर्मपाल महामंत्री

प्रणामांजलि

—"प्रणव" शास्त्री, एम० ए०

विश्व ज्योति हे इन्दिरा गांधी ! तुमको बारम्बार प्रणाम।
मानवता की प्रबल पोषिके ! तुमको बारम्बार प्रणाम।
तू कमला ममता सी माता की गोदी मे खेली थी।
जनक जवाहर लाल-प्यार मे तू करती अठखेली थी।।
राजनीति बन गई इसलिए तेरी सौम्य सहेली थी।
आँगन मे तेरे लहराती लता सफलता ललिम ललाम।
तेरे गुण गाम्भीर्य वारि की सागर ने थाह न पाई।
राजनीति को देख उच्चता हिमगिरि की थी शरमाई।।
चतुर्दिशाओ मे बाजी थी विश्वशान्ति की शहनाई।
धरा धीरता में भी पीछे नही कभी भी आठों याम।
तेरे पुण्य प्रयासों से ही जगी देश की आशाएं।
लगी नाचने निर्माणों की उन्नति की वे परिभाषाएं।।
विपज्जालमय शत्रु-व्यूह की निष्फल कीं सब अभिलाषाएं।
विजयी शंख बजाया तूने बंग देश का कर सग्राम।
लुक सकता था सूर्य कभी पर तू न कभी लुक सकती थी।
झुक सकता हिमराज कभी पर तू न कभी झुक सकती थी।।
रुक सकता था वायु वेग पर तू न कही रुक सकती थी।
क्योंकि लिया था मन्त्र पिता से जीवन में आराम-हराम।
अभी-अभी तो रौंदा तूने भीषण अत्याचारों को।
मानवता की छाती पर उन होते तीव्र प्रहारों को।।
अमृतसर में रोक दिया था बहती विष की धारों को।
हर मन्दिर की सास जपेगी दुर्गे तेरा नाम प्रकाम।
जाते-जाते भी तो तूने रक्त-धार से सींचा है।
भारत मां की आखों का ध्रुव तारा बरद बगीचा है।।
किन्तु दैव ने सूनापन यह क्यो कर यहां उलीचा है।
जन-मन-गण की हृदय कोकिला ने साधा है मौन विराम।
बन पाषाण-हृदय हम सबने तुझे विदाई दे डाली।
बहुत दूर हा चला गया है, इस उपवन का वह माली।।
जिसने दी खुशहाली लाली जिसने दी थी हरियाली।
"प्रणव" राष्ट्र की श्रद्धा अर्पित चरणों में तेरे अभिराम।।

पता—शास्त्री सदन, रामनगर कटरा, आगरा-६

आओ सत्संग में चलें

उपासना-योग क्यों करें

ब्र० आचार्य आर्यनरेश वैदिक प्रवक्ता

जैसे घर के निर्माण से शरीर का नंगापन दूर नहीं होता, उसके लिए पृथक् वस्त्र चाहिए। रोटी से भूख तो हटती है पर प्यास के लिए पानी चाहिए। इसी प्रकार घर, वस्त्र, रोटी, पानी तथा लौकिक परोपकार कार्य के होते हुए भी आत्मिक शान्ति के लिए योग अवश्य चाहिए।

समान शील वालों में मित्रता होती है। आत्मा भी निराकार मित्र को ही चाहता है। आत्मा न बदलने वाला और सदा से रहने वाला है, अतः उसका मित्र भी कभी न बदलने वाला (बूढ़ा न होने वाला) और न मरने वाला होना चाहिये। यह चेतन है, अतः वह मित्र भी चेतन होना चाहिए। यह आनन्द प्राप्ति के लिए जिस मित्र को ढूंढता है वह निराकार चेतन मित्र आनन्द का भी भण्डार होना चाहिए, क्योंकि जीवात्मा स्वयं निराकार है अतः इसको वह आनद भी निराकार से ही मिलना चाहिए। सो यह सत्य सिद्ध होता है कि जीवात्मा का वह मित्र केवल निराकार, चेतन, आनन्द-स्वरूप, सर्वव्यापक ईश्वर ही हो सकता है, दूसरा नहीं। अतः सभी मनुष्यों को प्रतिदिन सच्चे सुख के लिये योग साधना अवश्य करनी चाहिए। इसको छोड़ कर दुखों से बचना कठिन है।

योग साधन से लाभ :—

1. इससे मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, सबल, सरल, निर्भीक व कठिन से कठिन कार्यों मे सफलता प्राप्त करता है। (योगदर्शन)

2. बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु के दुःख से कोई पार नहीं होता। (स० प्र० 7 समु०)

3. उत्तम (उपासनादि) कर्म करने से मनुष्यों मे उत्तम जन्म और मुक्ति में महाकल्प पर्यन्त जन्ममरण दुःखों से रहित होकर आनन्द मे रहता है।—(नवम समु० सत्यार्थप्रकाश)

4. जो आकाश के समान व्यापक सब देवों का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य नहीं मानते और उसका ध्यान नहीं करते वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर मे डूबे ही रहते हैं। (7 समु० स० प्र०)

5. ईश्वर का ध्यान यह पूर्ण विद्या है। यह सारी विद्याओं का मूल है। किसी देश मे इस विद्या का ह्रास होने से उस देश को दुर्दशा आ घेरती है।—

6. जिस राज्य में मनुष्य लोग अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते हैं वही देश सुखयुक्त होता है। (ऋ० भा० भूमिका) (ऋषि के पूना प्रवचन)

7. (गृहस्थजन) एक कोश व डेढ़ कोश एकान्त जंगल में जा के योगाभ्यास की रीति से परमेश्वर की उपासना कर सूर्योदय पर्यन्त अथवा घड़ी आध घड़ी दिन चढ़े तक घर में आके सन्ध्योपासना यज्ञादि कर्म प्रतिदिन नियम से करें। (संस्कार विधि ग्र० आ० प्र०)

8. यह उपासना योग दुष्ट मनुष्य को सिद्ध नहीं होता क्योंकि जब तक मनुष्य दुष्ट कामों से अलग होकर अपने को शान्त और आत्मा को पुरुषार्थी नहीं करता तब तक कितना पढ़े वा सुने, उसको परमेश्वर की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। (स० प्र० 7 समु०)

9. जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। उससे इसका फल पृथक् होगा परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा, कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरावेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। (समु० 7 स० प्र०)

10. क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे हैं उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है।

11. जब मनुष्य को ज्ञान होता है तब वह ठीक-2 जानता है कि मैंने अनेक बार जन्म मरण को प्राप्त होकर नाना प्रकार के हजारह गर्भाशयों का सेवन किया। अनेक प्रकार के भोजन किए, अनेक माताओं के स्तनों का दुग्ध पिया, अनेक माता पिता और सुहृदो को देखा, मैंने गर्भ में नीचे मुख इत्यादि नाना प्रकार की पीड़ाओं में युक्त होके अनेक जन्म धारण किए। (ऋ० भा० भूमिका)

12. परंतु अब इन महा दुःखो से तभी छूटूंगा कि जब परमेश्वर में पूर्ण प्रेम और उसकी आज्ञा का पालन करूंगा, नहीं तो इस जन्म मरण रूप दुःख सागर के पार जाना कभी नहीं हो सकता। जो केवल भांड़ के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता है और अपना चरित्र नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है। (ऋ० भा० भूमिका)

13. ईश्वर की स्तुति का फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे ही अपने गुण कर्म स्वभाव (दयालु, न्यायकारी, आनन्दस्वरूपादि) भी करना। (स० प्र०)

14. उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है। विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओं के शोक और आनन्द दोनों नहीं होते। (ऋषि के पूना प्रवचन)

15. उपासना के द्वारा आत्मा में सुख का प्रादुर्भाव होता है। इस उपाय को छोड़कर पाप नाश करने के लिए अन्य उपाय नहीं हैं। —(ऋ० पूना प्रवचन)

16. आत्मा मनुष्य में अद्भुत् कार्य कर सकता है। संसार मे (ईश्वर से पृथिवी तक) सभी पदार्थों के स्वरूप गुणों को जानकर मनुष्य अत्यन्त दूर के पदार्थों के दर्शन श्रवण आदि की शक्ति प्राप्त कर सकता है जिसे प्राप्त करने में प्रायः असमर्थ रहता है।

—(ऋषि का पत्र व्यवहार 156)

17. इससे सब मनुष्यों को उचित है कि सब कामों मे इस काम को मुख्य जानकर पूर्वोक्त प्रातः सायं दोनो समयो में जगदीश्वर की उपासना नित्य करते रहे। —(पच महायज्ञ०)

18. जिससे दुखसागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण विद्या, सत्सग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ विद्यादानापि शुभ कर्म हैं उसी को तीर्थ समझता हूं इतर जल. स्थलादि को नहीं।

19. जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं सन्ध्योपासना को नहीं करता, उसको शूद्र के समान समझकर द्विजकुल (ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा) से अलग करके शूद्र कुल में रख देना चाहिए। —(मनु०)

20. इसी संसार में जो नरक रूपी रोगों की शरीर एवं कर्म रूपी औषधि रहते नरक (दुःख) को दूर नहीं करता, वह नरक की शरीर रूपी औषधि छूट जाने पर क्या करेगा? —(भोज)

21. जब तक यह शरीर स्वस्थ है, जब तक बुढ़ापा दूर है, जब तक इन्द्रियों में शक्ति है और जब तक मृत्यु दूर है, तब तक ही आत्मचिंतन तथा ईशोपासना का समय है। नहीं तो घर को आग लगने पर कुंआ खोदने से कुछ लाभ नहीं होगा। —(भर्तृहरि)

22. ईश्वर की प्राप्ति ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है और उसकी प्राप्ति के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। अधिक परिश्रम के लिए अधिक बल चाहिए। जीवन में अधिक बल जवानी में होता है। इसलिए ईश्वर की उपासना का सबसे अच्छा समय यौवन काल ही है, न कि बुढ़ापा। (आर्यनरेश)

नोट—विशेष जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक *'योग पथ'*—*Secret steps to Dhyan yoga, which is internal concentration of mind.* पढ़ें पर ध्यान रहे कि अण्डें, मांस, शराब, केक, सिग्रेट, तम्बाकू, चाय, काफी, लालमिर्च, प्याज, लहसुन, गंदे उपन्यास, भोगविलास, अश्लील चलचित्रों मे स्वाद लेने वाले व्यक्ति इस उपासना योग में सफल नहीं हो सकते। इस मार्ग पर केवल वही व्यक्ति सफल हो सकता है जो वेद मार्ग पर चलता हुआ शारीरिक, आत्मिक एवं राष्ट्रीय कल्याण के लिए ही जीता, खाता-पीता, देखता-चलता-विश्राम करता है।

पता—49 ज्ञान सदन, माडल बस्ती, दिल्ली-110005

सैनिक कार्यवाही के विरोध में पद्मश्री उपाधि वापिस

पिंगलवाड़ा, अमृतसर के संस्थापक वयोवृद्ध समाजसेवी भगत पूर्ण सिंह ने स्वर्ण मन्दिर परिसर में छिपे हुए गुण्डे आततायियों को निकालने के लिए सरकार की सैनिक कार्यवाही पर रोष व्यक्त करने में पिछले दिनों अपनी पद्मश्री की उपाधि, (अपंगों की सेवा हेतु) विरोध पत्र सहित राष्ट्रपति को वापस लौटा दी है।

भगत पूर्ण सिंह जैसे समाजसेवी का, जिन्हें सभी पन्थ अपना समझते थे और आदर भी करते थे, उपाधि लौटाना जहां खेदजनक है वहां यह केशधारी हिन्दुओं (सिखों) की अलगाववादी मनोवृत्ति का भी परिचायक है। लगता है कि सिख पन्थ का प्रत्येक व्यक्ति सिख पन्थ के अनुयाइयों द्वारा किये जा रहे जघन्यतम अपराधों को भी न बुरा मानता है और न उनकी निन्दा करता है बल्कि उनके रोकने के लिए उचित तथा आवश्यक कदमों के ही विरुद्ध बोलने लगता है

—बिशनस्वरूप, ३३१४ बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नई दिल्ली-५

कृतघ्न

कृतघ्नो मित्रघाती च शृगालवृकजातिषु ।
कृतघ्नः पुत्रघाती च स्थावरेष्वेव तिष्ठति ।।
—महाभारत

कृतघ्न और मित्रघाती मनुष्य गीदड़ और भेड़ियों की योनि में जन्म लेता है। अधिक कृतघ्न और पुत्रघाती मनुष्य स्थावर योनि में जन्म लेता है।

सम्पादकीयम्

हिम्मत है तो चुनौती का जवाब दो

इन्दिरा गांधी की हत्या ने सारे देश को ही नहीं, बल्कि सारे संसारको एक बात सोचने के लिए बाध्य कर दिया है। उस बात की तरफ ब्रिटेन की प्रधानमंत्री श्रीमती मार्गरेट थैचर ने कुछ संकेत किया है, पर वे कहां तक उसका निदान कर पायेंगी, यह कहना कठिन है। श्रीमती थैचर भी शायद उस बात का संकेत इसलिए कर सकीं क्योंकि श्रीमती इन्दिरा गान्धी की हत्या से कुछ ही दिन पूर्व एक होटल पर बम फेंक कर उनकी हत्या का भी प्रयत्न किया गया था। इस युग-मानवी की निर्मम हत्या के तुरन्त बाद राष्ट्र जैसे जड़ीभूत हो गया था और तात्कालिक गुस्से का गरम लावा अचानक देश की शिराओं में बह उठा था। अब वह कुछ ठण्डा पड़ा है और 11 नवम्बर को इन्दिरा गान्धी की अस्थियों के हिमालय के शिखरों पर विसर्जन के साथ राष्ट्रीय शोक दिवस समाप्त हो जाने के बाद अब उस बात पर विचार करना बहुत आवश्यक हो गया है। वह बात क्या है ?

प्रायः सभी समीक्षकों ने इन्दिरा गान्धी की हत्या की तुलना महात्मा गांधी की हत्या से की है। जहां तक गोली मारकर हत्या करने का प्रश्न है, वहां तक तो यह समानता ठीक है और महात्मा गान्धी तथा इन्दिरा गान्धी की हत्या अपने आदर्शों पर अडिग रहने के कारण हुई, यह बात भी सही है। परन्तु विश्वासघात की जो पराकाष्ठा इस हत्या में उजागर हुई है, वह अभूतपूर्व है, अदृष्टपूर्व है और इतिहास में अश्रुतपूर्व है।

इस विश्वासघात को जब तक मानवीय चेतना सजग है तब तक कभी क्षम्य नहीं समझा जा सकता। इसी अक्षम्य कोटि में वे लोग भी आते हैं जिन्होने इन्दिरा गांधी जैसी महतो महीयसी महिला की इस विश्वासघातपूर्ण हत्या पर—जिसे राष्ट्रपति ने सही शब्दों में 'मानवता के प्रति अपराध' कहा है—खुशियां मनाई थीं। आश्चर्य की बात यह है कि जनता के आकस्मिक उबाल पर तो चारों तरफ से निन्दा प्रस्ताव मुखरित हो उठे, परन्तु हत्या पर खुशी मनाने वालों के विरोध में कुछ उसी ढंग की चुप्पी साध ली गई जिस ढंग की चुप्पी भिंडरांवाले और उसके द्वारा तैनात मरजीवड़ों के द्वारा की गई हत्याओं पर साध ली गई थी। इसी अक्षम्य कोटि में हम उन ग्रन्थियों को भी गिनते हैं जिन्होंने संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र की महान् नेता की हत्या पर न केवल शोक प्रकट करने से इन्कार कर दिया बल्कि अखबारों में प्रकाशित अपने उस ढंग के बयान का भी खण्डन कर दिया। सच बात तो यह है कि देश मे जो हिंसा का नग्न ताडव हुआ, वह बेशक गलत था और नही होना चाहिए था, परन्तु उसको भड़काने में सबसे बड़ी जिम्मेवारी उन ग्रन्थियों की और उन पथ-भ्रांत सिख बन्धुओं की है जिन्होंने ऐसी निर्मम हत्या पर भी मिठाई बांट कर और दिवाली मना कर अपनी हृदयहीनता का परिचय दिया।

साम्प्रदायिकता का विष कितना घातक हो सकता है, उसका एक नमूना सन् सैंतालीस में देश विभाजन से पूर्व और उसके तुरन्त बाद हम देख चुके है। उस साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर महात्मा गांधी का बलिदान हो गया और इसी साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर इन्दिरा जैसी साहसी, निर्भीक और अदम्य पौरुष वाली महिला भी बलि चढ़े बिना नहीं रह सकी। पाठक भूले नही होंगे कि महात्मा गांधी की हत्या के बाद सारे महाराष्ट्र में ब्राह्मण विरोधी लहर चल पड़ी थी। ब्राह्मणों के घर और सम्पत्ति फूंक दी गई थी, क्योंकि महात्मा गांधी की हत्या करने वाला नाथूराम गोडसे महाराष्ट्रीय ब्राह्मण था। महात्मा जी के बलिदान के पश्चात स्वयं सरदार पटेल ने—जो कि उस समय गृहमंत्री थे—राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी संस्था पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, क्योंकि नाथूराम गोडसे का अपने यौवन के आरंभिक दिनों में कभी संघ से कुछ सम्बन्ध रहा था। हालांकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजनैतिक पार्टी नहीं थी (और उसके समर्थन से बनने वाली राजनीतिक पार्टी—जन संघ—का तब तक जन्म नहीं हुआ था)। परन्तु गांधी हत्या से उत्पन्न जनाक्रोश और सरकारी कोप का दुष्परिणाम संघ को भोगना पड़ा।

अब क्या देश में साम्प्रदायिकता का विष समाप्त हो गया है ? क्या देश के राजनेताओं में इतनी हिम्मत है कि वे इस साम्प्रदायिकता के विष को समाप्त करने के लिए कोई कड़ा कदम उठा सकें ? अगर इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या के पश्चात् भी देश की जनता में यह हिम्मत नहीं आई, तो शायद भविष्य में कभी नही आयेगी। सारे देश के निवासियों की समझदारी को और भविष्य को सुरक्षित रखने की आकांक्षा को यह चुनौती है। अगर इस चुनौती का हमने सही ढंग से जवाब नही दिया तो देश का भविष्य सदा अंधकारमय बना रहेगा। क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों के लिए हम देश के भविष्य से कब तक खिलवाड़ करते रहेंगे ?

हम जानते हैं कि राजनीतिक नेताओं के सामने भी कई मर्यादाएं होती है। उनके सामने सबसे बड़ी जिम्मेवारी देश के सभी वर्गों मे तालमेल की होती है। पर हम क्षणिक शांति के प्रलोभन में दूरगामी शांति की सदा उपेक्षा करते आये हैं। यही हमारी राजनीति की सबसे बड़ी विडम्बना है। हम समझते है कि संसार भर की मानवता को दहला देने वाली इंदिरा गांधी की इस हत्या ने हमारी आंख में अंगुली डालकर उस भयंकर विषधर सर्प की तरफ इशारा कर दिया है और बता दिया है कि यदि इसका फण नहीं कुचलोगे तो यह अपने जहरीले डंक से समस्त राष्ट्र के शरीर में अपने प्राणघातक विष का प्रवेश कर देगा। अब समय आ गया है जब साम्प्रदायिकता के इस सांप को कुचलने के लिये हम सब तरह से संनद्ध हो जाये। अब इस साम्प्रदायिकता के साथ उग्रवाद भी मिल गया है। श्रीमती थैचर ने राजनीति मे दिनप्रतिदिन बढ़ते इसी उग्रवाद के खतरे की ओर संकेत किया था।

स्वतंत्र भारत के संविधान मे जहां प्रजातंत्र व समाजवाद को स्थान दिया गया है वहां सम्प्रदाय निरपेक्षता को उसका बुनियादी सिद्धान्त रखा गया है। जब तक अंग्रेज थे तब तक न हमारा संविधान था और न ही उसमें सम्प्रदाय-निरपेक्षता का यह नियामक सिद्धान्त था। इसलिए आजादी से पहले अंग्रेजो की "फूट डालो और राज करो" की नीति के कारण जाने-अनजाने जो गलतियां हमसे हो गई, स्वतंत्र भारत मे उनको दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन हम दोहराते आये है। यही देश का दुर्भाग्य है। सम्प्रदाय निरपेक्ष राष्ट्र मे किसी भी सम्प्रदाय विशेष के नाम पर आधारित दल को राजनैतिक मान्यता नही देनी चाहिए, यह कौमनसेंस की बात है। पर जैसे कि कहावत है—"कामन सेंस इज दि मोस्ट अनकामन थिंग इन दिस वर्ल्ड"—वह हम पर पूरी उतरती है। हमने मुस्लिम लीग और अकाली पार्टी जैसी साम्प्रदायिक पार्टियों को राजनैतिक मान्यता दी, उनको चुनाव लड़ने का अवसर दिया और देश में साम्प्रदायिकता की विषबेल राष्ट्र के वटवृक्ष के स्कन्ध के ऊपर जा चढ़ी। गलती तो हमारी ही थी। यदि अब भी हम इस गलती को नही सुधारेंगे तो कब ?

देश के जन-जन से और देश के प्रधानमंत्री से लेकर प्रत्येक राजनेता से हम कहना चाहते हैं कि देश के संविधान में से सम्प्रदाय निरपेक्षता के सिद्धान्त को निकाल दो और उसके बाद भले ही तुम मुस्लिम लीग और अकाली पार्टी जैसी साम्प्रदायिक पार्टी को मान्यता दो, किन्तु जब तक संविधान में संप्रदाय निरपेक्षता का सिद्धान्त स्वीकृत है तब तक किसी को भी किसी सम्प्रदाय विशेष के नाम से निर्मित किसी पार्टी को राजनीतिक मान्यता देने का अधिकार नही है।

अब तक ऐसा होता आया है—यह कहना सर्वथा निरर्थक है। हम देश के जनगण का आह्वान करते हैं। इन्दिरा गांधी जैसी लोकप्रिय नेता की नृशंस हत्या ने यह स्वर्ण अवसर दिया है कि मुस्लिम लीग और अकाली दल को राजनीतिक मान्यता समाप्त की जाय। हमें विश्वास है कि हमारी आवाज बहरे कानो पर नही पड़ेगी। इन्दिरा जी की निर्मम हत्या के बाद यही चुनौती देश के सामने है, जिसका जवाब देने की हिम्मत उसे जुटानी है।

हिमाचल में वेद प्रचार

शिमला (हि० प्र०) आर्य प्रतिसभा के निमन्त्रण पर दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, ने १७ सितम्बर से १५ अक्तूबर तक अपने सारगर्भित भाषणों से हिमाचल प्रदेश में वैदिक संदेश गुंजाया। हिमाचल में अत्यधिक प्रचलित देवी-देवताओं की पूजा को अवैदिक बताकर पुरजोर खण्डन किया। लोअर बाजार शिमला, कसौली, धर्मपुर, सपाटू, अर्की, सुन्दर नगर, मण्डी, कुल्लू आदि समाजों में उल्लेखनीय प्रचार हुआ। पंडित जी ने ब्र० आर्य नरेश आदि के साथ के ठियोग (शिमला) में नवीन आर्य समाज की स्थापना में भी सहयोग दिया। तथा सपाटू और सुन्दर नगर के सनातन धर्म मन्दिरों में आर्य समाज और वैदिक संस्कृति के प्रचार और प्रसार का क्रांतिकारी आंदोलन निरूपित किया।

भारतीयों के आगमन का सार्धशती समारोह

मोरिशस की मेरी एक और यात्रा

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

बम्बई से 2919 मील दूर हिन्द महासागर मे एक छोटा सा टापू मौरिशस है जिसका क्षेत्रफल 720 वर्गमील और घेरा 100 मील का है। यह टापू अपने सौन्दर्य के लिए विख्यात रहा है। 1834 में पहली बार कुछ भारतीयों का यहाँ प्रवेश हुआ था। 1834 से पूर्व अफ्रीका और उस जैसे अन्य देशों में जहां-जहां अरब या यूरोप के लोग पहुंचे, दासत्व की प्रथा थी। उन पर घोर अत्याचार किये जाते थे। 1834 से दो-चार वर्ष पूर्व ही दासत्व प्रथा का उन्मूलन हुआ, और ये काले गुलाम स्वाधीन हो गये। विषुवत् रेखा के दक्षिण साऊथ अफ्रीका से लेकर वेस्ट इण्डीज के टापू, गन्ने, चाय, काफी मकाई आदि अन्नों की खेती के लिए बहुत उपयोगी माने गये। इन खेतो के मालिक यूरोपीय देशो के लोगों ने (विशेषतया अंग्रेज, फ्रांसीसी, डच, पुर्तगाली और स्पेनी) यह अनुभव किया कि बिना मजदूर रखे खेती का काम संभव न होगा। 1834 के निकट भारत मे अंग्रेजी राज्य की नींव जम चुकी थी। विशेषतया मद्रास बंगाल और पूर्वी बिहारमें। अंग्रेजों ने अपने खेतों में काम करने के लिए भारतवर्ष के पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और तमिल प्रान्त से वहां मजदूर भेजने प्रारंभ किये। ये मजदूर आगे जाकर प्रवासी भारतीय कहलाए। इन्होने बड़ी तपस्या से कृषि कार्य किया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् जब इन देशो के रहने वालों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली तब अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों का जन्म हुआ, जिनमें मौरिशस फिजी, ट्रिनिडाड, मलेशिया आदि प्रसिद्ध हैं। मौरिशस में इस वर्ष 1984 मे दासत्व प्रथा के उन्मूलन और भारतीयों के प्रवेश की 150 वीं वर्ष गाठ मनाई गई, जिसमें सम्मिलित होने के लिए भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह और लगभग 300 भारतीय प्रतिनिधि भी पधारे हुए थे।

22 अक्टूबर की सायंकाल मौरिशस की भूमि पर दिल्ली-बम्बई से पहुचे, स्पेशल चार्टर्ड प्लेन में 144 के लगभग भारतीय थे। जहां तक आर्यसमाज का संबंध है, जो प्रतिनिधि मौरिशस गये उनमे मेरे साथ डी०ए०वी० कालेज संस्थान के प्रमुख प्रो० वेदव्यास जी, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेर सिंह जी, समाज सेवियो में श्री चिन्तामणी और हैदराबाद के सुविख्यात बन्देमातरम् भी थे। इनके अतिरिक्त बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा पंजाब के अन्य व्यक्ति भी थे जिनका सम्बन्ध विविध कर्मठ सस्थाओं से था।

राष्ट्रपति का विमान 22 अक्टूबर, दोपहर को वहा पहुंच चुका था, और सायंकाल हमारा चार्टर्ड प्लेन पहुंचा। मौरिशस की जनता और आर्यसमाज के गणमान्य कार्यकर्ताओं ने हमारा स्वागत किया। इस समय मौरिशस में 400 के लगभग आर्यसमाजें हैं, जिनमें से 300 पुरुषों की और 100 महिलाओं की हैं। आर्य सभा और आर्य रवि वेद सभा ये दो विशेष संस्थाएं है जो आर्यसमाज का वहां काम कर रही हैं, और जिनसे अन्य सभी संस्थायें सम्बद्ध हैं।

मौरिशस में 1835 से प्रवासी भारतीय "शर्त बंदी मजदूर प्रथा" के अनुसार आने लगे। मद्रास से तमिल आये, बम्बई से महाराष्ट्री, कलकत्ता से बिहार और उत्तर प्रदेश के। ये सब लोग फ्रांसीसीयों और क्रिओलों की सहायता से मौरिशस राष्ट्र में काम कर रहे हैं।

आर्यरत्न सर शिवसागर राम गुलाम इस समय गवर्नर जनरल हैं तथा अनिरुद्ध जगन्नाथ प्रधानमंत्री। इन दोनों का सम्बन्ध आर्यसमाज से घनिष्ट रहा है। पिछले वर्ष अजमेर की महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आर्य जगत् की ओर से सर्वश्री शिवसागर रामगुलाम, श्री मोहन लाल मोहित पं० वासुदेव विष्णु दयाल और लछमैया आदि कतिपय विशिष्ट व्यक्तियो को आर्यरत्न की गौरवपूर्ण उपाधि दी गई थी मूलशंकर भवन मे गवर्नर जनरल सर शिवसागर रामगुलाम का अभिनंदन किया गया और उनकी देश सेवा और राष्ट्र संचालन के लिए साधुवाद दिया गया। कई वर्ष हुए अलवर में सर शिवसागर रामगुलाम जी आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके थे। म्युनिसिपल कार्पोरेशन के नवीन विशाल भवन मे आर्यसभा और मौरिशस की सभी संस्थाओ की ओर से 28 तारीख को महर्षि दयानन्द निर्वाण शती मनायी गयी और ऋषि दयानन्द को विशेष श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं। इस समारोह में गवर्नर जनरल और प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी पूरे कार्यक्रम मे उपस्थित रहे। तमिल-भाषियों, मराठियों, क्रिओलों और अनेक सम्प्रदायों की ओर से आर्य समाज के कार्य की सराहना की गयी और महर्षि दयानन्द को भावपूर्ण श्रद्धांजलियां प्रस्तुत की गईं। इस अवसर पर मैंने आशीर्वाद देते समय कहा कि 1834 से मौरिशस में पहली बार भारतीय आये, और 1903 के लगभग इस देश मे आर्य सभा की स्थापना की। 1897 ई० में बंगाली सरकारी सेना मौरिशस में आई थी। उस सेना में तिवारी नाम का एक सैनिक भी था, जिसने भारत को लौटते समय 1902 में दो प्रतियां सत्यार्थ प्रकाश की और दो प्रतियां संस्कारविधि की मौरिशस वासियों को भेंट कीं। उनमे से सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि की एक-एक प्रति हाईलैण्ड निवासी श्री भिखारीसिंह के द्वारा श्री खेमलाल जी के हाथ पड़ी। सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि की इन प्रतियों ने मौरिशस में एक नई जान फूक दी। उस समय मौरिशस के भारतीयों को प्रेरणा देने वाली आर्य समाज के अतिरिक्त कोई भी संस्था नहीं थी। न सनातन धर्म सभा थी न हिन्दू सभा। सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि दयानन्द यह स्पष्ट लिख गये हैं कि—'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है" (स० प्र०, समुल्लास 8)। महर्षि दयानन्द की इन पंक्तियों ने भारतवर्ष में स्वाधीनता प्राप्त करने में प्रेरणा दी, और मौरिशस में भी। अब दोनों देश स्वतंत्र यह हैं। स्वाभाविक है कि जहां-जहां आर्यसमाज का व्यक्ति रहेगा उसे अपने देश के प्रति अभिमान होगा, और वह देश की स्वाधीनता का उपासक होगा।

मौरिशस के इतिहास मे आर्यसमाज का विशेष हाथ है। आर्यसमाज ने स्वाधीनता की नींव डाली। शिक्षा प्रसार और समाज-सुधार के कार्य इसने हाथ में लिये। इस सम्बन्ध मे आर्य समाज के जिन व्यक्तियों ने मौरिशस राष्ट्र में विशेष कार्य किया है, उनमे श्री विष्णुदयाल, सर शिवसागर रामगुलाम और मोहनलाल मोहित जी की सेवाएं विशेष उल्लेखनीय रहेगी। आर्यसमाज के पास मौरिशस में इस समय कार्यकर्त्ताओ का अच्छा संघटन है।

यदि आर्यसमाज तथा सत्यार्थ प्रकाश न होता तो मौरिशस में वह उन्नति न होती, जो इस समय दिखाई दे रही है। मौरिशस में आर्यसमाज सबसे अधिक सुसंघटित संस्था है। कोई भी आर्यसमाज की संस्था ऐसी नहीं हैं, जिसमें हिन्दी भाषा का अध्यापन बच्चों को न कराया जाता हो। ग्रामीण बालकों के मुख से वेद के मंत्र, आर्यसमाज के भजन और इसी प्रकार की प्रेरणादायक कविताएं जब हम सुनते थे तो बड़ी प्रसन्नता होती थी। मौरिशस में हर 4-5 मील पर छोटा-बड़ा आर्यसमाज का मन्दिर है। पिछले रविवार को मुझे 3-4 मन्दिरों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ये मन्दिर खेतो के बीच में प्रकृति के सौन्दर्य से सुसज्जित स्थानों पर बने हुए हैं, और इन्ही मन्दिरों से मौरिशस राष्ट्र को प्रेरणा मिली है। साम्प्रदायिक मन्दिरों के माध्यम से ऐसा काम कराया जाना संभव ही न था।

इधर कुछ वर्षों से मौरिशस में भारतीय हिन्दू संघटनों ने भी कुछ काम प्रारम्भ किया है। मैंने गत सप्ताह में दी हुई अपनी सभी वक्तृताओं में इस बात का उल्लेख किया था कि भारतीय संस्कृति जहां उच्च आदर्श और ज्ञान-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध है, वहां उसमें बहुत-सी कुरीतियां, अवैज्ञानिक अनैतिक तत्त्व और अन्धविश्वास भी प्रवेश कर गये हैं। भारत की अच्छी बातों को मौरिशस या अन्य देशों में ले जाना चाहिए, न कि यहां के अन्ध विश्वासों और अनैतिकता को। गत वर्ष निर्वाण शताब्दी के अन्तिम दिवस पर आर्य जनता ने कई संकल्प किए थे, उनमें से दो संकल्प मैंने मौरिशस में जनता को भी दुहरवाये। पहला संकल्प, हम संकल्प करते हैं कि—हमारी ईश्वर में, ईश्वर की सृष्टि में, और ईश्वरीय ज्ञान में सदा निष्ठा या आस्था रहेगी। पांचवा संकल्प—"हम संकल्प करते हैं कि—हम किसी भी स्थिति में, किसी भी परिस्थिति में, किसी भी अवस्था में, किसी लोभ या दबाव मे अनैतिकता और अन्धविश्वासों के साथ समझौता नहीं करेंगे।

मैंने मौरिशसवासियों से कहा कि तुम यह नहीं चाहोगे कि भारत से मलेरिया, प्लेग, चेचक या हैजा मौरिशस में लाए। इसी तरह तुम्हें इस बात से सतर्क रहना है कि भारत से किसी भी प्रकार का अन्धविश्वास या छल-छद्म भी, जैसे मूर्तिपूजावाद अस्पृश्यतावाद, नित्य नये उत्पन्न हुए भगवानों, देवियों और महर्षियों के भ्रामक चमत्कार और कुछ अन्धविश्वास, जैसे फलित ज्योतिष्, हस्त रेखा, ग्रह-उपग्रहवाद, भूत-प्रेतवाद आदि आपके देश मे भारत से न आवें। यह कार्य मौरिशस में आर्यसमाज ही कर सकती है, अन्य कोई साम्प्रदायिक संस्था नहीं।

आज हिन्दुत्व के नाम से मौरिशस में भी कई बुराइयां नये रूप में प्रचलित हो रही हैं। रामलीला में पूछवाला हनुमान, बन्दर के मुख वाले सुग्रीव-बालि, दश सिर वाला रावण पिछले कुछ वर्षों से ही बनने लगा है। आर्यसामजिकों की निष्ठा राम और कृष्ण के आदर्श जीवनों में रही है, न कि रामलीला या रासलीला में। गंगा तालाब ऐसे तीर्थों का निर्माण करना सामान्य हिन्दू अपनी संस्कृति समझता है। मौरिशस में एक प्राकृतिक तालाब को गंगा तालाब का नाम दे दिया गया है। जो पाखण्ड भारत वर्ष में था वही पाखंड यहां भी आरंभ हो गया है। आर्यसमाज की आस्था वेद के मंत्रों को पढ़ने में, और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में है। गंगा तालाब के एक प्रकोष्ठ में आदरणीय स्वामी गंगेश्वरानन्द जी द्वारा प्रकाशित चतुर्वेद संहिता रखी हुई तो है, किन्तु कोई भी हिन्दू संहिता के मंत्रों को पढ़ने के लिए तैयार नहीं है। आर्यसमाज की ही विशेषता है कि उसने मोरिशस के निम्न वर्गीय भारतीयों को गायत्री मंत्र संध्या, अग्निहोत्र यज्ञोपवीत आदि के अधिकार प्राप्त करा दिये हैं। आर्यसमाज की ओर से स्वामी विश्वानन्द जी महाराज, तरुण संन्यासिनी संजीवनी जी, और कुछ मासों से हैदराबाद के वेदभिक्षु जी निरन्तर अच्छा कार्य कर रहे हैं। वेद

(शेष पृष्ठ 11 पर)

मानव समाज निर्माण में महर्षि दयानन्द का योगदान

—प्रि० पी० डी० चौधरी—

शासकीय पराधीनता के साथ भारत वर्ष मानसिक रूप से भी पराधीन हो गया था। 700 वर्ष के मुगलाई शासन तथा 300 वर्ष के अंग्रेजी शासन से संपूर्ण भारतीय समाज का ढांचा पूर्णतया अस्त-व्यस्त हो गया था। कोई भी सूरत ऐसी नजर नहीं आ रही थी जो इस टूटे हुए समाज का पुनर्निर्माण कर सके। ऐसी अवस्था में गीता के

> यदा यदा हि धर्मस्य
> ग्लानिर्भवति भारत।
> अभ्युत्थानमधर्मस्य,
> तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

इस श्लोक को सार्थक करते हुए आज से 160 वर्ष पूर्व गुजरात की पुण्यमयी वीर-प्रसू धरती पर काठियावाड़ के टंकारा नामक स्थान में औदीच्य ब्राह्मण श्री करसन जी तिवारी के घर में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण तथा परिवार के पक्का शिव—भक्त होने के कारण बालक का नाम मूलशंकर रखा गया। वही बालक आगे जा कर ऋषि दयानन्द के नाम से विश्वविख्यात हुआ।

समाज-निर्माण

मानव निर्माण की प्रक्रिया माता के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है। बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वामी दयानन्द ने इस बात को अपने ग्रन्थों में विशेष महत्त्व दिया कि सम्पूर्ण समाज के परिपूर्ण निर्माण के लिए बच्चों का बड़े- छोटों के प्रति व्यवहार, स्वयं के प्रति, समाज के प्रति तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, शिक्षा के अन्दर प्राचीनता तथा नवीनता का समीकरण, परस्पर स्नेह भावना और कर्मों के अनुसार वर्णों की व्यवस्था, जिसके साथ साथ राजा-प्रजा का परस्पर व्यवहार, शासन द्वारा उत्तमता का समर्थन, प्रोत्साहन तथा निकृष्ट कार्यों के लिए दण्ड व्यवस्था, ये सब सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक रूप से जब तक नहीं अपनाये जायेंगे तब तक मानव समाज का सही निर्माण नहीं हो सकता। सत्यार्थ प्रकाश में दूसरा और तीसरा समुल्लास बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के लिए, चतुर्थ समुल्लास गृहस्थ-आश्रम धर्म, वर्ण-व्यवस्था, कर्तव्य-अकर्त्तव्य आदि के लिए, छठा समुल्लास राजा, राज सदस्य, राजनीति, राज्य कर्त्तव्य, दण्ड व्यवस्था के लिए, सप्तम, अष्टम तथा नवम समुल्लास ईश्वर, वेद अध्यात्म और भक्ति के लिए तथा दशम समुल्लास आचार व्यवहार, खाद्य अखाद्य, धर्माधर्म, पशु रक्षण आदि के लिए व्यवस्थाओं का निर्धारण करता है। ये सब बातें मानव समाज के निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

महर्षि ने बहुत ही उत्तम वैदिक समाज-वाद की कल्पना के साथ उचित रूप से आश्रम व्यवस्था के कर्मानुसार पालन को तथा तदनुसार अर्थ व्यवस्था के निर्माण को समाज की सम्पूर्णता के लिए अत्यन्त आवश्यक बताया। क्योंकि ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास यही तो वास्तव में समाज को व्यवस्थित करते हैं। जिस समाज में इन का उल्लंघन हो जाता है वह समाज धन-बल, तथा शासन-बल के होते हुए भी अव्यावहारिक, तथा अस्त-व्यस्त ही रहेगा। जब प्राचीन समय में इस व्यवस्था का उत्तमता से पालन होता था तो मानव समाज में सुख, शान्ति, समृद्धि तथा प्रसन्नता का वास होता था। अब जब कि यह व्यवस्था नहीं है तो सब दु:खी हैं।

स्त्री शिक्षा का महत्व

शिक्षा के साथ-साथ स्वामी दयानन्द सरस्वती ब्रह्मचर्य के भी पूर्ण पक्षपाती थे। वे पुरुषों के साथ साथ स्त्री शिक्षा के भी प्रबल पक्षधर थे। वे उस गलत धारणा को समूल नष्ट करना चाहते थे, जिसके द्वारा पोंगा पण्डितों को यह कहने का अवसर मिलता था—'स्त्री शूद्रौ नाऽधीयाताम्' या 'ढोल गवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।'

स्वामी जी का प्रबल मत था कि परिवार तथा समाज रूपी गाड़ी को चलाने के लिए दोनों पक्षों (पुरुष-स्त्री) को पूर्ण सहमत, ज्ञानवान, परस्पर समर्पण भावना परिस्थितियों के अनुसार आदर्शों को कायम रखते हुए परिवार तथा समाज को चलाना, सन्तानो को उत्तम शिक्षा-युक्त बनाना, ये सब बातें ऐसी हैं जिनमें पुरुष के साथ साथ स्त्री का भी शिक्षित होना अनिवार्य है। स्वामी जी का दृढ़ विचार था कि 'मानव समाज के निर्माण में ब्रह्मचर्य तथा संयम अनिवार्य है। उन्होने ब्रह्मचर्य परिपाटी को वेदशास्त्र तथा आयुर्विज्ञान के आधार पर समझाया। 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम' यह वेद वाक्य स्पष्ट करता है कि पुरुषो के साथ-2 स्त्री का भी ब्रह्मचारिणी होना आवश्यक है।

अनाथों की रक्षा

स्वामी दयानन्द की एक अनुपम देन समाज को यह भी है कि उन्होने शिक्षा के साथ ही असहाय, अनाथ, अबला रक्षण की भावना को समाज मे महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया। जहां स्त्री शिक्षा के लिए उन्होंने विद्यालय, पाठशाला तथा गुरुकुल परिपाटी को विशेष महत्त्व दिया, तथा मनु के द्वारा स्त्री सत्कार को प्राथमिकता देते हुए बताया कि—

> यत्र नार्यस्तु पूज्यंते,
> रमन्ते तत्र देवता:।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते,
> सर्वास्तत्राऽफला: क्रिया: ॥

यदि छोटी-छोटी बच्चियो, विधवाओं अबलाओं, परित्यक्ताओं का भली प्रकार से रक्षण न होवे तो समाज में व्यभिचार तथा अनाचार भी बढ़ जाएंगे। इसीलिये उन्होंने उस समय के समाज सुधारकों को अनाथरक्षण की भावना को बढ़ाने का सुझाव दिया।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर

स्वयं ही पहल करते हुए ऋषि ने अपने पवित्र कर-कमलो से 1877 मे पंजाब की वीरभूमि फिरोजपुर छावनी मे लाला मथुरा दास जी के सहयोग से आर्य अनाथालय की नींव रखी जो स्वयं में ही पिछले 108 वर्षों का इतिहास है। अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव तथा 1947 ई० की देशविभाजन वाली खूनी होली के बाद आज वह एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है जिसके आश्रय मे हजारों अनाथ, असहाय, बालक-बालिकाएं अपना भविष्य उज्जवल बनाकर इस जाति तथा समाज की सेवा कर रहे हैं। इस अनाथालय का अपना एक अलग ही इतिहास है। श्रद्धायुक्त सेवाभावी सज्जनो ने अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करके अपने खून और पसीने से इसको सीचा है। राय साहिब कोटूराम, दीवान जयकृष्णदास नन्दा; मेहता प्रतापचन्द, जगदीशचन्द्र तलवाड, लाला रामचन्द्र आर्य इत्यादि सामाजिक कर्मठ कार्यकर्ताओं ने पिछले 40 वर्षों में अपना बहुमूल्य सहयोग तथा संरक्षण प्रदान करके इसका विकास किया है। वर्तमान समय में अत्यन्त योग्य प्रशासक, प्रसिद्ध शिक्षाविद् डी० ए० वी० की त्याग-तपस्यामयी परम्परा से युक्त अर्थशुचिता के धनी अति उत्तम सामाजिक कार्यकर्त्ता प्रि० पी० डी० चौधरी, और ममता की साक्षात् मूर्ति कर्मठ कार्यकर्त्री, अधिष्ठात्री के पद को सुशोभित करने वाली श्रीमती संतोष चौधरी इस आर्य अनाथालय रूपी विशाल परिवार को (जिसमें वर्तमान समय में 80 बालक तथा 30 बालिकाएं हैं) सही अर्थों मे माता-पिता का सा संरक्षण देकर संपूर्ण उत्तरदायित्व के साथ परिश्रम करते हुए इसे दिन रात उन्नति के पथ पर अग्रसर करने का महान कार्य कर रहे हैं। परमेश्वर इस दम्पति को चिरायु करे।

स्वामी दयानन्द स्वातन्त्र्य भावना के प्रवर्तक थे। एक राष्ट्र, एक भाषा, स्वाधीनता, स्वदेशी की भावना तथा राष्ट्र स्वातंत्र्य के लिए महान से महान बलिदान की भावना का समर्थन उनके लिए स्वाभाविक ही था। उनके जीवन का कण-कण और क्षण-क्षण राष्ट्र के स्वातन्त्र्य-चिन्तन में लगा रहता था।

भारत एक कृषि-प्रधान तथा ग्राम-प्रधान देश है, इस बात को स्वामी दयानन्द ने समझ कर बहुत पहले ही गौआदि पशुओं के रक्षण की भावना को जन मानस में जगाया। अजमेर में कर्नल ब्रुक्स के साथ गौआदि पशुओं के रक्षण के लिए हुआ वार्तालाप प्रसिद्ध है। उन्होंने 'गो-करुणानिधि' नाम की पुस्तक इसी उद्देश्य से लिखी तथा गोकृष्णादि सभा की स्थापना भी की। दुर्भाग्य है हमारा कि जिस बात को पश्चिमी देश भी इतना महत्त्व देते हैं इधर हमारा कोई ध्यान नही।

मानव समाज पर ऋषि के अनगिनत उपकार हैं। मैं कवि के शब्दों में उपसंहार करता हूं—

> चाहे गिन लो दुनिया के जर्रे,
> या गिन लो चांद सितारों को।
> पर कौन गिनेगा दयानन्द के
> उन अगणित उपकारो को ॥

पता—आर्य अनाथालय, फिरोजपुर (पंजाब)

20 परिवारों की शुद्धि

गोपालगज (बिहार) · शुद्धि सहायक सहयोग समिति, देवापुर ने पिछले दिनो महोपदेशक आचार्य रामानन्द शास्त्री के तत्वावधान मे 20 मुस्लिम परिवारों की शुद्धि की। ग्राम कल्यापुर मे गत माह 30 इसाई बनाये गये हरिजनो मे से करीब 6 लोगों की पुन: शुद्धि की गयी है व शेष के भी वापस लाने का प्रयास हो रहा है।

निर्माण बिहार का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली : निर्माण बिहार समाज ने पिछले दिनों सेंट्रल पार्क मे अपना वार्षिकोत्सव मनाया। यजुर्वेद महायज्ञ के ब्रह्मा थे पं० विश्वमित्र मेधावी। पूर्णाहुति मे श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री सूर्यदेव आदि आर्य नेताओ ने भाग लिया। मध्याह्न में ला० रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में सम्पन्न राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मे श्री सेठी ने समाज को 501 रु० दान दिया तथा सत्यार्थप्रकाश परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र दिये गये।

चतुर्वेद ब्रह्मपरायण महायज्ञ

नई दिल्ली : श्री मद्दयानन्द वेद विद्यालय 18 नवम्बर से 9 दिसम्बर तक अपने स्वर्ण जयन्ती समरोह मे श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ के अलावा प्रतिदिन श्री स्वामी सच्चियानन्द योगी व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के मार्गदर्शन में प्रात: योग साधना, रात्रि मे भजनोपदेश तथा विविध गोष्ठियो व सार्वजनिक सम्मेलनो का आयोजन कर रहा है।

भारत के राष्ट्रपति की मौरिशस पर अमिट छाप

पं० धर्मवीर घूटा, शास्त्री, उपदेशक आर्य सभा मौरिशस, वाक्वा

भारत से राष्ट्रपति श्री जैलसिंह मौरिशस पधारे और इस देश के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ गए। उन का मौरिशस वासियों के बीच 6 रोज तक रहना कम खुशी की बात नहीं है।

वे मौरिशस में जहां भी गये लोगों ने उन की राह में अपनी आंखें बिछा पुष्प वर्षा से उनका स्वागत किया और फूलों की मालाओं से उन्हें सम्मानित किया। ऐसा सुवर्ण अवसर मौरिशस में इससे पहले नहीं आया था।

भारतमाता के प्रति हमारा प्यार अटूट है। हमारा स्नेह कागज पर लिख कर प्रकट नहीं किया जा सकता है। बंबई से मौरिशस तक की यात्रा हमारे पूर्वजों ने कभी की थी। शायद इसलिए इस भू भाग की जनता को शुभाशीर्वाद देने के लिए भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी यहाँ पधारीं, वह भी तीन बार और इस बार भारत के राष्ट्रपति श्री जैलसिंह जी पधारे और मौरिशस टापू के इतिहास का विशिष्ट अंग बनकर चले गये। एक सप्ताह की यह चहल-पहल कौन भूल पायेगा। कड़ी धूप मे हाथों में फूल लिये, चिरकाल तक प्रतीक्षारत खड़े रहे और विभोर होते रहे।

मेरे लिए वह शाम भी गौरवपूर्ण रही जब मैं आर्यसभा के प्रधान श्री मोहन लाल मोहित जी के साथ उनकी मोटर में महामहिम राज्यपाल डा० सर शिवसागर रामगुलाम जी के निवास स्थान पर भारत के राष्ट्रपति से मिलने जा रहा था। हमारे साथ पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी और प्रो० वेदव्यास जी भी थे। पेड़ों की छाया तले श्री जैलसिंह जी और सर शिवसागर रामगुलाम आराम कुर्सी पर बैठे लोगों से बातें कर रहे थे। उसी समय मुझे भी उनके साथ बात करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैंने मौरिशस हिन्दी लेखक संघ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'इन्द्रधनुष' उन्हें भेंटकी। मौरिशस के प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने उनसे मेरा परिचय कराया जिसके लिए मैं उनका आभारी हू।

दिवाली वाले दिन रोजबेल गांव में भारत सरकार की सहायता से निर्माण होने वाले अस्पताल का उन्होंने शिलान्यास किया। हजारों नागरिकों ने उनके दर्शन किये। कुछ वर्षों में इस अस्पताल का निर्माण पूरा हो जायगा। जितने भी रोगी वहां जावेंगे वे राष्ट्रपति की प्रशंसा करते नहीं अघायेंगे और भारत के प्रति अपना आभार जरूर प्रकट करेंगे।

अस्पताल का शिलान्यास

भारत के राष्ट्रपति के साथ भारत से कितने ही लेखक, कवि, कहानीकार, नाटककार, प्रध्यापक, राजनयिक पुरुष भी पधारे थे। उनमें से कुछ का स्वागत आर्य सभा मौरिशस के नवीन भवन महर्षि दयानन्द मार्ग पोर्ट-लुई में किया गया। मौके पर पटना की बहुमन्त्री श्रीमती दुलारी देवी का भाषण बड़ा सारगर्भित और ऐतिहासिक रहा। उन्होंने भारत और मौरिशस में आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये कार्यों का बखान दिल खोलकर किया। तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूंज उठा।

कवि सम्मेलन

महात्मा गांधी संस्थान के भारती कक्ष में हिन्दी परिषद के प्रधान श्री सोमदत्त बखोरी की अध्यक्षता में हुए कवि सम्मेलन में भारत, फिजी तथा अमेरिका से आये हुए प्रतिनिधियों ने ओजपूर्ण कविताएं सुनाई। मौरिशस के कवियों ने भी अपनी कृतियां सुनाई। कविताओं में कितना प्रेम और वात्सल्य भरा था?

महात्मा गांधी संस्थान में ही तो भारत के राष्ट्रपति जी ने फीजी, ट्रिनिडाड, अमेरिका, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, भारत आदि देशों से आए लोगों की एक विचार गोष्ठी का उद्घाटन किया और दिवाली की रात को कान्नबोन में 75 हजार लोगों के सामने दिवाली उत्सव की मंगल कामना प्रदान की। जो लोग समारस्थल में नहीं आ सके वे उसी समय दूरदर्शन के सहारे शेष सारे टापू के लोगों सहित अपने-अपने घरों में बैठे दिवाली के इस अद्भुत दृश्य का आनन्द ले रहे थे।

श्री जैलसिंह के आगमन से मौरिशस में एक नया जोश और नई उमंग जाग उठी। एकता का भाव अधिक बढ़ चला। मौरिशस की जनता की खुशी का तो ठिकाना ही न रहा।

भारत के राष्ट्रपति अपनी वाणी द्वारा यहां एकता की छाप छोड़ गये। उनका सन्देश अपना कर मौरिशस का हरेक नागरिक सही दिशा की ओर प्रगति करे, यही हमारी मनोकामना है।

हैदराबाद के सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी का सम्मान मिलना चाहिए

—रामगोपाल शालवाले—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १९३८ में एक विशाल आर्य महासम्मेलन दिल्ली में लोकनायक माधव श्रीहरिअणे के सभापतित्व में हुआ था। सारे देश के आर्यसमाजी नेताओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय नेताओं ने भी उसमें भाग-लिया तथा आर्य जनता का उत्साह और मनोवल उस अवसर पर तरंगें ले रहा था सब प्रकार के संवैधानिक उपायों के असफल होने पर राष्ट्र नेताओं से सलाह और सहयोग के बाद सन् १९३९ में शक्तिशाली अंग्रेजी सत्ता के परममित्र एवं देशी नरेशों में सर्वोपरि हिज एग्जाल्टेड निजाम सरकार के विरुद्ध सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आर्य समाज ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह चलाया समाज के रियासती कार्यकर्ता उससे पूर्व ही इस मुगलिया वंश के शासकों की सरकार की क्रूर धर्मान्धता अन्याय और अत्याचार के शिकार हो चुके थे। बड़ा कठोर संघर्ष था। परन्तु महर्षि के अनुयायियों और आर्यों के त्याग और बलिदान की भावना ने हार नहीं जानी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान महात्मा नारायणस्वामी महाराज ने सर्वप्रथम सत्याग्रह आन्दोलन का श्रीगणेश किया। इसके बाद राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रधान कुंवर चाँदकरण शारदा, पंजाब से मिलाप के सम्पादक और प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री खुशहालचन्द (आनन्दस्वामी जी) उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राजगुरु, पं० धुरेन्द्र शास्त्री, पंजाब के महाशय कृष्ण, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, गुजरात से पं० ज्ञानेन्द्र के नेतृत्व में हजारों व्यक्तियों ने तथा फीजी, स्याम (थाईलैंड) और बर्मा तक के प्रवासी और सभी प्रदेशों और धर्मावलम्बियों ने इसमें भाग लिया। कुल मिलाकर १२ हजार व्यक्ति जेल पहुंचे और आठवें सर्वाधिकारी बैरिस्टर विनायकराव विद्यालंकार अपने विशाल जत्थे के साथ सत्याग्रह करने वाले थे, तब निजाम ने समाज की माँगों को स्वीकार करके सत्याग्रहियों को रिहा कर दिया। बहुत से आर्य वीर शहीद हुए। स्वर्गीय सरदार पटेल ने ठीक ही कहा था—यदि आर्यसमाज का सत्याग्रह न होता तो निजाम रियासत का भारत में विलय इतनी आसानी से नहीं होता।

स्वाधीनता के बाद आशा थी कि भारत सरकार और राज्य सरकारें इन वीरों का उचित सम्मान करेंगी, यद्यपि आर्यवीरों ने इस कामना से इसमें भाग नहीं लिया था। बाद में सम्मानार्थ पेंशन की योजना भी १९७२ में लागू हुई। उसमें हिंसावादी साम्प्रदायिक आंदोलन, खिलाफत तहरीक, मोपला विद्रोह के अलावा रियासत में नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन के लिए काम करने वाली शेख अब्दुला की मुस्लिम कांफ्रेंस एवं सिखों के धार्मिक अकाली आन्दोलनों, तथा जैतो (नागा) को भी सरकार ने स्वाधीनता सैनानी के सम्मान के लिए स्वीकार कर लिया, परन्तु आर्यसमाज द्वारा अंग्रेजी शासन

(शेष पृष्ठ 10 पर)

इन्दिरा गांधी की हत्या की कड़ी निन्दा :

आर्यसमाजों के शोक प्रस्तावों की भीड़

भारत की दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की कायरता व विश्वासघातपूर्ण हत्या से स्तब्ध व शोकाकुल विश्व आर्य समाज संगठनों ने शोक व संवेदना प्रस्ताव पारित किए हैं। उनका संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है।

लन्दन : आर्यसमाज के अध्यक्ष श्री एस० एन० भारद्वाज ने इंगलैंड स्थित भारतीय उच्चायुक्त के माध्यम से श्री राजीव गांधी को प्रेषित शोक-प्रस्ताव में शताब्दी की महानतम महिला श्रीमती गांधी की जघन्य हत्या को विश्व के सभी शान्ति-प्रिय जनों के लिये तीव्र आघात बताया तथा ईश्वर से कामना की कि श्री राजीव अपने ऐतिहासिक परिवार की परम्परा पर चलकर भारत को समृद्ध, सशक्त व अन्य देशों के लिये अनुकरणीय आदर्श बनाने में सफल रहें।

बम्बई : बम्बई में मांटुगा, घाटकोपर माण्डुप, चेम्बूर, शान्ताक्रुज आदि विभिन्न आर्यसमाजों ने शोक सभाओं में घृणित हत्या की एक स्वर से कड़ी निन्दा की तथा स्थान-स्थान पर शांति यज्ञों द्वारा श्रीमती गांधी की आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की गयीं। शान्ताक्रुज की एक सभा में आर्य-सभा प्रधान श्री ओंकारनाथ आर्य ने कहा कि देश के राजनैतिक कर्णधार यदि महर्षि के मार्ग पर देश को आगे बढ़ाते तो आज यह दुर्दिन न देखना पड़ता।

आगरा : बैनीसिंह वैदिक पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बालूगंज के प्रधानाचार्य ने दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से कामना तथा क्रूर हत्यारों को कड़े दण्ड देने की मांग की। आर्य उ० प्र० सभा आगरा ने सभी स्थानीय समाजों की ओर से हार्दिक शोक व्यक्त किया।

खण्डवा : आर्य समाज, महिला आर्य समाज व शिक्षण संस्थाओं ने दिवंगता प्रधानमंत्री को अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

दिल्ली : लक्ष्मीनगर (विस्तार), मोती नगर, बाजार सीताराम आदि आर्य समाजों ने श्रीमती गांधी की दिवंगत आत्मा की शांति हेतु परमपिता से प्रार्थना करते हुए श्री राजीव गांधी को मौजूदा कठिन परिस्थितियों में देश के भविष्य को संभालने की क्षमता देने की कामना की।

ज्वालापुर (उ० प्र०) : आर्य वानप्रस्थाश्रम की साधारण सभा में स्वर्गीया प्रधानमंत्री पर जघन्य प्राणघातक हमले की तीव्र भर्त्सना करते हुए प्रभु से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना तथा राष्ट्रवासियों को उनके त्यागपूर्ण पथ पर चलने की सामर्थ्य देने की कामना की गयी।

धर्मपुर (सोलन) : सभासदों व सदस्यों ने दिवंगत प्रधानमंत्री की आत्मा की सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना तथा नये प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के प्रति आस्था व्यक्त की।

अहमदाबाद : रायपुर दरवाजा बाहर स्थित आर्य समाज ने एक प्रस्ताव द्वारा आंतकवादियों के प्राणघातक आक्रमण की शिकार स्व० श्रीमती इन्दिरा के देहावसान के प्रति दुःख और क्षोभ व्यक्त करते हुए परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा उनके शोक-संतप्त परिवार-विशेषत : श्री राजीव गांधी को यह वज्राघात सहने व राष्ट्र का मार्ग दर्शन करने की शक्ति देने की कामना की। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा सभी आतंकवादी गतिविधियों की तीव्र निन्दा करते हुए राष्ट्रपति से राष्ट्रद्रोही तत्वों का अपने संपूर्ण अधिकारों द्वारा दमन करने का अनुरोध किया तथा तीसरे प्रस्ताव में विशेषरूप से भारत के नागरिकों से साम्प्रदायिक उन्माद से दूर रहकर देश की एकता व प्रशासन को पूरा सहयोग देने की अपील की है।

फिरोजपुर : शहर समाज के सभी अधिकारियों, सदस्यों व स्थानीय आर्य परिवारों ने स्व० श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या के प्रति गहरा दुःख व चिंता व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा ईश्वर से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा श्री राजीव गांधी व उनके शोक-संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की। बंबई : आर्य सभा अध्यक्ष श्री ज्येष्ठ वर्मन ने दुष्टों के पैशाचिक षड़यंत्र की शिकार स्व० प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या को आकस्मिक वज्राघात बताते हुए तीव्र भर्त्संना की तथा इसे निश्चित रूप राष्ट्र के अस्तित्व पर गहराता संकट कहा। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हुए इस कठिन संकट की घड़ी में श्री राजीव गांधी को राष्ट्रहित में नया उत्तरदायित्व दक्षता से वहन करने की सामर्थ्य देने की कामना की।

उदयपुर : समाज ने श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या तथा मेवाड़ के राणा व विश्वहिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री भागवत सिंह के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया तथा परमपिता से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा परिजनों को विछोह सहने की शक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना की।

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक समाजों के शोक प्रस्ताव भी बड़ी मात्रा में प्राप्त हुए हैं।

क्या ऋषि टंकारा गए थे ?

आर्य जगत् (29 जुलाई) में प्रकाशित प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु ने एक लेख में (पृष्ठ -6, स्तम्भ-2) लिखा है कि "साधू परम्परानुसार कुछ वर्ष (12 या 14) के पश्चात् अपने जन्म-स्थान की फेरी लगाते हैं। तो क्या ऋषि 1874 ई० से पूर्व टंकारा नहीं गए होंगे ? इस पर पूज्य मीमांसक आदि सब विद्वान विचार करें। मेरा निजी मत है कि अवश्य फेरी लगाई होगी ?"

इसी लेख की प्रतिक्रियास्वरुप डा० भवानीलाल भारतीय ने (आर्य जगत्, 26 अगस्त पृष्ठ 6 स्तम्भ-4) लिखा है कि 1864 के पूर्व कभी ऋषि टंकारा गए या नहीं यह खोज का विषय है।

मेरे अनुसंधान का निष्कर्ष है कि ऋषि कन्याकुमारी में नाना साहब से भेंट के उपरान्त टंकारा आदि होते हुए ही (बहुत सम्भव है कि ऋषि ने नाना साहब के मोरवी में निवास की व्यवस्था स्वयं ही की हो, जैसा कि पं० श्रीकृष्ण शर्मा ने लिखा है) 14 नवम्बर 1860 को (गृहत्याग के 14 वर्ष पश्चात्) स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा में पढ़ने हेतु पहुंचे थे। इसका प्रमाण 'सत्यार्थप्रकाश' के 11 वें समुल्लास के ये शब्द हैं कि "जब संवत् 1914 के वर्ष मे तोपों के मारे मन्दिर-मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं तब मूर्ति कहां गई थी ? प्रत्युत बाघेर लोगों ने वीरता की और लड़े। शत्रुओं को मारा। परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो (द्वारिका में) श्रीकृष्ण के सदृश्य कोई होता, तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाये, उसके शरणागत क्यों न पीटे जायें ?"

The History of Kathiawad from the Earliest Times by Capt. H. Wilberforce Bell published in 1980 by Ajay Book Service, Darya Ganj, New Delhi-2 के पृष्ठ- 215 के अनुसार द्वारिका की उक्त घटना दिसम्बर 1859 की है जिससे पता चलता है कि स्वामी जी जब दिसम्बर 1859 के उपरान्त कठियावाड़ (टंकारा, द्वारिका आदि) गए तब वहां उन्हे इस घटना की जानकारी हुई।

नाना साहब की मृत्यु नेपाल में नही हुई बल्कि वे 1894 ई० तक जीवित एवं सक्रिय रहे। इसके प्रमाण इन्दौर के महाराजा होल्कर के तत्कालीन रिकार्ड में उपलब्ध हैं।—आदित्यपाल सिंह, एफ-5/52, चार इमली, भोपाल—19 (म० प्र०)

नवलखा महल राष्ट्रीय-स्मारक घोषित हो

उदयपुर : आर्यसमाज द्वारा मनाया तीन दिवसीय (१३, १४, १५, अक्टूबर ८४) ओसवाल भवन में सम्पन्न हुए ९७वें वार्षिक समारोह में एक प्रस्ताव द्वारा राज्य सरकार से मांग की गई कि जहां महर्षि ने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" रचा था उस 'नवलखा महल' को तत्काल राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर आर्य समाज को सौंपा जावे। समारोह के प्रथम दिन शोभायात्रा निकली। आर्यवीर दल, जोधपुर का व्यायाम प्रदर्शन प्रमुख आकर्षण रहा। तीनों दिन प्रातः यज्ञ, भजन एवं प्रवचन तथा तथा रात्रि को भजन एवं प्रवचन हुए। बाहर से आये हुए विद्वानों ने उदयपुर की जनता को बहुत ही प्रभावित किया। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० कृष्णपाल सिंह अजमेर ने वेद के अनुसार परमेश्वर की सिद्धि वेद से ही बतायी। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कमलेशकुमार (अहमदाबाद) ने अग्निहोत्र, स्वाध्याय की आवश्यकता तथा आचरण पर जोर देते हुये, माताओं को अपने कर्तव्य का बोध कराते हुये संस्कार विधि के अनुसार अपते बच्चों में ऐसे संस्कार डालने की सलाह दी जिससे बच्चे राम, कृष्ण, महाराणा प्रताप एवं शिवाजी बन सकें।

आन्ध्र के स्वामी कर्तव्यानन्द ने मनुष्य को मनुष्य बनने और रामप्रसाद बिस्मिल व असफाकउल्ला खां की तरह हृदय में देशभक्ति की भावना जागृत करने की अपील की। उत्तर प्रदेश के स्वामी श्री शिवानंद ने भजन के माध्यम से देश की दुरवस्था का चित्र खींचते हुए उसे दूर करने पर जोर दिया।

अध्यक्ष पद से बोलते हुये मण्डलेश्वर महन्त मुरलीमनोहर शरण ने मनुष्य के आचार एवं विचार पर जोर दिया।

समारोह में ब्रजमोहन जावालिया ने जनता को सम्मेलन को सफल बनाने एवं तन-मन-धन से सहयोग देने के लिये धन्यवाद दिया।

लगनशील उपदेशक चाहिये

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश को विद्वान् तथा अनुभवी उपदेशकों, तथा आर्य सिद्धान्तों के ज्ञाता व्यवहार कुशल भजनोपदेशकों की आवश्यकता है। वेद प्रचार में पूर्ण आस्था वाले महानुभाव निम्न पते पर प्रार्थना पत्र भेजें—चमनलाल शर्मा, सभा मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश, आर्य समाज, लोअर बाजार, शिमला (हि० प्र०)

पत्रों के दर्पण में

क्या भगवान राम के अनेक पत्नियां थीं ?

देश के कई दैनिक पत्रों में (1 अक्तूबर) इंगलैंड के प्रो० जे० एल० ब्रोकिंग्टन के विचार छपे हैं कि राम बहुपत्नीक थे। उक्त डा० एडिनबर्ग विश्वविद्यालय मे सस्कृत शिक्षक हैं। उनके चिन्तन से स्पष्ट है कि उन्होने संस्कृत भी अंग्रेजी में ही पढी है। उनका कहना है कि लंका की अशोक वाटिका मे कैद सीता कल्पना करती हैं कि बनवास से लौटकर राम साकेत मे 'अनेक रमणियों के साथ सुख भोग करेंगे'। इससे यह कहा सिद्ध होता है कि उनकी अन्य पत्नियां भी थी। यह तो मात्र स्त्री के सहज स्वभाव की शंकालु प्रवृत्ति मात्र का द्योतक है। दूसरा उदाहरण डा० ब्रोकिंग्टन ने दिया है कि मन्थरा केकई को उकसाती है, "निश्चय ही भरत के पतन पर राम की सुन्दर स्त्रियां हर्षित होंगी और तुम्हारी पुत्रवधू दुखित होंगी'। यहां मन्थरा मात्र असत्य का सहारा लेती है। विलासी व्यक्ति कभी तप और त्याग की प्रतिमूर्ति बन कर वनवास नही कर सकता। यहां सुन्दर स्त्रियों से अभिप्राय उन कलाकार स्त्रियों से है जो दशरथ के महलों में कार्यरत थीं।

तीसरा उदाहरण डा० महोदय ने दिया है कि अयोध्या में वापसी के बाद राम के राज्याभिषेक की तैयारियों मे शत्रुघ्न, राम और लक्ष्मण का तथा कौशल्या राघव पत्नियों का शृंगार करती हैं। शायद डा० साहब हिन्दी के ज्ञान से भी वञ्चित हैं कि रघुवंशियो को राघव कहा जाता है, व राम को राघवेन्द्र। राम व लक्ष्मण के वन जाने के पश्चात् उर्मिला (लक्ष्मण की पत्नी) माण्डवी (भरत की पत्नी) श्रुतकीर्ति (शत्रुघ्न की पत्नी) भी सीता की तरह बिना शृंगार सादा जीवन यापन करने लगी थीं। इस उल्लासमय अवसर पर रघुवंशी उन सभी स्त्रियो का शृंगार किया गया, तो इससे राम बहुपत्नीक कैसे बन गए ?

मर्यादा पुरुषोत्तम राम सा उज्ज्वल चरित्र नायक विश्व के इतिहास में मिलना दुर्लभ है। भारत मे आकर अंग्रेजो ने हमारे धार्मिक ग्रन्थो मे कई भ्रामक बातें सम्मिलित करने का कुप्रयास किया और आज भी ब्रिटिश बुद्धिजीवियों का यह षड़यन्त्र जारी है। —नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार, 7/38 नेहरू नगर नई दिल्ली—110065

हिन्दूधर्म में बपतिस्मा और नमाज

डा० वेदीराम शर्मा (विश्वधर्म सम्मेलन नैरोबी मे आर्यसमाज के प्रतिनिधि) का यह विचार बडा अनोखा तथा हास्यास्पद है कि कोई व्यक्ति ईसाई बपतिस्मा लेकर अथवा मुसलमानी नमाज को पढ़ते हुए भी हिन्दू हो सकता है। क्या पूजा पद्धति की यह कथित स्वतंत्रता हिन्दू धर्माचार्यों को स्वीकार्य है? निश्चित ही समाज का कोई अनुयायी यह नही कहेगा कि बपतिस्मा लेकर अथवा अरबी मे नमाज पढ़कर कोई हिन्दू हो सकता है। धर्म और विश्वास को किसी न किसी सीमा में तो बांधना ही होगा। तथाकथित हिन्दू धर्म और समाज के विघटन तथा दुरवस्था का प्रमुख कारण यही रहा कि यहां पूजा उपासना में अनैक्य रहा। —डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़।

अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो

दिल्ली प्रशासन ने 11.10.84 को हिन्दी शिक्षक सम्मेलन मे की गई घोषणा के अनुसार नवी तथा दसवीं कक्षाओं में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाने का निर्णय किया है। दिल्ली के स्कूलो मे यह निर्णय यथाशीघ्र लागू किया जाए। ग्यारहवी तथा बारहवी कक्षा के विद्यार्थी भारतीय साहित्य के ज्ञान से वंचित न रह जाये, इस उद्देश्य से इन कक्षाओं मे किसी एक भारतीय भाषा का विकल्प अनिवार्य किया जाना चाहिए। वस्तुतः हिन्दी को उसका उचित प्रतिष्ठित स्थान केवल तभी मिलेगा जब सभी उच्च शिक्षा की तथा सभी पदो पर नौकरी की परीक्षाओं मे से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये। आर्यसमाजों को इस सम्बन्ध में जनमत जागृत कर प्रबल आन्दोलन चलाना चाहिए। सभी आर्य बन्धु यह सकल्प ले कि हम अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में ही करेंगे।—डा० कृष्णलाल, संयोजक हिन्दी उपसमिति, आर्यसमाज, सरस्वती विहार, दिल्ली 110034

फिल्म की मोहिनी माया

'आर्य जगत्' मे आचार्य प्रवर श्री विश्वश्रवा जी का एक लेख ऋषि दयानन्द के जीवन पर बनाए जाने वाली फिल्म के सम्बन्ध मे छपा है। मान्य आचार्य जी ने कुछ संवैधानिक प्रश्न भी उठाए है। परोपकारिणी सभा द्वारा इस आन्दोलन के उठाने के औचित्य पर आक्षेप किया है। साथ ही उन्होने सुभद्रा-हरण का मनोरंजक उदाहरण भी दिया है। यह ठीक है कि अर्जुन ने रैवतक पर्वत पर सुभद्रा का हरण किया। वृष्णियों मे आक्रोश उत्पन्न हुआ। अर्जुन के विरुद्ध आक्रमण की घोषणा की जाने वाली थी—श्री कृष्ण मौन होकर सब देख रहे थे। पूछने पर उन्होने अपने मन की बात कही।

पर कृष्ण के मौन रहने का वास्तविक कारण तो यह था कि अर्जुन ने सुभद्रा हरण उनकी सहमति से ही किया था। क्या यहा भी ऐसा तो नही कि सार्वदेशिक सभा के "एक प्रतिष्ठित सदस्य" ने जो ऋषि-जीवन पर फिल्म का प्रयास प्रारम्भ किया है उसके लिए सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो की सहमति पहले ही प्राप्त कर ली गई, इसीलिए वे मौन रहे ?

माननीय आचार्य जी ने जो मार्ग इस विवाद को समाप्त करने के लिए सुझाया है वह वस्तुतः परोपकारिणी सभा की ओर से यति मण्डल तथा विद्वानों द्वारा उठाए गए आन्दोलन को समाप्त करने का प्रयास है। अजमेर शताब्दी-समारोह के सम्बन्ध मे जब विवाद उठा था तब मान्य आचार्य जी सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की सम्मति के विरोधियों मे थे तथा परोपकारिणी सभा के प्रबल समर्थक थे। अब इस आन्दोलन के विरोधी तथा सार्वदेशिक सभा के समर्थक प्रतीत होते है।

"विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्।"

—सत्यदेव विद्यालंकार शांतिसदन, 145/4 सेंट्रल टाउन, जालंधर

युवा पीढ़ी को आगे लाओ

आज हमारा अमूल्य जीवन विषय-वासनाओं, कुरीतियों व पाखण्डवाद में कसता जा रहा है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने जीवन को वैदिक धर्म के प्रसार में लगायें। वैदिक साहित्य का स्वयं भी अध्ययन करें और दूसरों को भी स्वाध्याय करने की प्रेरणा दें। आज की युवा पीढ़ी आर्य समाज से विमुख होती जा रही है। पुराने आर्य समाजियों को चाहिए कि नवयुवकों को आर्य समाज में आगे आने को प्रेरित करें। अपनी पत्नी, पुत्र-पुत्रियों सहित वे आर्य समाज के कार्यक्रमों में रुचि लें।
– पुष्कर लाल आर्य, १०७, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, भिवानी (हरियाणा)

बीती भूलो आगे की देखो

पंजाब में भारत सरकार ने जो समय पर सैनिक कारंवाई की उसको लेकर बड़ी उत्तेजना फैलाई जा रही है। कहा जा रहा है कि भारत सरकार ने सेना को धर्म-स्थानों में भेजकर बड़ा अन्याय किया। परन्तु उस समुदाय विशेष के लोग यह नही बताते कि सैनिक कारवाई न की जाती तो विकल्प क्या था ?

सेना पर जब गोलियों की वर्षा हो रही हो तब यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि सेना गोली चलाने वालो को फूलो के गुलदस्ते पेश करेगी। उग्रवादियों द्वारा 1979 में काबा की मसजिद पर कब्जा कर लेने पर सउदी अरब की सेना ने वहां से उन्हें निकाला था तब वहां किसी ने सेना को दोष नहीं दिया। वस्तुतः सेना ने धर्मस्थान की पवित्रता पुनः स्थापित की है।

बाहरी शक्तियों के हाथो मे कठपुतली बनकर देश विरोधी गतिविधियों में भाग लेना सरल होता है। क्योंकि ऐसे समय में मनुष्य अपना विवेक खो बैठता है। आदमी जोश मे बुरे से बुरे कार्य कर बैठता है। जिसका समय आने पर पछतावा होता है। बाहरी शक्तियां तो यही चाहती हैं कि भारत न महाशक्ति बने न किसी क्षेत्र में आत्मनिर्भर। वे भारत में अस्थिरता पैदा करने के लिए अपने गुर्गों को तलाश करते रहते हैं। अभी भी समय है कि हम समय की नजाकत को और वस्तुस्थिति को समझें। बीत गया सो बीत गया, उसको भुलाना ही अच्छा है।

— राधेश्याम मित्तल, 14 काली बाड़ी मार्ग, फिरोजपुर छावनी

आर्य जगत् को बधाई

'आर्य जगत' को आर्य जगत् की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका बनाने में निःसन्देह आपके कुशल सम्पादन की तपस्या है। इसके लिये आपको बधाई।—कैप्टन देवरत्न आर्य बी /10, नेहरू नगर सोसाइटी, पाण्ड्या लेन नं० 2, जूहू, बम्बई—49

"इन धर्मवीरों पर भी"—समाधान निकाले

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित मेरा पत्र "शहीदों के अनाथ परिवार" एक ऐसी समस्या पर है जिसे श्री कृष्णदेव मदान ने भी 'इन धर्मवीरों पर भी ध्यान दें" (आर्य जगत् 30 सितंबर) पत्र मे उठाया। दुःखी होने पर भी इस पर हम कर कुछ नही पाते। न आवाज ही उठती है न हाथ-पैर ही चलते हैं। हमे विश्वास है कि आपकी आशा से भी अधिक समर्थ लेखनी इसका समाधान खोजने में कसर न रखेगी। —सुरेन्द्र अग्रवाल, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

आइये, तालाश करें वह गौरव !

आर्यसमाज के इतिहास के साथ बहुत सी ऐसी गौरवपूर्ण घटनाएं सम्बद्ध हैं जिनको पढ़ सुन कर आज भी हमारा मस्तक गर्व से ऊंचा हो जाता है। परन्तु पूर्वजों के उन सुकृत्यों का गौरवगान ही क्या हमारा कर्तव्य रह गया है? किसी जज ने किसी मुकद्दमें में निर्णय देते हुए कहा होगा कि आर्य समाजी झूठ नही बोलते, परन्तु आज का हमारा आचरण भी क्या इसी की गवाही देता है? एक प्रत्यक्ष प्रमाण लें—एक स्वनामधन्य त्यागमूर्ति (?) सन्यासी ने अपनी संस्था के वार्षिकोत्सव पर एक मुख्यमन्त्री को बुलाया जिन्होने दल-बदल और भ्रष्टाचार के अनेक कीर्तिमान बनाए और उन्हें खुद ही तोडा। मंच पर उनकी शान में कसीदे पढ़े गए, उन्हे 'सफेद कपड़ों में सन्त' और पता नही किन-किन शब्दो से महिमामण्डित किया गया। परिणाम भी तत्काल मिला पांच लाख के अनुदान के रूप में। पश्चात स्वामी जी के एक सहयोगी ने पूछा, कल इलेक्शन होगे तो आप किस तरह इनका विरोध कर पाएंगे जिन्होंने आपको इतनी बड़ी रकम दी! स्वामी जी ने मुस्करा कर कहा:'वत्स, चिन्ता मत करो, मैं उन दिनों विदेश चला जाऊंगा।' तो बस हम यही कुछ रह गए हैं! मंच पर भाषण अच्छे होते हैं, पत्रों मे लेख भी खूब बढ़िया होते हैं। इसके बावजूद ऐसा कुछ है जरूर जो हमसे खो गया है। आइये हम उसे तलाश करें।—महेन्द्र पाल आर्य, राठौर, कुरुक्षेत्र

हाय रेजगारी ! हाय रेजगारी !!

रेजगारी के अभाव से आम आदमी अत्यन्त दुःखी है। कभी-कभी इससे लेन-देन में छुट-पुट झगड़ा भी हो जाता है। बसों में, मदर डेयरी में, सब्जी की दुकान में, राशन की दुकान में, जहां भी जाएं,—बस एक ही समस्या-रेजगारी। देश में बढ़ते असन्तोष के मूल में आम आदमी के सामने यह रेजगारी की समस्या भी कम महत्वपूर्ण नहीं।

—भगवान सिंह बिष्ट, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा

—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

भारत से थाईलैंड और सिंगापुर जाने वाले हजारों पर्यटकों में से कुछ, पूर्व दिशा में और आगे बढ़ कर हांगकांग और कुछ जापान तक जाते हैं। पर्यटकों के लिये ये देश विशेष आकर्षण रखते हैं क्योंकि सिंगापुर और हांगकांग कस्टम्स-फ्री (आयात कर से मुक्त) नगर हैं जहां, टेलीविजन, घड़ियां, ऊनी वस्त्र और वीडियो आदि सस्ते मूल्य पर प्राप्त हैं। आधुनिक भौतिक सभ्यता का चरम उत्कर्ष जापान में देखने को मिलता है और हांगकांग तथा पटाया (थाईलैण्ड की एक नगरी) विलासिता के प्रसिद्ध केन्द्र हैं।

पर सिंगापुर के दक्षिण-पूर्व में इन्डोनीसिया के बहुत से द्वीपों की ओर भारत के पर्यटकों का अभी तक ध्यान नहीं गया जो प्रकृति की रमणीयता तथा आधुनिक सुख-साधनों की दृष्टि से विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया के विख्यात पर्यटन केंद्र बाली द्वीप में अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप से लाखों पर्यटक भ्रमण के लिये जाते हैं पर भारत से कोई भी पर्यटक वहां नहीं आता। जबकि बाली द्वीप के 95 प्रतिशत निवासी हिन्दू धर्मानुयायी हैं और धर्म तथा संस्कृति की दृष्टि से भारत से उसका घनिष्ट संबंध है। केवल बाली में ही नहीं, अपितु इंडोनीसिया के जावा व लम्बक आदि द्वीपों में भी लाखों हिन्दू हैं, और ये सब सांस्कृतिक दृष्टि से अब भी भारत से प्रभावित हैं।

इंडोनीसिया में 80 लाख हिन्दू

सोलहवीं सदी के प्रारंभ तक इन्डोनेसिया के प्रायः सभी द्वीपों में हिन्दू धर्म का प्रचार था और वहां के राजा हिन्दू धर्मानुयायी थे और यह क्षेत्र बृहत्तर भारत का ही अंग था। पिछली चार सदियों में इन्डोनीसिया के बहुसंख्यक लोगों ने इस्लाम को तो अपनाया है पर अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराएँ उन्होंने नहीं छोड़ीं। वहां की भाषा, कला, रीतिरिवाज, त्यौहार, उत्सव, मनोरंजन आदि पर भारत का पूरा-पूरा प्रभाव आज भी विद्यमान है। हिन्दूधर्म का अभी वहां लोप नहीं हुआ। इन्डोनीसिया में अस्सी लाख के लगभग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, जिनमें से पच्चीस लाख के लगभग बाली द्वीप में और दस लाख के लगभग लम्बक द्वीप के निवासी हैं इन्डोनीसिया के ये हिन्दू फीजी, मारीशस, सुरीनाम और केनिया आदि के हिन्दुओं के समान गत सौ डेढ़ सौ वर्षों में वहां जाकर नहीं बसे बल्कि भारतीय हिन्दुओं के समान वे भी हजारों वर्षों से हिन्दू हैं।

बाली हिंदू द्वीप

बाली द्वीप तो सच्चे अर्थों में हिन्दू प्रदेश या आर्य राज्य है। कुछ भारतीय हिन्दू पिछली सदी में वहां अवश्य गये और वहां के भी कुछ विद्यार्थी शान्ति निकेतन व हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा के लिये आये पर सुदूर दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन लाखों हिन्दुओं के साथ भारत का सम्बन्ध नाममात्र का ही रहा। गुप्त काल (चौथी-छठी सदी) के पश्चात् विद्वानों व पण्डितों की कोई भी मण्डली यहां नहीं गयी, और मध्य काल में भारत में जिस भक्ति आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ और कृष्ण ने जो महत्वपूर्ण स्थान इस देश के हिन्दू धर्म मे प्राप्त कर लिया, इन्डोनीसिया के हिन्दू उससे अपरिचित रहे।

इधर इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पर्क करने की ओर कतिपय महानुभावों का ध्यान गया, और हिन्दू पर्यटकों की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा पर थाईलैण्ड तथा सिंगापुर के साथ-साथ जावा और बाली द्वीपों में भी गई। इस मण्डली के सारे बीस सदस्य सुशिक्षित एवं उद्बुद्ध वर्ग के थे। परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती (अपने दो उच्च शिक्षित शिष्यों तथा एक शिष्या के साथ), चित्रकला के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार श्री बेन्द्रे, धर्मस्थल कर्नाटक के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आल्वा, विश्व हिन्दू परिषद् के प्रचार-मन्त्री श्री दत्तात्रेय तिवारी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार के डा० मेहता, लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० शान्ति देवबाला, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा० कमला प्रधान, श्रीमती रुक्मिणी देवी, श्री रामाज्ञा ठाकुर आदि कितने ही सम्भ्रान्त एवं सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा मण्डली में थे। मैं भी इसमें था। यात्रा की व्यवस्था ट्रेवल ट्रस्ट (बी, 24 निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली) की थी, और प्रबन्ध श्रीमती उमा मिश्रा के हाथों में था। इस पर्यटक मण्डली को सच्चे अर्थों में भारतीय हिन्दुओं का प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

गोमती चन्द्रभागा और नमस्ते

तीन दिन बेंकाक तथा पटाया का परिभ्रमण कर 25 सितम्बर को रात नौ बजे हम जावा के सबसे बड़े नगर और इन्डोनीसिया की राजधानी जकार्ता पहुंचे उसकी जनसंख्या 75 लाख से अधिक है। शान-शौकत और सांस्कृतिक पैमाने में वह किसी भी आधुनिक नगर से पीछे नहीं इस भूमि पर पैर रखते ही मुझे राजा पूर्णवर्मा का ध्यान आया, जो छठी सदी में इस प्रदेश का शासक था। उस समय इस नगरी का नाम तारूम था। राजा पूर्णवर्मा ने वहां एक नहर का निर्माण कराया था, जिसका नाम गोमती था चन्द्रभागा नाम की एक नहर वहां पहले से विद्यमान थी, जिसे पूर्ण वर्मा के पिता राजाधिराज ने बनवाया था। गोमती नहर का निर्माण पूरा हो जाने पर राजा पूर्णवर्मा ने एक हजार गौवें ब्राह्मणों को दक्षिणा में प्रदान की थीं। मैं तारूम नगरी के प्राचीन शिला लेखों के स्मरण मे मग्न था, कि नमस्ते शब्द सुनकर मेरा ध्यान भंग हुआ। सामने इन्डोनीसिया की पार्लियामेंट के हिन्दू सदस्य श्री पुण्यात्मज हमारे स्वागत को खड़े थे। भारत से आये इतने विद्वानों को अपने देश में देख कर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की और अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित कर हम अपने होटल मे चले गये।

जकार्ता में हमने बहुत कुछ देखा, पर 65 एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में निर्मित लघु इन्डोनीसिया ने हमे विशेष रूप से आकृष्ट किया। इन्डोनीसिया का निर्माण बहुत से छोटे-बड़े द्वीपों से मिल कर हुआ है। इनके निवासियों की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन तथा खान-पान आदि में बहुत अंतर है। लघु इन्डोनीसिया में विविध दीपों की संस्कृति का सजीव प्रस्तुतीकरण है। जावा, बाली, सुमात्रा कलिमन्थन (बोर्नियो) आदि सभी द्वीपों के पहनावे भवन, भोजन व प्राकृतिक दृश्य आदि की वहां व्यवस्था को गई है, जैसे कि उन द्वीपो में यथार्थ मे पायी जाती है। मिनी इंडोनीसिया का अवलोकन कर सारे देश का यथार्थ स्वरूप आंखों के सामने स्पष्ट हो जाता है।

मन्दिर में वैदिक संध्या

वहीं समीप ही एक भव्य हिन्दू मंदिर में इस सुदूर देश के हिन्दुओं की दैनिक प्रार्थना-उपासना देखने का अवसर हमें इस मन्दिर में प्राप्त हुआ। सायकाल का समय था। साठ से अधिक नर-नारी वहाँ उपस्थित थे। मन्दिर के प्रांगण में एक ऊंचे चबूतरे पर सब बैठे हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गये। प्रार्थना-उपासना प्रारम्भ हुई। ओ३म् भूर्भुवः स्वः के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रों का उच्चारण प्रारंभ हुआ। सभी उपस्थित नर-नारियों ने समवेत स्वर में वेद मन्त्रों तथा पुराण, महाभारत आदि के श्लोकों से प्रार्थना-उपासना की। जकार्ता के हिन्दुओं की सन्ध्या के बाद हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से संध्या तथा प्रार्थना मन्त्रों का पाठ किया। कैसा अदभुत दृश्य था। हम इन्डोनीसिया की भाषा नहीं समझते थे। और वहां के लोग हिन्दी से अनभिज्ञ थे, पर हमे परस्पर जोड़ने वाली हम में एकात्मता की भावना उत्पन्न करने वाली वेद शास्त्रों की वे धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं थीं, जिन्हें हमने समान रूप से विरासत में प्राप्त किया था, ओ३म् गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूत्रों व महाभारत के श्लोकों ने हमें इस ढंग से एक मजबूत सूत्र में बांध रखा कि सैंकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी उसके सुदृढ़ बन्धन मे ढील नहीं आई। पुण्यात्मज इस अवसर पर हमारे साथ थे। वे भी अपने देश के पूजा-पाठ में अन्य पण्डितों के समान ही भाग ले रहे थे। पार्लियामेंट के सदस्य होने के नाते उनमें अपने उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना नहीं थी। हमारे स्वागत में जकार्ता के हिन्दू मन्दिर में जलपान की भी व्यवस्था थी। हमने अपने इन्डोनीसियन हिन्दू भाइयों के साथ बैठकर फल, मिष्ठान्न, चाय, दूध आदि ग्रहण किये। सब यह अनुभव कर रहे थे, कि दो सुदूरवर्ती देशों के हिन्दू सैंकड़ों वर्षों के पश्चात् आज फिर मिल कर साथ बैठे हैं। धर्म और संस्कृति की उनमें ऐसी एकात्मता है, जिसे हजारों मीलों की दूरी शिथिल कर सकी और न सैंकड़ों वर्षों का अन्तराल।

311 मील लम्बी चित्रावली

दो दिन जकार्ता का परिभ्रमण कर हम जोग जकार्ता गये। यह मध्य जावा का प्रधान नगर है। बोरोबदूर का विशाल बौद्ध महाचैत्य उसके समीप ही है। उसकी गिनती संसार के सात आश्चर्यों में की जाती है, जिसे देखने के लिये अमेरिका, यूरोप, जापान आदि देशों से लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष जोगजकार्ता आते हैं। इन्डोनीसिया का एक अन्य द्वीप सुमात्रा है जिसके शैलेन्द्रवंशी राजा बौद्धधर्म के अनुयायी थे। इनकी राजधानी श्री विजय थी। शैलेन्द्र राजा बड़े प्रतापी थे। अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए आठवीं सदी में उन्होंने जावा को भी जीत लिया। श्री विजय (सुमात्रा) के इन वैभवशाली बौद्ध सम्राटों ने ही जावा में जोग जकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। यह महाचैत्य नौ विशाल चबूतरों या चक्करों से मिलकर बना है, जिनमें से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाले चक्कर की तुलना मे थोड़ा भीतर की ओर सिमटा हुआ है। नौ में से निचले छह समकोण चतुर्भुज के रूप में और ऊपर के शेष तीन चक्कर गोलाकार हैं। सबसे निचले की लम्बाई 400 फीट है, और सबसे ऊपर वाले की 90 फीट। महाचैत्य के चबूतरों की दीवारों पर रूपावलियां बनाई गई हैं, जिनमे बुद्ध की जीवनी को प्रस्तर पर उत्कीर्ण किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से ये रूपावलियां अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। और उन्हें यदि एक साथ एक पंक्ति में लगा दिया जाए। तो उनकी लम्बाई साढ़े तीन मील हो जाएगी। चित्रावलियों के बीच-बीच में गवाक्षों में

(शेष पृष्ठ 11 पर)

प्रधानमंत्री निवास का सारा सुरक्षा स्टाफ बदला

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री के सभी सुरक्षा कर्मचारियों को बदल दिया गया है। गुप्त अधिकारी इस बात का पता लगाने में जुटे हैं कि श्रीमती गांधी की हत्या करने की योजना किस तरह बनायी गयी और इस षडयंत्र के पीछे कौन हैं। गुप्तचर अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष और श्रीमती इन्दिरा गांधी के अत्यन्त विश्वस्त तथा परामर्शदाता श्री काव को तथा प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार श्री पिल्लई को भी स्थानान्तरित कर दिया गया है।

पुलिस के सारे ढांचे में भी आमूलचूल परिवर्तन किया रहा है। पुलिस के उपायुक्त श्री डी० सी० गुलिया को, जिन पर सुरक्षा की जिम्मेवारी थी, दिल्ली के उपराज्यपाल ने निलम्बित कर दिया है।

दिल्ली के भूतपूर्व पुलिस आयुक्त और राष्ट्रपति के विश्वस्त पुलिस आयुक्त श्री प्रीतमसिंह भिंडर से हत्या के सम्बन्ध में पूछताछ की जा रही है। कहा जाता है कि हत्यारे सतवन्त सिंह को उन्हीं की सिफारिश पर बरेली से दिल्ली बुलाकर प्रधानमंत्री के सुरक्षा स्टाफ में नियुक्त किया गया था।

दो सेवा निवृत्त मेजर जनरलों से भी पूछताछ की जा रही है।

अधिकृत सूत्रों ने बताया कि अब तक कोई निश्चित सूत्र हाथ नहीं लग सका है। उन्होंने कहा कि बहुत गहराई से पूछताछ की जा रही है और उन्हें निश्चित तौर पर सूत्र हाथ लगने का विश्वास है।

देश के विभाजन के लिए मुस्लिम सक्रिय

हिन्दुस्थान हिन्दू मंच ने हिन्दुस्थान में रहने वाले मुस्लिम समाज के लोगों को चेतावनी देते हुए कहा है कि हिन्दुस्थान की राजधानी दिल्ली में दिनांक २७ तथा २८ अक्तूबर, १९८४ को स्टूडेंट इस्लामी मूवमेंट सम्मेलन के देश भर में लगाये गये पोस्टरों की भाषा साम्प्रदायिक, राष्ट्र-विरोधी तथा आपत्तिजनक है। जहां मुसलमान अल्पसंख्या में होते है वहां कोई दंगा फिसाद नही होता। उदाहरण के लिए दिल्ली को ही लें। यहां प्रथम तो हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते ही नहीं और कहीं होते भी हैं तो उन्हीं क्षेत्रों में जहां इनका बहुमत है।

पिछले दिनों लेबनान, सीरिया, फिलिपीन्स इसके स्पष्ट प्रमाण हैं जहाँ ईसाईयों के साथ मुस्लिम सम्प्रदाय के काफी झगड़े हुए हैं। इस्राईल के यहूदियों से उनका झगड़ा काफी दिन से चल रहा है. यह सभी जानते हैं। गैर-मुस्लिमों को सार्वजनिक तौर पर मुसलमान बनने का आह्वान करना देश की सैक्यूलर नीति के विरुद्ध है।

यदि इस्लामी मूवमेंट के आयोजक हिन्दुस्थान की समस्या हल करने के लिए इतने चिन्तित हैं तो उन्हें सबसे पहले मुस्लिम हुकूमतों वाले देशों की समस्यायें सुलझाने के लिये ईरान, ईराक, फ़िलस्तीन, पाकिस्तान और बंगलादेश जाना चाहिए।

हिन्दुस्थान के मुसलमान ऐसी बातें करने का साहस इसलिए करते हैं क्योंकि यहां की सरकार की मुस्लिम परस्त वोट की राजनीति ने उन्हें प्रोत्साहित किया है। इसी से वे इस देश के बंटवारे के लिए एक बार फिर १९४७ से पहले वाला भयंकर खेल खेलने लगे हैं। यदि उनके साथ पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं जैसा व्यवहार किया जाता और पाकिस्तान की तरह हिन्दुस्थान भी हिन्दू राज्य होता तो वे यह साहस ही न करते। इसलिए सरकार इस प्रकार की गतिविधियों को रोके अन्यथा यहाँ बहुमत भड़क गया तो फिर इस देश की शान्ति और एकता को खतरा पैदा हो जाएगा।

—विशनस्वरूप पटवारी

(पृष्ठ 6 का शेष)

हैदराबाद के सत्याग्रहियों को

काल में सिंध में सत्यार्थ प्रकाश की रोक तथा धौलपुर और पटियाला रियासतों में धार्मिक स्वतन्त्रता के सरकार के विरुद्ध किये गये आन्दोलनों को अब तक इस श्रेणी में नहीं रखा गया।

सार्वदेशिक सभा ने इस दिशा में लगातार सरकार से सम्पर्क रखा है और हैदराबाद के सत्याग्रहियों को अन्य रियासती आन्दोलनों की भाँति पेंशन व सम्मान देने की मांग की है। प्रधानमंत्री और गृहमंत्री को इस हेतु पत्र लिखे गये परन्तु अब तक इस विषय में इसको अनिर्णीत ही बताया जाता रहा है। खेद है कि इन ४५ वर्षों में अधिकांश आर्य-वीर मर-खप गये और जो जीवित हैं वे भी ६२-८० साल की आयु के बीच है। राजनैतिक दलों की भेदभावपूर्ण नीति इसमें मुख्य कारण है।

सार्वदेशिक सभा की यह प्रबल कामना और प्रयत्न रहा है कि इस चुनाव वर्ष में आर्यसमाज के उन सत्याग्रहियों को भी राष्ट्रीय सम्मान मिले। आशा है कि ईश्वर कृपा व आप सबके सहयोग से उसमें सफलता मिलेगी। मामला विचाराधीन तो है ही। सत्याग्रह में भाग लेने वाले इस विषय में अपना पूर्ण विवरण यथा नाम, पिता का नाम, सत्याग्रह अवधि और वर्तमान निवास स्थान, गिरफ्तार होने की और छूटने की तिथि, तथा न्यायालय के आदेश की प्रमाणित प्रति और जेल में रहने व छूटने का प्रमाणपत्र तथा अन्य आवश्यक विवरण इस सभा मे भेजें जिससे कि सरकारी घोषणा के बाद यथासंभव शीघ्र वह कार्यवाही की जा सके। यदि इस विषय में राज्य/केन्द्र सरकार को आवेदन पहले दिया गया हो, या उसपर जो निर्णय हुआ हो, उसकी प्रति भी सभा में भेजना उपयोगी होगा। प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों और आर्य संस्थाओं को इस विषय में सचेष्ट होकर सूचना देनी चाहिए।

पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक उक्त सत्याग्रह में भाग लेने के बाद १९७६ में भारत सरकार में एक ऊंचे पद से रिटायर हो चुके हैं। वे भी १९६५ से इस बारे में आवश्यक प्रयत्न करते आ रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के पते पर उनसे पत्र व्यवहार करें।

—ब्रह्मदत्त स्नातक, सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मदान के पास) दिल्ली-२

जापान की यात्रा (3)

पटैया और बैंकाक

—रामलाल मलिक

बैंकाक हवाई अड्डे से डेढ़ सौ किलोमीटर की यात्रा करके पटैया पहुंचे। पहले ही हमने दिल्ली से प्रबन्ध किया था कि शाकाहारी खाना मिलेगा। जाते ही होटल के 46 कमरों की चाबियां हमे मिल गई। दो यात्रियों के लिए एक कमरा था। पटैया में समुद्र के किनारे रिजेंट मरीना होटल जिसमें सब सुविधाएं— टेलीफोन ठण्डा-गरम पानी, बिस्तरे आदि लगे हुए थे हमें मिले। पटैया थाइलैंड का बहुत ही सुन्दर नगर है। आज से सौ साल पहले वह एक गांव था। थाइलैंड सरकार ने बैंकाक से यहां तक सड़क बनाकर इस गाव की काया पलट दी। ट्रैफिक का इतना अच्छा इन्तजाम है कि किसी को कोई तकलीफ नही होती। जो लोग बैंकाक आते हैं, वे पटैया देखे बगैर नहीं जाते।

9 सितम्बर को प्रात नाश्ता लेने के पश्चात् दोनों बसो ने बैंकाक के लिए प्रस्थान किया। आर्यसमाज बैंकाक के मंत्री महोदय को हमने देहली से लिखा था कि यात्री 8 सितम्बर को जापान एयर लाइन से 10 बजे बैंकाक पहुंचेंगे और विंडसर होटल में ठहरेंगे। हमारे साथ टी० सी० आई० के जो कार्यकर्ता चल रहे थे उन्होंने हमको नही बताया और बजाय विंडसर के मनोहर होटल मे ठहरने का प्रबन्ध किया। आर्यसमाज के कार्यकर्ता 8 सितम्बर को विंडसर होटल में आए। तब हम पटैया चले गये थे। जब 9 सितम्बर को हम पटैया से सीधे आर्यसमाज मन्दिर पहुंचे तो वे हैरान रह गये। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने यात्रियो का स्वागत किया और परिचय कराया। मनोहर होटल में ठीक कमरे मिल गये जिसमें सब सुविधाएं थी। जो बहिने-भाई यात्रियों से मिलने के लिए विंडसर होटल आये थे, वे उस दिन न मिल सके, जिसके लिए मुझे खेद है।

बैंकाक थाइलैंड की राजधानी है। बहुत बड़ा नगर है। यहां हर किस्म के उद्योग-धन्धे हैं। जब हम रात को हिमाली चाचा होटल में खाना-खाने के लिए गये तो मैंने होटल के मालिक से जो पहले दिल्ली रह चुका था, पूछा कि क्या यहां कोई बूढा नही रहता? उन्होंने हसकर जबाब दिया—'बूढे तो हैं परन्तु उनका स्वास्थ्य बड़ा अच्छा है। उनके बाल अक्सर सफेद नही होते।' लड़के-लड़कियों, स्त्री-पुरुषों का रंग एक जैसा है। पहनावा भी एक जैसा है। सब अपने-अपने कामों में लगनशील हैं। बैंकों में जाओ, बैंक का कोई कर्मचारी ड्यूटी के टाइम में न किसी से बात करता है, न चाय पीता है। मिनटों में काम कर देते हैं।

बैंकाक में एक बहुत बड़ा मन्दिर है उसमें भगवान बुद्ध की सैकड़ों मूर्तियां हैं। एक ऐसी मूर्ति है, कहते हैं कि उसमें साढे सत्ताईस टन सोना लगा है। 11 सितम्बर की दोपहर को हमने बैंकाक एयरपोर्ट से हांगकांग के लिए प्रस्थान किया।

मोरिशस की मेरी एक......

(पृष्ठ 4 का शेष)

भिक्षु जी के प्रयास से ही मौरिशस वासियों को मंत्रों के सुरुचिपूर्ण पाठ करने की ओर यज्ञ कर्म करने की प्रेरणा मिली है। मौरिशस में अपना भी एक काफी बड़ा पुरोहित वर्ग है, जो सामान्य व्यक्तियों में से ही तैयार किया गया है।

मैंने और प्रो० वेदव्यास जी ने एवं प्रो० शेर सिंह तथा मोहनलाल मोहित ने साथ मिलकर एक नये कार्य को संघटित करने का प्रयास किया है। श्री मोहित जी 82 वर्ष के अनुभवी आर्य-सेवी हैं। धन-धान्य और परिवार से परमात्मा ने उन्हें समृद्ध किया है। और उनका परिवार आर्य समाज के कार्यों में अत्यन्त रुचि लेता है। मोहित जी का मौरिशस में सब आदर करते हैं। सरकार की ओर से इन्हें ओ० बी० ई० की उपाधि भी मिली है। इनका संकल्प है कि—मौरिशस द्वीप में और भारत में भी ऐसे संस्थान की स्थापना की जाये, जिससे देश-देशान्तर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से आर्य समाज का प्रचार किया जा सके। हम लोगों ने मिलकर एक ऐसे संस्थान की नियमावली निर्धारित की है, जिसका प्रारम्भ मोहित जी को 5 लाख रुपए की धन-राशि से होगा। यह संस्थान दिल्ली में केन्द्रित होगा, और इस संस्थान के द्वारा मिशनरी कार्यकर्ता तैयार किए जायेंगे और अनेक विदेशी भाषाओं में साहित्य सृजन का काम हाथ में लिया जायेगा। प्रो० वेद व्यास जी को अधिकार दिया गया है कि वे इस संस्थान की नियमावली तैयार करें, और उसकी विधिवत रजिस्ट्री दिल्ली में करावें। यह कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ कर दिया जायेगा।

मौरिशस की हमारी यात्रा बहुत सुखद रही। 23 तारीख से लेकर 28 तारीख तक अनेक स्थानों पर भारतीयों का स्वागत किया गया। और भारतीयों ने भी मौरिशस वासियों के प्रति आभार प्रकट किया। इन्हीं दिनों में दो-तीन विशेष कार्य भी हुए, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट-मोका, मौरिशस में, विशेष अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस हुई जिसमें पाण्डित्यपूर्ण निबन्ध प्रवासी-भारतीयों के कार्य-कलापों के सम्बन्ध में पढ़े गये। भारतीय शासन की सहायता से प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर एक बड़े हास्पिटल की नींव भी राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के कर कमलों द्वारा रखी गई। भारत की ओर से अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने इस अवसर पर कुछ साहित्य भी तैयार किया था जो मौरिशस वासियों को भेंट किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "आर्य जगत्" का "मौरिशस विशेषांक" प्रकाशित किया गया था, जिसे मौरिशस की जनता को भेंट किया गया। दीपावली का उत्सव था जिसमे अनेक स्थलों पर राष्ट्रपति ने भी भाग लिया। मेरी अपनी धारणा है कि राष्ट्रीय अधिकारियों का राष्ट्रीय उत्सवों में भाग लेना तो अच्छा है, किन्तु अन्धविश्वास-परक पूजाओं में उनका सम्मिलित होना, कबरों और समाधियो पर चादरें चढ़ाना और अन्य ऐसे ही कतिपय कार्यों में भाग लेना न राष्ट्र के लिए शोभनीय है और न उनके सार्वजनिक व्यक्तित्व के लिए। इस अवसर पर भारतवर्ष से गंगाजल की एक लाख बोतलों को मौरिशस-वासियो के लिए ले जाना मेरी दृष्टि में कोई राष्ट्रीय सेवा नहीं है, उपहास का सा कार्य है। कुछ लोग समझते हैं कि इस प्रकार से हिन्दुओं के बीच सद्भावनाएं जागेंगी। ये सब बातें आर्य संस्कृति के विपरीत हैं। प्रत्येक देश को अपने पर्वतों, सरोवरों, सरिताओं और प्राकृतिक स्थलो पर अभिमान होना चाहिए।

दीपावली भारत वर्ष में शरद् ऋतु का त्यौहार है, किन्तु मौरिशस में बसन्त ऋतु का। वृक्षों पर आम के फल आने लग गये हैं, और कोयल भी शीघ्र ही आने वाली है। मौरिशस वासियों को उनके बसन्त के राष्ट्रीय उत्सव पर मेरा आशीर्वाद।

□

पूर्वी एशिया को......

(पृष्ठ 9 का शेष)

ध्यानी बुद्धों की एक-एक मूर्ति, सारे महा-चैत्य में ऐसी 432 मूर्तियां हैं। हमारी मण्डली के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति चित्रकार श्री बेन्द्रे (बम्बई) इन मूर्तियों और रूपावलियों को देखकर इतने अभिभूत हो गये, कि उन्हें न अपना ध्यान रहा और न समय का।

शिवमंदिर में रामायण

जोगजकार्ता में विद्यमान कितने ही प्राचीन हिन्दू मंदिरों में चार द्वारों वाला प्राम्बनन का शिव महादेव का मन्दिर सबसे अधिक महत्व का है। यह मन्दिर एक विशाल ऊंचे चबूतरे पर बना है। मन्दिर की दीवारों को प्रस्तरों पर पत्र-पुष्पों, आदि की आकृतियों से अलंकृत किया गया है, और रामायण की सम्पूर्ण कथा रूपावलियों के रूप में अंकित है। पौराणिक देवी-देवताओं की भी कई मूर्तियां मन्दिर की दीवारों पर निर्मित हैं। शिव-महादेव के इस विशाल एवं गगन चुम्बी मन्दिर के दोनों ओर दो अन्य मन्दिर और उनसे कुछ हट कर छोटे-छोटे मन्दिरों की श्रृंखला ने चारों ओर से उन्हे घेरा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त जो अन्य मन्दिर खण्डित या अखण्डित दशा में वहा विद्यमान हैं। उनकी संख्या 240 है। हम उस समय की कल्पना से रोमान्चित हो गये जबकि ये सभी मन्दिर पूर्ण व अखण्डित थे, और इनमे पूजा पाठ के लिये श्रद्धालु हिन्दुओ की भीड़ रहा करती थी। उस समय भगवान शिव-महादेव के विशाल मन्दिर का यह सुविस्तृत परिसर कितना भव्य एवं आकर्षक लगता होगा, इसकी कल्पना ही चित्त में एक श्रद्धा का प्रादुर्भाव कर देती है।

मुसलमान होकर भी दुष्यन्त और सुकीर्ति

प्राम्बनन क्षेत्र के अन्य बहुत से मंदिरों चण्डी सरी, और चण्डा मेन्दुत के मन्दिर उल्लेखनीय हैं। हमने इन्हे भी देखा—और यह तथ्य हमारे सम्मुख स्पष्ट था कि अब से कुछ सदी पूर्व तक सम्पूर्ण जावा में हिन्दू धर्म का प्रचार था। अब जावा के बहुसंख्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके हैं, पर उन्होंने अपनी संस्कृति का परित्याग नहीं किया है। प्राम्बनन के मन्दिरो का दर्शन करते हुए हमने एक कृषक परिवार से पूछा तो ज्ञात हुआ कि वे सब मुसलमान हैं, पर उस परिवार की गृहिणी का नाम सुश्री और सन्तान के नाम दुष्यन्त तथा सुकीर्ति थे। जावा मे सर्वत्र यही दशा है। हम पूर्वी जावा भी जाना चाहते थे। दसवी सदी के द्वितीय चरण मे इन्डोनीसियों की राजशक्ति पूर्वी जावा में केन्द्रित होनी प्रारम्भ हो चुकी थी। वहां एर्लङ्ग देव, विजते-तुङ्गदेव, कृतनगर आदि अनेक ऐसे राजा हुए जिनके प्रताप से जावा का बहुत उत्कर्ष हुआ। ये राजा हिन्दू धर्म अनुयाई थे और इन्होंने बहुत से भव्य व विशाल मन्दिरों का निर्माण कराया था। पूर्वी जावा के इन मन्दिरों में सुराबाया के मन्दिर सब से प्रसिद्ध हैं। समय के अभाव से हम इनका अवलोकन नही कर सके। हम शीघ्र ही बाली द्वीप जाना चाहते थे जो वर्तमान समय मे भी वस्तुतः एक हिन्दू प्रदेश है। 28 सितम्बर को तीसरे पहर को हम बाली राजधानी पहुच गये थे।

(शेष अगले अंक में)

इन्दिरा जी की हत्या पर शोक

आर्य युवक परिषद पट्टी (अमृतसर) के सभी सदस्य और पदाधिकारियों ने इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या पर शोक प्रकट करते हुए नए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी को पूर्ण समर्थन देने का संकल्प किया।—राजेश कुमार शर्मा प्रधान।

—आर्य समाज लल्लापुर वाराणसी ने अपना वार्षिकोत्सव स्थगित करके शोक प्रस्ताव पारित किया और वाराणसी के नागरिकों से धैर्य और विवेक से काम लेने की प्रार्थना की। —बुद्धदेव आर्य।

—आर्य समाज हैवी इलेक्ट्रिकल्स, भोपाल ने शोक प्रस्ताव पारित कर देश में से साम्प्रदायिकता के विष के उन्मूलन का आग्रह किया।

—विश्व सिन्धी समाज के अध्यक्ष श्री भगवान् देव संसत्सदस्य ने अपने निवासस्थान १३ लोधी एस्टेट नई दिल्ली-३ में सिन्धी समाज की बैठक में शोक प्रस्ताव पारित कर श्री राजीव गाँधी को समर्थन देने का संकल्प किया।

बम्बई: माटुंगा स्थित श्री दयानन्द बालक विद्यालय व जूनियर कालेज आफ कामर्स की शोक सभा में प्रधानाचार्य ने विश्व की प्रिय नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके स्नेह, सदाचार, सद्भाव एवं भ्रातृत्व का विश्व चिरऋणी रहेगा।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०१)

प्राचीन संस्कृति केन्द्र दयानन्द वेद विद्यालय

भारत की राजधानी मे यमुना नदी के तट पर सन् 1934 में प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रमुख केन्द्र दयानन्द वेद विद्यालय की स्थापना हुई थी। आज वही संस्कृति केन्द्र गौतम नगर (युसुफ सराय) मे स्थानान्तरित हो गया है। इसके संस्थापक श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती थे। वर्तमान मे श्री हरिदेव जी के आचार्यत्व मे लगभग 120 ब्रह्मचारी वेद विद्या के अतीत गौरव को जीवन्त रूप देने के लिये निरन्तर यत्नशील है।

इस विद्यालय मे प्राचीन गुरुकुलों की पद्धति पर प्रात: 4 बजे सभी ब्रह्मचारी गुरुकुल के प्रागण मे वेदमंत्रो का उच्चारण आरम्भ कर देते है। यह क्रम सर्दी, गर्मी, वर्षा सभी ऋतुओ मे एक सा ही चलता है। नित्यप्रति प्रातः सायं तपस्यात्मक दैनिक जीवनचर्या यहा की विशेषता है।

समय-समय पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओ मे ब्रह्मचारियों को प्रतियोगितार्थ भेजा जाता है जिसमे प्राय: ये ब्रह्मचारी प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाते है। यहां के कुछ छात्रो ने सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा सामवेद कण्ठस्थ कर लिया है। गत वर्ष सन् 1983 मे अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी, अजमेर में 4 ब्रह्मचारियो ने वेद (स्मृति शास्त्र) को कण्ठाग्र सुनाकर 4400,00 (चवालीस सौ) रुपये का पुरस्कार पाकर विद्यालय का यश बढाया है।

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, 119 गौतमनगर नई दिल्ली-49 में
18 नवम्बर से 9 दिसम्बर 84 तक

विश्वशांति महायज्ञ

स्वर्गीय प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी के पवित्र सपनो को साकार करने के लिए चारो वेदो के ब्रह्मपारायण महायज्ञ के माध्यम से विश्वशान्ति महायज्ञ सम्पन्न होगा। अधिक से अधिक संख्या मे यजमान बनकर यज्ञ को सफल बनावें।

यज्ञ का समय– प्राय: 6 से 9, सायं 3 से 6

प्रधान — चौ० दिलीपसिंह
आचार्य — हरिदेव

टंकारा में ऋषि मेला १६ से १८ फरवरी ८५

महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा मे टंकारा ट्रस्ट की ओर से भव्य ऋषि मेला हर वर्ष की भांति 16, 17, 18 फरवरी 1985 को मनाया जा रहा है। इसके लिए प्रारम्भिक तैयारी आरम्भ हो गई है। दिल्ली से एक विशेष रेलगाडी का प्रबन्ध किया जा रहा है। भारत सरकार से इस सम्बन्ध मे पत्र व्यवहार चल रहा है। सूचना आने पर पत्रों में विवरण दे दिया जायेगा। मेरी समस्त आर्य-जनता एवं ऋषि भक्तो से प्रार्थना है कि वे इस शुभ अवसर पर सपरिवार टंकारा जाने का प्रोग्राम अवश्य बनाये।

इस समय ऋषि दयानन्द जन्म-स्थली टंकारा मे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, गौशाला, बाहर से आने वाले अतिथियो के लिए अतिथि-गृह आदि सुचारू रूप से चल रहे है। इन सब कार्यों पर ट्रस्ट का अढाई लाख रुपए वार्षिक व्यय हो जाता है। ऋषि मेले के अवसर पर ऋषि लंगर की भी ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क व्यवस्था होती है। अतः ऋषि भक्त दानी महानुभाव इसके लिए अधिक से अधिक दान की राशि महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, पिन-363650 अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उप कार्यालय-आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली को चैक, ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा भिजवाने की कृपा करे। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली दान की राशि आयकर से मुक्त है। —रामनाथ सहगल मंत्री-ट्रस्ट

पुरोहित बनना चाहते हैं

श्री रामेश्वर दयाल शास्त्री जिन्होने पिछले १० वर्षों तक पुरोहित का कार्य किया है, शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण तथा अध्यापन का भी अनुभव है, व्याख्यानो में निपुण है तथा वाणी मे मिठास है। संस्कारादि कराने मे दक्ष है। दिल्ली मे किसी आर्य समाज मे पुरोहित का कार्य करना चाहते है। अगर उस आर्यसमाज के साथ कोई विद्यालय सबंधित हो तो धर्मशिक्षक का भी कार्य कर सकते है। संपर्क करे— श्री शान्तिलाल १६०/८ करोल बाग, नई दिल्ली, दूरभाष ५६६०३७

श्री पं० आशुराम जी का महान कार्य

श्री पं० आशुराम जी जहां एक कर्मवीर व्यक्ति हैं वहां महान स्वाध्यायी भी है। श्री पण्डित जी ने ऋषि दयानन्द जी के भाष्यानुसार यजुर्वेद का उर्दू तर्जुमा लिखा है। अभी उसके प्रथम चार अध्यायों की जिल्द मेरे पास आई है। उसको देखकर मैं इस कार्य की प्रशंसा किये बिना नही रह सकता हूं। यह अत्यावश्यक और सुन्दर कार्य है। कहीं-कहीं आवश्यकतानुसार अधिक व्याख्या भी की गई है।

मैं इस पवित्र कार्य के लिये श्री पं० आशुराम जी को बधाई और धन्यवाद देता हूं तथा आर्य जनो से यह आशा करता हूं कि इस ग्रन्थ का अधिक से अधिक प्रचार करेगे। ऋग्वेद का उर्दू तर्जुमा भी छपना आरम्भ हो गया है।

—अमर स्वामी सरस्वती

बम्बई में एक नये समाज की स्थापना

बम्बई महानगर के उत्तर-पश्चिमी समुद्र तीर स्थित वर्सोवा में आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक नया समाज स्थापित किया गया है। इस समाज का उद्घाटन सभा के महामन्त्री श्री ज्येष्ठ वर्मन ने, श्रीमान धड़वाल जी के बंगले में यज्ञ के साथ किया और कहा कि आजकल देश मे विघटनकारी स्वार्थी तत्व इतने बढ़ गये हैं कि उनका मुकाबला करने के लिये आर्यसमाज को और भी शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता है। आर्यो को केवल संध्या-हवन और भाषण तथा उत्सवों से ही संतुष्ट न रहकर क्रियाशील बनना अत्यावश्यक है।

श्रीमती शकुन्तलादेवी वजाज ने अपने स्वर्गीय पति की स्मृति में वर्सोवा स्थित अपने तीन कमरे वाले मकान का समाज को दान देने की घोषणा की।

पुरोहित की आवश्यकता

सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार उचित वेतन तथा अन्य सुविधायें प्रदान की जायेगी। इच्छुक महानुभाव पत्र व्यवहार करें—
मंत्री, आर्यसमाज, डी० ए० वी० कालेज मार्ग, अम्बाला शहर

योग्य वर चाहिए

1. 20 वर्षीय छात्रा, B A II, रंग गेहुंवा कद 5,' 5," सुशील कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। पत्र व्यवहार करें—श्री आनन्दस्वरूप तनेजा, 66-A, प्रसादनगर करोल बाग नई दिल्ली-5

2. 23 वर्षीय, B. A. पास ब्यूटी कल्चर कोर्स पास, कद 5 फूट 4 इन्च, सुन्दर सुशील कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। एक बहिन की शादी मेडिकल अफसर से हुई है। दो भाई हैं। पिता का (दक्षिण दिल्ली मे) निजी मकान है। सम्पर्क करें— पी० सी० मेहता, B-20 निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली-13

MATRIMONIAL

Wanted a suitable match for a young, fair complexioned, attractive and smart girl aged 19 years, height 5'-2,-1/2", well versed in household chorus. Graduate with Diploma in Stenography. Currently doing M. A. Father, a Retired Govt. Officer, presently engaged in Medicine Practice. One Brother and One Sister (married). Decent marriage promised but not heavy dowry. For further details please write or contact :—

S. K. S. Bakshi,
Shimla Road, NAHAN.-173001. (H. P.)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व— आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र | ओ३म् | कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४७, अंक ४६ रविवार, २५ नवम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | मार्ग शीर्ष शुक्ला १०, २०४१ वि०

लोकसभा के चुनाव २४ और २७ दिसम्बर को

पंजाब और आसाम में चुनाव अभी नहीं

नई दिल्ली, । आठवीं लोकसभा के लिए 24 और 27 दिसम्बर को मतदान होगा और 28 दिसम्बर से नतीजे आने लगेंगे। 27 नवम्बर तक नामांकन पत्र भरे जाएंगे। 28 नवम्बर को इनकी जांच होगी। नामांकन वापस लिए जा सकेंगे 30 नवम्बर तक।

असम और पंजाब की 14 व 13 लोकसभा सीटों पर चूनाव अभी नहीं होंगे। केंद्र शासित चंडीगढ़ की सीट पर चुनाव कराने का निर्णय अभी होना है। 542 में से कुल 515 सीटों पर चुनाव का कार्यक्रम बना है।

लोकसभा के साथ अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और गोवा विधानसभाओं के चुनाव भी होंगे। इन तीन राज्यों में विधानसभा की 120 सीटें हैं। आंध्र प्रदेश में विशाखापतनम की दो, हिमाचल प्रदेश की धर्मपुरा, कर्नाटक की नागमंगला और पश्चिम बंगाल की बोलपुर विधान-सभा सीटो पर उपचुनाव भी होंगे। यों विधानसभाओं की कुल खाली सीटे 41 हैं।

तामिलनाडु की विधान सफा भंग कर दी गई हैं। वहां इन चुनावों के साथ ही चुनाव होंगे। अन्य भी जो राज्य चुनाव आयोग को सूचित कर देंगे उनकी विधान सभाओं के चुनाव भी साथ ही हो सकते हैं।

चुनाव आयोग ने अपनी तैयारी पूरी कर ली है और राजनीतिक पार्टियों की हलचल तेजी से प्रारंभ हो गई है।

हैदराबाद सत्याग्रह

सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी मानने की सिफारिश

आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि गृहमंत्रालय की संबंधित सलाहकार समिति ने सर्वसम्मति से हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह को स्वाधीनता संघर्ष के रूप में स्वीकार कर लिया है और मंत्रीमण्डल की मंजूरी के लिए भेजने का निश्चय किया है।

आशा है कि स्व० इन्दिरा गांधी के जीवनकाल में उठाए गए इस कदम को मंत्रीमण्डल की स्वीकृति भी अवश्य प्राप्त होगी। सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले इस काम को शीघ्र संपन्न करने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक युग के बाद उन स्वाधीनता सेनानियों और उनके वारिसों के लिए यह एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी। —ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्यसभा राजनीति में पुनः सक्रिय

चुनावों के निकट आते ही स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में आर्यसभा राजनीति में पुन: सक्रिय हो गई है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के मार्गदर्शन में उसकी तदर्थ समिति बन चुकी है। आर्यराज्य बनाने का उद्देश्य अपने सामने रख कर आर्यसभा दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से अपने प्रत्याशी खड़े करेगी। बलराज मधोक का 'हिन्दुस्तान हिन्दू मंच' और आर्यसभा परस्पर सहयोग से काम करेंगे और राष्ट्रवादी शक्तियों को एकत्र कर सबल मंच तैयार करेंगे।

कुछ विशेष समाचार

खालिस्तान के स्वयंभू नेता डा० जगजीत सिंह चौहान को ब्रिटेन से निकालने के लिए भारत सरकार ने आग्रह किया हैं। उनका वीसा पहले ही जब्त किया जा चुका है। इस समय वे 'राज्य-विहीन' नागरिक हैं।

इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद भारत में मारे गए सिखों के प्रति शोक प्रकट करने के लिए लन्दन में जो सिख १८ नवंबर को रैली निकालना चाहते थे उस पर वहां भी सरकार ने रोक लगा दी है।

ननकाना साहिब (पाकिस्तान) में भारत से गए सिख यात्रियों को भड़काने, खालिस्तान समर्थक नारे लगाने, भिंडरा वाले के टेप और चित्र बेचने और विदेशों से आए खालिस्तानी सिखों द्वारा भारतीय अधिकारिया से मारपीट की छूट देने पर भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार से कड़ा विरोध प्रकट किया है और इसे अमैत्रीपूर्ण कार्य बताया है।

पाकिस्तान सरकार का कहना है कि खालिस्तानियों के पाकिस्तान में आने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है और सिख यात्रियों का वहां सदा स्वागत होगा।

लीबिया के राष्ट्रपति कर्नल गद्दाफी ने इन्दिरा गांधी की हत्या के षडयंत्र मे आर्थिक सहयोग दिया था--यह रहस्योद्घाटन मिस्र के एक अखबार ने किया है।

१९ नवम्बर को वोट क्लब पर श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्म दिवस पर विशाल रैली हुई जिसमें प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने कहा कि देश की एकता को बनाए रखना ही इन्दिरा जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि है। उस एकता को धर्म के नाम पर नष्ट करने वालो को जनता कभी क्षमा नही करेगी।

चुनावों के लिए नामांकन शुरू हो गया है। इन्का ने विभिन्न राज्यों से अपने उम्मीदवारों की सूचियां तैयार करनी शुरु कर दी हैं। विपक्षी दल भी अधिक से अधिक आपसी तालमेलके लिए पूरे जोर से प्रयत्नशील हैं।

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ स्रोत में चलें

मैं वीरांगना हूं

सुरेश चन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी.

अवीरामिव मामयं शरारुर भिमन्यते। उताहमस्मि वीरिणीन्द्र-पत्नी मरुत्सखा विश्वस्मा दिन्द्र उत्तरः (ऋ. १०. ८६.८)

(अयम् शरारु) यह घातक (माम्) मुझे (अवीरामिव) अबला-सा (अभिमन्यते) समझता है (उतअहम्) मैं तो (वीरिणी) वीराङ्गना हूँ (इन्द्र पत्नी) वीर की पत्नी हूँ (मरुत्सखा) मौत से न डरने वाले वीर मेरे सखा हैं (इन्द्र) मेरा वीर पति (विश्वस्मात्) सब से (उत्तरः) बढ़ा चढ़ा है।

वैदिक साहित्य में स्त्रियोंको त्याग-मूर्ति माना गया है। भारतीय स्त्रियां मूर्तिमती तपस्या है, मूक सेवा हैं। वे अपार श्रद्धा और अमर आशा हैं। प्रकृति जिस प्रकार बिना शोर मचाये अपना काम करती है, फूल खिलाती है, उसी प्रकार भारतीय स्त्रियाँ परिवार में सतत कष्ट सहकर आनन्द का निर्माण करती है। सीता, सावित्री, गान्धारी, द्रौपदी उत्तरा और झांसी की रानी उनके आदर्श हैं। हम इनको अबला समझते हैं परन्तु वैदिक स्त्री का जीवनादर्श मानो प्रज्वलित होमकुण्ड है, मूर्तकर्म योग है। इसलिए वह अबला नही, वीराङ्गना है।

महाभारत में एक कथा है कि, एकबार सिन्धुराज ने संजय के राज्य को जीत लिया। संजय ने सिन्धुराज से प्रार्थना की वह उसका राज्य लौटा कर संधि करले ताकि वह राजा भी बन जाए और रक्त-पात भी न हो। वह बात संजय ने जब अपनी मा से कही तो उस यशस्विनी, दीर्घदर्शिनी वीर माता का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसने कहा, "अरे अप्रिय-दर्शी! तू मेरा पुत्र नही, न तू अपने पिता का ही अंश है। वीर पुरुष समरभूमि में वीरोचित पराक्रम दिखलाते हैं, अथवा वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। युद्ध में जाओ और वीरगति प्राप्त करो।" मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयः न च धूमायितं चिरम्। धुधुआती लकड़ी की तरह जलना, अर्थात् नपुंसकों की भांति भीरुता का जीवन बिताने से तो दो घड़ी के लिए जलती हुई लकड़ी की भांति युद्ध में अपना तेज दिखा कर वीर गति को प्राप्त होना अधिक श्रेयस्कर है। संजय इससे प्रेरित होकर भूमि में किया। गया युद्ध व विजय प्राप्त की।

कौरव और पांडव सेना में चक्र-व्यूह भेदन की कुशलता अभिमन्यु मे ही थी। सोलह वर्ष के अभिमन्यु को यह प्रेरणा अपनी माता से गर्भ मे मिली थी। प्रिंस बिस्मार्क के विषय में कहा जाता है कि जब वह गर्भ में था उसकी माता अपने घर के द्वार पर लगे नैपोलियन की सेना की तलवारों के चिह्न देखा करती थी। वहीं से उसके हृदय में फ्रांस से बदला लेने वाले वीर पुत्र की कामना उठी और इन्हीं संस्कारो ने प्रिंस बिस्मार्क को पैदा किया। मदालसा गर्भावस्था 'शुद्धो ऽसि बुद्धोऽसि निरजनोऽसि संसार माया परिवर्जितोऽसि मेरे बेटे! तू शुद्ध है, बुद्ध है, संसार की माया से निर्लिप्त है— कहा करती थी। आठ सउकीसन्तानें ब्रह्मर्षि बनीं। यह देखकर उनके पति बोले-सभी सन्तानें यदि ब्रह्मर्षि ही बन जाएंगी तो राज्य कौन संभालेगा? तब नवम पुत्र के समय मदालसा ने अपनी विचार धारा बदल दी और वह पुत्र क्षात्र धर्म के गुणों से सम्पन्न क्षत्रिय बना। क्या इन स्त्रियों को अबला कहा जा सकता है?

सम्राट् (हिन्दी मासिक) : एक सुन्दर पत्रिका

आर्य साहित्य अकादमी, दिल्ली के मुखपत्र 'सम्राट्' ने एक वर्ष की अपनी सारस्वत-यात्रा पूरी कर ली है। अपने आकर्षक आकार-प्रकार, मनोहर साज-सज्जा, परिष्कृत मुद्रण के साथ-साथ निष्पक्ष सम्पादकीय, निर्भीक एवं ज्ञान-वर्द्धक लेखो, ओजस्वी कविताओं व मार्मिक कहानियों के द्वारा 'सम्राट्' ने आर्य समाज में अपना अन्यतम स्थान बना लिया है। सम्राट् का यह अक इस बात का साक्षी हैकि उसे तैयार करने मे पर्याप्त परिश्रम, लगन और निष्ठा से कार्य किया जाता है।

सम्राट् के मनस्वी सम्पादक श्री चन्द्र-मोहन शास्त्री, जिन्हे पत्रकारिता स्व० जगदेव सिंह सिद्धान्ती जी से विरासत में मिली है, और आर्यसमाज के जाने-माने उत्साही लेखक डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण समर्पित भावना से 'सम्राट्' को अपनी अहर्निश सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। डा० भवानी लाल भारतीय, ब्रह्मदत्त स्नातक, वैद्य गुरुदत्त, आचार्य विश्वश्रवा., क्षेमचन्द्र सुमन, विजयेन्द्र स्नातक, स्वामीदीक्षानन्द, स्वामी जगदीश्वरानन्द, यशपाल, आर्य बन्धु, सत्यदेव शास्त्री, आदि आर्य विद्वान् समय-समय पर अपनी लेखनी द्वारा सम्राट् को उपकृत करते रहे हैं। दिवंगत आर्य विद्वानों के लेख भी इसमे स्थान ग्रहणकर उनकी स्मृति दिला जाते हैं। आर्येतर विद्वानो के ज्ञानवर्द्धक लेख भी इसमे प्रमुखता से प्रकाशित होते हैं। इस पत्रिका की साज-सज्जा और सामग्री से अन्य आर्य पत्र-पत्रिकाये प्रेरणा ग्रहण करेंगी। 'सम्राट्' के पश्चात् 'वेदोद्धारिणी का इसी के अनुकरण पर प्रकाशन इसी दिशा में एक शुभ संकेत है।

अच्छे प्रयास का सर्वत्र स्वागत होना चाहिए। अतः हम प्रत्येक आर्य परिवार, शिक्षणालय, पुस्तकालय और वाचनालय से यह आशा रखते हैं कि वे 'सम्राट्' के नियमित ग्राहक बनकर प्रकाशक का उत्साहवर्द्धन करेंगे।

—क्षितीश वेदालंकार, डी-8। गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-४९

सम्राट् (मासिक): सम्पादक चन्द्र मोहन शास्त्री, अध्यक्ष आर्य साहित्य अकादमी, वार्षिक शुल्क २५ रु०। प्राप्ति स्थान-७११७ पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

सुभाषित

सा रम्या नगरी महान् स नृपतिः सामन्त चक्रं च तत्
पार्श्वे तस्य च सा विदग्धपरिषत् ताश्चन्द्रबिम्बाननाः ।
उद्रिक्तः स च राजपुत्र निवहस्ते बन्दिनस्ताः कथा
सर्वं यस्य वशादगात् स्मृति पथं कालाय तस्मै नमः ।।
—भर्तृहरि

अहो, रम्य नगरी थी कैसी, कैसा वह उत्तम सम्राट्
कैसी चन्द्रमुखी ललनाएं, कैसी उसकी सभा विराट् ।
राजपुत्र, परिजन थे कैसे गाते थे कवि कीर्ति ललाम
जिनके वश स्मृति-शेष हुए सब, काल देव को उन्हीं प्रणाम ।।
—स्व० गोपालदास गुप्त

सम्पादकीयम्

महाकुंभ और समुद्रमंथन

आम चुनावों की उपमा प्राय महाकुम्भ से दी जाती है । जैसे कुम्भ पर लाखो लोग उमड़ पड़ते हैं, वैसे ही चुनावो में लाखों नहीं, करोड़ो लोग शामिल होते हैं । इसलिए यह कुम्भ का भी महाकुम्भ है । फिर कुम्भ हर बारह साल बाद आता है, पर यह चुनावों का महाकुम्भ 5 साल बाद ही आ जाता है । इस दृष्टि से भी यह कुम्भ से बढ़कर महाकुम्भ है ।

पर वास्तव मे इसे समुद्र मथन कहना चाहिए । जैसे देवो और दानवों ने मिल कर, पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र का मथन किया था, वैसे ही यहा विभिन्न राजनीतिक दल मिल कर इस भारत रूपी महासागर का मथन करते हैं । हिन्द का यह महासागर रहो तो असली हिन्द महासागर है जिसके आलोडन विलोडन मे समस्त जन लगते हैं ।

एक ओर पौराणिक कथा देवों और दानवों द्वारा समुद्रमथन की बात कहती है, यहा हम 'समस्त जन' की बात कर रहे हैं । तो क्या वे देव और दानव भी ये भारत के ही समस्त जन हैं ?

जब पहले कभी तेंतीस करोड देवी देवताओं की चर्चा आती थी तो प्रगतिशील लोग कहा करते थे कि ये तेंतीस करोड देव और कोई नही, भारत के ही नागरिक हैं । यह उस समय की बात है जब भारत की जनसख्या तेंतीस करोड थी । राष्ट्रमनीषी और वन्देमातरम के अमर गायक बकिमचन्द्र चटर्जी ने अपने उस अमर गीत में लिखा था—त्रिंश कोटि कण्ठ कलकल निनाद-कराले, द्वित्रिंश भुजैर्धृत खर करवाले—तब भारत की जनसख्या केवल तीस करोड ही थी, इसीलिए उन्होने तीस करोड कण्ठो के कलकल निनाद की और साठ करोड खड्गधारिणी भुजाओ की बात कही थी । पर स्वतन्त्रता-पूर्व के उस युग मे, सम्भवत बकिम के जीवन काल मे या उसके आस-पास ही भारत की जनसख्या तेंतीस करोड तक पहुच गई थी । इसलिए भारत के नागरिको को तेंतीस करोड देवता की सज्ञा देना कुछ न कुछ जम ही जाता था ।

पर हमारा यह देव-निर्मित देश प्रजनन-प्रक्रिया मे इतना माहिर है कि हर साल भारत में एक नया आस्ट्रेलिया पैदा हो जाता है । आस्ट्रेलिया की कुल आबादी 50 लाख है और भारत इतनी आबादी तो केवल 365 दिन मे बढाकर खडी कर देता है । प्रजनन-शीलता पौरुष की निशानी है । यह भारतवासियो के पौरुष का ही परिणाम है कि अब इसकी आबादी 70 करोड के आकडे को छू रही है और सांख्यिकीविद कहते हैं कि 19वीं सदी के समाप्त होते होते भारतीयो का पौरुष एक अरब की संख्या को पार कर जाएगा ।

जनसख्या की इस बढती भयावहता की चिन्ता परिवार नियोजन के अलम्बरदार करें । हमारा मुद्दा यहा दूसरा है । मुद्दा यहां यह है कि जब भारत की आबादी तेंतीस करोड़ थी, तब इसे तेंतीस देवताओ का देश कहा गया । अब जब आबादी 70 करोड़ तक पहुच रही है, तो भारत को 70 करोड देवताओं का देश क्यों न कहा जाए ?

इस तर्क में कोई असंगत बात नहीं है । कठिनाई केवल एक है । यदि सबके सब देवता ही देवता है, तो समुद्र मथन कैसे होगा ? क्योकि जब तक शेषनाग वासुकि के रस्से की दूसरी ओर से पकड़ने वाले दानवों की टीम नहीं होगी, तब तक कम्बल या 'टग आफ वार' कैसे होगा ? अब दानव कहा से आएंगे ? क्योंकि भारत तो सत्तर करोड देवताओं का देश हो गया । देवताओं के देश में दानव कहां ? लंका निशिचर निकर निवासा । इहां कहां सज्जन कर वासा । तो क्या दानवों को 'इम्पोर्ट' करना पड़ेगा ?

[illegible] चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं ? हालांकि यह देश 'आयातित [illegible] पर बहुत मोही है, और कुछ लोग तो अपनी शक्ल-सूरत को छोड़कर अपने घर मे सब सामान—सामान ही क्यों, चाल-ढाल रहन-सहन-भाषा-सभ्यता-सस्कृति—सब 'इम्पोर्टेड' होने पर अत्यन्त गर्व अनुभव करते हैं । पर हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि दानवो को विदेशो से इम्पोर्ट करने के लिए आपको किसी लायसेंस या परमिट के लिए भागदौड करने की जरूरत नहीं है । अपने पड़ोस मे ही आपको दानव मिल जाएंगे ।

दानवों की कोई अलग नस्ल नहीं होती । न उनके सिर पर सींग होते हैं । देवता और दानव एक ही वश के, एक ही नस्ल के, एक ही परिवार के और सगे भाई भी हो सकते हैं । उनकी शक्ल-सूरत मे और बाकी किसी चीज मे कोई अन्तर नहीं होगा । केवल उनके चिन्तन की शैली मे अन्तर होता है । इसी विचार-भेद के कारण देवता ही दानव बन सकते हैं और दानव भी देवता बन सकते हैं ।

सस्कृत में कहावत है — साक्षरा, विपरीततां गता राक्षसा भवन्ति—साक्षर ही जब विपरीत आचरण करने लगे तो वह राक्षस (साक्षर=राक्षस) बन जाता है । यह बात भाषा विज्ञान की दृष्टि से केवल 'हिंस' को 'सिंह' बनाने वाली वर्णव्यत्यय की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यवहार-व्यत्यय की भी प्रक्रिया है ।

देवता लोग दानव कब बन जाते है ? राष्ट्रीय सन्दर्भ मे हमारा कहना है कि जो राष्ट्रवादी नागरिक है वे सब देव है और जो अराष्ट्रवादी नागरिक है, वे सब दानव है । वही चिन्तन की शैली वाली बात है ।

अब राष्ट्रवादी कौन है और अराष्ट्रवादी कौन है—यह प्रश्न है ।

इस प्रश्न का उत्तर हमारी दृष्टि मे अत्यन्त सरल है । जो भी व्यक्ति अपने सम्प्रदाय को (जिसे आजकल गलती से धर्म, मजहब या रिलीजन शब्द से सम्बोधित किया जाने लगा है) राष्ट्र से ऊपर मानता है, वह सम्प्रदायवादी और अराष्ट्रीय है और जो अपने राष्ट्र को अपने सम्प्रदाय से ऊपर मानता है, वह राष्ट्रीय है । जितने सेमेटिक मजहब या उन्ही की तरह सोचने वाले, उन्हीं के पदचिन्हो पर चलने वाले लोग हैं, वे साम्प्रदायिक है, अराष्ट्रीय हैं वे ही दानव कहे जाने योग्य हैं । और जो भारत को सब मतों और सम्प्रदायो से ऊपर मानते है, वे असम्प्रदायवादी है, सही मामलो में 'सेक्युलर' हैं, राष्ट्रवादी है और देव कहे जाने योग्य हैं ।

आधुनिक भारत के इन सत्तर करोड नागरिको मे कितने दानव हैं, कितने देव, इस समय इस बहस मे हम नही पडेंगे । हमने तो एक विभाजन रेखा बना दी है । उस रेखा के हिसाब से आप स्वय देव—दानव का फैसला कीजिए और अपने कर्तव्य को पहचानिये और फिर चुनावो के इस समुद्र मथन के लिए तैयार हो जाइए ।

एक अद्भुत व्यक्तित्व

मेरे खून की हरेक बूंद से देश को स्फूर्ति मिलेगी

—इन्दिरा गांधी

—डा० आनन्द प्रकाश—

राष्ट्रीय एकता की प्रतीक, विलक्षण प्रतिभा की धनी एव विश्व-मानवता हितैषिणी भारत-रत्न माननीया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की नृशस हत्या कर दी गयी। महात्मा गाधी की तरह उनकी भी गोली मारकर हत्या की गयी। देश की अखडता की रक्षा के लिए उन्होंने अपना बलिदान दे दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के विवेक, शातिदूत जवाहर लाल नेहरू की उदारता और लौहपुरुष सरदार पटेल की दृढता ने भारत के आधुनिक स्वरूप की नीव डाली। श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने लम्बे प्रधान-मन्त्रित्व काल मे भारत को एक विश्व-शक्ति का गौरवपूर्ण स्थान दिलाया और देश मे लोकतत्र को सुदृढ किया। उनके शासन काल मे, वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रो मे अभूतपूर्व प्रगति हुयी। विकासशील एव गुटनिरपेक्ष देशो की सशक्त नेता के रूप मे श्रीमती गाधी ने सभी को प्रभावित किया और राष्ट्र के लिए सम्मान एव कीर्ति अर्जित की। एक महान विभूति के रूप मे उनका नाम भारतीय इतिहास के साथ ही विश्व-मानवता के इतिहास मे भी स्वर्ण-अक्षरो मे सदा अकित रहेगा।

माननीया इन्दिरा जी ने अपने शासन काल मे राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सुरक्षा मे अपने अदम्य साहस, सकल्प, निर्णयक्षमता एव अद्भुत कूटनीति का परिचय दिया। उन्होने भारत पाकिस्तान युद्ध मे विजय प्राप्त की, बगलादेश के निर्माण मे सफलता प्राप्त की और पजाब समस्या पर काबू पाया। उसी के कारण अपना बलिदान भी दिया। भावी इतिहासकार यह लिखने पर मजबूर होगे कि यदि इन सकटो मे से एक मे भी भारत पराजित हो गया होता, तो भारत की सीमाये वह नही होती जो इस समय हैं, तथा देश पुन विखण्डित हो चुका होता।

वचन पूरा किया

मुझे इन्दिरा जी का वह रेडियो भाषण याद आ रहा है, जो उन्होने बगलादेश म युद्ध की समाप्ति और "बगला देश का अस्तित्व स्वीकार हो जाने पर दिया था। उन्होने उस भाषण मे कहा था कि 'हमने बगला देश का युद्ध छिड जाने पर तीन बाते कही थी—बगला देश बनेगा, पाकिस्तान की जेल मे बन्द शेख मुजीबुर्रहमान मुक्त हो जायेंगे और बगलादेश से भारत मे आये एक करोड विस्थापित लोग वापस जायेंगे। हमने इन तीनो बातो को पूरा कर दिखाया है।" इन वाक्यो ने भारत माता का सिर आकाश मे ऊचा उठा दिया।

गुटनिरपेक्षता की अलम्बरदार

इन्दिरा जी ने विश्व मे शान्ति की स्थापना, साम्राज्यवाद की समाप्ति, आर्थिक समानता की आकाक्षा, शोषण व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष, मानवता के कल्याण के प्रति जागरूकता, रगभेद की नीति के प्रति आक्रोश, एव अणुयुद्ध के खतरे को टालने के पक्ष मे जीवनपर्यन्त कार्य किया। उन्होने किसी भी लाभ, भय या धमकी के समक्ष झुककर सिद्धान्तो से समझौता नही किया। अमेरिका और रूस जैसी महाशक्तियो से भी उन्होने तात्कालिक लाभ प्राप्त करने की नीयत से कोई समझौता नहीं किया। आज गुटनिरपेक्ष और विकासशील देशो के प्रवक्ता के रूप मे भारत की आवाज इसलिए सुनी जाती है, क्योकि पूरे विश्व मे भारत ही एकमात्र ऐसा राष्ट्र है, जो सदा पक्षपात रहित बात कहता है और मानवता की रक्षा के लिए तत्पर रहता है। दक्षिण अफ्रीका और फिलिस्तीन जैसे मसलो मे भारत ने कभी अपनी नीति मे परिवर्तन नही किया। विश्व समुदाय के अविकसित समुदाय के देशो में रहने वाले और साम्राज्य-वाद के शिकजे मे जकडे करोड़ो लोग अपने को अनाथ अनुभव कर रहे होगे। और इन्दिराजी के रूप मे सबल एव साहसी नेतृत्व के चले जाने पर शोक मना रहे होगे। पता नही विश्व को ऐसा तेजस्वी व्यक्तित्व पुन कब प्राप्त होगा।

आर्यसमाज के प्रति रुख

आर्यसमाज के प्रति उनकी श्रद्धा और इसके कार्यक्रमो का समर्थन भी सर्वविदित है। पिछले वर्ष अजमेर मे "महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी" के अवसर पर उन्होंने कहा था कि "एक वर्ष के बाद हम भारतीय राष्ट्रीय काग्रस की शताब्दी मना रहे हैं और इस अवसर पर काग्रेस का सौ वर्षों का इतिहास भी प्रकाशित कर रहे हैं। परन्तु कांग्रेस के इस इतिहास मे यदि आर्यसमाज का इतिहास सम्मिलित नहीं किया गया, तो वह अधूरा रहेगा।" इन वाक्यो से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि आर्य समाज आन्दोलन के प्रति उनकी कितनी गहरी आस्था थी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान, श्रद्धेय रामगोपाल वानप्रस्थ की कृपा से मुझे इस वर्ष ३० मई को जीवन का वह अविस्मरणीय अवसर प्राप्त हुआ, जब उनके साथ मैं एक शिष्ट मण्डल में इन्दिराजी से प्रधान-मन्त्री कार्यालय में एक घंटे तक मिला और उनके निकट से दर्शन प्राप्त किये। पण्डित जवाहर लाल नेहरू का एक अमर वाक्य है—"इतिहास पढना अच्छा है, लेकिन इतिहास बनाने मे मदद करना, उससे भी बेहतर है।" कहने की आवश्यकता नही कि यह वाक्य उनकी बेटी ने ही सबसे अधिक चरितार्थ किया।

न बहाओ आसू

अपने अन्तिम भाषण, ३० अक्टूबर को भुवनेश्वर मे इन्दिरा जी ने कहा था, "मैं लम्बी जिन्दगी नहीं चाहती। मुझे इस बात का गर्व है कि अपना जीवन देश की सेवा मे लगाया। अगर आज मैं मर जाऊ तो मेरे खून की हरेक बूद से देश को स्फूर्ति मिलेगी।" जैसे उन्हे अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। इन्दिरा जी को एक कविता की ये पक्तियाँ बहुत पसन्द थी, जैसा कि उन्होने एक अमरिकी भेंट वार्ता मे कहा था।

न बहाओ अपने आँसू उन पर
जो इस जहाँ से चले गये।
मातम करो उन बुजदिलो पर
जो दुनिया के जुल्मो से आख बन्द
कर लेते हैं॥

पता—एल २६ हैदराबाद कालोनी,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी-२२१००५

तुम्हें प्रणाम !

—राधेश्याम 'आर्य'—

राष्ट्र की एकता—
अखण्डता
मानवता-आत्म विश्वास
की रक्षा के लिए
किये समर्पित
अपने प्राण।
दीन दलित को
शोषित को,
उत्पीडित को
जाति-देश की सीमा तोडकर
शक्तिपुञ्ज बन,
ज्योतिपुञ्ज बन
दिया अभय सा
त्राण।
भारत की राष्ट्रीय प्रतिष्ठा
महिमामण्डित कर,
भारत को सशक्त बनाकर,
औद्योगिक-वैज्ञानिक
और सैनिक
प्रगति का
मानदण्ड स्थापित कर,
अमर कर गयी—
इतिहास में—
अपना नाम।
राष्ट्र रक्षा हित
निज रक्त बहा कर
ज्योतिर्मय किया
बलिवेदी को
ललित ललाम
देवि 'इन्दिरा'
तुम्हें प्रणाम !

महर्षि निर्वाण समारोह

खण्डवा (म० प्र०) आर्यसमाज सिवाजी चौक ने दीपावली पर ऋषि निर्वाण दिवस समारोह मनाया। बृहद् यज्ञ के पश्चात् श्री रामचद्र आर्य आदि स्थानीय आर्य नेताओं ने महर्षि के जीवन तथा देश की वर्तमान परिस्थिति के सदर्भ म जनता के कर्तव्य पर प्रकाश डाला।

—लाडीखेत समाज मन्दिर में पं० रामदत्त पाण्डेय की अध्यक्षता म प० प्रेम-देव शर्मा के पौरोहित्य मे आयोजित महर्षि निर्वाण यज्ञ समारोह में महात्मा [illegible] ने वानप्रस्थाश्रम के चतुर्थ वर्ष में प्रवेश किया। स्वामी गुरुकुलानन्द [illegible] ने चतुराश्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला।

सांप तो मरा नहीं, लाठी भी तोड़कर रख दी

एक यक्ष प्रश्न-
जो समाधान चाहता है

डा० विक्रम कुमार विवेकी, प्रवक्ता, पंजाब विश्वविद्यालय
होशियारपुर

आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व जब वनवास में पिपासाकुल पाण्डव घूमते हुए एक पवित्र सरोवर के तट पर प्यास बुझाने पहुंचे तो कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न अदृश्य देवता यक्ष द्वारा उच्चरित हुये जिनका समुचित उत्तर सत्यवादी युधिष्ठिर ने दिया था। परन्तु आज धरती के चप्पे-चप्पे से एक यक्ष-प्रश्न रह-रह कर उभर रहा है जिसे कालचक्र और सशक्त बनाता है। धर्म प्रधान आर्यावर्त की कभी अपनी दिव्य आभा से भूलोक का मार्गदर्शन कराने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। आज वह स्वयं धर्म निरपेक्षता के नाम पर अपने चारों ओर कई पेंचीदे व जटिल प्रश्नों का अम्बार लगाकर वीभत्स समस्याओं से घिरा किंकर्तव्यविमूढ़ता के कगार पर खड़ा है। 'धर्मनिरपेक्षता की जो अमरबेल आजादी के समय हमने खुद अपने हाथों से लगाई आज वह सम्पूर्ण भव्यता को ही आत्मसात् करने पर उतारू है।

कभी कश्मीर की सुरम्य घाटियों में साम्प्रदायिकता का ताण्डव नृत्य, कभी वीरभूमि पंजाब की पवित्र गोद पर हिंसा की लपटें, कभी दिलभरी दिल्ली में हिन्दू-मुस्लिम दिलों का अवाञ्छनीय टकराव, कभी मुरादाबाद में क्षुद्र सूअर की अद्भुत करामात, कही आनन्दमार्गियों के मार्ग का आनन्द, कहीं अकालियों का अकाल तख्त, कहीं देवी-देवताओं पर अन्धविश्वासात्मक बलियां, कहीं ईसाइयों के कुत्सित षड़यन्त्र, कभी मीनाक्षीपुरम् तो कभी भिवण्डी, कभी अलीगढ़, चण्डीगढ़, आखिर क्या है यह तमाशा ?

एक दिन दिल्ली में सुहावनी धूप के मौसम में सिर पर छतरी लगाये जाते एक मौलवी साहब से एक हिन्दू भाई ने पूछा, कि छतरी क्यों लगा रखी है, तो बगल में रेडियो दबाये हिन्दुस्तानी मक्की के दाने चबाते हुए मौलवी ने बताया कि कराची (पाकिस्तान) में इस समय जोर दार वर्षा जो हो रही है।

हिन्दुस्तानी मिट्टी में पले इस प्रकार के आस्तीन के सांपों का फन जब तक सरकार द्वारा कुचल नहीं दिया जाता तब तक न कभी अलीगढ़ में शान्ति होगी और न कभी दिल्ली की सड़कों पर।

यथार्थ यह है कि जितने साम्प्रदायिक झगड़े भारत में होते हैं उतने और कहीं नहीं। क्योंकि कारण और समाधान के अन्वेषण की निचली तहतक पहुंचने पर हमें अनायास ही एक मात्र समुचित उत्तर यही मिलता है "धर्मसापेक्ष राष्ट्र"। एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा-वेशभूषा एक सभ्यता व एक जैसा व्यवहार। वसुधैवकुटुम्बकम् यत्र, विश्वं भवत्येक नीडम्, मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे, माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" आदि हमारे आदर्श हैं। जब तक अपने संकुचित विचार व क्षुद्र स्वार्थों को भुलाते हुए हम उपर्युक्त सत्य को राज्य पदासीन नहीं करते तब तक कभी भी हमे शान्ति नहीं मिल सकती।

अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की हमारी यह बेतुकी नीति एक दिन हमें ही निगल जायेगी। ये दूध पले अजगर अपने जहर से भारत माता के अंग-अंग को विषाक्त करते ही रहेंगे, यह सुनिश्चित है और ये आकस्मिक साम्प्रदायिक विस्फोट कब और कहाँ फट पड़ें कहा नहीं जा सकता।

हमारी परम्परा रही है क्षमावान् बने रहें। परन्तु यह भी हमें नहीं भूलना कि—

> क्षमा शोभती उस भुजंग को
> जिसके पास गरल हो।
> उसको क्या जो दन्तहीन
> विषहीन विनीत सरल हो।

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः।
उभाभ्यां हि समर्थोऽस्मि शास्त्रादपि शरादपि।

सहोदर भाई की तरह हिन्दुओं का यह धर्म है कि सभी मुस्लिम भाइयों को संकीर्णता छोड़ने के लिये प्रेरित करें। शांति से वे भारत में ही रहें पर यदि उन्हें यह पसन्द नही तो उनके पहले से ही बने घर पाकिस्तान में उन्हे भेजने का उचित प्रबन्ध करवाय। देश के प्रति उनकी यह गद्दारी कभी नहीं चलनी चाहिए।

वस्तुतः इस लेख द्वारा वैमनस्य उत्पन्न करना या साम्प्रदायिकता का विष घोलना लेखक का उद्देश्य कदापि नहीं। हमें तो अटक से कटक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक ऐसे राष्ट्र-भाव की कामना है, जहाँ पारस्परिक स्नेह व सौहार्द फले-फूले।

इस देश में धर्म परिवर्तन द्वारा समाज परिवर्तन के षड़यन्त्र का जीवन्त प्रमाण है, पाकिस्तान। खालिस्तान की मांग को हम हास्यास्पद समझते रहे परन्तु राष्ट्र को खून बहाते हुये एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। भारतमाता के विशाल शरीर की शिराओं में धर्म निरपेक्षता के इंजेक्शन ने प्रतिक्रिया (Re-action) ही उत्पन्न की है। पश्चिमोत्तर, पूर्वोत्तर, पूर्वाञ्चल, सुदूर दक्षिण भाग व कभी-कभी मध्यप्रान्त भी मुस्लिम ईसाइयत आदि के विभिन्न षड़यन्त्र के कारण भयंकर विस्फोटों से प्रभावित होते रहते हैं।

प्रश्न उठता है कि देश विभाजन के बाद भी यह सिरदर्द क्यो ? लगता है हम से कहीं कोई बहुत बड़ी गलती हुई है। सांप भी मरजाये और लाठी भी न टूटे यह बुद्धिमानी समझी जाती है, पर हमारे नेताओं से सांप तो मरा नहीं, लाठी भी तोड़कर रख दी। चोरी करने की सजा भुगतने वाले मूढ व्यक्ति की भांति हमारे नेताओं ने दस प्याज भी खा लिये और मुंह पर दस तमाचे भी लगवा लिये। पाकिस्तान समझदार निकला। विभाजन के तुरन्त बाद ही उसने अपने को इस्लामिक राज्य घोषत कर दिया। क्या मजाल जो हिन्दू या कोई अन्य मतावलम्बी वहाँ फटक सके। पर हिन्दुस्तान में गंगा उल्टी बह रही है। यहाँ अल्पसंख्यकों को संरक्षण मिलता है तथा बहुसंख्यकों को सम्प्रदायवादी और प्रतिक्रियावादी समझा जाता है। यह सब केवल इसलिए, कि राष्ट्र के तथाकथित कर्णधार धर्मनिरपेक्षताके कड़ाह में अपने स्वार्थ की पूरियां अच्छी तरह से तल लेते हैं।

ऊपर हमने एक यक्ष-प्रश्न को रेखाङ्कित किया है। यक्ष-प्रश्न केवल प्रश्न ही नहीं होता अपितु वह अपना समाधान मांगकर उस पर आचरण चाहता है। उपर्युक्त यक्ष-प्रश्न आज समय-समय पर अधिक, अधिकतर व अधिकतम गुंजायमान हो रहा है। आवश्यकता है इस प्रश्न का समाधान करने वाले युधिष्ठिर की। इस प्रश्न का एकमात्र समाधान है 'धर्मसापेक्ष राष्ट्र' जिसका अमल करना दिल्ली के युधिष्ठिर के हाथ है। जब तक धर्मनिरपेक्षता की जर्जर ईंट हम आधारशिला से उखाड़ नही फेंकते तब तक स्वस्थ व शान्तिपूर्ण भारत की कल्पना नहीं की जा सकती।

घी-दूध बहने वाले राष्ट्र मे आज रक्त धारायें प्रवाहित हो रही हैं। दिन प्रतिदिन साम्प्रदायिक झगड़ो व अखाड़ा देखकर कोई भी बुद्धिजीवी राष्ट्र के भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं। आक्रोश, व्याकुलता व उद्वेग के घेरे में घिरा हुआ लेखक भी तुरन्त 'धर्मसापेक्ष राष्ट्र' की घोषणा को सुनना चाहता है। बेशक भारत को मुस्लिम या इसाई राष्ट्र ही क्यों न घोषित कर दिया जाए! धर्मसापेक्ष राष्ट्र हो जाने से अनर्थक रक्त-सरिताय तो नहीं बहेंगी, परन्तु बहुसंख्यक हिन्दुओं की उपेक्षा कर भारत को अत्यल्प लोगों का राष्ट्र घोषित करना अपने पांव में कुठाराघात के समान होगा। उपर्युक्त जटिल यक्ष-प्रश्न का उचित समाधान क्या है? बुद्धिजीवी वर्ग अच्छी तरह से जानता है, और इसका अमल देखने को उत्कण्ठित है।

तू अमृत पुत्र बन कर आया है !

—सुरक्षा भारद्वाज—

ओ वेद भानु की जगमग ज्योति, मानवता का चाद सितारा।
आर्य वीर क्यों दिया तेरा अधियारा या कि जिया तेरा अंधियारा ॥

तू सन्मार्ग का प्रदर्शक, चलते रहना तेरा काम।
अधभर में ये आलस कैसा, अभी अधूरा तेरा काम ॥

दरिया के मत खोज किनारे तूफानों में तेरा धाम।
ओ आर्य मुसाफिर तू ही मजिल, मजिल दूजा तेरा नाम ॥

राजनीति उस ओर पुकारे, धर्म खड़ा इस ओर।
मनकी द्विविधा में तू फंसकर, भूल गया निज ठौर ॥
वेदोऽसि के सुन्दर सपने, टूट गये किस आस की डोर।
भूला भटका डगडमग डोले और पाव भी हो गये तेरे चोर ॥
भारत माँ की आंख का तारा वैदिक सभ्यता का उजियारा।

शक्ति तेरी दुनिया माने, त्याग भरा इतिहास तेरा।
पर तू न मिटा, वे खुद ही मिटे, जो करते थे उपहास तेरा ॥
जग को आर्य बनाने का क्यों शिथिल हुआ प्रयास तेरा।
हंस-हंस कर मर मिटने का अब कहाँ गया उल्लास तेरा।
देश जाति का रखवारा, दीन अज्ञ निर्बल का सहारा।

दुनिया भले ही संग नहीं है, न चाहे लाख सहारे हों।
मंजिल तेरी तभी कटेगी, 'चरैवेति' के नारे हों।
मंजिल दूर उन्हीं की है, जो खुद जी से ही हारे हों।
तू अमृत पुत्र बन कर आया है, प्राण जाय पर वचन न टारा ॥
ओ आर्य वीर क्यों दिया तेरा अंधियारा, या कि जिया तेरा अंधियारा।

पता—आसरपोटा हाउस, पानी की टंकी के पास
फ्रीगंज, उज्जैन (म० प्र०)

पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

(गतांक से आगे)

—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

पूर्वी एशिया की यात्रा के सिलसिले में पिछले अंक में इंडोनेशिया के बारे में आप पढ़ चुके हैं, अब आगे पढ़िए... ।

बाली में स्वागत

बाली पहुंचे, तो एक अद्भुत दृश्य देखने में आया। हवाई अड्डे पर वाद्य-संगीत की समा बंधी थी, और दो दर्जन के लगभग गायक और गायिकाएं मंगलगान गा रहे थे। उतरते हुए यात्रियों की ओर गायिकाओं की यह मण्डली बढ़ने लगी। सब के हाथों में पुष्पमालाएं तथा फूलों के गुच्छे थे। हम सोच रहे थे कि इन्डोनीसिया के मन्त्री व उच्च प्रशासक के स्वागत में यह आयोजन किया गया है। पर हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब स्वागतार्थ बढ़ती हुई नृत्याङ्गनाएं हमारे सम्मुख रुक गईं। वे हमारी मण्डली के नेता के गले में पुष्पमाला डालना चाहती थीं। आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती हमारे साथ थे। मेरे संकेत पर अब एक नृत्याङ्गना उनके गले में माला डालने लगी तो स्वामी जी को संकोच हुआ, पर मेरे अनुरोध पर उन्होंने इस औपचारिक सम्मान को स्वीकार कर लिया। अन्य सब यात्रियों को पुष्प-गुच्छ समर्पित किये गये। परम्परागत कला के अनुसार अत्यन्त सुन्दर रूप से बनाये इस शानदार स्वागत का आयोजन ट्रेवल ट्रस्ट ने किया था।

स्वागत के लिए बाली के अनेक हिंदु नेता एवं विद्वान भी हवाई अड्डे पर आये थे। हमने उनके साथ अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित किया और विश्राम के लिये होटल चले गये। डेनपसार (बाली की राजधानी) के जिस होटल में ठहरे, वह समुद्र-तट पर एक रमणीक उद्यान में था। निवास के लिए छोटी-छोटी कुटिया बनी हुई थीं। बाहर से झोपड़ियां दिखाई देती थी, पर उनके अन्दर आधुनिक वैज्ञानिक युग के सब सुख-साधन थे। प्रत्येक कमरे के साथ पृथक् बाथरूम में ठण्डे पानी के साथ गरम पानी के नल भी थे। कमरों में टेलीफोन भी थे, और उनकी सज्जा आधुनिक ढग की थी। कुटी के अन्दर ऐसा प्रतीत होता था, मानों हम किसी अत्याधुनिक होटल में ठहरे हैं और बाहर निकलने पर हम ऐसे हरे-भरे उद्यान में आ जाते थे, जिसमें प्रकृति की रमणीयता चरमसीमा पर विद्यमान थी। जोगजकार्ता का हमारा होटल भी कुछ इसी ढंग का था। जावा और बाली में भारत की अब तक सुरक्षित प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप ही थे ये होटल दरवाजों तक पर रामायण कथा की रूपावलियां उत्कीर्ण थी और हिन्दू देवी-देवताओं के चित्रांकन थे।

वेदों का इंडोनीसिया की भाषा में अनुवाद

29 सितम्बर, शनिवार को बाली की उदयन यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट आफ हिन्दू धर्म में एक विशेष आयोजन किया गया। इन्डोनीसिया में सरकार का एक विभाग धर्म-मन्त्रालय (Ministry of Religions) भी है जिसमें हिन्दू धर्म के लिये एक पृथक् डाइरेक्टरेट (निदेशालय) है, जिसके डाइरेक्टर जनरल के पद पर श्री पूज(pudja)या श्री पूज्य नियुक्त हैं। ये वेद शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान हैं। गीता मनुस्मृति, ईशोपनिषद, श्वेताश्वतर उपनिषद, आदि का वे इन्डोनीसियन भाषा में अनुवाद कर चुके हैं और आजकल वेदों के अनुवाद करने में लगे हैं। ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का वे अनुवाद कर भी चुके हैं, और इनके कुछ अंश प्रकाशित भी हो गये हैं। इन सबका प्रकाशन इन्डोनीसिया की सरकार कर रही है। सरकार का हिन्दु डाइरेक्टरेट ही बाली की उदयन यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में इन्स्टीट्यूट आफ हिन्दू धर्म का संचालन करता है। हमारी प्रबल इच्छा थी, कि इस संस्थान में जाकर बाली के हिन्दू विद्वानों के साथ सम्पर्क करें और वहां प्रचलित हिन्दू धर्म के सम्बध में जानकारी प्राप्त करें। श्री पूज के प्रयत्न से इसके लिये समुचित व्यवस्था हो गई। हिन्दू धर्म के ये महान् विद्वान एवं नेता इसी प्रयोजन से जकार्ता से एक हजार मील से भी अधिक दूरी पर स्थित डेन पसार आये थे और उनके निर्देशन में हमें उस आयोजन में सम्मिलित होने का सुअवसर मिला, जिसमें बाली के अनेक प्रमुख विद्वान उपस्थित थे। हमें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि इन्स्टीटयूट आफ हिन्दू धर्म में दो हजार के लगभग विद्यार्थी वेद, शास्त्र, हिन्दूदर्शन, कर्मकाण्ड, पुराण, महाभारत तथा सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन कर रहे हैं। सम्भवतः भारत में भी कोई ऐसी शिक्षा संस्था नहीं है, जिसमें इतनी अधिक संख्या में विद्यार्थी हिन्दू धर्म के अध्ययन में रत हों।

धर्म का स्थानीय रूप

हिन्दू धर्म संस्थान में हमें बाली में हिन्दू धर्म के स्वरूप से परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला। हिन्दू धर्म बहुत प्राचीन है। समय-समय पर उसमें नये सम्प्रदायों तथा पूजा-पद्धतियों का विकास होता रहा है। भारत में शैव, वैष्णव, शाक्त आदि विविध सम्प्रदाय हिन्दू धर्म के अन्तर्गत हैं। अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद और द्वैतवाद तीनों हिन्दू दार्शनिक विचारधारा में विद्यमान हैं। प्रतिमा पूजा के साथ-साथ याज्ञिक कर्मकाण्ड और निराकार निर्गुण ब्रह्म की उपासना का भी हिन्दू धर्म में स्थान है। वेद शास्त्रों में समान रूप से निष्ठा रखते हुए भी हिन्दुओं के विविध सम्प्रदायों की पूजा-पद्धति तथा दार्शनिक मन्तव्यों में भारी अन्तर है। इस दशा में यह अस्वाभाविक नहीं कि भारत से हजारों मील की दूरी पर स्थित बाली के हिन्दू धर्म की पूजा पद्धति तथा मन्तव्य भारत के हिन्दू धर्म से कुछ भिन्न हो। हिन्दू धर्म के डाइरेक्टर-जनरल श्री पूज तथा हिन्दू धर्म संस्थान के आचार्यों से बाली के हिन्दूधर्म के सम्बन्ध में जो परिचय हमें प्राप्त हुआ उसको संक्षेप में यहां उल्लिखित करना उपयोगी होगा।

बाली के हिन्दू धर्म के पांच मूल सिद्धान्त—हैं-एकेश्वरवाद, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, कर्मफल और मोक्ष। ईश्वर एक है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव एक भगवान के ही तीन रूप हैं। सृष्टि के उत्पादक के रूप में ईश्वर ब्रह्मा कहाता है। सृष्टि के पालनकर्ता के रूप में उसे विष्णु कहते हैं और जब वह सृष्टि को अपने में विलय कर लेता है तो उसे शिव या रुद्र की संज्ञा दी जाती है। बाली के हिन्दू यह नहीं मानते कि शिव सृष्टि का संहार करता है। उनका मत है कि सृष्टि या प्रकृति भी अनादि व अनन्त है। प्रलय में परमेश्वर सृष्टि का विलय करता है, संहार नहीं। विश्व की इस सर्वोपरि शक्ति को बाली के हिन्दू, शिव महादेव कहते हैं। वही उनके सर्वप्रधान या एकमात्र उपास्यदेव हैं। जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह वस्तुतः शरीर की मृत्यु होती है आत्मा की नहीं। आत्मा अजर-अमर है व पंच महाभूतों से निर्मित शरीर के साथ आत्मा का अन्त नहीं हो जाता। प्रत्येक मनुष्य के लिये कर्मफल का प्राप्त करना आवश्यक है। कर्मफल परमेश्वर देता है। मानव जीवन का चरमध्येय मोक्ष की प्राप्ति है।

मध्यकाल में इन्डोनीसिया के हिन्दू, देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को मन्दिरों में प्रतिष्ठापित कर उनकी पूजा करते थे पर वर्तमान में बाली के हिन्दुओं की पूजा पद्धति में प्रतिमाओं या मूर्तियों की पूजा का स्थान नहीं है। वहां प्रत्येक परिवार के घर में पूजा-स्थल के एक भाग को पद्मासन कहा जाता है जहां परिवार के लोग त्रिसन्ध्या करते हैं। त्रिसन्ध्या के मन्त्र वेदशास्त्रों से लिये गये हैं। मन्त्रोच्चारण करने के पश्चात् ध्यान किया जाता है। इस ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य यज्ञ भी किये जाते हैं पर केवल विशेष अवसरों पर। पितरों की पूजा बाली में प्रचलित है और परिवार के पूजास्थल का अन्य भाग इस पूजा के लिए प्रयुक्त होता है। परिवार के पूजा स्थलों के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम में एक केन्द्रीय पूजास्थल या मन्दिर (जिसे बाली में "पुर" कहते हैं) होता है जो सार्वजनिक या सामूहिक पूजा के काम आता है। इसी प्रकार प्रत्येक जिले में एक केन्द्रीय पूजा स्थल या "पुर" और सम्पूर्ण बाली का एक सर्वोपरि या सार्वभौम मन्दिर है, जिसे वेसाकी कहा जाता है। यह केवल बाली के हिन्दुओं का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण इन्डोनीसिया के हिन्दुओं का सर्वप्रधान "पुर" है और यहां पूजा के लिए सारे देश के श्रद्धालु नर-नारियों का आगमन होता रहता है। विश्व हिन्दू परिषद ने इसे विश्व भर के हिन्दुओं के तीर्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है और अब भारत के हिन्दूओं के लिये भी इस का वही महत्व हो गया, जो बदरीनाथ या रामेश्वरम् का है। यद्यपि बाली में मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं है, पर कतिपय देव मूर्तियां अब भी वहां विद्यमान हैं और जनता इनके प्रति श्रद्धा भी रखती है। ऐसी एक प्रतिमा भगवती दुर्गा की है।

इन्डोनीसिया के हिन्दुओं का विश्वास है कि महर्षि अगस्त्य ने यहां आकर धर्म का प्रचार किया था। अगस्त्य के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा है। हमने वह अगस्त्य गुफा भी देखी, जो महर्षि ने तपस्या और वहां रह कर धर्म की स्थापना की थी। अगस्त्य के पश्चात् महर्षि मार्कण्डेय इन्डोनीसिया गये थे। वहां के हिन्दू, धर्म संस्थापक के रूप में उनका भी अत्यधिक आदर करते हैं। गुणवर्मा नामक एक अन्य आचार्य भी दक्षिण-पूर्वी एशिया के क्षेत्र में धर्म प्रचार के लिये गये थे। बाली के लोग उन्हें भी सम्मानपूर्वक स्मरण करते हैं।

ओं स्वस्ति

जनता के जीवन पर हिन्दू धर्म का क्या प्रभाव है, इस विषय में डाक्टर शर्मा ने हमें कुछ महत्वपूर्ण बातें बताईं। डा० शर्मा असम (भारत) की गोहाटी यूनिवर्सिटी में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं, और गत सवा साल से बाली की उदयन यूनिवर्सिटी में डेपुटेशन पर संस्कृत प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं। उन्हें इन्डोनीसिया भाषा का समुचित

(शेष पृष्ठ 9 पर)

इन्दिरा गांधी की हत्या पर देश-विदेश में शोक की लहर

बैंकाक(थाईलैंड) भारतीय समुदाय दूरदर्शन व समाचार पत्रों द्वारा प्रसारित क्रूर तथ्य ईसा, सुकरात और गांधी के बलिदानों की शृंखला मे श्रीमती इन्दिरा गांधी का नाम जुडना— कठनाई से स्वीकारने को बाध्य होकर स्तब्ध रह गया। इण्डिया थाई चेम्बर आफ कामर्स के विशाल प्रागण मे आयोजित सम्पूर्ण भारतीय समुदाय की विशाल जनसभा ने दिवगता प्रधानमन्त्री को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अगले दिन आर्यसमाज ने दिवगता आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सुनियोजित हत्या की दृष्टि से भारत के भविष्य को सकटग्रस्त बताया। वक्ताओ ने निर्गुट आन्दोलन की अध्यक्षता द्वारा उसे नयी दिशा देने वाली, भारतीय राष्ट्र की अखण्डता, शक्ति व निरन्तर प्रगति हेतु जीने और प्राण उत्सर्ग करने वाली तथा श्रीमती गाधी के उत्तरधिकारी श्री राजीव गाधी के हाथ सशक्त बनाने हेतु अनिवार्यत साम्प्रदायिक सद्भाव और स्थायी शान्ति की स्थापना को आवश्यक बताया।

बंगाल

कलकत्ता आर्यसमाज (विधान-सरणी) ने विशिष्ट आर्यजनो की उपस्थिति मे दिवगत प्रधान मत्री को अपनी शोक-श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए शान्ति पाठ द्वारा आ मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की।

कांचरापाडा समाज ने श्रीमती गाधी की निर्मम हत्या को अमानवीय कुकृत्य व मानवता का कलक बताकर तीव्र निन्दा की तथा राष्ट्र की एकता व अखण्डता की रक्षा का व्रत लेते हुए अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने एक शोक प्रस्ताव द्वारा अपने शरीर की अतिम एक-बू द रहते राष्ट्र की स्वतत्रता, एकता, अखण्डता और प्रभुसत्ता पर जीवन निछावर करने वाली जन आकाक्षाओ की प्रतीक श्रीमती गाधी की निर्मम हत्या को वज्रघात बताते हुए श्रद्धाजलि रूप में राष्ट्र की अखण्डता व प्रभुसत्ता के लिये एकजुट हो प्राणपण से यत्न करने तथा श्री राजीव गाधी के नेतृत्व मे राष्ट्रोत्थान हेतु पहले जैसे ही पूरी शक्ति से सक्रिय रहने का सकल्प लिया।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की सभी 49 समाजों ने स्वर्गीय प्रधानमत्री श्रीमती गाधी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए परमात्मा से दिवगत आत्मा की सदगति व उनके शोक-सतप्त परिवार को धैर्य व शाति की कामना की।

आर्यसमाज नौरोजी नगर के साप्ताहिक सत्सग मे प्रधानमत्री श्रीमती गाधी की निमम ह या पर उग्रवादियो की तीव्र भर्त्सना तथा परमात्मा से उनकी आत्मा की शाति हेतु प्रार्थना करते हुए उत्तराधिकारी प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी को पूरा समर्थन देने का निश्चय व्यक्त किया गया।

कीर्तिनगर समाज ने प्रधानमत्री व विश्व नेता श्रीमती गाधी की पथभ्रष्ट साम्प्रदायिक देश विघटनकारी तत्वों द्वारा बर्बर हत्या की तीव्र भर्त्सना करते हुए परमात्मा से दिवगत आत्मा की शाति हेतु एक मिनट मौन रख कर प्रार्थना की।

वेद-मदिर मे दयानन्द सस्थान और अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के कार्यकर्त्ताओ की सयुक्त अध्यक्षा प० राकेश रानी की अध्यक्षता मे हुई बैठक मे पारित प्रस्ताव द्वारा श्रीमती इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या पर गहरा दुख प्रकट करते हुए अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये और परमात्मा से आत्मा की शाति और सद्गति हेतु प्रार्थना की।

पूर्वी कैलाश आर्यसमाज ने देश की प्रिय नेता श्रीमती गाधी की नृशस हत्या पर शोक व क्षोभ प्रकट करते हुए अपने वार्षिकोत्सव के सारे कार्यक्रम स्थगित कर दिये। वेदमत्रो द्वारा दिवगत आत्मा की शाति और सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

कीर्तिनगर के महाशय चुन्नीलाल धर्माथ ट्रस्ट सचालित वेद प्रचार विभाग ने श्रीमती गाधी के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उनकी आत्मा की सदगति और नये प्रधान मत्री की सफलता की कामना की है।

राजेन्द्र नगर समाज ने कायर व देश द्रोही तत्वों के हाथो स्वर्गीय प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की शहादत पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए परमात्मा से दिवगत आत्मा की शाति की कामना करके तन-मन-धन से श्री राजीव गाधी को पूर्ण-सहयोग देने का विश्वास दिलाया है।

कृष्ण नगर समाज ने देश की दिवगत प्रधानमत्री की विश्वसघातपूर्ण हत्या के घिनौने षडयत्र की तीव्र भर्त्सना तथा परमात्मा से देश व इनके परिवार को गहरा आघात झेलने की शक्ति देने की प्रार्थना की। एक अन्य प्रस्ताव मे भारत सरकार से माँग की गयी कि पजाब व यू० पी० की भाँति देहली मे आर्यों को आत्मरक्षार्थ बिना लाइसेस तलवार रखने की छूट दी जाय।

हरियाणा

गुडगाव (हरियाणा) श्रीमती गाधी जघन्य हत्या को राष्ट्र की अपूरणीय की क्षति बताते हुए प्रान्तीय आर्यवीर दल महासम्मेलन ने हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए मौन श्रद्धाजलि अर्पित की।

हाँसी आर्यसमाज ने प्रधानमत्री की हृदय विदारक हत्या पर हार्दिक शोक व्यक्त किया। श्रद्धासुमन चढाते हुए श्री राजीव गाधी की सफलता हेतु कामना की गयी।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

पूर्वी एशिया की

(पृष्ठ ६ का शेष)

ज्ञान है और बाली के जनजीवन का उन्हें अच्छा परिचय है। उन्होने हमे बताया कि सवा साल के बाली निवास मे चोरी की कोई वारदात उनके सुनने मे नहीं आई। वहा के लोग आपस में लडते-झगडते नही। यदि किसी की मोटर साइकलें आपस मे टकरा जाए, और किसी को चोट भी लग जाए, तो वे लड़ने या एक दूसरे को दोष देने के बजाय मुसकराते हुए "ओ३म स्वस्ति कह कर अपने-अपने रास्ते पर चले जाते हैं क्योंकि वे कर्मफल पर विश्वास रखते हैं। अत मानते हैं कि जिसका दोष होगा उसे परमेश्वर कर्मफल देगा ही। परस्पर लडने से क्या लाभ? हिन्दू समाज का ऐसा ही उज्ज्वल रूप गुप्तवश शासन काल मे चीनी यात्री फाहियान ने भी भारत में देखा था। डा० शर्मा के अनुसार हिन्दू धर्म से प्रभावित बाली के जनजीवन का आज भी वही उज्ज्वल रूप है। बाली के हिन्दू जब परस्पर मिलते हैं, तो 'ओं स्वस्ति अस्तु" कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। विद्वान व बडे लोग आशीर्वाद देते हुए "ओं दीर्घायुरस्तु" तथा "ओं अविघ्नमस्तु" भी कहते हैं। यहां के जनजीवन पर सस्कृत भाषा के इस प्रभाव को देखकर गौरव की अनुभूति होती है। केवल बाली मे ही नही अपितु अन्यत्र भी सस्कृत का यही प्रभाव है। वहा के होटलो के नाम "स्वस्तिक" "अम्बर" और आय" रहते हैं। एक बैंक का नाम वहा 'अथ-लोक" है। इन्डोनीसिया मे राजपति की "कपाल नगर' सज्ञा है। वहा की भाषा में नगर का अर्थ है— राज्य और सस्कृत मे कपाल मूर्धा का पर्याय है। डेनपसार के हवाई अड्डे की दीवारो पर रामायण की कथा की रूपावलिया चित्रित हैं। बाली मे प्रवेश करते ही यह अनुभव होने लगता है, कि हम आर्यावर्त' मे आ गये जहा का प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू या आर्य है, और जहां बहुत से लोगो को गायत्री मत्र कण्ठस्थ है।

इन्डोनीसिया में धर्म शिक्षा सब के लिये अनिवार्य है। हिन्दुओ को हिन्दूधर्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है जिसमें उत्तीर्ण हुए बिना कोई विद्यार्थी ऊपर की कक्षा मे नही जा सकता। यही कारण है कि वहा के सब निवासी अपने धर्म से परिचय रखते है।

राज्यपाल मत्र और योगासन

बाली के राज्यपाल श्री मन्त्र है। हम उनमे भेंट करने के लिये उत्सुक थे। अपने व्यस्त समय मे से दस मिनट निकाल कर उन्होंने हम से मिलना स्वीकार कर लिया। पर जब हम उनसे बात करने बैठे तो समय का किसी को ध्यान नही रहा। एक घण्टे तक उनसे बातचीत होती रही। भारत की विद्वान मण्डली से मिल कर उन्होने प्रसन्नता प्रकट की। उन्होने कहा कि सदियो के बाद भारत के इतने विद्वानो ने हमारे देश मे पदार्पण किया है। भारत से हजारों पर्यटक अमेरिका, यूरोप, जापान आदि जाते हैं, पर दक्षिण पूर्वी एशिया के इस क्षेत्र मे भारतीय यात्रियो की यह पहली मण्डली आयी है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हजारो साल पुराना है। हमारी और आपकी सास्कृतिक तथा धार्मिक परम्पराए एक है। इस दशा मे हमारे और आपके सम्बन्धो मे वृद्धि होनी ही चाहिए। मुझे आशा है कि भविष्य मे भी भारत के विद्वानो व यात्रियो की मण्डलिया बाली आती रहेगी। राज्यपाल महोदय ने जलपान द्वारा हमारा आतिथ्य किया और हमारे साथ फोटो भी खिचवाई। जिस आत्मीयता के साथ श्री मन्त्र ने हमसे भेंट की, उससे सब के हृदय गद्गद हो गये।

उसी दिन सायकाल हिन्दू सस्थान मे एक अन्य आयोजन मे स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य ब्रह्मचारी रामवीर तथा ब्रह्मचारी विज्ञानन्द देवकर्णी ने योगासनो का प्रदर्शन किया। ब्रह्मचर्य के पालन तथा योगाभ्यास से मनुष्य इतनी शक्ति प्राप्त कर सकता है कि लट्ठ को छड तक तोडी व मरोडी जा सकती है इस क्रियात्मक रूप से देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये। सस्थान के दो हजार के लगभग छात्रो तथा आचार्यो पर इस प्रदर्शन का बहुत अच्छा प्रभाव पडा। इन्डोनीसिया के हिन्दुओ की दृष्टि मे गगाजल का बहुत महत्व है। वे उसे पवित्र मानते हैं। गगा के अतिरिक्त यमुना, नर्मदा गोदावरी आदि अन्य भारतीय नदिया भी उनकी दृष्टि मे पवित्र हैं। वहा के हिन्दुओ को उपहार मे देने के लिये हम गगाजल साथ ले गये थे। उसे उन्होने कृतज्ञतापूवक स्वीकार किया।

बाली मे हम उन आकर्षक पर्यटन-स्थलो के अवलोकन के लिये भी गये, जिन्हे देखने के लिये विदेशी यात्रियो की वहा भीड लगी रहती है। पर हमारे लिये वहा का प्रधान आकर्षण वह वातावरण था, जिसमे भारत की प्राचीन धार्मिक तथा सास्कृतिक परम्पराए ओतप्रोत थी। हम वहा की भाषा नही जानते थे और वहा के लोग हमारी भाषा नही समझते थे, पर यह जान कर कि हम भी हिन्दू हैं उनके मुखमण्डल पर आत्मीयता के जो भाव उजागर हो जाते थे, उसका माधुर्य शब्दो द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। [समाप्त]

महर्षि की स्मृति मे पार्क का नामकरण

नई दिल्ली :केशवपुरम(लारेंस रोड): अशोक बिहार, फेज I व II रानी बाग, पंजाबी बाग तथा त्रिनगर समाजों ने सम्मिलित रूप से पिछले दिनों महर्षि निर्वाणोत्सव सोल्लास मनाया। कार्यक्रम पं० राजवीर शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञानुष्ठान से प्रारम्भ हुआ। श्री दीपचन्द बन्धु (उप-महापौर) ने आयोजन स्थल के मैदान का महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क नामकरण व उसका उद्घाटन किया।

समारोह में श्री दरबारी लाल व श्री सूर्यदेव का स्वागत किया गया। अन्य कार्यक्रमों में मुख्य-अतिथि श्री बन्धु के स्वागत में सहदेव मलहोत्रा आर्य पब्लिक स्कूल के बालकों का बैण्ड-वादन, आर्य विद्या मंदिर (केशवपुरम) तथा कुलाची हंसराज माडल स्कूल, अशोक बिहार के बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम व पनेन्हें शक्ति विद्यालय, त्रिनगर के बच्चों का बंशी-वादन चित्ताकर्षक रहा। आर्य युवक परिषद के सदस्यों ने समारोह में उल्लेखनीय योग-दान दिया। सुषमा आर्या के मधुर गीत प्रभावी रहे। स्व० श्री दीपचन्द आर्य के ज्येष्ठ सुपुत्र वेदपाल ने पार्क के स्तम्भ में लगे महर्षि के नाम, नियमों व शिक्षाओं से उत्कीर्ण तीनों शिलाओं के निर्माण का लगभग ३०००रु० का व्यय वहन किया।

पटियाला में बलिदान शताब्दी

पटियाला (पंजाब) : सरहन्दी गेट समाज ने पिछले दिनों डा० नर्वदा प्रसाद की अध्यक्षता में महर्षि बलिदान शताब्दी मनायी। बड़ी संख्या में स्थानीय आर्य विद्वान व शिक्षाविदों ने समारोह में भाग लिया। पं० जयप्रकाश आर्य (पूर्व इमाम, बेतिया (बिहार) के भाषण प्रभावी रहे।

सभा में पारित क्रमश: चार प्रस्तावों में पंजाब स्कूल एजूकेशन बोर्ड द्वारा हिन्दी माध्यम बंद करने तथा संस्कृत की पढ़ाई समाप्त प्राय करने की तीव्र निन्दा, हिन्दुओं के संगठन की फौरी आवश्यकता की दृष्टि से आर्यों व हिन्दुओं के कार्यक्रमों में सामंजस्य, पंजाब की सैनिक कार्यवाही के दौरान गिरफ्तार निर्दोष हिन्दू रक्षा समिति व हिन्दू शिव सेना के सदस्यों की अविलम्ब रिहाई के साथ स्थानीय पुलिस व अन्य सरकारी विभागो में जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व तथा हिन्दुओं से बलात् छीने गये धार्मिक स्थानों की अवि-लम्ब वापसी की भारत सरकार से जोरदार मांग की गयी।

शेष जीवन आर्यसमाज को सेवा में लगाऊं

अमेरिका प्रवासी श्री महाजन का संकल्प

हाउस्टन (अमेरिका) : मेरी इच्छा है कि मैं शेष जीवन आपकी सभा के अवैतनिक वैदिक प्रचारक के रूप मे अर्पित करूं। उक्त उद्‌गार, जून १९७८ में यहां आकर बसे 81 वर्षीय श्री आर० सी० महाजन ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष को प्रेषित एक पत्र में व्यक्त किये हैं।

श्री महाजन ने 1927 में डी० ए० वी० कालेज लाहौर से स्नातक तथा 1929 में गवर्नमेंट कालेज लाहौर से अर्थशास्त्र मे एम० ए० किया था। लाहौर प्रवास में महात्मा हंसराज के सान्निध्य और उपदेशों ने उनके जीवन का कायाकल्प कर दिया। फलतः उन्होंने अन्ततोगत्वा अपने पिता और चाचाओं को जिला स्यालकोट (पाकिस्तान) के बुहारगुण्डा में मोलीराम आर्य हाईस्कूल की स्थापना हेतु राजी कर लिया। 1924 में महात्मा हंसराज द्वारा उद्‌घाटित उक्त स्कूल आज

का० श्री आर० सी० महाजन

भी सेक्टर 27, चंडीगढ़ मे एम० आर० आर्य सीनियर माडल स्कूल के नाम से चल रहा है।

1979 में हाउस्टन के स्थायी प्रवासी हो जाने पर श्री महाजन ने हिन्दू वर्शिप सोसाइटी के अन्तर्गत 1980 मे वेद-प्रचार का श्रीगणेश किया। अपने हवन, संस्कार और प्रवचन कार्यक्रमो से उन्होंने 40 हजार डालर की धनराशि एक ऐसे हिन्दू मंदिर निर्माण हेतु संग्रह की जहां वैदिक सिद्धांत के आधार पर सभी प्रवासी हिन्दुओं को सघटित किया जा सके। मंदिर अब बन गया है और इसमें सभी संस्कार, महर्षि दयानन्द की "संस्कार-विधि" के आधार पर होते हैं तथा आर्य समाजो में प्रचलित विधि पर ही संध्या, हवन व भजन गाये जाते हैं।

श्री महाजन ने लगभग 20 ट्रैक्ट और 23 चार्टों का प्रकाशन कराकर निःशुल्क वितरित किया है। वे स्थानीय तथा बाहरी परिवारो के आमंत्रण पर स्वय हवन एव अन्य संस्कार कराते जाते हैं। पचास से अधिक सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य आर्य समाज की पुस्तकें उन्होने भक्तो को रियायती मूल्यो पर दी हैं तथा वेदो के भी चार सेट उपलब्ध कराये हैं। भक्तो से मिलने वाली सारी धनराशि श्री महाजन हिन्दू कल्याण समिति को निवेदित कर देते हैं और उनके अनुसार—"मुझे तो मानसिक शान्ति के रूप मे मेरा पारिश्रमिक मिल जाता है।"

अनाथालय में निर्वाण दिवस

फिरोजपुर छावनी : आर्य अनाथालय की भव्य यज्ञशाला में स्थानीय डी० ए० वी० शिक्षण-संस्थाओं व अनाथालय के छात्र-छात्राओं, समाजों के पदाधिकारियों व भारी संख्या में शहर के विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति मे ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया। यज्ञ के यजमान सपत्नीक प्रि० पी० डी० चौधरी व ब्रह्मा थे श्री मनमोहन चौधरी।

—अल्मोड़ा : ताडीखेत के डा० कुन्दन के चि० का निष्क्रमण सस्कार प० रामदत्त पाण्डे के पौरोहित्य, महात्मा केहरमुनि की अध्यक्षता व पं० प्रेमदेव शर्मा के निर्देशन मे सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने शिशु को आशीर्वाद दिया।

कानपुर : हरजिन्दर नगर समाज ने दीपावली पर श्री शकरलाल आर्य के निवास पर प्रातः से श्रीराम जी आर्य की अध्यक्षता में महर्षि निर्वाण दिवस समारोह मनाया। समाज के सदस्यों व क्षेत्रीय नागरिकों ने बड़ी संख्या मे भाग लिया व महर्षि को समवेत श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा संस्थापित दिल्ली फरीदाबाद सीमा पर स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में १२, १३, १४ अक्टूबर, ८४ को स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया जिसमें कई प्रांतों के हजारों आर्य बन्धु सम्मिलित हुए। इस अवसर पर अनेक सम्मेलन हुए। १२ अक्टूबर को एक विशाल शोभायात्रा फरीदाबाद शहर से होते हुए सायं ७ बजे गुरुकुल में समाप्त हुई। स्थान-स्थान पर जोरदार स्वागत किया गया। शहीद भगतसिंह के भतीजे व श्री श्यामसुन्दर सेठ तथा फरीदाबाद शहर में आर्यसमाज की ओर से किया स्वागत अविस्मरणीय रहेगा। आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के प्रधान श्री कन्हैया लाल मेहता का सराहनीय योगदान रहा।

राष्ट्रीय युवक सम्मेलन—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री धर्मवीर एम० ए० की अध्यक्षता में युवक सम्मेलन हुआ जिसका संयोजन श्री अग्नि आर्य, सम्पादक, 'युवा उद्‌घोष' ने किया। अध्यक्षीय भाषण में युवकों को पिछड़े क्षेत्रों में कार्य करने व आर्यसमाज में युवा शक्ति को अवसर देने को आह्वान किया गया। अध्यक्ष पद से प्रस्ताव रखा गया कि समस्त युवक संगठनों के लिए अधिकतम आयु सीमा ४८ वर्ष होनी चाहिए जिसका सभी ने हाथ उठाकर अनुमोदन किया। सम्मेलन में प्रा० वेदसुमन वेदालंकार, श्री ब्रह्मप्रकाश वागीश, ब्र० विश्वपाल जयन्त, डा० विक्रम कुमार विवेकी, स्वामी ओमानंद जी महाराज, ब्र० कलावती, ब्र० रामदेवी आर्या, श्री मोतीराम, व महाशय खेमचन्द जी ने भाग लिया।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए शहीद भगत सिंह के अनुज श्री कुलतार सिंह जी ने महर्षि दयानन्द के बताये रास्ते पर चलने तथा देश की अखंडता के लिए आर्यसमाज को सहयोग देने का आह्वान किया। सांसद चौ० रणवीर सिंह, श्री रामचन्द्र 'विकल', शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी, चौ० दलवीर सिंह, सत्यदेव भारद्वाज [नैरोबी], श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री सूर्यदेव, चौ० कल्याण सिंह आदि ने जनता को उद्‌बोधन दिया।

शुद्धि सम्मेलन—शुद्धि सम्मेलन की अध्यक्षता श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने की व संयोजन श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री ने किया। मेवात क्षेत्र में शुद्धि अभियान चलाने का निश्चय हुआ तथा चांदनी चौक घण्टाघर का नाम बदलकर स्वामी श्रद्धानन्द चौक रखने की मांग की गई।

बरेली की मुस्लिम युवती रोशनारा वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर सीमा आर्या बनी तथा स्वेच्छा से नरेश आय के साथ प्रणय सूत्र मे बंध गई। इण्डोनेशिया के धर्माधिकारी श्री पूज का स्वामी सत्यप्रकाश जी व वैदिक विद्वानों ने माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया व चारों वेदों का सेट भी भेंट किया। प्रत्युत्तर मे श्री पूज ने भी अपने देश के प्रकाशित वेदभाष्य व सरकारी धार्मिक प्रतीक गरुड की प्रतिमा भेंट की। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने पूर्वी एशिया में हिन्दू धर्म की व्यापकता का परिचय दिया।

भजन और कविता—रात्रि भजनोपदेश प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें १९ मण्डलियो ने भाग लिया। इसका कुशल सचालन प्रो० सारस्दत मोहन मनीषी ने किया। यह कवि सम्मेलन रात्रि २-३० बजे तक चला।

श्रद्धांजलि समारोह—श्रद्धांजलि समारोह हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री वेदपाल की अध्यक्षता में हुआ जिसे चौ० महेन्द्रपाल, स्वामी शक्तिवेश, श्री धर्मवीर ने सम्बोधित किया। दीक्षान्त समारोह में १७ व्यक्तियों ने वानप्रस्थ व दो ने सन्यास की दीक्षा ली। चौ० भजनलाल के प्रतिनिधि चौ० कटार सिंह ने "स्वर्ण वेद मन्दिर" का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने गुरुकुल को ५० हजार रु० के अनुदान की घोषणा की।

व्यायाम और दंगल—ब्र० विश्वपाल जयन्त ने शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आर्यवीर दल मेड़ता सिटी (राजस्थान) के आर्यवीरों ने व्यायाम प्रदर्शन किया। दण्ड प्रतियोगिता में गुरुकुल गौतम नगर (दिल्ली) का १७ वर्षीय ब्र० देवेन्द्र ८१० दण्ड लगाकर प्रथम रहा। विशाल दंगल मे २१०० रुपये की कुश्ती श्री धर्मपाल ने जीती। इसमें लगभग सौ कुश्तियों का फैसला हुआ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के १०० आर्य युवकों ने तीनों दिन रहकर शताब्दी समारोह को सफल बनाने व सेवा कार्य में सहयोग दिया। —मन्त्री शताब्दी

हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष का निधन

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह का निधन हो गया। उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। ये ६० वर्ष के थे। उनकी मृत्यु के दो-तीन दिन बाद ही उनकी सम्पत्ति की विरासत पर झगड़ा शुरू हो गया है। उनके पुत्र महेन्द्र सिंह को उनका उत्तराधिकारी बनाया गया।

बम्बई में महर्षि बलि...

बम्बई की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य समाज सान्ताक्रुज के तत्त्वावधान में रामलीला मैदान में १७, १८, १९ अक्तूबर को मनाए गए महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह का एक दृश्य। चित्र में मुख्य अतिथि श्री सत्यप्रकाश आर्य समारोह के अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाश जी का स्वागत कर रहे हैं। पीछे दूसरे दिन के मुख्य अतिथि श्री राधेलाल अग्रवाल विराजमान हैं।

चित्र में सन्ताक्रुज आर्य समाज के उत्साही मन्त्री और समारोह के संयोजक श्री कैप्टिन देवरत्न आवश्यक सूचनाएं दे रहे हैं। पीछे बैठे हैं—प्रसिद्ध कवि श्री कृष्णकुमार चौबे (नागपुर), श्री अमरेश आर्य (पूर्व अमीर मुहम्मद, हैदराबाद), क्षितीश वेदालंकार (दिल्ली)

'तूफान के दौर से—पंजाब' पुस्तक भेंट

दिल्ली के रामलीला मैदान में २८ अक्टूबर को ऋषि निर्वाण दिवस की विशाल सभा में मुख्य अतिथि कु० कुमुदबेन जोशी को श्री क्षितीश वेदालंकार अपनी लिखी पुस्तक 'तूफान के दौर से—पंजाब' पुस्तक भेंट कर रहे हैं। श्री रामगोपाल शालवाले ने पुस्तक का परिचय दिया।

कृपया वी. पी. छुड़ाइए

उक्त पुस्तक के छपने से पहले ग्राहक बनने वालों को भारी घाटा उठाकर भी हम उसी मूल्य मे पुस्तक दे रहे हैं। जो अभी तक पुस्तक प्राप्त नही कर सके है, वे आर्यसमाज मंदिर अनारकली मे आकर अपनी रसीद दिखाकर पुस्तक ले सकते है। जो आने मे असमर्थ है वे पैकिंग और डाकव्यय के निमित्त 5 रु० प्रति पुस्तक भेज दे, उन्हें रजिस्ट्री से पुस्तक भेज दी जाएगी। एक सप्ताह तक जिनका डाक व्यय नही आएगा उन्हे उतनी ही राशि की वी० पी० भेजी जाएगी। कृपया उस वी० पी० को अवश्य छुड़वा ले, जिससे आप पुस्तक से वंचित न रहें। अन्यथा आपको अगले संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

—व्यवस्थापक

इन्दिरा गांधी की हत्या......

(पृष्ठ 9 का शेष)

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत बेरी (रोहतक) का सम्मेलन सिख उग्रवादियों द्वारा श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या पर स्थगित हो गया। साम्प्रदायिकता के जहरीले दंश के जघन्य षड्यंत्र की तीव्र भर्त्सना तथा भगवान से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु कामना की गयी।

कृष्णानगर भिवानी की समाज ने धर्मांध हत्यारो द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी की क्रूर हत्या पर गहरा शोक व क्षोभ व्यक्त करते हुए श्रद्धा-सुमन चढाये। श्री राजीव गांधी के नये नेतृत्व की सफलता की कामना की गयी।

अम्बाला: नारायणगढ़ समाज (कालेज विभाग) के महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का समापन कार्यक्रम— "भारतीय (आर्य) संस्कृति रक्षा सम्मेलन" श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या पर शोक व निन्दा प्रस्ताव के बाद समाप्त हो गया।

सैक्टर16, चंडीगढ़ समाज ने अहिंसा की अग्रदूत की हत्या पर गहरा शोक व्यक्त किया। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की गयी।

महर्षि दयानन्द प्रसूति अस्पताल, यमुनानगर (अम्बाला) की प्रबन्धकर्त्री समिति ने लगभग 2 दशको तक प्रधान मंत्री रही श्रीमती गांधी की जघन्य हत्या पर गहरा शोक व क्षोभ व्यक्त किया। ईश्वर से दिवंगत की सद्गति हेतु प्रार्थना की तथा युवा राजीव गांधी के हाथ सशक्त करने का संकल्प लिया।

माडल टाउन (हरियाणा): आर्य समाज ने देश की बहादुर प्रधानमंत्री की निर्मम हत्या पर दुख व्यक्त करके श्रद्धांजलि अर्पित की।

उत्तर प्रदेश

(आगरा): बेनीसिंह वैदिक पूर्व माध्यमिक विद्यालय की प्रबंध समिति ने श्रीमती गांधी की नृशंस हत्या की तीव्र भर्त्सना की व दिवंगत आत्मा की चिर शांति की कामना के साथ श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

आर्यसमाज मेरठ शहर ने भावभीनी श्रद्धांजलि द्वारा स्व० श्रीमती गांधी की आत्मा की शांति हेतु भगवान से प्रार्थना की व अपराधियो को खोजकर दंडित करने की मांग की।

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, लखनऊ ने श्रीमती गांधी की क्रूर हत्या पर गहरा शोक व क्षोभ व्यक्त किया। दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रभु से कामना की गयी।

मानव समाज निर्माण मे ......

18 नवम्बर के आर्यजगत् के पृष्ठ 5 पर मानव समाज निर्माण में महर्षि दयानन्द का योगदान' शीर्षक से जो लेख छपा है, उसके लेखक श्री पी. डी. चौधरी नहीं, श्री मनमोहन शास्त्री हैं।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली में छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र | ओ३म् | कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८ अंक ४७ रविवार, २ दिसम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य —५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | मार्ग शीर्ष शुक्ला १०, २०४१ वि

सिखों को मुसलमान बनाने का आह्वान

धर्म परिवर्तन का एक और गहरा षड़यन्त्र

(हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

पिछले दिनो श्रीमती इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या के पश्चात् देश के अनेक राज्यो मे जो हिंसा की सिख विरोधी लहर चली उसके कारण कुछ लोगो ने सिखों को बरगलाने का एक नया षड़यन्त्र रचा है। मीनाक्षीपुरम् मे आर्यसमाज द्वारा धर्मान्तरण के विरोध मे सारे देश में आन्दोलन करने के बाद अपने उद्देश्य मे विफल होकर मतान्ध मुस्लिम नेताओ ने खीझकर यह षड़यन्त्र रचा लगता है।

6 नवम्बर को बम्बई के 'इन्कलाब' नामक उर्दू के पत्र मे विज्ञापन के रूप में एक अपील छपी थी जिसकी फोटो यहा दी जा रही है। साथ मे उसका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। जिससे इन दोनो भाषाओं को जानने वाले इस षडयंत्र की गहराई से परिचित हो सके।

बम्बई के बाद बगलोर, हैदराबाद और मद्रास तक के उर्दू अखबारो ने अपने पहले पृष्ठ पर मुख्य रूप से मोटे अक्षरों में इस अपील को छापा है।

बम्बई के कुछ बुद्धिजीवियों ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री बसन्त दादा पाटिल को एक स्मृतिपत्र दिया है जिसमें उनसे माग की गई है कि सिखो के केश और दाढी मुड़ाकर हिन्दू बन जाने की घटनाओ की जाच करें। मुख्यमत्री ने धर्म निरपेक्षता के नाम पर इन मुसलमान बुद्धिजीवियो को ऐसी घटनाओ की जांच करने का आश्वासन दिया है।

हिन्दुओ और सिखों मे केवल सहजधारी और केसधारी के सिवाय कोई और अन्तर न होने के कारण और धार्मिक सामाजिक सम्बन्धो तथा पारिवारिक रिश्तेदारियो के कारण कुछ मुसलमानो ने देश भर मे फैली सिख विरोधी लहर का फायदा उठाते हुए सिखों से अपील की है कि "तुम हिन्दू क्यों बनते हो, मुसलमान बनो, इस्लाम के द्वार तुम्हारे लिए खुले हुए हैं। हिन्दुओ से तुम्हे घृणा मिली है, मुसलमान से तुम्हे प्यार मिलेगा।"

सिखो से इस प्रकार की अपील करने वाले इस इतिहास को नही जानते कि इस्लाम से हिन्दुओ की रक्षा करने के लिए ही गुरु नानक ने सिख पंथ को जन्म दिया था और गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा के रूप मे जुझारू सैनिक तैयार करके मुगल सलतनत के विरुद्ध युद्ध का डंका बजाया था तथा वीर बन्दावैरागी ने गुरु गोविन्द सिंह के स्वप्न को पूरा करते हुए पंजाब से मुस्लिम साम्राज्य को समाप्त कर दिया था।

देश के विभाजन के बाद भी उर्दू के अखबार किस प्रकार विघटन का बीज बोने मे तत्पर है, यह इसका एक उदाहरण है।

۶ رنومبر ۱۹۸۴ء

انقلاب

اپیل

ہندوستان کی تمام سکھ قوم سے اپیل ہے کہ

عوامی فساد سے بچنے کے لئے ہمارے کچھ سکھ بھائیوں نے مجبور ہو کر داڑھی مونچھ کاٹ کر ہندو ہو گئے ہیں۔ میں ان سکھ بھائیوں سے اپیل کرتا ہوں کہ اگر انہیں مذہب ہی بدلنا ہے تو ہم مسلمان کیوں نہ بنیں۔ ہم مسلم سکھ کیوں نہ بنیں۔ کم سے کم ایمان تو ہے۔ ہم ایسی IDENTITY ایک الگ ڈھنگ سے پگڑی کچھ کڑا اور کیس کے ساتھ رکھیں گے۔ میرے کچھ سکھ دوست، میں اور میرے تین بیٹے مسلم سکھ بننے کے لئے تیار ہیں۔ جو سکھ بھائی ہمارے ان خیالات سے سہمت ہیں وہ اپنے خیالوں سے ہمیں واقف کرائیں۔ آج کسی شاعر کا یہ شعر کتنی حقیقت بیان کرتا ہے۔

جب بھی زمیں کو ضرورت خون کی پڑی
سب سے پہلے گردن ہماری کٹی
جب وقت آیا ہے چمن میں رہنے کا
تو کہتے ہیں یہ چمن ہے ہمارا تمہارا نہیں

آج ہندوستان میں سکھ قوم کی جان و مال عزت کس حد تک سلامت ہے اس بات سے ہندوستان کا ہر شخص آج واقف ہے جہاں تک سوال ہے وزیر اعظم کی دکھت موت کا اس کا افسوس ہمیں بھی ہے۔

سردار جی ایس بیدی ۸۳۔ بینا اپارٹمنٹ ایم واسن جی روڈ، اندھیری (ایسٹ) بمبئی

उर्दू के अखबारों में छपी इस अपील का अनुवाद इस प्रकार है—

इनकिलाव
नवम्बर ६, १९८४

हिन्दुस्तान की तमाम सिख कौम से अपील है कि अवामी फ़साद से बचने के लिए हमारे कुछ सिख भाई मजबूर होकर दाढी मूंछ काट कर हिन्दू हो गए है। मैं उन सिख भाइयों से अपील करता हू कि अगर उन्हें मजहव ही वदलना है तो हम मुसलमान क्यो न बने। कम से कम ईमान तो है। हम ऐसी पहचान (IDENTITY) एक अलग ढंग से पगड़ी. कच्छा, कडा और केश के साथ रखेंगे। मेरे कुछ सिख दोस्त, मैं और मेरे तीन वेटे मुसलिम सिख वनने के लिए तैयार है। जो सिख भाई हमारे इन खयालात से सहमत है वे अपने खयालो मे हमें वाकिफ करें। आज किसी शायर का यह शेर कितनी हकीकत बयान करता है:—

जब भी जमीन को जरूरत खून की पडी,
सब से पहिले गर्दन हमारी कटी।
जब वक्त आया है चमन में रहने का,
तो कहते हैं—यह चमन है हमारा तुम्हारा नहीं॥

आज हिन्दुस्तान में सिख कौम की जानमाल व इज्जत किस हद तक सलामत है, इस बात से हिन्दुस्तान का हर शख्स वाकिफ़ है। जहा तक सवाल है वजीरे-आजम की दुखित मौत का, इसका अफसोस हमें भी है।

सरदार जी०एस० वेदी, ८३ वीना अपार्टमेन्ट, एम० वासनजी रोड,
अन्धेरी (ईस्ट) बम्बई।

[illegible]—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मल्लिक

आओ सत्संग में चलें

रात्रि विश्राम देकर कल्याण करती है

—मनोहर विद्यालंकार—

आ प्रागाद्भद्रा युवतिरह्नः
केतून्त्समीर्त्सति ।
अभूद्भद्रा निवेशनी ।
विश्वस्य जगतो रात्री ॥
साम ६०८

ऋषि— वाम देवो गौतमः । देवता: रात्रिः । छन्दः अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ— (भद्रा) कल्याण दायिनी (युवति) शुभकर्मों में प्रवृत्त कराने वाली युवती उषा देवी जो (अह्न केतून्) दिन के कर्तव्यों की (समीर्त्सति) प्रेरणा और वृद्धि करती है, वह (आ) समन्तात् पूर्णरूप से (प्र अगात्) जा चुकी है। दिन में काम करने वाले (विश्वस्य जगत्.) सम्पूर्ण प्रणी जगत् को (निवेशनी) अपने में समेटने वाली और (रात्री) आराम देने वाली रात्रि देवी (भद्रा) सुख-शान्ति-दायिनी (अभूत्) हो गई है, हो जाती है।

निष्कर्ष— वेद में उषा और रात्र दोनों को युवती और भद्रा कहा है।

सनाद्दिवा परिभूमा विरूपे
पुन र्भु वा युवती स्वेभिरेवैः ।
कृष्णेभिरक्ता—उषा
रुशद्भिराचरतो अन्यान्या ॥

ऋक् १-६२-८।

ये दोनों विरूप है, एक जैसी नही है। इन में से एक उषा देवी कर्मों में प्रेरित करती है- कर्तव्य ज्ञान को बढ़ाती है; इस प्रकार कल्याण करने से भद्रा है।

कल्याण शब्द का अर्थ ध्यान देने योग्य है। (कल्ये—प्रातः काले, अण्यते) प्रात. काल दीर्घश्वासोच्छ्वास लेने से काया नीरोग होती है।

दूसरी रात्रि (अक्ता) आकर्षण-विकर्षण द्वारा रमण और विश्राम देकर सुख देने से भद्रा है। रात और दिन दोनों ही अपने-अपने प्रकार से प्राणी मात्र का कल्याण करती और सुख देती है।

जो व्यक्ति दिन में जितना परिश्रम करता है, रात्रि में उसे विश्राम द्वारा उतना ही आनन्द मिलता है, और उसका कल्याण होता है अर्थात् नीरोगता रहती है।

विशेष— इस मन्त्र के ऋषि, देवता और छन्द मिलकर संकेत करते है कि—

प्रत्येक परिस्थिति के अनुकूल बन कर आगे बढने की प्रवृति (अनुष्टुप्) से, मनुष्य को जगत् की प्रत्येक वस्तु और परिस्थिति सुन्दर तथा ग्राह्य (वाम) प्रतीत होती है, वह इससे प्रीति करता है, उसमें आनन्द लेता है और तेजस्वी बनता है (देव) परिणामतः उस के लिए जगत् का प्रत्येक पदार्थ रमण आनन्द देने वाला (रात्रि) होता है। इसके लिये सदा प्रयत्न की इच्छा करने से वह गौतम बंशी गौतम बनता है।

उत्तम पदार्थों की दीप्ति से संयुक्त कर

यद वर्चो हिरण्यस्य
यद् वा वर्चो गवामुत।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन
मा संसृजामसि ॥
साम-६२४

ऋषि—वाम देवो गोतमः । इन्द्रो देवता । छन्द -अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ— (हिरण्यस्य) सुवर्ण में (यद् वर्च) जो आकर्षण की चमक है, (उत) और (गवा यद् वर्च) गायों में साधुता, इन्द्रियों में ग्राहकता, किरणों में प्रकाश और भूमियों में सहनशीलता की दीप्ति है तथा (सत्यस्य) सत्य-संकल्प, सत्य कथन और सत्याचरण और (ब्रह्मणः) ज्ञान व तप का (यद् वर्च.) जो तेज है (तेन) इन सब तेजों से (मा-संसृजामसि) मुझे तथा हम सब को संयुक्त कर दे।

निष्कर्ष— हमें जो वस्तु आकृष्ट और प्रभावित करे, उस के गुणों को अपने में धारण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

सुवर्ण से—विपत्ति में काम आने तथा हर स्थिति में हंसमुख व रमणीय बने रहना; गाय से—साधुता तथा अपने सार तत्व को दूसरों के लिए अर्पण करना; भूमि से—सहनशीलता तथा अन्न प्रदान करना; इन्द्रियों से—उपकरण रूप में प्रयुक्त होना और किरणों से—प्रकाश तथा मार्गदर्शन के गुणों को अपनाना चाहिये।

सत्य, ज्ञान और तप के प्रभाव को उजागर करने वाले चरित्रों से इतिहास भरा पड़ा है। इन्हें अपना कर मनुष्य ऊंचे से ऊंचा चढ जाता है और उद्धत एकाधिपति इन के त्याग के कारण पतन के गर्त में गिर जाता।

सत्य की ऋजुता, ज्ञान की दीप्ति और तप का तेज अनुपम है। ये बिना कहे दूसरे के मन को बदल देते हैं। विरोधी सहायक बन जाते है। शत्रु सेवक बन जाते हैं।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि और छन्द का शब्दार्थ संकेत करता है कि अपने स्वभाव के अनुरूप क्षेत्र में आगे बढ़ने की इच्छा से, वेदाध्यायी कुल में उत्पन्न होकर जो व्यक्ति अपने में सुन्दर गुण को धारण करके दूसरों को सुन्दर उपदेश देता और व्यवहार करता है, उस पर इन्द्र (विशिष्ट व्यक्ति) अनुग्रह करते हैं, और वह स्वयं इन्द्र बनने लगता है।

जिस अनुपात में मनुष्य वेद वाणी को अपने जीवन में चरितार्थ करने की आंकाक्षा करता है, और इन्द्रियों के संयम द्वारा जितेन्द्रिय बनता है, उसी अनुपात में वह वामदेव बनता है। तदनन्तर धीरे-धीरे इन्द्रसखा (समान-व्यान) बन कर ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

शक्ति प्रदान कर और शत्रुओं को पराजित कर

सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज
ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन् ।
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं
वृत्रेषु शत्रून्त्सुहना कृधी नः ॥
साम ६२५

ऋषिः—वामदेवो गौतम. । देवता-इन्द्रः । छन्दः— त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशालिन् (न) हमें (सह.) शारीरिक सामर्थ्य (ओजः) आत्मिक शक्ति तथा ऋजुता और (क्रतुम्) संकल्प कर्म व प्रज्ञा (न) के अनुपात में (नृम्णम्) मानसिक बल (बुद्धि) प्रदान कर (हि) क्योंकि तू (अस्यमहत.) इस महान् सामर्थ्य समूह का (ईशे) स्वामी है। हे (विरप्शिन) सर्वतोमहत् तथा स्तुत्य (वृत्रेषु) आन्तर और बाह्य संग्रामों में (स्थविरं वाजम्) स्थिर बल व समृद्धि प्रदान करके (न. शत्रून्) हमारे शत्रुओं को (सुहना कृधि) सुगमता से वध्य तथा पराजेय बना।

निष्कर्ष— शारीरिक सामर्थ्य, आत्मिक शक्ति और मानसिक बल प्राप्त किये बिना शत्रुओं को पराजित नही किया जा सकता।

शारीरिक बल का परिणाम होता है (सहः) सहनशक्ति, सन्तोष, उत्साह और उद्योग। **बलमसि बलं—सहोऽसि सहो मयि धेहि।**

प्राण साधना से अर्जित वीर्य का परिणाम होता मन्यु या क्रतु। क्रतु का अर्थ है कर्म और प्रज्ञा। इन दोनों के समन्वय को ही क्रतुः मन्यु या संकल्प अथवा मानसिक बल कहते हैं। जिस में जितना वीर्य अधिक होगा, उसका संकल्प उतना ही प्रबल होगा। वह आत्म-विश्वास से भरपूर होगा। **'वीर्यमसि वीर्यं मन्युरसि मन्युर्मयि धे'**

वीर्यरक्षण से तेज उत्पन्न होता है। इस तेज का परिणाम है आत्मिक ओज। आत्मिक ओज के आते ही आन्तर शत्रु स्वयमेव शान्त हो जाते हैं, और बाह्य शत्रुओं को सिर उठाने का साहस नही होता। **'तेजो ऽसि तेजो मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि। यजु: १९-९**

इस मन्त्र में सहः (शारीरिक), क्रतुः (मानसिक), और ओजः (आत्मिक) शक्ति की प्रार्थना की गई है। इन को प्राप्त करना है तो क्रमशः अपने अन्दर बल, वीर्य और तेज को उत्पन्न करो और बढाओ, यह बात यजुर्वेद के १९-९ से स्पष्ट और पुष्ट होती है।

महान् वही बनता है और स्तुति भी उसकी होती है, जिसके पास स्थूल भौतिक सामर्थ्य और सूक्ष्म आत्मिक शक्ति दोनों विद्यमान हो। इस मन्त्र के शब्दो में इन्द्र और विरप्शी वह बनेगा, जिसके पास [illegible] और ओज होंगे।

प्रार्थना सदा महान् उदार तथा ऐश्वर्यवान् से ही करनी चाहिये। सबसे महान् और इन्द्र, परमात्मा है, इसलिये, उसी से मांगना चाहिये।

'याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।'

विशेष— इस मन्त्र के छन्द से—काम-क्रोध लोभ के त्याग की शिक्षा लेकर अपने अन्दर दिव्यगुण को धारण करने तथा दूसरों को गुणी बनाने की कामना वाले ब्राह्मण को ज्ञान के स्वामी की, क्षत्रिय को वज्रादि आयुधों के विशेषज्ञ की और वैश्य को कृषि-वाणिज्य गौ तथा भूमि के व्यवहारकुशल गुरुओं की आकांक्षा करनी चाहिये, उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनसे शिक्षा [illegible] चाहिये।

इन्द्र की स्तुति करने का लाभ

प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय
विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते।
साम-४४६-१११३

ऋषिः—त्रसदस्युः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-द्विपदा विराट्।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! (वः) तुम्हारे (वृत्र हन्तमाय) विघ्नों और आन्तर शत्रुओं के विनाशक (विप्राय) विविध कामनाओं के पूरक तथा मेधावी (इन्द्राय) सर्व समर्थ तथा परमैश्वर्यवान् का (गाथम्) ऐसा स्तुति गान (प्रगायत) करो—गाओ (यम्) जिस गान को वह (जुजोषते) प्रीतिपूर्वक सुनता और सेवन करता है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सुभाषित

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ।
एवं पूर्वकृत कर्म कर्तारमनुगच्छति ।।

जैसे बछड़ा हजारों गौओं के बीच में अपनी माता को ढूंढ़ लेता है, उसी प्रकार पहले किया हुआ कर्म कर्म करने वाले का पीछा करता रहता है ।

—महाभारत

सम्पादकीयम्

विष या अमृत

लोकसभा के चुनावों के सम्बंध में श्रीमती इन्दिरा गांधी के रहते विपक्षी दलों के मन में जो द्विविधा थी, वह रंगमंच से उनके हट जाने के बाद समाप्त हो गई है। पहले पक्ष और विपक्ष में सारी राजनीति केवल इन्दिरा गान्धी को लेकर चलती थी। पक्ष वाले जिस जोर से इन्दिरा गांधी की जय बोलते थे, और प्रधान मंत्री के रूप में उनकी सद्भावना प्राप्त करने के लिये सब कुछ करने को तैयार रहते थे, उसी जोर से विपक्ष वाले अपने सब हरबे-हथियार संभाले उन सबका निशाना इन्दिरा गांधी की ओर ही साधते थे। विपक्षीदलों का एकमात्र उद्देश्य जैसे इन्दिरा गांधी का केवल विरोध करना ही रह गया था। इसीलिए राष्ट्रपति प्रणाली की स्वस्थ चर्चा के पीछे भी कुछ और उद्देश्य ढूढ़े गये और यह अफवाह भी फैलाई गई कि इन्दिरा गांधी बार-बार विदेशी खतरे की चर्चा करके किसी न किसी प्रकार चुनाव टालने का बहाना ढूंढ रही हैं।

वैसे चुनावों की घोषणा सन् 1995 के जनवरी के प्रथम सप्ताह में अपेक्षित थी। परन्तु अब इन्दिरा गांधी के न रहने पर चुनावों की घोषणा और 15 दिन पहले कर दिये जाने से विपक्षी दल तो हतप्रभ हो ही गये, पक्ष वाले भी चौंक गये। निश्चय ही भूतपूर्व प्रधानमंत्री की निर्मम हत्या से उत्पन्न जनभावना का लाभ उठाने के लिए ही चुनावों की घोषणा करने में विलम्ब नहीं किया गया। इसके औचित्य पर शंका करना व्यर्थ है। इतने बड़े हादसे ने जन-जन के मन को जैसे झकझोर के रख दिया है। अब यह भी स्पष्ट हो गया है कि जब इन्दिरा गांधी विदेशी खतरे की बात करती थीं तब उनकी वह महज खामखयाली नहीं थी, वह एक सच्चाई थी, जिसकी कीमत इन्दिरा गांधी को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। यह भी स्पष्ट है कि धीरे-धीरे जनता में इस हत्या से उत्पन्न आक्रोश की भावना कम होती जायेगी और सम्भव है कि मतदान के समय तक फिर राजनैतिक दलों में वैसे ही उठापटक और आपसी तू-तू मैं-मैं प्रारम्भ हो जाये।

गत सप्ताह हमने इन चुनावों को समुद्रमंथन की संज्ञा दी है। समुद्र के मंथन से जहां चौदह रत्न निकलते हैं, वहां अमृत का कुम्भ भी निकलता है और उसके साथ ही हलाहल विष का निकलना भी अवश्यमावी है। समुद्र-मथन से प्राप्त अमृत को पाने के लिए देव दानव संघर्ष होता है पर हलाहल विष को ग्रहण करने को कोई तैयार नहीं होता। उस विष की भयंकर ज्वाला जब दिग्दिगंत को जलाने लगती है तब देव भी दूर भागते हैं और दानव भी दूर भागते हैं। उस हलाहल विष को पीने के लिए तब विषपायी नीलकंठ-देवाधिदेव महादेव की खोज शुरू होती है। आखिर शिवजी ही विषपान करके सृष्टि को सुरक्षित करते हैं।

हमें ऐसा लगता है, कि विषपान का वह कार्य समुद्रमन्थन से पूर्व ही इन्दिरा गांधी कर गईं। समुद्रमन्थन से जिस भयंकर विष की आशंका थी, और जिसके कारण देव-दानव दोनों भिड़ सकते थे, उस विष को दुर्गा भवानी के रूप मे प्रसिद्ध वह शिवशंकरी ही स्वेच्छा से पान करके परलोक सिधार गईं। इसलिए अब पक्ष और प्रतिपक्ष को विष की आशंका मन से निकालकर चुनावों के समुद्रमन्थन से अमृत निकालने की तैयारी करनी चाहिए।

हो सकता है पाठक इसे हमारी खुशफहमी समझें। पर हम अपने मन में राष्ट्र के सुन्दर भविष्य के प्रति सदा आशान्वित रहे हैं। इसी आशावाद को हम राष्ट्रवाद का प्राण मानते हैं, और अपने राष्ट्र के किसी भी अनिष्ट की भविष्य में भी कल्पना करने से कतराते हैं। जबतक इतिहास हमारी इस भावना को अन्यथा सिद्ध नहीं कर देता, तबतक हम इस भावना को बदलने को तैयार नहीं। हमेशा राष्ट्र के सुन्दर भविष्य की कल्पना करो और उस सुन्दर भविष्य को लाने के मार्ग में वर्तमान में जो बाधाएं उपस्थित होती हैं, उनके दूर करने का प्रयत्न करो—यही हमारा राष्ट्रवाद है।

इन आसन्न चुनावों को लक्ष्य करके पार्टियों में जोड़-तोड़ प्रारम्भ हो गई है। उम्मीदवारों के नामों की घोषणा हो रही है और यह अंक पाठकों के हाथ में पहुंचने तक कहां-कहां से किस-किस दल के कौन-कौन से उम्मीदवार खड़े हुए हैं, यह स्थिति स्पष्ट हो जायेगी। इन चुनावों को लक्ष्य करके हाल में ही हिन्दू मंच और आर्यसभा की स्थापना भी हुई है। ये दोनों दल परस्पर सहयोग से काम करेंगे, यह तो हमको विश्वास है ही। साथ ही समस्त हिन्दुत्ववादी राष्ट्र भक्त शक्तियों को वे एकत्र कर सकेंगे, यह भी हमें आशा है।

हम तो यहां एक ही बात कहना चाहते हैं। उसी बात को हम पहले भी बार-बार दोहराते रहे हैं। वह बात यह है कि जब तक भारतीय संविधान में सम्प्रदाय-निरपेक्षता का सिद्धांत स्वीकृत है तब तक इस देश में किसी भी सम्प्रदाय-विशेष के नाम पर आधारित राजनैतिक पार्टी को मान्यता देना गैरकानूनी है। साम्प्रदायिक पार्टियों को राजनैतिक मान्यता मिल जाने से ही देश में वह साम्प्रदायिकता का हलाहल विष फैला जिसकी शिकार इन्दिरा गांधी हुईं और स्वयं उनको यह हलाहल पीना पड़ा। अगर चुनावों के इस समुद्र-मंथन में से अमृत निकालना है तो साम्प्रदायिक पार्टियों पर प्रतिबन्ध लगाना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा इन्दिरा गान्धी का यह अमर-बलिदान भी सर्वथा निरर्थक हो जायेगा।

जब हम सम्प्रदाय निरपेक्षता का समर्थन करते हुए साम्प्रदायिक दलों पर प्रतिबन्ध की मांग करते हैं और साथ ही हिन्दुत्ववादी शक्तियों के एकत्रीकरण की बात करते हैं, तब बहुत से पाठकों को हमारी बात में विरोधाभास प्रतीत हो सकता है, परन्तु विरोधाभास है नहीं। वह केवल समझ का फेर है। हम हिन्दू को न कोई सम्प्रदाय मानते हैं, न कोई मजहब। हम हिन्दू को धर्म के बजाय राष्ट्र का वाचक और पर्यायवाची मानते हैं। हिन्दू का सीधा अर्थ है—हिन्द का रहने वाला। भारत का प्रत्येक नागरिक अपने आपको हिन्दू कह सकता है, और उसे कहना चाहिए। परन्तु केवल एक ही शर्त है कि वह अपने सम्प्रदाय को राष्ट्र से ऊपर मानने की सेमेटिक मजहबों से उत्पन्न साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को तिलांजलि दे दे। जब तक कोई व्यक्ति अपने तथाकथित धर्म को राष्ट्र से ऊपर मानता रहेगा, तब तक वह कभी सही अर्थों में राष्ट्रभक्त हो ही नहीं सकता। उसके दिमाग में हमेशा साम्प्रदायिकता का भूत सवार रहेगा।

हम तो बहुत मोटी परिभाषा करते हैं कि जिसने हिन्द को अपने धर्म, मजहब, सम्प्रदाय, या पन्थ से ऊपर मान लिया वह राष्ट्रभक्त हो गया और वह हिन्दू कहलाने का अधिकारी है। उन राष्ट्र-भक्त हिन्दुओं में भी जो प्रखर राष्ट्रवादी हैं, हम उन प्रबुद्ध और श्रेष्ठ जनों को आर्य कहते हैं। हमारी आर्य और हिन्दू की यही परिभाषा है। हो सकता है, कुछ लोग हमारी इन परिभाषाओं से सहमत न हों, और वे तरह-तरह से मीनमेख निकालकर अपनी मानसिक तगदिली को किसी भी तरह उजागर करने में अपनी बहादुरी समझते हों। परन्तु हमें विश्वास है कि जिन्होंने अपने देश के और संस्कृति के इतिहास को सही अर्थों में हृदयंगम किया है, वे हमारी बात का समर्थन करेंगे।

यों भी यदि अन्य धर्मावलम्बी अपने आपको हिन्दू न कहना चाहें तो भी, इस देश का 85 प्रतिशत विशाल बहुमत अपने आपको हिन्दू कहता ही है। वही तो इस देश का मेरुदण्ड है। इसकी उपेक्षा करने से राष्ट्र ही कहां रहेगा? इसलिए हम बार-बार इस बात पर जोर देते हैं कि इस देश की राष्ट्रवादी और हिन्दुत्ववादी शक्तियों को एकत्र करो और चुनावों के समुद्रमन्थन में से अमृत निकालने की तैयारी करो।

एक सही निर्णय

लगभग १६ वर्षों तक देश की सत्ता-सूत्र संचालिका लोकप्रिय प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी को उनके ही सुरक्षा गार्डों द्वारा निर्मम हत्या के बाद देश में जैसे हालात पैदा हुए उसे देखते राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह द्वारा श्री राजीव गांधी को प्रधान पद की शपथ दिलाना सर्वथा उपयुक्त कदम था। देश जैसे हिंसा, साम्प्रदायिकता, एकता व अखण्डता के आंतरिक व बाह्य षड्यंत्रों की विभीषिका से गुजर रहा है, तथा स्वयं कांग्रेस पार्टी भी, इस कदम द्वारा बिखरने से बच गये। हमें पूरा विश्वास है कि श्री राजीव गांधी अपने महान् पूर्वजों व अग्रेजों के पथ पर चलकर देश को संकट से उबार सकेंगे। —राजकुमार कपूर, एम० डी० एड०, आर्य समाज पट्टी (अमृतसर)।

दयानन्द और लूथर

—हरिओ३म् सिद्धान्ताचार्य—

"परिस्थितियां ही विचारकों की जननी हैं" —सम्भवतः इसी उक्ति के अनुसार युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द और अपने युग के प्रवर्तक मार्टिन लूथर या किसी अन्य विचारक का ऐतिहासिक परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे समुचित और सन्तुलित मूल्यांकन किया जा सकता है।

१४वी शताब्दी के मार्टिन लूथर और १८ वी शताब्दी के महर्षि दयानन्द सम्भवत समान हृदय लेकर ससार मे प्रकट हुए थे क्योकि दोनो प्रबल क्रान्तिकारी तथा तथाकथित सडे गले धर्म के प्रति विद्रोही थे। धार्मिकता की सडी गली कुरीतियों के विरोधाभास व धर्म के नाम पर अमानवीय कृत्यो को देखकर इन दोनो महान् समाज सुधारको ने जो कार्य किया उसका तत्कालीन समाज पर इतना बडा प्रभाव पडा कि लोग यह मानने को मजबूर हो गये कि ये दोनो एक ही ऐतिहासिक वातावरण की उपज थे। इतिहास इनका चिरसाक्षी एव ऋणी रहेगा।

कुरीतियों के प्रति विद्रोह का डंका, आर्यावर्त की उन्नति और सुधार के लिए महर्षि ने व कैथोलिक चर्च की बर्बरता व अनैतिकता के विरुद्ध लूथर ने, यावत् जीवन बजाया, सर्वांश में सत्य न होते हुए भी जिसमें समस्त धार्मिक बुराइया जलकर नष्ट हो गयीं। इन्ही परम्पराओ और प्रमाणो के आधार पर लूथर और दयानन्द को समान समाज सुधारको की श्रेणी मे रखा जा सकता है।

१४ नवम्बर १४८३ को जन्मे मार्टिन लूथर ने उस जमाने की यूरोप की सबसे बडी शक्ति होली रोमन एम्पायर [Holi Roman Empire] के सम्राट् चार्ल्स पञ्चम के विरुद्ध १५वी शताब्दी के पूर्वार्ध मे सघर्ष किया। इसी समय के यूरोपीय पूजीवाद के समर्थको मे अन्य महान विचारको, कलाकारों यथा, लियोनार्डो न दविंची', एलबर्ट, जयूरर आदि के साथ ही लूथर ने भी सामन्ती वैचारिकता के ऊपर कठोर प्रहार कर उसे सुधारने की कोशिश की। उसी प्रकार भयानक पूजीवादी शोषण के विरुद्ध १९ वीं सदी मे जन्मे दयानन्द ने भी मनु और वैदिक आर्थिक व्यवस्था को लेकर बड़ा कडा सघर्ष किया।

लूथर के समय में कैथोलिक चर्च के चरित्र-भ्रष्ट पोप एलेक्जेण्डर बोजियो ने भ्रष्ट पुत्र सीजर और पथभ्रष्ट पुत्री ल्यूक्रेजिया बोजियो के कारण खूब धन कमाया। किन्तु लूथर के पादरी बन कर आने तक ये तीनो मर चुके थे। उत्तराधिकारी जूलियस द्वितीय तथा लिया दशम एवम् कैथोलिक चर्च पूजीवाद के द्वारा आई हुई आर्थिक समस्याओ का सामना नहीं कर पा रहे थे। कहते हैं चच के रिक्त खजाने की पूर्ति के लिए लियो X ने इण्डलजेन्स का व्यापार प्रारम्भ कर किया। जिसेके माध्म से वह अपने भक्तों के नरक को कम करता था। लूथर भी दयानन्द की तरह धम के नाम पर धार्मिक समुदाय में व्याप्त इस प्रकार की जनपीडा व ठगी को सहन न कर सका। उनका हृदय चीत्कार करने लगा। फलत दयानन्द की पाखण्ड खडिनी की तरह विटेनबग चच के गेट पर उन्होंने इण्डलजेन्स का कटु आलोचक एक ९५ सूत्रीय कागज ३१ दिसम्बर १५१७ ई० को चिपका दिया। उन्हे बागी घोषित कर दिया गया। परन्तु ऋषिवर सदृश अडिग लूथर ने भी तथाकथित धर्माधिकारियो के अनेको अत्याचार सहकर भी उफ न की।

चार्ल्स पञ्चम के आदेशानुसार धर्म की ससद ने उनके अकाट्य तर्कों के बाद भी उन्हे ईश्वर और मानव के प्रति बागी करार दिया। अब वह आडम्बर विरोधी दयानन्द की तरह शान्तिस्थापक पादरी लूथर की जगह 'बागी लूथर" हो गये। उनके ऊपर अनेकों प्रतिबन्ध लगाये गये जिसका उत्तरी जमनी की जनता ने विरोध किया और सेक्सनी के राजा ने उन्हे बार्टवर्ग मे शरण दी जहा से उन्होने सर्वसाधारण के लिए लैटिन से जर्मन भाषा में बाइबल का अनुवाद किया। इसी प्रोटेस्ट के कारण जमनी छोटे-छोटे हजारो भागों मे विभक्त हो गया। अब कैथोलिक व प्रोटेस्टेंट शब्दों की लडाई न रहकर राजनैतिक व आर्थिक हो गई। जिसके परिणामस्वरूप गिरजाघरो पर जबरदस्ती हमले करके अधिकार कर लिए गये। २९ वर्ष तक इस महान् सुधारक का दयानन्द की तरह अन्धश्रद्धा, आडम्बरवाद, धार्मिक ठेकेदारी और सामाजिक, धार्मिक एव आर्थिक शोषण रूप कलक को निष्कलक रहकर धोने के बाद १५४६ मे निधन हो गया।

दयानन्द के प्रबल शास्त्रार्थों व पाखण्ड-खण्डन, वेदमत मण्डन घोष से अन्धविश्वासों की गढ़, भगवान शकर की नगरी काशी के जिस प्रकार अस्थिपजर हिल गये थे ठीक वैसे ही प्रोटेस्टेंट लूथर के आन्दोलन के परिणामत सैंकडो वर्षों का होली रोमन इम्पायर साम्राज्य भी पूरी तरह आन्तरिक टकराव से जजर हो गया। दयानन्द की मठाधीशो को चुनौती की तरह लूथर के कारण पोप की भी विश्वव्यापी शक्ति और असीमित अधिकारों को चुनौती मिलने लगी। कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट एक दूसरे की हत्यायें सडकों पर करने लगे थे। लूथर का आन्दोलन भी दयानन्द की तरह धार्मिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों, भ्रष्टाचारों के खिलाफ था जिसका समर्थन सामान्य जनता ने जीजान से किया।

जिस तरह दयानन्द ने भारत की जर्जरित और मृतप्राय धर्म, समाज और शैक्षणिक व्यवस्था पर करारी चोट देकर व्यवहार समर्पित एक नई दिशा दी वैसे ही १५वीं शताब्दी की जर्जरित और भ्रष्ट यूरोपीय ईसाई परम्परा को तोडकर पूजीवाद को वैचारिक स्तर तक लाने के लिये लूथर ने अपने तन, मन और जीवन को अर्पण कर एक ऐसा मोड दिया जो बुद्धिशाली समाज को सतत प्रकाश प्रदान करता रहेगा। इन दोनो सुधारको के चरित्र के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि लूथर का सघर्ष केवल पूजीवाद का समर्थन और धार्मिक आडम्बर का विरोध था जबकि दयानन्द का लक्ष्य सर्वतोमुखी था—राजनीति धर्म, शिक्षा, सभी क्षेत्रो में ऋषि ने एक परिपूर्ण मानव के विकास में पूरा ध्यान दिया।

कुछ विचारक लूथर को अधिक श्रेय देते हैं कि उसने कोई कानून बनाने के लिए रायजाश्रय नहीं लिया जिससे लूथर का सघर्ष दयानन्द की तुलना में काफी सफल और सार्थक रहा और प्रगतिशील सामयिक आन्दोलन के कारण ही राजाराममोहन राय, अरविन्द घोष, बकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय और दयानन्द के सुधार आन्दोलन और पिछडी हुई सगठन नीति को कभी सफलता नही मिली क्योकि ये सब रायजाश्रय की चाहना लेकर अग्रेजो के पिट्ठू बन गये। यहा तक कि गोवध के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान में ऋषि अपने अन्तिम समय तक व्यस्त रहे। मेरे विचार से यह सोचना गलत है क्योकि तत्कालीन सरकार इन सुधारकों की विचारधारा को समाजहितैषी मानती हुई भी अपना राज्य जमाने के लिए इन विचारों को कुचलने के लिए कटिबद्ध थी। फलस्वरूप उसने दयानन्द को 'बागी फकीर' की सज्ञा दी। अग्रेज सरकार द्वारा १८५७ के सग्राम में आगे रहने के कारण समस्त उत्तर भारत के देशभक्तों और जन सामान्य पर हर तरह के दमनचक्र चलाये जा रहे थे। लूथर युग की तुलना मे अग्रेजों द्वारा लाया गया ऋषिकालीन-पूजीवाद एक लुटेरे और डाकू की तरह भारत की तरफ मुह फाडकर आया अत उसने सामन्तशाही को प्रोत्साहित किया। भूमिकर की वसूली का ठेका सामन्तो और जमींदारो को देकर उसने कल तक की सिरमौर भारतभूमि को कगालों का देश बना दिया। परन्तु इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे लगता है कि लूथर और दयानन्द ने मतो और आडम्बरों से जकडी विभाजनता को एक प्रगतिशील सामयिक विचारधारा देकर समाज को नई दिशा दी। अत यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि जहा लुथर को केवल आर्थिक समाजिक और धार्मिक पक्ष का वरण करके सन्तोष करना पडा वहीं दयानन्द को मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष कीढ़तापूर्वक सिद्धि करने पर चतुर्दिक सफलता मिली। इन दोनों सुधारकों के उदय से अन्धकार भ्रमित विश्वजनता ने विश्वगगन पर प्रकाल की एक किरण देखी और उसका सहष स्वागत किया। आज इग्लैंड त विशप भी धर्मग्रंथों की अनर्गल और सृष्टिक्रम विरुद्ध बातों को अपने धर्म ग्रन्थों के साथ जोडने मे हिचकिचा रहे हैं। यह उन दोनो महान पुरुषों के अमर बलिदान का फुल नहीं तो और क्या है।

पता—महर्षि दयानन्द उपदेशक
विद्यालय टकारा, राजकोट
[गुजरात]

राष्ट्रद्रोही दण्डित हों

दिल्ली प्रांतीय महिला सभा ने प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की नृशस हत्या पर शोक व्यक्त किया व सरकार से माँग की कि राष्ट्रद्रोही अवश्य दण्डित हों। अपनी प्रियनेत्री को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री राजीव गांधी की सफलता की कमना की गयी।

हरियाणा गुरुकुल विद्यापीठ, भैंसवाल कला व कन्यागुरुकुल खानपुर कलां की शोक सभा में स्व० प्रधानमत्री श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या की भर्त्सना तथा भू० पू० शिक्षा मत्री हरियाणा चौ० शार्दूलसिंह के आकस्मिक निधन पर भी शोक व्यक्त किया गया। परमेश्वर से दिवगत आत्माओं के लिये प्रार्थना की गयी।

मातवती आर्य कन्या हाई स्कूल हाँसी की शोक सभा में प्रधानमत्री श्रीमती गांधी की हृदय विदारक मृत्यु पर आत्मिक शोक व्यक्त किया गया तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की गयी।

शव-वाहन की व्यवस्था

नई दिल्ली ४० वर्षों से जन सेवा कार्य में रत लोधी रोड समाज को 'रोटरी क्लब' ने ५० हजार रु० मूल्य का शव वाहन भेंट किया है। वाहन का रखरखाव समाज द्वारा संचालित श्मशान भूमि (टेली०-६२४२६५) करती है। वाहन की सेवाए यहा सूचना देने पर सबको सुलभ हैं। समाज ने शीघ्र ही लगभग एक लाख रु० मूल्य के एक अन्य 'शव-वाहन' का सकल्प लिया है।

भोगल का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली आर्य समाज जंगपुरा भोगल के ४४ वें वार्षिकोत्सव पर स्व० श्रीमती सत्यप्रिया जन्मदिवस समारोह में विभिन्न विद्यालयों व सस्थाओं के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता हुई तथा पुरस्कार वितरित हुए। गरीब व योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना इस वार्षिक प्रतियोगिता का ध्येय रहा है। अन्य कार्यक्रमों में भी कविराज [illegible] आदि कृत्य आर्य [illegible] महिला सम्मेलन आदि सभी प्रभावी रहे।

भारत लाहौर के प्रश्न को क्यों न उठाये ?

—प्रो० बलराज मधोक—

पाकिस्तान ने फिर कश्मीर के मामलों को उछालना शुरू कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में बोलते हुए पाकिस्तान के विदेशमंत्री ने बलपूर्वक कहा कि जब तक कश्मीर समस्या का कोई सम्मानजनक हल नहीं होता, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में स्थाई शान्ति नहीं हो सकती। पाकिस्तान क्या हल चाहता है, इसे हाल ही में इस्लामाबाद में हुई 'मोतमरे इस्लामी' की गोष्ठी ने स्पष्ट कर दिया। इसने फतवा दिया कि जम्मू कश्मीर में संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के आधार पर जनमत कराया जाए और वहां के लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार दिया जाए।

शिमला समझौते के परिप्रेक्ष्य में भारत की सरकार और जनता इन बातों की उपेक्षा नहीं कर सकती। १९७२ में शिमला समझौते से पहले भारत सरकार इस बात पर दृढ़ थी कि जम्मू-कश्मीर राज्य का पूर्ण विलय भारत के साथ हो चुका है और पाकिस्तान का जम्मू-कश्मीर के मामले में कोई स्थान या दखल नहीं है। यह भारत का आन्तरिक मामला है।

भारत की इस मान्यता के ठोस आधार हैं। जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरिसिंह ने स्वेच्छा से उस विलय-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे, जिस पर भारत संघ में शामिल होने वाले अन्य नरेशों ने किये थे। ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से कश्मीर सदा हिन्दुस्तान का अंग रहा है। भारत की सेना ने पाकिस्तानी आक्रान्ताओं को बलपूर्वक कश्मीर घाटी और आस-पास के क्षेत्र से खदेड़कर भारत के कानूनी अधिकार पर सैनिक विजय की मुहर भी लगाई थी।

भारत सरकार और इसके प्रवक्ता १९७२ तक हर अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर इस बात को दोहराते रहे कि पाकिस्तान का कश्मीर के मामले में कोई दखल नहीं, परन्तु पाकिस्तान अपनी जिद पर कायम रहा। इसने १९४७, १९६५ और १९७१ में कश्मीर को बलात् हथियाना चाहा। इन तीनों युद्धों में इसे मुंहकी खानी पड़ी। १९७१ के युद्ध में उसकी स्पष्ट पराजय हुई। भारत की सेना ने पश्चिमी पाकिस्तान के न केवल पांच हजार वर्ग मील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया अपितु पाकिस्तान के ९३ हजार सैनिक भी युद्धबन्दी बने। वह अवसर था जब भारत सरकार कश्मीर के मामले में पाकिस्तान के दावों को सदा के लिए समाप्त कर सकती थी। परन्तु हुआ इसके विपरीत।

शिमला समझौते की भूल

शिमला समझौते की धारा४ में कहा गया है कि जम्मू-कश्मीर में दोनों देश १७ दिसम्बर, १९७१ को हुई युद्धबन्दी को समय की वास्तविक नियन्त्रण रेखा को अपने दावों को न छोड़ते हुए, स्वीकार करते हैं। इसी संधि की धारा-६ में कहा गया है कि "दोनों देशों की सरकारें इस बात पर सहमत हैं कि दोनों के शासन-प्रमुख फिर मिलेंगे। इस बीच दोनों देशों के प्रतिनिधि आपस में मिलकर संबन्धों को सामान्य बनाने की दृष्टि से युद्धबन्दियों की वापसी, सिविल नजरबन्दियों की अदला-बदली, जम्मू-कश्मीर का स्थायी फैसला और कूटनीतिक सबधो की बहाली पर विचार करेंगे।"

इस प्रकार इस समझौते द्वारा भारत सरकार ने पहली बार यह स्वीकार किया कि कश्मीर के मामले में पाकिस्तान भी एक पक्ष है और इसके स्थायी हल के लिए उसे भी बात करनी होगी।

इस संधि में यह भी कहा गया है कि दोनों देश अपने व्यवहार आपसी बातचीत से सुलझायेंगे और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर नहीं उठाएंगे, परन्तु जब एक बार विवाद के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया गया और उसमें पाकिस्तान के दखल को भी मान लिया गया, फिर इस बात का, कि उसकी चर्चा कहां हो और कहां न हो, विशेष महत्व नहीं रहता। भारत का सारे जम्मू-कश्मीर राज्य पर संवैधानिक और कानूनी अधिकार है। वस्तुस्थिति यह है कि इस राज्य का ३० हजार वर्गमील क्षेत्र पाकिस्तान के अधिकार में है। उसे वापस लिए बिना एक जनवरी, १९४७ को युद्धबन्दी की घोषणा करके भारत सरकार ने उस पर पाकिस्तान का व्यावहारिक (डी फैक्टो) अधिकार मान लिया। १९७१ के युद्ध के बाद उस युद्धबन्दी रेखा को नियंत्रण रेखा का नाम दे दिया गया।

पाकिस्तान के इरादे

पाकिस्तान इतने बड़े क्षेत्र पर अपने नाजायज अधिकार से संतुष्ट नहीं। वह कश्मीर घाटी को भी, जो भारत के नियन्त्रण वाले भाग में एकमात्र मुस्लिम क्षेत्र है, अपने अधिकार में लेना चाहता है।

भारत सरकार ने बार-बार अनौपचारिक रूप मे यह सुझाव देकर कि नियंत्रण रेखा को भारत और पाकिस्तान के बीच की स्थायी सीमा मान लिया जाए, पाकिस्तान को इसके द्वारा बलात् हथियाये गये क्षेत्र की कीमत पर तुष्ट करने का प्रयत्न किया है—परन्तु पाकिस्तान इतने से संतुष्ट होने को तैयार नहीं। वह कश्मीर घाटी भी लेना चाहता है और उसके लिये एक और युद्ध करने की तैयारी कर रहा है।

भारत के भी कुछ दावे

इन हालात में भारत सरकार हाथ पर हाथ रखकर बैठी नही रह सकती। यथार्थवाद का तकाजा है कि भारत भी उन प्रश्नों को, जिन्हें पाकिस्तान ताकपर रखना चाहता है, उठाए। ऐसे प्रश्न अनेक हैं। इनमें विभाजन से पूर्व हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय ऋण में पाकिस्तान के भाग की अदायगी, भारत में आये हिन्दू विस्थापितों द्वारा पाकिस्तान में छोड़ी गयी सम्पत्ति की क्षतिपूर्ति और लाहौर के प्रश्न शामिल हैं। आज की स्थिति में लाहौर के प्रश्न का प्रश्न का विशेष महत्व है।

विभाजन के लिए बनाए गए "रेड क्लिफ आयोग" के लिए जो कसोटी तय की गयी थी उसके अनुसार रावी नदी के पूर्व मे बसा लाहौर भारत को मिलना चाहिए था। 1947 मे इस जनसंख्या में हिन्दू (केशधारियों समेत) अधिक थे और इसकी लगभग ८५% चल-अचल सम्पत्ति हिन्दुओं के पास थी। भावात्मक दृष्टि से भी लाहौर का भारत के लिए विशेष महत्व था, और है। यह महाराजा रणजीतसिंह की राजधानी तथा गुरू अर्जुनदेव और वीर हकीकत की बलिदान स्थली है। यदि पाकिस्तान हमारी ३० हजार वर्गमील भूमि को दबाए बैठा है और कश्मीर घाटी पर भी दावा कर रहा है तो हिन्दुस्तान भी लाहौर पर दावा कर सकता है।

सही समाधान

पंजाब में उग्रवादी अकालियों को एक बड़ी शिकायत यह रही है कि भारत सरकार ने १९६५ और १९७१ के युद्धों में लाहौर पर जानबूझ कर अधिकार नहीं किया। मार्च, १९८२ से पंजाब में विश्व विद्यालय चण्डीगढ़ में सिख स्टूडेन्ड फैडरेशन द्वारा पंजाब मे सिख 'राजनीतिक' विषय पर आयोजित एक गोष्ठी मे इस बात का बार-बार उल्लेख किया गया था। मैंने भी उस गोष्ठी में भाग लिया था। मेरा यह सुविचारित मत है कि यदि भारत सरकार लाहौर के मामले को उठाए तो पंजाब के लोगो का, विशेष रूप से केशधारियों का, बड़ा समाधान होगा और उग्रवादी अकालियों के पाकिस्तान के साथ गठजोड़ को प्रभावी रूप में कुंठित किया जा सकेगा।

गत 37 वर्षों के अनुभव से यह स्पष्ट हो चुका है कि पाकिस्तान के अस्तित्व का आधार ही हिन्दुस्तान के प्रति शत्रुता का भाव है। यदि पाकिस्तान भारत के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति पर अमल करे तो इसके पृथक राष्ट्र के रूप में कायम रहने का आधार ही समाप्त हो जाय। यही स्थिति बंगला देश की है। इसलिए इनके प्रति "जैसे का तैसा" की नीति अपनानी होगी। ऊपर दिया गया सुझाव उसके अनुरूप भी है और यथार्थवादी भी।

धरती को आज जरूरत है

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'—

जो एक भाव को लेकर के, मानव को खूब झंझोड़ सकें।
अज्ञान, अविद्या की गर्दन, निर्मम बन तोड़ मरोड़ सकें॥
धरती को आज जरूरत है, ऐसे अद्भुत विद्वानों की।
जिनको हो गर्व जवानी पर, जो रण में गर्जन कर सकते॥
झट चीर कलेजा अड़चन का, वे वीर जो आगे बढ़ सकते।
धरती को आज जरूरत है, उन गुणवानों बलवानों की॥

प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन अब दिसम्बर में

पलवल (हरियाणा) : प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन श्रीमती इन्दिरा गांधी की जघन्य हत्या के कारण ३-४ नवम्बर को स्थगित कर अब महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री ओमप्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में २ व ३ दिसम्बर को भीमनगर गुड़गाव में होगा। सम्मेलन में हजार आर्यवीर पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे तथा शीर्ष युवा आर्य विद्वानो की उपस्थिति रहेगी।

नेत्र-चिकित्सा शिविर

मेरठ (उ० प्र०) : आर्यसमाज का 'नेत्र-शिविर' व चक्षु-कल्प यज्ञ दिवंगता प्रधानमंत्री की नृशंस हत्या के कारण एक दिन पूर्व समाप्त हो गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वा० विवेकानन्द जी ने यजमानों व रोगियोंको आशीर्वाद दिया। शिविर में कुल ३३२ (आख २१०+नाक, कान, गला १२२) सफल आप्रेशन हुए।

वार्षिक निर्वाचन

हावड़ा (प० बंगाल) आर्य समाज के वार्षिक निर्वाचन मे संरक्षक-सर्वश्री मिहिरचन्द धीमान व सत्यनारायण अग्रवाल, प्रधान—श्री पुष्करलाल आर्य, मंत्री — श्री केशवदेव श्रीमान तथा कोषाध्यक्ष—श्री आनन्दकुमार अग्रवाल चुने गये।

गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली की व्यापकता

—प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार,—

गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली को लेकर आम-तौर पर भ्रम फैला है कि गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की संस्था गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली है। एक भ्रम यह भी है। कि आर्यसमाज का ही संबंध गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के साथ है या इस प्रणाली का उद्देश्य आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार करना है, या गुरुकुल-शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र अगर आर्यसमाज का कार्य नहीं करते तो गुरुकुल-शिक्षा निरर्थक है। ये सभी बातें सारहीन हैं।

गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली एक स्वतंत्र शिक्षा-प्रणाली है। मोन्टेसरी सिस्टम, प्रोजेक्ट सिस्टम, बुनियादीतालीम या वर्धा-योजना शिक्षा की एक-एक पद्धतियां हैं, वैसे ही गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली शिक्षा की एक पद्धति है। जैसे मोन्टेसरी सिस्टम को मैडाम मोन्टेसरी ने चलाया, प्रोजेक्ट सिस्टम को जॉन डयुई तथा उनके शिष्य किलपेट्रिक ने चलाया, बुनियादी तालीम को महात्मा गांधी ने चलाया, वैसे ही गुरुकुल शिक्षा-पद्धति को ऋषि दयानन्द के वैदिक आधार पर लिखे सत्यार्थप्रकाश से प्रेरणा लेकर महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने चलाया। गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का आर्यसमाज के साथ अविनाभाव का संबंध नहीं है। यह सहस्रों वर्षों से परंपरा के तौर पर भारत में चली आ रही शिक्षा-प्रणाली है जिसके ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में उल्लेख से संकेत पाकर महात्मा मुंशीराम ने गंगापार हरिद्वार में एक संस्था की स्थापना की और क्योंकि वे आर्यसमाजी थे इसलिये उनकी कांगड़ी मे स्थापित संस्था और उसके अनुकरण मे जगह-जगह स्थापित शिक्षा-संस्थाएं आर्य समाज से जुड़ी प्रतीत होती हैं।

इस दृष्टि से विचार करें तो गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली एक व्यापक शब्द है व कांगड़ी, झज्झर, अयोध्या, कुरुक्षेत्र-इन्द्र, प्रस्थ आदि संकुचित तथा एक-देशीय शब्द हैं। हो सकता है कि कांगड़ी, अयोध्या, कुरुक्षेत्र, सूपा आदि मे गुरुकुल नाम की किसी शिक्षा-संस्था मे गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली न हो, यह भी हो सकता है कि देहरादून, अमृतसर, दिल्ली या अन्यत्र कहीं एक स्कूल या कालेज हो, जो गुरुकुल न हो परन्तु उसमें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली चल रही हो। जब मैं कहता हूं कि गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली शिक्षा की एक पद्धति है, जिसे सर्वप्रथम आर्यसमाज ने अपनाया तब मेरा यह भी अभिप्राय है कि इस पद्धति को जैन, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान—कोई भी अपना सकता है और यह भी संभव है कि जैन, बौद्ध, इसाई व मुस्लिम-गुरुकुल हों, नाम भले ही उनका गुरुकुल न हो और उन संस्थाओं का आर्यसमाज से दूर का भी संबंध न हो। जब यह समझ लिया जायगा कि गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली एक पद्धति है, किसी संस्था-विशेष का नाम नहीं, तब अगर यह देखने में आये कि ईसाई और मुस्लिम गुरुकुल भी खुलने लगे हैं, कोई आश्चर्य की बात न होगी।

अब विचारणीय रह जाते हैं गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति के मूल-भूत सिद्धान्त अगर गहरे में जायें तो स्पष्ट हो जायगा कि "गुरुकुल" शब्द में ही गुरुकुल-शिक्षा पद्धति के मूलभूत-सिद्धान्त निहित हैं। "गुरुकुल" यह "गुरु" तथा "कुल" दो शब्दों से बना है। इनके अतिरिक्त इस प्रणाली मे एक तीसरा शब्द है, "शिष्य"—वह व्यक्ति जिसके लिये इस शिक्षा-पद्धति का निर्माण हुआ है व एक चौथा शब्द है "आश्रम"। इन चार शब्दों पर विचार करने से गुरुकुल-शिक्षा पद्धति के मूल-भूत सिद्धान्त स्पष्ट हो जाते हैं।

(1) गुरु—इस पद्धति का पहला शब्द है—"गुरु। संस्कृत में एक प्रचलित शब्द है, "गुरुत्वाकर्षण,। इस शब्द का अर्थ है कि गुरु (भारी) वस्तु अपने से हल्की वस्तु को अपनी तरफ खींच लेती है। उदाहरणर्थ, सब वस्तुएं बर-बस पृथ्वी की तरफ खिंच जाती हैं। गुरु का अर्थ है—वह व्यक्ति जो अपने गुणों से, अपनी विद्या से इतना भारी हो कि अल्प-ज्ञान वाले सब लोग उसकी तरफ खिंचे चले आयें। गुरु का यह सबसे बड़ा गुण है। आज हमारे गुरु विद्या या अपने गुणों से इतने भारी नहीं हैं कि विद्यार्थी उनकी तरफ खिंचे चले आयें। शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक गुरुत्व वाला ही गुरु कहलाने के योग्य बनता है। पर क्या हमारे गुरुओं में ऐसे गुण हैं कि छात्र उनकी तरफ खिंचे चले आयें? पढ़ाने वाले ही जब हड़ताल करें तब पढ़ने वाले उनसे क्या सीखेंगे? जब घड़ा भरा हो तभी उसमें से पानी पिया जाता है, खाली घड़े से किसकी प्यास मिट सकती है? आज हर छात्र को जो जीवन में कुछ बनना चाहता है ट्यूशन लेनी पड़ती है। जितने स्कूल हैं उतने ही ट्यूशन-घर खुले हैं। ट्यूशन-घर क्या हैं, गुरुओं, की विद्या बेचने की दुकानें। भारतीय संस्कृति में ब्राह्मण कहे गये ब्राह्मण नहीं, बनिये बने हैं। गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति का पहला मूल-सूत्र है विद्या का दान दिया जाता है, वह बेची नहीं जाती। भले ही आज के युग में यह कर सकना कठिन है परन्तु विद्या देते हुए ऐसा दृष्टिकोण तो रखा ही जा सकता है। गुरु बनने के लिये पैसे का महत्व कम नहीं परन्तु उसके लिये विद्या का अगाध सागर बनकर छात्रों की पिपासा को मिटाने के लिये उन्हें अपनी तरफ आकर्षित कर सकना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है—यह गुरुकुल-शिक्षा, पद्धति का पहला मूल-सिद्धान्त है।

(२) कुल—इस पद्धति का दूसरा शब्द है—"कुल"। कुल का अर्थ है—"परिवार"। गुरुकुल उस शिक्षा पद्धति को कहते हैं जिसमें गुरु तथा शिष्य इस भावना से एक साथ रहते हैं मानो वे सब एक परिवार के अंग हों। बच्चा जन्म से ही माता-पिता के साथ रहता है, वह पिता-माता से भाई-बहिनों से प्यार पाता है। शिक्षा पाने के लिये उसे माता-पिता, भाई-बहिन के छोटे तथा सीमित परिवार से अलग रखा जाता है, परन्तु गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की भावना में वह एक छोटे परिवार से बड़े परिवार में जाता है, जहां गुरु उसके पिता तथा अन्य बच्चे उसके भाई होते हैं। शिक्षा-संस्था में "कुल" की भावना गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की ऐसी विशेषता है, जो अन्य शिक्षा-पद्धतियों में नहीं पायी जाती। वेदों में तो यहां तक कहा है कि आचार्य-कुल मे बालक का प्रवेश, मानो विद्या रूपी माता के गर्भ में प्रवेश पाना है, जहां उसका नया जन्म शुरू होता है। यह समझना कि गुरुकुल में प्रविष्ट होकर बालक माता-पिता से बिछुड़ जाता है, "गुरुकुल" शब्द में निहित "कुल" शब्द के अर्थ को न समझना है। इस शब्द की भावना है कि अन्ततोगत्वा संपूर्ण समाज, एक कुल "परिवार" बनाता है। माता-पिता का परिवार एक सीमित परिवार है; आचार्य-कुल एक बड़ा परि-वार है, और ज्यों-ज्यों मनुष्य आगे-आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों समाज, देश तथा विश्व परिवार में अपने को विलीन कर देता है। हम मानव-मानव की एकता की बात करते हैं, समाजवाद का नारा लगाते हैं, विश्व के सब नागरिकों के समान अधिकारों का आन्दोलन करते हैं, परन्तु जब तक ये भावनाएं क्रियात्मक रूप में प्रारंभिक शिक्षा तथा रहन-सहन द्वारा हमारे जीवन में ओत-प्रोत नहीं हो जातीं, जबतक ये नारेबाजी रह जाती हैं। अगर इस नारे को क्रियात्मक रूप देना हो, तो भाई-भाईपने का क्रियात्मक अनुभव जो मनुष्य जन्मते ही अपने परि-वार में पाता है, उसे क्रियात्मक रूप में आगे बढ़ाना होगा ताकि एकात्मता की भावना परिवार में, कुल में शुरू हो, आचार्य-कुल में आगे बढ़े, और बढ़कर समाज, देश तथा विश्व में जा पहुंचे। इसी को वेद में कहा है—समानो मंत्रः समितिः समानी। गुरुकुल का "कुल" प्रत्येक मानव को विश्व का एक ही स्तर का नागरिक बनाने में एक कड़ी है। माता-पिता के कुल से आचार्य के, आचार्य के कुल से समाज के समाज के कुल से देश के और देश के कुल से विश्व के कुल में आगे-आगे बढ़ते जाना—"गुरुकुल में "कुल" शब्द का यही अर्थ है।

(३) शिष्य—गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति का तीसरा शब्द है— "शिष्य"। शिष्य शब्द शास् अनुशासने धातु से बना है। अनुशासन के लिये अंग्रेजी में शब्द है—डिसिप्लिन। शिष्य का मुख्य कर्तव्य है अनुशासन में, डिसिप्लिन में रहना। आज कोई भी अनुशासन में रहने को तैयार नहीं। अनुशासन जीवन के किसी भी क्षेत्र में नहीं है। स्कूलों-कालेजों-युनिव-सिटियों में अपने अधिकारों के लिये विद्यार्थियों की, अध्यापकों की, प्रोफेसरों की, डाक्टरों की यूनियनें हैं। हर क्षेत्र में यूनियन है मानों छात्रों का काम यूनियन बनाकर आन्दोलन करना है। छात्र, पेपर आउट हो जाय, या नकल करके बिना पढ़े पास होना चाहते हैं, क्योंकि पढ़ने के लिये अनुशासन में बंधना होगा, जिसमे रहने के लिये कोई तैयार नहीं। गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति का मूल-सिद्धान्त ही अनुशासनप्रियता है, इसीलिये विद्यार्थी को "शिष्य"संज्ञा दी गई। जो विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन न सीखें, वे समाज का अंग बनने पर कैसे अनुशासन में रह सकते हैं?

(4) आश्रम—विद्यार्थी को गुरुकुला-श्रम में रहना होता है, इसलिये इस पद्धति का चौथा शब्द है—"आश्रम"। वैदिक-संस्कृति मे मानव-जीवन चार आश्रमों में बंटा है— ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वान-प्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम। विद्यार्थी का जीवन सबसे पहले 'ब्रह्मचर्याश्रम' से प्रारम्भ होता है। वैसे तो जीवन के ये पड़ाव होते ही हैं, वैदिक-संस्कृति ने इन्हें वैज्ञानिक रूप देने के लिये इन्हें चार आश्रमों में बांट दिया है। बालक पहले पढ़ता-लिखता है; फिर जीवन-संग्राम में उतर जाता है, आजीविका के लिये कोई धंधा करता है; फिर इस कशमकश से थक जाता है, आराम करता है जिसे हम रिटायर होना कहते हैं; अन्त में सब तरफ से उपराम हो जाता है। जीवन के अवश्यंभावी इन चार पड़ावों की आश्रम-व्यवथा में पहला पड़ाव, पहला आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम है जिसका आज लोग उपहास करते हैं। परन्तु, जिन्होंने जीना सीखा है वे जानते हैं कि असली स्वस्थ जीवन ब्रह्मचर्य का जीवन ही है। गुरुकुल-पद्धति का कहना तो यह है कि ब्रह्मचर्य से, और तप का जीवन बिताने से मृत्यु पर विजय पाई जा सकती है 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत'।

ब्रह्मचय और तप का जीवन माता-पिता के साथ गृहस्थ में रहने से नहीं, बल्कि आश्रम में रहकर ही बिताया जा सकता है। अंग्रेजी में आश्रम को बोर्डिंग हाउस कह सकते हैं। पर बोर्डिंग-हाउस तथा गुरुकुल की आश्रम व्यवस्था में भेद

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्य समीक्षा

जीवन के पांच स्तम्भ

—ले० डा० प्रशान्त वेदालंकार—

प्रकाशक : गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६ डिमाई, पृष्ठ १७८, ।
मूल्य : ३५ रु०, सजिल्द

डा० प्रशान्त वेदालंकार एक सुलझे हुये विचारक एवं लेखक हैं। इनकी 'वैदिक साहित्य में नारी', 'महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राज्यव्यवस्था', 'शिक्षा व भाषानीति', 'धर्म का स्वरूप' आदि पुस्तकें पहले ही प्रकाश में आ चुकी हैं, और पाठकों ने पसन्द की हैं। इन्होंने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का अच्छा अध्ययन-मनन किया है, अतः ये आर्यसमाज और दयानन्द पर आधिकारिक रूप से लिखने की क्षमता रखते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में **शिक्षा, धर्म, अर्थ, समाज व राजनीति**—जीवन के इन पांच स्तम्भों पर महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण का आधुनिक परिपेक्ष्य में अध्ययन दिया गया है। पुस्तक महर्षि दयानन्द-निर्वाण-शताब्दी पर नवम्बर १९८३ में प्रकाशित हुई और इसका प्रारम्भ 'द्वे वचसी' (दो शब्द) शीर्षक से स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी के आशीर्वचन के साथ होता है।

शिक्षा—नामक प्रथम स्तम्भ में लेखक ने बताया है कि दयानन्द के मतानुसार राजनियम द्वारा शिक्षा प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। शिक्षा के स्थान आश्रम या गुरुकुल हैं। गुरुकुलों में अध्यापक और विद्यार्थी का अत्यन्त घनिष्ठ और मधुर सम्बन्ध होना चाहिए। शिक्षा केवल अक्षराभ्यास का नाम नहीं है, अपितु जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता आदि की बढ़ती हो और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं। 'पठन-पाठन' प्रकरण में बताया है कि दयानन्द के मत में भाषाज्ञान, साहित्य, अध्यात्मविद्या, चिकित्साशास्त्र, राजनीति, सैन्यशिक्षा, संगीत, हस्तकला व शिल्पकला आदि विविध विषयों का ज्ञान दिया जाना चाहिए। यह भी स्थापित किया है कि दयानन्द ने राज्य के कुल बजट का २० प्रतिशत धन शिक्षा पर व्यय करने का आदेश दिया है। लेखक का सुझाव है कि बच्चों की शिक्षा सेवानिवृत्त व्यक्तियों से कराई जाय। इस सम्बन्ध में यह ध्यान देना है कि बच्चों की शिक्षणकला का जो मर्मज्ञ है वही वस्तुतः बच्चों को शिक्षित कर सकता है। प्रत्येक सेवानिवृत्त शिक्षक में यह योग्यता नहीं हो सकती। कुछ अपवादों को छोड़ कर सामान्यतः डिग्री-कालेजों या पोस्ट-ग्रेजुएट कालेजों के सेवानिवृत्त शिक्षकों से आशा नहीं की जा सकती कि वे बच्चों के अध्यापन एवं शिक्षण का भार सफलतापूर्वक उठा सकेंगे। वे कक्षा में लेक्चर देने के ही अभ्यासी होते हैं। बच्चों के साथ जो श्रम, सौहार्द और मनोवैज्ञानिक व्यवहार अपेक्षित है उसके योग्य वे नहीं ठहर सकेंगे। एक प्रसिद्ध संस्था के विद्यालय विभाग में हमने स्वयं देखा है कि वहां जो सेवानिवृत्त शिक्षक बालकों के अध्यापनार्थ रखे गये उनमें से एक-दो केवल वे शिक्षक ही सफल हो सके जो अपने सेवाकाल में भी बच्चों को ही पढ़ाते थे। जब आपने यह नियम बना दिया कि बच्चों की शिक्षा सेवानिवृत्त व्यक्तियों से ही कराई जाये, तब ऐसे व्यक्ति मिलेंगे ही नहीं जो बच्चों की शिक्षा से सेवानिवृत्त हुए हैं। बालकों को गढ़ने में असमर्थ ऐसे सेवानिवृत्त शिक्षकों के हाथों में बच्चों को सौंपना बुद्धिमानी नहीं होगी। अतः हमारी सम्मति में इतनी ही स्थापना उचित है कि यदि कुशल, बालशिक्षाविद् सेवानिवृत्त शिक्षक मिले तो बच्चों की शिक्षा में लाभ उठाने की सुविधा शिक्षणालयों को देनी चाहिए।

पुस्तक के दूसरे 'धर्म' नामक स्तम्भ में धर्म के स्वरूप आदि पर विचार करने के उपरान्त साम्प्रदायिकता और धर्म क्या अन्तर है, वर्तमानकाल में राष्ट्र की धर्मनिरपेक्षता का क्या अभिप्राय लिया जाता है और वस्तुतः क्या होना चाहिए, धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए या नहीं आदि कतिपय प्रश्नों पर आधुनिक परप्रेक्ष्य में विचार किया गया है। तीसरे 'अर्थ' नामक स्तम्भ में राज्य का आयव्यय-बजट, पारिवारिक बजट, बेकारी की समस्या का समाधान आदि पर विचार व्यक्त किए हैं। 'समाज' नामक चौथे स्तम्भ में लेखक ने वर्ण एवं आश्रम-व्यवस्था का सुलझा हुआ रूप प्रस्तुत किया है। इसकी परिभाषा स्पष्ट नहीं हो सकी है। पृ० १२१ पर जो कुछ लिखा है उससे पाठक को यह भ्रम हो सकता है कि जो अज्ञानी और अधार्मिक है, उसकी शूद्र संज्ञा है, जो न दयानन्द को अभिमत है, न ही (संभवतः) लेखक को। पांचवें 'राजनीति' स्तम्भ में राजा की निरंकुशता का विरोध करते हुए दयानन्द के अनुमोदित मतानुसार शासन संचालनार्थ कौन सी तीन सभायें होनी चाहिए, सभाओं के सदस्यों एवं सभापति राजा के क्या गुण होने चाहिए, किस प्रकार राजा चुनाव-पद्धति से चुना जाना चाहिए, राज्य अथवा राजा के क्या कार्य होने चाहिए आदि विषयों पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। पुस्तक पठनीय एवं संग्राह्य है। एक बात अखरती है कि संस्कृत सन्दर्भ शुद्ध नहीं छपे हैं।

—डा० रामनाथ वेदालंकार

आर्यसभा की स्थापना क्यों?

देश की राजनीति को नया मोड़ देने के लिए

—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग के एक महान् सुधारक तथा प्रगतिशील विचारक थे। धर्म के वास्तविक स्वरूप के प्रतिपादन, समाज में व्याप्त कुरीतियों के निवारण, पाखण्ड व अन्धविश्वासों के खण्डन, स्त्री-शिक्षा, दलितोद्धार, विधवा-विवाह के समर्थन और बाल-विवाह तथा दहेज प्रथा के विरोध आदि के सम्बन्ध में जो मन्तव्य उन्होंने प्रतिपादित किये थे, आर्य समाज ने उन्हें क्रियान्वित करने का सफल प्रयत्न किया।

पर न्याय के आधार पर समाज का संगठन करने, शिक्षा प्राप्त करने का सब को समान अवसर प्रदान करने, गरीब-अमीर, छूत-अछूत एवं ऊंच-नीच के भेद-भाव को मिटाने, आर्थिक विषमता को दूर करने, वर्गविहीन समाज का निर्माण करने और राज्य संस्था को सच्चे अर्थों में लोकहितकारी बनाने के सम्बंध में जो विचार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रकट किए थे, उन्हें क्रियान्वित करने का अभी कोई प्रयत्न नहीं किया गया। हमारे नेता और राजनीतिक दल देश की उन्नति की योजनाएं बनाते समय या तो पाश्चात्य पूंजीवादी देशों के लोकतंत्रवाद से प्रेरणा प्राप्त करते हैं या कार्ल मार्क्स सदृश समाजवादी देशों से, पर अपने देश के एक महान् प्रगतिशील चिन्तक के विचारों की ओर वे कोई ध्यान नहीं देते।

आर्य सभा के रूप में एक नये राजनीतिक मंच का संगठन इसी प्रयोजन से किया गया है, ताकि देश की राजनीति को स्वामी दयानन्द सरस्वती के मंतव्यों से प्रभावित किया जा सके। वर्तमान समय की प्रमुख समस्या एक ऐसे समाज का निर्माण करने की है, जो न्याय पर आधारित हो, जिसमें शिक्षा प्राप्त करने का सब को समान अवसर हो जिसमें सब कोई अपनी योग्यता व कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य प्राप्त कर सके, और मनुष्यों की सामाजिक स्थिति तथा आर्थिक आमदनी उनकी योग्यता के अनुसार हो। स्वामी दयानन्द के विचारों को दृष्टि में रखकर इस समस्या के समाधान के लिए आर्य सभा द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम व नीति का सुझाव प्रस्तुत किया जाता है।

(१) शहरों से दूर खुले स्थानों पर ऐसे शिक्षणालय बड़ी संख्या में खोले जाएं, जिनमें जात-पांत, छूत-अछूत, धनी-निर्धन, का भेदभाव किये बिना विद्यार्थी एक साथ रह कर शिक्षा प्राप्त कर सकें। सब छात्रावासों में रहें, जहां सब को एक जैसे वस्त्र, एक जैसा भोजन और एक जैसा निवास प्राप्त हो। इन विद्यार्थियों को अपने परिवार का, सामाजिक व आर्थिक स्थिति का आभास तक न होने पाए। सब का रहन-सहन बहुत सादा तथा जीवन तपस्यामय हो। धनी और निर्धन, छूत-अछूत सब परिवारों के विद्यार्थी एक जैसी शिक्षा प्राप्त करें, उनमें ऊंच-नीच की भावना उत्पन्न न हो।

(२) शिक्षा की समाप्ति पर गुरुजनों द्वारा यह निर्धारित किया जाए, कि कौन विद्यार्थी किस कार्य के योग्य है। सब को योग्यता व कार्यक्षमता के अनुसार कार्य प्राप्त करने की व्यवस्था की जाए। सब की सामाजिक स्थिति और आर्थिक आमदनी उनकी योग्यता व कार्यक्षमता के अनुरूप हो।

(३) सम्पत्ति तथा उत्पादन के साधनों पर व्यक्तियों का स्वत्व स्वीकार किया जाए, पर सन्तान उन्हें उत्तराधिकार में तभी प्राप्त कर सके जब कि उन्हें संभालने तथा सार्वजनिक हित में उपयोग कर सकने की क्षमता उन में हो।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

पत्रों के दर्पण में

महर्षि दयानन्द को विषदान

४ नवम्बर १९८४ के अंक में 'ऋषि को विष देने का सूत्रधार कौन'— तथ्यात्मक लेख में लेखक श्री मेहता ने सर प्रताप की आत्मकथा के बारे में और जानकारी चाही है। मेरी जानकारी आत्मकथा के अंग्रेजी अनुवाद की एक पाण्डुलिपि राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार स्व० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के पास थी जिसमें कर्नल प्रताप ने स्वामी जी को विष दिये जाने के सम्बन्ध में लिखा था—

"The Dewali of Samvat 1940 (1883A.D.) will ever be considered for India and particularly Marwar when Swami Dayanand left this world by having a premature death by poison, said to have administered to him in food by some of his infringing Opponents at Jodhpur" Maharaja Sri Pratap's Autobiography Chap. 30. Pages-312-313 (Mss)

यह विदित हुआ कि आत्मकथा की मूल प्रति ईडर (गुजरात) में सुरक्षित थी। यहां इतना और लिखना आवश्यक है कि दीवान राधाकृष्ण सम्पादित महाराजा प्रतापसिंह का स्वलिखित जीवनचरित तथा मि० वानबार्ट लिखित सर प्रताप का अंग्रेजी जीवन चरित जोधपुर के नगर आर्यसमाज के पुस्तकालय में था। मैंने वर्षों पूर्व इन्हें पढ़ा था। श्री रमेश देव मेहता की जानकारी के लिये इतना और बता दूं कि अभी हाल ही में चौपासनी शोध संस्थान जोधपुर ने सर प्रताप सिंह का एक शोधपूर्ण जीवन-चरित प्रकाशित किया है। इसमें श्री ओंकार सिंह लिखित एक परिशिष्ट है जिसमें स्वामीजी को विष दिये जाने का प्रतिवाद है। जिसका मैंने विस्तारपूर्वक खण्डन अपने एक लेख में किया है जो परोपकारी अजमेर के आगामी अंक में प्रकाशित होगा।

इसी प्रसंग में श्री ब्रह्मदत्त जी के पत्र की चर्चा भी आवश्यक है। आपने अपने पत्र में लिखा है कि ऋषि को विष दिये जाने की चर्चा तत्कालीन रियासती रोजनामचों तथा बीकानेर स्थित राजकीय अभिलेखागार के विवरणों में उपलब्ध नहीं होती। इस सम्बन्ध में यह जानना आवश्यक है कि ऋषि को विष दिया जाना तो एक गुप्त षड्यंत्र का परिणाम था। ऐसी दुरभिसंधिपूर्ण घटनाओं का विवरण राजकीय रोजनामचों (जिन्हें रियासतों में हकीकत वही कहा जाता था) में भला कैसे निबद्ध किया जाता। अपनी शोधपूर्ण पुस्तक *नवजागरण* के पुरोधा—दयानन्द सरस्वती के एक अध्याय, विष-प्रकरण में मैं विष के प्रसंग की विस्तृत समीक्षा में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि स्वामी जी को विष देने में नन्हीं भगतन, मियां फ़ैजुल्ला खां, चक्रांकित वैष्णवों आदि का हाथ था। यह कुकृत्य धूल जी मिश्र रसोइये द्वारा ही कराया गया। नन्हीं का गुरु गणेश पुरी संन्यासी भी स्वामी से रुष्ट था, वह भी इस षडयंत्र का एक प्रमुख सूत्रधार था।—डा० भवानीलाल भारतीय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

आर्य राजनीतिक मंच आवश्यक

सम्पादकीय सहित (४ नवम्बर, आर्यजगत्) श्री सत्यनारायण आर्य का "आर्यों का राजनीतिक मंच आवश्यक" पढ़ा। निःसंदेह अपने सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा हेतु राजनीतिक शक्ति होना जरूरी है। संसद के बाहर की भाषणबाजी निरर्थक रही है और रहेगी। पर हरियाणा की एतद्विषयक राजनीतिक सुगबुगहट को संभवतः हमारी शीर्ष संस्था ने स्वयं दबा दिया। जब अन्यधर्मावलंबी संसद् में अपने प्रतिनिधि पहुंचाने को प्रयत्नशील हैं तो हिंदूओं की सशक्त रक्षक यह संस्था इस प्रश्न को जैसे उपेक्षित कर रही है, उससे लगता है कि यह नाममात्र की ही संस्था रह जायेगी। जोशीली भाषणबाजी व डेपुटेशनों के खिंचे फोटो से आर्यत्व नहीं बचेगा।—ब्रह्मदत्त, वी-४६, गणेशमार्ग, बापू नगर, जयपुर-१५

पहली गल्ती

हमारे प्रधानमन्त्री ने भारत और संसार के नाम दिये संदेश (१२ नवम्बर, ८४) में देश-विदेश विषयक अपने नीति-मुद्दों का संक्षेप में अच्छा निरूपण किया। नीति के संदर्भ में महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरागांधी की विरासत की ओर कम ज्यादा संकेत करके भूत को वर्तमान से जोड़ने का यह अच्छा प्रयास था।

उक्त भाषण का प्रारूप तैयार करने वाले एक बड़ी नासमझी की। उस संजीदा संदेश में हल्कापन था। जिस ईमानदारी की दिशा में हमारा नया प्रशासन बढ़ना चाहता है उसके सच्चे प्रतीक भू० पू० प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का नाम तक न लेना—सबसे पहली भयंकर भूल प्रधानमंत्री से करायी गयी। —प्रेमनाथ चतुर्वेदी, मौजपुर, दिल्ली-५३।

खालिस्तान की मांग देशद्रोह है।

देश के गृहमंत्री तथा वर्तमान नवनियुक्त प्रधानमंत्री श्री राजीव गान्धी को सिखों की अलगाववादी मनोवृत्ति को रोकने के सन्दर्भ में मेरा सुझाव है कि जो कुछ सिरफिरे अब भी खालिस्तान की मांग और देश विभाजन की बात करते हैं उनकी नागरिकता समाप्त कर सरकार को उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाना चाहिए (चाहे विधान में संशोधन करना पड़े)। हाल में पाकिस्तान ननकाना साहेब के सिख यात्रियों के पास जो खालिस्तानी साहित्य, भिण्डरांवाले के भाषणों की वीडिओ कैसेट तथा अन्य आपत्तिजनक सामग्री पकड़ी गयी, वह चिंतनीय है।

—विधान स्वरूप, संयोजक, हिन्दुस्तान हिन्दू मंच, करोल बाग, नयी दिल्ली-५।

'हिन्दू-सिख एकता"

किसी भी मत में इतना भाईचारा नहीं जितना हिन्दुओं और सिखों में है। सिख मत में ९९% हिन्दू हैं। पांचप्यारे सब जातियों से लेकर खालसा पंथ सजाया गया था। हिन्दुओं और सिखों के रीति-रिवाज जातियों से लेकर त्यौहार सब सांझे हैं। कर्म,पुनर्जन्म व मोक्ष को मानते हैं व दोनों एकेश्वर वादी हैं। एक भाई सिख तो दूसरा मोना। शादियां हिन्दू घरानों में होती हैं। नाखूनों से मांस की तरह हिन्दू सिख जुदा नहीं हो सकते। हिन्दी-पंजाबी दोनों संस्कृत से निकली हैं। सभी राम, कृष्ण को मानते हैं। सिखों के गुरु ग्रन्थ साहिब में कबीर, नामदेव, मुसलमान सूफियों-बाबा फरीद आदि सभी सन्तों की वाणी का संग्रह है। हिन्दू, सिख तीर्थस्थानों पर जाते हैं। हिन्दू भगवानों के नाम बार-बार ग्रन्थों में आते हैं। प्रह्लाद-गणिका, आदि का जगह-जगह वर्णन है। मुसलमान बादशाहों के जुल्मों का मुकाबला दोनों ने मिल कर दिया और जुल्मों से मुक्ति पायी। महाराजा रणजीतसिंह ने जब खालसा राज कायम किया तो हिन्दुओं ने पूरा साथ दिया। महाराजा के जरनैल दीवान चन्द, मोहकम सिंह, मोती राम, दीवान सौण मल—मूलराज ने पूरा साथ दिया। महाराजा रणजीत सिंह गौ रक्षा के बड़े हामी थे। उन्होंने सोमनाथ मन्दिर की रक्षा कराई। अमृतसर के हरी मन्दिर, बनारस तथा कांगड़ा के ज्वालामुखी के मन्दिरों में भी सोना दिया। नामधारी सिखों ने अमृतसर, आजनाला, मालेर कोटला में गौरक्षा के लिए जानें दीं। स्वतन्त्रता के लिए सिख कांग्रेस के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़े। सिखों ने पश्चिमी पंजाब से आकर पूर्वी पंजाब को हरा-भरा किया। गुरु के बाग संघर्ष में हिन्दू सिखों के साथ रहे। देश और हमारी जिन्दगी-मौत साझी है। विदेशी शक्तियों के इशारे पर हमें देश को आग नहीं लगानी चाहिए। मैकालिफ की दो कौमों की थ्यूरी हमें भुला देनी चाहिए। १९४७ के विभाजन से देश उबरा नहीं, देश का संगठन किसी प्रकार भी खण्डित नहीं होने देना है।

—सुबोधानन्द, दयानन्द मठ, दीनानगर

युवकों को ब्रह्मचर्य का पाठ

भारतीय युवा की स्थिति आज सड़क पर पड़े पत्थर की तरह है, जिसे कोई ठोकर मार कर जिधर ले जाए। आज प्रत्येक प्रकार की बुराइयां उनमें पनप रही हैं। आज कोई ठीक रास्ता दिखाने वाला नहीं है। वह पश्चिमी रंग में रंगता जा रहा है और अंग्रेजियत का भूत बुरी तरह सर पर सवार है। युवा-अपने देश के प्रति उदासीन है। राष्ट्र की सम्पत्ति को वह अपनी नहीं समझता। राष्ट्र-निर्माण में उसका सहयोग न के बराबर है। आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ कोई आकर्षण नहीं रहा।

आज युवा-वर्ग मदिरा, मांस आदि से अपने को भ्रष्ट कर रहा है। जिस स्वतन्त्र भारत में वह आजादी से सांस ले रहा है वह स्वतन्त्रता बलिदानों का परिणाम है हमें भटके युवा-वर्ग में समस्त बुराइयों के विरुद्ध एक ऐसी चेतना लानी है कि वह सुपथ पर आ जाए। हमें युवकों को ब्रह्मचर्य व देश भक्ति का पाठ पढ़ाना होगा। अन्धेरे से प्रकाश में लाना। युवा-वर्ग हमारे राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी है उसमें देशभक्ति का मंत्र फूंकना होगा। —संजीव आर्य 'मीनू' आर्य कुटीर, कावूगोयान पलवल (हरियाणा)-१२११०२

आर्य अनाथालय फिरोजपुर प्रगति के पथ पर

फिरोजपुर की गलियों में बिलखते अनाथ बालकों की दुर्दशा से द्रवित महर्षि दयानन्द ने आज से 108 वर्ष पूर्व जो पौधा रोपा था, आज विशाल वटवृक्ष बना वही आर्य अनाथालय न जाने कितने मासूम, असहाय अनाथों को अपनी सघन छाया से सुरक्षा दे रहा है। 20 अक्तूबर 1877 को हिन्दू सभा के संस्थापक रायसाहब मथुरादास के आग्रह पर महर्षि फिरोजपुर पधारे और उन्हें इस पुण्य कार्य हेतु प्रेरणा दी। रायसाहब ने तत्काल ऋषि के पवित्र करों से ही आश्रम की नींव रखवा दी। आज वह अनाथालय 240 एकड़ भूमि में चारदीवारी से घिरा अपनी पवित्रता और अनुशासन से हर आगन्तुक को प्रभावित करता है।

1905 में एक पारसी श्री देनजी हरजी मालगेन ने अपनी स्व० धर्मपत्नी की स्मृति में केन्द्रीय हाल का विशाल कक्ष निर्मित कराया। तभी फिरोजपुर के लाला बिहारीलाल रामसुख दास व लाला बिहारीलाल बैंकर ने भी बालिकाओं के आवासीय विशाल पक्के भवन का निर्माण कराया 1904 में श्री गण्डामल जी ने भी पक्की इमारत बनवायी। आज भी उनकी फर्म संस्था को दान देती रहती है। 1926 में लाला हरजीमल वकील ने अपनी स्व० धर्मपत्नी रामेश्वरी देवी की स्मृति में यज्ञशाला निर्मित कराय

विभाजन के बाद संस्था की स्थिति बिगड़ गई तब पंजाब सरकार सहित कई अन्य संस्थाएं भी आश्रम के अधिग्रहण को लालायित हो उठीं।

पर यह जानकारी पाते ही लाला खुशहाल चंद (आनन्दस्वामी सरस्वती) ने आर्य प्रादेशिक सभा को लिखा और सभा ने अविलंब इसे अपना संरक्षण दिया। सभा के ही आग्रह पर पंजाब सरकार ने संस्था के सुचारु संचालन हेतु सेवा-निवृत लाला दीवान जयकिशन नन्दा को श्रीमती चानन देवी नन्दा (सुपुत्री स्व० महात्मा हंसराज जी) सहित संस्था का मानद अधिष्ठाता नियुक्त किया। नन्दा-दम्पति ने 29 वर्षों तक अपनी सेवाएँ अनाथालय को देने के बाद पद से त्यागपत्र दिया। तदुपरान्त कई एक अधिष्ठाताओं की नियुक्तियों के बाद 1 जून 1981 को सभा के विशेष आग्रह पर प्रि० पी० डी० चौधरी की नियुक्ति हुई तबसे अनाथालय का कार्य द्रुत गति से स्वर्णिम भविष्य का सृजन कर रहा है।

आश्रम व्यवस्था इस समय आश्रम 100 अनाथ बालकों का नि:शुल्क लालन-पालन व शिक्षण कर रहा है। यह संख्या 150 करने के प्रयास जारी हैं। आश्रम की पूरी व्यवस्था गुरुकुल जैसी है। बालक 4.30 बजे प्रातः उठते हैं। प्रातः—सांय सन्ध्या, हवन यज्ञ होता है व अन्य सभी कार्य भी विधिवत् चलते हैं। गोशाला के पशुओं से प्राप्त दुग्ध ने बच्चों में वितरित होता है।

शिक्षा व्यवस्था— आश्रम की दयानन्द प्राइमरी स्कूल व दयानन्द मिडल स्कूल— तीन शिक्षण संस्थाएं चलती हैं जिसमे लगभग 1500 छात्र अध्ययन करते है। आश्रम के बालक—बालिकाएं मिडिल स्कूल तक आश्रम में ही शिक्षा पाते हैं। उच्चशिक्षा हेतु उन्हें बाहरी स्कूल-कालेजों में भेजा जाता है। यहां के प्रशिक्षित बालकों ने उच्चतम पदों पर भी नियुक्ति का कीर्तिमान बनाया है।

'आर्य जगत्' के १०० नए ग्राहक : अनुकरणीय पुरुषार्थ

श्री. पी. डी. चौधरी

श्रीमती संतोष चौधरी

आर्य अनाथालय फिरोजपुर के अधिष्ठाता और डी. ए. वी. फार्मेसी जालन्धर के अध्यक्ष प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री श्री पी० डी० चौधरी और उनकी पत्नी श्रीमती सन्तोष चौधरी ने अपने सम्मिलित प्रयत्न से 'आर्यजगत्' के १०० नए ग्राहक बनाकर भेजे हैं। इन ग्राहकों के वार्षिक शुल्क की नकद राशि पत्र के कार्यालय में प्राप्त हो चुकी है। इससे पहले वे ३०० ग्राहक और भेज चुके हैं।

श्री पी. डी. चौधरी जिस भी काम को संभालते हैं उसमें इतनी तन्मयता से जुट जाते हैं कि उसमें चार चाँद लग जाते हैं। जब से उन्होंने अनाथालय का और डी० ए० वी० फार्मेसी का कार्यभार संभाला है तबसे इन दोनों का कायापलट कर दिया है। ऐसे कर्मठ व्यक्ति ५-१० और मिल जाएं, तो 'आर्यजगत्' के २५,००० ग्राहक बनाने के लक्ष्य तक हम शीघ्र ही पहुंच सकते हैं।

स्वास्थ्य व भोजन—बच्चों के दैनिक स्वास्थ्य चेकअप के लिये डा० के० सी० अरोड़ा नियुक्त हैं तथा विशेष अवस्था में सिविल अस्पताल व फ्रांस न्यूटन अस्पताल में दिखाने की व्यवस्था है। बालकों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देकर आवश्यक खान-पान तथा समय-समय पर दानियों द्वारा दिए गए विशेष भोजन की भी व्यवस्था है।

कृषि-व्यवस्था— अनाथालय की ओर से 11-40 एकड़ में खेती की व्यवस्था है जिसमें 1983-84 की कुल आय 28374 रु० रही। इस आय-वृद्धि हेतु एक नया ट्यूबवेल परमावश्यक है।

नया चिकित्सालय— प्रतिष्ठित दानवीरों के सहयोग से चिकित्सालय का दीर्घकालीन अभाव भी लगभग पचास हजार रुपये की लागत से पूरा हो गया है जिसमे डा० के.सी. अरोड़ा, बी. ए. एम. एस. तीनों शिक्षण संस्थाओं के बच्चों के स्वास्थ्य पर दैनिक निगरानी रखते हैं। इस कार्य मे श्रीमती यशवती मल्ला, मुख्याध्यापिका लाल बहादुर शास्त्री गर्ल्ज हाई स्कूल लुधियाना ने अपनी सास श्रीमती लाजवन्ती की पुण्य-स्मृति में भरपूर योगदान किया। बच्चों को डी०ए० वी० फार्मेसी की औषधियां दी जाती हैं।

१९८३-८४ के उत्सव-पर्व : 1983-84 में अनाथालय ने निम्न पर्व व उत्सव आयोजित किये गए—

पारितोषिक वितरण, श्रावणी व रक्षाबन्धन, बैसाखी, महात्मा हंसराज दिवस, रामनवमी, स्वतंत्रा दिवस, गांधी जयन्ती, दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) गणराज्य दिवस, बसन्त पंचमी तथा ऋषि-बोधोत्सव (शिवरात्रि)

मनोरंजनव्यवस्था-बच्चों के लिय टी. वी. प्रदर्शन की व्यवस्था है। 20-25 नये तख्तपोश व दरियां खरीदी गयी हैं। फुटबाल, वालीबाल, क्रिकेट हाकी आदि खेलो की भी सम्यक व्यवस्था है।

इस प्रकार यह अनाथालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। वर्तमान अधिष्ठता ने कार्यभार ग्रहण करते ही आश्रम की जीर्णावस्था व आय के साधनों के स्रोतों की ओर तत्काल ध्यान दिया अपने व्यक्तिगत सम्पर्क से 1981-82 में उन्होने लगभग 3 लाख, 82-83 में 5 लाख व पंजाब की मौजूदा गंभीर समस्या के बावजूद ६ लाख रुपये का दान ८३-८४ में सुलभ कराया। इस आश्रम के सर्वांगीण विकास की दिशा में प्रो० वेदव्यास प्रधान, श्री दरबारी लाल उप प्रधान तथा सभा महामंत्री श्री रामनाथ सहगल का योगदान स्तुत्य रहा।

इस अनाथाल को सँवारने में जिन मनीषियों का योगदान रहा उनकी प्रशंसनीय परम्परा रही है। लाला मथुरादास जी ने संस्था नींव डाली व आजीवन मानद मंत्री रहे। इसी पद पर २२ वर्षों तक सेवाएँ अर्पितकर्त्ता रायसाहब कटूराम की सेवाएँ सदा साभार याद की जाएँगी। नन्दा दम्पति का २१ वर्षों के लगभग मानद अधिष्ठाता अधिष्ठात्री के रूप में योगदान अमूल्य था। इसके अतिरिक्त भी अनेक विभूतियों ने अपने-अपने तरीके से आश्रम की उन्निति में योग दिया है।

योग्य वर चाहिए

(१) २२ वर्षीय, एम० ए० इगलिश, आयुर्वेदिक चतुर्थ वर्ष में होम साइन्स पास, गृह कार्य में दक्ष, गौरवर्ण, ५ फुट १॥ इंच कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है। पता—जे० सी० गांधी, के-६ ए, आदर्श नगर, जयपुर।

(२) २६ वर्षीय, बी० एस-सी० पास, ५ फुट १ इंच, रंग सांवला, इंगलिश टाइपिस्ट, गृह कार्य में दक्ष, कन्या के लिए योग्य वर चाहिए।
पता—अ नलसेन गांधी, प्लाट नं० ५८ बर्गीज कालोनी, जयपुर-४

शतपथ ब्राह्मण का भाष्य चाहिए

मुझे शतपथ ब्राह्मण के पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय रचित हिन्दी-भाष्य, तीनों भागों की आवश्यकता है। यदि किन्हीं सज्जन के पास हों तथा उनके काम न आते हों तो कृपया सूचित करें। मैं मूल्य देकर प्राप्त करने का इच्छुक हूं।

—रामनाथ वेदालंकार, १/११६ फूलबाग, पंतनगर (नैनीताल)

देशद्रोहियो का सामाजिक बहिष्कार हो

बम्बई में आर्यसमाज की शोक सभा में प्रस्ताव

बम्बई विश्व की प्रथम आर्यसमाज काकडवाडी के तत्वावधान मे महानगर की समस्त आर्य समाजो की शोक सभा मे राष्ट्रभक्त व जन-जन की माननीया श्रीमती गांधी की विश्वासघात पूर्ण हत्या पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। सभा ने आवश्यकता होने पर देश की अखण्डता की रक्षा मे सब तरह के बलिदान के लिए तैयार रहने का सकल्प किया। देशद्रोहियो के सामाजिक बहिष्कार की अपील की। —राजेन्द्रनाथ पाडे, मत्री।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के तत्वावधान मे आयोजित एक सार्वजनिक शोकसभा मे श्रीमती इन्दिरा गाधी की बर्बर हत्या पर महामत्री कै० देवरत्न आर्य ने कहा—जहा देवियां सम्मानित हैं,—वहीं देवता रहते हैं। वह परिवार देश, जाति, धर्म नष्ट हो जाता है जहा देवियां अपमानित होती हैं। एक राष्ट्भक्त नारी के हत्यारो ने अपने वीरता का इतिहास ही कलकित कर डाला कैप्टिन देवरत्न आर्य, मत्री।

बरमिंघम में हरिकृष्ण दत्ता दिवगत

बरमिंघम 14 सितम्बर को श्री दत्ता पीछे से आती हुई मोटर की लपेट में आ गये तो उन्हें गहरी चोटें लगी, वे बेहोश हो गये। उन्हें तत्काल अस्पताल में प्रविष्ट करवाया गया। उन की पूरी चिकित्सा व सेवा-- सुश्रूषा की गई किन्तु उनकी हालत नही सुधरी और 24 सितम्बर को 58 वर्ष की आयु मे उनका स्वर्गवास हो गया।

उनके घर न० 73 ग्रोव लेन (हैण्ड्सवर्थ बरमिंघम इंग्लैड) के द्वार अतिथियो व सन्यासियो के लिये सदा खुले रहते। जब कभी मासिक सत्सग के लिये स्कूल का कमरा सुलभ न होता तो उनके घर पर सत्सग लगता। धनसग्रह के लिये झोली फैलानी हो, पिकनिक का प्रबन्ध करना हो गायत्री महायज्ञ का आयोजन करना हो, ऋषि लगर की व्यवस्था करनी हो, पडाल सजाना हो या किसी दीन दु खी की सहायता करनी हो, तो वे इसके लिये सदा तैयार मिलते।

उत्सवो और सत्सगो मे उन के भजनो या कविताओ को जनता मत्रमुग्ध हो कर सुनती थी।

जो दान-दक्षिणा मिलती वह आर्यसमाज को भेंट कर देते। वे हिंदी भाषा के पुजारी थे। आर्य समाज की ओर से जब हिन्दी श्रेणिया प्रारम्भ की गईं तो आवश्यकता पडने पर उन के परिवार के सभी सदस्य बच्चों को हिन्दी पढाते।

अपनी वृद्धा माता जी को स्वय भारत से वे यहा ले आये। सारा परिवार मासिक सत्सगो में नियमपूर्वक उपस्थित होता और सारे कार्यक्रम मे उत्साह से भाग लेता।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् प्रादेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री गोवर्धनलाल दत्त हरिकृष्ण जी के पूर्वजो मे थे। दत्त परिवार के सद्गुण उन्हे विरासत मे मिले थे।

उनके निधन से यहा के आर्यसमाज को असह्य क्षति पहुची है।

—धर्मेन्द्रनाथ वेदालकार

देश की राजनीतिक

(पृष्ठ 7 का शेष)

(४) ऐसी व्यवस्था की जाए जिससे कि सम्पत्ति कुछ थोडे लोगों के हाथो में संचित न हो सके। सम्पत्ति के परिग्रह को राज्य सस्था द्वारा मर्यादित व नियन्त्रित किया जाए।

(५) किसान आदि श्रमिक वर्ग के हितों की रक्षा करना राज्य सस्था का कर्तव्य हो, क्योंकि वे ही राजाओ की राजा होती हैं।

(६) सरकारी सेवा में ली जाने वाली भरती के लिए परीक्षाओं का माध्यम केवल भारतीय भाषाए ही हो।

(७) खेती, पशुपालन उद्योग आदि आर्थिक उत्पादन के सभी क्षेत्रो मे विज्ञान का उपयोग किया जाए और वैज्ञानिक उन्नति पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

हमे विश्वास है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यो को दृष्टि मे रखकर देश की भावी प्रगति के लिए जो ये सुझाव दिये गये हैं उन द्वारा एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा सकता है जिसमे सब को उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा मनुष्यो की सामाजिक स्थिति और आर्थिक आमदनी मे जो भेद होगा, उसका कारण उनकी योग्यता का अन्तर ही होगा और सम्पत्ति पर व्यक्तिगतस्वामित्व रहते हुए भी उसके द्वारा दूसरों का शोषण नही किया जा सकेगा और उसका उपयोग सब के हित के लिए ही होगा।

आर्यसभा किसी एक धर्म, सम्प्रदाय, जाति या वर्ग की सस्था नही है। वे सभी लोग जो समाज सगठन तथा राजकीय नीतियों के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों के समर्थक हों, इसके सदस्य बन सकते हैं। आइये, हम अपने देश के एक महान् प्रगतिशील विचारक के मन्तव्यों के अनुसार अपने देश की चौमुखी उन्नति और न्याय पर आधारित समाज की रचना में प्रवृत हों।

आर्यसभा ने निश्चय किया है कि आगामी आम चुनाव मे एक पृथक राजनीतिक मच या पार्टी के रूप में भाग लिया जाए। जिस नये दल का आर्य परिषद् द्वारा बीजारोपण किया गया है, हमे विश्वास है, कि शीघ्र ही वह विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेगा और भारत के सार्वजनिक जीवन में उसके महत्व में निरन्तर वृद्धि होती जाएगी।

महेन्द्रगढ़ और अलीगढ़ से आर्यसभा के प्रत्याशी

नई दिल्ली नवगठित आर्य सभा के सयोजक स्वामी अग्निवेश ने बताया कि हरियाणा के महेन्द्रगढ़ क्षेत्र से आर्य सभा के वरिष्ट एव सक्रिय कार्य-कर्त्ता महाशय रामचन्द्र कृषिमन्त्री राव बीरेन्द्र के मुकाबले मे खडे किये गये है।

इसी प्रकार अलीगढ ससदीय क्षेत्र से उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान वेदों के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य विश्वबन्धु को आर्यसभा की ओर से खडा किया गया है। पहले भी इस क्षेत्र से शिवकुमार जी शास्त्री आदि आर्य नेता विजयी होते रहे हैं। उम्मीदवारों की घोषणा शीघ्र होने वाली है।

कश्यपदेव वानप्रस्थी स्वामी केवलानन्द बने

पुष्कर (राजस्थान) वैदिक सत्सग आश्रम पुष्कर के प्रबन्धक श्री कश्यपदेव वानप्रस्थी ने गत ऋषि मेले पर स्वामी केवलानन्द सरस्वती के नाम से चतुर्थ आश्रम (सन्यास) ग्रहण किया है। कुछ दिनो तक चिन्तन साधना हेतु आप महर्षि दयानन्द स्मृति मदिर रात, नाडा मार्ग जोधपुर (जहाँ महर्षि को विष दिय गया) मे निवास करेंगे।

—जम्मू महात्मा रमीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम ऊधमपुर ने श्रीमती गांधी की अमानुषिक हत्या पर शोक श्रद्धाजलि चढ़ाकर परमपिता से आत्मा की सद्गति तथा नये प्रधानमत्री की सफलता की कामना की।

प्रबध समिति निर्वाचित

सोनीपत (हरियाणा) शान्तिनगर समाज की प्रबंध समिति के गठन में सरक्षक—श्री वैद्य जयकृष्ण दास, प्रधान श्री रामलाल मदान, मत्री—हरिचन्द स्नेही एव कोषाध्यक्ष श्री मेहरचन्द निर्वाचित हुए।

गुरुकुल शिक्षा

(पृष्ठ 6 का शेष)

यह है कि बोर्डिंग हाउस में छात्र जो कुछ खाना चाहे खा सकते हैं। मांस तथा मसालों में किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं। अमीर अमीरी खाना खाये, गरीब गरीबी खाना। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियो तथा गुरुओं का एक ही बोर्डिंगहाउस में खाना आवश्यक नहीं। गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति मे जहा खाने में सात्विकता आवश्यक है, वहा कुल की भावना होने के कारण गुरु-शिष्य के एक-साथ भोजन और भी आवश्यक है अन्यथा गुरु-शिष्य का एक-साथ बोलना 'सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु"—यह सब निरर्थक हो जाता है।

आश्रम व्यवस्था में सब ब्रह्मचारियों के एक-साथ रहने के दो मुख्य लाभ हैं। पहला लाभ यह कि सबकी दिनचर्या समान-सूत्र में बंध जाती है। सब समय पर सोते जागते, स्नान-सध्या, उपासना, व्यायाम आदि करते हैं। आवश्यक दिनचर्या में से किसी आइटम को छोड़ते भी नहीं। गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की यह देन जीवन को नियन्त्रित रखने में बहुत सहायक है। आश्रम-व्यवस्था का दूसरा लाभ यह है कि एक साथ रहने से उच्च-नीच का भाव नही रहता, सब समान रहते हैं, भाई-भाई की तरह। सार्वजनिक जीवन के लिए यह भावना अत्यन्त आवश्यक है। आज हमारा समाज जात-पात में बटा है। कोई ऊचा है, कोई नीची जात का। हम चुनाव भी इसी के आधार पर लडते हैं। निम्न कही जाने वाली जातियों के उद्धार के लिये माइनोरिटी कमीशन और पार्लियामेंट अधिनियम बने हुए हैं जिससे ऊंच-नीच का भेद मिटने के स्थान में पुष्ट होता जा रहा है। जब निम्न जाति का होने के कारण कुछ अधिकार विशेष मिलने लगें तब जाति-भेद कैसे मिट सकता है? जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिये शिक्षा-पद्धति में आश्रम-व्यवस्था को लाना अत्यावश्यक है।

[आगामी अंक में समाप्य]

'तूफान के दौर से—पंजाब' पुस्तक के विमोचन की चित्रमय झांकी

उत्तर प्रदेश के आबकारी मंत्री और दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो० वासुदेव सिंह पुस्तक का विमोचन करते हुए। पीछे मंच पर श्री रामगोपाल शालवाले और श्री श्यामलाल यादव भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

श्री राजेन्द्र माथुर, सम्पादक नवभारत टाइम्स भाषण देते हुए

श्री प्रभाष जोशी, सम्पादक जनसत्ता, भाषण देते हुए

विमोचन समारोह में उपस्थित—दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री श्री गोपाल प्रसाद व्यास, प्रसिद्ध पत्रकार श्री खुशवन्त सिंह, श्री राजेन्द्र माथुर, प्रो० वासुदेव सिंह, लोकसभा उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल यादव, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, दिल्ली राज्य के शिक्षा सचिव श्री कुलानन्द भारतीय

श्री के० नरेन्द्र, सम्पादक प्रताप और वीर अर्जुन, भाषण देते हुए

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् श्री सत्यकेतु विद्यालंकार, भाषण देते हुए

(विवरण आगामी अंक मे पढ़िये)

सिखों का धर्म परिवर्तन रुका

कानपुर (उ०प्र०) हाल के हिंसक दंगों मे नवाबगंज, छावनी क्षेत्र में काफी बड़ी संख्या में मुसलमानों के यहां शरण लेने वाले सिख परिवार, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य के प्रयास से मुसलमान होने से बच गए। कर्फ्यू के दौरान उन्हें मस्जिद मे ले जाकर मुसलमान बनाया जा रहा था।

श्री आर्य ने उन्हें षड्यंत्रकारियों के फन्दे से निकाल कर समाज मंदिर मे शरण दी तथा उन्हें सब प्रकार की सहायता की।

प्रान्तीय आर्यवीर दल सम्मेलन

गुड़गांव: १ और २ दिसम्बर को सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में प्रान्तीय आर्यवीर सम्मेलन मनाया जाएगा।

दिसम्बर में ऋषि निर्वाण शताब्दी

नयी दिल्ली: आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली दिसंबर मे ऋषि निर्वाण शताब्दी मनायेगी। प्रथम दिन शोभायात्रा व अन्तिम दिन के कार्यक्रम सामूहिक रूप से केंद्रीय स्थानों पर होगे। घर-घर संदेश पहुंचाने के लिये पुनर्वास कालोनियों और दूरस्थ ग्रामों व पिछडी बस्तियों में वेद प्रचार, उपदेश व ट्रैक्ट वितरण की प्रभावी योजना है। प्रधान श्री सूर्यदेव ने अभिनव आयोजन की सफलता के लिये प्रदेश की सभी समाजो, महिला समाजों, डी० ए० वी० व अन्य संस्थाओं व दानियों से तन-मन-धन से सहयोग की अपील की है।

वार्षिक चुनाव

नयी दिल्ली: बसंत बिहार के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान—श्री के० आर० हांडा व कोषाध्यक्ष—श्री एस० एस० सेठ चुने गये।

बोकारो में शोक

बोकारो (बिहार): डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल की एक शोक सभा में अल्प संख्यकों की संरक्षक व एशिया-ज्योति श्रीमती गाधी की नृशंस हत्या व बाद के नरसंहार पर गहरा शोक व्यक्त किया गया और राष्ट्रीय एकता हेतु कार्य का संकल्प किया गया।

होशियारपुर (पंजाब): आर्यसमाज सिविल लाइन्स ने श्रीमती गांधी की हत्या को बर्बरता बताकर तीव्र भर्त्सना की और दिवगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की।

ब्यावर (राजस्थान): आर्यसमाज ने प्रधानमंत्री श्रीमती गाधी की नृशंस हत्या की तीव्र भर्त्सना व गहरा शोक व्यक्त किया व परमात्मा से शोकसंतप्त देशवासियो व परिजनो को यह बिछोह सहन करने की शक्ति देने हेतु प्रार्थना की।

नयी दिल्ली: मोतीबाग आर्यसमाज ने लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या की भर्त्सना की तथा परमात्मा से यह दारुण दुख झेलने की शक्ति देने की कामना की।

मध्य प्रदेश

रायपुर (म०प्र०) आर्यसमाज धमतरी ने श्रीमती गाधी की कायरतापूर्ण हत्या पर गहरा शोक व क्षोभ व्यक्त किया। दिवगत आत्मा की शांति व श्री राजीव गाधी की सफलता हेतु प्रभु से कामना की गयी।

आर्य समाज गरोठ (म०प्र०) ने प्रभु से श्रीमती गाधी की दिवगत आत्मा की शांति हेतु कामना करते हुए मौन श्रद्धांजलि चढाई।

वेद प्रचार अभियान

बुलन्दशहर (उ०प्र०) आर्यपुरा विरोरा समाज ने महाशय दरियाव सिंह भजनोपदेशक द्वारा त्रिदिवसीय वेद-प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया। भजनों द्वारा महर्षि की जीवनी तथा वैदिक मान्यताओं का प्रस्तुती कारण अत्यत प्रभावी रहा।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रीपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सी० (४०१)
२ दिसम्बर, १९८४

सम्मिलित रूप से ...ए बस यात्रा सुविधाजनक

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा की ओर से स्वामी दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में १६, १७, १८ फरवरी ८५ को ऋषि मेला मनाया जा रहा है। मेरी इच्छा है कि भिन्न-भिन्न प्रदेशों से एवं भारत की भिन्न-भिन्न आर्य समाजें, आर्य संस्थाएं सम्मिलित रूप से ऋषि मेले पर अपनी-अपनी बसें करके टंकारा पहुंचे तो उन्हें इससे अधिक सुविधा होगी।

आजकल सारे भारत की इस प्रकार यात्रा करने में बहुत सुविधा होती है। व्यय भी उतना ही होता है जितना कि रेल गाड़ी में होता है। पिछले वर्ष भी दिल्ली, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात की एवं अन्य प्रदेशों की आर्य समाजें तथा आर्य संस्थाएं अपनी-अपनी बसें करके टंकारा पहुंची थीं। वे सब इन बस-यात्राओं से बहुत सन्तुष्ट थे। —रामनाथ सहगल मंत्री, टंकारा ट्रस्ट।

रेल से टंकारा जाने के इच्छुक यात्रियों से

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से टंकारा में १६-१७,१८ फरवरी ८५ को "ऋषि मेला" मनाया जा रहा है। जो लोग सीधा टंकारा जाना चाहें और टंकारा से सीधा दिल्ली वापस आना चाहें उनके लिए ट्रेन में सीटें सुरक्षित कराने का प्रबन्ध किया गया है। कुछ सीटें १३-२-८५ को रात की गाडी से जो कि १५-२-८५ को प्रातःकाल वहां पहुंच जायेगी और कुछ सीटें १४-२-८५ की रात की गाड़ी से जो १६-२-८५ को प्रातः वहां पहुच जायेगी, आरक्षित की जा रही हैं। इसी प्रकार वापिस आने के लिए १८-२-८५ एवं १९-२-८५ की रात की ट्रेन का प्रबन्ध किया जा रहा है। ये स्लीपिंग सीटें होंगी। आने जाने का मार्ग व्यय २००/- रु० होगा। जो व्यक्ति वहां जाना चाहें वे अपना नाम, पता, आयु लिखकर टंकारा सूचित कर आरक्षण सूची में अपना नाम करवा सकते है। जो बसों द्वारा लम्बी यात्रा नहीं कर सकते वे इसका लाभ उठा सकते है। यात्रियों के नाम, पते, आयु एवं २००/-रु० की राशि हमें १५ जनवरी. ८५ तक अवश्य आ जानी चाहिए। इसके पश्चात् सीट सुरक्षित कराना कठिन होगा।—रामनाथ सहगल सभा मंत्री।

टंकारा सम्बन्धी विज्ञप्ति

४ नवम्बर के 'आर्य जगत्' में टंकारा में बसें ले जाने के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति गलत ढंग से छप गई थी। टंकारा में ऋषि मेला १६ से १८ फरवरी, ८५ को ही होगा। इस बार रजत जयन्ती होने के कारण अभी से मेले की तैयारी की जा रही है।—रामनाथ सहगल

यजुर्वेद का उर्दू भाष्य

मैने माननीय श्री पं० आशुराम जी द्वारा प्रकाशित यजुर्वेद के उर्दू अनुवाद को पढा तो गद्‌गद प्रसन्न हुआ। बहुत बड़े परिश्रम पूर्वक यह कार्य सिद्ध किया जा रहा है। निश्चित है कि इससे उर्दू समाज को अपूर्व लाभ पहुंचेगा। भारत भर की उर्दू विज्ञ जनता इससे लाभान्वित होगी। इस समय मुसलिम जनता वेद को जानना चाह रही है। निश्चित उनकी प्यास के शमनार्थ यह उर्दू भाष्य अमृत का कार्य करेगा. ऐसा विश्वास है।

शान्ति प्रकाश (शास्त्रार्थ महारथी)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज, मण्डी (हि॰ प्र.) को सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। आयु, योग्यता, अनुभव और कम से कम स्वीकार्य वेतन लिखे—अमृत लाल, मन्त्री, आर्य समाज, मण्डी (हि॰ प्र.)

MATRIMONIAL

Wanted a slim, beautiful preferaly technical or profesional match for a young fair complexioned bandsome boy 27 year, height 5'-7", Graduate in Mechanical Engineering. Working presently in a Factory getting Rs, 2,000/-P.M, Proceeding abroad shortly. Interested genuine party may contact immediate at home address:—B-5/195, Safdarjung Enclave, New Delhi-110029.

प्रकाशकों से निवेदन

ह्यूस्टन (अमेरिका) के वयोवृद्ध प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री रामचन्द्र जी महाजन जो कि कई वर्षों से अमेरिका में रह रहे हैं और आर्य समाज का खूब प्रचार करते हैं उन्हें निम्नलिखित किताबों की अति शीघ्र आवश्यकता है - जिन प्रकाशकों के पास ये पुस्तके हों, कृपया मूल्य सहित एक पत्र हमें इस पते पर लिखें—मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

पुस्तकों की सूची इस प्रकार है—

BOOKS REQUIREMENT (R.C.)

S. No.	*Name of book*	*Quantity regd.*
1.	Katha Upanishad by Ganga Ram	4 Nos.
2.	Introduction to the Vedas translated by P. Ghasi Ram ..	2 Nos.
3.	Atharva Veda Pt. I translated by Acharya Vaidya Nath	1 No.
4.	do- Pt. II -do-	1 No.
5.	Nine Upanishads translated by Prem Nath Chadha	4 Nos.
6.	Life & teachings of Swami Dayanand by Chaju Singh (D. N. Sansthan)	4 Nos.
7.	वाल्मीकि रामायण	3 Nos.
8.	Christianity and Vedas -do-	3 Nos.
9.	A short life story of Swami Dayanand -do-	3 Nos.
10.	Philosophy of Dayanand-Ved Prakashan Mandir Allahabad	1 No.
11.	जीवात्मा	1 No.
12.	अद्वैतवाद	
13.	Vedic Culture -do-	1 No.
14.	संस्कार प्रकाश -do-	1 No.
15.	जन्तरी-1985 by Pt. Devi Dayal or any other.	1 No.
16.	Calendar 1985 and with Vikrami dates.	1 No.
17.	Vedic Jeewan Padhati in English by Prof. Rattan Chand Sharma	3 Nos.
18.	Vedas -do-	6 Nos.
19.	Bible in the balance- (D.N. Sansthan)	[illegible]

रात्रि विश्राम देकर......

(पृष्ठ २ का शेष)

निष्कर्ष—केवल इन्द्र ही सर्वसमर्थ और परमैश्वर्यवान् होने से हमारे आन्तर शत्रुओं, दोषों और विघ्नों का नाश करके हमारी कामनाओं को बुद्धिमत्ता के साथ पूरा कर सकता है, इसलिये उसी की स्तुति और उसी से प्रार्थना करनी चाहिये।

उसका स्तुति गान ऐसा करना चाहिये, जिसे वह प्रीतिपूर्वक सुनता और सेवन करता हो? ऐसा स्तुति गान वह होता है, जिसमें स्तोता स्तुति के अनुरूप बनने का प्रयत्न करता है और तदनुकूल कार्य करते हुए अपने आचरण को सुधारता है।

वाणी और कर्म में एक सा रहने वाले व्यक्ति की स्तुति को ही वह सर्वज्ञ प्रतिपूर्वक सेवन करके, पूरा करता है—सार्थक बनता है। योग दर्शन के अर्थ भावना सहित जप का भी यही तात्पर्य है।

विशेष— उपरिलिखित स्थापना की ही पुष्टि इस मन्त्र के ऋषि शब्द का अर्थ करता है।

ऋषि का अर्थ है [illegible] देखे और समझे हुए भाव के अनुसार आचरण कर्ता।

वृत्रहन्तम और त्रसदस्यु शब्द समानार्थक है। वृत्रहन्तम का अर्थ है शत्रुओं और विघ्नों का नाश करने वालों में श्रेष्ठ और त्रसदस्यु का अर्थ है—दस्यु जिससे उद्विग्न रहते हैं। इस प्रकार जो भगवान की वृत्रहन्तम् रूप में स्तुति और प्रार्थना करता है, उसे स्वयं भी वैसा बनने का प्रयत्न करते हुए त्रसदस्यु बनना चाहिए।

इसी दृष्टि से वेदार्थ का समझने के लिये ऋषिज्ञान आवश्यक माना गया है। 'मन्त्राणामार्षेयछन्दो दैवतविद्। अध्यापयनयाजयन्ता श्रेयोऽधिगच्छति।"

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ भी यही संकेत देता है कि मनुष्य जो प्रार्थना करे, उस प्रार्थना को पूर्ण करने वाले रूप में ही स्तुति करनी चाहिये, और स्तुति के अनुरूप बनने का प्रयत्न करते हुए विराट्-विशेष रूप से देदीप्यमान—बनना चाहिये।

पता—522, ईश्वरभवन खारी बावली, दिल्ली 6

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र — ओ३म् — कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | आजीवन सदस्य-२०१ रु०
विदेश में २० पौ० या ५० डालर | इस अंक का मूल्य—५० पैसे
वर्ष ४८, अंक ५० रविवार, ९ दिसम्बर १९८४ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६०
दूरभाष : ३४३७१८ | पौष कृष्णा १, २०४१ वि०

बम्बई में ५००० किलो गोमांस पकड़ा गया

हिन्दुओं को भड़का कर साम्प्रदायिक उपद्रव की कोशिश

बम्बई २३, नवम्बर। किसी अज्ञात सूत्र से सूचना पाकर अतिरिक्त प्रशासक डी० एस० सोमन के नेतृत्व मे नगराधिकारियों ने दो म्युनिस्पल गाड़ियो और एक प्राइवेट ट्रक पर छापा मार कर गैरकानूनी ढंग से मारी गई गायों का ५००० किलो गोमांस पकड़ा। इस गोमांस की कीमत लगभग एक लाख रु० है। यह गोमांस बायकुला में २२ नवम्बर को पकड़ा गया।

श्री सोमन ने बताया कि हमें यह सूचना मिली थी कि कुछ सिविक ड्राइवर अनधिकृत मांस को गैरकानूनी ढंग से बांदरा और उसके आसपास के इलाके से न्यू बाम्बे तक ढोने में लगे हैं।

बायकुला के पुल पर उन ट्रकों का पीछा किया गया। प्राइवेट वाहन भिंडी बाजार के एस. मुनीर हुसेन का था। वह भी बायकुला में ही पकड़ा गया। इस गोमांस पर नगरपालिका की मोहर नहीं थी, वह ताजा मांस था।

श्री सोमन ने बताया कि चारों ड्राइवरों गणपत सोनवने, के वाई० आगा, अब्दुल एच० खान और बीटू साठ्य के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जायेगी।

इस समाचार की फोटो प्रति यहां दी जा रही है। इस सम्बन्ध में आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से वर्तमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को निम्न पत्र भेजा गया है—

प्रधानमंत्री को पत्र

सम्पूर्ण भारत में गोहत्या पर प्रतिबन्ध होने पर भी बम्बई महानगरी में विधर्मियों द्वारा खुलेआम अवैधानिक रूप से घर की छतों पर गोहत्या का व्यापार चलाकर हिन्दुओं की भावनाओं को भड़काने की कोशिश की जा रही है। माननीया स्वर्गीया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने कहा था— "गाय इस देश की उन्नति का महत्वपूर्ण अंग है, इसकी हत्या करने वालों को कड़ी सजा दी जाएगी।"

'डेली सैटरडे' नामक अंग्रेजी समाचारपत्र में दिनांक २४-११-८४ को एक सामाचार प्रकाशित हुआ है-- कि ५००० किलो गोमांस अवैधानिक रूप से काट कर म्युनिसिपल कारपोरेशन के एक ट्रक में भर कर सप्लाई के लिए ले जाते हुए पकड़ा गया। इस समाचार पत्र की फोटो कापी पत्र के साथ संलग्न है। आपसे प्रार्थना है कि धर्म, समाज और राष्ट्र विरोधी इन विघटनकारी गो हत्यारे तत्वों के प्रति कड़ी से कड़ी कार्यवाही का आदेश देकर स्थानीय क्षुब्ध जनमानस की भावनाओं को विस्फोटक होने से पूर्व शान्त करने का प्रयत्न करें।

कृपया आवश्यक कार्यवाही से सूचित करने की कृपा करें अन्यथा आगामी चुनावों पर भी इसका प्रभाव शासक दल पर पड़ सकता है।

इसी सम्बन्ध मे महात्मा नारायण स्वामी की अध्यक्षता में विशाल जनसभा में पारित एक प्रस्ताव मे इस घटना पर खेद प्रकट करते हुए भारत के प्रधानमंत्री से कहा गया है कि प्रधानमंत्री पद का कार्यभार सम्भालते ही भारत को नष्ट करने वाली भड़कती हुई हिंसक अग्नि को आपने कुछ ही समय में समाप्त कर भारतीयों को सुरक्षा का विश्वास दिलाया था। भारत की प्राणस्वरूप गोमाता की सुरक्षा के लिए भी आप कठोर व्यवस्था करे। हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर इसे सर्वोच्च सुरक्षित स्थान दे तथा बम्बई में होने वाली घटना के अपराधियों को पकड़ा जाए और उन्हे कठोर से कठोर सजा दी जाए ताकि ऐसे जघन्य अपराध पुनः इस देश में न हो सके।

—कैप्टिन देवरत्न आर्य, महामंत्री

THE DAILY Saturday November 24 1984 7

5,000 kgs seized at Byculla after illegal slaughter...

BEEF BOOTY

By The Daily Staff

BOMBAY, Nov 23

FOLLOWING an anonymous tip off, civic squads headed by additional administrator D S Soman raided two municipal vehicles and a private van carrying illegally slaughtered carcasses at Byculla on Nov 22 and recovered 5,000 kgs of beef costing about Rs. one lakh

Soman told THE DAILY, that they had been given to understand that certain civic drivers were indulging in illegal transportation of unauthorised meat from Bandra and surrounding areas to New Bombay, while on their way back to Deonar Abattoir

On Wednesday, the suspected civic vehicles were followed and intercepted at Byculla fly-over. The private van owned by S Munir Hussein was chased from Bhendi Bazar and also intercepted at Byculla. The seized meat didn't bear the municipal stamp, as is the practice and was not fresh

Soman stated that strict action would be taken against the four drivers Ganapat Sonawane, K. Y. Aga Abdul H Khan and Biku Sathya who were involved in the fraud

प्रकाशकर्ता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

प्रभु महिमा

—रामचन्द्र थापर—

भारतवर्ष अब तक दुनिया मे आध्यात्मिकता का स्रोत माना जाता रहा है। किन्तु दु.ख से कहना पड़ता है कि आज का युवक वर्ग तथा पश्चिमी विचारो से प्रभावित लोग पूर्णतया नास्तिक नहीं तो भगवान की ओर से उदासीन अवश्य हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण देश की धर्मनिरपेक्षता की नीति है जिससे विद्यालयो मे धार्मिक और नैतिक शिक्षा नगण्य सी हो गई है, तथा रेडियो और टेलीविजन के प्रोग्राम नई पीढ़ी को विषयासक्त और भौतिकवादी बना रहे है। यदि बौद्धिक और शारीरक (Intelle-uctael and Physical शिक्षा की पृष्ठ) भूमि आध्यात्मिक न बनाई गई तो आगामी पीढ़ियाँ अधिक नास्तिक और अनैतिक बनती जायेगी। यह भगवान का डर ही है जो मनुष्य को पापाचरण से बचाता रहता है।

मनुष्य की स्वमाविक वृत्ति है कि जब तक स्वास्थ्य और आर्थिक समृद्धि बनी रहती है तबतक वह भगवान की आवश्य-कता अनुभव नही करता। जब कोई गंभीर रोग लग जाये, कोई विकट सकट आ घेरे या धनहीनता सताने लगे, तथा मनुष्य अपनी और अपने बन्धुओं व मित्रों के सामर्थ्य से कष्ट-निवारण न कर सके, तब प्रभु की शरण ढूढता है। कवि ने अति प्रासगिक उदाहरण दिया है :

दुखो से अगर
चोट खाई न होती।
जो गम की घटा
सिर पै छाई न होती।
जो सुख-चैन मिलता
सदामा को घर में।
तो फिर याद मोहन की
आई न होती ।।

महात्मा गाधी के जीवन का एक संस्मरण है कि वह समुद्री जहाज से अफरीका जा रहे थे कि नैटाल से चार मील पहले प्रचण्ड अन्धड़ आ गया। जहाज इतना डोलने लगा कि किसी क्षण भी उसके डूबने की आशंका हो गई। तब खाना-पीना और हंसना-खेलना भूल गया और सब यात्री अपने अपने विश्वास के अनुसार भगवान् का स्मरण करने लग गये। "तेरी इच्छा पूर्ण हो" यही शब्द सब के लबों पर आ गये। 24 घन्टे यही स्थिति रही। जब कप्तान ने घोषणा कि अन्धड टल गया है तब यह सुनते ही भगवान का नाम भी भूल गया और खाना-पीना, राग-रंग फिर शुरू हो गया। कवि ने ठीक कहा है :

सुख के माथे सिल पड़े।
जो प्रभु नाम बिसराय ।।
बलिहारी ता दुःख की।
जो पल-पल नाम जपाय ।।
दो बातन को भूल मत।
जो चाहे कल्याण ।।
नारायण इक मौत को।
दूजे श्री भगवान ।।

भौतिकवादी लोगों का भगवान की हस्ती अस्वीकार करने में सामान्य-तर्क यह होता है कि चूंकि वह दिखाई नही देता अत: है ही नही और अन्धविश्वासियों की यह भ्रममूलक कल्पना है। किन्तु ऐसा कहते हुए वे भूले रहते हैं कि कई और भी न दिखाई देने वाली वस्तुएं है जिनके अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता। यथा, अपना आत्मा और मन, बुद्धि, शरीर की पीड़ा, सूर्य और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति, बल्ब मे बिजली, वायु का चलना इत्यादि। जैसे विज्ञान के सिद्धान्त विज्ञान का विद्यार्थी ही समझ सकता है इसी तरह भगवान भी योग विद्या द्वारा ही हृदय-मन्दिर मे अनुभव किया जा सकता है। वह बाह्य चक्षुओं से देखने की चीज नही।

यह तथ्य सर्वमान्य है कि कोई भी जड़ पदार्थ किंचित भी गति नही कर सकता जबतक उसे कोई चेतन शक्ति गति देने वाली न हो। सकल जगत में एक क्रम, नियम और व्यवस्था दिखाई देती है जो किसी चैतन्य शक्ति की कल्पना और योजना से ही सभव है।

जड़ सृष्टि की रचना

(1) हमारे सौर-मण्डल में 11 ग्रह और उपग्रह हैं। इस मण्डल के विस्तार का अनुमान इस तथ्य से लग सकता है कि प्लूटो ग्रह, जो सूर्य से 55,650 करोड़ कि० मीटर दूर है, 249 वर्षों मे सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगाता है। यह सौर-मण्डल उस विशाल नारकीय निकाय (Stellar System) का-जिसे गैलेक्सी वा आकाशगंगा कहते हैं-एक छोटा सा अंश है। इस आकाश गंगा में कई हमारे सूर्य जितने बड़े सितारे है और अनगिनत ऐसी और आकाश-गगाएं हैं। २०० इंच लम्बी दूरबीन से 1983 तक जो सितारे देखे गये उन्हें क्वासार (QSAS-ARS, कहते हैं जो पृथ्वी से एक लाख करोड़ मील दूर हैं। अभी 396 इंच दूर-बीन से केलिफोरनिया के खगोलज्ञों ने नौ अन्य आकाश-गगाए देखी हैं जो हम से १,२०,००० लाख प्रकाश-वर्ष दूर हैं। प्रकाश-वर्ष वह फासला है जो प्रकाश की किरण एक वर्ष मे ३,००,००० कि मीटर० प्रति सेकेंड की रफ्तार से तय करती है।

न जाने यह ब्रह्माण्ड कितना विशाल है। प्रश्न होता है कि इसे किसने थामा हुआ है और यह किसके नियन्त्रण से चल रहा है। विचारवान लोग कह गये:—

वेद पढ़ते पंडित थक गये
मुसलमान कुराना।
ग्रंथ को पढ़-पढ़ ज्ञानी थक गये।
तेरा अन्त न जाना ।।

(2) कितना आश्चर्य हो यदि कोई मदारी एक गेंद वायु मे फेके और वह सदा ऊपर ही लटकती रहे। किन्तु हमारी पृथ्वी जिसका तोल 60 करोड़ खर्ब टन बताया जाता है, सूर्य के आकर्षण से सदैव घूमती रहती है और ऋतुयें व दिन-रात बनाती है। क्या यह आकर्षण सूर्य का अपना बनाया हुआ है?

(3) क्या कारण है कि सूर्य की किरणें पृथ्वी पर कही इतनी प्रचण्ड होती हैं कि कुछ भी उग नही पाता। किन्तु वही किरणें चाँद पर ठंडक बरसाती हैं।

फिरे भटकते हैं लाखों पंडित।
हजारों दाना, करोड़ो स्याने ।।
जो खूब देखा तो यार आखिर।
खुदा की बातें खुदा ही जाने ।।

(4) क्या पृथ्वी के अन्दर बहुमूल्य धातु-सोना, चाँदी, हीरे, रत्न पृथ्वी की अपनी चेतना की उपज हैं?

(5) क्या वृक्ष गदी वायु को आक्सीजन मे बदलने का काम स्वेछा से करते हैं?

(6) क्या नाना प्रकार के फल-फूल, वनस्पितियां, औषधिया भिन्न-भिन्न ऋतुओं में भिन्न-भिन्न गुणों के साथ एक ही धरती मे से अपनी चेतना द्वारा पैदा होती रहती हैं?

(7) कौन है जो कच्चे हरे आम मे रस, रग और सुगन्ध भर देता है?

(8) क्या बहुत से शब्द अंट-संट इकट्ठे कर देने से अपने आप शब्द-कोश या कोई ग्रन्थ बन सकता है?

क्या तुर्फा है खूबी
मेरे महबूब की देखो।
दिल में तो आता है।
समझ में नहीं आता ।।

चेतन शरीरों की रचना

(9) माता का गर्भ एक बिन्दु से आरम्भ होता है। माता को पता ही नहीं चलता कि कब उस अन्धेरी कोठरी मे अंग-प्रत्यग बनते जाते हैं। कब कोई प्राण फूंक जाता है?

(10) स्त्री के शरीर को कहीं से भी चीरो, खून ही खून निकलता है, परन्तु बच्चा पैदा होते ही दूध निकलना शुरू हो जाता है।

जब आया तू जगत में।
तो उस से ही पहले ।।
स्तन दूध से मां के।
तुझ को दिये भर ।।

किसी ने बच्चे के अन्दर मांस और हड्डी प्रवेश होते नही देखी किन्तु दूध स्वयं मांस और हड्डी में परिवर्तित हो जाता है।

(11) क्या कारण है कि अनेक जीव समान वातावरण में पैदा होकर असमान बुद्धि, शरीर और प्रारब्ध लिये हुए जीवन बिताते हैं?

(12) जिन पांच भूतों से हमारे शरीर बने हैं वे इकट्ठा कर देने से शरीर तो संभवतया बनाया जा सके किन्तु चेतना वैज्ञानिक नही भर पायेंगे।

(13) हमारी त्वचा में संवेदी कोशि-काएं (sense cells) स्पर्श और पीड़ा का बोध तत्काल करा देती हैं। तार के समान सदेशो का आना-जाना देख कर, हम मजबूर होकर कहने लग जाते हैं कि यह अद्भुत काम किसी बड़े कारीगर का है जिसे परमात्मा कहते हैं। वह कैसा है? 'अकबर' इलाहाबादी ने उत्तर दिया:—

खुदा क्या है 'अकबर' से
पूछा किसी ने ।।
वह बोला खुदा और
क्या है खुदा है ।।

(14) हमारे भोजन में स्टार्च (माड़ी), प्रोटीन (प्रोभूजिन), कार्बोहाइड्रेट्स (शंकर) और लैक्टोस (दुग्ध-शर्करा) होते हैं। इन को अंगसात करने के लिये क्रमश: गले, आमाशय, (pancreas) और छोटी आँतों से भिन्न-भिन्न किण्वक (enjyrnes) रिसते रहते हैं।

(15) गाय, भैस, बकरी के शरीर में कैसी अदभुत मशीन संजोई है जो सूखे घास से दूध बना देती है। पशु अपनी इच्छानुसार भोजन उपलब्ध नही कर सकते, इसलिये उन के अन्दर शक्ति दे रखी है कि जब मिले, पेट भर लें और बाद में धीरे-धीरे चबाते रहे।

(15) पक्षी अंडे देते हैं, कौन है जो उनके भीतर बैठा चूजों को ठीक समय पर छिलका को फोड़ कर बाहर निकलने की प्रेरणा कर देता है?

(16) जब हम पाप कर्म करने के लिये उद्यत होते हैं तो कौन अन्दर से आवाज देता है कि यह अनुचित है?

खुदाया खुद को तूने इक
तमाशा ही बनाया है
कि जर्रे-जर्रे से अयां
होकर निहां होना

अयां=प्रकट, निहां=छिपा हुआ

(शेष पृष्ठ १० पर)

सुभाषित

एकोऽहमस्मीति च मन्यसे त्वम् न हृच्छयं वेत्सि मुनिं पुराणम् ।
यो वेदिता कर्मणः पापकस्य तस्यान्तिके त्वं वृजिनं करोषि ॥

तू समझता है कि मैं अकेला हू, परन्तु तेर हृदय मे जो पुराण पुरुष मौनभाव से विराजमान है वह तेरे सब कर्मों को जानता है और तू उसकी उपस्थिति मे ही पापकर्म कर रहा है ।

सम्पादकीयम्

चुनावी रथ यात्रा

चुनाव का रथ अब चल पर चल पड़ा है । जिस तरह जगन्नाथ के रथ को लाखों व्यक्ति खींचते हैं उसी तरह इस चुनावी रथ को खींचने वालों की संख्या लाखों में नहीं, करोड़ों में होगी । देश की आबादी इस समय ७० करोड़ के आस-पास है । इन सबका हाथ इस चुनावी रथ में कहा तक लग पायेगा यह कहना कठिन है, किन्तु करोड़ों हाथ इसे खींचने में अपना सहयोग देंगे तभी यह रथ अपनी मंजिल तक पहुंच पायेगा । रथ यात्रा में जितनी अधिक भीड़ होती है उतना ही गर्दोगुबार उड़ता है । फिर अब करोड़ों की पदचाप से उठती हुई धूल से आसमान में एक नया बादल सा बन जाय, तब भी किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए । हालांकि अभी रथ यात्रा शुरू हुई है परन्तु हमको विश्वास है कि ज्यों-ज्यों रथ आगे बढ़ेगा त्यों-त्यों धूल का अम्बार उठने की आशंका निर्मूल भले ही न हो परन्तु उससे वह खतरा नहीं होगा जिसकी कुछ छिद्रान्वेषी लोग आशा लगाए बैठे हैं । यों कुछ चुनाव क्षेत्रों में, जहां जबर्दस्त उम्मीदवारों की टक्कर है वहां उपद्रवों की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता परन्तु सभी उम्मीदवार ऐसी दुर्मति से बच सकें यह हमारी कामना है ।

नये प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने जोरदार ढंग से अपना प्रचार कार्य प्रारम्भ कर दिया है । जिस तरह श्रीमती गांधी के चुनाव भाषणों मे बेतहाशा भीड़ टूटती थी उसी प्रकार नये प्रधानमंत्री के दर्शनार्थियों की संख्या भी कम नहीं होती । श्री राजीव गांधी ने अपनी सभाओं में जनता को बार-बार यह आश्वासन दिया है कि हम देश की विघटनकारी शक्तियों को कभी सफल नहीं होने देंगे । स्पष्ट रूप से उनका सीधा इशारा खालिस्तान या द्रविड़िस्तान की मांग की तरफ है । उन्होंने यह भी स्पष्ट घोषणा की है कि हम किसी भी हालत में आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेंगे । देश की अखण्डता को कायम रखना—यही तो चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा है । इसी चुनाव का क्यों सभी चुनावों का यही मुख्य मुद्दा होना चाहिए । परन्तु कभी-कभी कुछ और अवान्तर नारे बीच में चल पड़ते हैं और यह मुख्य मुद्दा एक तरफ रह जाता है । परन्तु इस बार के चुनाव मे इस मुद्दे से बचने का कोई रास्ता नही है ।

विपक्ष के पास इस बार कहने को कोई मुद्दा नहीं है इसलिए वे कांग्रेसी शासन के पुराने बखिये उधेड़ने मे लगे हैं । जब राजीव गांधी यह कहते हैं कि अकालियों को या अन्य विघटनकारी शक्तियों को विपक्षी दलों ने सहयोग दिया तब विपक्ष वाले बौखलाकर कहते हैं कि राजीव जी ! आपका घर भी कांच का बना हुआ है इसलिए औरों के घरों पर इस तरह पत्थर मत फेंको । यह नेक सलाह नेकनीयती भी हो सकती है । पर इसकी जिम्मेवारी राजीव गांधी के सिर नहीं आती । क्योंकि उन्हें तो शासन सूत्र संभाले जुम्मा जुम्मा चार दिन हुए हैं ।

परन्तु हम जिस बात की ओर ध्यान खींचना चाहते हैं वह यह है कि देश में लोकतंत्र समाजवाद और सम्प्रदाय निरपेक्षता को कायम रखना है तो चाहे कांग्रेस हो या अन्य विपक्षी दल, उन सबको इस देश के विशाल बहुमत हिन्दू समाज—के हितों को प्रमुखता देनी होगी । यह डंके की चोट कहा जा सकता है कि जिस दिन इस देश में हिन्दुओं का बहुमत समाप्त हो जायेगा उस दिन न यहां लोकतंत्र रहेगा न समाजवाद और न सम्प्रदाय-निरपेक्षता । जितने अन्य मतावलम्बी हैं उनकी भारतीय संविधान के इन [illegible] सिद्धांतों पर कोई आस्था नहीं है । पड़ोसी देश इसके जीते जागते उदाहरण हैं ।

हिन्दू समाज अपने आप मे कितना ही विशृंखलित और असंगठित क्यों न हो पर [illegible] की ये तीनों चीजें उसकी स्वाभाविक विरासत का अंग हैं शायद वे [illegible] इतिहास से प्राप्त अपनी इस परम्परागत विरासत को वे छोड़ नहीं [illegible] । जिस सहिष्णुता को और मत-मात्र के प्रति अनाग्रह को हिन्दू समाज की [illegible] कमजोरी माना जाता है वही उसका सबसे बड़ा बल है । और इसी प्रवृत्ति [illegible] को, इस सबसे पुरानी जाति को इतना चिरजीवन प्रदान किया है । अगर हिन्दू समाज की यह दुर्बलता ही उसका सबसे बड़ा बल न होती तो गैर-हिन्दू हिन्दुत्व [illegible] रवैये से खतरा न होते । 'इस्लाम खतरे में' या 'पंथ खतरे में' [illegible] तो हैं न कि यदि उन्होंने अपनी अलग पहचान की जिद पूरी नहीं की [illegible] हिन्दू समाज का महाकाय अजगर चुपचाप उनको निगलकर पचा [illegible] काल्पनिक भय है जिससे सब अल्पसंख्यक ग्रस्त हैं और इसी भय के [illegible] साम्प्रदायिक राजनीति चलाते हैं ।

भारत का हिन्दू अपने आप में कितनी बड़ी ताकत है, इसका बोध किसी को नहीं । कुछ वैसी-सी बात है जैसे कि सीता की खोज में गई समुद्र के किनारे बैठी वानरों की टोली मे हनुमान के साथ थी । जाम्बवान् से लेकर अंगद और अन्य सब वानर—प्रमुख यह जानते थे कि चार सौ योजन समुद्र को पार करने की शक्ति केवल आजन्म ब्रह्मचारी हनुमान मे है । परन्तु वे स्वयं भी अपनी शक्ति को भूले हुए थे । यदि भारत का ८५ प्रतिशत जनसंख्या वाला विराट् हिन्दू-समाज एक जुट हो जाए तो एक ही रात मे इतनी बड़ी ताकत बन कर उभर सकता है कि संसार मे सब उसे देखकर चौंक जायें । यही गनीमत है कि हिन्दू समाज में आजतक कभी इस आत्म चेतना ने जन्म नहीं लिया ।

इस बार माहौल कुछ-कुछ बदला है । हिन्दू समाज मे भी कुछ-कुछ आत्म चेतना के लक्षण नजर आने लगे हैं । ऊपर से नीचे तक शरीर के प्रत्येक अंग को और पोर-पोर को सुन्न कर देने वाली श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या ने भी इस आत्म चेतना में काफी योग दिया है । हिन्दू समाज समझने लगा है कि अब भी हम नहीं चेते तो देश का कोई नेता और कोई विशिष्ट व्यक्ति सुरक्षित नहीं रह सकता । आखिर भिंडरा वाले के मरजीवड़ों ने सभी दलों के राजनैतिक नेताओं सब प्रमुख पत्रकारों, समस्त विशिष्ट बुद्धिजीवियों और स्वतन्त्रचेता साहित्यकारों को मारने की धमकी दे ही रखी थी । उनकी हिटलिस्ट में जहां इन्दिरा राजीव जैल सिंह शामिल थे वहां चरणसिंह और अटल बिहारी वाजपेयी भी इस 'सौभाग्य' से वंचित नहीं थे । जिस रास्ते ला० जगत नारायण और बाबूवर रमेश चन्द्र को परलोक पठाया गया उसी पथ का पथिक बनाने के लिए कितने ही आर्यसमाजी पत्रकारों और आर्य नेताओं को भी धमकियां दी गई थीं । अकेले दिल्ली मे ही कम से कम एक हजार अतिरिक्त पुलिसमैन भर्ती करके उन्हें हिटलिस्ट मे नामांकित नेताओं की रक्षा के लिए तैनात किए गए थे । यह किसी विशिष्ट राजनीतिक दल का प्रश्न नहीं था बल्कि आतंकवाद का खुला खेल था ।

इस समय पंजाब की अतीत की घटनाओं को लेकर वहां के हिन्दुओं में एक जुट होकर किसी हिन्दुत्ववादी पार्टी के पक्ष मे वोट देने का संकल्प जागृत हुआ है । भारत के अन्य राज्यों मे भी उसी प्रकार के संकल्प के लक्षण प्रकट हो रहे हैं । पंजाब मे तो फिलहाल यह चुनावी रथ नहीं जा रहा परन्तु हम समझते हैं कि हिन्दुत्ववादी यह भावना वहां आसानी से खत्म होने वाली नहीं है । केरल मे काफी समय से इस प्रकार की लहर चल ही रही है । आन्ध्र प्रदेश में भी नतारा रामाराव ने सन्यासी के वेष मे जनता मे जो भावना जागृत की है वह हिन्दुवादी मतदाताओं को ही सबसे अधिक प्रभावित करने वाली है । श्री रामाराव ने तिरुपति के मन्दिर को वेटिकन सिटी का दर्जा देने की बात भी कही है । अब तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस ने भी साफ-साफ शब्दों मे कह दिया है कि समस्त हिन्दुओं को चाहिए कि वे पार्टी से ऊपर उठकर उन उम्मीदवारों को वोट दें जो भले ही किसी पार्टी के हों लेकिन हिन्दू हितों को सबसे प्रमुखता देने वाले हों । दिल्ली के रामलीला मैदान मे बड़ी संख्या मे धर्माचार्यों ने एकत्र होकर इस भावना को और बल दिया है ।

देखना यह है कि यह हिन्दूवादी लहर इस चुनावी रथ को क्या मोड़ देती है ?

हिन्दू मंच के उम्मीदवार

रामसभा रामराज्य परिषद और भारतीय जनसंघ के घटकों से बने हिन्दुस्तान हिन्दू मंच ने लोकसभा चुनावों में दक्षिण दिल्ली से ठाकुर ओंकार सिंह चरक नयी दिल्ली से श्री रूपलाल मेहता पूर्वी दिल्ली से श्रीमती कांति तिवारी तथा सदर क्षेत्र से श्री किशन स्वरूप गोयल—ये चार उम्मीदवार खड़े किये हैं । मंच के अध्यक्ष श्री बलराज मधोक गुजरात मे अहमदाबाद से खड़े हैं । उनके अनुसार देश के विभिन्न क्षेत्रों से मंच के लगभग ८० उम्मीदवार खड़े हैं । घोषणापत्र मे व्यक्तिगत विधि संहिता धर्म परिवर्तन विदेशी धन प्रवाह तथा गोधन पर केन्द्रीय कानून बनाकर पूर्ण प्रतिबंध हेतु प्रयास का वायदा किया गया है ।

हिंदू हितों की रक्षा की जिम्मेदारी कौन सा राजनीतिक दल लेगा ?

—बलराज मधोक—

हिन्दुस्तान हिन्दू मंच तथा भारतीय जनसंघ के प्रधान प्रो० बलराज मधोक ने सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस को एक पत्र मे लिखा है कि 14 अक्तूबर को सायंकाल इण्डियागेट नई दिल्ली के सार्वजनिक भाषण में आपने ठीक तौर पर उंगली रखी और राष्ट्रवादी हिन्दुत्व, हिन्दू राष्ट्र संस्कृति की उपेक्षा करके उर्दू को लादने पंजाब काश्मीर और आसाम की समस्या धारा 370 अल्प-संख्यक आयोग और अल्पसंख्यको के तुष्टीकरण की नीति, देश की शान्ति, एकता और सुरक्षा पर उस का कुप्रभाव, रामजन्म भूमि अयोध्या, कृष्ण जन्मभूमि मथुरा और काशी विश्वनाथ में विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा बनाई गई मस्जिदो को हटाकर वहां पुनः मन्दिर बनाने के लिये हिन्दुओ को सौंपना, मुसलमानों के लिये अलग सिविल कानून के भयंकर परिणाम इत्यादि जिन प्रश्नों की चर्चा की, उन सबका सीधा सम्बन्ध राजनीति के साथ है। आपका यह कहना भी सटीक था कि हिन्दुओं और हिन्दुस्तान के हित अन्योन्याश्रित हैं। परन्तु सत्तारूढ़ और अन्य दल इस सम्बन्ध में अराष्ट्रीय रवैया केवल अल्पसंख्यको (विशेषतः मुसलमानों) को तुष्ट करके उनके सामूहिक मत प्राप्त करने के लिये अपना रहे हैं। यद्यपि इनके मत अधिक नहीं है (हिन्दुस्तान मे केवल 10-12 के लगभग लोकसभा क्षेत्रों में ही मुसलमान बहुमत मे हैं और 20-25 उसके मत 20% से अधिक हैं)। परन्तु हिंदुओ के मत बिखरे हुये हैं, इसलिये इन अल्पमतो को अनुचित महत्व दिया जाता रहा है। यह आपने भी स्पष्ट किया कि जनता पार्टी की सरकार इन मामलों मे कांग्रेस से भी अधिक अदूरदर्शी निकली। जिसने अल्प-संख्यक आयोग गठन, अलीगढ़ विश्वविद्यालय का मुस्लिमीकरण और उर्दू तथा मुसलमानों के लिये पुलिस तथा नौकरियों मे आरक्षण कई गलत निर्णय लिये।

इन बातों से दो दुःखदायी तथ्य स्पष्ट रूप में सामने आते हैं। पहला है—हिन्दुओं में इतिहास बोध और राजनैतिक चेतना का अभाव उन्होंने इतिहास और गत अनुभव से कुछ नहीं सीखा। और दूसरा है हिन्दू संगठन के नेता राष्ट्रहित हिन्दूहित और सिद्धान्तों की कीमत पर सत्ता प्राप्ति के छोटे रास्ते ढूंढने मे लगे हैं। वे तात्कालिक स्वार्थपूर्ति के लिये राष्ट्र और समाज के स्थाई हितों और सिद्धान्तो के साथ समझौता करने में भी नहीं हिचकते। गांधी जी की इस उक्ति ने कि मुसलमानो के सहयोग बिना स्वतंत्रता नहीं मिल सकती, हिन्दुओं का मनोबल और आत्म-विश्वास तोड़ा। उनकी यह नीति विफल हुई। मुसलमानो ने स्वतन्त्रता प्राप्ति में सहयोग के बजाय दृढ़ता से ऐसे तथाकथित मिले-जुले राष्ट्र का अंग बनना अस्वीकार किया और देश की जनसंख्या मे 23 प्रतिशत से कम लोग देश की ३०% धरती काटकर अपना अलग देश बनाने मे सफल हुए। देश बँट गया—मुस्लिम इंडिया (पाकिस्तान और बांगला देश) और खंडित हिन्दुस्तान या हिन्दू इंडियामें मुस्लिम इंडिया में हिन्दू वहां से खदेड़ दिये गए हैं या खदेड़े जा रहे हैं, इस्लाम या मौत के भयानक विकल्प पर फिर भी गांधी नेहरू के चेलों को अपनी गलती का अहसास नही हुआ और उनकी नीतियाँ नहीं बदलीं। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, डा० हेडगेवार, सरदार पटेल और वीरसावरकर से प्रेरणा लेने वाले राष्ट्रवादियों ने मिलकर भारतीय जनसंघ बनाया। ताकि यह नेहरूवादी कांग्रेस का विकल्प ले सके। जनसंघ तेजी से बढ़ा और १९६७ के आम चुनाव में यह कांग्रेस के बाद दूसरे दल के रूप में उभरा।

यदि जनसंघ अपने दृष्टिकोण और नीतियों पर दृढ़ रहता और इसका नेतृत्व किसी निर्मल और हिन्दू छवि वाले नेता के हाथों मे रहता तो यह अब तक सम्भवतः सत्ता में आ गया होता परन्तु श्री दीनदयाल उपाध्याय की रहस्यमयी हत्या से जनसंघ को अन्दर से तोड़ दिया गया। यह हिन्दू हितों के साथ आज का सबसे बड़ा विश्वासघात था।

इन अवसरवादियों ने १९८० में भारतीय जनता पार्टी बनाई। नेहरू वादी कांग्रेस की नकल। यह भी सत्ता के लिये मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति दोहरा कर हिन्दुओं के आत्मविश्वास और मनोबल को फिर तोड़ रही है। फलस्वरूप हिन्दू अपने ही घर में फिर द्वितीय श्रेणी के नागरीक बन गये हैं। वास्तव में पाकिस्तान के लिये मत देने के बाद खंडित हिन्दुस्तान में टिके रहने वालों का इस देश पर कोई नैतिक और कानूनी अधिकार नहीं है फिर तुष्टीकरण की नीति अपनाने का औचित्य क्या है ?

हिन्दुस्तान और हिन्दू राष्ट्र की समस्याओं का हल हिन्दू हितों और हिन्दू राष्ट्र से प्रतिबद्ध कोई राजनैतिक दल (सत्ता में या मजबूत राजनीतिक पकड़ रखने वाला) ही निकाल सकता है। इसमें नेतृत्व का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है और इस समय परिस्थिति कांग्रेस के हिन्दुत्ववादी विकल्प के उदय के अनुकूल है। हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू राज्य अब हिन्दू समाज के सभी वर्ग की समझ मे आने लगा है।

आप और संघ ऐसा नेतृत्व और संगठन दे सकते थे। परंतु संघ एक गैर राजनैतिक संगठन है जिसका प्रत्यक्ष आगे आना शायद कठिन है। परन्तु संघ भी "राजा कालस्य कारणम्" और 'राजनीति का प्रभाव सब दूर पड़ता है' जैसे शाश्वत सत्य की अवहेलना नहीं कर सकता। ऐसा करने से राष्ट्र और समाज का स्थायी अहित हो जाएगा।

किसी भी सशक्त आन्दोलन को खड़ा करने के लिये विचार, नेतृत्व और संगठन इन तीन चीजों की आवश्यकता होती है। हमारे विचार सशक्त हैं। इस विचार को प्रतिबिम्बित करने वाला एक राजनैतिक संगठन सभी हिन्दुत्ववादी तत्वों और संगठनों के सहयोग से अति शीघ्र खड़ा किया जाना चाहिए। यह समय की मांग और हालात का तकाजा है। यदि भारतीय जनता पार्टी अपना हिन्दूकरण कर ले और आपके द्वारा रखे गए विचारो और नीतियों को सार्वजनिक रूप में अपना ले तो यह भी इस प्रकार के हिन्दू विकल्प का आधार बन सकती है। हमें काम से गरज है, नाम से नहीं।

नेतृत्व की समस्या अधिक जटिल है। देश की जनता केवल चेहरों का बदल नहीं चाहती। वह नीतियों और राजनैतिक कल्चर का बदल चाहती है। इसके लिये ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जिसका चरित्र निर्मल हो और जिसकी राष्ट्रीय हिन्दू छवि हो। जिस नेता का चरित्र दूषित हो और जो सत्ता प्राप्ति के छोटे रास्ते की तलाश में सिद्धान्तों के साथ समझौता करता रहा हो वह आवश्यक नेतृत्व प्रदान नहीं कर सकता। [illegible] पार्टी के [illegible] बिल्कुल [illegible] है।

सत्ता की राजनीति से बाहर होने के कारण आप इस प्रकार के नेतृत्व को ढूंढने और उसे सामने लाने में सहायक हो सकते हैं। यदि इस प्रकार का नेतृत्व आगे लाया जा सके तो इसे सभी हिन्दुत्ववादियों का सहयोग मिल सकता है और जनता में विश्वास का संचार किया जा सकता है।

मैं अपने संघ के उस ध्येय के [illegible] जो आपको भी प्रिय है, [illegible] हूं। इतिहास और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्यार्थी के नाते मैं हिन्दुस्तान और इसके इर्दगिर्द की स्थिति के कारण भविष्य के विषय में चिन्तित हूं।

मैंने अपने जीवन का सबसे बहुमूल्य समय संघ के माध्यम से हिन्दू समाज की सेवा में लगाया। मैं आज भी संघ के आदर्शों और विचारधारा से बंधा हुआ हूँ, अनुसरण करता हूं। इसलिये मैं यह अपना कर्तव्य और अधिकार समझता हूं कि अपने संघ के साथियों से कहूं कि वे उन आदर्शों और सिद्धांतों का दृढ़ता और निर्भीकता से प्रतिपादन करें व उन पर आचरण करें। मेरा सतत् प्रयत्न रहा है कि समान पथ के सभी पथिकों को तैयार करके समान ध्येय की ओर आगे बढ़ें। ऐसा करने में मुझे कई बार उपेक्षा भी मिली और अपमान भी परन्तु मुझे इसकी चिन्ता नहीं।

हिन्दुस्थान हिंदू मंच और भारतीय जनसंघ के प्रधान श्री बलराज मधोक का सरसंघचालक श्री बाला साहब देवरस को महत्वपूर्ण पत्र

बोकारो में आर्यसमाज द्वारा सिख छात्रों को सुविधा

बोकारो (बिहार) : डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल ने श्रीमती गांधी के निधन पर आयोजित शोक सभा में श्री राजीव गांधी के नेतृत्व पर विश्वास व्यक्त किया तथा प्रतिक्रियात्मक दंगा-पीड़ित परिवारों के धन-जन की क्षति के प्रति शोक व संवेदना व्यक्त की। समिति ने दंगा प्रभावित सिख छात्रों को [illegible] माह तक निःशुल्क शिक्षा व बस सुविधा, पुस्तकें व यूनीफार्म आदि तथा [illegible] सिख [illegible] छात्रों को स्कूल में [illegible] नियुक्त करने का निर्णय लिया।

[illegible]

[illegible]

ईसामसीह प्रभु-पुत्र था (?)

—श्री वैद्य गुरुदत्त—

"क्राइस्ट परमात्मा का पुत्र नहीं था, वह पुनर्जीवित भी नहीं हुआ था, न वह कुमारी कन्या से उत्पन्न हुआ था और न ही वह पानी पर चला था।" इस प्रकार की बातें यदि कोई ईसाई से इतर-समाज का व्यक्ति करे तो अधिकांश जन इसको यह कहकर त्याज्य मान लेंगे कि यह तो ईसा के विरुद्ध विपरीत प्रचार है। किन्तु हमने जिन शब्दों को उद्धृत किया है वे किसी इसाई समाज से इतर व्यक्ति के नहीं हैं अपितु ईसा के परमभक्त माने अथवा कहे जाने वाले एक पादरी के हैं, बिशप के हैं।

बिशप डेविड जैन्किन्स, जिन्हें कुछ ही मास पूर्व बिशप-पद पर प्रतिष्ठित किया गया है, उनके शब्दों को हमने यहां उद्धृत किया है। जैन्किन्स इंग्लैण्ड के निवासी हैं। जबसे उन्होंने इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं तबसे समस्त इंग्लैण्ड में खलबली मच गई है और इस प्रकार का कोई संवैधानिक मार्ग ढूंढने का यत्न किया जा रहा है कि क्या इस प्रकार के विपरीत एवं विद्रोही विचार के व्यक्ति को बिशप-पद पर रहने दिया जाय? यदि न रहने दिया जाय तो उसे किस प्रकार पदच्युत किया जा सकता है और यदि रखा जाय तो फिर उसका क्या परिणाम होगा?

इंग्लैण्ड के दूरदर्शन पर 'मेरा विश्वास' शीर्षक से एक नियमित कार्य-क्रम प्रसारित होता है। इसी क्रम में २९-४-८४ को डेविड जैन्किन्स को आमन्त्रित किया गया और उनसे यह पूछा गया—"क्या आप विश्वास करते हैं कि क्राइस्ट प्रभुपुत्र था? क्या आपका विश्वास है कि वह मरणोपरान्त आठवें दिन कब्र से बाहर निकल गया था? क्या आपका यह भी विश्वास है कि क्राइस्ट पानी पर चलने का अभ्यस्त था?"

डेविड ने इन सभी प्रश्नों का एक ही स्पष्ट और संक्षिप्त उत्तर दिया—"नहीं।"

इस वार्त्ता के प्रसारित होते ही समस्त इसाई मत में खलबली मच गयी है। इसाई मत में इन बातों को ही महत्व प्राप्त है। यदि उनके मत से ईसा का प्रभुपुत्र होना, कुमारी-पुत्र होना, मर कर जी उठाना और पानी पर चलना, इन चार बातों को निकाल दिया जाय तो उसका समस्त सार समाप्त हो जाता है। अतः इसाई जगत में, विशेषतया इंग्लैंड में, इस पर रोष और अस्थिरता का वातावरण उत्पन्न होना स्वाभाविक है। किन्तु इससे डेविड की न केवल अपने राष्ट्र में अपितु समस्त विश्व में ख्याति हो गई है।

५६ वर्षीय डेविड जैन्किन्स बिशप-पद पर प्रतिष्ठित होने से पूर्व इंग्लैंड के लीड्स विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र विषय का प्राध्यापक था। उसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह स्वतन्त्र विचारों का व्यक्ति है और अन्धश्रद्धा का प्रबल विरोधी है। उसके विषय में यह मान्यता है कि उसने धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन किया है। उसके आधार पर उसकी ख्याति प्रकाण्ड पण्डित के रूप में व्याप्त है। यही कारण है कि समस्त इंग्लैंड में एक प्रकार से आन्दोलन का-सा वातावरण व्याप्त हो गया है।

डेविड की इस स्पष्टोक्ति का जहां एक ओर यह प्रभाव हुआ है कि कुछ लोग ईसा और इसाइयत के विषय में भिन्न दृष्टि से, अर्थात् अब तक की परम्परा के विपरीत विचार प्रकट करने लगे हैं वहां इसके विरुद्ध लन्दन के हैरीफोल्ड चर्च के पादरी विलियम लेडविक ने दस सहस्र व्यक्तियों के हस्ताक्षर एकत्रित कर यह आन्दोलन आरम्भ कर दिया है कि बिशप डेविड को उच्च पद से हटा दिया जाना चाहिये। यदि ऐसा न किया गया तो इससे इसाइयत की नींव हिल जायेगी, इसाइयों की श्रद्धा को क्षति पहुंचेगी और इसाई मत के अनुयायियों की संख्या निरन्तर घटती चली जायेगी।

बिशप को उसके उच्च पद से हटाया जाता है अथवा नहीं, यह भिन्न बात है। किन्तु जो उसने कह दिया है उसका प्रभाव तो होगा ही। यदि उसको उसके पद से हटा दिया गया तो फिर उसका प्रचार और भी अधिक होगा। एक तो स्वयं डेविड के मन में विपरीत प्रतिक्रिया होगी और वह अपने विचारों की पुष्टि का प्रयत्न करेगा और दूसरे उसके शुभ-चिन्तक न तो स्वय चैन से बैठेंगे और न उसको चैन से बैठने देंगे। यदि उसको उसके पदपर स्थिर रखा जाता है तो इससे यह समझ लिया जायेगा कि उसके कथन में तथ्य है और फिर इस विचार पर और अधिक खोज-बीन आरम्भ हो जायेगी। दोनों ही दृष्टि से डेविड के विचारों का प्रसार होगा। ईसाइयत के लिए यह भले ही शुभ न हो किन्तु यह सब मानवता के हित में होगा। भ्रान्तियां चाहे किसी महापुरुष के विषय में हों अथवा किसी मत अथवा सम्प्रदाय के विषय में, वे दूर होनी ही चाहिए। इससे लाभ ही होता है। भ्रान्तियों का बना रहना हानि-कारक है।

डेविड के इस प्रसारण के उपरान्त लैटिन भाषा के एक समाचारपत्र 'कोडो' के प्रतिनिधि ने डेविड जैन्किन्स से भेंट की तो उस अवसर पर भी अपने कथन की पुनरावृत्ति करते हुए उसने कहा, "यह जो कहा जाता है कि क्राइस्ट कुमारी कन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, यह नितान्त भ्रामक है, और गलत भी है। ईसा के जन्म के समय में इस प्रकार की कोई बात प्रचलित नहीं थी और न ही उसका कोई प्रमाण है। कालान्तर में ईसा को प्रभुपुत्र के पद पर प्रतिष्ठित करने के विचार से यह किंवदन्ती प्रचलित कर दी गयी थी।"

ईसा के पानी पर चलने की सामर्थ्य के विषय में डेविड का मत है कि यह बात भी बढ़ा-चढ़ा कर कही गई है। इसका भी कोई प्रमाण कहीं उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार के चमत्कार तिब्बत के लामा धर्मगुरुओं के विषय में सुनने में आते तो हैं, किन्तु सप्रमाण इस विषय में भी कोई कुछ कह नहीं सकता। क्राइस्ट के जीवन से तो इस प्रकार के चमत्कार का कोई सम्बन्ध कभी रहा ही नहीं।

इसाइयों में अब तक यह निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जाता रहा है कि क्राइस्ट ७ दिन बाद अपनी कब्र से जीवित उठ कर बाहर निकल आये थे। डेविड इसको सर्वथा झूठ मानता है। उसका कहना है कि इसका यही अर्थ निकाला जा सकता है कि क्राइस्ट के मरणोपरान्त भी उसके विचार जीवित रहे थे।

क्राइस्ट के ईश्वर पुत्र होने के सम्बन्ध में डेविड का मत है कि स्वयं क्राइस्ट ने भी कभी यह नहीं सोचा होगा कि वह ईश्वर-पुत्र है और लोग उसको इस रूप में स्वीकार करें। उसकी मान्यता है कि यह सब दन्त-कथाएं कालान्तर में ईसा के अन्ध-भक्तों और श्रद्धालुओं ने अपने विश्वास की स्थिरता के लिए उसके जीवन के साथ जोड़ दी हैं।

डेविड जैन्किन्स से भेंट करने के उपरांत उसके विचारों पर अन्य पादरियों की प्रतिक्रिया जानने के लिए 'कोडो' के प्रतिनिधि ने उनसे भी भेंट की। उसने इंग्लैण्ड के कुल 30 पादरियों से इस सम्बन्ध में प्रश्न किये। उनमें से केवल 29 ने उसके प्रश्नों के उत्तर दिए, अवशिष्ट पादरी मौन साधे रहे। जिन 29 पादरियों ने उसके प्रश्नों के उत्तर दिए उनमें से 1 पादरियों का दृढ़ विश्वास था कि क्राइस्ट परमात्मा का ही पुत्र था। 9 पादरियों का विश्वास था कि क्राइस्ट पुनर्जीवित नहीं हुआ था। 10 पादरियों ने कहा कि क्राइस्ट को कुमारी कन्या से उत्पन्न मानना सर्वथा भ्रान्त धारणा पर आधारित है। इस प्रकार यदि विश्लेषण किया जाय तो यही निष्कर्ष निष्पन्न होता है कि इग्लेंड के कुल 39 पादरियों में से बहुसख्य पादरी डेविड जैन्किन्स के मत के समर्थक हैं।

जैसा कि हम संकेत कर चुके हैं कि यह मानवता के लिए शुभ संकेत है। इन विचारों का प्रसार होना चाहिए और वास्तविकता के आधार पर ही ईसा के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाना उपयुक्त है।

इस घटना का उल्लेख करने का हमारा उद्देश्य यही है कि भारत में ईसाई मिशनरी निरन्तर प्रयत्नशील हैं कि भारत को किसी प्रकार से इसाई-बहुल देश के रूप में परिवर्तित कर दिया जाय। इसके लिए विश्व भर के सभी इसाई तन-मन-धन से उन मिशनरियों की सहायता कर रहे हैं। हमें ईसाई मिशनरियों की चिन्ता नहीं है और न उनके सहयोगियों—की चिन्ता है। यदि हमें चिन्ता है तो अपने भारत-वासियों की चिन्ता है। उन भारतवासियों की जो कि इन इसाई मिशनरियों को यहाँ प्रश्रय देते हैं, सम्मान देते हैं और उनके लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

न केवल भारत का नागरिक अपितु भारत की सरकार इन देशद्रोहियों को प्रश्रय देती है, उनका सम्मान करती है और उनको सब प्रकार की सुख-सुविधा देने के लिए न केवल प्रयत्नशील रहती है अपितु उनके इस दुष्कृत्य में सब प्रकार से सहायक सिद्ध होती है। कुमारी टेरेसा को जो कि सदैव मदर टेरेसा के नाम से विख्यात हैं, भारत सरकार ने देश की सर्वोच्च उपाधि 'भारत रत्न' से विभूषित किया है। कितनी लज्जा की बात है कि भारत के जन-जन को पथच्युत करने वाली कुमारी टेरेसा भारत सरकार द्वारा सम्मानित की जाती हैं। कुमारी टेरेसा माता बनने के सौभाग्य से वंचित रही हैं। यदि सौभाग्य से वे माता बन पातीं और फिर कोई उनकी अपनी सन्तान को, जो कि उनके अपने गर्भ से उत्पन्न हुई होती, उस प्रकार से पथच्युत करता जिस प्रकार से वे स्वयं भारत की कोटि-कोटि सन्तान को कर रही हैं, तब उनसे पूछा जा सकता था कि उनको उस अवस्था में कैसा अनुभव होता?

इसायइत और इस्लाम दोनों ही इस देश को अपने-अपने मतावलम्बियों का देश बनाने के लिए कृत-संकल्प हैं। जहां एक ओर हमने बताया है कि इसाई देशों से प्रभूत मात्रा में धर्म प्रचार के नाम पर मिशनरियों को धन प्राप्त हो रहा है वहाँ दूसरी ओर भारत भर में व्याप्त मुल्ला-मौलानाओं को भी विदेशों से, विशेषतया अरब देशों से 'पेट्रो-डालर' की थैलियों से लादा जा रहा है।

अपने मत का प्रचार करना कदाचित् निन्दनीय न माना जाय। तदपि जिस प्रकार भारत की निर्धन जनता का शोषण कर उनके मत को बलात् परिवर्तित किया जा रहा है वह नितान्त निन्दनीय ही नहीं असंवैधानिक भी है। किन्तु संविधान, नैतिकता अथवा निन्दा की किसको चिन्ता है? उनके लिए यही संवैधानिक है, नैतिकता पूर्ण है और स्तुत्य है।

लन्दन के जिस समाचार का हमने यहां पर उल्लेख किया है वह भारतीयों के लिए हर्षोत्पादक ही नहीं अपितु कर्त्तव्य-प्रेरक भी है। किन्तु कितने होंगे जो इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए कटिबद्ध हो जाएंगे?

[शाश्वतवाणी से साभार]

गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली की व्यापकता

—सत्यव्रत सिद्धांतालंकार—

पिछले लेख में हमने देखा कि मौन्टेसरी, प्रजेक्ट व बुनियादी शिक्षा की तरह गुरुकुल भी एक विशेष पद्धति है जिसकी अपनी कुछ विशेषताएं हैं और ये विशेतायें "कुल" "गुरु" "शिक्षा" तथा "आश्रम" शब्दों में अन्तर्निहित हैं। प्रश्न है कि इन विशेषताओं को देश-व्यापक बनाया जा सकता है या नहीं, और अगर जा सकता है तो कैसे ? यह इस लेख में पढ़िये।

गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के जिन मूल-सिद्धान्तों का पिछले लेख में उल्लेख हुआ उनके विषय में पूछा जा सकता है कि आज के परिवेश में क्या वे व्यावहारिक हैं ? आज का गुरु गुरुकुल- शिक्षा-प्रद्धति में अन्तर्निहित आदर्शों पर चलने को तय्यार नहीं। वह प्राचीन गुरुओं जैसा तपस्यामय जीवन बिताना नही चाहता। उसे तप नहीं करना, दूसरों की तरह आराम की जिन्दगी बितानी है। उसे मकान चाहिये, एयर कन्डीशनर चाहिये, गीजर और हीटर, रेडियो तथा टेलीविजन चाहिये। इसके लिये वेतन आए दिन बढ़ना चाहिये और शिष्य गुरु को न पिता समान मानते हैं, न वैसा आदर दे सकते हैं। उनके लिये गुरु है एक सेवक जो वेतन के लिये नौकरी करता है। वह गुरु को वह सम्मान देने के लिये तय्यार नहीं जो प्राचीन-काल के गुरुकुलों के शिष्य अपने गुरुओं को दिया करते थे। जहां तक शिक्षा-संस्था में कुल की भावना की अनुभूति का संबंध है, गुरु और शिष्य दोनों ही उसे मात्र टीचिंग-शोप समझते हैं। हो भी यही रहा है कि जितना बड़ा विद्यालय उतनी बड़ी फीस। पब्लिक स्कूलों में पढ़ाया वही जाता है जो अन्य साधारण स्कूलों में परन्तु पब्लिक स्कूल के नाम से फीस कई गुणा ज्यादा ली जाती है। पब्लिक स्कूल—एक ऐसा चालू सिक्का हो गया है जो बच्चों को अंग्रेजियत सिखाता हैं।

देश की ऐसी स्थिति में गुरुकुल के उन आदर्शों का गान करना कहां तक समयानुकुल तथा व्यावहारिक है ? हम यह मानकर चलते हैं कि वर्तमान परिस्थिति में इन सिद्धान्तों को व्यापक रूप देना संभव नहीं है। क्योंकि हर स्कूल कालेज को, हर यूनिर्वासिटी को इन आदर्शों पर नहीं। चलाया जा सकता, क्योंकि इन आदर्शों से ओत-प्रोत, अध्यापक मिलने संभव नहीं अध्यापक तो वैसे ही मिलेंगे—आजीविका के लिये अध्यापन कार्य करने वाले—बच्चों का जीवन बनाने के लिये तप, त्याग और तपस्या करने वाले नहीं। मानव-समाज में ऐसे व्यक्तियों का प्रवेश नहीं हो रहा जो संपूर्ण समाज को मानवीयता के गुणों से भर दें। मानव-समाज वैसा ही बनेगा जैसा शिक्षा-जगत् उसे बनायेगा। अगर शिक्षा-जगत् आदर्शहीन है, तो समाज आदर्शप्रिय कैसे हो सकता है ?

परन्तु क्या चक्र बदला नहीं जा सकता ? क्या समाज में ऐसे इने-गिने भी व्यक्ति नहीं जो शिक्षा के उन सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप देना अपने जीवन का लक्ष्य समझें जिनका हमने "गुरुकुल" नाम से उल्लेख किया है। ससार में भौतिकवादी ज्यादा तथा आदर्शवादी कम या इने-गिने हैं। विश्व में जितनी प्रगतिशील या आदर्शवादी विचारधाराएं उपजीं, आदर्शवाद की गंगोत्री से ही आगे बढ़कर गंगा का रूप धारण कर गई हैं। महात्मा गांधी ने नगण्य से खद्दर को ही केन्द्र बनाकर देश की गरीबी हल करने का आदर्श खड़ा कर दिया और संपूर्ण देश में खद्दर का आन्दोलन चल पड़ा। जगह-जगह खद्दर-भण्डार खुल गये और उन सबको एक सूत्र में बांधकर खद्दर तथा ग्रामोद्योग नाम की संस्था का जन्म हुआ। इस आन्दोलन में हजारों आदर्शवादियों ने जीवन खपा दिया और खपा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ ऐसा ही गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का आन्दोलन था।

आदर्शहीन शिक्षा कैसी ?

शिक्षा किन्हीं आदर्शों को सामने रखकर दी जाती है। अंग्रेज भारत आये, राजकाज तथाजनता के बीच संपर्क स्थापित करने और शासन में सुविधा के लिये आंग्ल शिक्षा-प्रणाली का सूत्रपात हुआ जिसका श्रेय मैकाले को है। मैकाले की शिक्षा-प्रणाली से अंग्रेजों के पैर भारत में जम गये क्योंकि तब अंग्रेजी पढ़-लिखों को ही नौकरी मिल सकती थी।

अंग्रेजी शिक्षा से एक लाभ भी हुआ। अंग्रेजी शिक्षित व्यक्तियों का आंग्ल-साहित्य के द्वारा पाश्चात्य जगत् के स्वतंत्रता-संबंधी विचारों से संपर्क स्थापित हुआ और अंग्रेजों के पांव जमने के साथ-साथ उनके पांव उखड़ने के आन्दोलन का भी सूत्रपात हो गया। शिक्षित-व्यक्तियों में स्वतंत्रता की लालसा जाग उठी। इस युग में जन्मे अनेक आन्दोलनों में शिक्षा-प्रणाली का आन्दोलन भी मुख्य था। अंग्रेजों का उद्देश्य था—अंग्रेजी जानने वाले बाबुओं की भर्ती, अंग्रेजी शासन की नींव को दृढ़ बनाना और शिक्षित जन-मानस को अपनी संस्कृति, व आदर्श, से विमुख बनाना। गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का आदर्श ऐसे व्यक्ति तय्यार करना था जो प्राचीन वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत, भारतीय संस्कारों तथा आदर्शों को जीवन में घटाकर देश की स्वतंत्रता के लिये अपने को तैयार कर सकें, तब गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का यह आन्दोलन देश के कोने-कोने में फैल गया। लक्ष्य था कि अंग्रेजों के लिये नौकर नहीं पैदा करना, बल्कि ऐसे व्यक्ति पैदा करना है जो भारतीय आदर्शों को जीवन में उतार कर यहां की संस्कृति और अन्ततोगत्वा भारत की स्वतंत्रता की रक्षा कर सकें। इस शिक्षा-प्रणाली के संचालकों ने यह समझ लिया था कि बचपन की शिक्षा के आधार पर ही देश में भावी नागरिक उत्पन्न होंगे।

सैनिकों की दिनचर्या ?

इस प्रणाली का बीज ऋषि दयानन्द-कृत सत्यार्थप्रकाश में था, परन्तु इसे मूर्तरूप दिया महात्मा मुंशीराम जी ने। गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का केन्द्र हरिद्वार के समीप रखा गया। जिस समय हरिद्वार के समीप कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना हुई, देश परतंत्र था और परतंत्रता के युग की प्रतिक्रिया का रूप ही शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल था। यद्यपि जिन सिद्धान्तों का उल्लेख हम पहले लेख में कर चुके हैं वे सिद्धान्त गुरुकुल के इस केन्द्र में आधारभूत रखे गये तथापि उन सिद्धान्तों के साथ-साथ परतंत्रता के सूचक सब चिन्हों को मिटा देना भी इस संस्था का उद्देश्य था। उदाहरणार्थ, शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया और उसी में रसायन, गणित, ज्यामिति, भौतिकी आदि विषयों को भी पढ़ाया जाने लगा। इन विषयों पर हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित की गईं। विद्यार्थियों को घुड़सवारी, तीरन्दाजी आदि सिखायी गयी। विद्यार्थियों की दिनचर्या सैनिकों जैसी रखी गई, प्रातः काल चार बजे उठ जाना, संध्या-उपासना के बाद भिन्न-भिन्न प्रकार के योगासान करना, दंड-बैठक-व्यायाम-कुश्ती करना जिससे शरीर पुष्ट हो, सर्दी-गर्मी सहना, जूता धारण न करना आदि को देखकर बरबस लोग कहते थे कि यहां तो सैनिक तय्यार किये जाते हैं।

एक दिन उत्तर प्रदेश के होम-सेक्रेटरी गुरुकुल पधारे। मैं उन्हें छोटे बच्चों के आश्रम में ले गया। वहां दैनिक दिनचर्या का बोर्ड टंगा था जिसमें प्रातः ४ बजे से रात्रि ८ बजे तक का सारा कार्यक्रम लिखा हुआ था।। पन्द्रह मिनट तक प्रोग्राम को पढ़ने के बाद वे बोले, आप जेल-जीवन के लिये बच्चों को तैयार कर रहे हैं। सरकारी क्षेत्रों में प्रसिद्ध था कि गुरुकुल कांगड़ी में क्रांति के सैनिक तय्यार किये जाते हैं। इसी किंवदन्ती को सुनकर लार्ड मेस्टन, लार्ड चेम्सफोर्ड तथा बरतानिया के प्राइम मिनिस्टर रैम्जे मैक्डोनाल्ड गुरुकुल देखने आये थे वे लोग चाहते थे कि गुरुकुल सरकारी मदद ले ताकि क्रांतिकारियों का दल गुरुकुल से उदासीन हो जाय। महात्मा मुंशीराम ने सरकार के हाथों बिकना अस्वीकार कर दिया। ऐसा था गुरुकुल, और इसकी शिक्षा-पद्धति, स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश का रूप-रंग बदल गया, देशवासियों का उद्देश्य बदल गया व उसके अनुरूप गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की सरकारी सहायता न लेने की नीति भी बदल गई। सरकार अपनी थी, और चाहती थी कि गुरुकुल-शिक्षा पद्धति के मूल-सिद्धान्त बने रहें और इसके लिये गुरुकुल-पद्धति के संचालकों के हाथ दृढ़ किये जावें। खेद है कि सरकार ने जिस उद्देश्य से हमें आर्थिक सहायता देना शुरू किया उसे क्रियात्मक रूप देने में हम सफल नहीं हुए क्योंकि हम भी बहाव के साथ बह गये। निःसंदेह

योजना देश व्यापी बने

गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति के आधारभूत सिद्धान्त शिक्षा-क्षेत्र में सर्वमान्य हैं। गुरु का अपने छात्रों को पुत्रवत् मानकर उनके साथ जीवन बिताना, सब छात्रों का एक साथ रहना, परस्पर भाई-भाई का संबंध रखना, ऊंच-नीच, जाति-पांति का भेद-भाव न होना, जल्दी सोना, जल्दी उठना सान्ध्योपासन करना, तपश्चर्या तथा ब्रह्मचर्य का जीवन बिताना, सात्विक भोजन और व्यायामादि से शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाना—कौनसी शिक्षा-पद्धति इन बातों को स्वीकार न करेगी ? इसी का नाम आश्रम-वास, गुरुकुल-वास है। इसी शिक्षा-पद्धति से मानव का समाज देश और विश्व का निर्माण हो सकता है। आज समय है। हम इस दिशा में कदम बढ़ायें कि परन्तु इसके लिये हमें गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की देश व्यापक योजना बनानी पड़ेगी।

गुरुकुल कांगड़ी को विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो चुकी है परन्तु इसमें गुरुकुलीयता नहीं आई। विश्वविद्यालय के छात्र साइकलों पर चढ़कर बाहर से आते हैं, और पढ़कर अपने-अपने घरों को चले जाते हैं। प्रोफेसरों का भी यही हाल है। गुरुकुल के क्वार्टर सस्ते हैं, इसलिए वे वहाँ रहते हैं, नहीं तो छात्रों के साथ उनका कोई नैतिक

(शेष पृष्ठ १० पर)

समस्याओं का ज्वार

क्या आर्यसमाज ऐसे महान् व्यक्तियों का निर्माण करेगा !

डा० शान्ति देवबाला

प्रत्येक राष्ट्र तथा राज्य की अपनी समस्यायें होती हैं चाहे वह धनी या निर्धन, विशाल या लघु, औद्योगिक या कृषिप्रधान हो। स्वतन्त्र हो या परतन्त्र, विकासशील हो अथवा विकसित, हर राज्य को समस्याओं का सामना करना ही होता है। विकासशील देशों में यदि गरीबी, दरिद्रता और महामारी की समस्यायें होती हैं तो विकसित देशों में परिवार की टूटन, मानव मूल्यों का अवमूल्यन, मानसिक रोगों की अधिकता जैसी समस्यायें है। प्रत्येक देश भी देह की भांति आधिभौतिक, आधिदैविक और आधिदैहिक तापो से जूझता रहता है। भौतिक तापो में सीमा विवाद, पड़ोसी देशों के उत्पात, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव, युद्धों का भय आदि ले सकते हैं, तो दैविक में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा, बाढ़, भू-स्खलन, आंधी, तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट आदि गिनाये जा सकते है। आधिदैविक समस्याओं मे हम उन समस्याओं को रखेंगे जो एक राज्य के नागरिको से या समाज से सबन्धित हैं, यथा गरीबी, असमानता, अशिक्षा, अन्ध विश्वास, शोषण आदि क्योंकि यह समस्यायें एक स्वस्थ सबल राज्य को दुर्बल करती हैं।

राज्य का मुख्य लक्ष्य ही समाज के विविध वर्गो की मांगो मे सतुलन तथा समन्वय रखना होता है और इस प्रकार प्रतिदिन समस्याओं का निराकरण ही राज्य को उत्तरजीवी बनाता है।

विकासशील आर्थिक अभावों से ग्रस्त समाजों मे तनाव कुछ अधिक ही होते हैं। भारत का इधर का इतिहास एक गुलामी से दूसरी गुलामी में जाने का इतिहास है। पराधीनता मे केवल राजनीतिक शोषण ही नहीं होता, आर्थिक शोषण और सामाजिक उत्पीडन उससे भी अधिक होता है। विजित जाति की सस्कृति, निष्ठायें, चिन्तन, साहित्य, जीवन मूल्यों, सभी का क्षण होता है।

महापुरुषो की दीपशृखला

सभवत यही कारण था कि अठारवीं शताब्दी में भारत पतन के अध-गर्तों मे गिर चुका था। राजनीतिक समस्याओं से एक दम उदासीन, चंद पैसों के लिये स्वतन्त्रता बेच देने को उत्सुक, खड-खड बंटा बिखरा यह हिन्दू समाज अधविश्वास तथा कुरीतियों से जकड़ गया था। बाल विवाह, विधवाविवाह निषेध, विदेश यात्रा की रुकावट, चौके-चूल्हे तक सीमित अशिक्षा, अज्ञान, सामाजिक या राष्ट्रीय आत्मबोध से हीन यह समाज भयातुर, दीन-हीन निर्बल हो चुका था। राजनीतिक गुलामी, आर्थिक शोषण सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक उत्पीडन से इस समाज का अस्तित्व एकदम मुरझा गया था। परन्तु सस्कृति के बीज यदि गहरे होते हैं तो समस्त अधकार और दबाव को झकझोरते हुए जीवन अकुर फिर निकल आते हैं। ऐसा ही कुछ दैवी चमत्कार सा भारत मे हुआ और उन्नीसवीं शताब्दी में, जैसे दबाव से कोयला भी हीरा बन जाता है, उस तथाकथित मरणासन्न समाज ने महापुरुषों की एक लम्बी शृखला को जन्म दिया। अन्धविश्वास की तमिस्र में राजा राममोहन राय, दयानन्द, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, विपिन चन्द्र पाल, अरविन्द घोष, सुभाष, रानाडे, तिलक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गाधी, भगतसिंह आदि अनेकानेक नामों की जैसे दीपमाला ही चली गयी है।

इस कड़ी मे दयानन्द की कड़ी अपनी तरह की अलग विशिष्ट और सशक्त कड़ी है। स्वामी दयानन्द ने १८२४ से १८८३ के जिस भारत में जन्म लिया और कार्य किया था वह भारत अनेक समस्याओं से ग्रस्त था। स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की सफलता का रहस्य ही यह है कि उन्होंने समस्याओं की चुनौती स्वीकार की, कुरीतियों का उन्मूलन करने के लिए तीव्र आन्दोलन किया और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने इन आदर्शों को आचरण में लाने का प्रयत्न किया।

राज्य नहीं व्यक्ति

स्वामी दयानन्द की समाज पुनर्निर्माण की अपनी एक विशिष्ट दृष्टि है। मार्क्स का कथन है कि समाज की व्यवस्था बदल देने से, विशेषकर समाज की अर्थव्यवस्था बदलकर मानव मात्र को बदला जा सकता है और वर्गहीन शोषण मुक्त, प्रजातात्रिक समाज की स्थापना की जा सकती है। मार्क्स के इस कथन से व्यावहारिक धरातल पर आने के लिए लेनिन ने राजशक्ति पर नियन्त्रण करना पहला लक्ष्य माना। इस प्रकार साम्यवादी राज्य, शीर्ष से अपने समाज या व्यक्तियों का समस्त जीवन नियन्त्रित करता है। राज्य ही पठन-पाठन, शिक्षा शैली, जीवन मूल्य, नैतिक मान्यतायें, विचार प्रणाली तथा सस्कृति बोध विकसित करने का जिम्मा लेता है। स्वामी दयानन्द की समाज निर्माण की प्रक्रिया ठीक इसके विपरीत नीचे से ऊपर जाती है। समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति के निर्माण पर वे विशेष बल देते हैं। व्यक्ति के जीवन को सयमित करते हुए परिवार प्रतिष्ठा और समाज निष्ठा की ओर साथ-साथ बढ़ना होता है। व्यक्ति के ही क्या, मानव जाति के निर्माण में धर्म का सबसे अधिक गहरा प्रभाव होता है — क्योंकि धर्म वह तत्व है जो मानव मात्र को धारण करता है।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले भारत मे फैली धर्मान्धता, धर्म रूढ़ियो अन्धविश्वासो और गलत धार्मिक प्रथाओं के सुधार पर बल दिया। धार्मिक क्षेत्र के सुधार के साथ-साथ ही सामाजिक सुधारों को भी उन्होंने लिया और राजनीतिक सुधारो की बात वे उठा रहे थे जब उनका निधन हुआ। पर एक क्रम स्पष्ट होता हैं कि सबसे पहले सुधार व्यक्ति, परिवार समाज और धर्म मे होना चाहिए। ऐसे धार्मिक और सामाजिक सुधार राजनीतिक स्वतन्त्रता के क्रमिक चरण हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि वह सुधार नागरिको को स्वय अपनी ओर से या अपनी विशिष्ट सस्थाओ का सगठन करके किए जाने चाहिए। राज्य से यह अपेक्षा नही करनी चाहिए कि वह यह प्राथमिक कार्य करेगा। यद्यपि धर्म की रक्षा करना राज्य का विशिष्ट कर्त्तव्य है।

इसी दृष्टि के फलस्वरूप आर्य समाज ने अपने प्राथमिक चरण मे धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र की बुराइयों को चुन-चुन कर ढूढा और उनके उन्मूलन के लिए कटिबद्ध हुआ। क्योंकि आर्य समाज समाज की विषम समस्याओ के उन्मूलन मे कटिबद्ध हुआ। इसलिए आय समाज का सुधार कार्यक्रम पर्वतीय नदी सा वेगवान बना। समाज, धार्मिक उन्मादों, विसगतियो रूढियो से छूट कर सामाजिक कुरीतियो को हटाने के लिए कटिबद्ध हुआ और सामाजिक कुरितियो से मुक्त भारतीय समाज ने राजनीतिक स्वतन्त्रता की माग की। हमने राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की और हिन्दू समाज शताब्दियो के बाद मुस्लिम गुलामी और फिर अग्रेजों की क्रमिक गुलामी से छुटकारा पा सका।

हमने सैंतीस वर्ष पहले स्वतन्त्रता के राजमार्ग पर यह सोच कर कदम रखे कि अब आग अगार की समस्याओं से निकल कर मुक्त समस्याहीन वातावरण में जी भर कर सास लेंगे।

समस्याओ की नई खेप

पर स्वतन्त्रता विभाजन की समस्या से जुड़कर ही मिला पाई और आज सैंतीस वर्षों मे लगता है, समस्याओ का नया खेप ही तैयार हो गया है।

राजनीति के क्षेत्र में सत्ता की लोलुप अधी दौड़, वोट पर आधारित राजनीति के कारण विशिष्ट अल्प सख्यको का बुद्धिहीन तुष्टीकरण, साम्प्रदायिक तनावों के विस्फोट, धर्म निरपेक्षता का स्वाग, राष्ट्रीय एकता में तड़कती दरारें, पजाब, आसाम पूर्वांचल की समस्यायें, पड़ोसी राष्ट्रो द्वारा भारतीयो का लगातार निष्कासन, व्यापक भ्रष्टाचार, खोखली चुनाव प्रणाली, ढहता लोकतान्त्रिक ढाचा और निष्प्रभ होती न्यायपालिका है। राष्ट्र की रक्षा का जिन पर उत्तरदायित्व है वे स्वय विघटन को बढ़ावा दे रहे हैं। भाषावाद पथवाद, प्रातवाद जातिवाद ने सारी राजनीति को भ्रष्ट किया है।

आर्थिक क्षेत्र में विकास की घटती दर, कृषि उत्पादन मे ठहराव, ४८ ४० प्रतिशत का गरीबी की रेखा के नीचे होना, नगर और ग्रामो के बीच बढ़ता अन्तर, सपन्नता के बीच की गहरी खाई, छोटी छोटी उपभोक्ता सामग्री का आयात, विदेशी व्यापार मे गिरती साख, गैरबराबरी और आर्थिक असमानता को सामाजिक स्वीकृति, एक खास छोटे अभिजन वर्ग को अनगिनत सुविधाएं आदि हैं। बेरोजगारी, दरिद्रता तथा आर्थिक विषमता ने हमें दुर्बल किया है। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र मे फिर अधविश्वास, फलित ज्योतिष पर अवैज्ञानिक विश्वास, तात्रिक कर्मकाण्ड, धर्म के नाम पर व्यापक हिंसा, स्त्रियो का शोषण, सतीप्रथा, वधुवध अनीति, सामाजिक चेतना का अभाव, मानवीय मूल्यों का विघटन, राष्ट्रीय चरित्र का सकट, भटकती दिशाहीन नशीली गोलियो का सेवन करती युवा पीढ़ी आदि अनेकानेक विसगतिया इधर उभरी हैं।

देश यदि राजनीतिक विघटन के कगार पर खड़ा है तो पारिवारिक और सामाजिक विघटन भी कम नही है। आज फिर इन सामाजिक बुराइयो से जूझने की आवश्यकता है। जो पैसे के लोभ मे पत्नी को घास—फूस की तरह जला सकता है वह आर्थिक शुचिता अपनायेगा और राजनीति मे राष्ट्र निष्ठा के प्रति सतर्क रहेगा यह मानना निपट भ्रम ही होगा। सीढ़ियो को क्रम से ही चढ़ना होता है। लोक शक्ति का सगठन करके उसे जागरूक करना होगा।

अवतार की बाट नही

हम अपनी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये किसी कल्कि अवतार की बाट न जोहते रहे। आय समाज जैसे समस्याओ के पहले खेप से जूझा था और उसने सामाजिक क्राति की थी वही चुनौती आज फिर है समस्याओ का एक नया खेप फिर हावी है। समस्यायें रावण की भाति दसमुखी ही नहीं सहस्त्रमुखी होती हैं। स्वामी दयानन्द

(शेष पृष्ठ १० पर)

पत्रों के दर्पण में

राष्ट्रवादी हिन्दू के हितों का संरक्षण हो

देश के हिन्दू समाज को यदि देश को बचाना है तो उसे संगठित होकर अपनी राजनीतिक पहचान स्थापित करनी होगी अन्यथा इसकी कोई बात न सरकार सुनेगी न अन्य राजनीतिक दल। मुसलमानों की राजनीतिक पहचान के रूप में मुस्लिम लीग मौजद है, सिखों (देश की जनसंख्या के मात्र लगभग २ प्रतिशत) की भी अकाली दल के नाम से राजनीतिक पहचान है और वे संगठित हैं। किन्तु दुर्भाग्य कि हिन्दू विभिन्न राजनीतिक दलों में बंटा है और ये सभी दल हिन्दू हितों की उपेक्षा कर देश के अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण की नीति अपनाते चले आ रहे हैं। इससे हिन्दू हितों का संरक्षण करने वाला देश की संसद और सरकार में कोई नहीं है।

अत:, यदि हिन्दू-हिन्दुस्थान को बचाना है तो सभी राष्ट्रवादी हिन्दुओं को विभिन्न राजनीतिक दलों को छोड़कर अपना एक अलग राजनीतिक मंच बना कर ही चुनाव लड़ना चाहिए, भले ही कम स्थानों पर विजय मिले। इससे कुछ लोग तो संसद में ऐसे पहुंच ही जायेंगे जो हिन्दू हितों की बात कर सकेंगे। यदि हिन्दू समाज ने संघ के श्री बालासाहेब देवरस के आह्वान की अवहेलना की और अपने मत इन विभिन्न दलों में बंटे लोगों को ही देकर विजयी बनाते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब इस देश के पुनः विभाजन का षड्यन्त्र सफल हो जाएगा और देश फिर एक बार विभाजित हो जाएगा। अतः समस्त हिन्दू समाज के नेताओं और मतदाताओं से मेरा निवेदन है कि उन्हें अपने देश और देश के मानबिन्दु गीता, गाय, गायत्री की रक्षा करने के लिए संगठित होकर एक मंच पर आकर देश में अपनी राजनीतिक पहचान स्थापित करनी चाहिये। यदि इसी प्रकार बंटे रहे तो आने वाले दिनों में यहाँ कोई भी हिन्दू नहीं रह पायेगा। न मन्दिर बचेंगे—न राम और श्याम। —प्रोमिला शर्मा, मोती बाग, नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री की अन्त्येष्टि

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का भावना भरा जो अन्त्येष्टि-कर्म टेलीविजन-दूरदर्शन पर दिखाया गया उसमें आर्य समाज के पण्डितों की भी आवाज सुनाई देती थी। उन्होंने प्रार्थना-मन्त्र, शान्ति प्रकरण के मन्त्र पढ़े, ईशावास्योपनिषद् का पाठ भी किया तथा गायत्री मन्त्र से स्वाहाकार के साथ आहुतियां भी दीं। इनका वैदिक अन्त्येष्टि कर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं।

यदि कोई सज्जन वैदिक विधि से अन्त्येष्टि कर्म नहीं कराना चाहते तो आर्य विद्वान् वहां जाकर हास्यास्पद क्यों बनें? श्रद्धाञ्जलि तो शालीन ढंग से भी दी जा सकती है। —सत्यदेव विद्यालंकार, शांति सदन, १४५/४, सेंट्रल टाउन, जालंधर।

पौरोहित्य अधिष्ठाता परम्परा शुरू हो

सार्वदेशिक—राष्ट्रीय-प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के वेद-प्रचार अधिष्ठाताओं की तरह पौरोहित्य अधिष्ठाता भी हर स्तर पर हों। सार्वदेशिक का पौरोहित्य अधिष्ठाता, राष्ट्रीय अधिष्ठाताओं से, सूचनायें प्राप्त करे, उनका मार्ग दर्शन करे। इसी प्रकार आगे क्रम चलता रहे।

सब में त्रिविध (शारीरिक-आत्मिक-सामाजिक) उन्नति करने की क्षमता उत्पन्न करना भी एक कार्य है पौरो० अधि० का। जिला पौरो० अधि० के आगे प्रखण्ड (या नगर) स्तर पर पौरो० अधि० बने तो बहुत अच्छा। योग के माध्यम से उन्नति तथा परिवार (या कुटुम्ब) में मधुरता से सामाजिक उन्नति कराने का सतत् प्रयास पौरो० अधि० करें।

आर्यसमाज भवन में पुरोहित सब आर्य सभासदों (परिवार-पत्नी-संतानों) की गोष्ठी कराये। अलग-२ तथा पूरे परिवार की सम्मिलित गोष्ठियों के अतिरिक्त पुरोहित हर सभासद् के परिवार में जाये व सबकी सम्मिलित तथा व्यक्तिगत चर्चाओं से पारिवारिक स्वास्थ्यवर्द्धन करे ताकि परिवार जनों में परस्पर स्नेह बढ़े। यह कार्य इतना प्रभावशाली हो सकता है कि जो आर्य सभासद् नहीं वे भी आर्य पुरोहित को बुलाने लगेंगे। पुरोहित हर सभासद् की संतानों का पूरा विवरण भी रखे ताकि आर्य पुत्र-पुत्री के विवाह सम्बन्धी मार्गदर्शन कर सके।—रामस्वरूप, स्वाध्याय-सुख, गणेशकुटीर, गेंदालाल मार्ग, अजमेर-३०५००१

मारीशस विशेषांक पर बधाई

"'आर्य जगत्' का 'मारीशस-दीपावली' विशेषांक परम्परागत रूप से खोजपूर्ण सामायिक जानकारी सहित पठनीय व संग्रहणीय रहा। मारीशस के यथार्थ चित्रांकन के सफल प्रयास हेतु बधाई। सम्पादकीय तो महत्वपूर्ण था ही।"—रामकुमार आर्य, ग्रा० प० दुल्लागढ़, गोहाना (सोनीपत)

भविष्य निर्माण में सहायक

"श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ के समाचारों को समुचित स्थान देने हेतु अपनी संस्था सहित आभारी हूं तथा विश्वास है कि भविष्य में भी इस विषय पर आपका सहयोग उपलब्ध रहेगा। देश के भविष्य निर्माण का महत्वपूर्ण दायित्व 'आर्यजगत्' ने स्पष्टता से निभाया है।"

—अशोक सिंहल, विश्व हिन्दू परिषद्, सेक्टर ६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-२२

वृष्टि यज्ञ सफलता का दावा

"फरमाना के श्री रामनारायण आर्य ने दावा किया है कि हरियाणा में अनावृष्टि और अतिवृष्टि द्वारा अकाल की संभावना समाप्त करने हेतु उन्होंने ७ अगस्त से १६ अगस्त तक प्रदेश के विभिन्न अंचलों में दोनों प्रकार के सफल यज्ञ किये हैं। गुजरात में अनावृष्टि निवारण यज्ञ आयोजन का निमंत्रण श्री आर्य ने स्वीकार कर लिया है। यदि यहां प्रयोग सफल रहता है तो आर्यजन यश के भागी होंगे साथ ही इससे वैदिक मत की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।"

—हरिभाऊ पटेल, 'सुरेश', ६ कैलासवाडी, जंक्शन प्लाट, राजकोट-१

अन्तर्जातीय विवाह और आर्यसमाज

मेरा अनुभव है कि लोग—जिनमें कट्टर सनातनी भी शामिल हैं—अन्तर्जातीय विवाहों के मौके पर ही आर्यसमाज को याद करते हैं। वैदिक आन्दोलन की ठोस प्रगति की दृष्टि से मेरा सुझाव है कि समाज प्रत्येक विवाह से पूर्व वर-वधू की वैचारिक मान्यता स्पष्ट जान लें।—आशालता, १४-१४३, नया राजनगर, गाजियाबाद।

इतिहास की विकृत पुस्तकें

हरियाणा शिक्षा बोर्ड की इतिहास की पुस्तकों में विषय के साथ अन्याय किया गया है। मैट्रिक के भारतीय इतिहास में शेरशाह सूरी से औरंगजेब तक सभी मुस्लिम शासकों का उल्लेख है, पर पृथ्वीराज के बाद के हिन्दू सम्राटों का कहीं नाम तक नहीं। आर्य संस्थायें पहल करें तो विशाल जनमत—विशेषत: मौजूदा चुनावी माहौल मे—सरकार को यह विकृति सुधारने को अवश्य बाध्य कर देगा।

—ज्ञानचन्द गोयल, उपमंत्री आर्य युवक परिषद, मालव, मेवात।

ऐतिहासिक पत्रों की चोरी

कभी आर्यसमाज की धूम थी। दूर-दूर तक वैदिक पाठशालाओं का जाल बिछाने वाले कार्यकर्त्ताओं में नंगे पैर कच्ची सड़कों पर चलने वाले मा० बूटाराम जी भी थे जिनका परिवार आज सिख व देवी-पूजक हो गया है। मा० जियालाल की सहायता से उनसे मैंने श्री खुशालचन्द खुर्सन्द (आनन्द स्वामी) तथा श्री देवीचन्द दलितोद्धारक के पत्र सहित १९३४ की वार्षिक रिपोर्ट प्राप्त की थी जो नयी दिल्ली स्टेशन पर मेरे ट्रंक के साथ चोरी हो गयी, जिसकी पुलिस में रिपोर्ट भी की। अपने लगभग एक हजार रुपयों से कहीं ज्यादा अफसोस मुझे उन ऐतिहासिक पत्रों की चोरी का है।"
—रोशनलाल आर्य, आर्य समाज, तिहाड़ ग्राम, तिलक नगर, नई दिल्ली।

'तूफान के दौर से-पंजाब'

कांस्टिट्यूशन क्लब में पुस्तक के विमोचन का भव्य समारोह

[illegible] नवम्बर को नई दिल्ली के विट्ठल भाई पटेल भवन (कांस्टिट्यूशन क्लब) में उत्तर प्रदेश के आबकारी मन्त्री और दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा० बलदेव सिंह ने दैनिक हिन्दुस्तान के पूर्व सहायक सम्पादक और "आर्य जगत्" के वर्तमान सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित "तूफान के दौर से पंजाब" नामक पुस्तक का विमोचन किया और पुस्तक के लेखक को बधाई देते हुए बधाई दी कि उन्होंने पंजाब की समस्या के सम्बन्ध में अनेक रहस्य एवं तथ्यों का उद्घाटन करने वाली यह महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है।

इस अवसर पर अंग्रेजी के प्रसिद्ध पत्रकार श्री खुशवन्त सिंह ने कहा कि पंजाब की समस्या को हिन्दू-सिख या सरकार और विपक्ष की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने लेखक द्वारा वर्णित कुछ तथ्यों के सम्बन्ध में कहा कि सिख इतिहासकार उन तथ्यों की अलग ढंग से व्याख्या करते हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि आजादी के बाद भारत में सिखों से कोई भेदभाव नहीं बरता गया है। साथ ही उन्होंने यह विश्वास भी दिलाया कि किसी भी सूरत में देश का विभाजन नहीं हो सकता, क्योंकि देश की जनता में अनेक विषमताओं के बावजूद गम्भीर एकता विद्यमान है।

दैनिक हिन्दुस्तान के समाचार सम्पादक श्री विश्वमित्र उपाध्याय ने आजादी से पहले सिखों की बहादुरी और देशभक्ति की चर्चा करते हुए साम्राज्यवादियों के उस अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र का जोरदार शब्दों में उल्लेख किया जिसके कारण संसार के सभी अविकसित या विकासशील देशों में वे वहां के लोकप्रिय नेताओं को मरवाने का प्रयत्न करते हैं।

जनसत्ता के सम्पादक श्री प्रभाष जोशी ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि पंजाब की समस्या को सुलझाने के लिए अभी तक हम केवल अंग्रेजों द्वारा चलाई गई राजनीति की चाबी से ही ताला खोलने का प्रयत्न करते हैं, जबकि यह समस्या केवल भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण को अपनाकर ही हल की जा सकती है। उन्होंने कहा कि जब से सिख अपने पंथ की मूलभूत आध्यात्मिकता को छोड़कर भौतिकता और सत्ता की लिप्सा में पड़ गये तभी से समस्या प्रारम्भ हुई।

प्रताप और वीर अर्जुन के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने श्री खुशवंत सिंह की बात का जवाब देते हुए कहा कि प्रश्न इतिहासकारों द्वारा किसी तथ्य की भिन्न भिन्न प्रकार की व्याख्याओं का नहीं है। प्रश्न तो उन तथ्यों का है जिनको आप झुठला नहीं सकते। क्षितीश जी ने इतिहास के प्रामाणिक स्रोतों से उन्हीं तथ्यों का उद्घाटन किया है जो किसी भी पाठक को चौंकाए बिना नहीं रह सकते। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों पंजाब के सम्बन्ध में अंग्रेजी में भी 4-5 पुस्तकें निकली हैं और वे दिग्गज पत्रकारों द्वारा लिखी गई हैं। मैंने वे सब पढ़ी हैं और आज मैं खुले आम स्पष्ट रूप से कहता हूं कि जिस प्रकार का मार्मिक विश्लेषण क्षितीश जी की इस पुस्तक में हुआ है वैसा किसी अंग्रेजी की पुस्तक में भी आज तक नहीं हुआ। उन्होने कहा—'कि मैं तो क्षितीश जी से आग्रह करूंगा कि वे इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद करके प्रकाशित करें जिससे अंग्रेजी जानने वाले समस्त बुद्धिजीवी भी, जो आज सारे समाज पर हावी हैं, सच्चाई को सही रूप में जान सकें।

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने कहा कि यूरोप के इतिहास लेखक अपने देश के इतिहास की उन घटनाओं का भी उल्लेख करने से नहीं चूकते जो देश की जनता को अप्रिय लगें। परन्तु भारतीय इतिहासकार प्रायः ऐसे तथ्यों को नजरअन्दाज कर जाते हैं। क्षितीश जी ने ईमानदारी से इतिहास के गर्त में छिपे उन तथ्यों का अपनी विशिष्ट शैली में प्रतिपादन किया है जिससे यह पुस्तक इतिहास से सम्बद्ध होते हुए भी उपन्यास से अधिक रोचक बन गई है।

"नवभारत टाइम्स" के सम्पादक श्री राजेन्द्र माथुर ने अध्यक्ष पद से कहा कि सिखों ने एक काल्पनिक भय अपने मन में पैदा कर लिया और उसका ढिंढोरा पीटते रहे। पहले अंग्रेजों ने उनमें अलगाव की भावना भरी, फिर देश के विभाजन के पश्चात कुछ विदेशी शक्तियां भारत में अस्थिरता पैदा करने के उद्देश्य से उस अलगाव को बढ़ावा देने लगीं। विदेशों में बसे, साम्राज्यवाद के एजेंट, कुछ पैसे वाले सिखों का भी अलगाव की भावना भरने मे कितना बड़ा योगदान है, इसका विवेचन क्षितीश जी ने बहुत अच्छे ढंग से अपनी पुस्तक में किया है।

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से यह आयोजन किया गया था जिसमें साहित्यकार, पत्रकार, अन्य बुद्धिजीवी तथा प्रबुद्ध नागरिक बहुत अच्छी संख्या में उपस्थित थे। इस पत्रकार परिचर्चा का संचालन हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महामन्त्री श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने किया। पुस्तक के विमोचन से पूर्व श्रीमती इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या पर सम्मेलन की ओर से एक शोक-प्रस्ताव भी पास किया गया।

बम्बई में दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

बम्बई महानगरी की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य समाज सान्ताक्रूज के तत्वावधान में रामलीला मैदान चर्चगेट में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता में 18, 19 अक्तूबर को मनाया गया। 18 अक्तूबर को फिल्मी कलाकारों एवं संगीतकारों द्वारा संगीतमय श्रद्धांजलि के साथ समारोह आरम्भ हुआ। संगीतकार सुमित्रम् की पार्टी ने महर्षि दयानंद सरस्वती के गुणगान के गीतों को नयी-नयी धुनों से सजाकर उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। रेडियो-टी० वी० कलाकार श्री सतीश सुटानी, पार्श्वगायिका सुश्री [illegible] शिवराम एवं श्री दीपक चौहान द्वारा गाये गये गीत काफी समय तक जनता के हृदयों में अंकित रहेंगे। नागपुर के श्री कृष्ण कुमार चौबे ने अपनी कविता से सारे वातावरण को कवितामय कर दिया।

19 अक्तूबर को सायं 6 बजे से आर्य जगत् के [illegible] सन्यासी डा० सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता में [illegible] समारोह [illegible] गया। [illegible]

[illegible] जैनधर्म के श्री हरीश सी. जैन, इस्लाम धर्म के श्री डा० खुर्शीद नमोल, सनातनधर्म सभा के अध्यक्ष और विश्व हिन्दू परिषद् के ट्रस्टी श्री सदाजीवतलाल जी ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती को भावभीनि श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर आर्य विद्वान एवं आर्य जगत् के सम्पादक पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार दिल्ली, डाक्टर अमरेश आर्य हैदराबाद, श्री कृष्णकुमार चौबे नागपुर, संसद सदस्य आचार्य भगवानदेव, महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य श्री प्रेमकुमार शर्मा एवं फिल्म जगत की ओर से सर्वश्री असितसेन एवं श्री मोती सागर आदि ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपने श्रद्धा-सुमन भेंट किये। इस अवसर पर श्री देवेन्द्र कपूर, प्रधान, आर्य समाज सान्ताक्रूज द्वारा लिखित "वैदिक सोरस्" तथा अन्य तीन पुस्तकों का विमोचन स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा किया गया।

डा० खुर्शीद ने कहा कि जो हिन्दु धर्म को छोड़कर अन्य मजहबों में चले गये थे उन्हें शुद्धि का चक्र चलाकर दयानंद और उनके अनुयायियों ने पुनः अपने अंक लगा लिया। अनेक वक्ताओं ने कहा कि पिछले 100 वर्षों में जो प्रगति आर्य समाज ने की है, कोई भी धर्म या संस्था उतनी प्रगति नहीं कर सकी। आज देश-विदेश में 3000 से अधिक समाजें एवं संस्थाएं हैं एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार के पश्चात सब से बड़ा विस्तार आर्यसमाज की शिक्षा संस्थाओं का है। आज आर्यसमाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जो देश को सही दिशा दे सकती है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा, महर्षि दयानंद ने सोई हुई एवं अज्ञानता, अन्धविश्वास में भटकती आर्य जाति को सही मार्गदर्शन देकर एकता के सूत्र में बांधने का और समाज पर लगे अनेक कलंकों को जड़ से मिटाने का प्रयत्न किया। 20 अक्तूबर को सायं 6 बजे से श्री नरेन्द्र जुनेजा के निवास "इदंनमम्" के प्रांगण में यज्ञ से समारोह की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। श्रीमती शिवराजवती ने बहुत सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। श्री पं० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार ने आर्यसमाज को देश और समाज का सजग प्रहरी बताते हुए कहा कि हमें देश और धर्म को बचाने के लिए सदा जागरूक रहना होगा, आर्य समाज के बिना देश का कल्याण सम्भव नहीं।

श्री कृष्ण कुमार चौबे की कविता "ज्योति-ज्योति में विलीन हो गयी" ने उपस्थित जन समूह को भावविभोर कर दिया। डा० अमरेश आर्य तथा पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने आग्रह किया कि महर्षि दयानंद के सन्देश को फैलाने के लिए हमें मिशनरी तैयार करने होंगे, जो हमारी संस्कृति और सभ्यता को देश-विदेश तक पहुंचाकर सत्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाएं। हमारा बहुमुखी उद्देश्य होना चाहिए। श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने घोषणा की कि श्री अमरेश आर्य ने संकल्प किया है कि वह एक लाख सत्यार्थप्रकाश अरबी भाषा में प्रकाशित करके स्वामी दयानंद सरस्वती के सन्देश को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाएंगे। श्री अमरेश आर्य अनेक भाषाओं के विद्वान हैं तथा कुछ समय पूर्व ही इस्लाम से वैदिक धर्म में दीक्षित हुए हैं।

21 अक्तुबर को प्रातः आर्यसमाज सान्ताक्रुज में महर्षि दयानंद बलिदान शताब्दी समारोह के सन्दर्भ में विशाल सार्वजनिक सभा का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर पं० क्षितीश वेदालंकार तथा डा० अमरेश आर्य एवं पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी के भाषण हुए। श्री अमरेश ने कहा आर्यसमाज का कार्य किसी व्यक्ति विशेष का नहीं सारे संसार के कल्याण का कार्य है। इसे आगे बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिए, जहां विश्व की सभी भाषाओ के विद्वान तैयार करके देश विदेश में भेजकर सत्य सनातन वैदिक धर्म का सन्देश पहुंचाना चाहिए।

सायं आर्यसमाज काकडवाडी में समारोह का समापन समारोह आयोजित किया गया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने आशीर्वाद में कहा, बम्बई की यह आर्यसमाज संसार की सवप्रथम आर्य समाज है, जहां से ऐसे कार्य सदा होते रहे जिससे अन्य समाजें प्रेरणा लें। यह समाज आर्य जगत् के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

कैप्टिन देवरत्न आर्य—महामन्त्री,
संयोजक एवं स्वागताध्यक्ष।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली...

(पृष्ठ ६ का शेष)

सम्बन्ध नहीं। अन्य स्कूल कालेजों की तरह वे पढ़ाकर अपने घर आ बैठते हैं। रहना-सहना उनका दूसरे अध्यापकों जैसा ही होता है। कोट, पतलून में रहते और स्कूटरों पर चढ़कर आते-जाते हैं। तपश्चर्या का वातावरण कहीं नहीं है। वे गुरुकुल में रहने वाले गुरु या आचार्य नहीं बल्कि लेक्चरार, रीडर तथा प्रोफेसर हैं। कोई ऐसा कदम उठाना होगा, ऐसी योजना बनानी होगी जिससे गुरुकुल विश्वविद्यालय वास्तविक अर्थों में देश या विश्व-व्यापी गुरुकुल-पद्धति का प्रतीक बनें।

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति का मूलाधार तो गुरुकुल कांगड़ी ही है जिसे दो भागों में बांटा जा सकता है। एक भाग तो वह, जो चालू पद्धति पर ही चल रहा है। दूसरा वह, जिसमें गुरुकुल-पद्धति के सिद्धान्त ही लागू हो रहे हैं, या हो सकते हैं। दूसरे भाग को गुरुकुल कहकर हम ग्रांट पहले भाग के लिये ले रहे हैं। पहले भाग में छात्रों की संख्या अधिक है, परन्तु वह नाममात्र का गुरुकुल है; दूसरे भाग में छात्रों की संख्या कम है, परन्तु यथार्थ में वही गुरुकुल है। इस गड़बड़-झाले में से निकलने का उपाय यही है कि हम दूसरे भाग को इतना बढ़ायें कि उसमें पढ़ने वाले छात्र ही पहले भाग में प्रविष्ट हों, और धीरे-धीरे स्थिति यह आ जाय कि पहले भाग में सिर्फ गुरुकुल में शिक्षा-प्राप्त ऐसे छात्र ही रह जायें जिन्होंने गुरुकुल के विद्यालय-विभाग में शुरू से शिक्षा प्राप्त की हो। गुरुकुल कांगड़ी में विद्यालय-विभाग से विश्वविद्यालय-विभाग तक वही छात्र जायें जो गुरुकुल शिक्षा-पद्धति से पढ़े हों, जिनका सोना-जागना, खाना-पीना, बोलना-चालना, वेश-भूषा—सब-कुछ गुरुकुलीय हो। जब ऐसे छात्र जो ६-७ वर्ष की आयु से गुरुकुल में प्रविष्ट होकर शिक्षा-काल के अन्तिम समय तक गुरुकुल में ही रहते हुए पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर निकलेंगे, तब गुरुकुल-शिक्षा का असली शुद्ध रूप निखर कर उभरेगा।

केवल पुस्तक नहीं

जहाँ तक पुस्तक-शिक्षा का प्रश्न है, हमें यह समझकर चलना चाहिए कि गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति वास्तव में जीवन की पद्धति है। शिक्षा के क्षेत्र में हम जहां संस्कृत साहित्य, दर्शन तथा वेदादि प्राचीन ग्रन्थों एवं उनकी रिसर्च पर विशेष ध्यान देते हैं, वहां पाश्चात्य विद्याओं को भी पाठविधि में यथोचित स्थान देते हुए यह ध्यान रखते हैं कि हमारी शिक्षा गुरुकुलीय-जीवन पद्धति को अपना मूल समझे और जीवन-निर्माण की उस शिक्षा को सर्वतः मूर्धन्य समझे। गुरुकुल एक ऐसी संस्था बने जिसमें शिक्षा तथा जीवन के उन सिद्धान्तों को प्रधानता दी जाती हो जो व्यक्ति, समाज, देश तथा विश्व के उन्नयन के लिये आवश्यक हैं। इसमें ऐसे ही कार्यकर्ताओं का संग्रह हो जिनके जीवन में पूर्व उल्लिखित वे मूल-तत्व ओत-प्रोत हों। जब हम गुरुकुल विश्वविद्यालय को इस स्थिति में लायेंगे तब अगला कदम उठाना होगा, और वह कदम होगा गुरुकुल की जीवन-प्रणाली को शिक्षा क्षेत्र में सर्वव्यापी बना देना।

किसी संस्था के सर्वव्यापी होने के लिए उसकी जड़ों और शाखाओं का देश तथा विश्व के कोने-कोने में फैलना आवश्यक है। विश्व से पहले इस जीवन-प्रणाली के देशभर में फैल जाने की जरूरत है। गुरुकुल जीवन-पद्धति का एक आन्दोलन है जिसका उद्देश्य उस मानव का निर्माण करना है जैसा हम समाज, देश और विश्व में देखना चाहते हैं ऐसा मानव, जो [illegible] से युक्त हो [illegible] जीवन का निर्माण करें। इसके लिये नींव का काम गुरुकुल-जीवन-पद्धति के उन मूल-तत्वों को उभारने से ही किया जा सकता है [illegible] शिक्षित होकर भी हम अशिक्षित ही रहेंगे। ऐसी जीवन-पद्धति को गुरुकुल विश्वविद्यालय में केन्द्र बनाकर उसकी शाखाएं हर शहर, हर राज्य में खोलने की योजना को देश-व्यापक रूप देने से ही नव-मानव का निर्माण हो सकता है। देश-व्यापी गुरुकुल विश्वविद्यालय से संबद्ध गुरुकुलों में, एक प्रकार से इस विश्वविद्यालय की शाखाओं में क्या पढ़ाया जाय, यह सरकार के शिक्षा-मंत्रालय पर छोड़ देना चाहिये ताकि पुस्तकीय, शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुलीय विश्वविद्यालय तथा अन्य विश्वविद्यालयों में छात्रों का आदान-प्रदान तथा शैक्षणिक संपर्क बना रहे। देश की आवश्यकता पुस्तकीय शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलीय-जीवन के सिद्धान्तों को व्यापक रूप देने की है। सिर्फ पुस्तकीय-शिक्षा से जीवन नहीं बनता। पुस्तकीय-शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलीय-जीवन की शिक्षा देने से ही जीवन बन सकता है। इसलिये, गुरुकुल शिक्षा-पद्धति को जो जीवन की एक पद्धति है, देशव्यापी बनाने की आवश्यकता है।

पता—W-77A, ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली-48

क्या आर्यसमाज ऐसे......

(पृष्ठ ७ का शेष)

फिर लौट कर हमें बचाने के लिए सशरीर नहीं आ सकते पर उनकी विचार धारा हम आर्य समाजियों को इन समस्याओं के निराकरण के लिये कटिबद्ध होना ही चाहिए। भारत के गांव तो आज भी अशिक्षा, अंधविश्वास, अज्ञान के अन्धकार में डूबे हैं—नगरों और शहरों में भी तंत्र-मंत्र, देवी जागरण, पूजा का कर्म कांड, नये इन्सान भगवानों की पूजा अर्चना और फलित ज्योतिष पर विश्वास अधिक होता जा रहा है। शिक्षित वर्ग में भी स्त्रियों को जला कर मारने की जघन्य प्रवृत्ति उभर रही है। नरबलि, सतीदाह, भेंट चढावा बढ़ा ही है। हमारा समाज आज अपने राष्ट्र की विषम चुनौतियो का साहसपूर्ण मुकाबला करने के स्थान पर कुरीतियों के आवरण में अपने को सुरक्षित मान बैठा है।

सामाजिक विघटन, आर्थिक वैषम्य और राजनीतिक पतन में सीधा संबंध है। एक स्वस्थ सबल, अंधविश्वास और काल बाह्य रूढ़ियों से मुक्त, नैतिक अनुशासन और चुनौतियों का व्यावहारिक सामना करने का मनोबल लिये मानव समाज ही आर्थिक अन्याय और राजनीतिक विघटन को रोक कर सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। आर्यसमाज की इस चुनौती के प्रति जागरूक होना ही चाहिये। समस्यायें जितनी जटिल और बड़ी होती है उन्हें सुलझाने वाले व्यक्तित्व उतने ही अधिक प्रतिभावान और बड़े होते हैं। क्या आर्यसमाज ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण कर पायेगा—यह एक मौलिक प्रश्न है।

पत्ता ४२३ सी महानगर सैक्टर, बी०
लखनऊ २२६००६

प्रभु महिमा.....

(पृष्ठ २ का शेष)

(17) वृक्षों की ओर देखिये। कैसी अद्भुत रचना है कि धरती के अन्दर से जल चढ़कर प्रत्येक पत्रों के शिखर तक पहुंच जाता है।

(18) वायुमण्डल का तापमान कितना ही हो, हमारे शरीर का तापमान 98.4° ही रहता है।

(19) वायुमण्डल का तापमान शून्य हो जाये तो नदियों का पानी जम जाता है किन्तु—4° हो जाये तो बर्फ बननी बंद हो जाती हैं और मछलियां बर्फ के नीचे तैरती रहती हैं अन्यथा सब मर जायें।

(20) मोर और तितलियों के परों में कौन कलाकार आश्चर्यजनक चित्र और सुन्दर रंग भर कर उन्हें इतना मनोहर बना देता है?

विश्व एक पर्दा है जिसके पीछे इस को चलाने वाला सूत्रधार बैठा है। उसी के चमत्कारों को देख कर मनुष्य कहने पर मजबूर हो जाता है—

किसी से तेरा पार जाये न पाया।
तू बे अन्त है तेरी बे अन्त माया॥

अंगरेज योगी पाल ब्रन्टन ने कई वर्ष हिमालय में साधना करने के पश्चात् लिखा था कि वैज्ञानिकों की बुद्धि प्रशंसनीय है किन्तु वे अभी तक भगवान की महिमा का क, ख, ग, ही बता पाये हैं, ष, स, ह, का कुछ ज्ञान नहीं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक एल्बर्ट आईन्सटीन ने कहा है कि जो कोई विज्ञान की गम्भीरता से खोज करता है वह इस निश्चय पर पहुंच जाता है कि ब्रह्माण्ड में एक महान् सत्ता काम कर रही है जिसके आगे हमें नतमस्तक होना पड़ता है—

गुरु नानक ने दो ही शब्दों में निर्णय दे दिया।

तेरियां तू जाले करतार।
तेरियां तू जाने

पता—94 निब्बाना, बांद्रा, बम्बई

वेद प्रचार अभियान

हिसार (हरियाणा): आर्यसमाज ने कंवारी, सातरोड़ कलां, धमाना, उमरा, बूरा तथा बालावास ग्रामों में १० से १६ नवम्बर तक वैदिक धर्म प्रचार सप्ताह मनाया। आयोजनों में स्वामी रत्नदेव, स्वामी आनन्दमुनि, डा० सुदर्शनदेव आचार्य आदि शीर्ष वैदिक प्रवक्ताओं सहित प्रख्यात भजनीक श्री सुमेरसिंह आदि ने भाग लिया।

टोहाना (हरियाणा): आर्यसमाज ने प्रभावपूर्ण ढंग से महर्षि निर्वाणोत्सव मनाया। स्वामी ध्यानानन्द के प्रवचन, श्री अमर सिंह भजनोपदेशक के भजनों ने लोगों को काफी प्रभावित किया। गांव रत्ताखेड़ा में भी दो दिवसीय वेद-प्रचार कार्यक्रम रखा गया।

भिवानी (हरियाणा): आर्य प्रतिनिधि सभा ने [illegible], कैलाश, [illegible], [illegible], रतकोली, [illegible] व [illegible] आदि गांवों में [illegible] द्वारा [illegible] वेद-प्रचार [illegible] यज्ञोपवीत संस्कार, [illegible] लिए जनता को प्रेरित किया।

होशंगाबाद (म०प्र०): आर्य गुरुकुल द्वारा आयोजित योग साधना शिविर में [illegible] युवकों व [illegible] महिलाओं ने भाग लिया। आयोजन में [illegible] [illegible] तथा [illegible] गुरुकुलाधिष्ठाता [illegible] [illegible] ने भी भाग लिया।

सामाजिक जगत्

जापान की यात्रा

बैंकाक से हांगकांग

बैंकाक का एयरपोर्ट बड़ा साफ-सुथरा है। जरा भी गन्दगी नहीं है। कर्मचारी हर वक्त सफाई की ड्यूटी पर लगे रहते हैं। उन कर्मचारियों के कपड़े हमसे अधिक साफ होते हैं। हम ११ सितम्बर की दोपहर चलकर सायं को हांगकांग पहुंचे। हांगकांग के चारों ओर समुद्र है। पहाड़ों से सुरंग निकालकर शहर को मिलाया है। इस समय हांगकांग पर ब्रिटिश राज है। अंग्रेजों के पास लीज पर १९९७ तक है। इसके बाद यह चीन को सौंप दिया जायेगा। परन्तु एक संधि के अनुसार पहले ५० साल तक वही कानून रहेंगे जो अब हैं।

हांगकांग एक बहुत बड़ा औद्योगिक नगर है। यात्रियों के मतलब की सब चीजें सुलभ हैं। हमने बहुत से ऐतिहासिक स्थान देखे। पहाड़ी के ऊपर एक पार्क बना है। मसूरी की तरह यहां भी ट्राली की व्यवस्था है। एक ट्राली में १२ व्यक्ति बैठ सकते हैं। ओसन पार्क में सैकड़ों ट्रालियां ऊपर ले जाती हैं। वहां समुद्र के किनारे लगभग ४-५ हजार लोगों के बैठने का स्थान है जब जानवर समुद्र में डुब्बी लगाकर किलोल करते हैं तो वह दृश्य देखने योग्य होता है।

हमारे होटल के समीप ही एक ५०० फुट लम्बी पाइपलाइन लगनी थी। प्रातः काल उस पाइप को लगाने का कार्य आरंभ हुआ। मशीनों से खुदाई करते, साथ ही पाइपलाइन लगाते। सायंकाल तक वह पाइपलाइन लग गई, मगर पता भी नहीं चलता कि यहां पाइपलाइन लगी है। यातायात भी वैसा ही चलता रहा। दिल्ली का भी एक उदाहरण आपके सामने रखूंगा। जब हम सितम्बर में दिल्ली से विदेश गये तो सराय रुहेल्ला से ईदगाह तक गुरुगोविंद सिंह मार्ग को चौड़ा किया जा रहा था। खुदाई हो रही थी। इस कार्य को आरंभ हुए लगभग छः मास होने वाले हैं, परन्तु अभी तक यह पूरा नहीं हुआ। जो बच्चे स्कूल जाते हैं और लोग वहा से गुजरते हैं, उनको कितनी तकलीफ होती है। पता नहीं यह सडक कितने मास में पूरी होगी। वहां से हम ताइवान होते हुए जापान के औद्योगिक नगर ओसाका गये।

......रामलाल मलिक

समाजों के संगठन पर बल

सार्वदेशिक सभा प्रधान का बिहार का व्यस्त दौरा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रामगोपाल शालवाले ने अपना बिहार प्रदेश का व्यस्त दौरा गया से प्रारंभ किया। वैदिक धर्म का जयघोष करते हुए आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं तथा प्रांतीय आर्यवीर दल संचालक श्री रामाज्ञा बैरागी सहित स्थानीय समाज के अधिकारियों का प्लेटफार्म पर प्रातः स्वागत स्वीकारते, बाहर पूरे मार्ग मे दो कतारो में दर्शनार्थियों की अपार भीड़ के मध्य से गुजरते हुए मध्याह्न १२ बजे वे नवादा पहुंचे। नवादा में सायंकाल वे पैदल ही शोभायात्रा में सम्मिलित हुए तथा रात्रि में एक विशाल जनसभा को सम्बोधित किया। दूसरे दिन उन्होंने रजौली बाजार तथा पटना का दौरा किया श्री रामगोपाल जी ने वैदिक धर्म के पुनरुत्थान व वैदिक यज्ञादि के महत्व को निरूपित करते हुए समाजो के संगठन पक्ष पर जोर दिया व प्रत्येक समाज में आर्यवीर दल के गठन व शिविरायोजन पर बल दिया।

बैंकाक में महर्षि निर्वाण–पर्व

बैंकाक : समाज के विशाल प्रांगण व सभा-कक्ष में दीपावली पर महर्षि निर्वाण पर्व सायंकाल वृहद वैदिक यज्ञ से शुरू हुआ। वैदिक मंत्रों से कार्यक्रम का श्रीगणेश करते हुए समाज प्रधान ने मनोनीत अध्यक्ष श्री कृष्णमोहन गुप्ता का परिचय कराया जो वाराणसी अध्यापक दीक्षा विद्यालय के प्राध्यापक तथा विश्व यात्रा के दौरान अभी बैंकाक प्रवास पर हैं। श्री गुप्त ने महर्षि कालीन परतंत्र भारत की विषमताओं, विसंगतियों व विडंबनाओं की चर्चा में कहा कि यद्यपि भारतीय समाज के उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए कई विभूतियां जन्मीं, किन्तु महर्षि की साधना तथा भारतीय संस्कृति में उनका योगदान नितान्त मौलिक धरातल पर रहा। अन्य सुधारक जहां संस्कृति की मूलधारा में संशोधन-परिमार्जन के पक्षधर थे महर्षि ने उसे यथार्थ मानवी संस्कृति बताकर उसे ही ठीक समझने और स्थापित करने पर बल दिया।

आयोजन मे श्री रामविलास शाही, श्री तुंगनाथ दुबे, श्रीलंका की समाज-सेविका कु० नन्दा पलैयागुरु, श्री दिवाकर मिश्र, श्री रमाशंकर गुप्त (विश्व हिन्दू परिषद) आदि आर्य विद्वानों के महत्वपूर्ण भाषण व कविता पाठ प्रभावी रहे।

श्री कृष्ण जीवनादर्शों पर ट्रैक्ट

दिल्ली : केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद जन्म से मृत्यु तक श्रीकृष्ण के जीवन आदर्शों पर २० चित्रों में लघु ट्रैक्ट प्रकाशित करेगा। वैदिक विद्वान आचार्य रविदत्त शास्त्री की निगरानी में कार्य प्रगति पर है।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलास

नई दिल्ली : आर्यसमाज ग्रेटर कैलास का २६ वां वार्षिकोत्सव कार्यक्रम पं० वेद कुमार की अध्यक्षता मे सप्ताहव्यापी अथर्व वेदीय यज्ञ से प्रारंभ हुआ। सायंकाल आचार्य पुरुषोत्तम की वेद कथा व भजन के कार्यक्रम रहे। इसके अतिरिक्त पं० सत्यदेव भारद्वाज (नैरोबी) की अध्यक्षता में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, स्वामी मुनीश्वरानन्द की अध्यक्षता में रामायण सम्मेलन, पं० श्यामसुन्दर स्नातक की अध्यक्षता में संगीत सम्मेलन तथा पूर्णाहुति के बाद स्वामी दीक्षानन्द की अध्यक्षता मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे आर्यजगत् के शीर्ष विद्वानों, महात्माओं व भजनोपदेशकों ने भाग लिया।

आर्यसमाज की उपलब्धियां

आर्यसमाज प्रतिदिन प्रातः सत्संग, रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा स्त्री समाज के सत्संग प्रति बृहस्पतिवार को आयोजित करता है। समाज की अन्य गतिविधियों में अंग्रेजी माध्यम मे नर्सरी से तीसरी कक्षा तक आर्य शिशुशाला, वैदिक साहित्य पुस्तकालय, पैथोलाजी, फिजियोथेरापी व ई. सी. जी. सुविधाओं युक्त एलोपैथिक धर्मार्थ औषधालय, आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय का संचालन तथा यज्ञादि अन्य संस्कारों के लिए सुयोग्य पुरोहित की व्यवस्था आदि शामिल हैं।

हरियाणा में व्यापक वेद प्रचार

भिवानी (हरियाणा) : आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने इवरक कलाँ, बोद कलाँ बोंद खुर्द, रणकोली, साजवास, केलगा, ढाणीमाहू, हालु बाजार, लोहड़ बाजार, बायोडा, नीमडी वाली, रूपगढ़, नन्दगांव रासीवास, पैतावास खुर्द, चरखी, हल्का, बीरण, ढाणी बीरण ग्रामों मे स्वामी रूद्रवेश व श्री सुल्तान सिंह भजनोपदेशक द्वारा लगभग पूरे माह व्यापक वेद प्रचार करवाया। बड़ी संख्या मे प्रभावित लोगों ने मद्यनिषेध की प्रतिज्ञा की तथा यज्ञोपवीत संस्कार भी कराये गये।

जोधपुर मे निर्वाण शताब्दी

जोधपुर : महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर में ८ से १० दिसम्बर तक महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई गई। इसके पूर्व डा० कुसुमलता वेदाचार्य व पं० सत्यानन्द वेदवागीश के ब्रह्मात्व मे सप्ताहव्यापी यजुर्वेद परायगण यज्ञ हुआ। सम्मेलन मे देश के शीर्ष आर्य महात्माओ, विद्वानों, भजनोपदेशकों तथा केंद्रीय व राज्यमंत्रियों ने भी भाग लिया। इसी अवसर पर भव्य यज्ञशाला व सत्संग मंदिर का उद्घाटन तथा महर्षि दयानन्द व्यायामशाला का शिलान्यास भी हुआ।

खण्डवा (म० प्र०) पूर्व निमाड़ समाज ने एक शोक सभा मे नगरपालिका सलाहकार समिति के पथ-प्रदर्शक पं० रामचरणलाल जोशी — आर्यसमाजी न होकर भी समाज कार्यों में अनन्य सहयोगी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया व दिवंगत आत्मा की शान्ति व शोक संतप्त परिवार को बिछोह सहने की शक्ति हेतु प्रार्थना की।

नेपाल की महारानी के जन्म-दिवस पर गायत्री-यज्ञ

मुजफ्फरनगर (बिहार) : नेपाल की महारानी के जन्मदिवस पर गीता-भवन में गायत्री महायज्ञ व वेद प्रवचन सप्ताह मनाया गया। स्वामी काव्यानन्द सरस्वती आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री आदि वैदिक विद्वानों के प्रवचन व श्री दयानन्द सत्यार्थी के भजनोपदेश काफी प्रभावी रहे। नेपाल की तराई के क्षेत्रों मे नये समाजो व आर्यवीर दलो की स्थापना तेजी से बढ़ रही है।

प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

झोलाझाल (उ० प्र०): गुरुकुल प्रभात आश्रम मकर सक्रान्ति 13 व 14 जनवरी 1985 को अपना वार्षिकोत्सव आयोजित करेगा। उत्सव मे अनेक शीर्ष आर्य सन्यासी, विद्वान व भजनीक आमंत्रित हैं। इसके पूर्व 1 जनवरी, 85 से श्रीमती माता शकुन्तला द्वारा ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन प्रारंभ होगा।

धर्मार्थ औषधालय खुला

नई दिल्ली : आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन मे, २ दिसम्बर को आर्य केन्द्रीय सभा प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन किया। औषधालय श्री हनुमान प्रसाद एव श्री छत्तर सिंह मित्तल के सहयोग से प्रारंभ हुआ है। डा० दीवान सहदेव ने औषधालय को अपनी मानद सेवायें अर्पित की है।

आर्ययुवक परिषद को नयी शाखा

दिल्ली केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद, दिल्ली की एक नयी शाखा का उद्घाटन पं० चिंतामणि आर्य की अध्यक्षता मे पुनर्वास कालोनी, नेहरू विहार मे हुआ। यज्ञोपरान्त सार्वजनिक सभा को स्वामी सत्यपति, श्री रामनाथ सहगल आदि वक्ताओ ने सबोधित किया। चन्द्रपाल साहनी व श्री रामलाल मलिक मुख्य अतिथि थे। मंत्री, क्षेत्रीय सुधार समिति श्री गोपाल आर्य को नायक नियुक्त किया गया।

उ० प्र०: लालबाग लखनऊ समाज ने धर्मान्धों द्वारा प्र० म० श्री श्रीमती गाधी की नृशंस हत्या की भर्त्सना की तथा परमपिता से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०१)

दहेज समस्या का एक...

अन्तर्जातीय विवाह

दहेज एक सामाजिक कोढ़ है। इसे मिटाने के लिये युवा पीढ़ी को पहल करनी होगी। उसका एक माध्यम अन्तर्जातीय विवाह है। हम आपकी सेवा, में तत्पर हैं। केवल वे ही व्यक्ति पत्र-व्यवहार करें, या कार्यालय में मिलें जो जात-पात के बन्धन तोड़कर बिना दहेज के अन्तर्जातीय विवाह करना चाहते है। पत्र-व्यवहार करते समय वर या कन्या का परिचय इस प्रकार दे : आयु, जन्मतिथि, कद, शिक्षा व अन्य योग्यता, व्यवसाय एवं आय तथा कैसा सम्बन्ध चाहिये (आयु, योग्यता, आय आदि), परिवार के सदस्यों की जानकारी माता-पिता व अभिभावक की सहमति है या नहीं। कार्यालय में फार्म उपलब्ध हैं जिनमें यह विवरण भरा जा सकता है। कार्यालय में मिलने का समय सायं ५ बजे से ७ बजे तक (रविवार छोड़कर)। सेवा निःशुल्क है। सम्पर्क करें। —डा० मदनपाल वर्मा, अधिष्ठाता अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

राँची के बच्चे फिरोजपुर में

खूटी (जिला रांची, बिहार) के पांच वनवासी ग्रामों से २५ बालक और ५ बालिकाएं शिक्षा ग्रहण करने के लिए आर्य-मिडिल स्कूल फिरोजपुर छावनी में प्रविष्ट किये गए हैं। राची जिले मे डी० ए० वी० स्कूलों के निदेशक श्री एन० डी०

ग्रोवर के प्रयत्न से स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम खूंटी द्वारा इन बालकों का चुनाव किया गया है। फिरोजपुर में इन बालकों की शिक्षा, निवास, भोजन और वस्त्र आदि सब निःशुल्क होगा। वनवासी बच्चों तक वैदिक धर्म का संदेश पहुंचाने के लिए आर्य प्रादेशिक सभा का यह नया आयोजन और अभियान है। चित्र में इन बच्चों के अधिष्ठाता श्री देवदत्त शास्त्री, आर्य बालगृह फिरोजपुर के निदेशक श्री पी० डी० चौधरी और मुख्याधिष्ठात्री श्रीमती सुशीला चौधरी उन बालकों के साथ विद्यमान है।

वर की आवश्यकता

२६ वर्षीया, १६५ से० मी० गौरवर्ण दिल्ली के छात्राओं के कालिज मे लेक्चरर, वेतन २३००) रुपये मासिक, आहूजा गोत्रोत्पन्न कन्या के लिये विशुद्ध शाहाकारी (अंडा भी नहीं) धूम्रपानादि रहित योग्य वर चाहिए। परिवार मूलतः यू० पी० निवासी है। खत्री/अरोड़े आर्यसमाजी परिवारों को वरीयता। कृपया पूर्ण विवरण लिखें:—श्री जोशी जी, ६६६/बी पटपड़गंज रोड, झील कुरंजा, दिल्ली—११००५१

योग्य कन्या चाहिए

स्टेट बैंक हरियाणा में कार्यरत, वेतन १३०० रु० मासिक, गर्ग गोत्र लडके के लिए हरियाणा में अध्यापक या किसी राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत योग्य कन्या चाहिए। दहेज नही चाहिए। पत्र व्यवहार का पता कुलभूषण, मंत्री आर्यसमाज गुरुग्राम छावनी, जेकुमपुरा।

टंकारा में ऋषि मेला और रजतजयन्ती

टंकारा में ऋषि मेले और रजत जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिए स्पेशल ट्रेन की अभी तक रेल्वे विभाग से स्वीकृति नहीं मिली है। प्रयत्न जारी है। टंकारा ट्रस्ट के कार्यकर्त्ताओं की हार्दिक इच्छा है कि— उत्तरी भारत से अधिक से अधिक भाई और बहिनें इस समारोह में भाग लें। यदि रेल्वे से स्वीकृति नहीं मिली तो बसों द्वारा टंकारा ले जाने के लिए प्रोग्राम बनाया जा रहा है। ये बसें १० फरवरी की प्रातः को आर्य समाज करौलबाग से चलकर सुजानगढ़, जोधपुर, माउण्ट आबू, आबू रोड, राजकोट, सोमनाथ मन्दिर, पोरबन्दर, द्वारका, बेट द्वारका, जामनगर, टंकारा अहमदाबाद, साबरमती आश्रम, उदयपुर, चित्तौड़, अजमेर, जयपुर होती हुई वापिस दिल्ली पहुंचेगी। जोभाई बहिन इस यात्रा में जाना चाहें वे कार्यालय से सम्पर्क करें। रास्ते के ऐतिहासिक स्थान देखने एवं भोजन का प्रबंध टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगा। पूरा यत्न किया जायेगा कि यात्रियों को कोई कठिनाई न हो।

दिल्ली से केवल टंकारा और टंकारा से दिल्ली रेल यात्रा के लिए प्रति व्यक्ति २००/रु० कार्यालय में जमा कर अपनी सीट सुरक्षित करा लें।

रामनाथ सहगल — मंत्री
रामलाल मलिक — संयोजक-यात्रा

"आर्य जगत्" के २५ हजार ग्राहक बनाने का अभियान

सभा प्रधान श्री वेदव्यास जी की हार्दिक इच्छा है कि १९८५ में डी० ए० वी० शताब्दी समारोह के समय तक 'आर्य जगत्' की ग्राहक संख्या कम से कम २५ हजार हो जाए। 'आर्य जगत्' के माध्यम से ही आर्य समाज का सन्देश अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकता है। शताब्दी समारोह में लगभग एक साल रह गया है। अगर हम सब मिलकर प्रतिमास एक हजार ग्राहक संख्या बढ़ाने का प्रयत्न करें तो यह उद्देश्य पूरा हो सकता है।

हमारी गुरुकुलों, समस्त आर्यसमाजों, सब डी० ए० वी० संस्थाओं और प्रत्येक आर्य समाजी से प्रार्थना है कि आप साप्ताहिक आर्य जगत् के ग्राहक बनाने में पूरा-पूरा सहयोग दें। साथ ही, इस काम को कैसे आगे बढ़ाया जाये, इस सम्बन्ध में अपने विचार भी भेजें। 'आर्य जगत्' का वार्षिक शुल्क २०/रु० है, परन्तु हमारी हार्दिक इच्छा है कि २०० रु० देकर हजारों की संख्या में इसके आजीवन सदस्य बनें। आशा है आप हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देकर प्रति सप्ताह कुछ ग्राहक बनाकर सभा कार्यालय को भेजेंगे।

रामनाथ सहगल — सभा-मंत्री
क्षितीश कुमार वेदालंकार — सम्पादक—"आर्य जगत्"
रामनाथ मलिक — व्यवस्थापक

योग्य कन्या चाहिए

२८ वर्षीय, ८ वी पास दिल्ली में निजी मकान जनरल मर्चेन्ट सप्लाई का व्यवसाय मासिक आय १०००, रु कद ५ फूट ७ इन्च रंग साफ, (रजिस्ट्रेशन नं० २०२) हेतु गरीब घर की योग्य कन्या चाहिए—

सम्पर्क करें—डा० मदन पाल वर्मा, अन्तरजातीय विवाह विभाग, आर्य समाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली—११ समय—५ से ६ बजे तक सांय

योग्य वर चाहिए

२१ वर्षीय, सुन्दर शील, गौरवर्ण, ५ फुट ६ इन्च, एम० एस० सी० आर्य परिवार की कन्या के लिए योग्य सुशिक्षित आर्य वर चाहिए

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र   ओ३म्   कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष [illegible], अंक ५१ रविवार, १६ दिसम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य –५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | पौष कृष्णा ८, २०४१ वि०

आग से मत खेलो

सिखों को मुसलमान बनने की दावत पर प्रतिक्रिया

बम्बई और कलकत्ता तथा अन्य राज्यों के मुस्लिम अखबारो में छपे विज्ञापन के अनुसार कुछ सिखों के दाढ़ी और केश कटवाकर हिन्दू बनने पर उनसे मुसलमान बनने का आग्रह किया गया है। अनेक मुस्लिम पत्रों में मुखपृष्ठ पर इस शरारत पूर्ण इश्तहार पर घोर प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने देश की सभी आर्यसमाजों को एक विशेष परिपत्र भेजकर आदेश दिया है कि समस्त आर्यजन इस शरारत का विरोध करके अपने सिख भाइयों की सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था करें। सिख और हिन्दू एक ही मां के बेटे हैं, दोनों का इतिहास और खून एक है।

परिपत्र में कहा है कि जब तक गुरु अंगद देव की गुरु ग्रन्थ साहब की ३१ बीडे मौजूद हैं और गुरु-ग्रन्थ साहब में आठ सौ बार राम, कृष्ण, विष्णु, ब्रह्मा, शिव और पार्वती के नाम मौजूद हैं और ३०० बार वेद भगवान की चर्चा है, तब तक दुनियां की कोई ताकत हिन्दू और सिखों को अलग नहीं कर सकती।

श्री शालवाले ने पिछले इतिहास का स्मरण कराते हुए कहा कि लाहौर के शहीदगंज गुरुद्वारे को मस्जिद बताकर हाईकोर्ट में मुकदमा चला था, तब उसकी पैरवी मुसलमानों की ओर से मुहम्मदअली जिन्नाह ने और सिखों की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान दीवानबहादुर बद्रीदास ने की थी। श्री बद्रीदास ने जिन्नाह की थोथी दलीलों की धज्जियां उड़ाकर शहीदगंज गुरुद्वारे का फैसला सिखो के हक में कराया था। तब सिक्खो ने अमृतसर के दरबार साहब में आर्य नेता दीवान बद्रीदास का स्वागत करते हुए उन्हें सरोपा और ३० हजार रुपए भेट किया। दीवान साहब ने कहा था कि मैंने अपने ही धर्म मंदिर की रक्षा करके अपने आर्य धर्म की सेवा की है और यह कहकर ३०,०००) रुपया सधन्यवाद लौटा दिया।

गुरू का बाग मोर्चे में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रथम जत्थे का नेतृत्व करके अपनी गिरफ्तारी देकर सिक्ख और हिन्दुओं के रिश्तों में एक शानदार कडी जोड़ी थी।

श्री शालवाले ने मुस्लिम पत्रो की शरारत का जवाब देते हुए कहा–वे पहले अपने घर को सुधारें। पाकिस्तान ने ४१ लाख अहमदिया मुसलमानों को इस्लाम से खारिज करके उन्हें पाकिस्तान के वैधानिक अधिकारों से वंचित कर दिया है और मुसलमानों की तंगदिली के कारण अहमदिया जमात की मस्जिदें जलाई जा रही हैं। उनकी बेइज्जती की जा रही है। ऐसी अवस्था में यदि आर्यसमाज पाकिस्तान तथा भारत में अहमदिया मुसलमानों को आराम की जिन्दगी बसर करने का प्रलोभन देकर वैदिक धर्म में आने की दावत दे तो मुसलमानों को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

उन्होंने मुस्लिम अखबारों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे हिन्दू-सिक्ख के बीच नफरत पैदा करने की कोशिश करके आग से न खेलें।

भोपाल की गैस दुर्घटना में अनाथ हुए बच्चों की रक्षा

भोपाल गैस दुर्घटना में हजारो व्यक्तियो की मृत्यु हो गई हैं और बहुत सारे बच्चे अनाथ हो गये हैं। इस दुःखद स्थिति को देखते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा सचालित फिरोजपुर आर्य अनाथालय ५० अनाथ बच्चो के भरण-पोषण और शिक्षा का भार उठाने के लिए तैयार है। इस सम्बन्ध मे मध्यप्रदेश के मुख्यमत्री श्री अर्जुन सिंह, प्रधानमंत्री श्री राजीव गान्धी तथा भोपाल के अन्य स्थानीय अधिकारियों को तार द्वारा सूचित किया गया है। उक्त अधिकारियो की ओर से सूचना आने पर तुरन्त आवश्यक व्यवस्था की जायेगी। बच्चो का भरण-पोषण और शिक्षा सब निःशुल्क होगा। आर्य अनाथालय महर्षि दयानन्द द्वारा २०६ वर्ष पूर्व स्थापित किया गया था। इस समय अनाथालय में २०० अनाथ बच्चों का उचित पालन-पोषण हो रहा है।

मेरी समस्त आर्य (हिन्दू) जनता से प्रार्थना है कि इस सम्बन्ध में वे जो भी आर्थिक सायता देना चाहे वह चैक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैन्ट या आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली भेज सकते है।

—रामनाथ मन्त्री,
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

आगामी अक : स्वामी श्रद्धानन्द अक

'आर्यजगत'—का आगामी (२३ दिसम्बर) अक स्वामी श्रद्धानन्द अक होगा और उसमे बहुत सी नई सामग्री होगी। इसकी पृष्ठ सख्या भी सामान्य अको से ड्योढ़ी होगी। पाठक उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा करे।

— सम्पादक

लालडेंगा की गतिविधियों के प्रति सरकार सतर्क

नागालैंड के अनुचित कानूनों के विरुद्ध राष्ट्रपति को ज्ञापन

आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि-मण्डल को राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आश्वासन दिया कि लालडेंगा की गतिविधियों से भारत सरकार परिचित है, उनके साथ देश हित के विरुद्ध कोई समझौता नहीं किया जायगा। मंडल का नेतृत्व श्री शालवाले ने किया।

राष्ट्रपति को नागालैण्ड की सरकार द्वारा विदेशी दबाव में आकर बनाए गैर-नागा विरोधी वर्तमान कानूनो के सबंध मे एक विज्ञापन दिया गया। हिल रेगूलेशन एक्ट १८९३, नागालैण्ड लैण्ड रेवेन्यू रेगलेशन ऐक्ट १९७८, बगाल ईस्टर्न फ्रण्टियर रेगूलेशन ऐक्ट १८७३ और नागालैण्ड रिक्विजिशन एण्ड एक्वीजिशन ऐक्ट १९६४ पर गभीर आपत्तिया है। इन कानूनो के द्वारा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती   सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार   व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

वीर-माता

—सुरेशचंद वेदालकार एम० ए० एल० टी०—

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो,
मे दुहिता विरट्।
उताहमस्मिसञ्जया,
पत्यौ मे श्लोक उत्तमः ।।

ऋग् १०-१५९-३

मेरे पुत्र शत्रु के छक्के छुड़ाने वाले हैं, मेरी पुत्री अद्वितीय तेजस्वी है, मेरे पति मे उत्तम कीर्ति का निवास है और मैं अपनी क्या बताऊँ ? कोई मेरी तरफ आख उठा कर तो देखे, ऐसा परास्त होकर लौटेगा कि सदा याद रखेगा। यह है वैदिक वीर माता की उक्ति।

वैदिक सस्कृति मे पिता देवता है, शिक्षा देने वाला आचार्य देवता है, घर मे आने वाला अतिथि देवता है। इसलिए उपनिषदो ने कहा है :—

मातृ देवोभव, पितृ देवोभव,
आचार्य देवोभव, अतिथि देवोभव।

माता के समान महान व्यक्तित्व इस असार संसार मे नही, ऐसा हमारे रामचन्द्र मानते हैं और कहा है .—

नास्ति मात्रा समं तीर्थ,
नास्ति मात्रा समा गतिः।
नास्ति मात्रा समं त्राणं,
नास्ति मात्रा समा प्रभा ।।

माता के समान न कोई तीर्थ है न गति, न कोई रक्षक है और न माता की पूजा के समान कोई पुण्य है। मा ही इस संसार सागर से तरने के लिए मनुष्य को शरीर रूपी नौका प्रदान करती है। सुन्दर विचारो का चप्पू देकर कहती है—"जा बेटा, अब इनकी सहायता से इस नौका को चला, तू भवसागर से पार हो जायेगा। ऐसी दो आर्य माताओ का उल्लेख करे।

शहीदेआजम भगतसिंह की मा श्रीमती विद्यावती मोरवली की रहने वाली थी। क्रातिकारी पिता की वह पुत्री १८६८ मे आर्यसमाजी रीति से व्याही गयी। सित० १९०७ मे भगतसिंह का जन्म हुआ। उनके पति और देवर भी देशसेवा मे लगे थे। १९२३ ई० मे किसी ने उन्हे बताया था कि उनके पुत्र का 'तख्त' या 'तख्ता' मे से एक मिलेगा। वे फासी से एक दिन पूर्व अपने बेटे से मिली तो कहा—"बेटा अपना संकल्प मत छोड़ना। एक दिन तो मरना है ही, पर असली मरना वह है, जिसे सारा संसार याद रखे। मैं खुश हू कि मेरा बेटा देश के लिए बलिदान हो रहा है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि फासी के तख्ते पर खड़ा होकर "मेरा पुत्र, इकलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाये।' २३ मार्च १९३१ को भगतसिंह को फासी हुई तो वह रोई नही। भगतसिंह ने कहा था—"रोना मत। ऐसा न हो कि आप पागलो की तरह रो दें और लोग कहें कि भगतसिंह की मा रो रही है।" १९३१ १९३४ तक वे घोर संकट में रही। १९३६-१९४० मे उनके दूसरे बेटे कुलतार सिंह, कुलबीर सिंह जेल चले गये। २० अगस्त १९६५ को भगतसिंह के अनन्य मित्र बटुकेश्वरदत्त का निधन हो गया और उनकी इच्छानुसार उनका अन्तिम संस्कार फिरोजपुर मे सतलज के किनारे उसी स्थान पर किया गया जहा भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव का अंतिम सस्कार हुआ था। विद्यावती वहा उपस्थित थी। चिता मे आग लगाते ही शोक विह्वल होकर कहने लगी "तुम चारो तो यहा इकट्ठे हो मुझे भी अपने पास बुला लो।" जनवरी १९७३ मे पंजाब सरकार ने उन्हे पंजाब-माता के सम्मान से विभूषित किया। श्रीमती विद्यावती का निधन १ जून १९७५ को ९८ वर्ष की अवस्था मे हुआ। धन्य हो, पंजाब-माता ! तुमने देश को भगत सिंह सा अनमोल रत्न दिया। पंजाब ही नहीं, सम्पूर्ण भारतवासियो की मा, तेरे चरणो मे हमारी सादर श्रद्धाजलि।

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की मां की छाया बिस्मिल की आत्मकथा (जेल मे लिखी) मे मिलती है। ग्यारह वर्ष की अवस्था मे उनका विवाह श्री मुरलीधर से हुआ। विवाह के बाद उन्होंने पढ़ना सीखा। बिस्मिल सहित उनके दो पुत्र और तीन पुत्रिया हुई। उनका एक पुत्र रमेश दवा के अभाव मे तपेदिक से पहले ही मर गया। उनकी पुत्रियो ने भी सदा क्रातिकारियों की मदद की। रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी मा के विषय मे लिखा है— मेरी माता मेरे धर्म कार्यों और शिक्षा में मेरी बडी सहायता करती थी। धार्मिक और देशभक्ति की पुस्तके पढने को पैसे देती थी व उत्साह-भग नहीं होने देती थी। जिससे बहुधा उन्हे पिताजी की डाट-फटकार भी सुननी पडती थी। मुझे जीवन मे साहस, बल, देश-भक्ति एवं बलिदान की प्रेरणा मिली वह मेरी माता व गुरु सोमदेव जो सरस्वती की कृपा का फल है। यदि मुझे ऐसी मां न मिलती तो मैं किसी साधारण व्यक्ति की भाति संसार-चक्र मे फंसकर जीवन बिता देता। मां ने ही मुझे सत्यार्थप्रकाश का मत्र दिया कि— बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है। मेरे लिये उन्होने इटली के क्रातिकारी मेजिनी की मां जैसी ही भूमिका अदा की। बिस्मिल मे आगे लिखा है "मा, महान् से महान् कष्टो मे भी तुमने अधीर नही होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी से सान्त्वना देती रही। सदैव तुम्हारी दया की छाया मे मैंने अपने जीवन मे कोई कष्ट अनुभव नहीं किया। ससार मे मेरो किसी भी भोग विलास या ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक लालसा है कि एक बार तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लू। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती दिखाई नही देती और तुम्हे मेरी मृत्यु का दुखद समाचार सुनाया जायगा। मां, मुझे विश्वास है कि तुम यह समझकर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारे पुत्र माताओ की माता भारतमाता की सेवा मे अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर दिया और उसने तुम्हारी कोख को कलंकित नही किया। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जायेगा तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरो में तुम्हारा भी नाम लिखा जायेगा।"

बिस्मिल को फासी का दड सुनाये जाने के बाद एक दिन वे बिस्मिल से मिलने गोरखपुर जेल मे गई। बिस्मिल मा को देखकर रो उठे तो उन्होने दृढ स्वर मे कहा "मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके डर से अंग्रेज सरकार कांपती है। मुझे पता न था कि वह मौत से डरता है। यदि तुम्हें रोकर ही मरना था तो व्यर्थ ही इस काम मे आये ?" बिस्मिल ने कहा 'मा' ! मृत्यु से मुझे डर नही। मैं तो तुम्हारी श्रद्धा के वशीभूत होकर प्रेम के आसुओ से तुम्हारे चरणो को धोना चाहता हू। मा, विश्वास करो, मातृभूमि के लिए बलि होने मे मुझे जो प्रसन्नता है, उसका वर्णन असभव है।" यह श्रद्धा और प्रेम के आसू थे। इस दृश्य को देखकर जेल अधिकारी भी कह उठे कि वीरमाता का पुत्र ही वीर हो सकता है। मा अन्तिम दिन भी पुत्र से मिलने गई। उनके पिता भी उनसे पहले दिन मिल चुके थे और पुत्र मोह में अंग्रेजो से माफी मागने और भविष्य मे स्वतंत्रता के किसी आन्दोलन मे सम्मिलित न होने का वचन देने को कह चुके थे। बिस्मिल ने यह बात नही मानी। उस दिन जब मा पहुची तो वे फूट-फूट कर रोने लगी। बिस्मिल हक्का-बक्का देखते रह गए। सोचने लगे क्या यह वही मा है जो उस दिन मुझे रोने पर डाट रही थी पर अब खुद रो रही है। मा का रोना जब समाप्त हुआ तो बिस्मिल ने गंभीर भाव से पूछा "मां, क्या तू भी पिताजी की तरह मुझे बचाने के लिए क्षमा मागने को कहने आई है. तूने तो मुझे सत्यार्थ प्रकाश से बलिदान की प्रेरणा दी है, वीरता और देशभक्ति का पाठ पढ़ाया है व बतलाया है कि गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है। फिर तू आज क्यो रो रही है ! तू कहे तो मैं क्षमा माग लू। तब उस वीर-माता ने जो कहा वह विश्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे लिखने योग्य है। मां बोली, "बेटा मैं इसलिए रो रही थी कि कल तुझे फांसी हो जायेगी। यह तो वह दिन होगा जिस दिन मेरे दूध की शान बढ़ जायेगी। मुझे तो यह सोचकर रोना आया कि कल तुझे जब फासी हो जायेगी और दूसरी मातायें में अपने पुत्रों को देश की स्वतत्रता के लिए न्यौछावर कर रही होंगी उस समय मेरे पास दूसरा पुत्र न होगा जिसे मैं फिर शान से देश के लिए न्यौछावर कर सकू गी।" धन्य है मा ! भारत की स्वतत्रता की नींव तुम्हीं ने डाली है। हम भारतवासियो का शतश. प्रणाम। बिस्मिल के बलिदान के साथ-साथ हम तुम्हारे चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते है और माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में 'पुष्प की अभिलाषा' के रूप अपने श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं—

चाह नही मैं सुरबाला के,
गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नही देवो के सिर पर,
चढ़ू भाग्य पर इठलाऊं।।
चाह नही प्रेमी-माला में,
बिंध प्यारी को ललचाऊं।
चाह नहीं सम्राटों के,
शव पर हे हरि मैं डाला जाऊं।
मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाते वीर अनेक ।

पता—5 ए०इ० १, ओवरा, मिर्जापुर (उ० प्र०)

आर्यसमाज लल्लापुरा

वाराणसी : आर्यसमाज लल्लापुरा अपना ३८ वाँ वार्षिकोत्सव १३ से १६ दिसम्बर तक आयोजित कर रही है। कार्यक्रमों में, यज्ञानुष्ठान, यज्ञोपवीत संस्कार, शोभायात्रा के अतिरिक्त भजन-प्रवचन, श्री दीनबंधु पाण्डेय की अध्यक्षता में गोरक्षा सम्मेलन तथा श्री कन्हैया लाल गुप्ता (रोटरी गवर्नर) की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन है। समारोह को आचार्य भूदेव शास्त्री, कु० प्रियंवदा शास्त्री तथा पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार आदि शीर्ष विद्वान् संबोधित करेंगे।

आदर्श वैदिक विवाह

नई दिल्ली गुरुकुल कांगड़ी स्नातक श्री बलराज वौरी की आयुष्मती डा० रेन का दहेज रहित आदर्श शुभ-विवाह डा० यशपाल गुलाटी के साथ श्री वेदपथिक वर्म-वीर आर्य झंडाधारी ने ताज होटल में वैदिक विधि से सम्पन्न कराया। वर-वधू पक्षों ने कई संस्थाओं को दान दिया।

सुभाषित

आदानस्य प्रदानस्य कर्त्तव्यस्य च कर्मण. ।
क्षिप्रमक्रियमाणस्य काल. पिबति तद्रसम् ॥

लेन-देन को और करने योग्य काम को ठीक समय पर जल्दी से जल्दी न कर लिया आए तो देर करने पर उसका सारा रस ही समाप्त हो जाता है।

सम्पादकीयम्

वोट किसको दें ?

ज्यों-ज्यों चुनावों में मतदान का समय निकट आता जा रहा है, त्यों-त्यों जनता के मन में, खासतौर से आर्य जनता के मन में, यह प्रश्न घूमड रहा होगा कि इस बार के इस महाचुनाव में वोट किस पार्टी को दिया जावे। चुनावों के अनुकूल यद्यपि अभी तक आम जनता में जोश-खरोश दिखाई नहीं देता, परन्तु मतदान का समय निकट आने तक वातावरण के काफी गर्म होने की सम्भावना है। निर्णय की वह घडी आने से पूर्व देश में कुछ ऐसी घटनाए भी घट रही हैं जिनका सकेत शुभ नहीं है।

भोपाल में यूनियन कार्बाइड कारपोरेशन के अन्तर्गत चलने वाले कीटनाशक दवाओं के कारखाने में जहरीली गैसे के रिसने से जिस बडे पैमाने पर लोग मारे गये, उसने सारे देश को चौंका दिया है। भोपाल जैसे प्रेतों की भूमि बन गया। कफन कम पड गये और दफनाने के लिए धरती माता की गोद भी छोटी पड गई। श्मशान में लकडी नही बची। कभी जर्मनी के हिटलर ने इसी प्रकार प्राणघातक गैस द्वारा घुटाकर हजारो बेगुनाहों यहूदियों की जान ले ली थी। वैसी ही प्राणघातक गैस ने यहां भी प्रलय मचा दी। सरकारी आकडों के हिसाब से अभी तक ढाई हजार लोग मारे गये और भोपाल के ऊपर से अभी तक मौत का साया टला नहीं है। इस भयंकर दुर्घटना की जाच का भार सी०बी०आई०को सौंप दिया गया है। परन्तु सरकार को हर हालत में अब तो यह सोचना ही पडेगा कि अपने औद्योगीकरण के उत्साह मे वह देश मे वह ऐसे जहरीली गैसों के कारखाने भविष्य में कहीं भी बस्ती के अन्दर न बनने दे। वैसे तो कीटनाशक दवाओं के अत्यधिक प्रयोग के बुरे परिणाम भी ससार के सामने आ चुके हैं। इसलिए पश्चिम से प्रेरणा पाकर हमारी सरकार ने कृत्रिम साधनों से आधुनिक खेती को बढ़ावा देने का जो सरजाम किया है, उसकी उपयोगिता पर भी पुनर्विचार होना चाहिए।

हालाकि भोपाल की इस दुर्घटना का चुनावो से कोई सम्बन्ध नही है, पर घटनाओं को भविष्य के शुभ-अशुभ का सकेत मानने वाले मनों को इसमे कुछ अशुभ दिखाई दे तो आश्चर्य नहीं।

पर हम इसके अलावा भी कुछ अशुभ सकेतों का उल्लेख करना चाहते हैं। भारतीय जनता पार्टी के सर्वमान्य नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी पर गुजरात के मेहसाणा नामक स्थान पर जो हमला हुआ वह चुनावो से पूर्व किसी अच्छी मनोवृत्ति का द्योतक नहीं है। कुछ लोग इसमें राजनीतिक दलों की प्रतिद्वंद्विता देखते हैं। आरोप-प्रत्यारोप भी शुरू हो गये हैं। चौ० चरण सिंह के चुनाव क्षेत्र मेरठ-बागपत में, हेमवतीनन्दन बहुगुणा के चुनाव क्षेत्र इलाहाबाद में तथा श्री राजीव गांधी के चुनाव क्षेत्र अमेठी में भी इस प्रकार की हिंसाओं की आशंका लोगो को होने लगी है। यह सचमुच ही शुभ संकेत नहीं है। अगर इस प्रकार की हिंसा का विस्तार हो गया तो ससार का सबसे बडा लोकतन्त्र होने का दावा करने वाले इस देश में लोकतन्त्र ही उपहास का पात्र बन जायेगा। अगर लोकतन्त्र में भी हिंसा होती है तो तानाशाही और उसमें अन्तर ही क्या रह गया।

दूसरी तरफ साम्प्रदायिक पार्टियां नये सिरे से अपना फन फैलाने की कोशिश कर रही हैं। केरल की इण्डियन मुस्लिम लीग ने, जो राज्य की कांग्रेसी सरकार को टिकाये रखने का मुख्य साधन बनी हुई है, अपनी इस स्थिति का लाभ उठाते हुए सरकार से कई मांगें मनवा ली हैं। केरल में मुल्लाओं को पेंशन देने के लिए राज्य सरकार ने वक्फ बोर्ड को 15 लाख रुपया दे दिया है। त्रिवेन्द्रम के साम्प्रदायिक दगों के शिकार मुस्लिम परिवारों के लिए लीग ने 1.53 लाख रुपया स्वीकार करवा लिया है और सरकारी नौकरियों में मुसलमानों के लिए आरक्षित कोटे की जांच के लिए एक विशेष सरकारी अधिकारी नियुक्त कर दिया गया है। वर्तमान में यहां सरकारी सेवाओं में मुसलमानों का प्रतिशत 6 से अधिक है पर वे 12 प्रतिशत नौकरियां आरक्षित करवाना चाहते हैं।

इसी प्रकार ऐतिहासिक जामा मस्जिद के शाही इमाम शेख अब्दुला बुखारी ने हिन्दुस्तान के समस्त मुसलमानों के नाम एक फरमान जारी किया है जिसमें "जालिम और वादा-खिलाफ इका को हर सूरत में हटाने" की अपील की गई है। ये वही शाही इमाम हैं जिन्होंने सन् 1980 में इका को जिताने के लिए फरमान जारी किया था। अब वे इका से नाराज हैं। पिछले दिनों कश्मीर के अपदस्थ मुख्यमन्त्री डा० फारुख अब्दुल्ला से वे बातचीत कर चुके हैं और लीबिया की यात्रा करके मुस्लिम उम्मीदवारो को जिताने के नाम पर वहां से काफी पैसा बटोर लाये हैं। इस्लाम के नाम पर लीबिया किस हद तक जाने को तैयार है, यह ससार जानता है। इस्लामी बेंक की शाखा के लिए और इस्लामी परमाणु बम के निर्माण के लिए जितनी बेताबी कर्नल गद्दाफी ने दिखाई उतनी और किसी मुस्लिम देश ने नहीं। पिछले दिनो मिस्र के राष्ट्रपति ने यह भी आरोप लगाया था कि श्रीमती इन्दिरा की हत्या के षड्यन्त्र में भी कनल गद्दाफी ने सहायता की थी।

अकाली पार्टी भी ग्रन्थियो की मार्फत सिखों के लिए फरमान जारी करवाने की बात सोच रही है जिसमें सब सिखों से अपील की जाय कि वे किसी भी हालत में इका को वोट न दें और इका को हरवाने के लिए जो भी कुछ कर सकते हों, करें। हम बारम्बार मुस्लिम लीग और अकाली दल जैसी साम्प्रदायिक पार्टियो पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कहते रहे हैं। पिछले दिनों चौ० चरण सिंह ने भी, जिन्होंने दलित मजदूर किसान पार्टी के नाम से नई पार्टी बनाई है और समस्त विपक्षी दलो को मिलाकर कांग्रेस ई का एक सशक्त विकल्प तैयार करने की योजना के अन्तर्गत अपना चुनाव अभियान प्रारम्भ किया है, साम्प्रदायिक पार्टियो पर प्रतिबन्ध की आवश्यकता बताई। परन्तु आश्चर्य है कि साम्प्रदायिकता के उन्मूलन के लिए जिस अकाली पार्टी पर वे प्रतिबन्ध का समर्थन करते हैं इका के विरोध मे उसी पार्टी का समथन चाहते हैं।

इस समय ऐसा लगता है कि अल्पसख्यको के इका के विरोध मे बरगलाने के लिए कोई व्यापक षड्यन्त्र चला रहा है और गैर कांग्रेसी शासन की स्थापना का स्वप्न लिया जा रहा है। अगर इका को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता, तो दो ही विकल्प बचते हैं कि या तो इका के साथ अन्य दलों के सहयोग से एक मिली जुली सरकार केन्द्र मे स्थापित हो या फिर इका सत्ता से हाथ खीचकर गैर कांग्रेसी दलों के हाथ मे देश का भविष्य जाने दे। ये दोनो ही परीक्षण खतरनाक हैं। जिस तरह मिली-जुली सरकार चलने की सभावना नही है उसी तरह गैर कांग्रेसी दलो की सरकार चलने की भी सभावना नही है। क्योकि इनमे से कोई भी गैर कांग्रेसी दल अखिल-भारतीय स्तर की पार्टी होने का दावा नही कर सकता फिर गैर कांग्रेसी का जो अर्थ उत्तर भारत में होता है, वह दक्षिण भारत मे नही होता। दक्षिण भारत मे तेलगू देशम और द्रविड मुन्नेत्र कडगम जैसी प्रादेशिक पार्टिया अपने अपने राज्यो मे हावी हैं जबकि उत्तर भारत मे भाजपा या दमकिपा का जोर है। यदि गैर कांग्रेसी दलों की सरकार केन्द्र मे बनी तो वह निश्चित रूप से प्रादेशिक दलो और साम्प्रदायिक पार्टियों की दया पर ही जीवित रह सकती है।

हम हमेशा देश के विशाल बहुमत और हिन्दू समाज के हितो की रक्षा की बात कहते आये हैं। अब भी वही बात कहते हैं। इका की नीतियो से कई बातों में हमारा मतभेद भी है। परन्तु इस समय ऐसा लगता है इका को पूर्ण बहुमत न मिला तो देश का भविष्य अन्धकारमय होने की सभावना है। इसलिए हमारा कहना तो यह है कि जहां कोई हिन्दू हितों का रक्षक उम्मीदवार हो वहा उसे वोट दीजिए और जहां कोई प्रतिबद्ध प्रत्याशी आपको न मिले, वहा कम बुराई के रूप मे इका के प्रत्याशी का समर्थन कीजिए। इसके सिवाय और कोई उपाय नही है।

भारत का वर्तमान निर्वाचन

आर्यसमाज की परीक्षा

—म म आचार्य विश्वश्रवा व्यास एम० ए० वेदाचार्य—

यह दुर्भाग्य का विषय रहा है कि आर्यसमाज के सदस्य भिन्न राजनीतिक दलो मे विभक्त रहे हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि महर्षि के मिशन में कोई राजनीतिक पहलू निश्चित नही है ऐसा वे लोग प्रकट करते हैं। पर इस समय परिस्थितियाँ भिन्न हैं।

इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या किसी बड़े प्रोग्राम की भूमिका मात्र है। अगर दुश्मन की चाही हो गई तो उसका प्रभाव आर्यसमाज पर भी पड़ेगा। अत इस निर्वाचन मे आर्यसमाज को सामूहिक रूप से एक तरफ हो जाना चाहिए। जो भी सरकार बनेगी उस पर आर्यसमाज का क्या प्रभाव रहेगा? फिर हमारी कोई सुनेगा भी? जो भी सरकार बनती है वह समझती है कि ये आर्यसमाजी सब पार्टियो मे रहते हैं। इनका अपना कोई सिद्धान्त नहीं है। भिन्न भिन्न पार्टियो मे जाकर इन लोगों ने राजनीति मे आर्यसमाज को प्रतिष्ठाहीन बना दिया है।

आर्यसमाजी भिन्न-भिन्न पार्टियो मे क्यो जाते हैं?

प्रश्न सिद्धात का नही है। जिसको जहा मौका मिलता है, उस राजनीतिक पार्टी मे शामिल हो जाता है। वहा बैठकर अपनी पार्टी को आर्यसमाज क निकट साबित करता है। वस्तुत भारत मे एक ही राजनीतिक पार्टी है— 'काग्रेस'। अन्य सब पार्टिया काग्रेस के कोपभवन हैं। सिद्धात सब के एक ही हैं। सब गाधी-गाधी करते रहते हैं। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ बना। उसका दूसरा सस्करण भारतीय जनसघ बना। तीसरा सस्करण भारतीय जनता पार्टी हुआ। तीसरे सस्करण तक वह सिद्धातहीन हो गया। वह भी गाधी जी की जय बोलने लगा। अब एक एक आदमी की एक एक पार्टी है। इस हल्केपन में हमे शामिल नही होना चाहिए।

भारत की राजनीति

महाभारत युद्ध से पूर्व भगवान् कृष्ण का राजनीतिक प्रवचन है कि इस समय १०१ राजा राज्य कर रहे हैं। यदि युद्ध हुआ तो कौन कौन राजा कौरवो की ओर होगे और कौन पाण्डवो की ओर और क्यो, यह भी बताया। युद्ध होने पर वैसा ही हुआ। सब राष्ट्रो का ज्ञान श्री कृष्ण को था। इसी प्रकार इस काल मे इन्दिरा गाधी समस्त राष्ट्रो की स्थिति जानती थी। सबसे सम्पर्क था। उनके रहते आख की ओर आख उठाते विरोधियो को डर लगता था। अत सबने घर का भेदी लका ढावे कर दिया। अब उस मस्तिष्क का कोई व्यक्ति हमारे मध्य नहीं है। अब अगला युद्ध काश्मीर से प्रारम्भ होगा। ऐसे सकटकाल मे सबको एक हो जाना चाहिए। प्रमुख व्यक्तियो से राजीव गाधी सहयोग ले और ये सब अपनी पृथक डफली बजाना छोड दें। आर्यसमाज सामूहिक रूप से एक तरफ हो जावे और सरकार को बल प्रदान करे। अन्यथा याद रखो 'शस्त्रेण रक्षिते राज्ये शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते।' बर्मा, पाकिस्तान, श्रीलका ये सब महर्षि के काल मे भारत ही थे। जहा जहां से हमारा राज्य जाता रहा, वहा-वहा से हम भागते आये। अब आत्मरक्षा के लिए भी अपनी सामूहिक शक्ति एक तरफ लगा दो।

मत चूकै चौहान
नया प्रधानमंत्री राजीव गाधी

प्रधानमन्त्री राजीव गाधी की आयु ४० वर्ष है। पर परीक्षित जब कलियुग के प्रथम दिन गद्दी पर बैठा तब उसकी तो आयु और भी छोटी थी। उसने ६०० वर्ष राज्य किया। राज्य सदा मन्त्रिमडल के सहयोग से चलता है। अत जिस प्रोग्राम के लिए इन्दिरा गांधी की हत्या की गई उन प्रोग्राम वालो को यह देखकर आश्चर्य है कि हमारी करनी तो उल्टी पड गई। ये तो सब और सावधान इकट्ठे होकर बैठ गये। पर हमारे राजनीतिक नेताओ का न श्मशान वैराग्य है, और न देश के खतरे की ओर ही ध्यान है। सब प्रधानमन्त्री बनना चाहते हैं। जो स्वय एक होकर नही बैठ सकते वे देश को क्या एक रखेंगे? अपनी-अपनी गद्दी की रक्षा करते हुए तालमेल, गठबन्धन, मिली-जुली सरकार बनाना चाहते हैं। वोटर को क्या आवश्यकता है जो तुम्हारे तालमेल के झगडे में हाथ डाले। तालमेली सरकारें नही चला करतीं।

बहवो यत्रनेतार सर्वे पण्डित मानिन।
सर्वे महत्वमिच्छन्ति तद्वृन्दमवसीदति॥

चाणक्य ने कहा है कि—जहा बहुत नेता होते हैं और सब ही अपने को योग्यतम समझते हैं, अपना महत्व चाहते हैं, वह पार्टी टूट जाती है। भारतवासियो! इस खतरे मे देश को मत डालो।

खानदानी गद्दी

कुछ लोग बडे गर्व से कहते हैं कि हिन्दुस्तान को खानदानी गद्दी बना रखा है, ऐसा कहने वाले समझते हैं कि हम बहुत बढ़िया बात कह रहे हैं। पर वह है महामूर्खता की बात। खानदानी हकीम अच्छा होता है या नौसिखिया।

"बाप ने मारी मेंढकी, बेटा तीरन्दाज"

प० मोतीलाल नेहरू राजनीतिक मस्तिष्क के थे। उनके सस्कार जवाहरलाल नेहरू में आये। प० जवाहरलाल नेहरू के पुत्र न था। उन्होंने अपनी पुत्री इन्दिरा को राजनीतिक प्रशिक्षण दिया। इन्दिरा के पेट से राजीव गांधी का जन्म हुआ। चार पीढ़ी के राजनीतिक संस्कार जिसमें हैं वह अयोग्य और जिनके पिता और माता बिलकुल अनपढ़, वे राजनीति के सूरमा! अभिमन्यु ने चक्रव्यूह प्रवेश मां के पेट में हा सीखा था। यह तो भारत का दुर्भाग्य था जो सजय गांधी ससार में नहीं रहा, वह होता तो न जाने क्या करता!

एक महान खतरा

कल्पना करो इस निर्वाचन में काग्रेस परास्त हो जावे और पचायती सरकार बन जावे। उस समय पाचो प्रधानमत्री बनने वालों को आतकवादी सिख अलटीमेटम दे दें कि इन्दिरा गाधी हत्याकाण्ड केस को समाप्त करो। अन्यथा हम सबको पचायतन पूजा करके सबको इन्दिरा गाधी के पास भेज देगे। तब क्या गारन्टी है कि वे लोग उस हत्याकाड को यह कहकर समाप्त न करदे कि वह एक सिरफिरे का काम था। उसको इन्दिरा भक्त बेअन्त ने तत्क्षण ही समाप्त कर दिया इसे इनाम दो। मौत के आगे दुनिया कापती है। यह खतरा कोई नही देख रहा है। पर जिसकी मा को गोली से छलनी कर दिया उसका बेटा क्या इस भूल सकता है? राजीव गाधी को भी मौत का नोटिस दे दिया है। परीक्षित को नाग जाति ने कत्ल किया। तब परीक्षित के लडके जन्मेजय ने जो नाग-यज्ञ किया, वह इतिहास मे प्रसिद्ध है। अत. मा को मारने वालो को बेटा ढूढ कर रहेगा चाहे उसको इसकी कुछ भी कीमत देनी पडे। अत इस बार राजीव गाधी को सफल बनाओ।

❖

मृत्यु से कैसे मर सकती जो मौत से डरी नहीं

कु० सुमन गुप्ता

तुम्हे श्रद्धाजलि क्यो कर अर्पित करू जबकि तुम मरी नही
मृत्यु से कैसे मर सकती जब मौत से कभी डरी नही,
तुम अभी भी खडी हो मेरे पास, मेरे साथ,
दुर्भाग्यपूर्ण क्षणो की पगडडी पर थामे मेरा हाथ।
वह स्निग्ध मुस्कुराहट और दीप्तिमान् आखे,
जीवित हैं अब तक भी बिलकुल आशाओ की पाखे।
उसी का है यह आचल जिसकी छाया मे खडी हू,
जीवन आशीर्वाद है उसका जिसके सहारे बढ़ी हू।
मान लूं यह कैसे कि मैं हो गई अनाथ,
जबकि अभी तक है सिर पर उसका हाथ।
भावनाओ के समुद्र से वास्तविकता के टापू तक,
यही सोचती रही मैं, अनवरत अनथक।
किन्तु जब उस निश्चल शरीर को पास से देखा,
अस्तव्यस्त हो मिट गई वह विश्वास की रेखा।
हा, मान गई आज मैं हो गई अनाथ,
नही रहा सिर पर मेरे आज उसका हाथ।
समस्याए जिनके विषय मे सोचते सब डरते हैं,
कल्पना जिसकी हम स्वप्न मे भी करते हैं।
उन्ही के समाधान के लिए वह शहीद हो गई,
इन अगणित समस्याओ से अब मुक्त हो गई।
हा मान गई मैं, है मिट गया वह शरीर,
अपने पीछे छोड गया एक अमिट लकीर
जिस पर चलकर शांति के मन्दिर तक पहुच सकते हैं,
इतिहास में अपने देश को अमर कर सकते हैं।

पता—सी-११२२, नेताजी नगर, नई दिल्ली, ११००२३

श्रीमती सत्या दिवगत

पहले पजाब विश्वविद्यालय चडीगढ में और इस समय दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० जयदेव विद्यालकार की पत्नी श्रीमती सत्या जी का एल-३८, माडल टाउन, रोहतक मे २३ अक्तूबर को, दिवाली से ठीक एक दिन पहले, स्वर्गवास हो गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

बम्बई, मांडुप आर्य समाज ने कुछ पागलो द्वारा प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या की तीव्र भर्त्सना तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।

हा हन्त ! हन्त ! सहसापगतेन्दिरार्या

—प्रा० हरिचन्द्र रेणापुरकर

(वसन्ततिलका छन्द)

शोकम्बुधौ भरतभूर्यदहो निमग्ना
गाढान्धकारपटले भुवनं विलीनम् ।
कृष्णाभ्रसंवृतमभूद् गगनं विशाल
ध्वस्ता यदा प्रखरभास्वरदीप्ततारा ॥१॥

नून निरभ्रगगनादशनि पपात
भूकम्प एव सहसा ननु सबभूव ।
वात्या विनाशपिशुना नु चचाल चण्डा
मृत्यु जयापि सहसापगतेन्दिरार्या ॥२॥

दौरात्म्य कैतवनृशसमतान्धताना
विश्वासघातदुरितस्य परा हि काष्ठा ।
यत्स्वाङ्गरक्षकनरापसदै स्वगेहे
हा हन्त ! हन्त ! निहता गुलि काप्रहारै ॥३॥

पजाबराज्यमिह केवलसिक्खराज्य
राष्ट्र विखण्डय प्रसभ खलु कर्तुकामै ।
निष्पापनिर्मलनिरीहजना असख्या
सिक्खैर्हता अकरुण विगतत्रिवर्षम् ॥४॥

विद्रोहिसिक्खजनभारतघातिकार्य
सघाय राष्ट्ररिपुभि क्रियमाणमुग्रम् ।
रोद्धु तया विहितसैनिककार्य रुष्टैर्
हा हन्त ! सिक्खहतकैर्निहतेन्दिरार्या ॥५॥

निर्व्यूं हराष्ट्रसमुदायविदग्धनेत्री
दुर्वृत्त दुष्टशठदानववृन्दहन्त्री
गोप्त्री च निर्बल निराश्रयपीडिताना
हा हन्त ! हन्त ! सहसोपरतेन्दिरार्या ॥६॥

मैत्र्याप्तहेतिमदमत्तबलाढ्यपाक
बाङ्लाविमुक्तिसमरे निपुण विभज्य ।
स्वाधीनबगविषयस्य नवस्य कर्त्री
दुर्गेव हन्त ! सहसापगतेन्दिरार्या ॥७॥

विक्रान्तशूरबलशालि महिष्ठराष्ट्र
प्रत्यर्थ्यभद्यमनुलघ्यमजय्यमेव
कर्तु हि भारतभुव खलु चेष्टमाना
हा हन्त ! हन्त ! सहसोपरतेन्दिरार्या ॥८॥

उद्योगयन्त्रकृषिवित्तविकास सिद्धौ
वैज्ञानिकाणविकसैनिक सिद्धतायाम् ।
स्वायत्तमात्मवशग विषय चिकीर्षुर्
हा हन्त ! हन्त ! सहसापगतेन्दिरार्या ॥९॥

स्वापूर्व वीरपटुपेशलनायकत्वे
प्राचीन विश्वगुरुभारतवर्ष देशम् ।
उत्तु गगौरवपद भुवने नयन्ती
हा हन्त ! हन्त ! सहसापगतेन्दिरार्या ॥१०॥

उत्साहशक्ति धृतिधामपयस्विनीव
सकल्पशक्ति दृढनिश्चयमेरुरेव ।
उत्तु ग साहसपराक्रमशौर्य मूर्तिर्
हा हन्त ! हन्त ! सहसापगतेन्दिरार्या ॥११॥

स्वत्वाभिमानमहनीयमनस्वितोत्स
तेज प्रतापमहिमोज्ज्वलभव्यपुञ्ज ।
चैतन्यशक्तिरपरा नु शरीरिणी सा
हा हन्त ! हन्त ! सहसापगतन्दिरार्या ॥१२॥

राष्ट्रैक्यधर्म मतजातिविहीनताया
धन्या बभूव सुतरा प्रतिमूर्तिरेषा ।
स्वात्मार्पण विदधती च तदर्थमेव
नून भवेद् भुवि चिरस्मरणीयकीर्ति ॥१३॥

नैकानि कामभवन स्खलितानि तस्या
को वा बभूव भुवने स्खलितैर्विहीन ।
दोषास्तदीयगुणसागरसन्निमग्ना
नि सख्यचन्द्रकिरणेषु यथा मृगाक ॥१४॥

दोषो विपत्समयघोषणमेव तस्या
तच्छासन खरतर हि तयाऽनुभूतम् ।
त्यक्ता बभूव वरण दलपुत्रसाक
निष्कासिता च सदनादपि सन्निबद्धा ॥१५॥

सत्ताधिकाररहितापि विगर्हितापि
नानाऽभियोग विधिवादकदर्थितापि ।
सार्धद्वयाब्दसमये पुनरुल्लसन्ती
गान्धी बभूव भुवने सकलेऽद्वितीया ॥१६॥

तस्यै समस्तभुवनागतराष्ट्रधुर्यै
शोकाब्धिमग्नगणनारहितैश्च लोकै ।
आप्रच्छन सकरुण गदित यदन्य
तत्तद्विशालमहिमादभतकीर्लिमानम् ॥१७॥

यावद्विभान्ति गगने रविचन्द्रतारा
यावदभवन्ति भुवि भूधरसिन्धु धारा
यावच्च भारतभुवो भुवने प्रतिष्ठा
तावद्धि नूनममरा भवितन्दिरार्या ॥१८॥

पता—साहा बिल्डिंग गुलबर्गा (कर्नाटक)

लोकसभा के निर्वाचन और आर्यसमाज

—भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर—

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द आर्यों का राज्य चाहते थे। उन्होंने अपने महान् क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में बड़े ही वेदना भरे शब्दों में लिखा था 'अहो' एक समय था जब संसार भर में आर्यों का ही राज्य था। सर्वत्र एक वैदिक धर्म व आर्य जाति ही थी। आज संसार में तो क्या अपने देश में भी आर्यों का राज्य नहीं है। सर्व-प्रथम उन्हीं की प्रेरणा पाकर श्याम कृष्ण वर्मा, गोविन्द रानाडे, बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द आदि ने प्रेरणा पाकर स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लिया था। अनेक इतिहासकारों ने लिखा है कि 1857 की राज्यक्रांति में भी स्वामी दयानन्द की प्रबल प्रेरणा थी। राजस्थान के अनेक राजाओं को भी उन्होंने धर्म रक्षा व स्वराज्य की प्रेरणा दी थी।

अत्यन्त दुःख है कि महर्षि दयानन्द तथा उक्त महापुरुषों के इतने त्याग व बलिदानों के उपरान्त भी उनकी उक्त कामनाएं पूर्ण न हो सकीं, अपितु अब इसके विपरीत हो रहा है। संसार भर में फैला हमारा आर्य राज्य आर्य जाति वैदिक धर्म लगभग वहां से मिट चुका है। अब मुस्लिम ईसाई व कम्युनिस्टों का राज्य है। भारत माता के अंग सिंध व पंजाब में हमारी संख्या कम होने से पाकिस्तान बन गया। वहां से भी हम मिट से गये। यही अवस्था बंगला देश कश्मीर केरल नागालैंड तमिलनाडु मिजोरम आदि में भी है। हमारी संख्या कम होने से इन स्थानों में पुन पाकिस्तान व ईसाईस्थान बनाने के प्रयत्न चल रहे हैं।

तुष्टीकरण की नीति

यह सर्वविदित है कि आरम्भ से ही कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के कारण ही (जैसी कि अंग्रेजों की नीति थी—हिन्दू मुस्लिम मे फूट डालो और राज्य करो) मुस्लिम लीग पनपी। फलस्वरूप पाकिस्तान बना करोडो हिन्दू बरबाद हुए। आज पाकिस्तान की सैन्य शक्ति मे वृद्धि तथा परमाणु बम बनाने की तैयारी के कारण भारत अत्यन्त चिन्तित है। ससार के मुस्लिम राष्ट्र भारत मे धर्मान्तरण के लिये अरबो रुपया भेज रहे हैं। आर्यसमाज इस्लामीकरण की इस बाढ को रोकने के लिये पूरी तरह प्रयत्नशील है। राजनीतिक दल उनके वोट प्राप्त करने के लिये अपनी वही पुरानी तुष्टीकरण नीति

(शेष पृष्ठ १० पर)

क्या आर्यसमाज राजनीति में भाग ले ?

—पिशोरी लाल प्रेम—

आर्यसमाज के राजनीति में भाग लेने के पक्ष में सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास का राज आर्य सभा का प्रमाण दिया जाता है । जो कि इस प्रकार है

त्रीणि राजाना विदथे पुरुणि परि विश्वानि भूषथ: सदांसि ॥ ऋ० म० ३ । सू० ३८ । मं० ६ ॥ राजा और प्रजा के पुरुष मिल के सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक राजा प्रजा के सबध रूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा और राजार्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलकृत करें ।

त सभा च समितिश्च सेना च अथर्व० १५/९/२ ।

सभ्य सभा मे पाहि ये च सभ्या: सभासद/अथर्व/१९/५५/६/

उस राजधर्म को तीनो सभा संग्रामादि की व्यवस्था और सेना मिल कर पालन करे/१ भासद और राजा को योग्य है कि राजा सब सभासदो को आज्ञा देवे कि हे सभा के योग्य मुख्य सभासद ! तू मेरी सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था का पालन कर और जो सभा के योग्य सभासद है वह भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें/२/

किसी एक को स्वन्तत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए। किन्तु राजा जो सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन, और प्रजा राज सभा के आधीन रहे ।

महर्षि के उपरोक्त कथन से यह सिद्ध नहीं होता कि आर्यसमाज राज आर्य सभा बनाए । अपितु यह सिद्ध होता है कि राजा को या जिन के हाथो मे राज्य व्यवस्था है, उनको राजार्य सभा, धर्मार्य सभा तथा विद्यार्य सभा बनानी चाहिए । यदि राज्य व्यवस्था आर्य समाज के आधीन होती तब आर्य-समाज, धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा के साथ राजार्य सभा भी बना सकता था ।

आरम्भ से ही आर्यसमाजियो को यह स्वतन्त्रता दी गई है कि वह व्यक्तिगत रूप से किसी भी राजनीतिक संस्था में कार्य कर सकते हैं और उन संस्थाओ के सभासद अथवा पदाधिकारी बन सकते हैं। इस स्वतन्त्रता का परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज बहुत बडी सख्या मे कांग्रेस, हिन्दू महासभा, जनसघ, समाजवादी, साम्यवादी, स्वतन्त्र पार्टी आदि पुरानी पार्टियों मे, और वर्तमान जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी लोकदल आदि में बट गए। इस से आर्य समाजियों मे आपस में ही फूट पडने लगी और यह आपस मे ही एक दूसरे के विरोधी बन गए । इस प्रकार आर्यसमाज के काम मे भारी शिथिलता आ गई । यदि आरभ से ही आयसमाजियो को यह स्वतन्त्रता न दी गई होती तो आज आर्य समाज की शक्ति समस्त राजनैतिक संस्थाओं से बढ़ कर होती और भारत की राज-व्यवस्था आर्य समाज के संकेत पर चलती ।

राजनीति में भाग लेने का तात्पर्य है लोकसभा, राज्य विधानसभाओ, नगर पालिकाओ, जिला बोर्डों आदि के निर्वाचन मे भाग लेना और चुनाव जीतने के लिए छल, कपट, झूठ फरेब, घूसखोरी आदि निकृष्ट अथवा घृणित कार्य करना । क्या आर्यसमाज ऐसे कार्य करने के लिए उद्यत हो सकता है ?

यदि आर्यसमाज अपनी अलग राजार्य सभा (राजनैतिक संस्था) बनाए तो क्या वह आर्यसमाजी जो दूसरी राजनैतिक संस्थाओं मे कार्य कर रहे हैं, उन संस्थाओ को त्याग कर राजार्य सभा में सम्मिलित हो जायेंगे ?

परीक्षा के लिए यह नियम लागू किया जाए कि आर्यसमाजी या तो आर्यसमाज के सभासद रह सकते हैं या किसी राजनैतिक संस्था के, तो ऐसी अवस्था मे बहुत से आर्यसमाज को छोड़ देंगे परन्तु अपनी राजनैतिक संस्था को नही छोड़ेंगे । बात कड़वी है, किन्तु है सत्य ।

अब गम्भीरता से विचार कीजिए । एक ओर तो है शुद्ध, पवित्र, वैदिक धर्म का प्रचार,सत्य, अहिंसा, न्याय, तप, त्याग और बलिदान की भावना । दूसरी ओर लोकसभा, विधान सभाओ आदि के सभासद बनने का लोभ और चुनाव जीतने के लिए हर प्रकार के छल, कपट, झूठ, हिंसा, ईर्ष्या और द्वेष की धधकती अग्नि में जलना ।

आर्यसमाज तो क्या किसी भी धार्मिक संस्था का, चाहे वह सनातन धर्म, सिख अथवा इसाई या मुस्लिम किसी भी सम्प्रदाय पर आधारित संस्था हो, उसका वर्तमान राजनीति में भाग लेने का तात्पर्य है अधर्म के मार्ग पर चल पड़ना । छल, कपट, झूठ, हिंसा और अन्याय के मार्ग पर चल पड़ना । क्योंकि वर्तमान राजनीति का आधार है छल-कपट और झूठ ।

अंत में इतना ही निवेदन करता हूं कि आर्यसमाजियों के व्यक्तिगत रूप में राजनीति में भाग लेने से आर्यसमाज दिन-प्रति-दिन शिथिल होता जा रहा है और यदि सामूहिक रूप मे आर्यसमाज ने राजनीति में भाग लिया तो समाप्त हो जाएगा । आर्यसमाज का नाम तो चाहे रह जाए किन्तु आर्य जीवन तथा सिद्धान्त प्रेम सर्वथा समाप्त हो जाएगा । इसलिए मैं बडी नम्रता से आर्यसमाज के हित-चिन्तकों से निवेदन करता हूं कि वह आर्यसमाज को राजनीति की दलदल से बचाएं ताकि वेद प्रचार के कार्य को प्रगति दी जा सके ।

पता—पो० ददाहू (रेणुका), हिमाचल प्रदेश ।

कुछ आर्य विद्वानों का विचार है कि आर्यसमाज का सामूहिक रूप में राजनीति में भाग लेना अति आवश्यक है क्योंकि यदि आर्यसमाज के पीछे राज्य शक्ति हो तो आर्य समाज का प्रचार बड़ी सुगमता और शीघ्रता से हो सकता है । इसके विपरीत कुछ आर्य विद्वानो का विचार है कि आर्यसमाज को सामूहिक रूप से तो क्या व्यक्तिगत रूप से भी राजनीति मे भाग नहीं लेना चाहिए । आर्यसमाज को तो शुद्ध पवित्र धार्मिक संस्था ही रहने देना चाहिए । दोनों पक्ष आर्य समाज का हित चाहते है । आप भले ही लेखक के दृष्टिकोण से सहमत न हों, पर इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना आवश्यक है ।

आर्यसमाज क्या है

—आचार्य रामलाल आर्य, एम० ए०, बी० एड० साहित्य रत्न । प्रधान, आर्यसमाज २८९, सतना बिल्डिंग, राइट टाउन जबलपुर (म० प्र०)—

(१) सत्य सनातन वेद धरम का सफल प्रचारक आर्यसमाज ।
वेदों की सब शिक्षाओं का सफल प्रचारक आर्यसमाज ॥
एक, अखण्ड, अनादि, अनूपम, प्रभु का जाप सिखाता है ।
पाप मूल आडम्बर पन से, जग को दूर भगाता है ।
मात, पिता, गुरुजन का, श्रद्धा से सत्कार कराता है ।
मृतक श्राद्ध, वैतरणी के बन्धन से जल्द छुड़ाता है ।
सदा सत्य पथ का अनुगामी, झूठ निवारक आर्यसमाज ।
वेदों की सब शिक्षाओं का सफल प्रचारक आर्य समाज ॥

(२) जिसके द्वारा सारे जग में, वैदिक धर्म प्रचार हुआ,
जिसके द्वारा अनाथ, विधवा, दलितों का उद्धार हुआ ।
जिसके द्वारा मुर्दो में भी जीवन का संचार हुआ ।
जिसके द्वारा राम लखन सा भाई-भाई में प्यार हुआ ।
सत्य शांति का सर्व प्रथम सर्वत्र प्रसारक आर्यसमाज ।
दयानंद के मन्तव्यों का सफल प्रचारक आर्यसमाज ॥
सत्य शांति से सेवा करता हरदम जग की आर्यसमाज ।
वेदो की सब शिक्षाओं का सफल प्रचारक आर्यसमाज ॥

आर्यसमाज चण्डीगढ़ का उत्सव

चण्डीगढ़ : आर्यसमाज, सेक्टर १६ डी० के छठे वार्षिकोत्सव पर सप्ताहव्यापी कार्यक्रम का शुभारंभ श्री दयाराम शास्त्री व श्री मनोहरलाल शास्त्री की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ से हुआ जिसमें लगभग ४० यजमान सम्मिलित थे । अन्य कार्यक्रमों में स्वामी निगमानन्द की अध्यक्षता में आर्य युवक सम्मेलन में विद्यार्थियों की वेद-पाठ, भाषण प्रतियोगिता व पुरस्कार वितरण, डा० भवानीलाल भारतीय की अध्यक्षता में वैदिक सस्कृति सम्मेलन, माता देवकी की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन, नारी जागरण सम्मेलन, गायत्री यज्ञ आदि उल्लेख्य रहे । सम्मेलनो मे डा० विक्रम कुमार, प्रो० रत्नसिंह, स्वामी निगमानन्द आदि वैदिक विद्वानों ने भाग लिया ।

खडवा में कौमी-एकता दिवस

खण्डवा (म० प्र०) : आर्य महिला समाज ने समाज की अन्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म दिवस श्रीमती शान्तिखण्डेलवाल की अध्यक्षता में कौमी एकता दिवस के रूप में मनाया । मुख्यअतिथि श्रीमती चन्द्रकांता पालीवाल ने लायंस क्लब की ओर से प्रदत्त स्कूली ड्रेस निर्धन छात्र-छात्राओं में वितरित कीं ।

डा० राजेन्द्र प्रसाद के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में

युवकों से आशा और शिक्षा का दायित्व

—आचार्य विश्वेश्वर—

"हमारे देश को अत्यन्त संतुलित एवं संवेदनशील मस्तिष्क की आवश्यकता है" यह कथन और कामना थी भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद की, जो अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए निरन्तर चिन्तित और व्याकुल रहने वाले भारत के गिने-चुने एवं जाने-माने मनीषियों में से थे। राष्ट्र उन्नति करता है अपने उन्नत मानवों के माध्यम से, और मानव-उन्नति का जनक होता है उन्नत मस्तिष्क।

शिक्षा आखिर क्या करती है? वह मानव को शरीर से हृष्ट-पुष्ट, नीति से सुदृढ़, चरित्र से ठोस और सामाजिक दृष्टि से सर्वोपयोगी और सर्वोपकारी बनाने का कार्य करती है। शिक्षा खराद पर मनुष्य को समाज के भावनात्मक सम्न्वय हेतु तैयार किया जाता है। ऐसे शिक्षा प्राप्त जन ही समाज के प्राण और राष्ट्र के सम्बल सिद्ध होते हैं। पूज्य राजेन्द्र बाबू ने भी अपने देश की शिक्षा को देश-हित अनुरूप बनाने हेतु जो विचार दिये है, यदि शिक्षा आज भी उस ओर मोड़ी जाय तो देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

आज हम राजनैतिक दृष्टि से चाहे स्वतंत्र हैं परन्तु मानसिक दृष्टि से पहले की अपेक्षा अधिक दास हैं। आज हमारी सामाजिक एकता की नींव हिल रही है। हमारे आपसी अविश्वास, संदेह और अलगाव की खाई चौड़ी और गहरी होती जा रही है। हम वैयक्तिकता की सकीर्ण सीमा मे जकड़ते जा रहे हैं। ससार को विज्ञान ने छोटा बना दिया। ऐसी स्थिति मे जहा हमारे दिल को समुद्र-सा गहरा-गंभीर और आसमान-सा विस्तत अछोर होने की आवश्यकता है वही मस्तिष्क को हिमालय-जैसा ऊर्जस्वल, उन्नत और शीतल। परन्तु दशा विपरीत होती गयी है। आज देश मे जन-जन के बीच की दीवार अधिक उंची और चौड़ी होती जा रही है। हर व्यक्ति दूसरों के कर्म का अपने उपयोग की दृष्टि से मूल्यांकन करना चाहाता है, पर अपने कर्म का दूसरों की दृष्टि से नही। समाज, देश और राष्ट्र को इसी दशा को ओर निर्देश करते हुए देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने 6 जनवरी 1951 को पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में कहा था—"समाज मे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। नये समाज मे प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण स्वतंत्र होगा पर कोई सताया हुआ नहीं होगा··· । संक्षेप मे मानव की प्रत्येक क्रिया मानव-कल्याण की भावना से प्रेरित और संचारित होगी।" परन्तु आज भी हम संकीर्णता के रोग से पीड़ित हैं। पडोसी के साथ का सहवास-बोध भी नही है। इसीलिए बाबू जी ने कहा ने था····"ज्ञान, साहित्य और कला का फैलाव यथाशक्ति निश्चित हो, परन्तु यह फैलाव आम जनता से अलगाव का जनक नही हो; प्रमुखः भारतीय रहन-सहन और रीतिरिवाज मे ही हम प्रत्येक वैज्ञानिक प्रयोग कर सकते हैं—हां, रूढ़िवादिता से हमे अलग रहना है।" पर हमारी दशा इससे पूर्ण विपरीत है।

वर्तमान शिक्षा

आज की हमारी शिक्षा एवं शिक्षणशालाओं का राष्ट्र-कल्याण की दृष्टि से लक्ष्य क्या है? हमे इन दोनो के उद्देश्यों का परीक्षण ही नहीं करना है, उनके दोषो का उन्मूलन भी करना है। कदम निरन्तर आगे बढ़े—यह बुरा है। हम थोड़ा ठहरकर सोचे कि हम जिसका विस्तार करते जा रहे हैं उससे हमारा विकास कितना हो रहा है? शिक्षाशालाओं के उत्पादनों से राष्ट्र की कितनी आकाक्षाएं पूरी हो सकी है। आज भी उसी रीति-नीति और नीयत से शिक्षा दी जा रही है जिस रीति, नीति और नीयत से आज से सौ साल पूर्व दी जाती थी। उस समय यह रति-नीति और नीयत समयानुकूल, उपयुक्त और कुछ हद तक संभवत: लाभदायक भी थी। परन्तु आज के युग में वहीं पुरानी रीति-नीति कितनी उपयोगी सिद्ध होगी? देश की बदलती हुई परिस्थिति को देखकर ही इस दूरदर्शी युग-पारखी ने कहा था—लेकिन शिक्षा की यह पद्धति, वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप नहीं है, यह हमारी वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति नही करती, इसलिए इसमें महान् परिवर्तन करना होगा।

परिवर्तन की आवश्यकता

शिक्षा का उद्देश्य सृजनात्मक शक्ति की वृद्धि है, प्रदर्शन अथवा विलास नही। सृजनात्मक शक्ति विकसित होती है शिक्षार्थी के सर्वतोमुखी विकास से। यह शक्ति ही पुनर्निर्माण की जननी होती है। परन्तु इसके लिए चाहिए दृढ संकल्प और सबके लिए मानसिक तथा नैतिक धरातल तैयार करती है शिक्षा। शिक्षा मृतप्रायो के लिए जीवनदायी जल है, नेत्रहीनों के लिए ज्योतिदायी अंजन। शिक्षा ही भावो, विचारों और व्यवहारो का सन्तुलित सम्मिश्रण तैयार करती है। शिक्षा विभिन्न वर्ग के लोगों को एक सूत्र मे बांधने के गुणो से विभूषित रेशमी धागा है जो प्रबलतम लोहजंजीर से अधिकतम शक्तिशालिनी होती है। इस सूत्र से बंधी पीढ़ी आजीवन एकता के झंडे को आत्मा-त्याग के डंडे पर लेकर चलेगी। शिक्षा-एक दायित्वबोध है जो शिक्षितों के कंधों पर उनके पूर्वजों एव समकालीनों द्वारा हस्तान्तरित होता है। इस शिक्षा-सूत्र में पिरोया एक भी दाना माला से अलग नही होगा।

युवकों से आशा

क्या आज हमारी शिक्षा जन-जीवन को विभक्त नहीं करती जा रही है? क्या आज भी हम ऊँची डिग्री-प्राप्त-जन शारीरिक श्रम को घृणास्पद समझ, मात्र लेखनी और कथनी के व्यापार को ही-सब कुछ मानकर नहीं चल रहे हैं? इस ओर स्व० देशरत्न ने नागपुर विश्वविद्यालय के दीक्षान्त में संकेत किया था—'हमारे प्रगति अवरोध पर विजय प्राप्त करने की एक ही आशा भारत के युवकों से है—प्रमुखत: उन युवको से, जो विश्वविद्यालय से निकल चुके हैं अथवा निकलने वाले हैं। देश के युवक यदि चाहे तो सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति आ सकती है। इस प्रगति का जितना दायित्व देश के अध्यापकों, प्राध्यापको, विद्यालयों, महाविद्यालयो एवं विश्वविद्यालयों पर है, उतना ही उनसे निकले छात्रो पर भी है। आज समाज और राष्ट्र छात्रो से भी अपने ऋण की वापसी चाह रहा है। भारत आज ऐसे प्राणवन्त युवको की खोज कर रहा है जो गावो और शहरो को समान रूप से जीवित-जागृत कर सकें। उच्च शिक्षा-प्राप्त युवक बड़ो के अनुभव और पुस्तकों से अर्जित ज्ञान का संबल लेकर जीवन में प्रवेश करे।

आज भी यदि युवक आत्म-अनुभव की नीव पर परस्परावलबन का सहारा लेकर अपने कदम आगे बढाये तो भारत माता की आखो के आसू पोंछे जा सकते है। सामूहिक लाभ के प्रयास ही सच्ची क्रान्ति के जनक होंगे और मात्र इसी मार्ग से प्रत्येक जन सुखी एव सम्पन्न हो सकता है। देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद के इस जन्म-शताब्दी वर्ष में, देखना है कि नयी पीढ़ी कितनी नयी प्रेरणा लेकर जीवन-मच पर अवतरित होती है और देश के म्लान होठो पर हसी लाती है।

(युगवार्ता)

ग्रंथियों की राजनैतिक भूमिका पर रोक लगे —प्रो० शेरसिंह

जिस प्रकार मन्दिर में पुरोहित होते हैं, उसी प्रकार गुरुद्वारों में ग्रंथी नियुक्त किये जाते हैं। उन्हें शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी की ओर से वेतन तथा पूरा सम्मान मिलता है।

परन्तु वर्तमान 5 मुख्यग्रंथी अपना धर्म प्रचार कार्य छोड़कर राजनीति की दलदल में फंसते लगे हैं। उन्होंने हाल ही में शिरोमणी अकाली दल की तदर्थ समिति को भंग करके नई तदर्थ समिति का गठन किया है। अकाली दल एक राजनैतिक दल है जो अपनी अनुचित तथा राष्ट्रद्रोही मांगें मनवाने के लिए हिंसक आन्दोलन चला रहा है। सरदार प्रकाशसिंह मजीठा कार्यकर्ता प्रधान को इसलिए हटाया है क्योंकि उन्होंने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन पर शोक संदेश भेजा था।

नैतिकता का तकाजा था कि अन्य भारत वासियों के साथ ये ग्रंथी भी प्रधानमन्त्री की हत्या पर शोक प्रकट करते। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। पाकिस्तान, चीन तथा इंग्लैंड आदि देश अवसर मिलते ही भारत को हानि पहुंचाने के दांव में भले ही रहते हों परन्तु श्रीमती गांधी की हत्या पर उन्होंने भी अन्तिम संस्कार में भाग लिया और उग्रवादी तत्वों की निन्दा की

मुख्यग्रन्थी उन दिनों चुप्पी साधे बैठे थे जिन दिनों भिण्डरावाले के समर्थक पंजाब में बसों में से एक ही समुदाय की सवारियों को नीचे उतार कर गोलियों से भून रहे थे। हरियाणा की जनता को हानि पहुंचाने के लिए पजाब की सीमा पर बनने वाली सतलुज-व्यास लिंक नहर की खुदाई को रोकने के लिए आन्दोलन कर रहे थे। उग्रवादियों ने भाखड़ा नहर को दो बार काटकर हरियाणा मे करोड़ों रुपये की फसलो को बर्बाद किया तथा कई स्थानों पर पीने का पानी तक मिलना बन्द हो गया। उग्रवादियों ने दो बार विमानों का भी अपहरण किया परन्तु इन ग्रंथियों ने इस राष्ट्र विरोधी कार्यवाही की निन्दा करने का साहस नही किया। गुरुद्वारो मे हिंसक अपराधियों को शरण दी गई। ग्रंथियो ने उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही न करके अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। वे उदारवादी अकालियो की उपेक्षा करके उग्रवादी अकालियो की ओर झुकने लगे हैं और परोक्ष रूप में उग्रवादियो की सहायता कर रहे हैं। हमारी भारत सरकार से मांग है कि उनके साथ अब उग्रवादी अकालियो जैसा ही व्यवहार किया जाये।

पत्रों के दर्पण में

मजहब ही सिखाता है आपस में बैर रखना

इकबाल साहब का प्रसिद्ध शेर है—

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा ॥"

यह शेर गुमराह करने वाला है। इसके विपरीत यदि यह कहा जाय कि "मजहब ही सिखाता है आपस में बैर रखना" तो अतिशयोक्ति नही होगी। क्योंकि, मजहब की मान्यताएं अलग होती हैं और धर्म की अलग। एक मजहब की मान्यताएं दूसरे मजहब की मान्यताओं से नही मिलती। इससे परस्पर द्वेष बढता है। उदाहरणार्थ, इस्लाम को ही लीजिये। मुसलमान लोग गाय कत्ल करना और उसका मांस खाना मजहब के आधार पर ठीक मानते हैं। इसके विपरीत हिन्दू गाय को माता के रूप में रक्षा करना परम कर्तव्य मानता है। इससे दोनो मे झगड़ा होना स्वाभाविक है। इसी शेर के अन्त मे उन्होने लिखा है कि— 'हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा'। यह भी सही नही लगता। क्योकि यहां के मुसलमानो का काबा अरब मे है और वे हज्ज करने वही जाते है। इसीलिए मुसलमानों का आस्था केन्द्र अरब तथा पाकिस्तान है, भारत नहीं।

धर्म शब्द का कोई अंग्रेजी पर्यायवाची नही है किन्तु अंग्रेजों ने रिलीजन शब्द को धर्म का पर्यायवाची बनाकर यह चाल चली कि मुसलमान, सिख, इसाई सबको धर्म बना दिया। वास्तव मे धर्म कोई जाति, मजहब, समुदाय या सम्प्रदाय नही है। धर्म तो एक मानवीय जीवन—पद्धति का नाम है। मनु महाराज ने धर्म के निम्न दस लक्षण बताये जो कि एक मानव जीवन—पद्धति का मार्ग निर्देशन करते हैं—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धी. विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥

हिन्दू समाज के अतिरिक्त किसी भी मजहब ने इन्हे अपनी जीवन पद्धति में शामिल नही किया। धर्म मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है, पर मजहब—मनुष्य को मनुष्य से अलग करता है। —विशन स्वरूप पटवारी ३३१४ बैंक स्टेट, पटवारी जी कार्नर नई दिल्ली ५

भविष्य को बचाओ

आर्यसमाज केवल धार्मिक संस्था है ऐसा अनेक आर्य नेता प्रचार करते है। लेकिन आज समय राजनीति की उपेक्षा का नही है। अन्य राजनीतिक दलों मे कोई हिन्दुओं के हितो की चिन्ता नही करता। सिर्फ कुर्सियो के लिए ये राजनीतिक दल गैर हिन्दुओ की ही पूछ करते है। इसलिए मैं सब आर्यजनो से आग्रह करता हू कि वे राजनीति मे भाग लेकर हिन्दुओ को संगठित करे वर्ना ये चाय-पार्टिया हिन्दुओ और आर्यसमाजियो दोनो को समाप्त कर देगी। —ओम प्रकाश भाटिया, २२६ राजा पार्क, जयपुर-४

हिन्दू मंच आवश्यक क्यों ?

श्रीमती गाधी की जघन्य हत्या के बाद, सिखो का शोक मनाना दिखावा लगता है। ननकाना साहब की यात्रा पर गये जो सिख वहाँ भारतविरोधी व खालिस्तान समर्थक भाषणो से बाज नहीं आये, क्या भारत लौटने पर उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही न करके सरकार फिर से देशद्रोह को संरक्षण नही दे रही ? पंजाब और स्वर्णमंदिर की सारी हैवानियत के दौर मे इनके मुंह बन्द थे।

ऐसों को यदि आज यकायक भारत अपना देश लगने लगा है तो हिन्दुओं को इस मुखौटे के पीछे छिपी खतरे की घटी को नजरअंदाज नहीं करना चाहिये। ऐसे में हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए एक मंच का होना जरूरी है।

—सुनीति शर्मा, पी-29-32, गड़ियाहाटा रोड (साउथ), कलकत्ता—31

वर्तमान चुनाव बनाम आर्यसमाज

देश में आर्यसमाज प्रभावी संगठन है मगर राजनीति के प्रति उदासीनता रचनात्मक कार्यक्रमों मे गति प्रदान करने मे कठिनाई उत्पन्न कर रही है। आर्यसमाज की विचारधारा से जुड़े सांसद कई कार्यक्रमो में सहायक सिद्ध हो सकते है। आर्यसमाज के नेता यह तो घोषणा करें कि हमारे मत उसी को पड़ेंगे जो गौहत्या, व्यक्तिगत कानून, कश्मीर मे 370 धारा, अल्पसख्यको का तुष्टीकरण, धर्म परिवर्तन का रोग, हिन्दी की उपेक्षा और जातिवाद व साम्प्रदायिकता को रोकने का संकल्प करे तथा वैदिक मान्यताओं पर आस्था रखे। —नरेन्द्र अवस्थी, आर्यसमाज, श्री विलासपुरी नई दिल्ली-65

भारत हिन्दू राज्य क्यों न हो ?

भारत में मुसलमान चार विवाह कर सकता है पर अमरीका व बरतानिया में उन्हें इसकी अनुमति नहीं है। किन्तु भारत में वोटों के लिये उन्हें अनुचित रियायत दी जाती है। मलाया में मात्र 51 प्रतिशत मुसलमान हैं, पर वहां का राज-धर्म है इस्लाम। फिर 51 प्रतिशत से इतनी अधिक हिन्दू जनसंख्या वाले देश मे हिन्दू राज्य क्यों नहीं हो ?—जयदेव गोयल, पत्रकार, जीन्द।

सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी

विलक्षण प्रतिभा की धनी श्रीमती इन्दिरा गांधी की खुद उनके रक्षकों ने ही हत्या करके उनके 'बसुधैव कुटम्बकम्, का स्वप्न तोड़ दिया। पर वैदिक संस्कृति आत्मा को अमर मानती है साम्प्रदायिकता के शहसवारों ने उस गरिमामण्डित नारी की हत्या कर खुद अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। 'मेरे खूनकी हरेक बूंद से देश को स्फूर्ति मिलेगी' उनकी यह उक्ति विदेशी तत्वो और देशी जयचन्दो के षडयंत्रों को विफल बनाती रहेगी। चुनाव सामने हैं। तरह-तरह के मुखौटों और आपाधापी में यदि उस अमर अनुगूंज को ध्यान मे रखकर सही प्रतिनिधि लोकसभा तक पहुंचाने में हम सतर्क रहे तो राष्ट्र सुरक्षित रहेगा और यही सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी उस दिवंगत आत्मा को। —यज्ञदत्त आर्य विद्यावाचस्पति, 260-सी, मियावाली कालोनी, गुड़गांवा-1

आर्यसमाजियों की उदारता

स्व० प्रधानमंत्री की हत्या से देश मे बहुसख्यक सिखों का सर भी लज्जा से झुका है। दिल्ली के दंगों मे हिन्दुओं द्वारा अपने सिख पड़ोसियों की अपनी जान का खतरा मोल लेकर भी रक्षा करना हिन्दू- सिख रक्त की एकता का जीवन्त प्रमाण है। हमें गर्व है कि दिल्ली—अलवर रोड पर बादशाहपुर से अलवर तक के आर्यसमाजी प्रभावक्षेत्र में सिखों के विरुद्ध हिंसा की वारदातें कतई नहीं हुई।

—ज्ञानचन्द गोयल, उपमंत्री आर्य परिषद, मालब (मेवात), गुड़गांवा

निर्भीक, निःसंकोच, दो टूक

प्रसन्नता है कि राष्ट्र व समाज के मार्गदर्शन में निर्भीक, निःसंकोच, दो-टूक बात कहने को आप सदा तत्पर रहते हैं। आज की पीतपत्रकारिता के युग में 'आर्यजगत' द्वारा स्वच्छ पत्रकारिता का उदाहरण आशा और विश्वास की जोत जगाते चांद सा, भारतमाता के भाल की श्री-वृद्धि कर रहा है। हार्दिक शुभकामना।

—डा० मदनमोहन चोपड़ा, 328, फैज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-5।

संस्कृत का महत्व

१०+२ फार्मूले पर अमल करते समय संस्कृत की उपेक्षा न की जाए। हमारे सभी धर्मग्रन्थ संस्कृत में हैं। हिन्दी समेत देश की सभी प्रादेशिक भाषाएं उसकी पुत्रियां है और आज भी अपनी इस जननी से प्रेरणा ग्रहण करती हैं। भाषा विज्ञान का व हल केवल आधार है अपितु संसार की सभी भाषाओं को समृद्ध करने वाली है। संस्कृत की उपेक्षा से हमारे धर्म-कर्म, नीति-न्याय, ज्ञान-विज्ञान सबकी हानि होगी। जसवन्तराय कुमार, प्रधान आर्यसमाज फिरोजपुर शहर।

आर्यसमाज साकेत के लिए अपील

5 वर्ष पूर्व स्थापित साकेत आर्य समाज डी.डी.ए. से मिली 500 गज भूमि पर बनाये कच्चे अस्थायी शेड मे सत्संग व ऐलोपैथिक धर्मार्थ औषधालय सहित आत्मिक उत्थान के अनेक कार्यक्रम चलाती है। स्थायी भवन का नक्शा स्वीकृत हो गया है और अप्रैल में स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने इसका शिलान्यास भी कर दिया है। निर्माण कार्य प्रगति पर है। किन्तु भारी व्यय की दृष्टि से समाज के दानवीरों से अपील है कि यथाशक्ति दान देकर इस निर्माण-यज्ञ को सफल बनायें। चेक 'आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली' के नाम पर भेजें। —लखीराम कटारिया, प्रधान, जे- 2 साकेत, नई दिल्ली।

हमारा प्रतिनिधि कौन ?

मा वः स्तेन ईशत मा अघशंसः

—प्रा. भद्रसेन—

भारत का संविधान और प्रशासन प्रजातन्त्रात्मक है—प्रजा का तन्त्र, अर्थात् जनता का शासन—जनता के (प्रतिनिधियों) द्वारा, जनता के हित के लिए—श्री लिंकन।' अतः प्रजातन्त्र में शासन की अच्छाई-बुराई का उत्तरदायित्व जनता पर ही है, क्योंकि जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि ही राष्ट्र के संविधान का निर्माण करते तथा शासन व्यवस्था चलाते हैं। जनता स्वयं अपनी भाग्यविधाता होती है। निर्वाचन में प्रत्याशी मतदाताओं के सामने होता है, ताकि उत्तरदायित्व और गम्भीरता से जनता उसका लाभ उठा सके।

प्रतिनिधि चुनते समय मुख्य प्रश्न उभरता है कि हम प्रतिनिधियों को चुनते किसलिए हैं ? इसका सीधा उत्तर यही है, कि निर्वाचित प्रतिनिधि सुशासन से देश को सुदृढ़-समृद्ध बनायें जिससे स्वदेश, स्वराज्य-सुराज्य जन-जन की भावनाओं का पूरक हो सके। इसी बात को बौद्ध साहित्य में 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' कहा गया है। वेद में इसके लिए—'महते क्षेत्राय महते ज्येष्ठाय महते जान राज्याय। (यजु. ९,४.) —महान् सुरक्षा सर्वविध विकास और जनता के हित के लिए। आज निर्वाचन की तराजू पर एक तरफ अपने उद्देश्यो को रखें और दूसरी ओर प्रत्याशियों को। हर प्रकार के दबाव, जातिवाद, भाषा, धर्म, क्षेत्र आदि की संकीर्ण भावनाओ से ऊपर केवल उसी प्रत्याशी को अपना अनमोल मत दें जो संविधान और हमारी भावना के अनुरूप हो। क्योंकि, योग्य और उत्तरदायी व्यक्ति ही ऐसा सुदृढ़ तथा चिरस्थायी प्रशासन दे सकता है, जो सब के लिए समता, सुरक्षा, स्वतन्त्रता तथा न्याय जैसे मूल सिद्धान्तों को चरितार्थ कर सके। जो भी इस कार्य में अयोग्य है, वह मत का अधिकारी भी नहीं हो सकता।

हमारे सामने दूसरी दुविधा उठती है कि प्रत्याशी की योग्यता की कसौटी क्या हो ? यजुर्वेद के पहले ही मन्त्र में हमारी इस दुविधा का बड़े ही सरल और संक्षिप्त शब्दों में हल बताया है—"**मा वः स्तेन ईशत मा अघशंसः**"—चोर और पाप का प्रशंसक, तुम्हारा शासक न हो। समाज, संविधान के नियमों के विपरीत दिन या रात में दूसरों के स्वत्व, अधिकार, पदार्थ को लेना ही चोरी है। अर्थात् सामाजिक नियमों, मर्यादाओं, व्यवस्थाओं का उल्लंघन ही पाप है। जो स्वयं पाप करता है वह स्तेन है और जो पाप करने वालो का समर्थक है, उसका किसी भी प्रकार अनुमोदन करता है, उत्साह बढाता है, पक्ष लेता है, आश्रय देता है, छिपाता है और रक्षा करता है, वह अघशंसी है। ऐसे शासक भक्षक बन कर स्वयं या दूसरों द्वारा प्रजा का खून चूसेंगे तथा संविधान की मर्यादाओ को भंग कर अव्यवस्था और अराजकता को जन्म देंगे। अतः जो संविधान के प्रति सच्चा हो और किसी भी प्रकार से नियमों का उल्लंघन न करे तथा उल्लंघन करने वालों का समर्थन न करे, वही प्रत्याशी हमारा प्रतिनिधित्व कर सकता है। यही भाव ऋग्वेद में '**मा नो दुःशंस ईशत्**' (१, २३, ९) शब्दो में है।

अथर्ववेद के बारहवें काण्ड के पृथिवी सूक्त में बताया गया है, कि पृथिवी (मातृभूमि) को किस प्रकार सत्य, शिव, सुन्दर बना सकते हैं अर्थात् राष्ट्र को उत्तम, समृद्ध बनाने के लिए हमे क्या करना चाहिए।

इस दृष्टि से प्रथम मन्त्र के शब्द विशेष विचारणीय हैं—

सत्यं बृहत्‌=ऋतमुग्रं दीक्षा तपो,
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं,
लोकं पृथिवी नः कृणमेतु॥

—सत्यं बृहत्‌=उदारता=हृदय की विशालता, सहानुभूति, व्यवहार में अपने पराये का भेदभाव नहीं। ऋत=नियमों का पालन, कर्तव्य परायणता। उग्र=शासन को चलाने की दृढ़ता, न्याययुक्त सामाजिक नियमों का पालन। दीक्षा=योग्यता, कार्यकुशलता। तप=संयम, द्वन्द्व सहन, कष्ट सहिष्णुता, नियमित जीवन, इन्द्रियों को वश में रखना। ब्रह्म=ज्ञान, शिक्षा और यज्ञ=शुभ कर्म ही विकास तथा समृद्धि के कारण बनते है। सत्य, ऋत आदि गुणों से युक्त पृथिवी ही राष्ट्र के भूत-भविष्य और वर्तमान की रक्षिका और निर्मात्री होती है। निर्वाचित उन्हीं को करना चाहिए, जिनके जीवन में इन गुणो का समावेश हो, अन्यथा बबूल के बीज बोकर आम की आशा करना जैसा होगा।

प्रजातन्त्र के प्रतिनिधियों का सबसे आवश्यक गुण है—सहानुभूति, क्योंकि मतदाताओं को हर समय उनसे काम पड़ता है। जो बिना भेदभाव नागरिकों के सहयोग के लिए सदा उद्यत रहे, वही सच्चा जन-प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

प्रजातन्त्रात्मक राजनीति की जड़ है—जनता से जीता-जागता सम्पर्क, उसके सुख-दुःख में भागीदार होना, स्वय उसके जीवन में जोना अर्थात् जन सम्पर्क, जन सेवा।' अयोध्यासिंह उपाध्याय ने कहा है—

जो हो राजा और प्रजा दोनो का प्यारा,
जिसका का बीते देश-प्रेम में जीवन सारा।
देश-हितैषी हमें चाहिए अनुपम ऐसा,
बहे देश-हित की जिसकी नस-नस में धारा॥

पता—डा० साधु आश्रम, होशियार- पुर-१४६०२१

इतिहास कभी मरता नहीं है

दिलचस्प

कौन कहता है इन्दिरा मर गई
कौन कहता है कि गम की रात है
जिस्म ही तो गया है जहां से
कीर्ति तेरी हमारे साथ है
भास्कर बोला—खामोश रहो
गोली से गगन गिरता नहीं है
जयचन्दों की करतूतों से
इतिहास कभी मरता नहीं है
इन्सेट विनम्रता से बोला—
मेरी आंखों में जग झांकता है
उस क्रांति को कौन मार सकता
तेज जिसका आज विश्व मानता हे
आर्यभट्ट ने चीखकर कहा—
कायरता क्यों सर्वत्र बन गई
युग-नारी कभी मरा करती है ?
इन्दिरा तो नया नक्षत्र बन गई
ध्रुव सत्य है इन्दिरा मर गई
विश्वास मगर होता नहीं है
छवि है कि आंखों से जाती नहीं
स्वर कानों से हटता नहीं है

पता—चूरू ३३१००१ (राजस्थान)

लालडंगा को....

(पृष्ठ १ का शेष)

किसी भी गैर-नागा को २४ घण्टे के भीतर निष्कासित किया जा सकता है। नागाओं को छोड़कर कोई दूसरा वहा जमीन नही खरीद सकता। गैर-नागाओं के वर्षों पुराने जमीन के पट्टे रद्द किये जा रहे है। आर्यसमाज का भी पट्टा रद्द किया गया है। बिना परमिट नागालैण्ड में प्रवेश की अनुमति नही दी जाती है और नागा सरकार जब भी चाहे, किसी की भी जमीन अथवा संपत्ति जब्त कर सकती है। राष्ट्रपति से प्रार्थना की गई कि भारत सरकार इन बिलों की स्वीकृत न करे।

एक दूसरे ज्ञापन में आर्य नेताओं ने राष्ट्रपति से अपील की है कि सेनिक परिवारो के मकानो पर उनकी अनुपस्थिति में अवैध कब्जों के विरुद्ध जो मुकदमे किए जाते है, उनके लिए राष्ट्रपति एक अध्यादेश जारी करके अदालतो को ऐसे मुकदमो का फैसला ६ मास में कर देने का आदेश जारी करें जिससे देश की सुरक्षा में लगे सैनिक परिवारों की परशानिया दूर हो सके।

राष्ट्रपति महोदय ने नागालैण्ड तथा सैनिक परिवारो के संबध मे दिए गए ज्ञापनों पर तुरन्त उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया।

□

वैदिक धर्म प्रचार अभियान

गरोठ (म० प्र०) आर्यसमाज ने आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के माध्यम से समाज मंदिर व नगर में दो दिवसीय वैदिक धर्म प्रसार-प्रचार अभियान चलाया। प्रचारक श्री रामप्रताप आदि के प्रवचनों की सफलता इससे आँकी जा सकती है कि मंदिर व नगर में सत्यार्थप्रकाश साहित्य व आर्ष साहित्य की भारी बिक्री हुई।

लोकसभा के निर्वाचन......

(पृष्ठ ५ का शेष)

अपनाये हुए हैं, । इन्हें धार्मिक, राज नैतिक व कानूनी विशेष सुविधायें दे रखी हैं। इन्हें अनेक पत्नियां रख कर उन से 20-30 सन्तान तक उत्पन्न करने की छूट है। परन्तु हिन्दू एक ही पत्नी रख सकता है। परिणामस्वरूप इनकी संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। पाकिस्तान बनने के समय भारत में इनकी संख्या लगभग 6 करोड़ थी, अब यहां धर्मनिरपेक्ष राज्य न रह कर इस्लाभी राज्य बनेगा और हिन्दुओं का अस्तित्व दूभर हो जावेगा।

बहुमत की दुर्दशा

कितने दु:ख की बात है कि भारत मे 85 प्रतिशत हिन्दुओ का बहुमत होते हुए भी आज उनके महान् पुरुष भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या तथा मथुरा में श्री कृष्ण का जन्मस्थान मस्जिद के घेरे मे कैद हैं। गोमाता की हत्या जारी है, जिसे रोकने की मांग को लेकर दिल्ली में गोरक्षक हिन्दुओं की भीड़ पर गोली चली, हजारों आर्यसमाजी व हिन्दू जेलो में गये। सारे भारत मे अभी तक राष्ट्रभाषा हिन्दी न हो सकी। हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे हजारो आर्यसमाजी पंजाब की जेलो मे रहे, अनेक के बलिदान हुए। भारत के अनेक नगरों में आये दिन हिन्दुओं पर हमले होते रहते हैं, पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगते हैं, तिरंगे झंडे फाड़कर पाकिस्तानी झंडे लहराये जाते हैं। अपने ही देश में हिन्दुओं की यह दयनीय अवस्था बनने के साथ ही भारत की अखण्डता, स्वतंत्रता व हिन्दू घोर संकट में

लोकसभा के निर्वाचन में इस बार भारी संख्या में मुस्लिम उम्मीदवार खड़े किये गए हैं। देहली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुला बुखारी को लीबिया के नेता कर्नल कज्जाफी व (दि० 19-11-84 के बी०बी०सी० के समाचारो के अनुसार देश के बड़े-बड़े नेताओं के मारने की उनकी योजना के अन्तर्गत प्रधानमंत्री इन्दिरा गाधी की भी हत्या की योजना थी) अन्य मुस्लिम राष्ट्रों से करोड़ों रुपया प्राप्त हुआ है। भारत के प्रसिद्ध तस्कार सम्राट हाजी मस्तान भी करोड़ों रुपया व्यय करके अपने उम्मीदवार खड़े कर रहा है। राजस्थान से जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, कोटा, नागौर, व बाड़मेर से मुस्लिम लीग अपने उम्मीदवार खडे करने की घोषणा कर चुकी है। यह योजना अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम राष्ट्रों के षड़यन्त्र का ही एक अंग है। भारत में फैल रही हिंसा, अराजकता व विघटनकारी प्रवृत्तियों में उनका हाथ है। इस अवसर पर लोकसभा में उनके अनुयायी एवं ऐजेन्ट अधिक संख्या में पहुंच सकें इसके लिये वे प्रयत्नशील हैं। यह भी निर्विवाद सत्य है कि भारत स्थित मुसलमान हृदय से इस्लामी राज्य चाहते हैं। मुसलमान किसी भी राजनैतिक दल में हों मुसलमान को ही वोट देंगे। संसद मे वे चाहे कांग्रेसी ही हों धर्मनिरपेक्षता त्याग कर अपने सम्प्रदाय के पक्ष में ही बोलेंगे। परन्तु हिन्दु कांग्रेसी हिन्दू हितों की बात कहने में संकोच करते हैं। क्योंकि उनकी धर्मनिरपेक्षता मुस्लिम तुष्टीकरण तक सीमित है।

यह समझना भी आत्म-प्रवंचना होगी कि नये प्रधानमंत्री राजीव गांधी कांग्रेस की उक्त नीतियों में कोई परिवर्तन करेंगे। वे घोषणा कर चुके हैं कि नीतियां वही रहेंगी। फिर बदलाव कैसा हुआ है? किसी कवि के शब्दों में:—

पंछी समझते हैं कि चमन बदल । है,
सितारे यह कहते हैं कि गगन
बदला है।
मगर शमशान की खमोशी यह
कहती है,
है लाश वही पुरानी सिर्फ कफन
बदला है॥

यदि उपरोक्त हिन्दुत्व विनाशकारी नीति को बदलना है तो हिन्दुओं को ही अब बदलना होगा अर्थात् अपने वोट बदलने होंगे, तब सब कुछ बदल जावेगा। इस देश में राम, कृष्ण, आदि के नाम वेद, शास्त्र, गीता, रामायण, तथा आर्य (हिन्दू) धर्म, सभ्यता, संस्कृति, देश की अखण्डता तथा स्वतन्त्रता को रखना है तो इस अवसर पर सभी हिन्दू एक जुट, संगठित, सावधान व संचेत होकर केवल दृढ़ हिन्दू विचारधारा के उम्मीदवारों को ही अपना वोट दें। यदि इस अवसर से भी चूक गये तो किसी कवि के यह शब्द याद रखें—

अगर अब भी न चेते तो
ऐ हिन्दोस्तां वालो।
तुम्हारी दास्तां तक भी
न होगी दास्तानों में॥

अत: शीघ्र चेतो, उठो, आगे बढ़ो और चुनावी युद्ध मैदान में विजय प्राप्त करो। भारत माता पुन: पुकार रही है सभी देशभक्तों को कि फिर मेरा अंगभंग न हो जावे। मेरे पैरों में पुन: गुलामी की जंजीरें न पड़ जावें। मेरी स्वतन्त्रता के लिये शहीदों का बहाया गया खून व्यर्थ ही न चला जावे। उन महान् पुरुषों व शहीदों की आत्माएं देख रही हैं भारत के ६० करोड़ देशभक्तों की ओर।

पता—१४३० पं. शिवदीन का रास्ता
कृष्णपोल, जयपुर-३०२००३

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश में फ्री हास्पिटल और नये डेन्टल क्लीनिक का उद्घाटन

1980 मे डा० बी० एस०कौशल (लन्दन) ने डिसपेंसरी की इस बिल्डिंग का उद्घाटन किया था। डा० मंगल सेन भसीन आज से 6 साल पहले जब भी मिलते तो यही कहते कि इस जगह एक डिस्पेंसरी बननी चाहिए ताकि हम लोग कुछ सेवा कर सके। उनकी प्रेरणा से 1978 में एक छोटे से पौधे की शक्ल मे यह डिस्पेंसरी बनी। डा० कल्पना गुप्ता ने हमारी प्रार्थना पर इस डिस्पेंसरी में काम करना शुरू किया। उनकी और डा० भसीन जी की मेहनत से यह डिस्पेंसरी दिन-दूनी और रात चौगुनी तरक्की करती गई। हमारे आर्यसमाज के संस्थापक सदस्य श्री ब्रज भूषण आज हमारे बीच नही हैं। उन्होंने अपने पुराने दोस्त डा० कौशल से डिस्पेंसरी की बिल्डिंग बनाने में मदद की प्रार्थना की। डा० कौशल ने अपने ट्रस्ट से एक लाख रु० बिल्डिंग बनाने के लिए देने का वायदा किया। बिल्डिंग बनने का काम शुरू हो गया। इस बिल्डिंग पर लगभग 2 लाख रुपया लगा। इसके बनाने मे और भी कई सज्जनों ने दान दिया जिनमें मुख्य हैं —

श्रीमती रुकमणी देवी टुटेजा-२८०००/—रु० श्री मायाधारी शर्मा-११०००/-रु०, श्रीमती शान्ता तलवाड-१८०००/-रु०।

ये राशियां हमे श्री धर्मपाल मेहता की कोशिश से मिली। इसके लिए हम मेहता जी के आभारी हैं। इसके कुछ समय बाद एक टेस्टिंग लेबोरेटरी खोलने का निश्चय किया गया। इसे बनाने मे डा० ए० डी० सहगल और हमारे पड़ोसी श्री जे० के० सिहल बी-२८, कैलास कालोनी ने हमारी मदद की और लैबोरेटरी का सारा सामान आर्यसमाज को खरीद कर ले दिया जिसके लिए हम इन दोनों सज्जनों के आभारी हैं। काफी कोशिशों के बावजूद हमे कोई अच्छा अनुभवी पैथोलाजिस्ट न मिल सका। लेकिन हमारी खुशकिस्मती है कि अब — वर्षों से श्री एन० सी० डे जैसे अनुभवी डाक्टर हमारी इस लैबोरेटरी के इन्चार्ज हैं और लैबोरेटरी का काम बडी अच्छी तरह से चल रहा है। १९८२ में श्री पवन कुमार बधवार की प्रेरणा से उनकी मौसी श्रीमती चांदरानी ने १२०००/-रु० की एक इ० सी० जी० की मशीन हमें लेकर दी। उसके बाद हमने डिस्पेंसरी में फिजियोथिरेपी का डिपार्टमेंट खोल दिया जिसमें काफी मरीज आने शुरू हो गये। श्री बधवार ने अपने नजदीकी रिश्तेदार श्री एस एस० सेठ और श्री सहगल से७५००/-रु और ७५००/-रु० यानीकुल १५०००/-रु० फिजियोथिरेपी के लिए लेकर दिया जिसके लिए आर्यसमाज उनका बहुत आभारी है। एक और दानवीर श्री सोहनलाल आनन्द, (एन—१२४, ग्रेटर कैलाश कालोनी) ने फिजियोथेरपी मशीनों के लिए हमे १००००/- रु० देने का वायदा किया और ५०००/- रु० की एक मशीन लेकर दी। अब इस विभाग से काफी लोग लाभ उठा रहे हैं। हम श्री अनिल गुलाटी (एस०-१६६) जो हमारी समाज के भीष्मपितामह श्री बी० आर० गुलाटी के भतीजे हैं, उनके भी आभारी हैं। उन्होंने हमें दवाइयां रखने के लिए एक रेफरीजरेटर लेकर दिया और गर्मी के मौसम में लोगों की प्यास बुझाने के लिए एक वाटर-कूलर लगवा दिया जिस पर उन्होंने १८०००/- रु० खर्च किया। इस तरह डिस्पेंसरी का काम धीरे-धीरे बढ़ता गया। १९७७-७८ में मरीजों की तादाद २४०० थी, लेकिन १९८३ मे३०००० मरीज इस डिस्पेंसरी से लाभ उठा चुके हैं। इस सफलता का कारण वे योग्य डाक्टर हैं, जो इस समय हमारी डिस्पेंसरी में काम कर रहे हैं। उनके नाम इस प्रकार है—

डा० के० जी० एस० नन्दा, डा० कल्पना गुप्ता, डा० बी० पी० वर्मा, डा० मिसेज तनेजा, डा० उमेश गुप्ता, डा० विजय अरोड़ा, डा० गीता० चोपड़ा, डा० एन० सी० डे, डा० मंगल सैन, डा० वी० के० सहगल।

डा० वी० के० सहगल की प्रेरणा पर उनकी बहन श्रीमती सतीश सहाय ने अपने स्व० पति डा० बी० डी० सहाय की पुण्यस्मृति में ६५०००/- रु० का डेन्टल क्लीनिक का सारा सामान डिस्पेंसरी को दान दिया जिसका उद्घाटन मेजर जनरल बी० सी० कोछड़, डायरेक्टर आर्मी डेंटल कोर के करकमलों द्वारा किया गया।

—शान्ति प्रकाश बहला प्रधान आर्य समाज ग्रेटर कैलाश

१० व्यक्तियों का यज्ञोपवीत

समालखा (हरियाणा)। पिछले दिनों हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति ने भोरा रसूलपुर ग्राम के समाज प्रधान के निवास पर वेदप्रकाश शास्त्री के पौरोहित्य में परिवारिक यज्ञ कराया। यज्ञ में १० व्यक्तियों ने यज्ञपवीत धारण किये जिनमें स्वेच्छया [illegible] करने वाले श्री कंवर सिह पुत्र श्री नसरू मूला जाट भी थे।

सान्ताक्रुज (बंबई): महिला आर्यसमाज ने युगों बाद जन्मी श्रीमती गांधी जैसी सारा जीवन क्रियात्मक रूप से अपना सर्वस्व देश को अर्पित करने वाली लौह-नारी की निर्मम हत्या पर हार्दिक शोक व नये प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को भारी उत्तरदायित्व वहन करने में पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया।

सामाजिक जगत्

जापान यात्रा (५)

ओसाका और टोकियो की विशेषता

—रामलाल मलिक—

सब यात्री १३ सितम्बर को हागकाग से ताईवान होते हुए जापान के बडे औद्योगिक नगर ओसाका पहुचे। १४ सितम्बर को प्रातः हम ऐतिहासिक स्थान देखने चले गये। हर किस्म का जितना औद्योगिक सामान इस शहर मे बनता है, जापान के किसी और नगर मे नही। हमको जापान के प्राचीन देहात का एक घर दिखाया गया। उसके बडे कमरे मे एक चौरस कुण्ड बना हुआ था। हो सकता है यह पहले हवन कुण्ड ही रहा हो। परिवार के लोग इसके आस-पास बैठकर मकान को गरम करते थे। रास्ते मे ओसाका का रेलवे स्टेशन आया। यात्रियो मे से कुछ भाई वहा से जापान की राजधानी टोकियो जाने के लिए उतर गये। आसाका से एक बुलेट ट्रेन दो सौ साठ किलोमीटर प्रति घण्टा की गति से चलकर सीधी टोकियो रुकती है। अगर दिल्ली से कोई बुलेट ट्रेन चले तो बबई साढे चार घण्टे मे पहुच जायेगी। ट्रेन ओसाका से चलने के पश्चात् रेलवे-लाइन से ऊपर उठ जाती है। यह कैसे होता है, यह मैंने नही देखा। परन्तु बताया गया कि कई तार और चुम्बक लगे हुए है जिससे गाडी रेलवे-लाइन को स्पर्श भी नही करती। टोकियो जापान का सबसे बडा नगर है। दूसरे दिन हम ऐतिहासिक स्थान देखने चले गये। हमारे राष्ट्रपति-भवन जैसा ही वहा शाहीमहल है। वही सब सरकारी कार्यालय है। साथ ही बहुत बडा बाग है। उसके बाद हम एक बौद्ध मंदिर में गये। दूर से ऐसा लगा कि मदिर मे यज्ञ हो रहा है परन्तु समीप जाने पर देखा कि बाहर यज्ञ-कुण्ड जैसा चौरस एक कुण्ड रखा था। हजारो की सख्या मे यात्री आते थे, पहले उस कुण्ड मे अगरबत्ती जलाकर डालते, फिर मदिर के अन्दर जाते। २५ एकड जमीन मे बने डिस्नीलैंड को देखने के लिए २५ डालर खर्च करके बहुत से यात्री गये। उन्होने बताया कि वहा इतने सुन्दर झूले इत्यादि बच्चो और बूढो के लिए अलग-अलग लगे हुए है कि वहा से निकलने को दिल नही करता। सारे विश्व मे ऐसे दो ही स्थान है, एक अमेरिका मे और दूसरा जापान मे।

हम टोकियो के ग्राण्ड पैलेस होटल मे ठहरे थे। हर कमरे मे रेडियो और बारह चैनल का टेलीविजन लगा था। ये टेलीविजन चौबीस घण्टे चलते है। हर कमरे मे दात साफ करने के लिए ब्रुश रोजाना नया रख दिया जाता था। मैन पूछा कि कल तो आप ब्रुश रख गये थे, आज क्या जरूरत थी। वे कहने लगे कि कल के ब्रुश फेक दो और नया ब्रुश लो। इस होटल के आस-पास बाजारो और गलियो मे किसी किस्म का वाहन न रात को होता है, न दिन को। इसी तरह सारे के सारे टोकियो मे कार इत्यादि के लिए अलग पार्क बने हुए है। वहा किसी बैक का कोई कर्मचारी अपनी ड्यूटी के समय न तो किसी प्रकार की बात करता है और न चाय पीता है। हर कर्मचारी बडी निष्ठा से काम करता है।

व्यायाम विकास केन्द्र का गतिविधियां

1958 मे तीन व्यक्तियों, श्री शान्तिलाल जी खरबन्दा, श्री सोहनलाल कोहली, श्री सतीन्द्र कुमार ने स्वामी विद्यानन्द जो विदेह की प्रेरणा से व्यायाम विकास का कार्य आरम्भ किया था। आज तक इस केन्द्र की 100 से अधिक शाखाए देहली, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र आदि मे है। इसके अतिरिक्त महिला शाखाए भी प्रति दिन अलग लगती है। आर्यसमाज का छठा नियम इस प्रकार है—"ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। अगर सच्चे मायनो मे कोई सस्था इस पूरे नियम का पालन कर रही है तो वह व्यायाम विकास केन्द्र है।

शारीरिक उन्नति होगी तो आत्मिक उन्नति होगी और उसके बाद सामाजिक उन्नति। व्यायाम विकास केन्द्र के मुख्य सगठनकर्ता श्री शान्ति लाल खरबन्दा (जोशी रोड, दिल्ली) हैं। प्रतिदिन प्रात काल 5-15 बजे (सर्दियो मे) व्यायाम का कार्य आरम्भ होता है। गर्मी हो, सर्दी हो, आधी हो, वर्षा हो, व्यायाम का काय होता रहता है। थोडे व्यक्ति आये, तो भी कार्य होता है। आसमान के नीचे कैस व्यायाम करते होगे? अजमल खां पार्क के साथ शैड है। साथ ही कालेज है। वहा व्यायाम का कार्य चलता है। समय की पाबन्दी का पूरा ध्यान रखा जाता है।

किसी शाखा का बैंक मे काई एकाउण्ट नही है। इस सस्था की न कोई फीस है न कोई चन्दा है। नई बात है। बिना अर्थ के काम कैसे चलता है? हर शाखा वार्षिक उत्सव मनाती है। तब आपस मे मिलकर कुछ रुपया अपने सहयोगियों से ले लेते है। इसके अतिरिक्त यह संस्था सैकडो रजाइयां, सिलाई की मशीनें भी गरीबो को प्रतिवर्ष वितरित करती है।

इस व्यायाम विकास के दो बड़े समारोह 2 अक्टूबर (स्थापना दिवस) चादनी चौक मे और होली करोलबाग में उत्साह से मनाये जाते है जिसमें दिल्ली और बाहर के हजारों लोग भाग लेते हैं।

भजनोपदेशकों का प्रशिक्षण

यमुनानगर (हरियाणा) हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा श्री पन्नालाल पीयूष के आचार्यत्व मे दयानन्द उपदेशक विद्यालय मे सगीत शिक्षण (भजनोपदेशक) प्रारभ कर रही है। वैदिक धर्म प्रचार मे रुचि रखने वाले १६ से ३० आयु वर्ग के व्यक्ति, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, दयानन्द मठ, रोहतक के पते पर आवेदन कर सकते है। प्रार्थी की संस्कृत सहित हाईस्कूल योग्यता अनिवार्य है। चुने गए छात्रो की भोजन व आवास व्यवस्था नि शुल्क होगी।

कालिज-छात्रों को वैदिक धर्म की दीक्षा

मेरठ वैदिक धर्म रक्षा सभा ने बुढाना द्वार समाज मन्दिर मे मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, बुलन्दशहर, सीतापुर, हमीरपुर, मुरादाबाद आदि जनपदो के तथा मेरठ के बी० ए० व एम० ए० कक्षाओं के छात्रो को वैदिक धर्म की शिक्षा देने की योजना प्रारम्भ की है। मेरठ कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० वेदप्रकाश ने उन्हे यज्ञोपवीत पहनाने के साथ यज्ञ, सन्ध्या व हवन की विधि बतायी। वैदिक धर्म, सस्कृति एव आचरण की व्याख्या देकर युवावर्ग को सादा, पवित्र जीवन बिताने तथा मास, मदिरा, धूम्रपान न करने तथा दहेज न लेने की प्रतिज्ञा करायी। उन्हे महर्षि कृत सत्यार्थ-प्रकाश भेट किया गया।

नौरोजी नगर मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिल्ली. ४७ आर्यसमाजो का सगठन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मडल प्रथम बार आर्यसमाज नौरोजी नगर मे १६ दिसम्बर को 'स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, आयोजित कर रहा है। अध्यक्षता प० सत्यदेव भारद्वाज (नैरोबी) करेगे तथा मुख्य-अतिथि लाला इन्द्रनारायण (हाथी दात वाले, के अतिरिक्त श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर, प्रो० विजय कुमार मलहोत्रा श्री आचार्य पुरुषोत्तम आदि वैदिक प्रवक्ता समारोह को सबोधित करेगे। आर्यसमाज ने अपना १७ वा वार्षिकोत्सव व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का सप्ताह व्यापी समारोह ८ दिसम्बर से प्रारभ किया। श्रद्धानन्द बलिदान दिवस १७ दिसम्बर को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के साथ ही मनाया जायेगा। समाज की प्रमुख गतिविधियो मे प्रत्येक रविवार को प्रात. साप्ताहिक सत्सग, वैदिक सस्कारो हेतु सुयोग्य पुरोहित की व्यवस्था, सायकालीन धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय तथा वैदिक पुस्तकालय की व्यवस्था उल्लेख्य हैं।

अंग्रेजी की अनिवार्यता का विरोध

रुड़की: अखिल भारतीय अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी मंच के संस्थापक महामत्री श्री मुकेश जैन प्र हैं जिन्होने हिन्दी मे परीक्षा यरिंग की उपधि ली तथा व यान्त्रिकी की प्रोजेक्ट रिपोर्ट कर इसे गौरवान्वित किय को हिन्दी मे परीक्षा देने करने के लिए रुडकी विश्ववि० उनकी उत्तर पुस्तको का मूल्याकन बिना ही फेल कर दिया था तथा उ सचिव ने उन्हे नियम विरुद्ध कार्य करने की लिखित चेतावनी दी थी। किंतु श्री जैन ने लगातार सघर्ष किया और सफल रहे। उक्त मच के तत्वावधान में आई० आई० टी० की इजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा व स्टील अथारिटी आफ इण्डिया लि० की उत्तर पुस्तिकाओ मे आग लगाकर छात्र अग्रेजी की अनिवार्यता पर विरोध प्रकट कर चुके है।

महर्षि निर्वाण समारोह

नवादा (बिहार) यहा आयोजित महर्षि निर्वाण समारोह को सार्वदेशिक प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले व जयप्रकाश आर्य (भू० पू० इमाम बेतिया) ने सबोधित किया। कुंवर जोरावर सिह, श्रीमती प्रभावती (बरसाना) व ठाकुर वीरेन्द्र सिंह के भजनोपदेशो का उपस्थित जन समुदाय पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—अल्मोडा (उ० प्र०) आर्यसमाज मदिर ताडीखेत मे २८ नवम्बर को प० प्रेम देव शर्मा के पौरोहित्य व महात्मा भक्त मुनि की अध्यक्षता मे "यशवन्तराव चह्वाण शातियज्ञ" आयोजित हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी ने दिवगत आत्मा की शाति व राष्ट्रीय ऐक्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

आर्य वीर दल महासम्मेलन

गुडगाव (हरियाणा) आर्यवीर दल हरियाणा के आठवे प्रदेशीय महासम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के महामत्री श्री ओम प्रकाश त्यागी ने किया। लगभग एक हजार आर्यवीरो की रैली व शोभायात्रा स्मरणीय रही अध्यक्ष ने चरित्रवान धार्मिक युवको की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए समाजो को सलाह दी कि युवको को आगे बढाने तथा आर्यवीर दल के लिए वे बजट का २५% भाग दे, तभी भारत पर हो रहे सास्कृतिक आक्रमण को रोका जा सकेगा। प्रो० उत्तमचन्द शरर व प० बालदिवाकर हस ने भी समारोह को संबोधित किया। वेद सम्मेलन में प० शिव कुमार शास्त्री व प्रो० रामविचार ने वेदो के महत्व पर प्रकाश डाला। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के समापन कार्यक्रम मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपल शालवाले ने सिखों को हिन्दुओ का अभिन्न अग बताकर राष्ट्र की अखण्डता की दृष्टि से साम्प्रदायिक व उग्रवादियों से सतर्क रहने की सलाह दी।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डो० सी० (४०८)
१६ दिसम्बर, १९८४

लोकस

दिल्ली

अपनाये ऋषि दयानन्द
नैतिक व
रखी है। ; फरवरी १९८५ ऋषि मेला एव रजत जयन्ती समारोह
उन से 2 कार्यालय : आर्य समाज, अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१
करने की इ (फोन-३४३७१८)
पत्नी रख समारोह मे सम्मिलित होने वाले के लिए रेल और बसो का प्रबन्ध किया
इनके है। बस यात्रा का किराया ३७५/- रु० है। रेल द्वारा दिल्ली-टकारा-वापस
प भी केवल २००/-रु०। बसो का प्रोग्राम निम्नलिखित है।

तारीख	प्रस्थान	पहुच
१०-२-८५	आर्य समाज करोल बाग से ६ बजे प्रात:	६ बजे सुजानगढ़
११-२-८५	सुजानगढ प्रात: ८ बजे	११ बजे जोधपुर
१२-२-८५	जोधपुर प्रात. ७ बजे	५ बजे साय आबू रोड
१३-२-८५	आबू रोड प्रात. ७ बजे	४ बजे राजकोट
१४-२-८५	राजकोट प्रात: ७ बजे	५ बजे वाया सोमनाथ मन्दिर पोरबन्दर
१५-२-८५	पोरबन्दर प्रात. ७ बजे	वाया-द्वारका, द्वारकाबेट जामनगर साय ५ बजे
१६-२-८५	जामनगर प्रात. ८ बजे	टंकारा १० बजे प्रात. वाया मोरवी
१७-२-८५	टकारा मे ही	
१८-२-८५	टकारा से २ बजे	अहमदाबाद ३ बजे
१९-२-८५	अहमदाबाद से ३ बजे (साबरमती आश्रम)	चित्तौडगढ़ ३ बजे वाया उदयपुर चित्तौड गुरुकुल, चित्तौड़ किला,
२०-२-८५	चित्तौड से प्रात ८ बजे	वाया हल्दीघाटी अजमेर ३ बजे पुष्कर ४ बजे वापिस अजमेर ७ बजे साय
२१-२-८५	अजमेर से प्रात. ८ बजे	जयपुर (आमेर किला) से दिल्ली साय ८ बजे

रेल से बुक करवाने की अन्तिम तिथि २५-१-१९८५। बस से बुक करवाने की अन्तिम तिथि १-२-१९८५

सूचना. जिस क्रम मे सीटे बुक होगी उसी क्रम से बस मे स्थान दिया जायेगा। टकारा मे ऋषि लगर के लिए अधिक से अधिक आटा, चावल, दाल, घी, नकद आदि भिजवाने की कृपा करे।

शान्ति प्रकाश बहल, प्रधान   रामलाल मलिक, सयोजक   रामशरण दास आहुजा मन्त्री

दूरभाष ६४१७२६६   ५६२५१०   ३४३६१८,

टंकारा सहायक समिति मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

इन्द्रवेश और विश्वबन्धु

आर्य सभा के दो उम्मीदवार

आर्य सभा ने अपनी ओर से दो उम्मीदवार खडे किए है — फरीदाबाद से श्री स्वामी इन्द्रवेश और अलीगढ से श्री विश्वबन्धु। श्री इन्द्रवेश जी संसदसदस्य है और भारतीय लोकदल के वर्तमान अध्यक्ष हैं— जबकि चौ० चरण सिंह लोकदल को छोड कर अपनी अलग दलित मजदूर किसान पार्टी बना चुके हैं। श्री प० विश्वबन्धु जो धुरंधर विद्वान है और आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के पूर्व अध्यक्ष है। समस्त हिन्दुत्ववादी संस्थाओ ने — जिनमे भाजपा भी शामिल है, इन दोनो उम्मीदवरो को पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की है। दोनों को ही प्रबल प्रत्याशियो से लोहा लेना है। आर्यजनों ने इन दोनों प्रत्याशियों को जिताने का अभियान प्रारम्भ कर दिया है। इन दोनो उम्मीदवारों की आर्थिक सहायता के लिए धन श्री स्वामी शक्तिवेश, सयोजक आर्य सभा, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा) के पते पर भेज सकते है।

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज हीरा मण्डी आगरा के लिए एक योग्य पुरोहित चाहिए। अपनी योग्यता, अनुभव और सस्कार आदि करवाने मे दक्षता सम्बन्धी विवरण भेजे। पत्र व्यवहार का पता मंत्री आर्यसमाज, हीरा मण्डी, आगरा

पट्टी में राष्ट्रीय एकता दिवस

अमृतसर-, गवर्नमेंट हा० से० स्कूल पट्टी मे, लोक सम्पर्क विभाग के सयोजन में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। अध्यक्षता परगनाधिकारी (सिविल) श्री सुरेन्द्र सिंह अग्रवाल ने की। कार्यक्रम में शामिल नगर के सभी स्कूलो के विद्यार्थियो ने देश की एकता व अखण्डता पर सुन्दर भाषण तथा देशभक्तिपूर्ण कविता पाठ किया। उपस्थित जनता ने राष्ट्रीय ऐक्य व अखण्डता के रक्षण हेतु शपथ ली है।

— कागठी (जम्मू) महात्मा श्री कृष्ण चन्द्र आर्य की दोहती व मास्टर प्रेमसुर की सुपुत्री आ० कमलेश कुमारी व श्री भण्डूराम के सुपुत्र चि० बलवीर का शुभ पाणिग्रहण संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी मत्री प्रो० प्रभु शुर आर्य के पौरोहित्य मे वैदिक रीती से सपन्न हुआ। आर्य-जगत् साप्ताहिक की सहायतार्थ १५ रु० दान दिया गया।

बालावास में समाज मन्दिर का निर्माण

बालावास (हिसार) : ग्राम में शराब के ठेके के विरुद्ध, आयसमाज अपने सफल ६ माहव्यापी आदर्श सत्याग्रह की स्मृति मे पचायत द्वारा दी गयी ५ बीघे जमीन पर समाज मन्दिर का निर्माण कर रहा है। हरियाणा के देहाती क्षेत्र मे बुरी तरह फैली चारित्रिक व नैतिक बुराइयों के निवारण मे यह मंदिर केन्द्र म होने से महत्वपूर्ण कार्य कर सकेगा। समाज के दानवीरो से इस निर्माण यज्ञ मे—यज्ञशाला, अतिथि भवन, पाकशाला, स्नानघर, व्यायामशाला, पुस्तकालय—वाचनालय, छात्रावास, सभा-भवन, मुख्य द्वार आदि के निर्माण मे मुक्तहस्त दान की अपिल की गयी है। पूर्ण निर्माण हेतु प्रस्तुत दानवीर के रेखाचित्र सहित नाम का पत्थर भवन मे लगेगा।

उज्जैन (म० प्र०). आर्यसमाज चद्रशेखर मार्ग के प्रधान श्री नन्दलाल आर्य ने ३० वर्षीय श्री शैलेन्द्र इमानुएल को हिन्दू धर्म ग्रहण कराया। श्री शैलेन्द्र ने वैदिक रीति से नयन कुमारी ठाकुर से विवाह किया। उपस्थित नागरिकों ने वर-वधू को आशिर्वाद दिया।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वा.मत्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र ओ३म् कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८ अंक ५२-५३ रविवार, २३ दिसम्बर १९८४ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य —५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | पौष शुक्ला ८, २०४१ वि०

स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद

अमर हुतात्मा का अमर सन्देश

Arya brethren assembled in the anniversary celebrations, on this sacred occasion, please do not forget that the vedic Dharma does not belong to any sect nor is it a religion. It is the Eternal Dharma without which the social fabric of the world can not stand.

To you was given the key which disclosed untold spiritual treasures in ancient times and it can be your privilege still to give Shanti (शान्तिः) to a suffering world.

But first you have to purge yourselves of impurities. Take a solemn pledge to-day that you will not fail in the discharge of the five great yajnas daily that you will break the fetters of unnatural caste system and will work forthe वर्णाश्रम व्यवस्था in your lives that you will root-out the curse af untouchability from the land of your birth and that you will throw open the doors of the Aryasamajie universal church to mankind without distinction of sect, creed, colour or nationality.

May the Param Purusha help you in the fulfilment of your vows and may He so guide you in your path of duty that during the next visit of the Sanyasi in your midst, he might be able to see visible signs of progress towards the prescribed goal.

your brother in faith
Shradhanand Sanyasi

यह अमर सन्देश स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से लखकर श्री प० धर्मदेव जी सिद्धान्तालकार को मगलौर (दक्षिण कर्णाटक) जिला आर्यसमाज के उत्सव के अवसर पर ११-५-२५ को भेजा था। यह सन्देश स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है और मगलौर ही नही, प्रत्येक आर्यसमाज की उन्नति के लिए विशुद्ध मार्गदर्शक है। इसका आर्यभाषा मे अनुवाद इस प्रकार होगा —

आर्यभाइयों के प्रति

इस पवित्र अवसर पर कृपा करके न भूल जाओ कि वैदिक धर्म का सम्बन्ध किसी सम्प्रदाय के साथ नही है, नाही यह मत या मजहब है। यह सनातन (नित्य) धर्म है जिस के बिना जगत की सामाजिक स्थिति असम्भव है।

तुम्हे वह चाबी दी गई थी जो प्राचीन काल मे असख्य आध्यात्मिक कोष को खोलती थी और अब भी तुम्हारा ही यह खास अधिकार हो सकता है कि पीड़ित जगत् को तुम शाति प्रदान कर सको।

किन्तु सबसे पहले तुम्हे अपनी अपवित्रताओ को दूर करना होगा। आज एक गम्भीर प्रतिज्ञा करो या व्रत लो कि तुम पञ्च महायज्ञो के अनुष्ठान मे न चूकोगे, कि तुम अस्वाभाविक जाति-भेद की जंजीरो को तोड डालोगे और वर्णाश्रम-व्यवस्था को अपने जीवन मे क्रियात्मक रूप दोगे, कि तुम अपने देश से अस्पृश्यता के अभिशाप का समूलोन्मूलन कर दोगे और आर्यसमाज रूपी सार्वभौम धर्म मन्दिर के द्वारो को तुम मत, सम्प्रदाय, रग, जाति आदि के भेद के बिना मनुष्यमात्र के लिए खुला रखोगे।

परमपुरुष—परमात्मा इन व्रतो के परिपालन मे तुम्हारे सहायक हों और अपने कर्तव्य मार्ग मे वे तुम्हे ऐसे प्रेरित करें कि इस सन्यासी से अगली यात्रा में वह निर्दिष्ट उद्देश्य की ओर उन्नति के स्पष्ट चिन्हो को देख सके।

तुम्हारा धर्मबन्धु
श्रद्धानन्द सन्यासी

प्रेषक —ओमप्रकाश आर्य, जालन्धर

यह विशेषाक २४ पृष्ठो का दिया जा रहा है। चुनावो की हलचल और मतदान की छुट्टी के कारण प्रेस बन्द रहने से ३० दिसम्बर का अंक नही निकलेगा। आगामी अंक ६ जनवरी १९८५ को होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति

—श्रीमान् गोविन्ददास 'भारतीय'—

अपरिचित जीवन की सुधि भूल
पड़े थे निद्रित से ये प्राण।
हृदय थे बने हुये जब मूक,
नही था 'अपनापन' भी ध्यान ॥

संगठन बिगुल बजा था एक,
सुना जब, हुई मधुर झंकार।
विश्व की बीणा तब सन्देश,
सुनाती अब भी वही पुकार ॥

अचानक आये तुम चुपचाप
सुनाया शुभ सन्देश महान।
हृदय ने पलके भी दी खोल,
देख कर 'जीवन' को अनजान ॥

श्रद्धा से उमड पडा है स्रोत,
हृदय से वही एक वरधार।
सलिल का प्रिय वह कल-कल नाद,
बजाते हृत्तंत्री के तार ॥

बहाकर खूनी रंग दुलार—
तुम्ही ने दिखलाया वह द्वार।
निबल भी सबल हुए वह लूट,
दिया जो नव-जीवन उपहार ॥

तुम्हारा रचा हुआ संगीत,
बुलाता हम को भी उस पार।
जहा प्रिय होकर वह बलिदान,
मधुर है बहती मलय-बयार ॥

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती   सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार   व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

स्वामी श्रद्धानन्द जी का अत्यन्त प्रिय वेद सूक्त

ओ३म श्रद्धयाग्निः समिध्यते
श्रद्धया हूयते । हविः
श्रद्धा भगस्य मूर्धनि
वचसाऽवेदयामसि ।।

भावार्थ—हम श्रद्धापूर्वक ही यज्ञाग्नि को प्रज्ज्वलित करते है और श्रद्धापूर्वक ही उसमे आहुति डालते है। हम अपने वचनो से श्रद्धा को ऐश्वर्यों के शिखर पर बतलाते है।

श्रद्धा एक बहुत बडा गुण है। श्रद्धा की अपार महिमा है। श्रद्धा शब्द श्रत् और 'धा' से मिलकर बना है। श्रत् का अर्थ है सत्य और धा का अर्थ है धारण करना। किसी बात को सत्य समझकर उसे अपने जीवन मे धारण कर लेने का नाम श्रद्धा है। श्रद्धा मे तर्क और विश्वास दोनो का समन्वय हो जाता है। इसलिए अन्धविश्वास का नाम श्रद्धा नही है। सत्य पर विश्वास करके उसे अपने हृदय में दृढता के साथ धारण करने को ही श्रद्धा कहते है। हम तो इस श्रद्धा के पीछे दीवाने है। अपने जीवन में अग्निहोत्र, संध्योपासना, गुरुजनो की सेवा, अतिथि-सत्कार, राष्ट्र-सेवा अनेक कर्मों को हम श्रद्धापूर्वक करते है। इस श्रद्धा से हमे असीम लाभ पहुचता है। श्रद्धा का ऐश्वर्य सब ऐश्वर्यों से ऊंचा है। अत. हृदयो मे श्रद्धा को धारण करो।

प्रियं श्रद्धा ददतः
प्रियं, श्रद्धे दिदासतः।
प्रिय भोजेषु यज्वस्वि
मे उदित कृधि ।।

हे श्रद्धे ! तू दान देने वाले का प्रिय कर। हे श्रद्धे ! तू मन मे दान देने की इच्छा रखने वाले का प्रिय कर, भूखों को भोजन देने वालों के प्रति प्रिय कर, इस कथन को पूर्ण कर।

हे श्रद्धे ! हे मंगलमयी श्रद्धे ! हम जानते हैं तू श्रद्धालु जनों का सदा ही प्रिय सम्पादन किया करती है। जो श्रद्धा के साथ सत्कर्मों में प्रवृत्त होते हैं, उनका अवश्य ही कल्याण होता है, इसलिए हम चाहते हैं कि हमारे राष्ट्र मे मनुष्य श्रद्धा के साथ दान करे, दान का संकल्प किया करे। श्रद्धा के साथ लोग भूखों को भोजन खिलाया करे। श्रद्धा के साथ यज्ञ मे तत्पर हुआ करे। इस प्रकार हम राष्ट्रवादियो का प्रत्येक शुभ कार्य श्रद्धा के साथ हुआ करे ताकि सब श्रद्धा के महत्व को प्राप्त करते रहे।

यथा देवाः असुरेषु
श्रद्धामुग्रेष चक्रिरे।
एवं भोजेषुयज्वस्व
स्माकमुदित कृधि ।।

जिस प्रकार देवजन उग्र से उग्र असुरो के मन मे श्रद्धा को उत्पन्न करते रहे है उसी प्रकार से भूखों को भोजन कराने वालो के मनो मे तथा यज्ञ करने वालों के मन में श्रद्धा उत्पन्न कर दे। हे श्रद्धे ! हमारे इस कथन को तू पूर्ण कर।

जगत् में हर समय कुछ लोग ऐसे हुआ करते हैं जिनके भीतर श्रद्धा का अभाव होता है। वे वेद-शास्त्र, धर्म-कर्म, सत्य, सदाचार किसी में श्रद्धा नही रखते। परन्तु हम देखते हैं कि समय आने पर बड़े-बड़े घोर नास्तिक और श्रद्धालु व्यक्ति भी श्रद्धालु देवजनों के जीवन से प्रभावित होकर श्रद्धावान बन जाते हैं। ऐसे उदाहरण हर समय उपलब्ध हो सकते हैं। श्रद्धासम्पन्न देव पुरुषों के जीवन का ऐसा चमत्कारी प्रभाव होता है कि वे उग्र से उग्र असुरों तक के मन मे श्रद्धा का संचार कर देते है। इसलिए हम चाहते है कि हमारे राष्ट्र के सब मनुष्य ऐसे श्रद्धामयी देवपुरुषों के संसर्ग में आकर श्रद्धालु हृदय वाले बन जाए। वे भूखों को भोजन कराने, यज्ञ करने आदि शुभ कार्यों को राजदण्ड, लोकराज, अपकीर्ति आदि के भय से न करें किन्तु श्रद्धा के साथ करे ताकि श्रद्धा का वरद-हस्त उनके ऊपर सदा बना रहे।

श्रद्धां देवा यजमाना
वायुगोपा उपासते।
श्रद्धां हृदय्यया कूत्या
श्रद्धया विन्दते वसून् ।।

यज्ञ—पूजन करने वाले और प्राणायाम करने वाले देव पुरुष श्रद्धा को अपनाते है। हृदय के दृढ़-सकल्प से, श्रद्धा से मनुष्य ऐश्वर्य को पा लेता है।

भाइयों ! दोनों जगत् के पुरुषों के चरित्र को देखो। उनका जीवन श्रद्धामय होता है। वे प्रभु की स्तुति करते हैं, यज्ञ-याग करते हैं, वे सब श्रद्धा के साथ ही करते है। उनके हृदय मे उस-उस कर्म के लिए अटूट श्रद्धा होती है। तभी तो वे क्षणिक असफलता को देखकर आतुर नही होते और उस कर्म को छोड़ नहीं बैठते। किन्तु निरन्तर धैर्य के साथ उस कर्म मे लगे रहते हैं। श्रद्धा के साथ यज्ञ-याग, प्राणायाम आदि में लगे रहने का फल यह होता है। उन उच्च कर्मों से प्राप्त होने वाला 'वसु' या ऐश्वर्य उन्हें मिल जाता है।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां
मध्यन्दिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि
श्रद्धां श्रद्धेपयेह नः ।।

हम प्रात.काल श्रद्धा का आह्वान करते है। मध्याह्न काल में श्रद्धा का आह्वान करते हैं। श्रद्धा का सूर्य के अस्त होने के समय आह्वान करते है। हे श्रद्धे ! तू इस जीवन में हमें श्रद्धालु बना दे।

हमने देख लिया है और अच्छी तरह समझ लिया है कि श्रद्धालु मनुष्य का सदा कल्याण हो जाता है। श्रद्धा माता की तरह अपने भक्त की रक्षा करती है। मध्याह्न मे एवं सूर्यास्त काल में श्रद्धा का आह्वान करते हैं। श्रद्धा के संदेश को हम कभी न भूलें और जीवन में प्रत्येक कर्तव्य कर्म हम श्रद्धा के साथ करें।

आ श्रद्धे ! प्रतिक्षण हम तेरे स्वागत को तैयार खड़े हैं। आ, तू हमें पूर्ण रूप से श्रद्धालु बना दे।

ऋग्वेद म० १० सूक्त १५१ (श्रद्धा सूक्त)

पथ-प्रदर्शक जीवन

—डा० राजेन्द्र प्रसाद—

स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे भागलपुर में हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के समय प्राप्त हुआ। उस वक्त स्वामी जी ने सन्यास नही लिया था। और महात्मा मुन्शीराम के नाम से ही प्रसिद्ध थे। गुरुकुल की स्थापना करके राष्ट्रीय पद्धति से शिक्षा देना उन्होंने बहुत पहले ही आरम्भ कर दिया था। गुरुकुल का काम शान से चल रहा था। आपके हिन्दी प्रेम और हिन्दी-सेवा को देख कर ही सम्मेलन ने सभापति के पद पर आपका निर्वाचन किया था। सम्मेलन को जिस खूबी के साथ आपने निवाहा वह मुझे आज भी अच्छी तरह याद है।

पर स्वामी जी के और गुणों को भारतवर्ष १६१६ और उसके बाद ही पूरी तरह जान सका।

स्पष्टवादिता और निर्भीकता के आप मूर्तिमान स्वरूप थे। वह निर्भीकता जिस प्रखर ज्योति के साथ अंग्रेजी सरकार के सामने चमकती थी, उसी ज्योति के साथ औरों के मुकाबले में भी अपनी छटा दिखलाती थी। जो लोग काले कानून के विरोधी-आन्दोलन के समय दिल्ली के चादनी चौक में मौजूद न भी थे, उनके हृदय-पट पर भी स्वामी जी की वह मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है, जो सीने को अंगरेजी गोलियों और संगीनों के सामने खोलकर हृदय की शुद्धता और निर्भीकता दिखलाती है। उसी शुद्धता ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर से उपदेश करवाया और हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढ़ता, सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता ने आततायी के हाथों शरीरपात् भी कराया।

भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान पथ-प्रदर्शक का है, और जिसको उनके साक्षात् का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ, उनके लिये जीवन वृत्तान्त पढ़ना ही मनुष्य को उन्नति मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना करके कुछ ब्रह्मचारियों के शिक्षण का ही प्रबन्ध नही किया, उनका सारा जीवन देश के लिए एक महान् गुरुकुल का काम कर रहा है, और करता रहेगा।

पटना, ११ नवम्बर १६३४
प्रेषक—ओमप्रकाश आर्य जालंधर

कब आओगे, कब आओगे ?

—लखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र', एम० ए० साहित्यालंकार—

दयानन्द के दिव्य स्वप्न को, धरती पर उतारने वाले ?
श्रद्धासिक्त हृदय से उन पर, ओ सर्वस्व वारने वाले।
ओ कल्याण मार्ग के पन्थी, ओ कंटक बुहारने वाले।
पहले अपने को सुधार कर, पीछे जग सुधारने वाले।

श्रद्धा, स्वयं सृजन की माता, नाम तुम्हारे ने बतलाया।
श्रद्धावान न क्या कर पाता, काम तुम्हारे ने बतलाया ?
तुमने क्या-क्या कर दिखलाया, मैं कैसे गाकर बतलाऊं।
कर्म, गिरा से अधिक मुखर है, रवि को क्या दीपक दिखलाऊं !

ज्ञान-दान की प्रबल पिपासा, गुरुकुल दे रहा गवाही,
ओ ऋषि के उत्तराधिकारी, बलिदानी पथ के ओ राही।
कितना दर्द तुम्हारे दिल में था, इस दुखी देश के खातिर
बता गये अपने जीवन से, तुम प्राणों की आहुति देकर।

आर्य जाति जागे, चेते, कुछ करे, स्वयं का अवलम्बन ले।
रक्त-बीज बो गये, त्याग से, आर्य संस्कृति को जीवन दे।
गत जीवन का कल्मष धो-धो, आगत को दे गये उजाला।
स्वर्ण-धूल-सा बिखर गया है, आत्मा का आलोक निराला।

तप-तप कर तुमने जीवन-भर जप-जप शुद्धि-मंत्र की माला।
सब को धोना ध्येय बनाया, इतना अपने को धो डाला ?
तुम जाते-जाते बोले थे,—"इस धरती पर फ़िर आऊंगा !
शुद्धि मंत्र की मन्दाकिन में, मनुज-मात्र को नहलाऊंगा।।

वचन तुम्हारे वे ही अब तक अन्तरिक्ष में गूंज रहे हैं ?
कब आओगे, कब आओगे, ध्वनि-प्रतिध्वनि में पूछ रहे हैं ?
देखें, इन प्रश्नों का उत्तर बनकर कौन आ रहा, फिर से !
श्रद्धा-सुमन लिये जन-जीवन, स्वागत-गान गा रहा फिर से !

पता—प्रधानाध्यापक प्रेम पाठशाला, आर्य समाज स्टेशन रोड मैनपुरी

हिन्दुत्त्व यह नहीं.....वह है

हिन्दुत्व किसी पगड़ी विशेष में ब्रह्म सूत्र में, चोटी में, या गोमूत्र या गंगा जल में निहित नहीं है। हिन्दुत्व कोई ताड़पत्र में लिखी हुई पोथी नहीं है जो ताड़-पत्र के चटकते ही चूर-चूर हो जाए और न ही आज उत्पन्न होकर कल नष्ट होने वाली कागज पर लिखी हुई कोई घटना है। हिन्दुत्व किसी सभा-सम्मेलन का प्रस्ताव नहीं है। वह एक महान् जाति का जीवन है। हिन्दुत्व सहस्रावधि पुण्यात्माओं और हुतात्माओं के युगानुकूल अथक परिश्रम एवं प्रयत्नों का परिपाक है। उतार होने पर भी वह समुद्र ही है। सुप्त होने पर भी वह ज्वालामुखी है। इस हिन्दुत्व के उत्कर्ष के लिए आहुति देने को जिन हुतात्माओं के शरीर का कण-कण मचल रहा है उन हुतात्माओं की जलन और आत्म-यज्ञ ही हिन्दुत्व के अक्षुण्ण जीवन का साक्षी है।

—वीर सावरकर

सम्पादकीयम्

अमर हुतात्मा का स्मरण

इस बार अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस बड़े महत्वपूर्ण अवसर पर आया है। सारा देश चुनावों की जोड़-तोड़ में लगा है और अगले एक-दो दिन में ही मतदान के द्वारा उसका परिणाम देश के सामने आने वाला है। इस बार के चुनावों की विशेषता यह है कि सब राजनैतिक विश्लेषण-कर्ताओं की दृष्टि में मतदाताओं को आकर्षित करने वाला कोई खास मुद्दा या नारा नहीं है जिसके पीछे आकृष्ट हो कर आम जनता स्वप्नाविष्ट की तरह किसी एक दिशा की लहर में बह जाय। यह एक लिहाज से अच्छा ही है। क्योंकि नारे बहुत बार बुद्धिभ्रम पैदा कर देते हैं। इस बार वैसा कोई नारा न होने के कारण शायद जनता स्वस्थ और शान्त चित्त से मतदान कर सके।

विपक्षी दलों के पास तो जैसे कुछ कहने को रह ही नहीं गया। उनके पास सबसे बड़ा हथियार यदि कोई था तो वह केवल एक ही था—इन्दिरा गान्धी का विरोध कैसे किया जाय। अब श्रीमती गान्धी इस धराधाम पर नहीं रहीं तो सत्ता पक्ष को जो हानि हुई सो हुई ही, पर विपक्ष तो विरोध का एकमात्र लक्ष्य समाप्त हो जाने पर जैसे बिना कुछ किए कराये स्वयं ही धराशायी हो गया। उसके तर्कस में जितने तीर थे सब व्यर्थ हो गये। इसलिए श्रीमती गान्धी के न रहने से एक तरह से सबसे अधिक हानि विपक्षी की ही हुई। अब वे विरोध किसका करें।

यह ठीक है कि नये प्रधानमंत्री श्री राजीव गान्धी इन्दिरा की तरह न तो अखाड़े के दाव पेचों में कुशल हैं और शायद राजनीति में बहुत विलम्ब से आने के कारण वे इस क्षेत्र की उलझनों को और उनके समीकरणों को भी उतना न समझ पाते हों जितना श्रीमती गान्धी समझती थीं। इसलिए अगर नये प्रधानमंत्री को अपनी परामर्शदाता चौकड़ी के अनुसार चलना पड़ता हो तो कोई आश्चर्य नहीं। मां के गर्भ से कोई व्यक्ति ज्ञानवान बनकर नहीं निकलता। वह धीरे-धीरे गुरुओं से, मित्रों से और दुनिया के थपेड़ों से बहुत कुछ सीखता है। परन्तु सारे संसार को जिस एक बात ने चकित कर दिया, वह यह है कि जब विश्व राजनीति के कुशल अध्येता यह आशा लगाए बैठे थे कि अब भारत में लोकतंत्र समाप्त हो जायेगा या सैनिक क्रान्ति हो जायेगी, उन सबको बहुत बुरी तरह निराश होना पड़ा है। बिना विशेष उखाड़-पछाड़ के श्रीमती गांधी के पश्चात् राजीव गांधी इस प्रकार प्रधानमंत्री बन जायेंगे और उसके पश्चात् लोकतंत्र के नाते उसकी पुष्टि के लिए तुरत-फुरत आम चुनावों की घोषणा कर देंगे, यह भी उनको एकदम निराश करने वाली बात थी।

बल्कि श्रीमती गान्धी की हत्या के पश्चात् अब जो तथ्य सामने आ रहे हैं उनसे यह भी ध्वनि निकलती है कि हत्या के षडयंत्रकारियों को लगता था कि श्रीमती गान्धी जीवित रहीं तो अगला प्रधानमंत्री राजीव गान्धी को ही बनाकर छोड़ेंगी इसलिए उनकी हत्या कर देने से वह अंदेशा समाप्त हो जायेगा। पर बात उल्टी पड़ गई। जितनी आसानी से राजीव गान्धी बिना विरोध के और बिना आपसी सिरफुटौवल के अब प्रधानमंत्री बन गए, श्रीमती गांधी के रहते उतनी आसानी से पता नहीं बन पाते या न बन पाते। लोकतंत्र की जड़ में पलीता लगाने वालों को यहां भी मुंह की खानी पड़ी।

अब श्री राजीव गांधी क्या सहानुभूति वोट के माध्यम से ही भावी प्रधान मंत्री बने रहेंगे ? नहीं, इतनी ही बात नहीं है। उनके सामने भी कोई नया मुद्दा नहीं है। इन्दिरा जैसा चमत्कारी और अनुभव-सम्पन्न तथा राजनीति और कूटनीति में दक्ष व्यक्तित्व भी नहीं है। इसीलिए इन्दिरा के न रहने पर भी अभी तक नाम कांग्रेस-आई ही चल रहा है। शायद यही नाम आगे भी चलता रहे। पर श्री राजीव गांधी ने बहुत सोच-समझकर एक मुद्दा उठाया है। हम समझते हैं कि इस बार का चुनाव इसी मुद्दे का फैसला करेगा। वह मुद्दा है आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव।

उस प्रस्ताव को स्पष्ट रूप से मानने से इन्कार करके इन्दिरा गांधी ने षड्यंत्रकारियों के हाथों अपनी बलि दे दी और अब सब विपक्षी दल यह सफाई देने में लगे हैं कि हमने आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का कभी समर्थन नहीं किया। यह बात नीम सही है। क्योंकि पंजाब में भिंडरावाले के मरजीवड़ों द्वारा हत्या काण्ड के चलते विपक्षी दलों ने जो रवैया अपनाया था, वह बहुत शुभ नहीं था। वे पंजाब की समस्या को देश की समस्या के बजाय श्रीमती गांधी की समस्या समझते थे। और समस्या जितनी उलझती जाती थी उतना ही मन ही मन प्रसन्न होते थे कि अब देखते हैं कि श्रीमती गान्धी इसको कैसे सुलझायेंगी। हम अभी तक भूले नहीं है जब विपक्षी दलों के ही नेताओं ने चण्डीगढ़ में हुई अपनी सम्मिलित कांफ्रेंस से लौटकर बिना सोचे समझे यह बयान दिया था कि चण्डीगढ़ पंजाब को देने की एक तरफा घोषणा श्रीमती गान्धी को तुरन्त कर देनी चाहिए। उन्होंने अबोहर फाजिल्का जिक्र तक नहीं किया। अब जिस तरह अकाली दल के नेता कहते हैं कि आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव भारतीय संविधान के अन्तर्गत है और उसमें कोई गलत बात नहीं है, प्रायः वैसा ही रुख विपक्षी दलों का भी रहा है। इसे उनकी नीम रजामन्दी न कहा जाय तो क्या वे उसे राज्यों के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग के साथ जोड़ते रहे हैं। पर वे यह भूल जाते हैं कि यदि केवल इतनी बात होती तो जब अकाली दल पंजाब में सत्ता में था तब उसने यह सवाल क्यों नहीं उठाया, या तमिलनाडु की द्रविड़ मुन्नेत्र कड़घम और बंगाल की वामपंथी सरकार ने जो स्वयं अपने अपने राज्यों में अधिक स्वायत्तता मांगने की गरज से ही अस्तित्व में आई थी, उन्होंने भी आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव पर कभी विचार तक करना गवारा नहीं किया। क्योंकि वे जानते थे कि यह मामला कुछ और है।

सच बात तो यह है कि इस बार का चुनाव कितना ही मुद्दों से हीन क्यों न हो, पर श्री राजीव गान्धी ने आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को ही ऐसा मुद्दा बना दिया है कि सारे देश को जैसे इसी के पक्ष और विपक्ष में मतदान करना है। अगर इंका को पूर्ण बहुमत मिलता है, जिसकी आशा है, तो यह निश्चित रूप से सारे देश का आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के विरोध में वोट होगा। फिर इस चुनाव के बाद आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव की चर्चा किसी भी स्तर पर सर्वथा समाप्त कर दी जानी चाहिए। अगर इंका को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता, तो किसी न किसी रूप में आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव भी बिना सिर उठाए नहीं रहेगा और वह देश के भविष्य के लिए बहुत खतरनाक साबित होगा।

हम इसी दृष्टि से इस बार के चुनाव को बहुत महत्वपूर्ण कह रहे हैं। आनंदपुर साहब के प्रस्ताव के रूप में देश के विघटन का जो बीज बोया जा रहा था, उसके साथ उन अन्य विघटनवादी दैत्यों को भी नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता जो इस समय ताल ठोक कर मैदान मे अड़े हैं। इनमें शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी और उन्ही के संगी साथी, भिंडरावाले के साथ मिलकर खालिस्तान की योजना को क्रियान्वित करने में सहायता करने वाले, कश्मीर के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला भी शामिल हैं। ये दोनों अब्दुल्ला तो केवल प्रतीक हैं। असल में तो जिस तरह खालिस्तान के समर्थकों को विदेशों से शह प्राप्त थी उसी तरह इस्लाम के वर्चस्व का पुनः स्वप्न देखने वाले इन मुस्लिम नेताओं को भी विदेशों से ही शह मिली हुई है। जिस लीबिया के इन्दिरा गान्धी की हत्या के षड्यंत्र मे शामिल होने की बात मिस्र के राष्ट्रपति ने कही है, उसी लीबिया से शाही इमाम भारत के इन आम चुनावों में मुस्लिम उम्मीदवारों को जिताने के लिए आर्थिक सहायता लेकर आये थे। इस समय भारत में दो मुस्लिम लीग काम कर रही हैं और अन्य अनेक मुस्लिम संस्थाएं जनतंत्र की ओट में अपना उल्लू सीधा करने में लगी हुई हैं। अकेले उत्तर प्रदेश में ही ५० मुस्लिम उम्मीदवार खड़े हैं। ऐसे समय उस अमर हुतात्मा का स्मरण ही राष्ट्र की एकता के लिए प्रतिबद्ध आर्य जनों को सही प्रेरणा दे सकता है।

महात्मा गान्धी, स्वामी श्रद्धानन्द और श्रीमती गान्धी—इन तीनों की हत्या उस साम्प्रदायिक विष का परिणाम थी जिसे ये विघटनकारी दैत्य राष्ट्र की नसों में प्रविष्ट करना चाहते हैं। उस विष से राष्ट्र को बचाना ही उस अमर हुतात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। ■

हुतात्मा की अन्तिम कामना और एक प्रश्न

—स्वामी चिदानन्द जी महाराज—

दिसम्बर १९२३ ई० २२ तारीख का दिन है। दिन के १२॥ बजे हैं। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के सेवक धर्मसिंह ने आकर कहा—स्वामी जी ने आपको याद किया है।

क्यो ? मैंने पूछा।

इसका उत्तर तो वही देंगे, धर्मसिंह ने कहा।

मैंने तुरन्त काम छोड़ा, और स्वामी जी के कमरे मे पहुंचा। स्वामी जी उस समय अपनी रुग्ण शय्या पर, तकिये के सहारे बैठे हुए थे। मुझे देखकर कुछ मुस्कराये, और कहा—

स्वामी चिदानन्द जी ! सभा का आवश्यक काम (उन दिनों शुद्धि सभा का चौथा वार्षिक हिसाब चेक किया जा रहा था) छुडाकर एक अत्यावश्यक काम के लिए आपको यहा आने के लिए कष्ट दिया गया है।

'स्वामी जी कष्ट कैसा ?' मैंने कहा। आप उस आवश्यक कार्य के लिए आज्ञा कीजिए, जिसके लिए मुझे याद किया गया है।

स्वामी जी ने कहा—सेवा कुछ नहीं। आप की सभा के सभापति आनरेबल सर राजा रामपालसिंह जी के० सी० आई० ई० का यह टेलीग्राम आया है। इसमें मेरी बीमारी के सम्बन्ध मे पूछा है और सर्वथा नीरोग होने की कामना प्रकट की है। आप उनको मेरी ओर से इस आशय की एक चिट्ठी लिख दीजिए।

"मैं आप की शुभ-कामना का बहुत अभारी हूं। इस समय यद्यपि मैं कुछ स्वस्थ हूं, किन्तु मेरा यह शरीर इस योग्य नहीं रहा कि जिससे कोई काम ले सकूं। इसलिए अब तो—मेरी यही कामना है कि—इस पुराने शरीर को छोड़कर दूसरा धारण करूं, और फिर भारत में आकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति सेवा करूं।"

स्वामी जी की आज्ञानुसार पत्र लिख दिया और सर राजा साहिब के नाम पर भिजवा दिया गया।

'और कोई आज्ञा ?'—स्वामी जी से मैंने कहा। उत्तर में स्वामी जी बोले कि -

"स्वामी चिदानन्द जी ! देखो ! मैं रहूं या न रहूं, किन्तु मेरे पश्चात् शुद्धि का काम बन्द न होने पाये। शुद्धि आर्य हिन्दू जाति के लिए अमर बूटी है—इसे बराबर सींचते रहना।

पता नहीं कल क्या हो ! आप मेरी इस बात को खूब याद रखना कि हिन्दुओं का जोश पानी के बुलबुले जैसा है। मैंने अमृतसर सिक्ख आन्दोलन में जेल यात्रा के पश्चात् १९२३ ई० में—जबकि आगरा के आसपास मुस्लिम मुवल्लिगों ने मलकानों में बड़ा ऊधम मचा रखा था शुद्धि के काम को बड़े उत्साह के साथ आरम्भ किया था। उस समय आर्य हिन्दुओं का जोश शुद्धि के पक्ष में बेतरह उबल पड़ा था, और ऐसा प्रतीत होता था—मानों हिन्दुओं से करोड़ों नौ मुस्लिम बने हुए भाइयों को कुछ दिनों में ही शुद्ध करके, हिन्दू उन्हें अपने में एक रस मिला लेवेंगे। किन्तु यह जोश पानी के क्षणिक बुलबुले जैसा ही साबित हुआ। इस लिए मेरा कहना है कि—

आर्य हिन्दुओं में शुद्धि के लिए उस समय तक बराबर जोश भरते रहने की आवश्यकता है जब तक कि हिन्दुओं से बने करोड़ों नौ-मुस्लिम भाई पुनः अपनी पुरानी आर्य जाति में पूर्ण रूप से शामिल नहीं हो जाते।"

ओह ! बात की बात में अनेक वर्ष बीत गये—किन्तु स्वामीजी का आदेश उसी तरह कानों में गूंज रहा है। परन्तु हम और हमारे साथी नहीं ? समस्त आर्य जाति ? क्या आर्य जाति ने श्रद्धेय श्रद्धानंद को—नहीं, हुतात्मा श्रद्धानन्द के आदेश को पूरा करने के निमित्ति कोई क़दम आगे बढ़ाया ?

यह सोचो।

और फिर—इस अवसर पर अपने हृदय को टटोलो !! उसे जोर से हिलाओ !! और फिर स्वयं अपनी अन्तरात्मा से प्रश्न करो, कि—

क्या हम ने उस अमर हुतात्मा के आदेश रूप—शुद्धि को—

१. अपने अन्तरात्मा की तुष्टि के लिए—

२. आर्य जाति के संगठन व उसकी उन्नति के लिए—

३. भारत देश हित के लिए और

४. समस्त संसार की सुख शान्ति के लिए—

सच्चे हृदय से अपनाया और उसके प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया है ?

प्रेषक—ओम्प्रकाश आर्य, जालन्धर

यह लेख श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने आज से ४२ वर्ष पूर्व लिखा था। अमर हुतात्मा के अन्तिम आदेश का पालन यदि ठीक ढंग से किया जाता और अभागे हिन्दू और उसके धार्मिक गुरुओं ने रूढ़िवाद को तिलाञ्जलि देकर सत्य सनातन वैदिक धर्म के विशुद्ध स्वरूप को समझ कर जातीय जीवन को छिन्नभिन्न होने से बचाने में अपने को लगाया होता तो आज हमारा संगठन अत्यन्त सबल एवं सशक्त होता।

उठो ! हिंद के वीर जवानो

—श्री सियाराम 'निर्भय'—

उठो, हिन्द के वीर जवानों, समय पुकार रहा है।
पाक पडोसी दुश्मन, सीमा पर ललकार रहा है॥

वोट के लोभी नेता भारत के हिन्दू को हीन समझते,
एक राष्ट्र हिन्दुस्तान को आंख के अंधे तीन समझते,
गुलामी से भी बदतर घटना, आज यहां निशदिन घटती,
जगह-जगह चौराहे पर मां बहनों की इज्जत लुटती,
मंत्री भी तस्करी का घर में कर व्यापार रहा है।

जाति-पांति में बंटे रहे तो, भाग्य हिन्द का सो जायेगा,
तुम जागे तो भारत में फिर 'हिन्दू-राज्य' बन जायेगा,
बिछुड़े हुये गरीबों को तुम फिर से गले लगा लो,
महावीर बन कर दुष्टों की लंका जल्द जला दो,
बदा बैरागी, नलवा का खून पुकार रहा है॥

बहुसंख्यक हिन्दू पर भी, अल्प संख्यक हावी हैं,
देख दुर्दशा यमुना की रो रही बेचारी 'रावी' है,
काश्मीर मे ध्वजा तिरंगी, जलवाता है पाकिस्तान,
मांग रहे सिरफिरे हिन्द मे राष्ट्रद्रोह कर खालिस्तान,
उग्रवादियों को भारत में पाक उभार रहा है॥

मसजिद की मीनारों से अब चलती गुडों की गोली।
गूंज रही है राष्ट्र द्रोहियों में 'अल्लाह अकबर' बोली,
शीश कटाया हिन्दू-धर्म-हित, तेग बहादुर ने हंसकर,
कहां गई वह अमर वीरता, गुरुओं का गौरव डंसकर,
जलियांवाला बाग शहीदी, उन्हें धिक्कार रहा है॥

सावधान गर नहीं रहे तो, आजादी छिन जायेगी।
हिन्दु जाति अपने घर में ही इतनी घट जायेगी,
मुसलमान का अरब देश है, इसाइयों का इंगलिस्तान,
हिन्दू को तो एक बचा है अपना प्यारा हिन्दुस्तान,
चीन हमारी धरती पर फिर पांव पैसार रहा है॥

माफ नहीं कर सकती गलती आने वाली संतानें,
कैसे सहन करेगी बोलो, पीर गाजिओं के ताने,
लेखराम की अमर शहादत तुम्हें जगाती है जागो,
छिपे हुये गद्दारों को तुम घर से दूर हटादो
अरबों का धन भारत में, अब धर्म बिगाड़ रहा है॥

तुम बिन भला हिन्द का बोलो कौन उद्धार करेगा,
राष्ट्रवाद और लोकतन्त्र का कौन प्रचार करेगा,
समाजवादी लोकतंत्र को कौन बेकार कहेगा,
रामराज्य के सपनों को अब कौन साकार करेगा,
जातिवाद हिन्दू जनता में जहर उतार रहा है॥

तुम चाहो तो बन्दो शिवा फिर आन निभा सकते हो,
तुम चाहो तो राणा बन के शान दिखा सकते हो,
तुम चाहो तो पृथ्वीराज बन बाण चला सकते हो,
तुम चाहो तो भूषण सा रण-भाव सुना सकते हो,
माफ न करना भावुकता में, जो मक्कार रहा है।
उठो, हिन्द के वीर जवानो समय पुकार रहा है॥

पता—प्रधान आर्यसमाज आरा (बिहार)

जाति गुरु श्रद्धानन्द

—आचार्य काका कालेलकर—

स्वामी श्रद्धानन्द जी में आर्य जाति का मानोन्नत स्वभाव पूर्णतया प्रतिबिम्बित था। वे अपने जमाने के सर्वांगीण प्रतिनिधि थे। सामान्य परिस्थिति में रहते हुये भी आर्य-पुरुष अपने पुरुषार्थ से कैसी उच्च और असामान्य कोटि तक पहुंच सकता है, इस का उदाहरण स्वामी जी के सफल जीवन में हम पाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जो चैतन्य देश में प्रकट किया उसको ग्रहण अगर अधिक से अधिक किसी ने किया तो वे स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। धर्मप्रचार, शिक्षाप्रचार और लोकसेवा, तीनों बातों में अपना जीवन व्यतीत करके उन्होंने बलिदान के जल में जीवन-यज्ञ का अवभृत स्नान किया। गुरु और शिष्य दोनों पुरुष सिंहों ने अपने निर्भय जीवन से मृत्यु को परास्त किया।

अनार्य हत्यारे का बदला न लेकर उनके असंख्य अनुयायियों ने अपना आर्यत्व ही सिद्ध किया है। निर्भय पुरुष का रक्त संस्कृति क्षेत्र की उत्तम खाद है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन भर अपने पसीने से सेवा की और अन्त में अपने खून से, इसीलिये वे अमर पद प्राप्त कर सके।

संस्था खोलना और चलाना आजकल सामान्य सी चीज हो गई है। क्योंकि अब जनता देख चुकी है कि लोक-जीवन में सुव्यवस्थित संस्थाओं का महत्व कितना है। लेकिन जब ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसंस्कृति के आत्मा को जागृत करने के लिये सत्यार्थ-प्रकाश में नयी शिक्षा प्रणाली का आदर्श पेश किया तब भारतवर्ष में स्वदेशी संस्थाएं बहुत कम थीं। ऐसे समय पर सर्वस्व को छोड़कर अपने पुत्रों को साथ लेकर गंगा के तट पर जंगल में जाकर

महात्मा मुन्शीराम जी

बसना केवल श्रद्धाघन पुरुष का ही काम था। मानो वह एक किस्म का विश्वजित् यज्ञ ही था। मुन्शीराम जी चाहते तो वे किसी भी क्षेत्र में अपनी कार्यशक्ति का परिचय दे सकते थे। फौज में थे दाखिल होते तो नामांकित सेनानी हो जाते। किसी रियासत की सेवा मे प्रवेश करते तो प्रजा हितैषी प्रधान बन जाते। राजनैतिक क्षेत्रों में प्रवेश करते तो महासभा की धुरा का वहन करते। केवल धर्मोपदेशक बन बैठते तो हजारों सभाजय हासिल करते। साहित्य-सेवा का पेशा पसन्द करते तो साहित्य-सम्राटों से कर-भार वसूल करने की योग्यता प्राप्त करते। परन्तु उन्होंने सब छोड़कर शिक्षा का ही कार्य अपना जीवन कार्य बनाया। इसीलिये मेरा सिर उनके सामने झुकता है। शिक्षा का क्षेत्र जगत् में अभी उतना प्रतिष्ठित नही है कि जितना उस का अधिकार है। तो भी मनुष्य जाति की उत्तम सेवा शिक्षा द्वारा ही होने को है।

शारीरिक शक्ति, द्रव्यशक्ति, राजशक्ति संघशक्ति इत्यादि सब-शक्तियां शिक्षा शक्ति के मुकाबले में गौण हैं। धार्मिकता, सेवा, ज्ञानोपासना और बलिदान यही जीवन का सर्वस्व है और इन जीवनतत्वों का पोषण केवल शिक्षा-प्रचार से ही हो सकता है। दीर्घदर्शी समाज-पुरुष ही इस बात को समझ कर शिक्षा के क्षेत्र मे अपना जीवन प्रदान कर सकता है। वे सच्चे ब्राह्मण थे और ब्राह्मण होने के कारण ही वे हरिजन-सेवा की विशेष जुम्मेवारी अपने सिर पर है, ऐसा समझते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी को इसीलिये मैं जाति-गुरु कहता हूं।

प्रेषक—ओमप्रकाश आर्य जालंधर

क्षत्रिय संन्यासी

—स्व० हरिभाऊ उपाध्याय—

स्वामी श्रद्धानन्द के उठ जाने से ऐसा प्रतीत होता है, मानों आर्यसमाज का तेज खण्डित हो गया। जो जरा भी स्वामी जी के सम्पर्क मे आया उस पर उनकी निडरता, साहस, वीरता और पुरुषार्थ की छाप पड़े बिना नही रहती थी। कोई उनसे कितना ही मतभेद रखता हो यह तो कहना ही पड़ता है कि वे तेज और बलिदान के जीवित उदाहरण हैं। तेज और बलिदान एक सिक्के के दो पहलू की तरह है। जब तेज किसी अपमान, अन्याय और जुल्म को सहन नहीं कर सकता तब वह बलिदान में परिणित हो जाता है। स्वामी जी की तेजस्विता को यह मंजूर नहीं था कि उन का समाज और देश पददलित होता रहे। तभी तो उन्होंने १९१९ में अपनी वीरता का अद्भुत परिचय दिया। गोली चलाने के लिये सैनिक रायफल ताने हुए है—स्वामी सीना तानकर उसका स्वागत करने के लिए तैयार हो जाते हैं। सिपाहियों की बन्दूकें तनीकी-तनी ही रह जाती हैं। उस दिन सारा भारतवर्ष स्वामी जी की वीरता पर मुग्ध हो गया। ऐसी ही निडरता और वीरता गुलाम देश को आजादी की राह दिखा सकती है।

तेज उसी में आ और रह सकता है जिसमें सत्य का सञ्चार हो। अपने सत्य के विपरीत हर बात का विरोध करने की वृत्ति का ही नाम है तेज। जितना सत्य का अंश हममे होगा उतना ही प्रबल विरोध असत्य का हमसे हो सकेगा। अन्याय अत्याचार असत्य के ही दूसरे नाम रूप हैं। कोई किसी का हक न छीने यह एक व्यावहारिक सत्य है। जब कोई किसी के अधिकार पर आक्रमण करता है तो उसे हम अन्याय अत्याचार आदि नामों से पुकारते हैं, किन्तु वास्तव में वह उस व्यावहारिक सत्य का, कुशासन का विरोध, असत्य का विरोध है। स्वामी जी में ऐसे असत्य का विरोध करने की प्रबल भावना रहती थी। यही उनके सत्य का तेज था। इसी सत्य ने उनसे 'कल्याणमार्ग के पथिक' में अपने कुछ नैतिक दावों को स्वीकार कराया है। जिसमें सत्य प्रवाहित है, जीवित है, उसे अपने दोष खटके बिना रह नहीं सकते। जब मनुष्य डंके की चोट पर अपने दोष, अपने अपराध कहने का साहस करता है, तब सत्य का तेज ही उसमें निखरता है।

आर्यसमाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सत्योपासना ही है, महर्षि दयानन्द जी ने जितना जोर इस सत्य की साधना पर दिया है उतना और किसी बात पर नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिसे सत्य माना उस पर अन्त तक टिके रहे। इतिहास से यदि नही तो कम से कम वर्तमान जगत् के सबसे बड़े सत्याग्रही महात्मा जी से भी उनका कई बातों में मतभेद था। किन्तु वे उनके मुकाबले में अपनी बात पर डटे रहते थे। यही सत्याग्रह की खूबी है। यह जरूरी नहीं कि आप जिस बात को सत्य मानें उसे मैं भी मानूं। पर जरूरी है कि आप अपनी सच्चाई का पालन करें, मैं अपनी सच्चाई पर डटा रहूं। फिर भी हम एक दूसरे को समझने का यत्न करें और जब तक दोनों का सत्य मिल न जाय तब तक एक दूसरे को सहन करें। स्वामी जी और महात्मा जी के प्रेम और सद्भाव के अन्त तक टिके रहने का कारण यही है कि दोनों में सत्य की साधना सर्वोपरि है। सत्य का तेज तब मलिन होने लगता है जब सत्य साधन मूढ़ बन जाता है अर्थात् जब यह मानने लगता है कि बस जितना मैंने समझ या मान लिया है वही आखिरी बात है, अब आगे कुछ नही है। जो ऐसा मानता है वह दुराग्रही होने लगता है और दुराग्रही ऊपर से भले ही दृढ और बहादुर दिखाई दे किन्तु अन्दर से उस का शरीर बोदा बनता चला जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी अन्त तक वीर और तेजस्वी बने रहे। यह उनकी सत्योपासना का ही फल था उनकी मृत्यु एक शहीद की मृत्यु थी। वह शान्त, प्रफुल्ल बलिदान का पाठ हमे पढ़ाती है। उनके बिना आर्यसमाज आज हतप्रभ दिखाई देता है।

उनकी पुण्यस्मृति हमे आत्म बलिदान की स्फूर्ति दे। प्रे०-ओम्प्रकाश आर्य ५-१२-३४।

दयानन्द और श्रद्धानन्द के सपनों को साकार करें

—श्री धर्मदेव चक्रवर्ती—

जनसाधारण सपने देखते हैं बेखबर नीद की गोद मे रहने पर किन्तु महापुरुष राष्ट्र की नीव को खोखला करने वाली कुरीतियो के समूल नाश तथा विकृत समाज के खण्डहरो पर मानवता का निराला भव्य-भवन खड़ा करने के जाग्रत सपने देखते हैं और उन पर अपने प्राण तक निछावर कर देते है।

हमारी संस्कृति करोड़ो वर्ष पुरानी है। हर पुरानी संस्कृति काल-प्रवाह मे नामशेष हो गई, पर हमारी सस्कृति इसलिये बची रही क्योकि इसकी जड़ें वेद के अमृत से सिंचित रही। जब भी यह अमृत दूषित करने की कुचेष्टा हुई, किसी न किसी महापुरुष का अवतरण हुआ जिसने अपने समय की विकृतियो के ध्वंसावशेषो पर वैदिक सस्कृति का भव्य प्रासाद खड़ा करने का न केवल स्वप्न देखा बल्कि उसे साकार बनाने को कटिबद्ध हो गया।

रामायण काल मे जब राक्षसों ने वैदिक यज्ञो को दूषित करने का कुचक्र चलाया तब मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने उन असुरो का समूल विनाश करके ऐसा रामराज्य बनाया जो आज भी मानव जाति का प्रेरणा-स्रोत बना हुआ है। महाभारत काल मे कौरवो की अनैतिकता, लम्पटता, निरकुशता जब भ्रष्टाचरण की सभी सीमाओ का अतिक्रमण कर गयी तब योगिराज श्रीकृष्ण ने श्री मद्भगवद्गीता के अनमोल रत्नों की कुशल रणनीति से दुष्टों का दलन व धर्म का परित्राण किया।

बुद्ध और शंकर

इसके बाद भी वैदिक संस्कृति के प्रासादों में अवैदिक परम्पराओं की दरारें पड़ने लगीं। वाममार्गी राज्याश्रयी धर्माचार्यों ने—"मद्यं, मांसं च मींन च मुद्रा मैथुनमेव च, एते पच मकारा स्युर्मोक्षदा हि युगे-युगे' की व्यवस्था देनी शुरू की और सारी व्यवस्था का अतिक्रमण कर चार्वाक ने फतवा दे डाला "यावज्जीवेत्, सुखंजीवेद्, ऋणंकृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत :॥", तब बुद्ध मैदान मे कूदे। उन्होने वेदों की ऐसी अव्यवस्थित सत्ता ही नकार कर बौद्ध मत चलाया किन्तु अवैदिक नास्तिकता की रेतीली नीव पर खड़ा बौद्ध मत टिक न सका। शकराचार्य के धुरंधर पाडित्यपूर्ण तर्क बाणो से जर्जर बौद्ध मत भारत से विलुप्त हो गया। वैदिक संस्कृति का वट-वृक्ष पुन. पल्लवित हो उठा।

शिवा और प्रताप

समय के साथ शंकराचार्य की विचार-धारा भी निष्प्रभावी होती गई क्योंकि उसने बौद्धों और जैनियों द्वारा प्रचलित मूर्तिपूजा को पनपने की छूट दी। तब विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं ने देवी-देवताओं की असंख्य मूर्तियाँ खण्डित करके सिद्ध कर दिया कि ये पाषाण देव-देवी न स्वयं की रक्षा करने में सक्षम थे न अपने आराधकों की। मुसलमानों ने तलवार के बल पर विजित मूर्तिपूजकों को इस्लाम के दरबे में ठूंसना शुरू किया। मंदिरों के खंडहरों पर, मंदिरों के पत्थरों से मस्जिदें खड़ी की गयी, जक,त और जजिया वसुली जाने लगी। करोड़ों के हीरे-जवाहरात, सोने-चाँदी के आभूषण, हाथी, घोड़ों, ऊँटों पर लादकर आक्राता ले गए। हिन्दू युवतियों का सतीत्व लुटा और युवक गुलाम बनाये गये। मुस्लिम आकांताओं की इस अमानुषिक बर्बरता के प्रतिरोध मे देश भर के हिन्दुओं को संगठन सूत्र में पिरोने के लिए शिवा और प्रताप जैसे महापुरुषों ने अपने जीवन की बाजी लगा दी। मराठे, राजपूत और सिख बाहिनियों के हिन्दू जाँबाज वैदिक धर्म की रक्षा में रणभूमि में कूद पड़े और हिन्दू वीरांगनायें भी खड्गहस्ता दुर्गा बन गयीं।

किन्तु वैदिक संस्कृति को मिटाने का जो काम विधर्मी न कर सके, उसे स्वधर्मी पंडों, पुजारियों, धर्माचार्यों, मठाधीशों, पाखण्डी अवतारवादियों और जीवित भगवानों आदि ने सहज ही कर दिखाया। अठारहवीं और उन्नसवीं सदी के अन्त तक कुरीतियों ने वैदिक संस्कृति को जर्जर कर दिया था। किन्तु तभी महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द जैसी हुतात्माओं ने इन विकृतियों के खण्डहरों पर वैदिक धर्म, संस्कृति और मर्यादाओं की भव्यता स्थापित करने का सपना देखा। इन्होंने हिन्दू धर्म की तत्कालीन विकृतियों के साथ ही विदेशी सेमेटिक मजहबों की अवैज्ञानिक मान्यताओं की भी पोल खोली और सिद्ध कर दिया कि वैदिक (हिन्दू) धर्म विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। उसी सर्वश्रेष्ठ संस्कृति का प्रतीक है महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महापुरुषों द्वारा पोषित आर्यसमाज। हम महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को साकार करें।

पता—१६ माडल बस्ती, दिल्ली-५

शून्य मही पर.........

—स्व० श्री पं० वागीश्वर जी विद्यालंकार—

मानवता शून्य मही पर तुम आये मानव बन कर॥

प्रभु की सर्वोत्तम रचना, जब विकल कराह रही थी,
पद पर पर ठोकर खाती, पा किन्तु न राह रही थी,
जब देव दूत भी कितने, थे आये दानव बन कर,
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ १॥

निश्चिन्त शांति की मदिरा, पी कर सुरगण थे सोये,
अपने ही सुख-सपनो की रजनी में खोये खोये,
यह त्राहि-त्राहि करती थी, जब वसुधा रौरव बनकर,
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ २॥

उठ जा ऐ पापी प्राणी, चरणों में आ जा मेरे
प्रभु का इकलौता बेटा, मै कष्ट हरूंगा तेरे
देखो यह अभी हसेगी, दुनिया उपवन नव बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ ३॥

सन्देश शान्ति का लेकर, यह आये प्रेम पुजारी
उस विश्व प्रेम की मानस में, सुलगादी चिनगारी
जगती को जला रही है, जो आज महादब बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ ४॥

ले खड्ग लेखनी कोई, लिख गये रक्त की स्याही—
से विश्व भ्रातृता की हा, अति करुण कथा अनचाही
पृथिवी के वक्षः स्थल पर, पैगम्बर भैरव बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ ५॥

भारत के मलिन गगन में, जड़ता रजनी मतवाली
बुनती ही जाती थी जब, वह जाली काली-काली
दीपक ही बढ़ा रहे थे, जब तम का विप्लव बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ ६॥

अंचल से लोकान्तर के ले रवि की किरण सुनहली
भरते नव विकसित सुमनों में सौरभ पहली-पहली
जागृति की सुभग उषा के, तुम आये शैशव बनकर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ ७॥

दुख देख सके दुनिया का, तुम खड़े न निष्क्रिय रह कर
हो सकी न तृप्ति तुम्हारी, कोरी कुछ बातें कह कर
तुम कूद पड़े कालिय के, फन-वन में केशव बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानब बन कर॥ ८॥

जो गिरे उठाया उन को, बिछुड़ों को गले लगाया
थे जो कि मर रहे उनको, जीवन का पाठ पढ़ाया
तुम गूंज उठे आशाओं में विजय शंख—रव बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ ९॥

फल दिये सफलताओं के, सुमनों की माला डाली
जीवन की जोत जगाई, पूजा की खूब निराली
चढ़ गये उन्हीं चरणों में, फिर खुद भी पल्लव बन कर
मानवता शून्य मही पर, तुम आये मानव बन कर॥ १०॥

हिन्दू, हिन्दू धर्म तथा हिन्दी

—प्रो॰ बुद्धि प्रकाश आर्य दयानन्द कालेज, अजमेर—

स्थूल एवं प्रतीक पूजा, बहुदेववाद, भाग्यवाद, पुनर्जन्म, टोटमवादी अंधविश्वासों, अनेकों धर्मग्रन्थों (पुराण, गीता, रामायण) तथा अवतारवादी अनेकों अवधारणाओं ने "हिन्दू" की परिभाषा करने में बड़ी जटिलतायें उपस्थित कर दी हैं। वस्तुत: "हिन्दू" इन सभी मान्यताओं को माननें वाला ऐसा वृहद् समुदाय है जिसकी पारस्परिक विसंगतियों ने इसमें बिखराव एवं विशृंखलता उत्पन्न कर दी जिससे इनकी शक्ति का निरन्तर ह्रास होता रहा। अंधविश्वासों तथा अहिंसा आदि सिद्धान्तों पर विश्वास रखने वाला यह हिन्दू विदेशी आक्रमणों के सामने सदैव हथियार डालता रहा। इसी विशृंखल और विविधता युक्त पौराणिक धारा को "हिन्दुत्व" की संज्ञा उन लोगों ने प्रदान की जो आक्रान्ता थे। इन्हीं आक्रान्ताओं ने भौगोलिक कारणों से भी हमें हिन्दू कहना आरंभ किया था यथा सिन्धु नदी के इस पास रहने वाले हिन्दू की उपासना पद्धति, खान-पान तथा पुनर्जन्म आदि की विपरीततावश मुसलमानों की हिन्दुओं के प्रति हीन दृष्टि रही और इधर पराजय की खीझ तथा खान-पानादि की अपवित्रतावश हिन्दुओं ने भी उन्हें म्लेच्छादि घृणासूचक शब्दों से पुकारना शुरू कर दिया। दुर्भाग्य से यह प्रवृति सदियों तक साथ रहने के बाद आज भी थोड़ी बहुत शेष है जिसका दुरुपयोग राजनीतिक बुद्धियां करती रहती हैं।

वैदिक, शैव, वैष्णव, शाक्त एवं भारतीय संस्थागत पारम्परिक मान्यताओं का मिलाजुला रूप रखने वाला आज का हिन्दू सदियों पूर्व भी वही हिन्दू था जिसमें शकों व हूणों आदि ने आक्रमण करने के बाद अपने को घुलामिलाकर हिन्दू बना दिया था किन्तु इस्लाम के अनुयायी इस भयावह स्थिति से सावधान रहे, या यह कहिये कि उनके विपरीतता लिये हुये सिद्धान्तों ने इन्हें हिन्दुओं से पृथक् बनाये रखने में सहयोग दिया। अन्यथा ये लोग भी इस हिन्दू धारा में विलीन हो सकते थे। शायद इसी कारण लाला लाजपतराय ने हिन्दू धारा को 'नमक की खान' की संज्ञा दी है। वस्तुतः हिन्दू कोई धर्म नहीं है। योरोप और चीन के लोग भी हिन्दू धर्म को स्वीकार नहीं करते। कहा जाता है कि अरब देशों में आज भी भारत से जाने वालकों 'हिन्दू' या 'हिन्दी' कहा जाता है। स्पष्ट है कि हिन्दू वह है जो भारत देश के प्रति निष्ठा रखता है, विविध रीतियों नीतियों में जीता हुआ भी आस्तिक है, भले ही उसका कोई एक धर्मग्रंथ, एक इष्टदेव तथा एक उपासना पद्धति नहीं है। अत: यदि विदेशी लोग हिन्दू को धर्म नहीं मानते हैं तो उनकी यह धारणा कई दृष्टियों से सही है। वस्तुत: होना यह चाहिये कि हिन्द देश में रहने वाला, हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा मानने वाला एवं विभिन्न धर्मों की मान्यतायें स्वीकार करते हुए तथा उनके अनुसार अपनी पूजा पद्धति आदि अपनाते हुये भी प्रत्येक राष्ट्र का निवासी (नागरिक) राष्ट्रीय हिन्दू संस्कृति के प्रति एकनिष्ठ रहकर हिन्दू कहलाने में गर्व का अनुभव करे और जो पौराणिक हिन्दू हैं उन्हें भी अपने हिन्दुत्व को ठोस वैदिक आधार देना होगा। वेद, ईश्वर और एक सी उपासना पद्धति अपनाये बिना न तो हिन्दू एक हो सकेगा और न ही अजेय शक्ति जुटा पायेगा। पता नहीं, यह बिखराव तथा धर्मान्धता जन्य भेदभाव का अभिशाप कब और किस प्रकार की शासन पद्धति में दूर हो पायेगा? आज स्थिति यह है कि सिख, बौद्ध व जैन आदि अपने को हिन्दू कहने से कतराते हैं। यहां तक कि जनगणना मे भी, इनमें से कुछ वर्ग के लोग अपने को अहिन्दू लिखाने लगे हैं। आर्यसमाज अवश्य कुछ शाश्वत लगाववश अभी अपने को हिन्दुओं से पृथक् करने की स्थिति में नहीं आ पाया है जबकि मूल सिद्धान्तों में आर्यसमाज का तथाकथित हिन्दू संस्कृति से तालमेल नहीं बैठता है।

आत्महीनता क्यों

हिन्दू अपनी अतिरेकवादी अहिंसा व बहुलता प्रधान बिखरी हुई मान्यताओं के कारण सदा पराजित अत: आत्महीन होता रहा है। यह इसी कारण है कि मध्यकाल में पलायन वादी प्रवृति का उदय हुआ और लोग हिन्दू-मुस्लिम के पचड़े में न पड़ने के उद्देश्य से "न मैं हिंदू न मैं मुस्लिम" का राग अलाप कर हिन्दू-मुस्लिम होने के अभिशाप से अपने को बचाने का प्रयत्न करने लगे। हिन्दुओं में पलायनवाद बना रहा जो आज भी देखा जा रहा है जबकि अंग्रेजी शासन की नीतियों ने तथा इस्लाम के ठोस आधार ने मुस्लिमों में पलायनवाद के स्थान पर हिन्दू विरोधी और उन्हें इस्लाम के प्रति निष्ठावान् बना दिया। सत्ता व्यामोह-वश यह विभेद नीति आज भी विद्यमान है। बहुसख्यक हिन्दू वर्ग राजनीतिक व सामाजिक लाभों की दृष्टि से घाटे में रहा है। यही कारण है कि आज का पाश्चात्य संस्कृति से रंगा हुआ पौराणिक हिन्दू भी अपने को गर्व से हिन्दू कहने में हिचकिचाता है। इसके दो कारण हैं। एक तो हिन्दू संस्कृति को हमने धर्म मान लिया जिसकी मान्यतायें आज के पाश्चात्य रंग में रंगे युवा हिन्दुओं के गले नहीं उतर रही हैं और दूसरा कारण यह है कि हम पर साम्प्रदायिक होने का आरोप गैरहिन्दूओं तथा सरकार द्वारा निरन्तर थोपा जा रहा है जिससे हमारा हिन्दुत्व के प्रति अलगाव सा होता जा रहा है।

कुछ सच्चे अर्थों में राष्ट्रवादी हिन्दू अपनी दुर्बलता की रक्षा करने के उद्देश्य से "अनेकता में एकता तथा एकता में अनेकता" का आकर्षक नारा लगाकर हिन्दुत्व की व्यापकता प्रतिपादित किया करतेहैं, जो वस्तुत: अपनी भावना को तुष्ट और पुष्ट करने का छलावा मात्र है। अस्थिरता तथा विसंगतियों की दुर्बलता न इसाइयों मे है और न मुसलमानों में। आर्यसमाज का वेद प्रतिपादित वैज्ञानिक धर्म इन सब दृष्टियों से शाश्वत, ठोस तथा सुदृढ़ आधारों पर आधारित अद्वितीय धर्म है। खेद है कि आज का दकियानूसी और छुआछूत की जकड़ से जकड़ा हिन्दू अकारण इससे द्वेष रखता है।

धर्म परिवर्तन की समस्या

एक समस्या धर्म परिवर्तन की भी हिन्दुओं के सामने है। यह सत्य है कि मध्यकाल में कोई भी हिन्दू, सिख, बौद्ध या जैन बनकर भी हिन्दू ही बना रहता था किन्तु मुसलमानों ने हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उन्हे हिन्दुओं से पृथक् करने में सफलता प्राप्त कर ली। धीरे-धीरे यह रोग आपस में ही फैल गया और आज वही हिन्दू जो बौद्ध जैन और सिख बना था अपने को गैरहिन्दू घोषित करने लगा है। यही नहीं, हिन्दुओं से पृथक् होकर भी ये लोग हिन्दी, हिन्दोस्तान तथा हिन्दू राष्ट्रीयता का विरोध करने के लिये खुलकर सामने आने में भी नहीं हिचकते हैं। इस सर्वनाशकरी प्रवृति को आज का प्रजातंत्र (कुर्सीतंत्र) भी हवा दे रहा है जिसमें बिना सुधार किये कोई सुधार संभव प्रतीत नही होता। यह विचित्र सी बात है कि जब कोई मुसलमान अथवा इसाई शुद्धि द्वारा हिन्दू बन जाता है तो भी वह हिन्दी व हिन्दोस्तान के प्रति खुलकर निष्ठा प्रकट करने में संकोच करता रहता है। कारण स्पष्ट है कि आज का हिन्दू षड्यंत्रों तथा आत्म-प्रवंचना से प्रताड़ित होकर संकुचित बन चुका है और न वह संस्कृतीकरण की संकरता से ठोस व विशुद्ध ही रह गया है। धर्मनिरपेक्षता की इसी विभीषिका का सामना आर्यसमाज, ने शुद्धि-करणआंदोलन द्वारा किया था जिसे तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की सनक ने एकपक्षीय बनाकर रख दिया है। एक पक्षीय तुष्टीकरण की उस नीति ने हिन्दुओं में आत्मसात् करने की प्रवृति के अभाव ने हिन्दुत्व की अस्तित्व रक्षा के सामने एक ऐसा प्रश्न चिन्ह लगा दिया है जिसका समाधान निकट भविष्य में संभव नहीं प्रतीत होता।

हिन्दी की स्थिति

जहा तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है वह आज तुष्टीकरण की स्वार्थपरक नीतियों, तथाकथित धर्मनिरपेक्षता तथा सत्ता-व्यामोह के जाल में उलझकर अपना सम्मानपूर्ण स्थान ग्रहण नही कर पा रही है। हिन्दी भाषा की व्यापकता तथा राष्ट्र को एकसूत्रता मे बांध सकने की क्षमता निर्विवाद है किन्तु उर्दू, अग्रेजी एवं प्रादेशिक भाषाओं को राजनीतिक अड़गे के रूप में सामने लाकर खडा कर दिया जाता है जिससे उसकी राष्ट्रीय उपादेयता कुंठित एवं विकास की गति अवरुद्ध हो जाती है। दूसरा दुखद पक्ष यह भी है कि हिन्दी को हिन्दू के साथ जोड़कर इसकी पवित्रता तथा सर्वग्राह्यता पर संकीर्णता का आवरण चढा दिया गया है। प्रान्तीय भाषाएं भी राजनीति के चंगुल में फंसकर राष्ट्रीय लोकप्रियता खोती जा रही हैं। फलत: ये भाषायें धर्म विशेष तथा वर्ग विशेष से जुड़कर राष्ट्रीय अखंडता मे सहयोग देने के स्थान पर पृथकतावादी प्रवृतियों वथा साम्प्रदायिक तनावों को उत्प्रेरित करने लगी हैं। हिन्दी, हिन्दू के साथ जुड़ जाने से संकीर्णता के दायरे में देखी जाने लगी है। स्वार्थ का चश्मा लगाये राजनेता भी, उसी कारण, इसे राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने में भय का अनुभव करने लगे हैं। हिन्दी को हिन्दू से जोड़ देने की प्रवृति ने उसी समय जन्म ले लिया था जब हिन्दू की सास्कृतिक धारा को धर्म की संज्ञा दे दी गई।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दुत्व को वैदिक ऐक्य का जामा पहनाया जाये। हिन्दी और हिन्दोस्तान का संबंध मात्र हिन्दू से नही अपितु हर भारत के नागरिक से हो सके, ऐसी व्यवस्था की जाये। एतदर्थ शासन को अपने मे दृढ़ सकल्प संजोना पड़ेगा। अल्पसख्यक, सवर्ण, असवर्ण, सीटो का रिजर्वेशन आदि प्रवृत्तियों में पनप रही भेदनीतियो के विरुद्ध स्वर बुलद करने की भी आज महती आवश्यकता है। क्योंकि इन बिषनीतियों ने ही बहुसंख्यकों के सामने अस्तित्व का खतरा उत्पन्न कर रखा है। प्रांतवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद तथा अलगाववाद को बढ़ावा इन्ही विषनीतियों का परिणाम है जिसके कारण हिन्दू और हिन्दुत्व को बदनाम कर उसे अलग-थलग डाल दिया गया है। हिन्दुओं को भी चाहिये कि उक्त दोषो को दूर कर एक उपासना पद्धति और एक धर्मग्रन्थ "वेद" को आधार बनाकर धर्म के ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित हों। तभी वह विश्व की अपराजेय शक्ति बन सकता है।

□

श्री प्रकाशवीर शास्त्री की स्मृति में

मस्जिद बनें हिन्दू मंदिरों की मुक्ति का प्रयास

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक—

सन् १९४७ में पाकिस्तान बन जाने पर जिन स्थानों के मुसलमान उधर चले गये थे, वहां की मस्जिद बेकार हो गयी थीं। पाकिस्तान से बेघर होकर लाखों की संख्या मे हिन्दू इधर भारत आये थे। उन्होंने जहां पाकिस्तान गये हुए मुसलमानों के मकान रिक्त पड़े देखे, वहां उन्हीं मकानो मे रहने लगे। जिन स्थानों तथा जिन नगरों के जिन क्षेत्रों के सभी मुसलमान पाकिस्तान भाग गये थे, वहां की मस्जिदें बेकार पड़ी थी। पाकिस्तान से आने वाले बन्धुओं ने ऐसी मस्जिदों मे भी रहना प्रारंभ कर दिया था।

भारत सरकार की योजना उन्ही मस्जिदों को मुसलमानो को देने की बनी थी। मुसलमानों ने यद्यपि ऐसी कोई माग नहीं की थी। न तो संसद में और न संसद से बाहर ऐसी कोई आवाज सुनाई दी थी। सुनाई देती भी तो कहां से और क्यों? जिन मस्जिदो मे पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू शरणार्थी बसे हुए थे, उन क्षेत्रों में कोई मुसलमान था ही नहीं, तो वहा कौन नमाज पढ़ने जाता तथा किस प्रकार उन मस्जिदो के लिए आवाज उठती?

वास्तव मे बात यह है कि स्वतंत्र भारत में प्रथम बार उन दिनों भारत सरकार के गांधीवाद मे धर्मनिरपेक्षता का उबाल आ रहा था और उस समय के भारत सरकार के प्रमुख जवाहरलाल नेहरू ने मुसलमानों को मस्जिदें सौंपने की योजना बनाकर उस उबाल को प्रकट किया। वह मस्जिदें रिक्त कराई गई। बर्बाद होकर आये भारतभक्त हिन्दुओं को एक बार फिर शरणार्थी बना दिया गया।

मस्जिदें रिक्त करवा के मुसलमान संगठनों का आह्वान किया गया कि सम्भाले। पता नही कहां-कहा से मुल्ला लोग लाकर उन मस्जिदों में अजान देने और नमाज पढ़ने के लिए बिठा दिये गये। उनमें से बहुत सी मस्जिदों को तो वर्षों तक मुल्ला उपलब्ध नही हो सके।

संसद-केहरी स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री उन दिनों लोक-सभा के सदस्य थे। १९६१ की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर उन्होंने लोक-सभा में यह प्रश्न एक प्रस्ताव के रूप में उठाया। उन्होंने अपने प्रस्ताव में कहा था कि मैं भारत सरकार की इस भावना से सहमत हूं कि देश में साम्प्रदायिकता के विष को समाप्त करने के लिए विभिन्न मतों के नागरिकों में पारस्परिक सद्भाव उत्पन्न करना आवश्यक है। इस सिलसिले में पाकिस्तान बनने पर बहुत से मुसलमानों के उधर चले जाने के कारण बेकार पड़ी जिन मस्जिदों में पाकिस्तान

से आये हुए शरणार्थी बस गये थे, भारत सरकार ने उन मस्जिदों को मुसलमानो को सौंपने की जो योजना बनाई है, उसी के सन्दर्भ में मेरा यह कहना है कि साम्प्रदायिक तनाव के कोई भी चिन्ह शेष नहीं छोड़ा जाना चाहिए। इसलिए मेरा यह प्रस्ताव है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर योगिराज श्रीकृष्ण के जन्मस्थान मथुरा में श्रीकृष्ण जन्म-मन्दिर को तुड़वाकर मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा बनवायी गयी मस्जिदें हिंदुओं को दिला दी जायें तथा साथ ही विदिशा (मध्य प्रदेश) का विजय मंदिर, राम जन्मस्थान अयोध्या की बाबरी मस्जिद, विश्वनाथ महादेव काशी के मन्दिर का जो भाग मुसलमानों के अधिकार में है वह और सम्भल (जिला मुरादाबाद) का हरिहर महादेव का मन्दिर भी, जो मस्जिद बना हुआ है, हिन्दुओं को दिला दिया जाए।

उससे ठीक अगले दिन आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली की उस महती सभा मे जो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में आयोजित की गयी थी, श्री शास्त्री जी ने अपने भाषण में लोकसभा के अपने उक्त प्रस्ताव की चर्चा करते हुए कहा: मैं यह जानता था कि लोक-सभा मे मेरे इस प्रस्ताव पर विचार भी नहीं होगा। किन्तु फिर भी मैंने यह प्रस्ताव रखा था तो इसलिए कि इसकी चर्चा लोक-सभा रिकार्ड मे आ जायेगी, जो एक दस्तावेज के रूप में सुरक्षित रहेगी और भविष्य में भारत की भावी सन्ततियों की प्रेरणा का कारण बनेगी तथा उन्हें यह स्मरण करायेगी कि यह भावना अतीत में भी कभी मरी नहीं थी।

['आर्य सन्देश' से साभार]

पता—अध्यक्ष-वैदिक संस्थान नजीबाबाद उत्तर प्रदेश।

कितना छोटा पंजाब

सिख बुद्धिजीवी अभी तक इस यथार्थ को नहीं समझा कि जोर और जबर की भाषा एक निर्बल किसी शक्तिशाली से बड़ी देर तक बिना हानि उठाए नहीं बरत सकता। समझदारी तो इसी में थी कि जब तक विवेक और धीरज रहा तभी तक आक्रामक और शेखी भरी भभकियां देते रहते—उसके बाद अपनी हैसियत को ठीक से समझ लेने के बाद कोई बीच का रास्ता निकाल कर बात को निपटाते।

मुझे दुःख है कि अशिक्षित वर्ग सारे शिक्षित सिख समुदाय को अपने साथ वैचारिक स्तर पर पराजय और क्षोभ के बीच में डाले है। उसमें से उभरने वाला कोई नजर ही नही आता। पंजाब से बाहर बसने वाले तो अपने को मंझधार में डूबने की स्थिति मे पाते है आखिर यह ऐसे क्यों हुआ? और जो पंजाब में हैं वह भी कोई मजे मे नहीं है।

कुछ एक ग्रंथियो और जत्थेदारों ने एक छोटे से दीवान में एक प्रस्ताव पास किया। जिसे आनंदपुर के नाम से याद किया जाता है। देखा जाए तो उसके अनुसार सिख खालिस्तान नही तो लगभग खालिस्तान प्राप्त करने के अधिकार तो जरूर चाहते थे।

बातचीत कई बार हुई और टूटी पर ग्रन्थियों और जत्थेदारों का रवैया आक्रामक से और भी आक्रामक ही बना रहा। इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और ज्ञानी जैलसिंह सभी को मार देने की धमकियां दी जाने लगीं। करीब चार साल यह बवेला मचता रहा। इस बीच अकालियों ने करारी मार खाई और हजारों की जानें गई—गुरुद्वारे तबाह हुए। सिख समुदाय की इज्जत लुटी पर इनका अहंकार कम न हुआ।

खैर जिस विश्वासघात, कृतघ्नता और धोखे से दूसरे लोगों को इन्होंने मारा वैसे ही इंदिरा गांधी को भी मारने मे सफल हुए और इसका बदला एक तरह से लिया गया। इसके आगे जो सिख समुदाय का हुआ उसका बोध इन ग्रंथियों में नहीं आया और अभाग्यवश लगता है कि आएगा भी नहीं। आज पंजाब के बाहर बसने वाले तीस चालीस लाख सिखों की वही दशा है जो महीपसिंह की भाभी की है और वह असहायता भरी आवाज में वही पूछ रहे हैं जो वह पूछ रही हैं। महीप जी के इस प्रश्न का जवाब तो पंजाब के लोहड़ियों और लोगोंवालियों के पास है। समाधान तो ऐसे ग्रन्थियों के पास है उनसे क्यों नही पूछते। पूछिए तो कहेंगे पंजाब के हर गुरुद्वारे में पांच-पांच परिवार चले आइए हम देखरेख करेंगे।

मैं आज से तीन वर्ष पहले ही कहता था कि अकालियों को आज की राज्य सत्ता का ठीक ज्ञान नहीं है। वह अभी भी अठारवीं शताब्दी की मानसिकता में ही जी रहे हैं। मैंने तभी कहा था कि स्वर्ण मन्दिर में टैंक तक ले जाया जा सकता है वह किस दुनिया में रहते है और उस छोटे से परिसर को अपनी सत्ता का केंद्र समझे हुए हैं। हरियाणा मे हुए हिंदू सिख दंगे भी ऐसी स्थिति की ओर इशारा करते थे पर कोई नहीं मानता था कि सिख भी मार खा सकते हैं। खैर वही हुआ जिसका मुझे डर था।

लेकिन आम सिख अभी भी समझ रहा है कि पंजाब जाने में ही कल्याण है—यह समझे बिना कि वहां की स्थिति पर भी बस अकालियों का नहीं है। मान लो यह संघर्ष अकालियों की ओर से नहीं रुकता और दंगों की हिंसा प्रतिहिंसा में सिख और हिंदू दोनों पिसते रहते हैं तो बड़ी बात नहीं कि पंजाब का एक विभाजन और करना पड़े। हो सकता है कि लुधियाना, पटियाला, रोपड़ और संगरूर उससे अलग हो जाएं। पर सोचने की बात है क्या उस बचे क्षेत्र में कुछ भी उपलब्ध होगा जिसके होते वहां की सिख जनता शांति और समृद्धि में जी सके। हां, उस क्षेत्र में आनंदपुर प्रस्ताव अवश्य लागू किया जा सकेगा—और तब देश को उसका कोई नुकसान नहीं होगा। पर मुझे लगता है वह वास्तव में खालिस्तान की जगह एक कंगालिस्तान ही सिद्ध होगा—इसलिए समय है सिख नेता और जत्थेदार अब भी इस बात को गंभीरता से सोचें। और तबाही के कगार से हमें बचा लें।

—संतोख सिंह १०५०/५, पुष्पविहार, नई दिल्ली

महापुरुषों का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता

—प्रिंसिपल पी० डी० चौधरी—

१८५७ ई० का प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन जब अपनी चरम सीमा पर था उस समय इस लेख के नायक अभी इस दुनिया में घुटनों के बल ही चल रहे थे। किसे पता था कि यह बालक एक दिन भारतीय स्वतन्त्रा आन्दोलन का एक नायक, क्रान्तिकारी विचारक, गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का प्रस्तोता त्यागमय तथा ज्ञानयुक्त व्यक्तित्व का धनी बनकर भारतीय नभोमण्डल का दैदीप्यमान नक्षत्र बनकर पथप्रदर्शन करेगा। भारतीय शिक्षा जगत् में, स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय की राजनीति में तथा बलिदानयुक्त त्याग-भावना मे स्वामी श्रद्धानन्द का नाम हमेशा याद रखा जायेगा।

समाज के पथप्रदर्शक

किसी भी समाज और राष्ट्र निर्माण कार्य में महापुरुषों का नेतृत्व एक बहुत बड़ा आधार स्तम्भ तथा प्राणसंचारक होता है। विश्व के इतिहास मे कही भी ऐसा उदाहरण नही मिलता जहां किसी भी देश की किसी भी प्रकार की क्रांति में महामानवों का योगदान न रहा हो। हां, यह बात अलग है कि "इस घर को आग लग गई घर के चिराग से" इस कहावत को सही सिद्ध करते हुए ऐसे महामानवों की समाप्ति हमारे अपने हाथों से ही होती चली गई। हम यह भूल जाते हैं कि ऐसी महान् आत्माए दुनिया में अनेक युगों के पश्चात् "सरबत का भला" करने के लिए मानव शरीर धारण करती है। ऐसे शरीर अपने सुख-दुख को, मान-अपमान को महत्व न देते हुए रोशनी के मीनार बनकर मानव जाति का पथ-प्रदर्शन करते हैं। यह श्रृंखला न समाप्त होने वाली है, न ही समाप्त हुई है। ऐसे महामानव हमेशा के लिए सर्वत्र प्रेरणा के स्रोत बन जाते हैं।

महापुरुष तो मार्गदर्शन ही कर सकते है। मार्ग पर चलना तो यात्री को ही पड़ेगा। जब तक हमारा समाज संकीर्णता, अज्ञानता तथा बुराइयो से ग्रसित रहेगा तब तक महानता भी क्या कर सकेगी। अपने घर की सफाई तो खुद ही करनी पड़ेगी। कम से कम भारतीय समाज, अधिक न भी कहे, तो इस सदी के प्रारम्भ से ही साम्प्रदायिकता, मानसिक संकीर्णता तथा सभी प्रकार की सामाजिक और व्यावहारिक कमियों तथा दूषणों का शिकार रहा है। स्वामी दयानन्द से लेकर आज तक इन सौ वर्षों में कितने ही महापुरुष अपने ही समाज के विकृत मस्तिकों के ही शिकार हुए हैं। दयानन्द, श्रद्धानन्द, गांधी, पं० लेखराम, राजपाल एवं अनेक राष्ट्रीय नेताओं की हत्याएं इसके उदाहरण हैं। इस प्रकार के क्रूरतम जघन्य कृत्यों से सबक लेना चाहिए। अपने समाज से इस महान् दुष्कृत्य तथा विकृति को दूर करना ही पड़ेगा, नहीं तो न जाने और कितने नेताओं को खोना पड़ जाए। यह मात्र एक धर्मान्धता का जुनून ही नहीं, अपितु समाज को कमजोर तथा छिन्न-भिन्न करने की गहरी साजिश है। शिक्षा, ज्ञान, धर्माधर्म का विवेक तथा मानसिक उदारता का उचित प्रदर्शन करके हमे समाज में अवश्यमेव सुधार लाना पड़ेगा। सार्वत्रिक शांति होने पर ही उन्नति सभव है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान कट्टर धर्मान्धता निकृष्टतम उदाहरण है। मैं ऐसे लोगों से यह पूछना चाहूंगा कि क्या स्वच्छन्दता और उच्छृंखलता समाज के लिए लाभदायक है? क्या मानव समाज के अन्दर एकता और उदारता का उपदेश देने का फल जहर, छुरे-चाकू और गोलियां ही है? क्या इस प्रकार की दुर्भावनाओं को भड़का कर, किसी भी उत्कृष्ट समाज का निर्माण हो सकता है? क्या इस प्रकार के अत्यन्त घृणित कार्यों को करके सत्य की आवाज का गला घोटा जा सकता है अथवा मनुष्य के मनुष्यत्व को नष्ट किया जा सकता है? यदि इन सब बातो का जवाब नही में आता हो तो फिर ये सब किसलिए? स्वामी श्रद्धानन्द ने मानवता की दृष्टि से ऐसा कौन सा गलत काम किया था, जिसका फल उन्हे गोली से प्राप्त हुआ। क्या महानता का या समाज सुधार का यही परिणाम होना चाहिए? हत्यारे ने उनके द्वारा किये गये कार्यों को, त्याग तपस्या को, अनदेखा करके अपनी पहले दर्जे की बेवकूफी का ही परिचय दिया है।

हत्या करने से तथ्य नहीं बदलता

दुनिया के इतिहास में ऐसे अनेक अवसर आए है जब अच्छाई का मुह बद करने के लिए बुराई रूपी फासी का फंदा प्रयोग मे लाया गया। बावजूद इसके हम यह देखते है कि "सत्यमेव जयते नानृतम्" की सूक्ति के अनुसार देर-सवेर आंख खुलने पर पूरे मानव समुदाय ने बुराई तथा बुरे मनुष्य का सम्पूर्ण बहिष्कार किया तथा सचाई से प्यार किया। इतना तो जरूर है कि शुरुआत मे बुराई का रास्ता बड़ा सुन्दर और लचीला लगता है। परन्तु बुरा-बुरा ही होता है और अच्छा-अच्छा ही होता है। इसी आधार पर बुराई हार जाती है, भलाई जीत जाती है। यह तो एक क्रोधावेश होता है जब मनुष्य कोई गलत कदम उठाता है। देखा तो यह गया है कि गलत काम करने वाले मनुष्य को भी अन्त मे अपने किये पर पछतावा होता है। आज तक दुनिया में ऐसा कभी नही हुआ कि महान् पुरुष की महानता तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों को समाप्त किया जा सके। जितना अधिक हम समाज पर अत्याचार करेंगे, समाज मे उपस्थित अच्छे गुण तथा तत्व बौद्धिको के द्वारा आगे लाए जायेंगे अच्छाइयों का गला कभी नही घोटा जा सकता।

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के पश्चात् सामाजिक शुद्धीकरण का कार्य और तेज हुआ। समाज के अन्दर शमा पर गिरकर जल भरने वाले परवानो की तरह दीवाने सच्चाई तथा समाज सुधार की आवाज को बुलन्द करने वाले गतिशील नेतृत्व शक्ति वाले सुधार भावना से ओतप्रोत अनेक मनुष्य हुए। यदि आर्य समाज की ही बात लें तो अभी भी इस प्रकार के कर्मवीरों का नितान्त अभाव नहीं हुआ है। अंगारे जल रहे है, मात्र उस पर पडी हुई राख को हटाने की आवश्यकता है। ऐसा समय अवश्य आयेगा जब यह राख हटेगी, अंगारे दहकेंगे तथा इस ज्वाला के अन्दर समस्त सामाजिक बुराइया जलकर भस्म हो जायेंगी और मानव समाज कुन्दन के समान बनकर चमक उठेगा। "महान् पुरुषों का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता"।

पता — आर्य अनाथालय,
फिरोजपुर छावनी

वेद की ज्योति जगाने वाले हम

—श्री नन्दलाल आर्य—

मानवता के लिये वेद की ज्योति जगाने वाले हम।
कृण्वन्तोविश्वमार्यस् संदेश सुनाने वाले हम॥

दयानन्द के सैनिक हैं हम श्रद्धानन्द के वीर हैं,
पाखण्डी मतवादी के सीने में चुभते तीर हैं,
शिव प्रताप के वंशज हैं हम धर्मवीर रणधीर हैं,
दुष्ट दुर्मति दानवता दलने के लिये अधीर हैं,
वेद धर्म की रक्षा में सर भेंट चढ़ाने वाले हम।
मानवता के लिये वेद की ज्योति जगाने वाले हम॥

दयानन्द के वचन हमें निज प्राणों से भी प्यारे हैं,
वैदिक धर्मी आर्य बने वसुधा, प्रण मन में धारे हैं,
प्रिय सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ ने लाखों पतित उबारे हैं,
लेखराम और श्रद्धानन्द ने जिस पर जीवन वारे हैं,
दयानन्द के सपनों को साकार बनाने वाले हम।
मानवता के लिये वेद की ज्योति जगाने वाले हम॥

ओम् हमारा इष्टदेव है आर्य मनोहर प्यारा नाम,
वैदिक धर्म के प्रचार की धुन में रहते आठोयाम,
दीन अनाथों निबलों की हम सेवा, करते हैं निष्काम,
फहराते हैं ओम् पताका घर घर गली नगर ओ ग्राम,
बिछड़े भाई मिलाते शुद्धि चक्र चलाने वाले हम।
मानवता के लिये वेद की ज्योति जगाने वाले हम॥

शास्त्रार्थ से शास्त्रों से भी कभी नही भय खाते हम,
सत्य ग्रहण करते असत्य की जड़ से नींव हिलाते हम,
ले कर में सत्यार्थ अभय हो जग में धूम मचाते हम,
विरोधियों के वेद धर्म के आगे शीश झुकाते हम,
आर्य वेद संदेश विश्वभर में पहुंचाने वाले हम।
मानवता के लिये वेद की ज्योति जगाने वाले हम॥

पता—३२ वल्लभ भाई पटेल मार्ग
उज्जैन (म० प्र०)

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार--स्वामी श्रद्धानन्द

—डा० भवानीलाल भारतीय—

स्वामी श्रद्धानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए स्वर्गीय प० जवाहर लाल नेहरू ने ठीक ही कहा था कि वे निर्भीकता और साहस की प्रतिमा थे। उन्होने दिल्ली की जामा मस्जिद की वेदी पर खड़े होकर हिन्दू और मुसलमानों के विशाल जन-समूह को सच्ची साम्प्रदायिक एकता का उपदेश दिया था और देश को स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरणा दी थी। स्वामी श्रद्धनन्द का साहस और वीरता उस समय प्रकट हुई जब रोलेट ऐक्ट के विरोध मे दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही और चादनी चौक स्थित घण्टाघर के निकट नागरिकों के विशाल समूह का नेतृत्व करते हुए उन्होने गोरों की सगीनो के समक्ष अपनी छाती खोलकर निर्भीक स्वर मे कहा–देश की जनता पर प्रहार करने से पूर्व तुम्हे सन्यासी की छाती को छलनी बनाना पड़ेगा। वीर सन्यासी की इस सिंहगर्जना से विदेशी सत्ता भी हिल गयी थी।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा को "कल्याण मार्ग का पथिक" नाम दिया है। सचमुच वे कल्याण मार्ग के राही थे। एक पुलिस अधिकारी के घर मे जन्म लेने और किशोरावस्था मे नाना दुर्व्यसनो के शिकार हो जाने के कारण मुन्शीराम (यही, स्वामी जी का पूर्व नाम था) का जीवन भटकाव और स्वच्छंदता का शिकार हो गया था। वे अपने आपको कट्टर नास्तिक भी मानने लगे थे। परन्तु बरेली में आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के साक्षात्कार ने उनकी काया पलट दी। जब वे वकालत का अध्ययन करने लाहौर गये तो आर्यसमाज के सदस्य बन गये। यही से उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया।

राष्ट्रीय शिक्षा को योगदान

अब वे पंजाब के सार्वजनिक जीवन मे महात्मा मुन्शीराम के नाम से जाने गये। महात्मा जी का कर्तृत्व सर्वश्रेष्ठ रूप में उस समय प्रकट हुआ जब उन्होंने इस शताब्दी के आरंभ मे १९०२ में गगा के किनारे गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। गुरुकुल का सूत्रपात कर स्वामी श्रद्धानन्द ने यह सिद्ध कर दिया कि विद्यार्थी का वास्तविक जीवन निर्माण उसी शिक्षा पद्धति से हो सकता है जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और चारित्रिक उन्नति के सम्यक् विकास की गुंजाइश हो। निःसन्देह यह कहना होगा कि गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली ने भारत की राष्ट्रीय शिक्षा के रूप को निखारा। विदेशी शासन से एक पैसे की सहायता लिए बिना और विश्वविद्यालयों और सरकार से अपनी परीक्षाओं की मान्यता दिलाये बिना गुरुकुल कागड़ी ने जिन स्नातको को जीवन क्षेत्र में उतारा वे सर्वत्र सफल रहे। लेखन, पत्रकारिता, अध्यापन, धर्मोपदेश,आयुर्वेद आदि क्षेत्रों में गुरुकुल के स्नातकों का योगदान अपूर्व रहा है।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहुमुखी था। वे मात्र गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के प्रवर्तक तक ही सीमित नही रहे। महात्मा गाधी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत आये और देश का नेतृत्व संभाला, तो महात्मा मुन्शीराम ने उन्हे गुरुकुल में आमंत्रित किया। राष्ट्रीय शिक्षा और स्वदेशी की भावना से ओत-प्रोत इस शिक्षण संस्थान को देखकर कर्मवीर गाँधी (उस समय तक वे महात्मा नही, अपितु 'कर्मवीर गांधी' के नाम से माने जाने लगे थे) मुग्ध हो गये। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने अपने आचार्य की प्रेरणा से अपने भोजन व्यय की राशि बचाकर दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों द्वारा संचालित सत्याग्रह की सहायता के लिए भेजी थी।

दलितोद्धार के लिए कार्य

कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान महत्वपूर्ण रहा। १९१९ में वे अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष चुने गये। राष्ट्रीय महासभा के मंच में हिन्दी में स्वागत भाषण पढ़ने वाले वे प्रथम महापुरुष थे। राष्ट्रभाषा के प्रति उनकी सेवाओ को ध्यान में रखकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें भागलपुर अधिवेशन का अध्यक्ष निर्वाचित किया था। उन्होने जालंधर से प्रकाशित "सद्धर्म प्रचारक" को पहले तो उर्दू में निकाला, किन्तु जन-भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उसे हिन्दी में प्रकाशित करना आरंभ कर दिया। हिन्दी पत्रकारिता के विकास में स्वामी श्रद्धानन्द के पत्रों — 'विजय', 'अर्जुन', 'सत्यवादी' का योगदान स्मरणीय रहेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कांग्रेस मे रहते हुए यह अनुभव किया था कि जब तक हिन्दू समाज में मौजूद छुआछूत की भावना को समाप्त नही कर दिया जाता, तब तक देश का सामाजिक ढाँचा सुदृढ़ नही हो सकता और न भारत स्वतंत्रता का ही अधिकारी हो सकता है।

उन्होंने कांग्रेस के काकिनाडा अधिवेशन मे प्रस्तुत मौलाना मोहम्मद अली के उस सुझाव की तीखी आलोचना की थी जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत के सात करोड़ अछूतों का बंटवारा कर उन्हे हिन्दू और मुसलमानों में बराबर बांट लेना चाहिए। स्वामी जी ने दलितोद्धार का कार्यक्रम तीव्र गति से चलाया। इस कार्य में उन्हें महामना पं० मदनमोहन मालवीय, लाला-लाजपतराय आदि राष्ट्रीय नेताओं का अपूर्व सहयोग मिला।

राष्ट्रीय एकता के लिए बलिदान

यह एक विडम्बना ही थी कि राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भावना का यह पैरोकार धर्मान्धता का शिकार हुआ और २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली के नया बाजार स्थित सार्वजनिक सभा के भवन में उन्हें गोली मार दी गई। कहां तो एक ओर डा० अंसारी जैसे राष्ट्रवादी मुसलमान स्वामी जी के घनिष्ट मित्र थे और रुग्णावस्था में उनकी चिकित्सा कर रहे थे और कहां साम्प्रदायिक विद्वेष ने उनकी जान ले ली। निश्चय ही स्वामी श्रद्धानंद के जीवनादर्श और उनका बलिदान युगों तक देशवासियों को प्रेरणा देता रहेगा। □

श्रद्धाञ्जलि

—कविरत्न स्व० पं० सिद्धगोपाल जी—

तुम हिन्दू मानस मानसरोवर, के आदर्श मराल रहे !
तुम आरत भारत-माता के, प्रिय आज्ञाकारी लाल रहे !
तुम मानस-मण्डल के नभ पर, नित दिव्य दिवाकर हो चमके
तुम जग जञ्जालों की भट्टी, में भी सोना होकर दमके !!

तुम सैनिक थे तुम नायक थे, तुम स्वामी थे तुम वीर रहे,
तुम ध्याता थे तुम ध्यानी थे, तुम ध्येय लिये रणधीर रहे !
तुम निर्धन के धन, दीन-दुखी, दलितों-पतितों के प्यार बने।
तुम विधवा और अनाथों के, रक्षक पोषक आधार बने ॥

तुम भारत की आदर्श सभ्यता, संस्कृति के शृंगार बने।
गुण आगरि-नागरि भाषा के तुम आभामय उपहार बने।
है याद हमें यतिवर तुमने ही, स्वप्न लिया था गुरुकुल का।
वह पूर्ण हुआ सुन्दरता से, जो स्वप्न लिया था गुरुकुल का ॥

अब गुरुकुल गौरव गरिमा की, बैठी है धाक जमाने में,
वह आगे है आदर्श सुशिक्षण के आदर्श दिखाने में।
जग का परिवर्तन कैसा है क्या से क्या मुंशीराम हुये,
जो बिषयों के दीवाने थे, वे ही यतिवर निष्काम हुए ॥

संगठन किया था शुद्धि चलाई और अछूतोद्धार किया,
मानव को फिर मानवता का तुमने सच्चा अधिकार दिया।
दिल्ली के घण्टाघर पर संगीनों में थी छाती तानी,
शुचि भारतीयता की जामा मस्जिद में बोली थी वानी ॥

खूं के प्यासे को तुमने ही तो शीतल नीर पिलाया था,
फिर नीर पिलाकर जो उसको पीना था वही पिलाया था।
यतिवर, तुम थे ऐसे उदार, उसने चाहा जो वही दिया,
निज जीवन देने में तुमने नहिं कुछ जीवन का मोह किया ॥

इस दुनिया से तुम वहीं गये हो जहां दुनियां को जाना है,
पर दुनिया का जाना दुनिया में ही आने का बाना है।
हे देव ! तुम्हारा जाना क्या है, है अविचल पद अपनाना,
तुम सुख स्वरूप डाली पर सोखे हो कलिका बन मुसकाना ॥

तुम गये जाति के जीवन में जीवन की ज्योति जगाकर के,
कण-कण में निज करुणा से नव, नव जीवन कण बरसा करके।
हैं अनगिनती उपकार आपके कवि 'गोपाल' सुनाते हैं,
यति श्रद्धानन्द-सुचरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हैं ॥

प्रेषक—ओम्प्रकाश आर्य जालन्धर

कविरत्न श्री सिद्धगोपाल जी की यह कविता दिसम्बर १९४२ के 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित हुई थी। यद्यपि गुरुकुल की वह शान और गौरव-गरिमा आज दिखाई नहीं देती, परन्तु कवि ने जब कविता का गान किया था उस समय तो सचमुच ही गुरुकुल अपने चरमोत्कर्ष पर था। पाठकों को उस समय का सामने रख कर हो इस कविता का रसास्वादन करना होगा।

राजधानी दिल्ली में हम महर्षि के दो स्मृति चिन्ह भूल गए हैं !

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति 'शाबिर'—

आधुनिक भारत के निर्माता एवं आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के तीन दिल्ली-प्रवासों के लिखित विवरण लेखबद्ध मिलते हैं । जनवरी, 1877 में महारानी विक्टोरिया के महोत्सव के उपलक्ष्य में गवर्नर जनरल लार्ड लिटन द्वारा एक बड़े राजदरबार का आयोजन किया गया था। देश भर के सभी प्रमुख राजे-महाराजे और प्रतिष्ठित नागरिक राजनिमन्त्रण से दिल्ली मे एकत्र हो गए थे । कहते हैं कि ऐसे अवसर पर महाराजा इन्दौर ने धर्म-प्रचार के लिए स्वामी जी को निमन्त्रित किया था।

वह राजमण्डल में भी उनके भाषण कराना चाहते थे । स्वामी जी भी दरबार के अवसर पर एकत्र हुए गण्यमान्य सज्जनो से सम्पर्क कर भारत की उन्नति के लिए सम्मिलित रूप से प्रयत्न करने की विचार-विमर्श-योजना बनाना चाहते थे ।

दिसम्बर, 1876 के अन्त मे स्वामी जी ठाकुर मुकुन्दसिंह जी के साथ अलीगढ़ से दिल्ली पधारे । यहा आकर उन्होने नगर से बाहर शेरमल के अनार बाग मे डेरा लगाया । यह अनार बाग अजमेरी दरवाजे से दक्षिण-पश्चिम की ओर कुतुब वाली सड़क पर था । उस बाग मे प्रचार और निवास आदि के लिए तम्बू और शामियाने आदि लगा दिए गए । इस अनार उद्यान के प्रवेश द्वार पर एक विस्तीर्ण पट पर 'स्वामी दयानन्द सरस्वती का निवासस्थान' लिख कर लटका दिया गया था । स्वामी जी के निवासस्थान पर पण्डित भीमसेन, वाराणसी के राजा जयकृष्णदास, जलसर निवासी ठाकुर मुकुन्दसिंह, भूपालसिंह जी और श्रीयुत इन्द्रमणि आदि अनेक गण्य मान्य विशिष्ट जन ठहरे थे । दिल्ली मे विज्ञापन वितरण होने पर स्वामी जी के सत्संगो मे सहस्त्रों श्रोताओ की भीड़ आने लगी । सभी मतो और सभी जातियो के लोग स्वामी जी के प्रवचन सुनने आते थे ।

स्वामी जी महाराज भारतीय नरेशो की सभा करके सब आर्यो का एक धर्म और एकता के सूत्र में पिरोना चाहते थे । महाराजा इन्दौर ने उन्हे आमन्त्रित किया था, वह उनसे मिले भी थे । कश्मीर राज्य के मन्त्री श्री सन्तराज भी अनेक सत्संगो मे आते थे । परन्तु अनेक कारणो से चाहते हुए भी स्वामी जी राजाओ का संगठन नही कर सके । भारतीय भूपालो से एकता सम्बन्धी आशा सफल न होते देख कर किसी और दिन महर्षि ने अपने आवासस्थान पर भारत के भिन्न-भिन्न मतो और जातीय नेताओ की एक बैठक आयोजित की । उनके निमन्त्रण पर पंजाब के समाज सुधारक कन्हैयालाल अलखधारी, बंगीय ब्राह्मसमाज के सर्वश्री नवीनचन्द्र राय और केशवचन्द्र सेन, मुस्लिम समाज सुधारक अलीगढ़ के सर सय्यद अहमद खा, आर्यसमाज बम्बई के श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, मुरादाबाद के विद्वान् श्री इन्द्रमणि आदि दिल्ली पहुंचे । इस नेतृसम्मेलन में सातवे व्यक्ति स्वयं स्वामी जी थे । सातो नेताओ ने मिलकर भारत के कल्याण के उपायों पर विचार किया । स्वामी जी ने प्रस्ताव किया "हम भारतवासी सब परस्पर एकमत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करे । यदि आपस से किसी प्रकार का मतभेद हो तो उसका निर्णय आपकी बातचीत से कर लिया जाए । आशा है कि इस रीति से भारत मे शीघ्र ही सुधार हो जाए । " परन्तु कई मन्तव्यों मे मौलिक मतभेद के कारण वे सब एक मत नही हो सके ।

दिल्ली में स्वामी जी महाराज के दर्शनों और उपदेशों से पंजाबी सज्जन अतीव प्रसन्न हुए । उनके हृदयों में स्वामी जी महाराज के लिये भक्ति भाव उत्पन्न हो गया । सरदार विक्रम सिंह अहलूवालिया, पं० मनफूल और श्री कन्हैयालाल अलखधारी ने उन्हे पंजाब मे पधार कर उपदेश देने की प्रार्थना की कि पजाब के लोग आपके उपदेश सुनने को उत्कण्ठित है । स्वामी जी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और १६ जनवरी, १८७७ को श्री भीमसेन सहित दिल्ली से मेरठ पधारे ।

दूसरा दिल्ली प्रवास

महर्षि दयानन्द सरसवती के दूसरे दिल्ली प्रवास का उपलब्ध विवरण इस प्रकार है: पंजाब के सफल अभियान के बाद मेरठ से चलकर आश्विन सुदी १२ सम्बत् १९३५ वि० (९ अक्टूबर १८७८) को महर्षि दिल्ली पधारे । सब्जी मण्डी मे लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द के उद्यान में विराजमान हुए । विज्ञापनों द्वारा सम्पूर्ण दिल्ली नगर में महर्षि के उपदेशो की सूचना दी गई । शाह जी के छत्ते में उनके प्रभावशाली उपदेश हुए । स्वामी जी यज्ञ और यज्ञोपवीत आदि संस्कार गायत्री पुरश्चरण आदि कराया करते । अनेक विद्वान मिलकर चौदह दिन तक गायत्री जप करते । यजमानो मे भी यह पवित्र जाप कराया जाता ।

स्वामी जी के व्याख्यानो से प्रभावित होकर दिल्ली के निवासियो ने भी आर्यसमाज की स्थापना का निश्चय किया । सन् 1878 के नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह मे दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना हुई । दिल्ली मे आर्यसमाज की शुभ स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती कार्तिक शुक्ला एकादशी अथवा द्वादशी संवत् 1935 वि० को जयपुर प्रस्थान कर गए ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के तीसरे दिल्ली-प्रवास का विवरण संक्षिप्त है । स्वामी जी महाराज माघवदी 1 संवत 1935 को रिवाडी से चलकर दिल्ली आए और सब्जी मण्डी के पास बालमुकुन्द किशोरचन्द्र के मोती उद्यान मे विराजमान हुए । इस प्रवास मे उन्होने तीन प्रेरक व्याख्यान दिए और फिर हरिद्वार के कुम्भ मेले पर वेद प्रचारार्थ प्रस्थान कर गए ।

इन तीनो विवरणो से यह प्रतीत होता है कि स्वामी जी दिल्ली दरबार के अपने प्रथम-प्रवास मे जनवरी, 1877 मे अजमेरी दरवाजे से दक्षिण-पश्चिम मे कुतुब रोड पर अवस्थित शेरमल के अनार बाग मे ठहरे थे । यही उनसे देश के तत्कालीन प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक नेता मिले थे । यही उन्होंने भारत की एकता और स्वतन्त्रता का एक अभियान शुरू किया था । क्या दिल्ली की आर्यसमाजो एवं आर्यजनो की यह जिम्मेदारी नही है कि लिटन के ऐतिहासिक राजदरबार के समय महर्षि के उस ऐतिहासिक निवास स्थान की खोज करके वहाँ स्थायी ऐतिहासिक सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किया जाए । कम से कम इस स्थान पर एक पट्टिका तो लग ही सकती है।

स्वामी जी महाराज अपने दूसरे दिल्ली-प्रवास मे 9 अक्तूबर, 1878 को सब्जी मण्डी दिल्ली अवस्थित लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द्र के उद्यान मे ठहरे थे । शाह जी के छत्ते मे उनके भाषण हुए थे । इसी दिल्ली-प्रवास के दौरान 1878 के नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह मे दिल्ली आर्यसमाज की स्थापना हुई थी । दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित दिल्ली आर्यसमाज को 106 वर्ष से अधिक समय हो गया है । क्या दिल्ली की आर्यसमाजो एवं आर्य सज्जनों का यह उत्तरदायित्व नही है कि महर्षि द्वारा स्थापित प्रथम दिल्ली आर्यसमाज के वास्तविक स्थान की खोज कर वहाँ दिल्ली आर्यसमाज का शताब्दी समारोह आयोजित करे और वहा स्थायी आर्य सांस्कृतिक धार्मिक केन्द्र स्थापित हो ?

पता—'अभ्युदय', बी-22, गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली-110049

चरैवेति-चरैवेति

—पं० रुद्रदत्त शर्मा—

तू कर्त्तव्य अपना निभाये चला जा
कदम श्रेय पथ पर बढाये चला जा ।

मद मोह माया भरा यह जहा है
कही गिर न जाना कड़ा इमतहा है
न पग नौजवा डगमगाये चला जा
परम लक्ष्य पर निगाह लगाये चला जा । तू कर्त्तव्य अपना......

यह संसार है जी लगाना नही है
यह मन्जिल नहीं यह ठिकाना नहीं है
न रफ्तार मे ढील आये चला जा ।
कहीं राह में ही रह न जाये चला जा । तू कर्त्तव्य अपना......

चमक और दमक में कही फंस न जाना
है विषयों की दलदल कही धंस न जाना
लगन में मगन मुस्कराये चला जा
प्रभू प्रेम के गीत गाये चला जा । तू कर्त्तव्य अपना......

जफाओं के बदले वफा करते जाना
जो दुख दर्द आये उन्हें सहते जाना
न शिकवा कोई लब पै आये चला जा
प्रभु आज्ञा में सर झुकाये चला जा । तू कर्त्तव्य अपना......

वह शुभ कामनाओं को पूर्ण करेगा
सफलता के पुष्पों से झोली भरेगा
मुश्किलों में तेरा पथ प्रदर्शन करेगा
तू प्रीतम का दर खटखटाये चला जा । तू कर्त्तव्य अपना......

कदम सत्य पथ से हटाना न हरगिज
प्रभू साथ हैं, भूल जाना न हरगिज
लगन में मगन मुस्कराये चला जा
मन में प्रीतम को 'साबिर' बसाये चला जा ।

तू कर्त्तव्य अपना निभाये चला जा
तू पग श्रेय पथ पर बढ़ाये चला जा ।।

पता—आर्य समाज, लक्ष्मणसर, अमृतसर

भारत के उत्तर पूर्वी राज्य

जहां आर्य समाज को अत्यन्त सक्रिय होने की आवश्यकता है

—डा० प्रशांत वेदालंकार—

मेरी उत्तर-पूर्वी राज्यो की यात्रा कई दृष्टियो में महत्वपूर्ण रही है। मैं जहा भी जाता हू आर्यसमाज की आवश्यकता, उसका संगठन व कार्यो की समीक्षा मेरा मुख्य विषय रहता है। इस यात्रा पर जाने से पूर्व ही मैंने उस क्षेत्र के प्रमुख आर्यसमाज व आर्यसमाज के अधिकारियो के बारे मे जानकारी प्राप्त कर ली थी।

श्री रामनाथ सहगल ने मेरे आने की सूचना आर्यसमाज गुवाहाटी तथा आर्यसमाज सिलांग को पहले से ही दे रखी थी। उन लोगों ने मेरे कार्यक्रम पहले से ही तय कर दिये थे। मैं आर्यसमाज गुवाहाटी मे निर्धारित समय से पौन घण्टा विलम्ब से पहुचा। कोई भी रिक्सावाला आर्यसमाज के नाम से परिचित नही था। पूछते-पाछते बहुत कठिनाई से वहा पहुंचा। डा० नारायण दत्त मेरी नीचे ही प्रतीक्षा कर रहे थे। सतसग ऊपर पहली मजिल पर हो रहा था। मैंने उनसे निवेदन किया कि शहर के प्रमुख स्थानो पर हिन्दी तथा असमिया मे आर्यसमाज के नियम व महर्षि दयानन्द के कुछ अच्छे वाक्य शिलालेखो पर खुदवाकर लगवा दिये जाए। उन्ही के साथ आर्यसमाज का पता भी हो। मेरे इस सुझाव को आर्यसमाज के अधिकारियों ने माना और मुझे आश्वासन दिया कि दो माह मे यह कार्य सम्पन्न हो जायेगा। मैं आर्यसमाज गुवाहाटी २२ अप्रैल—रविवार को गया था। आशा करता हूं कि अब तक यह काम वहा सम्पन्न हो गया होगा, नही हुआ तो शीघ्र सम्पन्न हो जायेगा।

गुवाहाटी आर्यसमाज की स्थापना आज से २२ वर्ष पूर्व १६७२ में हुई थी। वहा आर्यसमाज के प्रमुख अधिकारी श्री ओमप्रकाश आनन्द तथा डा० नारायण दास हैं। भवन तिमजिला है। सन्१६६६ से वहां एक अग्रेजी माध्यम का विद्यालय भी चल रहा है। स्थानाभाव के कारण यह स्कूल २ शिफ्टो मे चलता हैं अधिकारियों ने बारंबार सभा से इस स्कूल के लिए किसी अच्छे प्रधानाध्यापक व अध्यापक-अध्यापिकाओं की मांग की है मैंने अनुभव किया कि गुवाहाटी आर्यसमाज के अधिकारियो का आर्यसमाज के माध्यम से काम को बढ़ाने और उस क्षेत्र की मुख्य समस्या का समाधान करने की महती इच्छा है। उस क्षेत्र की प्रबल समस्या है— लोगों का, विशेषत: युवा वर्ग का, भारत की मूलधारा से कट कर इसाइयत की ओर झुकना। वस्तुत: इसाइयत की आंधी का सम्यक् उत्तर आर्यसमाज ही दे सकता है।

गुवाहाटी आर्यसमाज ने सन् १६७५में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी पर श्री परमेश्वर काकती द्वारा असमिया भाषा में अनुदित सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया तथा अनेक छोटी-छोटी प्रचार पुस्तिकायें भी प्रकाशित की पर अभी वहां काम की बहुत जरूरत है। श्री पं० जैमिनी जी शास्त्री के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा वहां एक अधिकारी हैं। अभी तक उनका आर्यसमाज से संपर्क नहीं था। मैं उनके यहा ठहरा था और उन्हे आर्यसमाज भी ले गया। आर्यसमाज के अधिकारी उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। मुझे पता चला कि जैमिनी जी भी वहां गये थे, पर जल्दी के कारण वे आर्यसमाज नहीं जा सके। आर्यसमाज के अधिकारियो का कहना था कि यदि जैमिनी जी यहा आकर रह जाये तो आसाम का बहुत उद्धार हो सकता है। वहा श्री वीरेन्द्र जी (महानगर लखनऊ) के सुपुत्र आर्यसभा में सक्रिय थे। स्वयं श्री वीरेन्द्र जी वहां जाकर रहें तो काफी काम किया जा सकता है।

शिलांग के आर्यों का उत्साह

२६ अप्रैल को मैं गुवाहाटी से शिलांग (मेघालय की राजधानी) गया। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी डा० सरोज दीक्षा, बहन श्रीमती विनीता कुमारी, डा० नयनबाला शर्मा (प्राध्यापिका श्यामाप्रसादमुखर्जी कालिज, दिल्ली) श्री हरिनारायण जी (प्राध्यापक अर्थशास्त्र, गोरखपुर), डॉ० लाल (गाजीपुर), प्रो० मिश्रा (गोरखपुर) तथा स्वामी सीताराम जी (खुड़खुड़ा गाजीपुर) भी थे। हमारी बस थोड़ी देर से पहुंची। रास्ते में ही हमारी दृष्टि आर्य कन्या विद्यालय पर पड़ी। बस अड्डे पर वहा की आर्यसमाज के प्रधान श्री एच० के० खुल्लर अपने साथियों के साथ हमारे आने की प्रतीक्षा मे खड़े थे। उन्होने जिस प्रकार हमारा स्वागत किया, उससे स्पष्ट लगता था कि उनके मन मे यहा आर्यसमाज के क्षेत्र में काम करने वालों के प्रति अत्यधिक सम्मान है। कार्य-दिवस होने पर भी उन्होने आर्यसमाज मे एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। ३०-४० के लगभग आर्य सभासद वहां उपस्थित थे। उसमे वहां के विद्यालयों के अध्यापक व अध्यापिकाए भी थी। मैंने वहा के लोगों की इच्छा के अनुरूप—पंजाब समस्या पर प्रकाश डाला। वहां पर आर्यसमाज की स्थिति की जानकारी भी प्राप्त की। वहा भी प्रचारकों की माग थी। उन्होंने सार्वदेशिक सभा से ५००० रुपया प्रतिमास अथवा वही से संक्षिप्त साहित्य मांगा। इसाई मिशनरियां दिन मे कई बार अपना साहित्य वितरित करती है। सबकी एक ही बात। यदि आर्यसमाज का काम यहां न बढ़ा तो सभी इसाई बन जायेंगे। बोले, हम तो अपने विद्यालय के माध्यम से यहाँ के लोगो को अपना बनाने का प्रयत्न करते हैं पर जितना धन इसाई मिशनरी अपने विद्यालयो पर व्यय करते हैं, उतना हम नहीं कर पाते। परिणामत: हम पिछड़ रहे हैं। हमें केन्द्र से आर्यसमाज की सहायता चाहिए। बोले—हमने सार्वदेशिक सभा से कई बार कहा है कि हमारे विद्यालय को संभाल ल, पर अभी तक कोई कार्यवाही नही की गई। उन्होने यह भी प्रकट किया कि अभी तो हम हैं, जसे-तैसे संभाल रहे है, हमारे न रहने पर इनका क्या होगा? इस समय यहां दो विद्यालय है उन्होंने यह भी शिकायत की कि हमे दिल्ली भेजे पत्रो का उत्तर नही आता।

इम्फाल में आर्यसमाज

मैं २७ अप्रैल को इम्फाल (मणिपुर) पहुंचा। वहां एक संस्कृत विद्वान् व महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त श्री गोपाल जी वैद्य तथा उनके पुत्र डा० राधागोविन्द कविराज ने एक वेदप्रचारक आर्य सभा की स्थापना कर रखी है। इसका पता है— द्वारा आनन्द कृष्ण साहित्य कला संगम, उरिपोक, लैकाई, इम्फाल, मणिपुर। इन्होने सन् १६७५ मे आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाई तथा एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया। इसके अतिरिक्त श्री संखरी जी ने सरकार से १०० एकड़ भूमि प्राप्त कर एक आश्रम स्थल की स्थापना की है।

पर आश्चर्य इस बात का था कि वहां अभी तक आर्यसमाज नहीं था। मैंने वहां के खादी आश्रम के एक अधिकारी तथा भाटिया बन्धुओं से संपर्क किया। समय कम होने के कारण कोई भव्य आयोजन नही हो सका। पर फिर भी भाटिया रेस्टोरेंट के ऊपर श्री भाटिया जी के घर पर मेरी अग्रजा श्रीमती विनीता ने यज्ञ कराया और मैंने वहां विधिवत् एक आर्यसमाज की स्थापना कर दी। पर आर्य समाज की स्थापना करने से क्या होता है? यदि हम उस आर्यसमाज की देखभाल का काम यहां से न कर सके। अभी तक मैं स्वयं भी उनसे दुबारा संपर्क नहीं कर पाया।

अन्य स्थानों पर कार्य

इस प्रसंग मे उस क्षेत्र मे अन्य स्थानों पर किये जा रहे आर्यसमाज के कार्यों का विवरण भी अनिवार्य है। आर्यसमाज गुवाहाटी की चर्चा कर चुका हूं। कामरूप जिले में गुवाहाटी के अतिरिक्त १६८२ की वैशाखी को श्री आत्रेय जी के प्रयास से भोलाभार नामक स्थान पर भी आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमें श्री शिव प्रसाद शर्मा का विशेष हाथ है। शिवप्रसाद जी ने आर्यसमाज के काम मे सहायता के लिए अपने एक पुत्र को ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में अध्ययन के लिए भेजा है।

तिनसुकिया आसाम के डिब्रूगढ़ जिले का एक औद्योगिक नगर है। वहां १० नवम्बर १६८१ को पं० कमलकान्त आत्रेय जी के प्रयत्नों से एक आर्यसमाज की स्थापना की गयी है जो वहाँ के उद्योगपति श्री भगवानदास अग्रवाल की अध्यक्षता में अपना विकास कर रहा है। एक वर्ष के उपरान्त नवम्बर १६८२ में वहा एक वार्षिकोत्सव भी सम्पन्न हुआ। वहां आर्यसमाज के भवन व विद्यालय के निर्माण के लिये भूमि ले ली गई है, जो आर्यसमाज सेवा ट्रस्ट के अधीन होंगे।

डिब्रूगढ़ जिले में दूसरा आर्यसमाज नामरूप मे है। इस आर्यसमाज को स्थापित हुए १०-१२ वर्ष हो गये हैं इसकी अपनी भूमि है जिसमें पक्की यज्ञशाला है। इसकी देखभाल का कार्य श्री जी० एल० बजाज करते हैं। पर किसी पुरोहित के न होने के कारण वहां कार्य गति नहीं पकड़ पाया।

आसाम के दरंग जिले में दो आर्यसमाज हैं। रौता आंचलिक आर्यसमाज की स्थापना सन् १६८१ में मराधन श्री प्राथमिक

विद्यालय के प्रांगण में आर्य प्रतिनिधि सभा आसाम के मंत्री श्री नारायणदास जी के सान्निध्य में हुई। इसके प्रधान श्री-केवली प्रसाद अंगिरा हैं। दूसरा आर्यसमाज शुक्लाई में है। इसकी स्थापना १९८२ की वैशाखी से अगले दिन हुई। इसके प्रधान श्री इन्द्र शिवाकोटी हैं। शुक्लाई में पौराणिक बन्धुओं के सहयोग से एक प्रार्थना-गृह भी आर्यसमाजियों ने बनाया है, जहां हर पूर्णिमा व अमावस्या को आर्यसमाज का सत्संग होता है। यहा से दो छात्र आर्य गुरुकुल एटा तथा एक छात्र ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में अध्ययन के लिए गये हैं।

आसाम के कार्बिआंगलोग जिले के बोकाजान नामक स्थान पर अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा प्रचार कार्य चल रहा है। संघ ने वहा की जनजातियो की महती सेवा की है। संघ की ५० बीघा अपनी भूमि है जिसमें दयानन्द विद्या निकेतन, कार्यालय, अतिथि भवन, गोशाला, यज्ञशाला, छात्रावास, कर्मचारियों के निवासस्थान आदि बने हुये हैं। विद्या निकेतन मे १-४ कक्षा तक अंग्रेजी हावड़ा आर्यसमाज के मंत्री पुरुषोत्तमदास जी ने की। उनके अनुज श्री रामेश्वर प्रसाद अत्यन्त लगन से वहां काम देखते हैं। वहां एक होमियोपैथी औषधालय चल रहा है और एक विद्यालय स्थापित करने का शीघ्र विचार है।

कछार जिले के प्रसिद्ध शहर सिल्चर मे भी एक आर्यसमाज है जिसके प्रधान श्री रणजीत प्रसाद कोइरी हैं। असम के इन जिलो के अतिरिक्त तेजपुर, नौगांव, डिब्रूगढ़, क्षीरसागर, नाहरकटिया, उदालगुड़ी, माजबाट, ढेकियाजुली और विश्वनाथ चाराली आदि स्थानो पर आर्यसमाज स्थापित करने का प्रयत्न चल रहा है। मुझे कछार हाई स्कूल सिल्चर के अध्यापक श्री आर० के० कैरी तथा टी० के० शर्मा मिले जिन्होंने सहायता मिलने पर वहा काम के विस्तार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

नगालैंड और मिजोरम

नगालैंड में सन् १९७८ मे जूनापुर पुराना बाजार मे दयानन्द सेवाश्रम संघ के द्वारा दयानन्द विद्यानिकेतन खोला गया। नागा भाषा बोलने वाले बच्चे राज शास्त्री ने असम आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन की प्रेरणा दी। श्री ओम-

प्रकाश जी आनन्द ने विशेष उत्साह प्रदर्शित करके सार्वदेशिक सभा के सहयोग से इसकी विधिवत् स्थापना कर दी। उनके अतिरिक्त डॉ० नारायण दास, डा० भारत भूषण कुकरेजा, श्री सगतराम आर्य, श्री हंसराज आर्य, श्री सुगनचन्द आर्य, बी० एल० साबू, श्रीमती दुर्गा देवी चौधरी, श्री मज्जन कुमार अग्रवाल' श्री भगवान दास अग्रवाल, श्री चमनलाल शर्मा, श्री रामेश्वर प्रसाद सर्राफ, राजीव राम मिश्र आदि के प्रयत्नो से यह प्रति-

महर्षि निर्वाण शताब्दी पर असम आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित स्मारिका में अपना सन्देश भेजते हुए श्री शालवाले ने लिखा था कि आसाम जैसे सीमावर्ती प्रदेश मे जहा चिरकाल से विदेशी षडयन्त्रकारी हिन्दू जाति को समाप्त करने मे लगे हुए हैं, इस प्रदेश में आर्य समाज के संगठन से जहा वैदिक धर्म का प्रचार होगा, वहीं हिन्दू जाति की रक्षा और विदेशी षडयन्त्रकारियो का ह्रास होगा। श्री शालवाले ने अपने वक्तव्यो मे यह भी स्वीकार किया कि उत्तर-पूर्व भारत में आर्यसमाज का काम कुछ ढीला रहा है। श्री ओम प्रकाश पुरुषार्थी ने भी लिखा कि आसाम, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर और मेघालय, जो ईसाई-बहुल प्रदेश हैं, इनमे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की बडी आवश्यकता है। यदि अगले कुछ वर्षो तक विदेशी मिशनरी इसी प्रकार यहा धर्मान्तरण का कार्य करते रहे तो इन प्रदेशों मे भारतीय-मूलक जनजातियो का ह्रास हो जायेगा और इसका सीधा प्रभाव राजनीतिक सत्ता को प्रभावित करना होगा।

डा० प्रशान्त वेदालंकार ने भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों की विषम स्थिति का उल्लेख किया है, निस्सदेह उसका सही समाधान आर्यसमाज ही कर सकता है। पर आर्यसमाज का संगठन अभी तक पूर्ण रूप से न तो समस्या की गम्भीरता को छू पाया और न ही उसके लिए यथेष्ठ रूप से सक्रिय हो पाया है। क्या भारत के सीमांत पर भी सिर के ऊपर से पानी गुजरने की प्रतीक्षा है? अगली भयकर चुनौती का उत्तर देने की तैयारी नहीं की गई, तो पीछे पछताना पड़ सकता है। ऐसे समय अमर-हुतात्मा स्वामी श्रद्धानद का स्मरण भी प्रेरणा दे सकता है। यदि आज वह तेजस्वी व्यक्तित्व होता तो क्या इस समस्या से जूझने के लिए आर्यसमाज को सन्नद्ध न करता और अपने आपको इसके समाधान में न झोंक देता।

माध्यम से शिक्षा व्यवस्था है। कार्बी-भाषा-भाषी ५० छात्र आश्रम मे निवास करते हैं। श्री लीलाबरा इन सब संस्थाओं के संचालक है। उक्त संघ की स्थापना श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी, श्री पृथ्वीराज शास्त्री व स्व० डा० सुशील कुमार ने की थी।

दयानन्द सेवाश्रम

कार्बिआग जिले के मुख्य शहर दिफू में भी दयानन्द सेवाश्रम संघ का एक छात्रावास है जहा ४० छात्र रहते हैं। वहां सरकारी मान्यता प्राप्त एक डी० ए० वी स्कूल भी है।

फुपड़ाजान नामक स्थान पर भी दयानन्द सेवा संघ का तीसरा सेवा केन्द्र अपने कार्य में लगा है। यहां ३० बीघा भूमि में एक शिल्पालय की स्थापना की गई है जिसमें उस प्रदेश की स्त्रियां आकर चादर, शाल, गमछा आदि बनाकर अपनी रोजी कमाती हैं। और दयानन्द की शिक्षाओं को भी प्राप्त करती हैं। आश्रम मे गन्ने की खेती भी होती है।

जिला जोरहाट में २६ जून १९८३ को आर्यसमाज का गठन हुआ है। श्री मनोहरलाल भारद्वाज इसके प्रधान हैं। ग्वालपाड़ा जिले के प्रमुख नगर बंगाई गांव में १९८२ को रामनवमी के दिन आर्यसमाज की स्थापना हुई। इसकी प्रेरणा अंग्रेजी माध्यम से यहां शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वहा एक यज्ञशाला भी बनी है जिसमें प्रत्येक शनिवार को बच्चे तथा शिक्षक सन्ध्या-हवन करते है। विद्यालय के प्रधान शिक्षक श्री अटलबिहारी अस्थाना हैं। छात्रावास मे रहने वाले छात्रों की संख्या लगभग १३ है।

दीमापुर के मुख्य बाजार मे एक आर्यसमाज का गठन किया गया है जिसके प्रधान श्री जगदीश जी हैं। जगदीश जी ने ही अपने मकान का बडा हाल आर्य समाज के लिए दिया है। यहां प्रत्येक रविवार को सत्संग होता है।

मिजोरम की राजधानी आइजोल में आर्यसमाज के दो-चार अनुयायी स्थायी रूप में रहते है। पं० रामप्रसाद जी छबाली आदि आर्यसमाज के पंडित हैं। यद्यपि यहा अभी तक आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई, पर शीघ्र ही यहां आर्यसमाज की स्थापना हो जाने की आशा है।

त्रिपुरा मे भी आर्यसमाज का कार्य बिलोटिया और धर्म-नगर में विद्यालय और छात्रावास के रूप में चल रहा है।

असम आर्य प्रतिनिधि सभा

इन सम्पूर्ण उत्तर-पूर्वी राज्यों में आर्यसमाज के संगठन की आवश्यकता को अनुभव करके जून १९८१ में श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी और पं० पृथ्वी-निधि सभा अपने साधनो मे अपना विकास कर रही है। इन्होने नवम्बर १९८३ मे म० दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह स्मारिका का भी प्रकाशन किया।

मैं उत्तर पूर्वी राज्यो की यात्रा के समय इनमे से अनेक आर्य सज्जनों से मिला। इन्होंने भी कहा, और मैं स्वयं भी यह अनुभव करता रहा कि यदि यहां आर्यसमाज का कार्य तेजी से न बढ़ा तो इन प्रदेशों में विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बगलादेश से बहुत बड़ी संख्या में मुसलमानों का आना न केवल उन प्रदेशों के लिए विषम स्थिति उत्पन्न कर रहा है, वरन् पूरे देश के लिए ही यह बहुत बड़ी समस्या है। दूसरे ईसाई मिशनरियो का प्रभाव और उनका कार्य सारे प्रदेश को धीरे-धीरे केवल अपने धर्मो से ही विमुख नहीं कर रहा, वरन् राष्ट्र-विरोधी भी बनता जा रहा है।

मेरी वहां जितने भी आर्य सज्जनो से बात हुई, सबका एक ही आग्रह था कि हमे सार्वदेशिक सभा से शिक्षक और प्रचारक चाहिए। आज से कुछ वर्ष पूर्व गुहाबटी में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले गये थे। महामंत्री श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी भी वहां कई बार गए है। दोनों ही वहां की विषम परिस्थितियो से परिचित हैं।

आर्य महासम्मेलन

दिसम्बर १९८० मे मैंने सिक्किम जाकर गंगटोक में एक आर्य समाज की स्थापना की थी। तब भी मैंने वहा तथा उत्तर पूर्वी राज्यो मे आर्यसमाज की आवश्यकता पर एक लेख लिखा था। मैंने सार्वदेशिक सभा को पत्र लिख कर प्रेरित किया था कि सन् १९८२ मे आर्य समाज दार्जिलिंग की शताब्दी के अवसर पर वहा एक विशाल आर्य महासम्मेलन किया जाय और उस क्षेत्र के साथ सम्पूर्ण उत्तर भारत मे आर्यसमाज के कार्य की एक व्यापक योजना तैयार की जाय। अभी तक इस दिशा में कोई कार्य नहीं हुआ। यह वर्ष शिलाग आर्यसमाज की स्वर्ण-जयन्ती का वर्ष है। यदि सार्वदेशिक सभा चाहे तो वहा एक आर्य महासम्मेलन आयाजित कर सकती है।

इस प्रसंग में सिक्किम, सिलीगुडी तथा दार्जिलिंग आर्यसमाजो की चर्चा करना प्रासंगिक है। आसाम से लौटते हुए मैं सिलीगुडी पहुचा। केवल इस उद्देश्य से कि मैं सिक्किम मे स्थापित आर्यसमाज की स्थिति की जानकारी प्राप्त करता चलू। अब भी वहा आर्य समाज सत्संग के रूप मे चल रहा है। मुझे सिलीगुडी मे ही आर्यसमाज गंगटोक के कुछ पदाधिकारी मिल

(शेष पृष्ठ १४ पर)

भारत के उत्तरी पूर्वी राज्य

(पृष्ठ १३ का शेष)

गये। उन्होंने मुझे वहा की सारी जानकारी दी। पर यह शिकायत बराबर रही कि हमारी सुध-बुध लेने वाला कोई नहीं है। इस समय गंगटोक आर्यसमाज के प्रधान श्री पी०के० धीमान तथा मंत्री डा० राजकुमार गर्ग है। वे पिछले २-३ वर्षों से सिक्किम मे आर्य समाज के लिये भूमि प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे है। मुख्यमंत्री भण्डारी ने इन्हे आश्वासन भी दिया था। भण्डारी का ही तख्ता खिसकने से आर्यसमाज की भूमि का प्रश्न अधर मे लटक गया है।

दार्जिलिंग आर्यसमाज की स्थिति पहले जैसी ही है। उसी प्रकार की सुस्ती, निराशा और अकर्मण्यता का वातावरण वहां बना हुआ है। पुराने आर्यसमाजी केवल सन्ध्या-हवन से ही सन्तोष कर लेते हैं। नयो को कोई दिशा-निर्देश करने वाला नही। वहां के आर्य विद्यालय इसाई स्कूलो की तुलना मे बहुत पिछड़े हुए है, धीरे-धीरे और पिछड़ते जा रहे है। न उनकी कोई सहायता करता है और न उन्हे कोई प्रोत्साहन देने वाला है।

सिलीगुड़ी केन्द्र बने

मुझे सिलीगुड़ी से खरस्योंग जाना था। वहा उस क्षेत्र के अत्यन्त सक्रिय और निष्ठावान् आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री जोखीराम जी ने मुझसे मिलकर उस क्षेत्र मे आर्यसमाज के कार्य को बढाने की एक योजना बनायी थी। उनके मेरे पास कई पत्र आ चुके। दिल्ली मे भी आकर वे मुझसे मिले थे। वे मुझे वहां एक भूमि का टुकडा दिखाना चाहते थे, जिसमें एक अच्छा आधुनिक गुरुकुल स्थापित हो सके। पर यह लिखते हुए मुझे अत्यन्त दुख हो रहा है कि वहाँ पहुंचने पर मुझे प्रथम समाचार यही मिला कि वे उसी दिन दिवंगत हो गये। मुझे लगा मानो उस क्षेत्र मे आर्य समाज के कार्य को बढाने की भावना ही मर गई हो। मैं कभी-कभी उनके पत्रो को पढ़ता हूं और मन ही मन उनके उत्साह व निष्ठा को प्रणाम कर लेता हू। उस निष्ठा से कार्य करने वाला व्यक्ति मुझे दिखाई नही देता।

इस समय उस क्षेत्र के सम्पूर्ण आर्यसमाजो के सम्मिलन का कार्य श्री पं० रतिराम शर्मा कर रहे हैं। १९८० मे भी उनसे मिला था। उसके बाद वे भी दिल्ली मे आकर मुझ से कुछ विचार-विमर्श करके गये थे। उन्होने सिलीगुडी मे कार्य के अतिरिक्त आसपास के सम्पूर्ण क्षेत्र मे कार्य करने की एक योजना बनायी है, और उसकी सारी देखभाल वही करते हैं। सिक्किम आर्यसमाज मे पण्डित व प्रचारक आदि भेजने का कार्य वे बराबर करते रहते हैं। यहां तक कि नेपाल के आर्यसमाजों के कार्य का भार भी उन्होने अपने ऊपर ले रखा है। उन क्षेत्रो मे आर्यसमाज की ज्योति उन्होंने प्रज्ज्वलित की हुई है और वे उसे बुझने नही देते। मेरा दुर्भाग्य था कि जब मैं वहाँ पहुंचा, तब वे वहां नही थे। पर मैं उनके घर ही जाकर रुका। मेरे लौटने पर उनका एक पत्र आया जिसे मैं यहां उध्दृत करना आवश्यकता समझता हूं—

आप मेरी अनुपस्थिति में यहा सपरिवार आकर रुके, यह मेरे लिये गौरव का विषय है। मैं वहाँ आपको मिल नही सका, इसका मुझे खेद रहा। आपसे मिलकर हमे इस क्षेत्र मे काय करने की विशेष प्रेरणा मिलती है। आप यदि इसी प्रकार से दो-चार महीने मे एक बार यहा आ जाया करें तो निश्चय ही हम इस क्षेत्र मे काम को जमा लेगे। हमने दार्जिलिंग मे एक उत्सव किया था, पर वह वैसा नही था, जैसा आप चाहते थे। यदि सार्वदेशिक सभा या आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल हमारे इस कार्य मे विशेष सहयोग देती तो हमारा कार्यक्रम अधिक उपयोगी सिद्ध होता। आप सार्वदेशिक सभा को सलाह देते कि इस क्षेत्र में सच्ची लगन से काम करने वाले कार्यकर्ता भेजे। मुसलमान इसाई इस वक्त बहुत फायदा उठा रहे है यदि उनका काम इसी प्रकार चलता रहा तो देश का नक्शा बदल जायेगा।

आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वह इसको रोके। पर यह तभी होगा जब हमे सार्वदेशिक से सहायता मिलेगी।

इस प्रसग मे आर्य समाज सिलीगुड़ी की विशेष चर्चा करना चाहता हूं। वहाँ अनेक आर्यसमाज हैं, जो पूरे उत्साह से वहा कार्य करते है। इस समय श्री जवाहरलाल आर्य अध्यक्ष है। वीर बहादुर प्रधान, हरभजराय अग्रवाल तथा डा० वीरेन्द्र प्रसाद वर्मा उपाध्यक्ष हैं। अन्य अनेक उत्साही कार्यकर्ता, जिनमें श्री सुभाषचन्द्र नकीपुड़िया (कोषाध्यक्ष), श्री मोहन चन्द्र गुप्त (पुस्तकालयाध्यक्ष), भगवान दास गोयल (संयुक्त मन्त्री), राजकुमार आर्य (उपपुस्तकालयाध्यक्ष) तथा राजेन्द्र प्रसाद (प्रचार मन्त्री) आर्य समाज के कार्य मे पूरा सहयोग देते हैं। महिलाओं मे भी श्रीमती शीला गुप्ता, श्रीमती शान्ति देवी व श्रीमती उषा गुप्ता आदि आर्यसमाज के कार्य को बढ़ाने मे प्रयत्नशील है। इनका अपना एक अलग पुस्तकालय है और एक श्रद्धानन्द दातव्य औषधालय भी है, जहा डा० आशीष कुमार मलिक प्रतिदिन रोगियों का उपचार करते हैं। ये लोग वर्ष में एक बार अपना वार्षिकोत्सव भी करते हैं। इसमे आर्यसमाज के गणमान्य विद्वानों को बुलाकर ये उनका सम्मान करते हैं। वार्षिकोत्सव के ही अवसर पर ये अपनी स्मारिका का प्रकाशन करते हैं, उसमें भी आर्यसमाज के प्रचार के लिए अनेक विद्वानों के लेख रहते हैं। इससे इस क्षेत्र में होने वाली आर्यसमाज की गतिविधियों का भी ज्ञान होता है।

अध्यापक और कार्यकर्त्ता चाहिए

इस बात को फिर दुहराता हूं कि आर्यसमाज द्वारा खोले गये विद्यालयों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। १९८० मे भी श्री रतिराम शर्मा ने मुझसे कहा था कि यहा के लिये मुझे कुछ अध्यापक दीजिए। मैंने यह सूचना अथवा आवश्यकता समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित कराई थी तथा इसके लिए सार्वदेशिक सभा को भी लिखा। इस बार भी मुझसे कहा गया कि हमे विद्यालयों के लिए कुछ ऐसे अध्यापक चाहिये, जो स्थायी रूप से यहा रहकर कार्य करे और हमारे आर्यसमाज के प्रचारक कार्य मे भी सहायक सिद्ध हों। इस बार भी मैंने उनसे कहा कि मैं वहां जाकर प्रयत्न करूंगा। किन्तु मुझे मालूम है कि मैं केवल उन्हे टाल कर ही आ गया हू। वस्तुतः इस दिशा में आर्यसमाज संस्था को ही सक्रिय होना होगा। सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल या डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी को अपनी ओर से कुछ अध्यापक व अध्यापिकाएं वहा भेजने होंगे। यदि अध्यापक-अध्यापिका परस्पर दम्पति हो तो वहां जाकर कार्य करने में अधिक आसानी होगी। यह स्पष्ट है कि उन क्षेत्रो के विद्यालयो की प्रबन्धकर्त्री सभाये उन अध्यापको को इतना वेतन आदि नही दे सकती, जितनी कि उनकी योग्यता व आवश्यकता हो सकती है। कुछ धनराशि निश्चित रूप से हमारी अन्य प्रधान संस्थाओं को उनके लिए भेजनी होगी। यदि इसाई मिशनरी की विदेशों से धन मंगाकर यही के अध्यापकों को इसाई बना लेते हैं और अपने प्रचार कार्य में उनको लगा लेते हैं, तो इस दिशा में हम कोई योजना क्यों नही बना सकते ?

मैंने ऊपर सिलीगुड़ी के आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं मे एक नाम का उल्लेख जान बूझ कर नहीं किया। केवल इसलिए कि मैं उनका नाम पृथक् रूप से एक अनुच्छेद में करूं—श्री सर्वेश्वर झा। वे केवल आर्यसमाज सिलीगुड़ी के मन्त्री ही नही हैं वरन् उस सम्पूर्ण क्षेत्र में आर्यसमाज के कार्य को निःस्वार्थ भाव से दिन रात एक करके काम को आगे बढ़ाने में दत्तचित्त भी रहते हैं। उनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है। लगभग ४० वर्ष की आयु का वह गौरवपूर्ण युवक, माथे पर तेजस्विता, हर समय आर्यसमाज के कार्य की लगन। हमारे वहां पहुंचते ही वे हम से मिलने आये और इन्होंने उस क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारी हम लोगों को दी। अपने कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये उन्होंने हम से बारबार कहा कि हमारे पास वहां से कोई अच्छा पुरोहित भेजिए।

पुरोहित कैसे

आर्यसमाजी संस्थाओं की एक यह धारणा सी बन गई है कि पुरोहित बिना किसी धन की इच्छा के दूर देश में जाकर केवल त्यागवृत्ति से पौरोहित्य कार्य करे। विदेशों से आने वाले पादरी एक छोटे मोटे राज्य के राजा की तरह रहते हैं और अपने कार्य का खूब विस्तार करते हैं। आर्यसमाज को भी कुछ योग्य पुरोहित तैयार करने होंगे, जिनमें आर्य समाज की कार्य करने की तड़प हो और आर्थिक दृष्टि से भी वे इतने सम्पन्न हों कि उन्हे सरकारी व गैर सरकारी नौकरियों की कोई इच्छा न रहे। न वे पौरोहित्य से प्राप्त यजमान की दक्षिणा पर गिद्धदृष्टि रखें। क्या सार्वदेशिक सभा सिलीगुड़ी, सिक्किम या अन्य उत्तरपूर्वी राज्यो मे इस प्रकार के पुरोहितो का एक दल वहा आर्यसमाज का कार्य करने के लिए भेजने की योजना बनाएगी ?

श्री सर्वेश्वर झा ने मुझे बताया कि उन्होंने श्री रतिराम शर्मा के नेतृत्व मे सीतामाड़ तथा बागराकोट मे आर्यसमाज का कार्य प्रारंभ किया है। मालदा तथा गामा मे श्री निरंजन कुमार राय तथा श्री बनवारी लाल आर्य की सहायता से कन्या गुरुकुलों की स्थापना की है। हम यहां अपने कार्य को धीरे-धीरे बढा रहे हैं पर हमारे पास पूरा समय कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का नितान्त अभाव है।

उरांव आर्य परिवार

वे मुझे तथा मेरी पत्नी को सिलीगुडी से लगभग २० किलोमीटर दूर एक टी गार्डन मे ले गये जहां उराव आदिवासियो की बस्ती थी। इन्होंने एक परिवार को आर्य बनाया था, जिसने न केवल मांस और सिगरेट आदि का परित्याग किया था, वरन् वह वर्ष मे एक बार अपने घर पर एक वृहद् यज्ञ का आयोजन भी करता था। उस दिन भी उसके घर पर बृहद् यज्ञ था। उसके घर मे महर्षि दयानन्द का चित्र था। सभी सदस्य—बच्चे और स्त्रियाँ—हमें देखकर हमारे पास नमस्ते करते आ गए थे। हमारे वहाँ पहुचने पर सारी बस्ती के अशिक्षित आदिवासी एकत्र हो गए। उन्होंने हमारे साथ वृहद् यज्ञ और सत्संग में भी भाग लिया। मैंने जब उनको अपने भाषण में बीड़ी, सिगरेट और मांस के साथ दारू की भी बुराइयाँ बतायी तो उन्होंने उन बातों को बहुत ही ध्यान से सुना। हमने उनको अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए भी प्रेरित किया। बड़े-बड़े बच्चे थे, पर कोई आठवीं से अधिक नहीं पढ़ा था। प्रायः चौथी पास थे। इच्छा हो रही थी कि वहाँ एक आर्य-विद्यालय की स्थापना करता चलूं, पर मेरे पा साधन कहाँ थे ? उन आदिवासियों मे हमारे सम्पर्क में आने की भूख थी, जिसे हम चाहकर भी शान्त नहीं कर पा रहे थे। मेरी इच्छा थी कि मैं यहाँ से आठ दस बच्चों को दिल्ली लेता चलूं और उन्हें

(शेष पृष्ठ १६ पर)

पंजाब की चिट्ठी

सचाई कुछ और, लड़ाई कुछ और

—ज्ञानी आनसिंह अमृतसरी—

पंजाब की यह चिट्ठी अक्तूबर के आरम्भ में प्राप्त हुई थी। तब यह नही जा सकी। अब दी जा रही हैं। इसमें दी गई सच्चाई पर सभी हिन्दुओं को—जिनमें सिख भी शामिल हैं—विचार करना चाहिए।

हिमाचल प्रचार यात्रा के पश्चात एक अगस्त से लेकर सितम्बर २७ तक पंजाब तथा आस-पास के क्षेत्रो में, यथा, लुधियाना, बरनाला, जालन्धर, दसूहा, मुकेरिया, तलवाड़ा, पठानकोट, पण्डोरी और नूरपूर, कठुआ, जम्मु तथा चंडीगढ़ राजगढ़ आदि के धर्मस्थानो एवं विद्यालयों मे प्रचार एवं भ्रमण के दौरान पंजाब की वास्तविक स्थिति का पता चला। धारीवाल तथा गुरुदासपुर मे पिछले दिनों बटाला की नई कतले आम की घटना से लगभग चार दिन पूर्व मैं वहीं था।

भय तथा आतंक के वातावरण मे भी वहां लोगों ने बड़ी दिलेरी तथा श्रद्धा का परिचय दिया। धारीवाल में मैं जिस डाक्टर के घर ठहरा था उन्हे भी उग्रवादियों ने जान से मारने की धमाकिया दी थीं। सायकाल लगभग सात बजे से ही बाजार मे सन्नाटा छा जाता था। गुरुदासपुर के जिस डी० ए० वी० विद्यालय में मेरा प्रवचन हुआ वहा के मुख्याध्यापक को भी उग्रवादियो ने मारने की धमकी दे रखी थी, गुरुदासपुर के महाविद्यालय के प्राचार्य को भी, मारने का पत्र आ चुका था।

हिन्दुओं की उदारता

एक ओर आज भी सहजधारी हिन्दु, इतना अत्याचार सह कर भी केशधारी हिन्दुओं के अच्छा व्यवहार कर रहे है, वही दूसरी ओर अमृतसर के स्वर्णमदिर मे हुई सैनिक कारंवाई के बावजूद पाकिस्तानी और भारत के विरुद्ध षड्यन्त्र सिद्ध हो जाने पर भी केशधारी लोगों ने हिन्दुओं का कत्ल करना नही छोड़ा। गत दिनो कलेर ग्राम के कुछ केशधारियो को मिलिट्री ने उग्रवादी समझकर पकड़ा परन्तु स्थानीय हिन्दुओ ने अपने भाईचारे का परिचय देते हुए यह कहकर उन्हें छुड़वा लिया कि ये लोग निर्दोष हैं। कलेर ग्राम उसी धारीवाल नगर के पास है जहा मिलिट्री ऐक्शन से एक दिन पहले बटाला में हिन्दुओं की सामूहिक हत्या हो चुकी है। पंजाब में गत तीन वर्षों से मकानो, दुकानों एवं मन्दिरो में बम फेंक कर उड़ाने के साथ-साथ हिन्दुओ को निर्दयता के साथ मारा जा चुका है। फिर भी पंजाब में रहने वाले हिन्दू, सिखों से प्रेम तथा भाईचारे का सम्बन्ध बनाये हुए हैं। वे सोचते रहे हैं कि यदि छोटा भाई गलती भी करे तो भी बड़े भाई को शान्त रहना चाहिये, ताकि घर उजड़ने से बच सके। आज भी हिन्दुओं के घरों तथा दुकानों में श्री गुरुनानक देव जी से लेकर श्री गुरुगोबिन्द सिह जी के चित्र ज्यों के त्यों लगे हुए हैं। आज भी हिन्दू गुरुद्वारों मे जाते हैं और अपने हाथों से वहाँ सेवा का कार्य भी करते हैं। सिख गुरुद्वारों की ओर से मनाये जा रहे पर्वों में धन देते हैं। आज भी हिन्दू केशधारी की दुकानों से बिना संकोच के सामान खरीदते हैं। देश भर में आज भी हिन्दू केशधारियों को नौकरी देने में कोई संकोच नहीं किया जाता। आज भी पजाब तथा समूचे भारत में दयानन्द विद्यालय, सनातन धर्म विद्यालय, जैन विद्यालय एवं ऐग्लो वैदिक महाविद्यालयों मे केशधारियों को अध्यापक एवं प्राध्यापक के रूप में रखा जा रहा है। आर्यसमाज के सभी प्रचारक अपने व्याख्यानो में श्री गुरुगोविन्द सिंह उनके चारों पुत्र उनके पिता श्री गुरुतेग बहादुर और गुरु अर्जुन देव तथा श्री गुरुनानक देव आदि की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं। पंजाब मे कई स्थानो पर हिन्दुओं का कत्लेआम होने पर भी पंजाब या उसके बाहर हिन्दुओ ने केशधारियों के विरुद्ध कोई हिंसात्मक आदोलन नही छेड़ा है। पंजाब मे हिन्दुओ के 50% होने पर भी केवल 15% सरकारी नौकरियां ही मिलती हैं। किन्तु दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में कहीं भी सरकारी नौकरियो में केशधारियों के साथ अन्याय नही हो रहा। पूरे भारत में केशधारियों को अपनी संख्या के अनुपात से कही अधिक सब सुविधायें यथापूर्व प्राप्त हैं। पंजाब में हुए गुरुद्वारा ऐक्ट के एक पक्षीण निर्णय के कारण हिन्दुओं की भूमि हड़प ली गई फिर भी, आज तक पंजाब एवं पंजाब से बाहर हिन्दुओं ने न तो कोई मंदिर ऐक्ट ही बनाया और न केशधारियों के किसी स्थान पर कब्जा किया।

पंजाब मे गत तीन वर्षों से अकालियों ने धर्म का नाम लेकर जो तथा कथित कुर्सी हथियाने का षडयन्त्र चला रखा है उसमें बार-बार यह घोषणा की जा रही हैं कि यह अभियान सिखों को हिन्दुओं के समान अधिकार मिलने और उनकी धार्मिक मांगे पूरी न होने तक नहीं रुकेगा। खेद है कि धर्म के नाम से चल रहे इस अभियान में आज तक किसी भी उग्रवादी ने एक भी ऐसा प्रमाण नहीं दिया जिससे सिक्ख पन्थ पर अत्याचार सिद्ध होता हो। अपितु वास्तविकता यह है कि गुरुनानक से लेकर गुरुगोविन्द सिंह तक तथा गुरुग्रंथ साहब से लेकर श्री दशम गुरुग्रन्थ साहब तक में विश्वास करने वाले करोड़ों नामधारी, निरंकारी, निर्मले, उदासी, राधास्वामी सिन्धी तथा सहजधारी गैर उग्रवादी सिखो ने आज तक यह कभी नहीं कहा कि सिख पन्थ मानने वालों से दूसरे दर्जे का व्यवहार हो रहा है। अपितु ये सभी शान्ति प्रिय सिख (केशधारी हो अथवा सहजधारी) गुरुओं के साथ-साथ श्री राम, श्री कृष्ण, बन्दा बैरागी, राणा प्रताप, शिवाजी, भगतसिह, बिस्मिल एवं समर्थ रामदास तथा महर्षि दयानन्द को एक जैसा पूज्य समझते हैं। गुरुग्रन्थ साहब के साथ-साथ ये सिख गुरुओं द्वारा पूजित वेद, रामायण, गीता, उपनिषद् एवं दर्शनों को भी पूरा-पूरा सम्मान देते हैं तथा सहजधारी हिन्दुओं से घृणा नही करते, क्योंकि वे मानते हैं कि श्री गुरुनानक देव जी से लेकर श्री गुरुतेग बहादुर तक सभी सिख गुरु सहजधारी हिन्दु थे और वे श्री राम आदि पर पूर्ण श्रद्धा रखते थे।

सचाई कुछ और है

गत दिनो मसूरी में एक निर्भीक केश धारी ने भेंट होने पर कहा कि पंजाब में जो कुछ भी हुआ या हो रहा है उससे हमारा माथा लाज से झुक जाता है। हमारे गुरुओं ने ऐसा करने की कहीं शिक्षा नही दी। अमृतसर के एक अन्य केशधारी बन्धु ने कहा कि ये सब नकली सिख हैं गुरु का असली सिक्ख ऐसा कभी नहीं कर सकता।

सचाई यह है कि पंजाब के ये नकली सिख गुरुओं द्वारा बताए मार्ग को भूलकर कुछ स्वार्थी नेताओं के कारण पाकिस्तान तथा अमरीका का षड्यंत्र पूरा कर रहे हैं। पंजाब में अपने ऊपर अन्याय की बात कहने वाले अथवा अपने आपको अल्प संख्यक बताकर बहु संख्यको द्वारा पक्षपात की चर्चा करने वालों की सचाई कुछ और ही है

इन नकली सिक्खों ने पंजाब में कत्ल हुए हिन्दुओं, जलाये गये हिन्दू मन्दिरो को बचाने का कितना प्रयास किया। 8 सितम्बर के लगभग बटाला में जिस बस के हिन्दुओं की सामूहिक हत्या की गई उसमें अधिसंख्यक सिक्ख बन्धु ही थे पर हिन्दुओं पर पक्षपात का आरोप लगाने वाले सिक्खो ने उन्हें क्यो नही बचाया? ये सिक्ख पहले श्रीराम, श्रीकृष्ण, बन्दा वैरागी छत्रपति शिवाजी व राणा प्रताप आदि के चित्र अपनी दुकानों अथवा घरो में लगाना अच्छा नही समझते थे। पहले ही मंदिरों मे जाने सत्संग एवं हवन आदि करने से इन्हे परहेज था। इनके धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों मे सेवा करने वाले प्रायः हिन्दू नहीं होते। पंजाब तथा जम्मू की सीमा परएक स्त्री ने अपने बालक को केवल इसलिये पीटा क्योकि वह 10 नये पैसे की बर्फ किसी केशधारी की दुकान से न लाकर सहज धारी हिन्दू की दुकान से ले आया था। खालसा स्कूलों, कालेजो एवं पंजाब सिंध बैंक की शाखाओं मे काम करने वाले सर्वत्र अधिकतर केशधारी ही मिलेगे जालंधर के एक खालसा स्कूल में वहा के एक बहुत योग्य बरिष्ठ अध्यापक को केवल इसलिये मुख्य अध्यापक नही बनाया गया क्योंकि वह एक सहजधारी हिन्दू था। उसे कहा गया कि तुम केशधारी बन जाओ, तो तुम्हें प्रिंसिपल बना सकते हैं।

जब उग्रवादियों के गढ स्वर्ण मन्दिर पर सेना ने कारंवाई की-तो हमे खालिस्तान नही चाहिये, हम उग्रवादियो के साथ नही—ऐसा राग अलापने वालों ने भारत तथा भारत से बाहर शोक दिवस मनाकर भारत सरकार को कोसना शुरू कर दिया तथा 'उलटा चोर कोतवाल को डांटे' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुये यह कहना शुरू किया कि सरकार ने ही शराब सुलफा गांजा देसी व विदेशी हथियार स्वर्ण मन्दिर के अन्दर रख दिये है। क्या मिलिट्री के सैकड़ों जवानों की हत्या भी स्वयं ही सेना ने करवा दी?

खालिस्तान नहीं चाहिये पर...

एक ओर तो अकाली दल के द्वारा यह कहा जाता है कि हम खालिस्तान नहीं चाहते पर दूसरी ओर स्थान-स्थान पर खालिस्तान के झण्डे एवं नारे लगाए जाते हैं। अमृतसर मे हुए विश्व सिक्ख सम्मेलन ने खालिस्तान के झण्डे लगाकर खालिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये गये। क्या अकाली नेता इस बात का उत्तर देगे कि यदि वे खालिस्तान नहीं चाहते तो ऐसा वहा क्यों होने दिया गया?

पंजाब के अनेक स्थानों पर जीप द्वारा भ्रमण करते, पूछताछ करने पर पता चला कि अन्दर से सभी नकली सिक्ख खालिस्तान चाहते है। वे हिन्दुओं की हत्याओं से दुख नहीं मानते। उग्रवादियों का विरोध नही करते। भिंडरांवाले के मर जाने से बहुत दुखी हैं और कहते हैं कि मिलिट्री ने हमारे ग्यारहवे गुरू को मार दिया। आज पजाब मे उग्रवादी की पहिचान करना कठिन हो गया है। कई स्थानों पर सरकार की ओर से जारी श्वेत पत्र की प्रतिया जलाई गई। उसके बदले अपना अलग श्वेतपत्र जारी करने की घोषणा करके भी आजतक वह जारी नहीं हुआ। (शेष पृष्ठ १६ पर)

भारत के उत्तरी-पूर्वी राज्य

(पृष्ठ १४ का शेष)

शिक्षित करके वापस भेजू। पर मुझ मे वह सामर्थ्य भी कहा था? हम वहाँ ५-७ घण्टे रहे। मेरी पत्नी ने वहाँ के किशोरो और युवको को एकत्र किया। कुछ ही देर मे सौ डेढ सौ किशोर और युवक एकत्र हो गये। उसने वहा उन्हे सामूहिक खेल सिखाए और अपनी एक अध्यापिका मित्र डा० नयनबाला शर्मा की सहायता से उन्हे कुछ देशभक्ति धर्म और सस्कृति के गीतो का गान भी कराया। आज मैं सोचता हू कि हमारा २४ घण्टो का दिया हुआ वह सस्कार अब तक कपूर बन कर उड चुका होगा। पर यह निश्चित है कि जैसे हम उस बस्ती के दीन-हीन आदिवासियो को स्मरण कर लते है, वैसे ही वे लोग भी हमे अवश्य याद करते होगे। हम शायद वहा दोबारा न पहुच सकें पर कभी कोई ईसाई पादरी निश्चित रूप से वहाँ पहुचेगा, उनमे बस जायेगा और उन्हें अपना बना लेगा। वह उन लागो की दवा, भूख और अशिक्षा की समस्या पर विजय प्राप्त करने मे सफल होगा।

हमारी उत्तरपूर्वी भारत की यह यात्रा हम सब आर्यसमाजियों की आख खोलने के लिए एक दिशा का कार्य करती है। हम इस प्रकार की परिस्थितियो से बहुत पहले से परिचित है, पर चाहते हुए भी उसका कोई उपचार नही करते। हम अपनी सस्था के अनुशासनबद्ध कार्य-कर्त्ता है। हम चाहते हैं कि सार्वदेशिक सभा ही वहाँ की आर्य प्रतिनिधि सभा को सहायता देकर वहाँ के कार्य की एक विस्तृत याजना तैयार करे। हम यह भी चाहते हैं कि डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी केवल दिल्ली जैसे महा-नगरो मे ही पब्लिक स्कूल न खोले। उसके साथ वह उत्तरपूर्वी भारत मे भी अपने स्कूलो का एक जाल बिछाये और उसका सारा खर्चा यही से हो।

अन्त मे मैं यह भी लिखना चाहुगा कि यदि हमारी सस्थाए इस दिशा मे सक्रिय न हुई तो हम अपने देश का यह क्षेत्र केवल सास्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से ही नही गवाएगे वरन् वहा की राजनीतिक स्थिति भी हमारे हाथ से निकल जायेगी। राष्ट्र की भावात्मक एकता के सास्कृतिक आन्दोलन न चलने के कारण ये सभी राज्य धीरे-धीरे भारतीय सघ से अपने को पृथक् करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वहा के युवको मे न इस देश की भाषा के प्रति ममता है, न इस देश के महापुरुषों का उन्हें ज्ञान है और न वे इस देश के धर्म से परिचित हैं।

मैं केवल आर्यसमाजी सस्थाओ से ही नहीं, वरन आर्यसमाज से प्रेम करने वाले सभी महानुभावो से निवेदन करना चाहता हू कि वे उत्तरपूर्वी भारत की स्थिति पर गम्भीरता से विचार करे। जो युवक व युवतिया वहा जाकर कार्य करने के इच्छुक हो, वे मुझसे सम्पर्क करने की कोशिश करें।

वहा से लौटते हुए मेरे मन मे एक इच्छा जगी थी कि मैं एक स्वतन्त्र सस्था का निर्माण करके उस क्षेत्र मे कार्य प्रारम्भ कर दू पर मुझ लगा कि कही मेरे इस प्रयत्न को अन्यथा न ल लिया जाये। यदि आर्यसमाजी सस्थाए इस कार्य के लिए एक मच पर आकर इस कार्य को अपने हाथ में लें, तो समस्या का कुछ समाधान हो सकता है। कार्य को प्रारम्भ करने के लिए २ करोड रु० की एक छोटी राशि प्रारम्भ मे चाहिये।

जब तक हमारी सस्थाए इस दिशा मे कार्य नहीं करती, तब तक हमारे आर्य वीर दलों को उस क्षेत्र में जाकर कुछ शिविर आयाजित करने चाहिए। इस कार्य के लिए भारत सरकार तथा उन क्षेत्रो की सरकारे भी सहायता करेंगी। उत्तर भारत मे होने वाले आर्यवीर दलों के शिविरो मे उस क्षेत्र के युवकों को निमन्त्रित करना चाहिये और उनके मन मे भारतीयता, भारतीय भाषा एव भारतीय सस्कृति के प्रति निष्ठा जागृत करनी चाहिए। आर्य वीरो के अतिरिक्त निष्ठावान् सेवानिवृत्त आर्यसमाजी अथवा वानप्रस्थी भी इस दिशा मे अग्रसर हो सकते हैं। मैं उस क्षेत्र मे कार्य करने के इच्छुक सभी लोगो का आह्वान करता हू।

इस लेख मे मुझ केवल इतना ही कहना है।

पता—७/२, रूपनगर, दिल्ली—११०००७

सचाई कुछ और

(पृष्ठ १५ का शेष)

आखिर शांति कैसे आए ?

बुद्धिमान लोग विचार करें कि क्या उपरोक्त वातावरण के रहते पजाब मे शान्ति हो सकती है ? मैं तो इसका एक ही उपाय समझता हू और वह है शक्ति॥

शक्ति से शांति की बात केवल मैं ही नही कहता अपितु पजाब का हर छोटा व गरीब-अमीर भी यही कहता है। गत दिनो पजाब भ्रमण के समय बडे बडे दुकानदारो से लेकर मामूली रिक्शा वाले तक सभी के मुँह से यही सुनने को मिला कि गद्दारो का जब तक सख्ती से नही कुचला जाता तब तक पजाब मे शान्ति असम्भव है। इस बात की पुष्टि के लिये मैं आपको कुछ सजीव प्रमाण भी दे रहा हू। पजाब के बडला पडूरी आदि ग्रामो मे जहा लोग ईट का जवाब पत्थर से देने को तैयार थे, वहा कोई गडबड नहीं हुई। दसो गुरुओ एव गुरुग्रथ साहब की शिक्षाओ से मुह मोडकर मनमानी करने वाले लोगो से कहना चाहूगा कि अन्याय व अत्याचार देर तक नही चला करता और इसके फल से भी बचा नही जा सकता। इतिहास को देखने से पता चलता है कि दूसरो का खून बहाकर दसरो के चरित्र तथा धन को लूटकर ऊपर उठने वाले (मुगल आदि) अपन आप मे ही लड-भिड कर समाप्त हो गये और हो रहे हैं। ईरान ओर ईराक के मुसलमानो को आपस मे लडते हुए आज लगभग 5 वर्ष हो गये। प्रोटेस्टेंट, तथा कैथोलिक इसाई एक दूसरे के खून के प्यासे रहते हैं। हिन्दुओ का खून बहाकर लाशो के ढेर पर बने पाकिस्तान मे आए दिन शिया-सुन्नी के विवाद मे कितने मुसलमानो की लाशें धरती पर बिछ जाती है। स्त्री जाति से अन्याय करने वाले पाकिस्तान मे मुस्लिम महिलाऐं विद्रोह का झडा बुलन्द कर रही हैं। हुकमा मे कहा गया है—"जैसा बोजे वैसा खाये, नानक गुरुवाणी आये ते जाये—" जो जैसा बोएगा, वैसा फल पाएगा।

गुरुवाणी मे कहा गया है—एक पिता के हम सब बालक—अर्थात् हम सब परस्पर भाई भाई है। ओकार वेद निर्मये वेद हमार। धर्म है। "दीवा बले अधेरा जाये वेद पाठ मति पापा खाये।" हम सब भाइयों का कल्याण बुद्धि को शुद्ध करके परस्पर बन्धुता और सौहार्द से ही हो सकता है। उसका उपाय है वेद मार्ग पर चलना। इसी से हम इस धरती पर शाति पूर्वक निवास करते हुए उस सर्व शक्तिमान परमात्मा के आनद को पाकर जीवन सफल कर सकते हैं। □

शक्ति शान्ति की देवी

—डा० विश्वबन्धु 'व्यथित'—

अस्त हुआ अरुणोदय मे ही मानो आज विहान है।
धरती पर प्रात ही लेटी मा जो लहूलुहान है।
उसके दिल मे प्यार बसा था सारे भारतवर्ष का।
सूझबूझ मे सभाला था हर इक कार्य विभाग को।
तीस गोलिया लगी इन्दिरा जी की पार्थिव देह मे।
नही एक भी छेद सकी उनके दिल और दिमाग को।
कायर हत्यारा कितना भी क्रूर और अनजान हो।
उसकी हर निष्ठुर गोली को भी तो इतना ज्ञान था।
सहम गई हर गाली, उन अगो का स्पर्श न कर पाई।
जिनके कण कण मे बसता यह प्यारा हिन्दुस्तान था।
तभी चिरन्तन और अमर कहलाता हिन्दुस्तान है।
शक्ति शान्ति की देवी थी वह उसने कार्य महान् किए।
सडसठ वर्षो के जीवन मे पग-पग पर बलिदान दिए।
अन्तिम बूद लहू की भारत हित देने का वचन दिया।
राष्ट्र-एकता की खातिर ही आखिर अपना प्राण दिया।
रो रो कर धरती को गीला करता सकल जहान है।
सभी शहीदो से ऊचा उस मा का स्वर्णिम स्थान है।
जिसमे जन्म लिया उसने वह कितना देश महान् है।
दुश्मन के भी दिल को दहला देता यह बलिदान है।
अस्त हुआ अरुणोदय मे.......... ॥

पता—८ कल्पना कालोनी, डी० ए० वी० कैम्पस अबोहर।

आर्यसभा के दो उम्मीदवार

आर्यसभा ने फरीदाबाद से श्री स्वामी इन्द्रवेश और अलीगढ से श्री प० विश्वबन्धु जी को लोकसभा प्रत्याशी के रूप मे खडा किया है। भाजपा, लोकदल और जनता पार्टी ने भी इन दोनो को समर्थन देने का निश्चय किया है। आर्य सभा के सयोजक श्री स्वामी शक्ति वेश इन दोनो को जिताने के लिये दिन-रात एक कर रहे हैं।

श्री स्वामी इन्द्रवेश जी

श्री प० विश्वबन्धु जी

हिमालय के अंचल से तृतीय विश्वयुद्ध की ज्वाला

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी का प्रेस कान्फ्रेंस में वक्तव्य

हैदराबाद : अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्यसमाजी नेता व सर सी० वी०- रमन के निकट सहयोगी वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश ने एक प्रेस विज्ञप्ति में विगत एक दशक से ऊपर के घटनाक्रमों तथा उनकी अशुभ परिणति के रूप में श्रीमती गांधी की जघन्य हत्या जैसी घटनाओं पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करते हुए आत्म निरीक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने कहा — अंग्रेजों ने फूट के बीज बोकर देश छोड़ा। हमारे संविधान विशेषज्ञ भी परिस्थितियों के दबाव में आकर विधान निर्माण में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के नाम पर उन धाराओं को रखने पर मजबूर हो गये जिन्होंने राष्ट्र को भाषा और धर्म के नाम पर विभाजित कर डाला। अंग्रेजों के समय साम्प्रदायिकता का जो विष राजनीतिक मान्यताओं में गहरे पैठ चुका था उसे इन संवैधानिक प्रावधानों ने और हवा दी और देश भर में साम्प्रदायिक दंगों, खालिस्तान तथा मुस्लिम बहुल क्षेत्रों के निर्माण की मांगों के रूप में वह विष फूटने लगा। परिस्थिति का तकाजा है कि स्वतंत्रता के ३७ साल बाद तक देश जिस नीति के तहत चलाया गया है उस पर फिर से गौर किया जाय।

उपरोक्त समस्याओं के अलावा, केन्द्र-राज्य संबंध, घट-घटव्यापी भ्रष्टाचार, चुनाव प्रक्रिया जिसने सही और देशभक्त व्यक्ति के लिए विधायिकाओं तक पहुंचना असंभव कर दिया तथा राष्ट्र की समृद्धि से ईर्ष्या करने वाले देशों की शत्रुतापूर्ण गतिविधियाँ जैसी समस्याओं के मगर-मच्छ भी घात में हैं। हैरत तो यह है कि जब दुश्मन द्वार पर है पृथकतावादी तत्व उससे हाथ मिलाने को बेचैन लगते है और हमारे राजनीतिक दल देश की सुरक्षा को दरकिनार किये एक दूसरे पर कीचड़ उछालने में लगे हैं। इस सामूहिक आत्मघाती युद्ध की बजाय आज आवश्यकता है एक दृढ़ व संगठित केन्द्रीय सत्ता के गठन की।

आगे क्या होगा और यह मूर्खता हमे कितनी महंगी पड़ेगी यह भविष्यवाणी करने से इन्कार करते हुए भी उन्होंने आशंका व्यक्त की कि देश इससे टूट सकता है। कुछ विदेशी ताकतें हमारी फूट का लाभ उठाकर दखलंदाजी कर सकती हैं और हिमालय के अंचल में तृतीय विश्वयुद्ध की वह ज्वाला भी धधक सकती है जिससे दूर-दूर तक हिन्दमहासागर भी लावा सा खौल उठे। तृतीय विश्व युद्ध के संबंध मे एक प्रश्न के उत्तर मे उन्होने अणु वैज्ञानिक आइन्स्टीन के उस उत्तर का उल्लेख किया कि चौथा युद्ध यदि हुआ, तो वह लाठी और डंडों से लड़ा जायेगा क्योंकि तीसरा युद्ध आज के विज्ञान और प्रौद्योगिकी को ही समाप्त कर चुका होगा।"

उन्होंने कहा कि प्रस्तावित खालिस्तान की बांग देने वालों और उनकी पीठ ठोंकने वाले हमारे पाकिस्तानी दोस्तों को भी यह फौरन समझ लेना है कि सत्ता के उन्माद से ग्रस्त ताकतों को पाकिस्तान में कतई दिलचस्पी नहीं है। इसलिए उस युद्ध से प्रलय का जो ताण्डव शुरू होगा वह उन्हें भी निगल जायेगा। हमारे सामने अहम सवाल आज यह है कि क्या होगा और क्या हम बच सकेंगे? मेरा कहना है कि मानवता के लिए हमे वेद, उपनिषद, बुद्ध की शिक्षाओं, स्वामी दयानन्द, गांधी, टैगोर, कालिदास आदि के बहुमूल्य ग्रन्थों की थाती को हर हालत में बचाने की कोशिश करनी है। इसके लिए भारत भावी युद्ध की विभिषिका के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने वाली दूसरी ताकतों से सहयोग करे। इस दिशा में सफलता पाने के लिए तथा देश की विघटनवादी ताकतों से टकराने के लिए आर्यसमाज प्रभावी कदम उठाने को तैयार रहे।

प० जर्मनी में तीन लाख गायों के वध की योजना

दूध का उत्पदन क्यों घटाएं : बम्बई आर्यसभा की अपील

बम्बई : आर्य सभा के अध्यक्ष श्री ज्येष्ठ वर्मन सहित, फोर्ट नागरिक कल्याण संघ के उपाध्यक्ष श्री मधु कोटियां, समर्थ जन-सेवा केन्द्र के संचालक सी-एल वर्क व कोलाबा क्यूफे परेड नागरिक दल के अध्यक्ष डा० पी० नवीन कुमार ने जर्मन संघीय जनतंत्र सरकार से संयुक्त अपील द्वारा अपने यहाँ 2 लाख 60 हजार दुधारू गायों की प्रस्तावित हत्या को रोकने का आग्रह किया। ये गायें दूध का उत्पादन घटाने के लिए मारी जाती हैं।

अपील मे कहा है कि विश्व के कुछ भागों में इतनी भयंकर गरीबी है कि प्रति मिनट 30 बच्चे, भोजन और सस्ती दवा के अभाव में दम तोड़ रहे हैं। लगभग 4500 लाख लोग भूख और कुपोषण से ग्रस्त हैं। अकेले अफ्रीका में 1500 लाख लोग भूख के शिकार हैं। क्वाजूलू के कुछ भागों में कुपोषण के शिकार 60 से 90 प्रतिशत बच्चे किसी तरह अस्पताल पहुंचते और वहीं समाप्त हो जाते हैं। हालत इतनी खराब बताई जाती है कि पेट भरने के लिये लोग एक-दूसरे की हत्या तक करने पर उतारू हैं।

ऐसी गरीबी वस्तुतः बेबुनियाद है क्योंकि मानव के पास इसे रोकने के पर्याप्त साधन और भूमि मौजूद है। फिर भी गरीबी है क्योंकि सर्वसत्तासम्पन्न तमाम देश इन साधनों के वितरण के प्रति उदार नहीं हैं और उनकी आँखों पर चढ़ा दंभ और अहम्मन्यता का चश्मा उन्हें पड़ोसी की जरूरतें देखने नहीं देता।

अपील में स्मरण कराया गया है कि जाति और राष्ट्रों की सीमाओं के परे रहने वाले हमारे पड़ोसी लोग भी हमारे जैसे ही इन्सान हैं जो अभावग्रस्त है। वे काठ के पुतले या दुश्मन नहीं हैं और मानवता के नाते सिद्धान्त रूप में नहीं बल्कि क्रियात्मक रूप से हमें उनकी कठिनाइयों में भागीदार बनना होगा।

अन्त मे अनुरोध के साथ आशा की गयी है कि जर्मन गणतंत्र सरकार उन उपयोगी और मूक पशुओं की हत्या के फैसले पर पुनर्विचार करेगी और उन्हें अन्ततः उन जगहों पर जीवित रहने देगी जहा उनके दूध की कीमत उनके मास से अधिक आँकी जाती है।

गैस प्रदूषण दूर करने के लिए यज्ञ करो

भोपाल में जहरीली गैस से अगणित प्राणियो, मनुष्य, पशु-पक्षी तथा वृक्ष, वनस्पति, अन्नादि का विनाश हुआ। अनेक अब भी इसका कष्ट भोग रहे हैं। मृत पशु-पक्षी, कीट, पतंग व मनुष्यों से जो सड़ाध पृथ्वी के ऊपर या अन्दर या जलाशयों में उत्पन्न होगी या जो उनको जलाने से उसकी दुर्गन्धि उत्पन्न होगी, वायुमण्डल में फैलेगी, उसका दूषित प्रभाव कुछ काल तक होगा। अतः वर्तमान मे हुए प्रदूषण एवं रोगों के निवारण के लिए अन्न, वृक्ष, जल आदि को भी विष रहित करने के लिए सभी सार्वजनिक संस्थाओं को सार्वजनिक स्थानों मे एवं धार्मिक स्थानो में बड़े रूप में हवन-यज्ञों का आयोजन करना चाहिए।

आर्य समाज को इस अवसर पर विशेष रूप से अपने-अपने मन्दिरो मे भोपाल इन्दौर, देवास, उज्जैन, शाजापुर, ब्यावरा, महू, होशंगाबाद, बीना, सागर आदि जो भोपाल से 200 या 250 किलोमीटर के स्थान है, उनमे कम से कम एक सप्ताह का १० सहस्र आहुतियों का यज्ञ शीघ्र से शीघ्र प्रारम्भ करना चाहिए। इससे प्रदूषण का जो सूक्ष्म प्रभाव पर्यावरण में व्याप्त हो गया है, उसका निवारण होकर प्राणिमात्र का उपकार हो सकेगा। —वीरसेन वेदश्रमी वेदसदन; महारानी पथ, इन्दौर।

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा-३६३६५०

जिला राजकोट (गुजरात)

दिल्ली कार्यालय—आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

रजत-जयन्ती समारोह में समिलित होने का निमन्त्रण तथा

आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर,

सादर नमस्ते।

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 16, 17, 18, फरवरी, 1985 तदनुसार शनि, रवि, सोमवार को ऋषि जन्म-स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है।

इस वर्ष यह ऋषि मेला रजत—जयन्ती के भव्य रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर एक सप्ताह तक वेद पारायण यज्ञ होगा। देश-देशान्तर से पधारे आर्य विद्वान् तथा कलाकार, ऋषि भक्त अपनी श्रद्धांजलि ऋषि के चरणों में अर्पित करेंगे। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर, जामनगर की कन्याएं, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी तथा अन्य अनेक संस्थाओं के युवक भी समारोह के कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

इस बार स्वामी सत्यपतिजी महाराज की अध्यक्षता में ऋषि मेला से एक सप्ताह पूर्व 'योग शिक्षण शिविर' का भी आयोजन किया गया है जो कि 10 फरवरी से 16 फरवरी 1985 तक चलेगा। जो सज्जन इसमें सम्मिलित होना चाहें वे तुरन्त उपरोक्त पते पर सूचित करें।

ऋषि मेले पर आवास—भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा—ट्रस्ट की ओर से होगा।

टंकारा-ट्रस्ट के आधीन निम्न कार्य चल रहे हैं।—

1. ऋषि जन्म-गृह का प्रबन्ध
2. अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय
3. गो-संवर्धन केन्द्र (विशाल गौशाला)
4. दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र-गृह
5. अतिथि-गृह
6. आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र, पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म स्थान टंकारा की कुछ विशेष आवश्यकताएं भी हैं। पानी की भयंकर कमी, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग का एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे में होना तथा टंकारा की संस्थाओं का अपेक्षित विकास।

यह तीन मुख्य कार्य हैं जो टंकारा स्मारक के पूर्ण विकास में बाधक हैं। टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा वहा के कार्य को कठिनाइयों को दूर करने के लिए टंकारा—ट्रस्ट के अधिकारी तथा ट्रस्टी जनता—जर्नादन के सहयोग से प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं।

ऋषि भक्तो की सूचनार्थ यह भी लिख देवें कि टंकारा में जो गौशाला है, उसमें ३० गौवें हैं। इस गौशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष गौशाला में २५०००/- का घाटा हो जाता है जो कि आप जैसे ऋषि-भक्तों और गौभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

आपसे आग्रह और सविनय प्रार्थना है कि इस पवित्र यज्ञ कार्य में अपनी सहायता का हाथ अवश्य बढ़ाइए। ऋषि जन्मस्थान ही यदि दर्शनीय और पूर्णतया विकसित न हुआ तो आर्यसमाज जैसी महान् संस्था कैसे विश्व में अपना सिर ऊंचा कर सकती है।

प्रति वर्ष सहस्त्रों ऋषि—भक्त ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारते हैं। उनके आवास और भोजनादि का पूरा प्रबन्ध नि:शुल्क टंकारा-ट्रस्ट की ओर से किया जाता है। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के यात्रियों के लिए प्रतिवर्ष स्पेशल ट्रेन तथा स्पेशल बसों का भी प्रबन्ध किया जाता है। इस ट्रेन तथा बसों द्वारा आप टंकारा के अतिरिक्त अन्य दर्शनीय स्थानों को भी देख सकते हैं।

विनम्र निवेदन

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप टंकारा अवश्य पधारें और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी दें। यह राशि आप क्रास चैक, क्रास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से "टंकारा सहायक समिति" के नाम से इसके कार्यालय आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपनी ओर से अपनी आर्यसमाज की ओर से, अपनी स्त्री समाज की ओर से, अपनी शिक्षण संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजें।

विशेष सूचना :—टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि कर से मुक्त है।

निवेदक,
श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक—ट्रस्ट-टंकारा
के अधिकारी तथा ट्रस्टीगण

अनुपम राष्ट्रपुरुष स्वामी श्रद्धानंद

—श्री ओमप्रकाश आर्य—

आर्यसमाज के इतिहास में महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदानुमोदित सत्य सिद्धान्तों और मन्तव्यों को व्यावहारिक रूप देने का सबसे अधिक सौभाग्य यदि किसी को प्राप्त हुआ है तो वह केवल बलिदानी वीर स्वामी श्रद्धानन्द जी थे।

मुनिवर पं० गुरुदत्त असमय ही काल कवलित हो गये अन्यथा उनसे आर्यमात्र को बहुत आशा बंधी थी। जीवन-दानी महात्मा हंसराज तप, त्याग और धैर्य की सजीव साकार प्रतिमा थे परन्तु उन्होंने अपने आपको शिक्षा प्रचार-प्रसार के क्षेत्र तक ही सीमित रखा जबकि नर-केसरी ला० लाजपत राय ने राजनीति के क्षेत्र को अनुप्राणित किया। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी की बहुमुखी प्रतिभा ने धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र में अद्भुत कौशल दिखलाया।

स्वामी जी का कार्यक्षेत्र सीमाबद्ध न था। वह एक ही साथ अनेक भिन्न रूप के क्षेत्रों में कार्य आरम्भ कर देते थे और तन्मयता से सभी को पूरा करते थे। सब से बड़ी और विचित्र बात यह है कि प्रत्येक क्षेत्र मे वे सबसे प्रथम और आगे रहकर कार्य किया करते थे। उनका विश्वास था कि विचारहीन आचार और आचारहीन प्रचार कभी सफल नहीं हो सकता। वे सत्यानुरागी थे,। जिस बात को ठीक समझते थे उसे कहने और करने मे कभी न चूकते थे। जीवन भर सत्य के प्रचार के लिए वे अपने-बेगाने सभी से सघर्षरत रहे, किन्तु क्या मजाल कि जो सत्य का दामन छोड़ा हो। गांधी जी को महात्मा कहकर पुकारने वाले यदि वे थे तो उन्ही गांधी जी की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति का डटकर विरोध करने का साहस भी उन्हीं में था।

वर्ण का आधार गुण, कर्म-स्वभाव है इसकी सत्यता पर जब उनका विश्वास जम गया और यह बात समझ मे आ गई कि जन्मगत जाति-पाति का बखेड़ा जातीय जीवन को अस्त-व्यस्त तथा निष्प्राण बनाने का कारण बन रहा है, तब अपने घर से ही सुधार प्रारम्भ कर दिया। लाख धमकाया, समझाया जन्माभिमानी साथियों ने परन्तु धुन का धनी, सत्याचारी मुंशीराम सत्यपथ से विचलित होने वाला न था। आर्यसमाज बच्छेवाली लाहौर में मुंशीराम जी को 'अत्याचारी, यशलोभी, निर्मोही, नृशंस, लड़की के जीवन से खिलवाड़ करने वाला, अपने हाथों कुंए में ढकेलने वाला' आदि-आदि कठोर वचन कहे गये परन्तु वीर-धीर मुंशीराम टस से मस न हुआ और अपनी कन्या का विवाह ऊंची जाति का खत्री होते हुए भी एक अरोड़ा नवयुवक से कर दिया। अपने शेष बच्चों के विवाह भी आप ने जात-पांत तोड़ कर किये। आज तो इस प्रकार के कार्य एक सामान्य सी बात हो गये है परन्तु उस समय अन्तर्जातीय विवाह करना किसी विरले वीर का ही काम था।

शिक्षा में राष्ट्रीयता की पुट

मैकाले द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति समूचे राष्ट्र और जाति को विदेशी तथा विधर्मी न बना दे इसके प्रतिकारस्वरूप और राष्ट्रहित को सामने रखते हुए मुन्शीराम जी ने अपने आचार्य महर्षि दयानन्द के आर्ष परम्परा को जीवित रखने वाले गुरुकुल की स्थापना का संकल्प ग्रहण किया। एक सम्पन्न और उच्च घराने का सुशिक्षित व्यक्ति जंगल में गंगा के उस पार अपने दोनो बच्चों को साथ लेकर कैसे जा बैठा, यह पढ़कर आश्चर्य होता है। श्रीयुत शिबदयालु एम० ए० ने अपने एक संस्मरण में लिखा है—मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि जब स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना के लिए ३०,००० रुपये एकत्र करने का व्रत लिया उन दिनों 'ट्रिब्यून' समाचारपत्र के कार्यालय में स्वामी जी का एक बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। जिसमे डा० यूविंग सरीखे मुख्याध्यापक उपस्थित थे। वह कहते थे कि स्वामी जी उल्टी गंगा बहाते हैं। लेकिन ऋषि दयानन्द जी के सच्चे भक्त ने अपने अनथक परिश्रम और लगन से सारे आर्यजगत् को यह सिद्ध करके दिखलाया कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली कैसे पुनर्जीवित की जा सकती है। उस समय यह देखकर सभी विस्मित थे कि इस राष्ट्रीय संस्था मे कोई विदेशी अध्यापक नही, विदेशी भाषा नही, विदेशी रहन-सहन, खान-पान नही, पाठ्यक्रम भी सरकारी नहीं, सरकारी अनुदान भी नही, शिक्षा पद्धति पूर्णतया अपनी है। उत्सवों या सभा सम्मेलनों में किसी सरकारी पदाधिकारी को अध्यक्ष भी नही बनाया जाता और जब कभी कोई बड़े से बड़ा अधिकारी सस्था को देखने के लिए आता भी है तो उसे गुरुकुल के रंग में रंग दिया जाता है। उसे अपने गुरुकुल के निवासकाल में खान-पान और रहन-सहन में गुरुकुलीय जीवन-पद्धति को अपनाना पड़ता है। पाठकवृन्द! यह चमत्कार उस समर्पित जीवन के कारण था जिसका नाम पहले महात्मा मुंशीराम और बाद में स्वामी श्रद्धानन्द विख्यात हुआ।

मस्तिष्क का राष्ट्रीयकरण

भारत देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की राष्ट्रीय भावना को स्वस्थ एवम् सबल बनाने के लिए स्वामी जी ने शुद्धि का बिगुल बजाया। जब उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति जब मुसलमान या इसाई बन जाता है तब केवल उसके धार्मिक विचार ही नहीं बदलते अपितु उसका स्वदेशाभिमान भी विलुप्त हो जाता है और वह इस अपनी जन्म भूमि को पराया समझने और मानने लगता है। अतः विदेशी मतो के विदेशीपन के मेल को दूर हटाने के लिए इस सस्कार का नाम शुद्धि संस्कार रखना बिल्कुल उपयुक्त प्रतीत होता है। वास्तव मे शुद्धि मस्तिष्क का राष्ट्रीयकरण है। उस समय के राष्ट्रीय नेता विशेषकर श्री गाधी जी यदि स्वामी जी महाराज के समान दूर दर्शिता का परिचय देते और इस महान् राष्ट्रीय यज्ञ के सभालने में उनके सहयोगी बन जाते तो देश विभाजन की नौबत ही न आती। सत्य तो यह है कि गाधी जी तथा अन्य नेता इस यज्ञ मे सहायक होने की अपेक्षा बाधक ही बनते रहे। श्री गांधी जी ने तो शुद्धि कार्म, महर्षिदयानन्द, सत्यार्थप्रकाश, आर्य समाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के विरुद्ध लेख तक लिखने में संकोचन किया। यह गांधीजी से उच्च कोटि के नेता के लेख ही थे जिन सेसेख्वाजा हसन निजामी और मौलाना अब्दुल बारी तथा अन्य मतान्ध मौलवियों को स्वामी जी के विरुद्ध ग्राम मुसलमानों को भड़काने का सुयोग प्राप्त हुआ।२३ दिसम्बर १९२६ से कुछ दिन पूर्व ख्वाजा हसन निजामी ने अपने समाचार पत्र में एक कार्टून छापा था जिसमे अपने आपको श्रीरामचन्द्र बनातीर कमान हाथ मे ले तीर चला रहे थे और शुद्धि आदोलन को रावण का नाम दिया गया था। उसी समाचार पत्र मे २३ दिसम्बर १९२६ को निम्न कविता भी प्रकाशित हुई थी। कविता का शीर्षक था "अशुद्धि की अर्थी"

हुये लाजपत मालवी में इशारे, लड़े आसमान-ए-सग्राफत के तारे।
कहा लाजपत ने अजी मालवी जी, यह किरपा है इसकी फिरे दिन हमारे।
नसीबा स्वामी का जागा हुआ है, यही वक्त है बढ के अब पाला मारे।
अगर कुछ दिनों और चलती रही यू, तो बन जायेंगे काम सारे के सारे।
मुहम्मद अली है अगरचे मुसलमां, मगर काम यह आ रहा है हमारे।
मुहम्मद अली ने की ख्वाजा पे यूरश, मगर पिस रहे हैं मुसलमान सारे।
बहुत मालवी जी ने वगले बजाई, बहुत लाजपत ने बजाए दो तारे।
मगर होश में आयेंगे जब यह दोनों, नजर आयेंगे मालवी को दिन के तारे।
अशुद्धि मिला करके छोड़ेगे हम भी, अगर बाजुओं में है कुछ दम हमारे।
बना कर अशुद्धि की अर्थी को स्वामी
डुबा आना चुपके से जमना किनारे।।

पाठक वृन्द। २३ दिसम्बर को यह कविता प्रकाशित हुई और उसी दिन स्वामी जी को जो निमोनियाज्वर से पीड़ित थे, एक मतान्ध मुसलमान ने जिस का नाम अब्दुल रशीद था और जो 'रियासत' अखबार के मालिक सरदार दीवान सिंहमफतुन के पास कभी किताबत का कार्य करता रहा, धोखे से आकर शहीद कर दिया।

एक वीतराग संन्यासी जिस को कभी स्वयं मुसलमान दिल्ली की सबसे बड़ी मसजिद पर ले जा कर मधुर उपदेश सुनना अपना सौभाग्य समझते तथा 'ओलिया' तक कहा करते थे, उसको उन्ही के एक मुसलमान भाई ने क्यो शहीद किया इसके सम्बन्ध मे अपनी ओर से कुछ न लिखकर अहमदिया फिरके के मुसलमानों (जिन्हें अब पाकिस्तान ने मुसलमान मानने से इनकार कर दिया है) के गुरु खिलफतुल मसीह ने जो २६ दिसम्बर १९२६ ई० को कादियान में कहे थे उन्हे यहा उद्धृत कर देना ही पर्याप्त समझता हूं।

"स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या की जिम्मेवारी सिर्फ घातक अब्दुल रशीद ही पर नही है। उसने तो केवल उस धार्मिक विश्वास पर आचरण मात्र किया जो उसने मौलवियो और इस्लाम के लीडरों से हासिल किया था। कुछ एक को छोड़कर इन्ही लोगों ने जो आज इस्लाम के लीडर और मुल्क के उलमा कहते है। काबुल गवर्नमेंट के कार्य की प्रशंसा की थी जब उसने हमारे पाच कार्यकर्त्ताओं को पत्थरो से मार मारकर इसलिये मरवा दिया था क्योंकि उनका मत भिन्न था। जिसका साफ मतलब यह है कि ये लोग धर्म प्रचार व धर्म की रक्षा के लिये वध करने के सिद्धात की पुष्टि व प्रचार करते है। तो स्वामी श्रद्धानन्द जी का कत्ल इन्ही लोगो की शिक्षाओं का स्वाभाविक परिणाम है। इसलिये यही लोग स्वामी जी की हत्या के असलीयत मे जिम्मेवार है। और इन्होने इस कार्य से इस्लाम को भारी नुकसान पहुचाया है।"

वस्तुतः मुसलमानो में जब तक यह प्रचार किया जायगा कि कुरान को ईश्वरीय ज्ञान तथा हजरत मुहम्मद को खुदा का रसूल न मानने वाला व्यक्ति काफिर है और कि काफिर का बध करना पुण्य है पाप नही, तब तक इस प्रकार के जघन्य अपराध होते ही रहेंगे। इस विषैले संकीर्णता से भरे और मानवता का मान घटाने वाले प्रचार को रोकना अत्यावश्यक है परन्तु आज के पदलोलुप और वोट बटोर नेताओं से इसकी आशा करना दुराशा मात्र है। प्रभु सभी को सुमति प्रदान करे।

लेखक का पता—एन० सी०-११६
ओमभवन, कोट किशनचन्द, जालंधर-४

पिछले दिनों आर्य पत्रों में यह विवाद चलता रहा है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में कोई परिवर्तन अपेक्षित है या नहीं। अपरिवर्तनवादी कहते हैं कि जैसा है वैसा ही चलता रहना चाहिए। परिवर्तन-वादी कहते हैं कि गुरुकुलों को—खास तौर से गुरुकुल कांगड़ी को—पब्लिक स्कूल के सांचे में ढाला जाए। वही पाठ-विधि हो, जो बाहर के पब्लिक स्कूलों में होती है—जिससे गुरुकुलों के विद्यार्थी भी उच्च सरकारी पदों तक पहुंच सकें। संस्कृत और धर्मशिक्षा तथा आश्रम-निवास की अनिवार्यता ज्यों की त्यों रहेगी। विशेष अन्तर यह रहे कि बाहर के पब्लिक स्कूलों की तरह गुरुकुल की शिक्षा केवल अमीरों के लिए न रहे। उनकी दृष्टि में गुरुकुल का अर्थ है—जनता का पब्लिक स्कूल। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मुख्याधिष्ठाता (अब स्वर्गीय) श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी शुरू से दूसरे पक्ष के समर्थक थे। पर उनके जीवन-काल में उनकी बात नहीं चल सकी। अब गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के कट्टर भक्त कई वरिष्ठ विचारक स्वर्गीय पण्डित जी के विचारों का समर्थन कर रहे हैं। इस दृष्टि से इस लेख में उठाया गया मुद्दा पुनः विचार का विषय बन सकता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और स्व० श्री पं० विश्वम्भर नाथजी

—श्री योगेन्द्र अवस्थी—

आर्य जगत में गुरुकुल की खोई प्रतिष्ठा के पुनर्स्थापणार्थ कुछ लेख पढ़ने को मिले, जिनमे मूल रूप से गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को नया जीवन प्रदान करने पर ही बल दिया गया। इन लेखों को पढ़कर मुझे भी इस बात को स्पष्ट करने की प्रेरणा मिली, कि आज से 64 वर्ष पूर्व स्वर्गीय श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी ने उस समय जिस शिक्षा प्रणाली को अपनाने की बात कही थी, उसी को आज दोहराया जा रहा है। यदि उन्हीं दिनों उस प्रणाली को लागू कर दिया जाता, तो शिक्षा के सम्बन्ध मे गुरुकुल आज प्रगति के शिखर पर होता। देश के अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में डिग्रियों की उपलब्धि के साथ-साथ इसके विद्यार्थी चरित्र-निर्माण में भी सबसे आगे होते।

पण्डित जी ने भली-भांति अनुभव कर लिया था कि प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा देना चाहता है जिससे वे जीविकोपार्जन की चिन्ता से मुक्त हो सकें तथा समाज में प्रतिष्ठित पदो को प्राप्त करने के योग्य भी बन सकें। यह निःसन्देह सत्य है कि जिन आर्य परिवारों पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचारों की गहरी छाप के साथ आर्य समाज के प्रचार की धुन भी सवार थी उनके सामने तो गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली मे बिना कोई परिवर्तन किये उसे ज्यो का त्यों अपनाने के सिवाय कोई विकल्प था ही नही। परन्तु जीविका का प्रश्न जीवन के साथ इतना गहरा जुड़ा हुआ है कि उसको दृष्टि से ओझल किया ही नही जा सकता। यह तो सार्वभौमिक और सर्व-कालिक है।

अतः पण्डित जी ने जब देखा कि गुरुकुलों की डिग्रियों को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नही तो उन्होंने उसका एक उत्तम हल निकाला। पण्डित जी ने दृढ़तापूर्वक यह विचार प्रस्तुत किया कि गुरुकुलों में वही पाठ विधि होनी चाहिये जो सरकारी स्कूलों मे होती है। भिन्नता यह हो कि चरित्र-निर्माण के लिये आश्रम पद्धति को अपनाया जाय। आश्रम पद्धति से उनका तात्पर्य यह था कि विद्यार्थी आश्रमों (छात्रावासों) में रह कर शिक्षा प्राप्त करें। इस प्रकार यह गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र सम्बन्धों के साथ-साथ ब्रह्मचर्य पूर्वक तपस्या का जीवन व्यतीत करने की क्षमता प्राप्त कर सकेंगे। यही आश्रम पद्धति छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों एवं योग्यता को विकसित करने मे सहायक सिद्ध हो सकती है। उनका विचार था कि गुरु के सान्निध्य के अभाव में शिष्य ऐसी शिक्षा से वंचित रह जाता है। पर ऐसी पद्धति के साथ यदि पाठ-विधि सरकारी स्कूलो की जोड़ दी जाय तो गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी समाज में आदर्श नागरिक का उदाहरण पेश कर सकता है। गुरुकुल की ऐसी शिक्षा प्राप्त कर वह विद्यार्थी समाज के अन्य विद्यार्थियों के सम्पर्क में आने पर हीनता की भावना से सर्वथा मुक्त ही नहीं रहेगा अपितु अपने आसपास के वातावरण को दूषित होने से भी बचा सकेगा, क्योंकि उसने शिक्षा को वास्तविक जीवन के साथ जोड़ा होगा। केवल पुस्तकीय

शिक्षा ही नहीं उसके पास चारित्रिक विकास का भी मूलमंत्र होगा।

पण्डित जी ने जिस शिक्षा पद्धति को अपनाने की बात कही थी उसमें संस्कृत और धर्मशिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। उस पद्धति का एक विशेष लाभ यह भी था कि विद्यार्थी आठवी श्रेणी के बाद १॥-२ वर्ष में सरकारी स्कूलों की मैट्रिक परीक्षा बैठने योग्य हो सकता था। स्वयं पण्डित जी के पुत्र-पुत्री ने क्रमशः ६ माह व १॥ वर्ष में मैट्रिक की परीक्षा आठवीं श्रेणी के बाद प्रथम श्रेणी में पास की पर दुर्भाग्य की बात यह हुई कि पं० जी के मुख्याधिष्ठाता पद सम्भालने से पूर्व ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब यह प्रस्ताव पास कर चुकी कि गुरुकुल का विकास एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय के रूप में ही हो। अतः पण्डित जी के विचार कार्य रूप में परिणत न हो सके। पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे विचार वायुमण्डल में अभी तक गूंज रहे हैं।

अब क्योंकि गुरुकुल एक स्वायत्त संस्था है, इस के मार्ग में किसी प्रकार की रुकावट नहीं है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आधार बनाकर संस्था के संचालकों को उसमें छात्रों के व्यापक रूप में प्रवेश का प्रबन्ध करना चाहिये ताकि विद्यार्थी गुरुकुलीय जीवन व्यतीत करता हुवा ही कॉलिज में जाये। बाहर से जो विद्यार्थी कालिजों मे प्रविष्ट होते हैं और गुरुकुलीय पाठविधि व ब्रह्मचर्य जीवन का,जिन्हें कुछ भी आभास नहीं होता उनके कारण वातावरण दूषित होता है।

गुरुकुल के अधिकारी भी ऐसे होने चाहियें जिनकी आर्यसमाज के कार्य में विशेष रुचि हो और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति उनकी पूर्ण निष्ठा हो।

पता—११ भम्बरी मैनशन्स,रामजस रोड, करोलबाग,नई दिल्ली-५।

हिन्दू हितों के लिए प्रतिबद्ध उम्मीदवार को वोट दें

यदि हम हिन्दू संस्कृति और सभ्यता से अपने को अलग कर ले तो इस भारत देश के हम निवासियों के पास अपने को गौरवान्वित करने वाली और ऐसी क्या वस्तु शेष रह जाती है? रह जाती है केवल एक ऐसी पीढ़ी जो विवेकहीन है। जिनमें अधिकांश स्वप्निल मायाजाल में रह रहे हैं, परस्पर टुकड़ों में बटे हुये हैं और नैतिकता रहित, भ्रष्ट लोगो के नेतृत्व मे परस्पर लड़ रहे हैं और एक दूसरे की हत्याये कर रहे हैं। दुःखी देश के पुनर्निर्माण कार्य मे अपनी असफलता छिपाने के लिए नारेबाजी के सिवाय हमारे पास ऐसी क्या चीज है जिसको लेकर हम विश्व राष्ट्रो मे सम्मान और गर्व के साथ अपना मस्तक ऊंचा उठा सकें। इस विशाल और शक्तिशाली हिन्दू समाज को धूर्ततापूर्ण राष्ट्र विरोधी और समाज विरोधी आन्तरिक तत्वो और बाह्य शत्रुभाव रखने वालों ने एक दम खोखला और जर्जर बना दिया है।

हमारे सविधान के निर्माताओं ने गौ और गोवश की हत्या पर प्रतिबंध लगाने की व्यवस्था की है, परन्तु कितने दुर्भाग्य की बात है कि आज तक भी इस पर अमल नही किया गया। हमारी श्रद्धा और पूजा के स्थान-यथा अयोध्या मे श्रीराम जन्म-भूमि, मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि और वाराणासी का काशीविश्वनाथ मदिर आज भी उसी स्थिति में है जिस स्थिति में उसे 400 वर्ष पूर्व विदेशी मुस्लिम आक्रमण-कारियों ने हिन्दूओ को अपमानित करने के लिए पहुंचा दिया था। पिछड़े क्षेत्रों में गरीब और दलित हिन्दूओं को प्रलोभन कर उन्हें अन्य धर्मों में दीक्षित करने के लिए विदेशी धन बड़ी मात्रा में बेरोकटोक आ रहा है। इस प्रकार के धन और धर्मान्तरण को रोकने के लिए कोई कानूनी प्रतिबंध नही लगया गया है। इस विदेशी धन से देश मे राष्ट्र विरोधियों, अधार्मिक और मित्र के रूप में शत्रुओं का निर्माण हो रहा है।

इस अपमानजनक और दयनीय दशा का मुख्य कारण यह है कि हमने कभी सामूहिक रूप से हिन्दू हितों की रक्षा के लिए चिन्तन नहीं किया। अब समय आ गया है जब हमें जाति, पन्थ, मत-सम्प्रदाय, भाषा और क्षेत्रीयता आदि की संकुचित भावनाओं से ऊपर उठकर भविष्य के बारे में विचार करना चाहिये और देश की बागडोर संभालने वाली संसद और विधान सभाओं में ऐसे प्रतिनिधियों को भेजना चाहिये जो चरित्रवान हैं, आचार और नैतिकता के मूल सिद्धान्तों में आस्था रखने वाले हैं, जिनका देश और धर्मशास्त्रों के प्रति भक्तिभाव है और जो जीवन के उच्च मूल्यों के समर्थक हैं।

—स्वामी चिन्मयानन्द

तूफान के दौर से—पंजाब

पुस्तक मेरी दृष्टि में

अ० भा० सम्पादक सम्मेलन के पूर्व-अध्यक्ष, दैनिक प्रताप के संचालक-सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान, प्रसिद्ध आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी ने पुस्तक के सम्बन्ध में 'आर्य मर्यादा' में तीन सम्पादकीय लेख लिखे हैं। इनका संक्षिप्त रूप यहां दिया जा रहा है।

आर्यसमाज का यह सौभाग्य है कि उसमें कई उच्चकोटि के लेखक और बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं। उनमें कई तो विख्यात लेखक भी हैं। जब यह कोई पुस्तक लिखते हैं तो केवल पैसा कमाने के लिए नहीं, अपितु जिस विषय पर वे पुस्तक लिखते हैं उस विषय की वास्तविकता जनता के सामने लाने के लिए लिखते हैं। आर्यसमाज के ऐसे ही लेखकों में एक वरिष्ठ पत्रकार श्री क्षितीश जी वेदालंकार भी हैं। देश की पत्रकारिता में उनका एक विशेष स्थान है और उन्होंने इस समय तक लगभग २० पुस्तकें लिखी हैं। जो उनकी नई पुस्तक प्रकाशित हुई है उसका नाम है—"तूफान के दौर से...पंजाब"। पंजाब की वर्तमान स्थिति पर इस प्रकार की पुस्तक इससे पहले जनता के सामने नहीं आयी। मैं इसकी कुछ विशेषताएं पाठकों के सामने रखना चाहता हूं।

पंजाब में पिछले तीन वर्षों में जो कुछ हुआ है उसके विषय में कई पुस्तकें लिखी गई हैं। अधिकतर अंग्रेजी मे। यदि मेरा अनुमान ठीक है तो जो पुस्तक श्री क्षितीश वेदालंकार ने लिखी है, वह हिन्दी में इस विषय पर पहली पुस्तक है। जो व्यक्ति अंग्रेजी में लिखते हैं, उनमें प्राय: वे भी होते हैं, जो पहले ही अपना एक निश्चित मन बना लेते हैं और उसके आधार पर पुस्तक लिखते हैं। क्षितीशजी ने जो पुस्तक लिखी है उसमें उन्होंने न केवल पंजाब की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार प्रकट किये हैं, अपितु सिख पंथ का इतिहास और वर्तमान की पृष्ठ भूमि भी प्रस्तुत की है। इस पुस्तक का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इसे पढ़ने के पश्चात् यह स्पष्ट रूप में पता चल जाता है कि जो कुछ आज कल पंजाब में हो रहा है और जो आन्दोलन अकालियों ने प्रारम्भ किया था उसका क्या कारण था, उसका आधार क्या था और इस आंदोलन के द्वारा अकाली क्या कुछ प्राप्त करना चाहते थे। क्षितीश जी ने सिख सम्प्रदाय का जो इतिहास दिया है और गुरु साहेबान ने समय-समय पर अपने जो विचार प्रकट किये हैं, उनसे पता चल जाता है कि किस प्रकार अकाली पथ भ्रष्ट हो गये हैं। मैं चाहता हूं कि अधिक से अधिक व्यक्ति क्षितीश जी की इस पुस्तक को पढ़ें, ताकि वर्तमान आंदोलन की सारी पृष्ट भूमि का पता चल जाये और जो कुछ आज किया जा रहा है, उसका कारण भी पता चल जाये।

यज्ञ का महत्व

एक बात पर क्षितीश जी ने अपनी पुस्तक में बहुत अधिक जोर दिया है, वह यह है कि गुरु साहेबान हिन्दू धर्म के विरोधी न थे, अपितु उनमें से कइयों ने कई ऐसी बातें कही थी, जो एक प्रकार से हमारा समर्थन करती थीं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने नैना देवी में चार मास का एक यज्ञ करवाया था। यज्ञ का क्या महत्व है। वह गुरु गोविन्द सिंह जी के शब्दों में पन्थ प्रकाश में प्रकाशित हुआ था। वहां से क्षितीशजी ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किया है। उसके अनुसार "जो हमारे धर्म का सार है और नृप, मुनि अवतार जिस धर्म का पालन करते आये है, उसीका पालन हम भी करना चाहते हैं, जिससे सारी सृष्टि सुखी हो। एक तो आज-कल भारी दुर्भिक्ष पड़ रहा है, वर्षा हो नहीं रही। दूसरे देश भर में महामारी भी फैल रही है, तीसरे नर-नारी अपने धर्म को भी भूलते जा रहे हैं। सब लोग पाप कर्मों मे लगे हैं, इसलिए अभागे हैं। यज्ञ हवन आदि जितने सुकृत हैं, उन्हें तुर्क हाकिम करने नहीं देते। हम जब यज्ञ हवन करेंगे, तब बादल खूब बरसेंगे। दुर्भिक्ष नष्ट होगा। खूब अन्न उपजेगा। धरती से नाना-रसों की वनस्पतियां पैदा होंगी। वायु मण्डल शुद्ध होगा और रोग-शोक सब दूर हो जायेंगे। अविद्या नष्ट होगी। शूर-वीरता प्रकट होगी। जितने वर्णाश्रमी जन हैं, वे सब इस समय भेड़-बकरियों के समान कायर हो रहे हैं, वे इस दुर्बलता के कारण बलवान तुर्कों का मुकाबला नहीं कर पाते। जब इस यज्ञ की सुगन्धित पवन उन्हें लगेगी, तब वे भी शेरों जैसे साहसी बन जायेंगे। उनमें शूरवीरता समा जाएगी और वे अपने पुरातन आर्य धर्म पर दृढ़ हो जायेंगे। उनके शरीर निरोग बनेंगे। सदा सुख देने वाली विजय और ज्ञान उन्हें प्राप्त होगा। निर्भयता तथा अन्य दैवी गुण उनमें प्रकट होंगे, सब उनके बालक भी भाग्यवान् होंगे और शीतला आदि रोग नष्ट हो जायेंगे। काम-क्रोध आदि जितनी आसुरी सम्पदा है वे यज्ञ हवन को देखकर ही कांपती हैं। जितने सत्य आदि उत्तम गुण हैं और जिनका वेदों में वर्णन है, वे सब विधिवत यज्ञ हवन करने से यज्ञमय व्यवहार में आने लगते हैं।"

इसी प्रकार 'नानक प्रकाश' में लिखा है कि गुरु नानक के समय मुगल सत्ता ने कैसा अन्धेर मचा रखा था, इसका वर्णन इस प्रकार किया है:

"सैयद शेख मुगल पठान,
जालिम भये सभी बलवान्।
हिन्दुअन को दुख देत महाय,
देवन के मन्दिर गिरवाय।"

खालसा पन्थ क्यों ?

यह पुस्तक लिख कर श्री क्षितीश वेदालंकार ने अपने देश और समाज की बड़ी भारी सेवा की है। मैं तो यह भी कहूंगा कि उन्होंने सिखों की भी बड़ी सेवा की है। क्योंकि सिखों में इस समय जो भ्रन्तियां हिन्दू धर्म व जाति के विषय में पैदा की जा रही हैं, इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् वे भ्रान्तियां नहीं रह सकतीं। वास्तविक स्थिति क्या है, इसका आज तक किसी ने पता लगाने का प्रयास नहीं किया। क्षितीश जी ने एक नई बात इस पुस्तक में हमारे सामने रखी है। वह यह कि सिख समाज में एक प्रकार का विरोधाभास उत्पन्न हो गया। गुरु नानक के सिख धर्म और गुरु गोविन्द सिंह के खालसा पन्थ मे क्या अन्तर है ? इसे किसी ने समझने का प्रयास नहीं किया। गुरु नानक ने सिखों को भक्ति मार्ग पर डाला था। इसलिए उनका धर्म मूलत: बाह्य धार्मिक चिन्हों के विरुद्ध है, यहां तक कि शिखा और यज्ञोपवीत को भी वे महत्व नहीं देते। आरती और घण्टे-घण्डियाल तथा तीर्थाटन और श्राद्ध-तर्पण को भी धर्म का अंग नही मानते। दूसरी ओर जहां गुरु गोविन्दसिंह के खालसा पन्थ का सम्बन्ध है, गुरु जी ने अपने समय में मुगल बादशाहों के द्वारा हिंदुओं पर जो अत्याचार हो रहे थे उसके विरुद्ध लड़ने के लिए खालसा पन्थ तैयार किया था। वे यह समझते थे कि केवल भक्ति मार्ग से काम न चलेगा। जिन के साथ हमारा मुकाबला है वे हमारे धर्म को नष्ट करना चाहते हैं इसीलिए उनके विरुद्ध तलवार उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने जो कुछ भी किया था अपने धर्म की रक्षा के लिए ही किया था और उन्होंने जो खालसा पन्थ बनाया था उसमें उन्होंने पहले दिन जिन पांच प्यारों को सम्मिलित किया था, वे सब हिन्दू ही थे और यह सिर्फ इसलिए कि मुगल बादशाहो ने हिन्दुओं के विरुद्ध जो अभियान प्रारम्भ कर रखा था उसका उत्तर देने के लिए उस समय केवल हिन्दू ही थे, क्योंकि खालसा पन्थ का जन्म न हुआ था। उस समय की क्या परिस्थितियां थीं, इसका वर्णन भी क्षितीश जी ने अपनी पुस्तक में किया है और इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि श्री गुरु गोविन्दसिंह जी को खालसा पन्थ क्यों प्रारम्भ करना पड़ा ? उन दिनों फर्रुखसियर नाम का एक मुगल तानाशाह राज्य किया करता था। उसने एक बार हिन्दुओं और सिखों के विरुद्ध जो आदेश जारी किया था उसमें लिखा गया था—

१ पंजाब का कोई हिन्दू लम्बे केश या दाढ़ी नहीं रख सकता। केश या दाढ़ी कटवाने से इन्कारी पर हिन्दू को तुरन्त जान से मारा जा सकेगा।

२. किसी सिखकी सूचना देने पर ५ रुपये, गिरफ्तारी में सहायता देने पर १५ रुपये, सिर काट लाने पर २५ रुपये, इनाम दिया जायेगा।

३, इससे अधिक सेवा करने पर सहयोगियों को जागीरें दी जाएंगी।

४. किसी सिख को अपनी छत के नीचे शरण देने वाले को अपराधी माना जाएगा और वह कठोर दण्ड का भागी होगा।

ये थी वे परिस्थितियां जिनमें श्री गुरु गोविन्द जी ने खालसा पन्थ सजाया था। परन्तु आज हमारे कुछ भाई उसे दूसरी तरफ ले जा रहे हैं।

आर्यसमाज पर मिथ्या आरोप

कई सिखों दूसरे व्यक्तियों की ओर से आर्य समाज पर यह आरोप लगाया जाता है कि उसने सिखों को हिन्दुओं से अलग किया है। इस सन्दर्भ मे जो कुछ सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्री गुरु नानकदेव और श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के विषय मे लिखा है उसकी भी चर्चा होती है और कई लोग उसे ही आधार बनाकर आर्य समाज पर यह आरोप लगाते हैं कि उसने हिन्दुओं और सिखों के बीच एक खाई पैदा की है। हमें श्री क्षितीश जी का आभारी होना चाहिए कि उन्होने अपनी इस पुस्तक में इस षड्यन्त्र का अनावरण कर दिया है और कुछ ऐसे ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत किये हैं जिन्हें पढ़कर पता चल जाता है कि वास्तविक स्थिति क्या है ? अंग्रेजों ने किस प्रकार हिन्दुओं और सिखों में फूट डालने का प्रयास किया था। इसका वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है कि मैकालिफ नाम के एक आई. सी. एस. अंग्रेज अधिकारी के जिम्मे यह काम लगाया गया था कि वह सिख धर्म का अनुसन्धान करके उनका इतिहास लिखे। इस पर उसने बहुत परिश्रम करके छ: खण्डों मे सिख धर्म नाम का एक ग्रन्थ लिखा। सिख बुद्धिजीवी इसे सिख धर्म के इतिहास का सर्वश्रेष्ठ शोध ग्रन्थ मानते हैं। मैकालिफ के कहने से ही एक सिख विद्वान् श्री काहनसिंह ने सबसे पहले १८७८ में 'हम हिन्दु नहीं' नाम की एक पुस्तक लिखी थी। इसके पश्चात् उस समय की अंग्रेज सरकार की नीति में भी परिवर्तन आ गया था और उसकी ओर से सिखों को न केवल संरक्षण मिलने लगा, अपितु प्रत्येक प्रकार का प्रोत्साहन भी दिया जाने लगा। एक अंग्रेज अधिकारी ने एक पत्रिका 'फोर्ट नाईटली रिव्यू, के सितम्बर १९२३ के अंक मे अपने एक लेख द्वारा प्रकाश डालते हुए लिखा था—

अंग्रेजों की कृपा

"गदर के तुरन्त पश्चात् जब ब्रिटिश सेना में सिखो की अबाध भर्ती का सिलसिला चला तो अधिकारियों ने सिख धर्म की अनेक अच्छाइयों को ढूंढ निकाला। गुरु गोविन्दसिंह ने खालसा पन्थ का

(शेष पृष्ठ २२ पर)

आर्यसमाज के मंत्री श्री गंगादास ग्रोवर मुख्य अतिथि मेजर जनरल पी०सी० कोछड़ का स्वागत कर रहे हैं

प्राप्त राशि का विवरण—

श्रीमती सत्यवती चड्ढा १०० रु०, श्रीमती पी० सी० अग्रवाल १००० रु०, श्रीभोलानाथ धौन १०००रु०, कर्नल जी० सी० वर्मा १००१ रु०, श्रीमती राधा-गुप्ता १००० रु०, श्रीमती सुशीला भाटिया १००१ रु०, श्री एम० एम० मरवाह ५०१ रु०, श्री पी० के० अखबार ११०० रु०, श्री आर० डी० तनेजा ५०१ रु० श्री सुरेन्द्र बहल ५०१ रु० श्री कान्सीराम पख्शी १००१ रु०, श्री आर्यमुनि कश्यप ५०१ रु०, श्री ओ०पी० पुरी ११०० रु०, श्री पी०सी० गुप्ता १००१ रु०, श्री एस० आर, गुप्ता ११००रु०, मेजर जनरल पी० सी० कोछड़ ११०० रु०, श्री बी० एस० बेदी १०१ रु०, श्री जयगोपाल भाटिया १००१ रु० श्री आत्म प्रकाश ५०१ रु०, श्री बी० एस० जाली ५०१ रु०, श्री बी० एल० भाटिया ५०१ रु०, श्रीमती भाटिया १००१ रु०, श्री डी० आर० कोहली १००१ रु०, श्री एस०एस० खेर ११००रु. श्री के० सी० मेहरा १०१ रु०, श्री आर० के० ५०१ रु०, डा० श्रीमती तनेजा २५०१ रु०, श्री यू० एस० गुप्ता ५०१ रु०, श्री ओ० पी० आहूजा १०.००० रु० श्रीमती शांति प्रकाश बहल १००० रु०, श्री महेन्द्र प्रताप १००० रु०, पं० सत्य-देव भारद्वाज १;२५,००० रु०, श्रीमती सुशीला खन्ना ५१ रु० श्रीमती विद्यावती खन्ना १००० रु० श्री मूलराज नारंग ५० रु०, श्रीमती छाबड़ा १०० रु०, डा० श्रीमती ढींगड़ा ११ रु० तथा श्री सोमनाथ नारंग १०१ रु०।

(पृष्ठ २३ भी देखें)

प्रा० धर्मवीर की महा-राष्ट्र प्रचार यात्रा

नांदेड़ (महाराष्ट्र) : आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के आमंत्रण पर दयानन्द कालेज अजमेर के संस्कृत विभागाध्यक्ष युवाआर्य पत्रकार प्रा० धर्मवीर ने सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री बाबूसाहब बाघमारे तथा 'वैदिक गर्जना' पाक्षिक के सम्पादक के साथ नांदेड़ से व्यापक महा-राष्ट्र प्रचार अभियान चलाया। देगलूर, उदगीर, लातूर, औरादशाहजनी, निलंगा, परली, किल्लेधारुर, जालना, औरंगाबाद, देवलाली कैम्प एवं सान्ताक्रुज, बुहू, काक-इवाड़ी आदि स्थानों पर भी प्रचार सभाओं व आर्यवीर दल के समारोह को उन्होंने संबोधित करके नयी चेतना पैदा की।

ममता स्मृति ग्रंथमाला के संचालक दिवंगत

दिल्ली : आर्य प्रकाश पुस्तकालय एवं ममता स्मृति ग्रंथमाला के संचालक श्री किशनचंद आर्य की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। केंद्रीय आर्य युवक परिषद ने उनकी स्मृति में उनकी कुछ चुनी हुई पुस्तकें आर्य पुस्तक विक्रेताओं, प्रचारकों व समाज अधिकारियों को व्यक्तिगत सम्पर्क पर 35% छूट पर देने का निर्णय लिया है।

अकाल निवारण यज्ञ

ताड़ीखेत (उ०प्र०) : समाज मंदिर में महात्मा भक्तमुनि की अध्यक्षता व पं० प्रेम देव शर्मा के ब्रह्मात्व में अफ्रीका निवारण यज्ञ हुआ। महाद्वीप के विभिन्न अकाल ग्रस्त क्षेत्रों की दिवंगत आत्माओं की शांति व अकाल निवारण हेतु स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने प्रभु से प्रार्थना की।

दिन में विवाह

अल्मोड़ा (उ०प्र०) प्रख्यात आर्य-समाजी श्री पूरनसिंह के आ० देवेन्द्र व सौ० गीता सुपुत्री श्री शेरसिंह का वैदिक विवाह डा० जयदत्त शास्त्री के पौरोहित में सम्पन्न हुआ। स्वामी, गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने वर वधू को आशीर्वाद तथा वेद प्रचार की प्रेरणा दी।

एक अन्य आयोजन में सौ० चन्द्रा-आ० शिवलाल का सूर्य विवाह संस्कार पं० रामदत्त पांडेय व पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। दोनों ही संस्कार दिन में (सूर्यविवाह) हुए तथा स्वामी गुरुकुलानन्द ने बिजली-बचत व शुद्ध वातावरण की दृष्टि से इस पद्धति की प्रशंसा की।

पुस्तक मेरी दृष्टि में

(पृष्ठ २१ का शेष)

गठन करते समय जिन कर्म काण्डों को अपनाया था, उनका आँख बन्द कर सिख रेजिमेंट में पालन होने लगा। प्रत्येक सिख सैनिक के साथ ऐसा व्यवहार होने लगा मानो वह एक साधारण किसान की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है। उसे समझाया गया कि हिन्दुओं से उसका किंचित भी साम्य नहीं है, अत: उसे रेजिमेंट में अपनी मूल जाति को भुला देना चाहिए। प्रत्येक रेजिमेंट को एक ग्रन्थी दिया जाता था। उसकी देख-रेख में नए रंगरूटों को बड़ी गम्भीर वातावरण में विशुद्ध और पुरातन विधि से खालसा पन्थ की दीक्षा दी जाती थी। इस प्रकार पवित्र ग्रंथ साहब के प्रति अत्यधिक श्रद्धा का प्रदर्शन किया जाता था। जब ग्रन्थ साहेब की सवारी निकालती थी तब सब अंग्रेज सेना अधिकारी सावधान की स्थिति में खड़े होकर ग्रन्थ साहेब को सलामी देते थे। सिख सैनिकों का वह 'वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह' के उच्चारण से अभिवादन करते थे। परिणामत: जब प्रत्येक सिख सैनिक सेना से निवृत्त होने पर अपने गांव लौटता था तो एक कट्टर सिख बनकर जाता था और तत्पश्चात् हिन्दू धर्म के स्खलनशील वाता-वरण से आवृत होने पर भी वह सिख धर्म की मशाल को प्रज्ज्वलित रखता था।"

जो कुछ ऊपर लिखा गया है उससे सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है, विशेष-कर यह कि सिखों को हिन्दुओं से अलग करने या दूर ले जाने का उत्तरदायित्व आर्य समाज पर नहीं है। इस सन्दर्भ में हमें यह भी न भूलना चाहिए कि १८५७ के विद्रोह में सिखों ने अंग्रेजों का साथ दिया था। उसके पश्चात् अंग्रेज ने यह निश्चय मत बना लिया था कि सारे देश में सिखों का ही एक ऐसा सम्प्रदाय है जिस पर वह विश्वास कर सकता है। इसलिए सिखों को उभारने और उन्हें हिन्दुओं से दूर ले जाने का एक विधिवत् अभियान प्रारम्भ कर दिया गया।

श्री क्षितीश वेदालंकार ने अपनी पुस्तक में जो कुछ लिखा है उसमें न केवल पंजाब का पिछला और वर्तमान इतिहास दिया है, इस पुस्तक को पढ़कर हम कुछ भविष्य के विषय में भी अनुमान लगा सकते हैं। यह एक ऐतिहासिक पुस्तक है जिसे पढ़ने के पश्चात् पंजाब की वर्तमान स्थिति स्पष्ट हो जाती है और यह पता चल जाता है कि यहां जो कुछ हो रहा है वह क्यों हो रहा है?

श्री क्षितीश वेदालंकार ने आर्यसमाज की, हिन्दू जाति की और अपने देश की बहुत बड़ी सेवा की है। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय में रखी जानी चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति जो पंजाब की वर्तमान स्थितियों को समझना चाहता है उसे इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

सान्ताक्रुज में शुद्धि

बम्बई : सान्ताक्रुज समाज में शब-नम रंगवाला (मुस्लिम), एवं गेराल्ड टेलीस (इसाई) तथा कु० परीन खोजा (मुस्लिम) तीन युवतियों को शुद्धि के पश्चात् वदिक धर्म की दीक्षा दी गयी। उपस्थित आर्यजनों ने तीनों युवतियों का सोल्लास स्वागत किया।

सिखों को मुसलमान बनाने का विरोध

कानपुर (उ०प्र०) : केंद्रीय आर्य सभा व जिला प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने बम्बई व कलकत्ता के कुछ मुस्लिम अखबारों में सिखों को इस्लाम में आकार अपनी रक्षा करने के प्रकाशित विज्ञापनों पर हिन्दू समाज को सजग रहकर अपने अभिन्न अंग सिखों की रक्षा हेतु आह्वान किया।

—दिल्ली : आर्य समाज बाजार सीताराम में २३ दिसम्बर को पं हरिशरण सिद्धान्तालंकार का प्रभावी उपदेश कार्य क्रम आयोजित किया गया।

हरिजन बस्ती में वेद प्रचार

कानपुर (उ०प्र०) : गोविन्द नगर स्थित कच्ची झोंपड़ी हरिजन बस्ती में आर्य उप-प्रतिनिधि सभा ने वेद-प्रचार कार्यक्रम-आयोजित किया। वेद यज्ञ से प्रारंभ कार्यक्रम को सर्व श्री देवीदास आर्य, पं० रघुराज शास्त्री, सन्तराम सिंहल्सेगर आदि आर्य-प्रवक्ताओं ने संबोधित करके यज्ञ के लाभ, वैदिक संस्कृति की विशेष-ताओं तथा जात-पांत के अभिशाप पर प्रकाश डाला।

प्रशान्त विहार में आर्यसमाज

दिल्ली : जन-समाज में बढ़ते पर्याव-रण व नैतिक प्रदूषण को रोकने की दृष्टि से प्रशान्त विहार में आर्य समाज की स्थापना हुई है। प्रारंभिक कार्यक्रम के रूप में क्षेत्र में प्रति रविवार घरों में वैदिक यज्ञ व प्रवचन सत्संग की शुरूआत की गयी है। समाज के पंजीकरण व भवन के लिये भूमि क्रय आदि कार्यों के लिये आर्यजनों से सदस्य बन कर तन-मन-धन से सहयोग की अपील की गयी है। डी० पी० कालड़ा, मंत्री,

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश में डेटल क्लिनिक का उद्घाटन

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश में धर्मार्थ डिस्पेसरी के विस्तार के रूप में डेण्टल क्लिनिक के उद्घाटन के अवसर पर लिया गया चित्र। चित्र मे आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी के अलावा आर्मी डेन्टल कोर निदेशक मे० ज०पी० सी० कोछड़, श्रीमती सहाय जिनके पति की स्मृति मे क्लिनिक खुला, श्री सत्यदेव भारद्वाजवेदालकार जिन्होंने इस अवसर पर सवा लाख रु० दान दिया, तथा समाज में अन्य विशिष्ट जन दिखाई दे रहे है।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश बहल और आर्य प्रादेशिक सभा के महामंत्री रामनाथ सहगल

डेटल क्लिनिक के लिए आवश्यक मशीने प्रदान करने वाली श्रीमती सतीश सहाय का पुष्पमाला से स्वागत कर रही हैं श्रीमती भारद्वाज
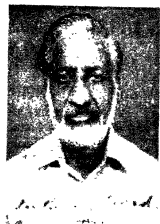
डा० के० जी० एस० नन्द जो डिस्पेंसरी के आदि प्रेरणा स्रोत हैं और अब भी उनके अनुभवों का प्रेरणादायक परामर्श निरन्तर मिलता रहता है।

बी० डी० सहाय मेमोरियल डेटल क्लीनिक भी प्रारभ हुआ है जिसके लिये डा० वी० के सहगल के सुझाव पर श्रीमती सतीश सहाय ने अपने दिवंगत पति की स्मृति मे बहुमूल्य मशीनें दान की।

पिछले दिनो औषधालय भवन के विस्तार की अपील पर कुछ उदारमना आर्यजनो ने तत्काल नकद राशियां प्रदान की। ग्रेटर कैलाश निवासी श्री हर भगवान व श्री रामसरण चौधरी ने दो कमरे, श्री टी० आर तुली ने एक कमरा, श्री खुशाहालचन्द मल्होत्रा ने एक कमरा बनवाने तथा श्री बी० आर० ढल्ला ने तन-मन-धन से सहायता का वचन दिया। इस शुभ कार्य मे निम्न पते पर अपना सहयोग चैक—ड्राफ्ट मनीआर्डर द्वारा इस पते पर भेजने की अपील की गयी—कोषाध्यक्ष, महर्षि दयानन्द धर्मार्थ औषधालय, आर्यसमाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली-४८।

आर्यसमाज ग्रेटरकैलाश का वार्षिकोत्सव

दिल्ली : आर्यसमाज ग्रेटर-कैलाश ने ९ से १० दिसम्बर तक अपना वार्षिकोत्सव मनाया। इसके पूर्व २५ नवम्बर से २ दिसम्बर तक यहा रोज हर ब्लाक मे प्रभात फेरिया निकलीं। ३ से ६ दिसम्बर तक प्रतिदिन प्रातः पं० वेदकुमार वेदालंकार के ब्रह्मत्व में अथर्ववेदीय महायज्ञ तथा सायं पं० सत्यदेव स्नातक के भजनोपदेश तथा श्री पुरुषोत्तम एम० ए० की कथा का आयोजन रहा। पूर्णाहुति महात्मा रामकिशोर के ब्रह्मत्व में अर्पित की गयी।

अन्य कार्यक्रमों में पं० सत्यदेव भारद्वाज द्वारा ध्वजारोहण व सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, स्वामी मुनीश्वरानन्द की अध्यक्षता में रामायण सम्मेलन, पं० श्यामसुन्दर की अध्यक्षता मे गांधर्व महाविद्यालय के कलाकारों द्वारा संगीत सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, तथा डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल व चन्द्र आर्य विद्यामंदिर के छात्रछात्राओं के आकर्षक संस्कृतिक प्रदर्शन उल्लेख्य रहे। रक्षा सम्मेलन को श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री विजय कुमार मलहोत्रा तथा श्री सूर्यदेव आदि ने संबोधित किया।

आर्यसमाज जन-कल्याण की दृष्टि से पैथोलॉजी विभाग, फिजियोथेरापी व ई० सी० जी० सुविधा युक्त दयानन्द धर्मार्थ औषधालय चला रहा है। इसमें विभिन्न निश्चित दिनों पर विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परीक्षण की सुविधा भी उपलब्ध है। गुरुकुल कागडी के आयुर्वेदालकार पं० श्यामसुन्दर स्नातक के संचालन मे धर्मार्थ आयुर्वेदिक चिकित्सालय भी कार्यरत है। इसमें इसी माह के प्रारंभ में ले० कर्नल

यू० १०३/१०८ लायसस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सी० (४०१)

टंकारा ऋषि मेले पर रेल द्वारा जाने वाले यात्रियों के लिए आवश्यक सूचना

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से १६-१७-१८ फरवरी, १९८५ को महर्षि दयानन्द के जन्म-स्थान टंकारा में मनाये जाने वाले ऋषि मेले के लिए स्पेशल रेलगाड़ी नहीं मिल पा रही है। इसलिए जो यात्री रेल द्वारा टंकारा जाना चाहते है वे अपनी सीट राजकोट अथवा मोरवी तक बुक करवा लें। राजकोट और मोरवी से टंकारा लगभग २० मील की दूरी पर स्थित है। दोनो स्थानों से हर आधे घंटे बाद टंकारा के लिए बस मिलती है। जो यात्री वापसी का टिकट बुक करवाना चाहें, उनसे प्रार्थना है कि वे टंकारा ट्रस्ट के कार्यालय को राशि भेजकर अपनी वापसी की सीट बुक करवा सकते है ताकि उन्हें वापिस आने में कोई कठिनाई न हो। आप टंकारा ट्रस्ट का उतनी राशि भेजे जितनी राशि आपने अपने नगर से राजकोट या मोरवी के लिए सीट बुक करवाने में खर्च की हो। जो ऋषि भक्त दिल्ली से राज कोट और राजकोट से दिल्ली तक के लिए सीट बुक करवाना चाहें वे १५-१-८५ तक टंकारा सहायक समिति, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली को २००/- रु० भेज दे। उनकी आने-जाने की सीट का प्रबन्ध कर दिया जायेगा।

टंकारा में टंकारा ट्रस्ट की ओर से वहां रहने तथा भोजन का प्रबंध निश्शुल्क किया जायेगा। टंकारा ट्रस्ट, टंकारा का पता :—"महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, पिन-३६५६५० है।"

—मंत्री रामनाथ सहगल

भोपाल के गैसकाण्ड मे अनाथ हुए बच्चों की रक्षा

आर्य प्रादेशिक सभा का निश्चय

नई दिल्ली : आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा व डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी की बैठक मे भोपाल गैसकाण्ड के अनाथ बालकों को विभिन्न अनाथालयों (विशेषत: आर्य अनाथालय फिरोजपुर) तथा गुरुकुलो मे रखने का निर्णय हुआ। शीघ्र ही सार्वदेशिक सभा का एक शिष्टमण्डल संबंधित अधिकारियों से इस विषय पर तथा हताहत जनों की सेवा व्यवस्था पर बात करने भोपाल जायेगा। सभी समाजो, डी० ए० वी० संस्थाओ से चैक/ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा आर्य प्रा० प्र० सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर सेवा कार्य हेतु मुक्तहस्त धन प्रेषित करने की अपील की गयी है।

पीड़ित सिख छात्रों और विधवाओं के लिए रियायतें

बोकारो के डी० ए० वी० संगठन का अभियान

बोकारो (बिहार) दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालिज की प्रबन्धकर्तृ समिति ने श्रीमती गांधी की जघन्य हत्या की हिंसक प्रतिक्रिया मे मरे या लुटे सिखों के पुत्र-पुत्रियों को नि:शुल्क पूरी किताबें व स्टेशनरी, आवश्यकता होने पर यूनीफार्म तथा फीस, बस भाड़ों की छूट की सुविधा देने का निर्णय किया है। इस उपद्रव मे विधवा हुई शिक्षित सिख महिलाओ को स्कूलो में अध्यापक रखा जायगा।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक-बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बने।—प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी।

तूफान के दौर से—पंजाब

इन्दिरा गांधी की हत्या के रहस्य का उद्घाटन
दूसरा परिवर्धित संस्करण छपकर तैयार

पहला संस्करण हाथों हाथ बिक गया।

पंजाब के हालात की सही और पूरी जानकारी देने वाली अपने ढंग की पहली पुस्तक

लेखक—
क्षितीश वेदालंकार

मूल्य—
सजिल्द-६८ रु०, अजिल्द-४८ रु०

प्राप्ति स्थान—आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

तुरन्त व्यवस्थापक चाहिए

ऋषि जन्मस्थान टंकारा में आर्यसमाजी विचारो का एक अनुभवी और कुशल व्यवस्थापक चाहिए। भोजन, निवास, उचित वेतन और अन्य सुविधाएं कोई रिटायर्ड सज्जन अपनी फ्री सेवा देना चाहें तो सहर्ष स्वागत है। तुरन्त सम्पर्क करें—मंत्री टंकारा ट्रस्ट, आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१

योग्य आर्य वर चाहिए

२३ वर्षीया, ५ फुट ३ इंच, एम० ए०, बी० एड०, स्वस्थ, सुन्दर, इकहरा बदन, रंग गेहुंआ, बसल गोत्रीय, गृहकार्य में निपुण, आर्य परिवार की कन्या के अनुरूप नितान्त शाकाहारी, धूम्रपानादि व्यसन रहित, आर्य विचार वाला योग्य वर चाहिए। प्रथम बार में ही फोटो सहित पूर्ण विवरण भेजें। विवाह शीघ्र पत्र व्यवहार का पता—मन्त्री आर्यसमाज, एफ ६३, सैक्टर १४, सोनीपत-१३१००१ (हरियाणा)

वर की आवश्यकता है

एक योग्य कन्या जिसकी आयु २३ वर्ष, कद ५ फुट अढाई इंच, रंग गोरा, बी० ए० पास, पोलिटेक्निक कोर्स एवं जे० बी० टी० कोर्स पास है पिता डिप्टी कमाण्डेण्ट सी० आर० पी० हैं। फौजी अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, बैंक अधिकारी, सिविल सर्विस वाला वर चाहिए। सम्पर्क करें :—आर० एन० शारदा, डिप्टी कमाण्डेण्ट, ४५-सी० आर० पी० बटालियन, मालवीय नगर, नई दिल्ली-1५ दूरभाष-६६२०४५।

सम्राट् : (हिन्दी मासिक)

सम्राट् * ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक सामग्री का मधुर कोष
सम्राट् * धर्म, अध्यात्म और योग का अद्भुत संगम
सम्राट् * ज्वलन्त समस्याओं पर सामयिक चिन्तन
सम्राट् * एक सुरुचिपूर्ण पारिवारिक पत्रिका

आज ही इसके वार्षिक/आजीवन सदस्य बनिए

मूल्य : एक प्रति ३.०० वार्षिक शुल्क : ३०.००

आजीवन शुल्क ३००.००

अपनी शुल्क राशि निम्न पते पर आज ही मनीआर्डर द्वारा भेजिए

चन्द्रमोहन शास्त्री—अध्यक्ष आर्य साहित्य अकादमी
७११७, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-११०००६
दूरभाष : ५१२१९३, ५१७६३

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

CHAPTER XLIII

MARY—1553 TO 1558

Mary, the daughter of Henry the Eighth, and of Catherine of Aragon, his first wife, was at Hunsdon when her brother died , but instead of going directly to London to be made queen, she went first to Norwich, for fear of the Duke of Northumberland, and afterwards to London, as you read in the last chapter

One of the very first things she did was to order the heads of the Duke of Northumberland and several other gentlemen to be cut off, for they had proved dangerous enemies to her She then offended the people by forbidding them to say their public prayers or to read the Bible in English ; she ordered all the clergymen to send away their wives, and she determined to restore the Roman Catholic worship

Many now began to be sorry that Mary was queen, and a number of people collected under the command of Sir Thomas Wyatt and the Duke of Suffolk, to try to drive Mary out, and release Lady Jane, for this was before she was put to death At one time Mary was in great danger, but Wyatt's men fell away from him, and he was taken and put to death

The queen, misled by her counsellors, was determined to be revenged on those who had been with Sir Thomas Wyatt. Besides beheading Lady Jane, as I have told you, she ordered the heads of the Duke of Suffolk and of many more gentlemen to be cut off, and stuck up the heads on poles all about the streets. She had fifty-two gentlemen hanged, all on the

same day, and the people called the day Black Monday She soon sent to fetch her sister Elizabeth from her house at Ashbridge, and on her coming to London sent her to the Tower For two months Elizabeth was kept close in prison, whilst her enemies strove hard to have her beheaded At last her friends prevailed, and she was sent to live at Hatfield

The next thing Mary did to offend the people of England was to marry the Spanish prince, who was soon after Philip the Second, King of Spain He was as ill-tempered and as cruel as the queen, and encouraged her in hating the Protestants, and in trying to make all the English people Roman Catholics again

The queen's cousin, Cardinal Pole, was soon sent from Rome by the Pope And one day Queen Mary and King Philip, with the nobles and commons, knelt before the Cardinal, and confessed the wickedness of England in casting off the power of the Pope So the Cardinal forgave them, and received England back to the Roman Church

The persons who helped Mary most in her cruelty were Gardiner, Bishop of Winchester, and Bishop Bonner These two men were the most cruel I ever heard of, and determined to burn everybody who would not agree with the queen in her religion

The first person Gardiner ordered to be burnt alive was one of the clergymen belonging to the great church of St Paul in London; his name was Rogers That good man would not do what he thought wrong towards God to please either Gardiner or the queen, so they sent him to the great square called Smithfield, and there had him tied to a stake, and a fire lighted all round him, so as to kill him As he was going along to be burnt, his wife and his ten little children met him, and kissed him, and took leave of him, for Gardiner

would not let them go to him while he kept him in prison before his death

The next was Dr Hooper, Bishop of Gloucester He died saying prayers, and preaching to the people round about him, and thanking God for giving him strength to speak the truth, and keep His commandments

Altogether, there were nearly three hundred men and women burnt by Queen Mary's orders ; but I will only tell you the names of three more, for I hate to write about such very unhappy doings.

You remember I mentioned Bishop Latimer among the good men who were Protestants He had come to be a very old man in Mary's reign ; but she would not spare him, but sent him with another bishop, a friend of his, as good and learned as himself, named Ridley, to Oxford, where they were burned together, only because they were Protestants

At last Mary determined to order the death of the wise and good Archbishop Cranmer He had always been very gentle and rather fearful, and he wrote to Mary, and tried by every means to get her to allow him to live They made him hope to be spared if he would give up his religion, and promise to be a Papist. As soon as he had been so weak as to do this, his enemies ordered him to be burned at Oxford When he was taken to be tied to the stake, he stretched out his right hand that it might burn first, because it had written through fear what he did not truly believe. He took off all his clothes but his shirt, as all those martyrs had to do, and with a cheerful countenance he began to praise God aloud, and to pray for pardon for the faults he might have committed during a long life. His patience in bearing the torment of burning, and his courage in dying, made all people love him as much as it made them hate the queen and Bonner.

Nothing did well in this queen's reign She went to war with France to please her husband the king of Spain, and in that war the French took Calais from the English, who had kept it ever since Edward the Third's reign *

Queen Mary died the same year in which she lost Calais, after being queen for only five years

* Little Arthur should look back, and read the story of the taking of Calais, and of the good Eustace de St Pierre

CHAPTER XLIV

ELIZABETH—1558 TO 1603

Queen Elizabeth's reign was so very long, and there are so many things in it to tell you about, that I am sure we must have three chapters about her, and you will find both good and bad in them, but after all you will think that her being queen was a very good thing for England

When Queen Mary died, Elizabeth was at Hatfield, where she stayed a little while, till some of the great and wise men belonging to the country went to her to advise her what she had best do for the good of England, and how she should begin At the end of a week she went to London

She was twenty-five years old, and very pleasant looking She was a good scholar in Latin, Greek, Italian, and some other languages, but she loved English above all.

The first thing Elizabeth and her wise counsellors did was to set free all the poor Protestants whom Queen Mary and Bishop Bonner had put in prison, and intended to burn. Then she allowed the Bible and prayers to be read in English

When Elizabeth rode through London to be crowned in Westminster Abbey, the citizens made all sorts of fine shows to do honour to a queen who had already been so good to the poor Protestants, and who wished to be good to all in England They hung beautiful silks and satins out at the windows like flags; they built fine wooden arches across the streets, which they dressed up with branches of trees and

flowers ; and just as the queen was riding under one of them, a boy beautifully dressed was let down by cords from the top, who gave the queen a beautiful Bible, and then he was drawn up again. Elizabeth took the Bible and kissed it, and pressed it to her bosom, and said it was a present she liked best of all the fine things the people had given her that day.

Afterwards she appointed Protestant bishops, and made a very good and earnest man, named Matthew Parker, Archbishop of Canterbury

Queen Elizabeth did not find it easy to undo all the mischief that Queen Mary had done ; but at last, with the help of her counsellors, England was at peace, and the people were settled, some on their lands, where they were beginning to sow more corn and make more gardens than they had done before, and some in different trades ; for the English learned to make a great many things at this time from strangers that came to live here

I will tell you why they came That cruel Philip the Second, King of Spain, who had been married to Queen Mary, was King over Flanders and Holland, as well as Spain. A great many of the people in those countries were Protestants ; but Philip wanted to make them Papists by force, and would have burnt them as Queen Mary did the Protestants in England But they got away from him, and, hearing that Queen Elizabeth was a friend to the Protestants, they came here. And as some of them were spinners and weavers, and others dyers, and so on, they began to work at their trades, and taught them to the English Since that time we have always been able to make woollen and linen cloths ourselves

So you see that King Philip, by being cruel, drove away useful people from his country, and Queen Elizabeth, by

being kind and just, got those useful people to do good to our own dear England

I must tell you a sad story of the worst thing that happened in Queen Elizabeth's time, in this chapter, because it has a great deal to do with the Protestants and Papists.

In the chapter about Edward the Sixth you read that there was a beautiful young Queen of Scotland, and that the English wished King Edward to marry her; but that she went to France, and married the young French king instead.

She was so very young when she first went, that her husband's mother kept her to teach along with her own little girls till she was old enough to be married; and I am sorry to say that she taught her to be worldly and deceitful.

Her name was Mary, and she was the most beautiful young queen in the world; and the old French queen, whose name was Catherine, taught her to love dress, and shows, and dancing, more than anything, although she was so clever that she might have learned all the good things that the beautiful Lady Jane Grey had learned

The young King of France died very soon, and then Mary, who is always called Queen of Scots, went home to Scotland If she had been wise, she might have done as much good as her cousin Queen Elizabeth did in England.

But she had been too long living in gaiety and amusement in France, to know what was best for her people; and instead of listening to good counsellors, as Elizabeth did, she would take advice from nobody but Frenchmen, or others who would dance and sing instead of minding serious things.

When she went away from Scotland all the people were Papists; but long before she got back, not only the people, but most of the great lords, were Protestants; and Mary was

very much vexed, and tried to make them all turn Papists again.

At last, there was a civil war in Scotland, between the Papists and Protestants, which did much mischief: at the end of it, the Protestants promised Mary to let her be a Papist, and have Papist clergymen for herself and the lords and ladies belonging to her house; and she promised that her children should be brought up as Protestants, and that the people should be allowed to worship God in the way they liked best.

Just before this war Mary had married her cousin, Henry Stuart, called Lord Darnley, who was very weak and wilful; but she liked him very much indeed for a little time, and they had a son called James. But soon afterwards Mary was much offended with Darnley, and showed great favour to Lord Bothwell. Not long afterwards Lord Bothwell murdered Darnley at the very time when Mary was giving a ball in her palace and was dancing merrily; and most people then thought that Mary had planned the wicked deed with Bothwell that she might be able to marry him.

And it turned out just as everybody expected; so you cannot wonder that most of those who were good were very angry indeed when they found that she chose to marry that wicked man three months after he had killed her poor husband.

Then there was another civil war, and Mary was put into prison in Loch Leven Castle, which stands on a little island in the middle of a lake. However, by the help of one of her friends she got out, and once more got her Papist advisers round her, who tried to make her queen again.

But the Scots would not allow it, and they made her little infant James their king, and made the lords Murray and

Morton, and some others, guardians for the little king and the kingdom

It would have been well for Queen Mary if she would have lived in Scotland quietly, and taken care of her little son herself. But her bad husband, Bothwell, had run away to save his own life, and Mary Queen of Scots chose to come to England, in hopes that Queen Elizabeth, her cousin, would help her to get the kingdom of Scotland again

I cannot tell you all the things that happened to Mary Queen of Scots in England But I must say that I wish she had never come She first of all seemed to want to make friends with Elizabeth, but all the time she was sending letters to the kings of France and Spain, to ask them to help her to get not only Scotland, but England for herself, and she promised one of the great English lords she would marry him, and make him king, if he would help her too.

She also sent to get the Pope's help, and promised that all the people in England and Scotland too should be Papists, and obey the Pope again, and send him a great deal of money every year, if she could only kill or drive away Queen Elizabeth

Now, Elizabeth's faithful friends and counsellors found out all these letters to the Pope and the kings of France and Spain, and they were so afraid lest any harm should happen to their good, useful Queen Elizabeth, that they kept Mary Queen of Scots in prison, sometimes in one great castle, sometimes in another

They allowed her to walk, and ride, and to have her ladies and other friends with her, and many people visited her at first. But when it was known that she really wished to make the English all Papists again, she was not allowed to see so many people

At last—I could almost cry when I tell you of it—the beautiful, and clever, and very unhappy Queen of Scots was ordered to be beheaded! She was in prison at Fotheringay Castle when Queen Elizabeth's cruel order to cut off her head was sent to her. The next day her steward and her ladies led her into the great hall of the castle, which was hung all round with black cloth In the middle of the hall there was a place raised above the floor, also covered with black. There her maids took off her veil, and she knelt down and laid her beautiful head on the block. It was cut off, and her servants took it and her body to bury

Mary had done many wicked things. she had tried to do much mischief in England But as she was not born in England, but was the queen of another country, neither Elizabeth nor her counsellors had any right either to keep her in prison, or to put her to death. They ought to have sent her, at the very first, safely to some other country, if they were really afraid she would do mischief in England.

This is a very bad thing: and I cannot make any excuse for Elizabeth I will only say that her old counsellors were so afraid lest Mary should prevail on the kings of France and Spain to help her to kill Elizabeth, and make the English all Papists again, that they wished Elizabeth to have ordered Mary's head to be taken off long before she really did so.

CHAPTER XLV

ELIZABETH—(*continued*)

It is quite pleasant, my little friend, to have to write a chapter for you, where I can tell you of all things going well for England, that dear country where God allows us to live, which He has given us to love, and to do all we can for.

When first Elizabeth became queen, her counsellors and the parliament, and the people, all asked her to marry, and promised to receive kindly anybody she should choose. And the King of Spain asked her to marry him, but she told him she would not marry him, because he had been her sister's husband; and she did not believe the Pope had power to allow her to marry one who had been her sister's husband. Then the old Queen of France, Catherine of Medicis, who had taught poor Mary Queen of Scots to be so foolish and cruel, wanted Queen Elizabeth to marry one of her sons. But Elizabeth did not like them any better than she did Philip, yet more than once she pretended she was going to marry one of them, for she wanted to be friends with France, and so make England strong and able to fight successfully against Spain Then some of the great English lords wanted to marry her But she knew that if she married one of them the others would be jealous, and, may be, would make a civil war in England, so she thanked the counsellors, and the Parliament, and the people, for their kindness, but said she would rather live single, as she had quite enough to do to govern the kingdom well, without being troubled with

marrying And she kept her word, and never married, and is always called the Maiden Queen

I told you long ago, that the first great sea-fight in which the English beat the French was in the reign of Edward the Third. Since that time the English ships had been very much improved , instead of only one mast, the largest had three, and instead of stones for the sailors to throw at their enemies, there were large and small guns to fight with. Then the sailors were as much improved as the ships. Instead of only sailing along by the land, and only going to sea in good weather, they made long voyages.

You know, in the reign of Queen Elizabeth's grandfather, I told you that some bold sailors had sailed so far as America Now Queen Elizabeth, who knew very well that the kings of France and Spain wanted to make war upon England, and drive her away, and oppress the Protestants, thought, like wise King Alfred, that the best way to defend England was to have plenty of ships and good seamen, and brave admirals and captains to command them , and so meet her enemies on the sea, and keep them from ever landing in England

I must tell you something about one or two of Queen Elizabeth's great admirals

Sir Francis Drake, the first man who ever sailed his ship round the whole world, was born in Devonshire, and went to sea at first with some other brave gentlemen to carry on a war against some towns which the Spaniards had built in South America This was very wrong, because private persons have no business to make war, and take towns, and make prisoners of the townspeople. Such things should only be done when there is a lawful war between two countries Then, indeed, every man must do his duty, and fight as well as he can for his own country and king If private gentlemen

were to go and take towns belonging to other countries, now, they would be called pirates, and they would be hanged

However, as Sir Francis Drake grew older, he left off making private war, became one of the queen's best admirals, and you will read more about him near the end of this chapter

When he made his grand voyage round the world, he sailed always from the East to the West He first went round Cape Horn, at the very South end of South America, where he saw great islands of ice as high as a large hill, and penguins and albatrosses swimming about them. Then he sailed to the Spice Islands, where he saw cloves and nutmegs grow, and birds of Paradise flying about in the air, and peacocks in the fields, and monkeys skipping from tree to tree in the woods Then he passed by the Cape of Good Hope, which is in the South part of Africa, where all the beautiful geraniums and heaths come from

Queen Elizabeth spoke to him kindly when he set out, and when he came back, after being three years at sea, she went and dined with him on board his own ship, and saw all the beautiful and curious things he had brought home with him.

Another great Admiral was Sir Martin Frobisher, who had been to the farthest parts of North America, and first saw all the land about Hudson's Bay, and those countries to the south of that bay, where the English not long afterwards built towns, and settled a great many free states, that you will read a great deal about some day.

In many things, the next admiral I will tell you about was a greater man than any of the rest His name was Sir Walter Raleigh , he was both a sailor and a soldier sometimes he commanded a ship, and sometimes he fought along with the army on shore.

The first time the queen took notice of him was one day that she was walking in London, and came to a splashy place just as Sir Walter was going by. As she was thinking how she could best step through the mud, Sir Walter took off a nice new cloak that he had on, and spread it on the dirt, so that the queen might walk over without wetting her shoes. She was very much pleased, and desired him to go to see her at her palace ; and as she found that he was very clever and very brave, she made him one of her chief admirals.

Queen Elizabeth used to behave to her brave admirals and generals, and her wise counsellors, and even to her great merchants, like a friend. She visited them in their houses, and talked to them cheerfully of her affairs. She took notice of even the poorest people, and she used to walk and ride about, so that all her subjects knew her and loved her. And now I am going to tell you a part of her history, which will show you how happy it was for her and for England that the people did love their good queen.

The King of Spain had never loved Elizabeth ; and he hated England, because the people were Protestants : and I am sure you remember how cruel he was, and bitter in his religion.

He made war against England, and thought that if he could land a great army on the coast, he might conquer all the country and drive away Elizabeth, and make the English all Papists again. He hoped this would be easy, because he was the richest king in the world, and had more ships and sailors and soldiers than any other. And he began to build more ships and to collect more sailors and soldiers ; and he made so sure he should conquer England, that I have heard he even had chains put on board the ships, to chain the English admirals when his people should take them

This fleet, that King Philip made ready to conquer England, was the largest that any king had ever sent to sea, and he called it the "Invincible Armada,"* because, he said, nobody could conquer it

But Queen Elizabeth heard in time that Philip was making ready this great navy, to bring as great an army to attack England She immediately told the Parliament and people of her danger She rode out herself to see her soldiers and her ships, and she said she trusted herself entirely to her good people. The people soon showed her they might be trusted: they came willingly to be sailors and soldiers; and the great lords gave money to pay the soldiers; and many gentlemen built ships, and bought guns, and gave them to the queen And she had soon a good fleet It was not so large as King Philip's indeed, and the ships were quite small compared with his; but the sailors belonging to it remembered that they were to fight for their own dear England, and for a queen whom they loved

The chief admiral was Lord Howard of Effingham, and to show how true Englishmen can be, and should be, when their country is in danger, although he was a Roman Catholic he was glad to fight for England against Spain. Under him were Lord Seymour, Sir Francis Drake, Sir John Hawkins, Sir Martin Frobisher, Sir Walter Raleigh, and several other lords and gentlemen.

The queen got ready herself to march to whatever place the Spaniards might land at She had a good army a little way from London, at Tilbury Fort, and she went there on horseback, and spoke to the soldiers, to give them courage

Oh, how anxious everybody in England was, when the news came that the great Armada was at sea, and sailing very

* Armada is the Spanish word for Navy
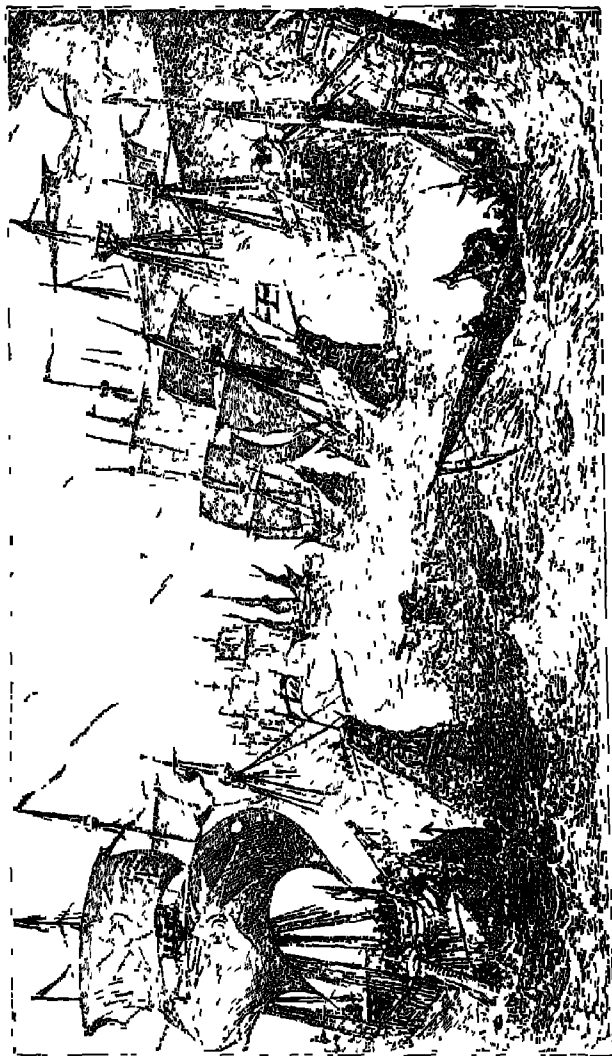
The Spanish Armada

near them ! but it pleased God to save England Soon after the Spanish fleet set sail a great storm arose, and many of the ships were so damaged that they could not come to England at all

Queen Elizabeth reviewing her army at Tilbury

When the others did come, Queen Elizabeth's fleet sailed out and followed them for a week up the English Channel, fighting and beating them all the way At last, in the Straits of Dover, the English admirals sent fire ships into the middle of the Armada, and the Spaniards sailed away in a fright , and

not one ship got to England to land Spanish soldiers Twelve of them were taken or destroyed; and another storm, greater than the first, sank a great many and wrecked others, so that of all Philip's great fleet and army, only one-third could get back to Spain, and they were so tired and so hurt that he never could get them together again to attack England, although in his hatred of our country he still hoped to do so.

Philip must have been very sorry that he began to make war against England, for the war lasted as long as he lived, and every year the English admirals used to take a good many of his ships; and one year Lord Essex, who was a great favourite of Queen Elizabeth's, landed in Spain, and took Cadiz, one of Philip's best towns, and burnt a great many ships that were in its harbour.

CHAPTER XLVI

ELIZABETH—(*continued*)

It is a long time since I mentioned Ireland to you You know that in the reign of King Henry the Second the English took a great part of it, and drove the old Irish away to the west side of the island.

Now the English, who settled in Ireland at that time, soon grew more like Irish than Englishmen, and they were as ready to quarrel with any new English that went to settle there as the old Irish had been to quarrel with them ; so poor Ireland had never been quiet. The different lords of the new Irish, and the kings of the old were always fighting, and then they sent to England sometimes to ask for help, and often to complain of one another. Then the kings of England used to send soldiers, with private captains, who very often fought whoever they met, instead of helping one side or the other , and these soldiers generally treated the unhappy Irish as ill as the Danes used to treat the English.

In Queen Elizabeth's time the miserable people in Ireland were never a day without some sad quarrel or fight in which many people were killed ; and though Ireland is a good country for corn and cattle, and all things useful, yet there was nothing to be had there but oatmeal ; the people lived like wild savages, and even a good many of the English that had settled there wore the coarse Irish dress, used bows and arrows, and let their hair grow filthy and matted, more like the wild old Britons you read of in the first chapter, than like Christian gentlemen

Ireland was strangely divided then ; there was the part where the old Irish lived in huts among bogs and mountains ; then the part with a few old castles that the first English settlers had built ; and then that part where fresh captains, who had come from time to time, had fixed themselves in forts and towns , and all these parts were constantly at war

Elizabeth, when she found how very ill Ireland was governed, wished to make it a little more like England, and to try to bring the people to live in peace. She sent a wise Governor there, called Sir Henry Sydney, and then another called Arthur Lord Grey de Wilton , but all that these good men could do was to keep the new English a little in order, and to try to do justice to the other people. By the queen's orders they set up schools, and a college in Dublin, in hopes that the young Irishmen would learn to become more like the men of other countries

But the bad way of governing Ireland had gone on too long to allow it to be changed all at once ; and Elizabeth found she must send an army there to keep the different English and Irish chiefs in order, if she wished to have peace in the country

Now these chiefs were all Roman Catholics, for I believe there were no Protestants in Ireland but the very newest of the English ; and when the King of Spain made war against Queen Elizabeth, he sent some Spanish soldiers to Ireland to help the Irish chiefs to make war upon the English

The story of these wars is long and very sad, and belongs rightly to the history of Ireland , but I must tell you what happened to one or two of the chief men of Ireland at this time.

The Earl of Desmond was one who joined the King of Spain's people, and when Lord Grey drove the Spaniards

out of Ireland, Desmond tried to hide himself among the woods and bogs in the wildest part of the country. But the English soldiers hunted him from place to place, so that he had no rest. One night he and his wife had just gone to bed in a house close by the side of a river; the English soldiers came, and the old Lord and Lady Desmond had just time to get up and run into the water, in which they stood up to their necks, till the English were gone. At last some soldiers, who were seeking for them, saw a very old man sitting by himself in a poor hut; they found out it was the Earl of Desmond, and they cut off his head directly, and sent it to Queen Elizabeth.

But the most famous Irishman at this time was Hugh O'Neill, Earl of Tyrone. His uncle, Shane O'Neill, tried to make himself King of Ulster, and hated the English so that he killed some of his own family because they wanted to teach the Irish to eat bread like the English, instead of oat cakes.

This Hugh, Earl of Tyrone, had a large army of Irish, and fought all the queen's officers for many years, though she sent many of the best and bravest there. Sir Henry Bagenal was one, and her greatest favourite, the Earl of Essex, was another. Two or three times, when Tyrone was near being conquered, he pretended to submit, and promised that if the queen would forgive him, he would keep his Irish friends quiet. He broke his word, however, and kept a civil war up in Ireland till very near the queen's death, when, after being almost starved for want of food in the bogs near his own home, he made peace in earnest, and Ireland was quiet for a few years.

We are now come to the end of Queen Elizabeth's long and famous reign. She died when she had been queen forty-five

years, and was very unhappy at her death. Her favourite Lord Essex behaved so ill after he came from Ireland, that the queen's counsellors ordered him to be put to death Now, the queen had once given him a ring, when he was her greatest favourite, and told him, that if he would send it to her whenever he was in danger, she would save his life and forgive any of his faults. She thought he would send this ring to her, when he knew he was condemned to have his head cut off: and so he did; but a cruel woman to whom he trusted it, to give the queen, never did so till long after Essex was dead; and then Elizabeth, who was old and ill herself, was so vexed, that she hardly ever spoke to anybody again, and died in a few days afterwards at Richmond.

It would make our little history too long, if I tried to tell you of all the wise and good things done by Elizabeth, or if I told you the names of half the famous men who lived in her time.

Besides Essex, there was her other favourite, Leicester, a clever bad man.

Her god-son, Harrington, belonged to the learned men and poets of her time; but neither he nor any of the rest, though there were many, were to be compared to Shakespeare, whose plays everybody reads and loves, nor even to Spenser or to Marlowe, who lived and died in Elizabeth's reign.

Then there were her wise counsellors Sir Nicholas Bacon, Lord Burleigh, and Walsingham, and all the generals and admirals I have told you about. I must just mention one more, because you will wish to be like him when you grow up He was Sir Philip Sidney, the best and wisest, and most learned, and bravest He was killed in battle. When he was lying on the ground, very hot and thirsty, and bleeding to

death, a friend was bringing him a cup of water, but he happened to look round, and saw a poor dying soldier who had no friends near him, looking eagerly towards the cup. Sir Philip did not touch it, but sent it to be given to that soldier, who blessed him as he was dying And that act of self-denial and mercy makes all who hear the name of Philip Sidney bless him even now.

CHAPTER XLVII

JAMES I—1603 TO 1625

James Stuart, the first King James of England, but the sixth of Scotland, was one of the most foolish and mischievous kings we ever had in England He was the son of the unhappy Mary Queen of Scots, and after she was put in prison the first time, the Scottish lords made James king, though he was quite an infant The lords gave him the best masters they could find to teach him, and he learned what was in books very well, but nobody could ever teach him how to behave well or wisely

When Queen Elizabeth died, James, king of Scotland, became king of England, because he was Elizabeth's cousin, and from that time England and Scotland have been under one king, and are called the United Kingdom of Great Britain

As soon as James heard the queen was dead, he set out from Scotland to come to London, for as Scotland was then a very poor country, he and a great number of Scotsmen who came with him thought they had nothing to do but to come to England, and get all the money they could by all sorts of ways. Then he made so many lords and knights that people began to laugh at him and his new nobles But, worst of all, he fancied that parliaments had no business to prevent kings from doing whatever they pleased, and taking money from their subjects whenever they liked.

You may think how vexed the English were when they found that they had a king so unfit for them, after their wise Queen Elizabeth

The queen of James was Anne, the daughter of the king of Denmark She was extravagant, and loved feasts and balls, and acted plays herself, and filled the court with rioting, instead of the lady-like music and dancing, and poetry and needlework, that Queen Elizabeth and her ladies loved

Instead of riding about among the people, and depending on their love and good-will, James was always hiding himself, the only thing he seemed to love was hunting, and for the sake of that he neglected his people and his business

The favourites he had were far from being useful, or wise, or brave He chose them for their good looks and fine appearance, without inquiring anything about their behaviour.

He dealt severely with the Roman Catholics, whom he put in prison, and from whom he took a great deal of money Then he disliked those Protestants who did not wish to have bishops as well as parish clergymen, and who are mostly called Presbyterians, but some were then named Puritans, and he would not let them alter the Prayer-book

The Roman Catholics being tired of the ill usage they got from King James, some of them thought that, if they could kill him, they might take one of his young children to bring up themselves, and have a Roman Catholic king or queen, and get all England and Scotland for themselves They thought besides, that they had better kill all the lords and all the gentlemen of the House of Commons too, and so get rid of the whole Protestant parliament

From thinking wickedly they went on to do wickedly. They found there were some cellars under the houses of

parliament, and they filled these cellars with gunpowder; and as they expected the parliament would meet in the house all together, with the king, on the fifth day of November, they hired a man called Guy Fawkes to set fire to the gunpowder, and so to blow it up, and kill everybody there at once.

Now, it happened that one of the lords, whose name was Mounteagle, had a friend among the Roman Catholics, and that friend wrote him a letter, without signing his name, to beg him not to go to the parliament that day, for that a sudden blow would be struck which would destroy them all. Lord Mounteagle took this letter to the king's council. Some of the councillors laughed at it, and said it was only sent to frighten Lord Mounteagle But the king took it, and after thinking a little, he said, the sudden blow must mean something to be done with gunpowder, and he set people to watch who went in and out of the vaults under the parliament-house, till at last, on the very night before those conspirators hoped to kill the king and all those belonging to parliament, they caught Guy Fawkes with his dark lantern, waiting till the time should come for him to set fire to the gunpowder

The king was very proud of having found out what the letter meant, and used to boast of it as long as he lived, but the truth is that the king's clever minister, Sir Robert Cecil, had found out all about the plot, and managed to let James have all the credit.

So far I have only told you of the foolish behaviour of King James. I must now write about his mischievous actions

His eldest son, Prince Henry, died very young, he was a sensible lad, and the people were sorry when he died, expecially as his brother Charles was a sickly little boy.

Now, little Charles was a clever child, and had very good

dispositions ; and if he had been properly brought up, he might have been a good king, and a happy man Instead of that, you will read that he was a bad king, and I daresay you will cry when you find how very unhappy he was at last

James taught him that no power on earth had any right to find fault with the king, that the king's power was given to him by God, and that it was a great sin to say that anything the king did was wrong Thus he taught him to think that the people were made for nothing but to obey kings, and to labour and get money for kings to spend as they pleased, and that even the nobles were nothing but servants for kings ; in short, he filled his poor little son's mind with wrong thoughts, and never taught him that it was a king's duty to do all the good he could for his people, and to set an example of what is right.

Yet Charles had many good qualities, as you will read by and by He was a good scholar, and loved books and clever men, and music, and pictures ; and if he had only been taught his duty as a king properly, he would have done a great deal of good to England.

I have told you that James used to make favourites of people, without caring much about their goodness One of his greatest favourites was George Villiers, Duke of Buckingham, and he gave his son Charles to the duke to take care of, just when he was grown up. The silly king used to call Buckingham, Steenie, and the prince, Baby Charles, although he was almost as big and as old as a man.

When the prince was old enough to have a wife, his father wished him to marry the Infanta of Spain (In Spain the princes are called Infants, and the princesses Infantas) Now the Duke of Buckingham wanted very much to go abroad, and show himself to all the princes and nobles in France and

Spain, for he was very vain of his beauty and his fine clothes; so he put it into the prince's head to tell his father he would not marry unless he would let him go to Spain with the Duke of Buckingham, and see the Infanta before he married her

King James I with Steenie and Baby Charles

The poor foolish king began crying like a child, and begged his dear Steenie and Baby Charles not to go and leave him; but they laughed at him, and went and borrowed all his fine diamonds and pearls, to wear in their hats and round their

necks, and took all the money they could get, and set off to go to Spain. They called themselves John Smith and Thomas Smith, and first they went to France

Prince Charles found the ladies in the French court very pleasant and entertaining It is true that several of them were not very good, but then they amused Charles, and he was particularly pleased with the Princess Henrietta Maria, who was pretty and merry, and appeared to like Charles very much

They quickly pursued their journey through France to go to Spain, and when Charles and Buckingham first got there everything seemed very pleasant The Infanta was handsome, but very different from Henrietta Maria, for she was very grave and steady, and seemed as if she would be a fit wife for the prince, who was naturally grave and steady too

But the Duke of Buckingham quarrelled with some of the great men of the court, and was so much affronted at not being treated rather like a king than only a plain English nobleman, that he made the prince believe that the King of Spain meant to offend him, and did not really intend his daughter to marry him ; and, in short, he contrived to make Charles so angry, that he left Spain in a rage, and afterwards married that very French princess, Henrietta Maria, whom he had seen at Paris

The bad education King James gave his son Charles, though it was the most mischievous of all his bad acts, was not the only one

The King of Spain had taken a dislike to Sir Walter Raleigh, who had been so great a favourite of Queen Elizabeth, because Raleigh had beaten his sailors at sea, and his soldiers ashore But Sir Walter's men happened to kill some Spaniards when they were looking for a gold mine in

South America ; so the King of Spain demanded that James should put Raleigh to death, and James shamefully yielded to Spain, and ordered that great and wise man's head to be cut off

As to Scotland, King James's own country, he behaved as ill in all things belonging to it as he did in England But the thing that turned out worst for the country and his poor son Charles was his insisting on the Scottish people kneeling at the communion, keeping certain holy days, and having bishops, although the Scotch religion is presbyterian. This vexed the Scottish people very much indeed. And the Irish were not better pleased, because the Roman Catholics were ill-treated by James, and most of the Irish were Roman Catholics

When James died, all the three kingdoms of England, Scotland, and Ireland were discontented Poor Ireland was even worse off than ever Scotland had been neglected, and the people affronted about their religion ; and, in England, James had taken money unlawfully, and behaved so ill both to parliament and people, that everybody disliked him as a king, and he was so silly in his private behaviour, that everybody laughed at him as a gentleman

In short, I can praise him for nothing but a little book-learning ; but as he made no good use of it, he might almost as well have been without it He reigned twenty-two years in England, during which there was no great war. But James had begun one against the Emperor of Germany and the King of Spain, just before his death.

I must tell you of one very great man who lived in his reign, Lord Bacon. He was one of the wisest men that ever lived, though not without his faults, but when you grow up you will read his books if you wish to be truly wise

CHAPTER XLVIII

CHARLES I—1625 TO 1649

When Charles the First came to be king, all the people were in hopes that he would be a better king than his father, as they believed he was a better man, and so he really was

He was young and pleasant-looking; he was fond of learning, and seemed inclined to show kindness to all clever men, whether they were poets or good writers in any way, or musicians, or painters, or architects

Besides, the people hoped that he would manage his money better than James, and not waste it in clothes, and jewels, and drinking, and hunting, and giving it to favourites

But, unhappily, Charles still allowed the Duke of Buckingham to advise him in everything, indeed, he was a greater favourite than before James's death, for he had managed to get the French princess Henrietta Maria for a wife for Charles, who was so fond of her, that he thought he never could thank Buckingham enough for bringing her to England

But the parliament, particularly the Commons, did not like the marriage so much The new queen was a Roman Catholic, and she brought a number of Roman Catholic ladies and priests to be her servants, and she soon showed that she was greedy and extravagant.

Charles, who, as I told you, had been very badly taught by his father, desired the parliament to give him money in a very haughty manner The parliament said the people should pay

some taxes, but that they could not afford a great deal at that time, for James had been so extravagant that they had not much left to give Charles, by the advice of Buckingham, sent away the parliament, and tried to get money without its leave, and sent officers about the country to beg for money in the king's name Most people were afraid to refuse, and so Charles and Buckingham got a good deal, to do as they pleased with

Buckingham persuaded King Charles to make war against France, because one of the great men in France had affronted him King James had begun a war with Spain

The people were now more and more angry, for though they might like to fight for the glory and safety of England, or for the good of the king, they could not bear to think of fighting for a proud, cruel, and selfish man like Buckingham

I do not know what might have happened at that very time, perhaps a civil war, if a desperate man named Felton had not killed the Duke of Buckingham at Portsmouth, when he was on the way to France to renew the war

The people were again in hopes that the king would do what was right, and consult the parliament before he attempted to make war, or take money from his subjects, or put any man in prison, now that his bad adviser, Buckingham, was dead But they were much mistaken Charles found new advisers, and governed for eleven years without a parliament The king wanted money, and tried to compel all who had land to pay a tax called Ship Money ; but some gentlemen, one of whom was Mr John Hampden, refused to pay it, and said it was unlawful for the king to take money without the consent of parliament But the judges declared that the king could take Ship Money, and that the people must pay it Two of them, however, felt compelled to say

that Charles had broken the laws, and the promises made by the English kings in agreement with the Great Charter.

This made the people very angry. They said the worst times were come again, when the kings fancied they might rob their subjects, and put them in prison when they pleased.

Charles was a very affectionate man, and he could not help loving and trusting others instead of making use of his own sense and trusting his people, as Queen Elizabeth had done So he allowed the queen to advise him in most things, and Laud, Bishop of London, in others ; particularly in matters of religion. So he began to oppress the Puritans in England In poor Ireland, a harsh man, the Earl of Strafford, a great friend and favourite of King Charles, governed in such a cruel manner that everybody complained.

He sent English clergymen to preach in those parts of Ireland where the poor people could only understand Irish, and punished the people for not listening and when some of the bishops (particularly good Bishop Bedel) begged him to have mercy upon the Irish, he threatened to punish them most severely for speaking in their favour

All this time the king and queen and their friends were going on taking money by unlawful means from the people, till he was obliged to call a parliament Then the gentlemen of the Commons insisted on Lord Strafford and Archbishop Laud being punished Indeed, they would not be satisfied until Charles consented that Strafford's head should be cut off

Now, though Strafford well deserved some punishment, he had done nothing which by law deserved death , and therefore Charles ought to have refused his consent The king had often quarrelled with the parliament, and acted contrary to its advice when he was in the wrong , but now that it would have been right to resist he gave way, and

Strafford going to Execution.

Strafford, who loved Charles, and whose very faults were owing to the king's own wishes and commands, was beheaded by his order

This was a sad thing for Charles His friends found that he could not defend them, and many went away from England The king still wanted to take money, and govern in all things, without the parliament , he even went so far as to send some of the Commons to prison And the parliament became so angry at last that a dreadful civil war began

The king put himself at the head of one army, and his nephew, Prince Rupert, a brave but rash man, came from Germany to assist him. The queen went to France and Holland, to try to get foreign soldiers to fight in the king's army against the parliament. The king's people were called Cavaliers

The parliament soon gathered another army together to fight the king, and made Lord Essex general , and the navy also joined the parliament · and the parliament people, because of the way their hair was cropped whereas the Cavaliers wore their hair long, were called Roundheads.

Now we will end this chapter And I beg you will think of what I said about James the First, that he was a mischievous king If he had not begun to behave ill to the people and parliament, and taught his son Charles that there was no occasion for kings to keep the laws, these quarrels with the parliament need not have happened, and there would not have been a Civil War.

CHAPTER XLIX

CHARLES I—(*continued*)

A book twice as big as our little History would not hold all the story of the Civil Wars England, Scotland, and Ireland were all engaged in them; and many dreadful battles were fought, where Englishmen killed one another, and a great deal of blood was shed

The first great battle was fought at Edgehill, where many of the king's officers were killed. then, at a less fight at Chalgrove, the parliament lost that great and good man, Mr. Hampden. The battles of Newbury, of Marston Moor, and of Naseby, are all sadly famous for the number of brave and good Englishmen that were killed

During this civil war, the parliament sent often to the king, in hopes of persuading him to make peace. and I believe that the parliament, and the king, and the real English lords and gentlemen on both sides, truly desired to have peace, and several times the king had promised the parliament to do what they lawfully might ask of him.

But, unhappily, the queen had come back to England, and the king trusted her and took her advice, when he had much better have followed his own good thoughts Now, the queen and Prince Rupert, the king's nephew, and some of the lords, were of James the First's way of thinking, and would not allow that subjects had any right even to their own lives, or lands, or money, if the king chose to take them: and so they persuaded the king to break his word so often

with the people and parliament, that at last they could not trust him any longer

When the king found that the parliament would not trust him again, he determined to go to the Scottish army that had come to England to help the parliament, and he hoped that the Scots would take his part and defend him But he had offended the Scots by meddling more than they liked with their religion, and some other things, and the leaders of their army agreed to give him up to the English parliament. You will hardly believe, however, that those mean Scots actually sold the king to the English parliament · but they did so The unhappy king was sent back to England, and was now obliged to agree to what the parliament wished, and there seemed to be an end of the Civil War.

It was not long, however, before it began again, and this second time it ended in Cromwell and the other generals of the army becoming the most powerful men in England These men now drove away almost all the lords and gentlemen from parliament, so there was nobody but the soldiers who had any power

The wisest of the generals, Lord Essex, was dead The next, General Fairfax, was a good man, but neither so clever nor so prudent as some of the others, particularly one whose name was Oliver Cromwell

This Cromwell was a Puritan, or Roundhead He was brave and very sagacious, and strictly religious, according to his own notions, though his enemies thought him a hypocrite

He may have thought that, though the army had got King Charles in its power, the people would never allow him to be put in prison for his lifetime, and that, if he were sent away to another country, he might come back sometime and make war again So he said that the king had behaved so ill that

he ought to be tried before judges And he and the other generals named a great many judges to examine into all the king's actions and words

In the mean time King Charles had been moved from one prison to another, till at last he was brought to London to be tried

I cannot explain to you, my dear, all the hard and cruel things that were done to this poor king, whose greatest faults were owing to the bad education given him by his father, and the bad advice he got from his wife, and those men whom he thought were his best friends

When his misfortunes came, his wife escaped to France with a few of her own favourites, and her eldest son, Charles, Prince of Wales, also escaped Soon after his second son, James, Duke of York, also escaped, to his mother , but the king's daughter, Princess Elizabeth, and the little Henry, Duke of Gloucester, remained in England

When King Charles was brought to London, only two of his own friends could see him every day , one of these was Dr. Juxon, Bishop of London, and the other was Mr. Herbert, his valet, who had been with him ever since the army had made him prisoner

Shortly after the king was brought to London the judges appointed by the army condemned him to death, and three days afterwards his head was cut off.

But those three days were the best and greatest of Charles's life In those he showed that, if he had been mistaken as a king, he was a good man and a right high-minded gentleman. One of these days you will read and know more about him. I will only tell you now about his taking leave of his children ; and I will copy the very words of his valet, Mr Herbert, who wrote down all that happened to his dear king and master, during the last days of his life.

The day after the king was condemned to die, " Princess Elizabeth and the Duke of Gloucester, her brother, came to take their sad farewell of the king their father, and to ask his blessing. This was the twenty-ninth of January. The Princess, being the elder, was the most sensible of her royal father's condition, as appeared by her sorrowful look and excessive weeping , and her little brother seeing his sister

Parting of King Charles and his children.

weep, he took the like impression, though, by reason of his tender age, he could not have the like apprehensions The king raised them both from off their knees ; he kissed them, gave them his blessing, and setting them on his knees, admonished them concerning their duty and loyal observance to the queen their mother, the prince that was his successor, love to the Duke of York and his other relations The king

then gave them all his jewels, save the George he wore, which was cut out in an onyx with great curiosity, and set about with twenty-one fair diamonds, and the reverse set with the like number ; and again kissing his children, had such pretty

King Charles I. on the Scaffold.

and pertinent answers from them both, as drew tears of joy and love from his eyes , and then, praying God Almighty to bless them, he turned about, expressing a tender and fatherly affection Most sorrowful was this parting, the young

princess shedding tears and crying lamentably, so as moved others to pity that formerly were hard-hearted, and at opening the chamber-door, the king returned hastily from the window and kissed them and blessed them" So this poor little prince and princess never saw their father again.

The next morning very early, the king called Mr Herbert to help him to dress, and said it was like a second marriage-day, and he wished to be well dressed, for before night he hoped to be in heaven.

While he was dressing, he said, "Death is not terrible to me! I bless God that I am prepared" Good Bishop Juxon then came and prayed with Charles, till Colonel Hacker, who had the care of the king, came to call them.

Then the king walked to Whitehall, and as he went one soldier prayed "God bless" him. And so he passed to the banqueting house, in front of which a scaffold was built. King Charles was brought out upon it; and after speaking a short time to his friends, and to good Bishop Juxon, he knelt down and laid his head upon the block, and a man in a mask cut off his head with one stroke

The bishop and Mr Herbert then took their master's body and head, and laid them in a coffin, and buried them in St George's Chapel at Windsor, where several kings had been buried before.

CHAPTER L

THE COMMONWEALTH—1649 TO 1660

As none of the people either in England, Scotland, or Ireland, had expected King Charles would be put to death, you may suppose, my dear little Arthur, how angry many of them were when they heard what had happened

In Ireland the Roman Catholics knew they should be treated worse by the Puritans than they had been by the king's governors and the English settlers expected to be no better used than the old Irish ; so they all made ready to fight against the army of the English parliament, if it should be sent to Ireland

In Scotland, those who had sold King Charles to the English parliament were so angry with the English Roundheads for killing him that they chose Prince Charles, the son of the poor dead king, to be his successor , and they got an army together to defend him and his friends

As for England, the parliament (or rather the part of it that remained after the king's death) chose a number of persons to govern the kingdom, and called them a council of state ; and this council began to try to settle all those things quietly that had been disturbed by the sad civil war.

But the civil war in Ireland became so violent that the Council sent Oliver Cromwell, who was the best general in England, to that country , and he soon won a good many battles, and made a great part of the country submit to the English. And he put his own soldiers into the towns, to

keep them. As to the Irish who would have taken young King Charles' part, and were Roman Catholics, he sent many of them abroad, and treated others so hardly that they were glad to get out of the country. So Cromwell made Ireland quiet by force, and left General Ireton to take care of it

While Cromwell was in Ireland a very brave Scotsman, whose name was James Graham, Marquis of Montrose, had gone to Scotland with soldiers from Germany and France, partly, as he said, to punish those who had allowed Charles the First to be beheaded, and partly to try to make Prince Charles king. This brave gentleman, whose story you will love to read some day, was taken prisoner by the Scottish army The officers behaved very ill, for they forgot his bravery, and the kindness he had always shown to everybody when he was powerful They forgot that he thought he was doing his duty in fighting for his king, and they put him to death very cruelly They tied him to a cart, and dragged him disgracefully to prison. They hanged him on a tall gallows, with a book, in which his life was written, tied to his neck ; then they cut off his head and stuck it up over his prison-door

About a month after the Scots had disgraced themselves by that cruel action, young Prince Charles, whom they called Charles the Second, arrived in Scotland. But he found that he was treated more like a prisoner than a king The lords and generals of the Scottish army wanted him to be a presbyterian like them, but he liked better to go with the Scottish army into England, to try and persuade the English to fight for him, and to make him king

But Cromwell, who had returned from Ireland, collected a large army in England, with which he marched into Scotland, and, finding that Charles meant to make war in

England, he followed him back again with part of the army, and left General Monk in Scotland with the rest

Cromwell found King Charles and his army at Worcester, and there he fought and won a great battle, in which a great many Scottish noblemen were killed, as well as several English gentlemen. Charles was obliged to run away and hide himself, and for this time he gave up all hopes of being really King of England

You would like, I daresay, to hear how he contrived to escape from Cromwell, who would certainly have shut him up in prison if he had caught him.

I must tell you that the English generals had promised a great deal of money to anybody who would catch Charles and bring him to them ; and they threatened to hang anybody who helped the poor young prince in any way , but there were some brave men and women too, who had pity on him, as you shall hear.

After the battle of Worcester, the first place he got to was a farm called Boscobel, where some poor wood-cutters, of the name of Penderell, took care of him, and gave him some of their own clothes to wear, that the soldiers might not find out that he was the prince One evening he was obliged to climb up into an oak tree, and sit all night among the branches ; it was well for him that the leaves were thick, for he heard some soldiers who were looking for him say, as they passed under the tree, that they were sure he was somewhere thereabouts

At that time his poor feet were so hurt with going without shoes, that he was obliged to get on horseback to move to another place, where the good wood-cutters still went with him This time he was hidden by a lady, who called him her servant, and made him ride with her, in woman's dress, to

Bristol, where she was in hopes that she should find a ship to take him to France. But there was no ship ready to sail. Then he went to a Colonel Windham's house, where the colonel, his mother, his wife, and four servants, all knew him ; but not one told he was there. At last he got a vessel to take him at Shoreham, in Sussex, after he had been in danger more times than I can tell you. He got safely to France, and did not come back to England for many years.

While Cromwell was following Charles to England, General Monk conquered the Scottish army, so that England, Scotland, and Ireland were all made obedient to the parliament about the time when the young king was driven out of the country.

But the parliament was obliged to attend to a war with the Dutch, who had behaved so very cruelly to some English people in India, that all England was eager to have them punished.

Accordingly the English and Dutch went to war, but they fought entirely on the sea. The Dutch had a very famous admiral named Tromp. The best English admiral was Blake, and these two brave men fought a great many battles. Tromp gained one or two victories ; but Blake beat him often ; and at last, on Tromp being killed, the Dutch were glad to make peace, and promised to punish all those persons who had behaved ill to the English in India, and to pay a great deal of money for the mischief they had done.

About four years after the death of King Charles the First, the officers of the army thought themselves strong enough to govern the kingdom without the parliament ; so one day Cromwell took a party of soldiers into the parliament-house, and turned everybody out, after abusing them heartily, and then locked up the doors. After this unlawful act, he soon

contrived to get the people to call him the Protector of England, which was only another name for king, and from that time till his death he governed England as if he had been a lawful king

Cromwell turns out the Parliament.

Cromwell was very clever, and always chose the best generals and admirals, whenever he sent armies or fleets to fight He knew how to find out the very best judges to take care of the laws, and the wisest and properest men to send to

foreign countries, when messages for the good or the honour of England were required He rewarded those who served the country well, but he spent very little money on himself or his family He treated the children of Charles that had not fled away to France with kindness The little Princess Elizabeth and the Duke of Gloucester were allowed to live together at Carisbrook, and a tutor and attendants were appointed to teach them and watch over them The little princess soon died; and then the young Duke was sent to France to his mother, and money was given him to pay the expenses of his journey

After such a dreadful civil war as had made England unhappy during the reign of Charles I., the peace which was in the land, after Cromwell was made Protector, gave the people time to recover. Scotland was better governed than it had ever been before. Only poor turbulent Ireland was kept quiet by such means as made everything worse than before

In foreign countries the name of England was feared more in Cromwell's time than it had ever been since the days of Henry V And I must say of him that he used his power well

He died when he had been Protector hardly five years

There were a number of great men in the times of the civil wars But I will only tell you of one, whom I have not named yet. He was Latin secretary to the Council of State, and to Cromwell But what we best know him by, and love him for now, is his poetry. His name was John Milton; and every Englishman must be proud that he was born in the same land, and that he speaks the same tongue with JOHN MILTON.

CHAPTER LI

CHARLES II—1660 TO 1685

After Cromwell's death his friends wished his son, Richard Cromwell, to be Protector of England. But Richard, who was a shy, quiet man, did not like it, and after a very short trial went home to his house in the country, and left the people to do as they pleased about a Protector

But the people were tired of being governed by the army, even under such a wise and considerate man as Cromwell, and they chose to have a king and a real parliament again

Most men were glad to have bishops again, and to be allowed to have their own prayer-books and their own music in church, instead of being forced to listen for hours together to sermons from the Puritans, who called most pleasant things sinful, and grudged even little children their play-hours

But the really wise people of all kinds, the English Protestants, the Puritans, and the Roman Catholics, had another reason for being glad the king was come home I will try to explain this reason You have read that whenever there was any dispute about who should be king, there was always a war of some kind, and generally the worst of all, a civil war. Now, if the people had to choose who should be their new king every time an old one died, so many men would wish to be king, that there would be disputes, and then perhaps war, and while the war was going on there would be

nobody to see that the laws were obeyed, and all the mischief would happen that comes in civil wars.

Now in England, it is settled that when a king dies his eldest son shall be king next ; or if he has no son, that his nearest relation shall be king or queen You remember that after Edward the Sixth, his sisters, Mary and Elizabeth, were queens, and then their cousin, James Stuart, was king. This rule prevents all disputes, and keeps the kingdom quiet.

After Oliver Cromwell died, the wisest people were afraid there would be war before another protector could be chosen, so they agreed to have Charles, the son of Charles the First, for their king, and to get him to promise not to break the laws, or to oppress the people ; and they thought they would watch him, to prevent his doing wrong to the country, and they hoped he might have a son to be king quietly after him

General Monk, who had the care of all Scotland in Cromwell's time, was the person who contrived all the plans for bringing Charles the Second to England It was done very quietly. An English fleet went to Scheveling, in Holland, where Charles got on board, and he landed at Dover : in a very short time he arrived in London, along with General Monk, on his birth-day, the 29th of May, and England has never been without a king or queen since

Charles was a merry, cheerful man, and very good natured He was fond of balls, and plays, and masques, and nobody could have thought that England was the same place, who had seen it in Cromwell's time Then, people wore plain black or brown clothes, stiff starched cravats or small collars, their hair combed straight down, and they all looked as grave as if they were walking to a funeral.

But when Charles came, the ladies and gentlemen put on

gay-coloured silk and satin coats ; they wore ribbons and feathers, and long curly wigs, and danced and sang as if they were at a wedding

However, while Charles and the young men were so gay,

King Charles II. enters London at his Restoration

there were a few old wise lawyers, and clergymen, and admirals, and generals, who managed the laws and other business very well, although there were a good many people who were sadly vexed to see a king again in England.

The king soon married the Princess Catherine of Portugal, and her father gave her the island of Bombay, in the East Indies, as a wedding gift It was almost the first place the English had in India, and now we have gained nearly all that large country, which is larger than England, and France, and Portugal, all put together

While Charles the Second was king, there was a war with Holland, and another short one with France Our battles with Holland were chiefly fought at sea . one of our best admirals was James, Duke of York, the king's brother, who beat the Dutch admirals, Opdam and the son of the famous Tromp In another great battle, which lasted four days, General Monk, whom the king had made Duke of Albemarle, beat the great Admiral de Ruyter, and other English officers took several good towns which the Dutch had built in North America, especially New York

Pleased with these victories, the king grew careless, and forgot to have the Dutch fleets properly watched, so one of them sailed into the river Medway, and burnt a number of English ships at Chatham, and did more mischief by landing at different places, and burning ships and houses, than had ever been done in the same way since the days of the old Danes

This was near the end of the war. The English, Dutch, and French were equally glad to make peace

The plague now broke out, first in Holland, then in England Hundreds of people died every day, and it seemed shocking to be killing more men when so many were dying of that dreadful disorder

Often when people did not know they had the plague they dropped down dead in the streets Sometimes a friend would be talking to another and seem quite well and merry, and in a minute he would feel sick, and die before he could get

home. Sometimes everybody in a house would die, and then the grave diggers had to go and get the dead out of the house, and put them in a cart at night, and carry them to a place near London, where a great grave was dug, so big that many hundred people were buried there together Sometimes a poor mother would follow the dead-cart crying, because all her children were in it, and she had nobody left alive to love And often little children were found almost starved, because their fathers and mothers were dead and there was nobody to feed them There was one lady whose name was North, who had a very little baby ; that baby caught the plague The mother sent all her other children, and her servants, and everybody else into the country, and stayed by herself with the baby and nursed him, and would not fear the plague while she was watching her sick child , and it pleased God to save her and the child too. I have read what he says of his dear mother's love to him, in a book he wrote when he was an oldish man , and I think that the love he always kept for his mother, and the remembrance of her kindness, made him a good man all his life

This sad plague was put an end to by a dreadful fire, which burnt down a great part of London. It lasted for four days , and though everybody tried to put an end to it, it still burned on, for there was a strong wind, which blew the flames from one house to another At that time the streets were very narrow, and most of the houses were built of wood, so no wonder they burned fiercely

But good arose from this evil . when London was built again the streets were made wider, and the houses were built of brick and stone, so they were not so apt to burn, and they could be kept cleaner , and as the plague seldom comes to clean places, it has never been in London since the fire.

But now we must think about the king. Though he was a very merry man, he was far from being a good one. In the first part of his reign he listened to good advice, especially that given to him by Lord Clarendon, who had stayed with him all the time he was unhappy and poor, and while he was forced to live out of England. But it was not long before he neglected all the good and old friends of his father or of the people, and began to keep company with a number of gay men, who were always laughing and making jokes when they were seen ; but they gave the king bad advice in secret, and when they were trusted by him they behaved so ill to the people, that if it had not been for fear of another civil war, they would have tried to send Charles out of England again

The Duke of Lauderdale, one of Charles's greatest friends, was sent to Scotland to govern it for Charles Perhaps there never was so cruel and wicked a governor anywhere before. He ordered everybody to use the English prayer-book, and to leave off their own ways of worshipping God, and to change their prayers And when he found any persons who did not, he had them shot or hanged at their own doors; and what was worse, if anybody would not tell where the people he wanted to shoot or to hang were to be found, he would put them in prison, or torture them by putting their legs in wooden cases, and then hammering them so tight that the bones were broken ; and this he did to children for saving their fathers and mothers, or to grown people for saving their children, or brothers, or sisters I am sorry to say that another Scotsman, John Graham of Claverhouse, was his helper in all this wickedness

Scotland was therefore very miserable under Charles, and you will read in larger histories that the Scots rebelled, and fought against the king.

Ireland was treated, if possible, worse ; and as to England, several parts were ready to rebel, especially when it came to be known that Charles and his four chief friends were so mean as to take money from the King of France to pay Charles for letting him conquer several other countries that England ought to have saved from him

The king's brother, James, Duke of York, was known to approve of all the king's cruel and wicked actions , so that the English people found, after all they had suffered in hopes of getting back their freedom, that Charles the Second wished as much to take it away as his father and grandfather did

I do not wonder, therefore, that some wise, and good, and clever men, who loved our dear England as they ought to do, met together to talk about the best means of having proper parliaments again, and preventing the king from treating England, Scotland, and Ireland, so harshly

One of these good men was William Lord Russell , and another was Algernon Sidney The king and his wicked friends found out that they were considering how to save the country from the bad government of Charles and James. They took Lord Russell and Algernon Sidney, and put them in prison, and shortly after condemned them to have their heads cut off

Lord Russell's wife was one of the best women I ever read about She went and knelt down at Charles's feet to beg him to spare her husband She even tried to save him by offering a great deal of money to the greedy king , but he would not save Lord Russell, and when Lady Russell found her dear husband must die, she attended him like his servant, she wrote for him like a clerk, she comforted him as none but a good wife can comfort a great man in his misfortunes ; and after his death she brought up his children to know his goodness

and try to be like him The man who attended most to Lord and Lady Russell at that time was Bishop Burnet, who has written a true history of those things He tells us that after Lord Russell had taken leave of his wife, he said, "The bitterness of death is past" Lord Cavendish, a friend of Lord Russell's, offered to save him by changing clothes with him, but Lord Russell refused, lest his friend should be punished for saving him. He behaved as an Englishman ought to do at his death, with courage, with gentleness to those people who were with him, even to the man who was to cut off his head, and with meekness and piety to God

Algernon Sidney, who, though he wished for freedom, took money from the King of France, was the next man put to death by King Charles, and after him a great many who were either his friends or Lord Russell's

Soon after that Charles died and was not greatly mourned As I told you, his people were ready to love him when he first came to be king, but his extravagance and selfishness soon changed their love into dislike.

CHAPTER LII

JAMES II—1685 TO 1688

The reign of James the Second was a very short one, but many things were done in it which we must remember. You know that he was son of King Charles the First, who sent him to his mother in France to be taken care of during the civil war. This was bad for James, who was taught in France to be a Roman Catholic, to hate the English parliaments, and to think that kings might do as they chose, and change the religion of the country they governed, or take money, or put men in prison, without thinking whether it was just or unjust.

James married, first, a daughter of that Lord Clarendon who would have given good advice to Charles the Second, as I told you; but neither Charles nor James would listen to him. James had two daughters when he came to be king; they were both married; the eldest to William, Prince of Orange, who was the king's nephew, and the second to Prince George of Denmark. You will hear more of both these ladies by and by. King James's second wife was an Italian lady, a princess of Modena, a Roman Catholic, proud and haughty, and disliked by the English.

Before James had been king a year, the Duke of Monmouth, who was his nephew, landed in England with a small army, in hopes the people would make him king instead of James. But King James's soldiers soon put an end to Monmouth's army, and the young Duke was sent to London, where his head was cut off.

The king sent two men to punish the rebels in the parts where Monmouth's army was destroyed, Colonel Kirke and Judge Jeffries These two men, by the king's orders, committed the greatest cruelties, they hung some men on different church steeples; some they cut to pieces before they were quite dead A kind and charitable old woman, Mrs Gaunt, was burnt alive because she had once given shelter to a conspirator against King Charles; and Lady Lisle was put to death for the same reason In short, King James soon showed that he was as cruel and wicked as any king that ever reigned in any country, and the people began to hate him.

The next things that made the English people wish to get rid of James as a king, were his trying to govern without a parliament, his trying to give all power in Church and State to the Roman Catholics; and his putting seven English bishops in prison because they entreated him not to make the clergy read in church during divine service an unlawful proclamation

The king ordered the bishops to be tried, in hopes that the judges would condemn them to be punished, but the jury (which is, you know, made up of twelve or more men, appointed to help the judge to find out the TRUTH) said that the bishops were not guilty of anything for which the king could punish them; and as soon as the people heard this, all those who were in the street waiting to hear what the judges would say, and even the king's own soldiers, set up such a shout for joy that the king heard it

Instead of beginning a civil war, however, a number of the wisest and best English noblemen sent messages to William, Prince of Orange, who had married King James's eldest daughter, Mary, and invited him to come and help them to put an end to James's misrule and tyranny

They asked William to come because he was a good Protestant, and the nearest relation to the king, next to his little son who was just born Besides, William was a very brave prince, and had defended his own country against that grasping man, Louis the Fourteenth, King of France, who called himself Great because his army had won a great many battles and killed thousands of people

William and Mary agreed to govern always by means of the parliament ; to do equal justice to all their subjects ; to listen to their complaints ; and never to let the Pope have anything to do with the government of England.

When these things were agreed to, William came over to England with a great many ships, and a large army, and began to march from Torbay, where he landed, to London In a few days the gentlemen and people, and most of the noblemen of England joined him Even the king's second daughter, the Princess Anne, with her husband, Prince George of Denmark, left King James, who found that he had hardly one friend in the world, no, not even his own children The queen was hated even more than the king, so she made haste to run away, and the king put her, and a little baby boy that they had, into the care of a French nobleman, named Lauzun, who carried them to France, where King Louis received them kindly

King James stayed a few days longer in England, in hopes to find some friends But he had behaved too ill, no Englishman would take his part. So in less than four years from the time he became King of England he was obliged to leave it for ever, and William, Prince of Orange, was made king by the whole people And Mary was made queen, to reign with him, not like a queen who is only called so because she is the king's wife.

CHAPTER LIII

WILLIAM III AND MARY II —1688 TO 1702

The beginning of King William and Queen Mary's reign was very full of trouble

It was some time before the parliament could put right many of the things that had been so wrong while James the Second was king ; and before everybody would agree how much money to give the king to spend upon the soldiers and sailors he might want in war, as well as upon judges and other persons whose duty it was to help the king to govern in peace as well as war

Besides this, a great many people in Scotland liked James well enough to wish him to be their king still, because his grandfather came from Scotland ; and there were great disputes about allowing William to be king there. Lord Dundee, that Claverhouse who behaved so cruelly to the people in the time of Charles the Second, began a civil war against the new king , but he was killed at the battle of Killiecrankie, in the Highlands of Scotland , and, after a great deal of difficulty, William ruled as King of Scotland

But William had more trouble with Ireland, as you shall read When King James ran away from England he went to France, where his queen and little son were. Louis, King of France, who hated King William because he had always defended the countries and the people that Louis wanted to oppress, gave King James a good deal of money and many soldiers, and ships to carry them to Ireland, where

he landed with them, and where most of the Irish under Lord Tyrconnel joined him, as well as many of the old English settlers, who were all Roman Catholics, and who did not wish for a Protestant king.

As soon as King William had settled the government in England he went to Ireland, where he found all the country distressed with civil war. King James with his army, made up of French, Irish, and English, was on one side of a river called the Boyne, and there King William attacked his army, and beat it, James stayed on the field watching the battle and giving advice until he saw the battle was lost, and then, taking the advice of his general, Lauzun, he fled away with the French guards, and went back to France.

After this King James had no hope of gaining anything by fighting in Ireland; but Ireland itself was much worse for a long while, for long years of quarrel began there at that time.

To the Protestants, who wished to have King William for their king, was given all the power in the country. They called themselves Orangemen because William was Prince of Orange; and made many harsh laws against the Roman Catholics. For many years after this they tried very hard to get the rest of the Irish to turn Protestants; and even now the Irish have not done disputing; but I hope before many more years have gone past that all the Irish will be friends, and live in peace, not only among themselves but with England too. It is dreadful to think that, though it is many more than two hundred years since the battle of the Boyne, Ireland has been unhappy all that time. Sometimes one side, sometimes the other, has been cruel and revengeful; but now the Irish enjoy the same freedom as the English, and we must hope in future they will put aside their old angers and grievances and see that it is best for them, as it is for us, in all

ways to be friendly with and loyal to the Empire of which they and we are equal members Of this Empire or Commonwealth I must tell you something later.

While King William was busy in Ireland, Queen Mary governed in England, and, by her gentle and kind behaviour to everybody, gained the love of the people , so that they were glad to have her to govern, whenever William was obliged to go to Holland, to carry on the war which had been begun by several countries, as well as England, against that proud and ambitious king, Louis the Fourteenth of France Louis was one of those strange men who fancy that they are born better than others, and that people have nothing to do but to obey them, and that every man and every country must be wicked that does not do exactly as they choose in every thing, even in the way of worshipping God.

Now King William knew that kings are only to be better loved and obeyed than other men when they obey God themselves, and love mercy, and do right and justice to their subjects , and that men and countries have a right to be free, and to worship God as they please and it was because King William knew this that the English chose him to be king when they sent away James the Second, because he wished to be like Louis the Fourteenth in most things

The war the French king had begun went on for a good many years Twice people made a plot to murder King William, but they were found out and punished, and the people in England were so angry at such wicked plans, that they gave William more money to pay soldiers and sailors for the war than they had ever given to any king before

Our king used to go every spring, as long as the war lasted, to fight the French on the borders of France, and he came

home in the autumn to see what had been
while he was away

The bravest admiral in these times was
who beat the French ships whenever he cou
who fought a very famous battle against th
Tourville, about which those who love t
sing some fine songs even now.

King William himself was so brave and
he baffled the best French generals, and l
large armies from getting any decisive ad
years, till at last Louis was tired of war, and
peace. So he sent his ambassadors to a plac
in Holland, where King William had a co
promised to give back all the places he h
neighbours during the war, provided he m

But in the midst of the war, when ever
be going on well, a great misfortune hap
king and people of England Good Queen
small-pox when she had been queen only s
a very good and clever woman She was
wife to the king, but his best friend , and l
took her advice in everything She was
and very religious, which made her par
Queen of England She was a cheerfu
woman, which made the people love her ;
lived at her court were good wives and r
part of their time in useful work and readi
instead of being always at plays, or gamin
they used to be in the time of Charles and

King William lived seven years after th
was killed by a fall from his horse near Ha

He was not nearly so pleasant and cheerf

But he was the best king for England that we could have found at that time

He was a religious man, and he knew his duty, and loved to do it, both in England, where the people chose him for their king, and in Holland, his own country

I must write down a few of the things that he did for England . perhaps you will not quite understand how right they were till you are older, but it is proper that you should remember them

A law was made that no man or woman should ever be king or queen of England but a Protestant

It was settled that there should be a new parliament very often, and that no year should pass without the meeting of a parliament

The old money that had been used in England was so worn out, and there was so much bad among it, that the king ordered it to be coined, or made over again, of a proper size and weight, so that people might buy and sell with it conveniently.

A number of merchants agreed to call themselves the East India Company, and to pay a tax to the king and parliament, if the king would protect them, and not allow any nation with which England was at war to hurt or destroy the towns in India where they had their trade, or their ships when they were carrying goods from place to place There was a small company of this kind in Queen Elizabeth's reign, but the new one in William's time was of more use to the country as well as to the merchants

We call the East India trade, not only the trade in things from India itself, such as pepper, cotton, muslin, diamonds, and other things that come from that country, but the trade in tea, and silk, and nankeen, and ivory, from China ; and

in spice of many kinds from the Spice Islands, and cinnamon, and gold, and precious stones, and many kinds of medicine from Ceylon. And all this trade came to be very great in King William's reign.

The reign of King William will always be thought of gratefully by good Englishmen, because then the best things were done for the government, the religion, the laws, and the trade of our dear England.

CHAPTER LIV

QUEEN ANNE—1702 TO 1714

The Princess Anne, who was the second daughter of King James the Second, and sister to King William's wife Mary, became Queen of England when King William died, because she had been brought up a Protestant; while her little brother was taught to be a Roman Catholic; so that by law he could never be king of England. He is commonly called the Pretender, and he and his son often gave trouble in England, as you will read by and by.

The first ten years of Queen Anne's reign were glorious; but the last part of her life was troubled by the quarrels of some of the great men who wished to be her favourites, and to direct her affairs.

We will begin her history, however, with the most useful thing that was done in her reign; and that is, the union of Scotland with England.

You know that when Queen Elizabeth died, her cousin, James, king of Scotland, became king of England, so both countries had one king; but, as they had separate parliaments, and different ministers, and a different form of religion, they were always quarrelling, and many disputes, and even battles, took place, which were as bad as civil wars. These disputes were often on account of religion, because the king and his counsellors in England wanted to force the Scots to worship God in the same way, using the same words with the English. This was very unjust; so a great many Scotsmen joined

together, and made a COVENANT, or agreement, to preserve their own way of worship, even if they should be obliged to fight for it

I told you that in William's reign it was settled by law that the Scotch should do as they chose about their religion; and that wise king saw that it would be better for both nations if they could be so united as to have but one parliament, and if he had lived longer, he meant to make this union. After his death Queen Anne and her friends desired the same thing; but it was several years before the Scottish and English people would agree to it. At last, however, it was settled, and now the Scottish must wonder that they ever thought it a bad thing Since that time they have been equal in everything with England They keep their own religion and laws, as well as the English; and when new laws are made, they are contrived to be fit for both countries, or, if they will only suit one, then they are made on purpose for the people in that one As there are plenty of Scottish lords and gentlemen, as well as English, in the parliament, they are always ready to take care of their own country, which is right

Although Queen Anne and her ministers were busy about this union of Scotland with England, they were obliged to attend to what the French, under their ambitious king, Louis the Fourteenth, were about They had begun to attack the Protestants again, in so many ways, before King William died, that there was likely to be a war, and now he was dead, Louis thought there was no country in Europe strong enough, or with a soldier good enough, to fight him, or prevent his conquering as many countries as he pleased But he was mistaken The English were as much determined in Queen Anne's time as in King William's to prevent Louis from forcing upon them a Popish king and from oppressing the

Protestants , and Queen Anne possessed in the great Duke of Marlborough a far more skilful general than William had ever been Indeed King William in the last year of his life intended to give him the command of the whole army, for he thought he should be too ill to command it himself The English had a great many fine ships too, and Queen Anne's husband, Prince George of Denmark, was admiral So England was quite ready for war against King Louis, and the people and parliament were ready to give the queen all the money she wanted to pay the soldiers and sailors

Besides this, the Dutch were glad to fight on our side, as well as some of the princes in Germany , and another firm ally of the English was Prince Eugene of Savoy, who was Queen Anne's cousin, and was almost as good a general as the Duke of Marlborough

When Anne had been queen about two years, the greatest battle that had ever been heard of was fought at a place called Blenheim, near the village of Hochstet, in Germany, between the English and French The English had the Dutch and an army of Germans on their side ; their generals were Marlborough and Prince Eugene The French had a good many Germans and Spaniards and Italians with them , their generals were Marshals Marsin and Tallard, and the Elector of Bavaria.

The English had to march through a little brook to attack the French, who stood very steady for a little while , but so many were killed, that the rest began to run away Some were drowned in the river Danube, which was very near them, and a great many were taken prisoners, with their general, Tallard, amongst them The fighting lasted six hours on a very hot day A cannon-ball very nearly hit the Duke of Marlborough just as the fight began : it struck the earth so close to him that the cloud of dust it sent up hid him

for some minutes from the sight of the people about him. The English and Dutch and Germans took all the guns, and money, and food of the French army, besides a very great number of prisoners. There were more than twelve thousand

Marlborough at Blenheim

French killed, and a great many wounded, and about half as many English and Dutch and Germans

So you see that, whichever side wins in a great battle, there is sure to be misery for many families on both, who have to

grieve for their fathers, and sons, and brothers, killed or hurt.

This was a good battle, however, for it saved many countries from the cruel government which Louis the Fourteenth set up wherever he conquered.

Nearly at the same time with the battle of Blenheim, a place called Gibraltar was taken by the English Admiral Rooke, which is of great use to England

If you look at the map of Europe, you will see that where the Mediterranean Sea joins the great Atlantic Ocean, Gibraltar is placed Now all captains of ships who want to go into the Mediterranean must pass that way. You would be surprised if you could see the number of ships of all sizes that pass there every day. They fetch figs, and currants, and silk, and fine wool, and shawls, and velvets, and wine, and oil, and a great many other useful things from the Mediterranean ; and whoever Gibraltar belongs to can stop the ships going in and out So the English were very glad that Admiral Rooke took Gibraltar for Queen Anne

At last, after Marlborough had gained several other battles, peace was made with the French at a place called Utrecht, and Queen Anne died the very next year.

Queen Anne was kind and good-natured, but not very clever She was rather lazy, and allowed the Duchess of Marlborough to govern her for several years Afterwards she quarrelled with her, and then some other ladies governed her

In the reign of Queen Anne there were a great many clever men in England, some poets, and many writers of other things. Pope was the great poet, and Addison wrote beautiful prose But our little history would not hold an account of half of them.

Queen Anne's husband and all her children died before her, and though she did not love any of her Protestant cousins, it was settled by law that the son of her cousin Sophia, who was married to the Elector of Hanover, should be king after her.

CHAPTER LV

GEORGE I—1714 TO 1727

George the First was Elector of Hanover, in Germany; and as it was settled in King William's reign that nobody but a Protestant should be king of England, he was sent for and made king of England, rather than the son of James the Second, who was a Roman Catholic.

But a great many people in Scotland still wished to have a king of the old Scottish family of Stuart again, so they encouraged young James Stuart, that is the Pretender, whom they called King James, to come to Scotland, and promised they would collect men and money enough to make an army, and buy guns and everything fit for soldiers, and march into England, and make him king instead of George the First. From this time all those who took the part of the Pretender against George were called Jacobites, from Jacobus, the Latin for the Pretender's name, James.

James's chief friend in Scotland was Lord Mar, and he was in hopes that a great many English gentlemen would join him, and send money from England, and get another army ready there to help him.

But the Pretender and his friends were disappointed. They lost a great many men in battle at the Sheriffmuir, near Dunblane, in Perthshire. Their English army was beaten at Preston in Lancashire, and the Pretender was obliged to get away as fast as he could to France again.

I wish King George had forgiven both the Jacobite officers

and men, who thought they were doing right in fighting for the son of their old king: but he would not; and besides putting to death a few common soldiers and gentlemen, he ordered six lords to have their heads cut off. One of them escaped, however, and three were afterwards pardoned. Lord Nithisdale, who escaped, was saved by the devotion and courage of his wife. She had tried by every means to prevail upon the king to pardon him, but he would not; however, she had leave to visit him in prison. She went, you may be sure, often, and she took a friend with her, whom she called her maid, till she had used the jailers to see two people go in and out. Then she made her friend put on double clothes one day, and as soon as she got into Lord Nithisdale's room half those clothes were taken off, and he was dressed in them, and so they managed that he should go out with one of the ladies, who pretended that her companion had so bad a toothache that she could not speak. Lady Nithisdale had a coach waiting at the prison-door, and they went to a safe place, where her husband was hidden till he could get to France.

And this was the end of the first civil war begun in Scotland for the sake of the Pretender. Although his friends often tried to begin another, they always failed, while George the First was king.

The King of Spain also tried to assist the Pretender, but he could only make war with England by sea, and his ships were always beaten; and so he made peace.

George the First died while he was visiting his own country of Hanover, after he had been King of England thirteen years. He was a brave and prudent man, but was too old, when he came to be King of England, to learn English, or to behave quite like an Englishman. Yet still, upon the whole, he was a useful king.

CHAPTER LVI

GEORGE II.—1727 TO 1760

The reign of George the Second was disturbed both by foreign and civil war, and by some disputes in his family at home His eldest son, Frederick, Prince of Wales, married a German princess, and they both lived in London, but they were discontented with the money the king gave them to spend, so they quarrelled with him, and he ordered them to go and live at Kew, and would not do anything kind or good-natured for them Two children were born to them, one of whom was afterwards King George the Third, but the Prince of Wales died before his father.

I will now tell you about King George's foreign wars, and keep the story of the civil war to the last for you, because you will like it best, I think

The Spaniards had built a great many towns in South America ; and after they had got possession of the country, and killed many of the people, they took all the gold and silver that was found in the earth there for themselves They were therefore obliged to have a great many ships to fetch it, and brave soldiers and sailors to guard it as it crossed the seas, and so Spain got more gold and silver than any other country

But other countries wished for some of the useful things from South America too , and some English merchants wished very much to have several kinds of wood which are useful for dyeing cloth and wool and other things of different colours , but the Spaniards attacked them and ill-used them

for trying to cut the wood, and behaved in other respects very ill, so England went to war with Spain.

The war was mostly by sea, and in the course of it the Spaniards were beaten, first by Admiral Vernon, and then by Admirals Hawke, Rowley, Warren, and particularly Anson, though they none of them did all they hoped to do.

Another admiral was very unfortunate. He had to fight a great many ships in the Mediterranean Sea, and because he did not do all that the people of England desired him to do, he was shot when he came to England His name was Byng. I do not admire this admiral, but I think he was not justly treated

Besides the Spaniards, George the Second was at war with the French and Bavarians. The Prince of Bavaria had been made Emperor, and tried to make himself King of Bohemia, in the room of the lawful queen, Maria Theresa, and her son, who was an infant. The English and Dutch took Maria Theresa's part, the French took that of the Prince of Bavaria, and there was a very fierce war on that account, in which the English gained some battles, and lost some others, an account of which would be very tiresome to you, I am sure.

Though upon the whole the French had rather the best of the war in Europe, Lord Clive, who had an army of English in the East Indies, to take care of our merchants and our towns there, beat the French generals, and almost drove the French from India altogether Some time afterwards the French sent an army under Count Lally to win back their power in India , but Lally was so beaten that the French have never had more than one or two small towns in that part of the world since.

If you look at the map of the world in this place, my dear little Arthur, you will wonder that two countries in Europe,

so close together as England and France, should think of sending their soldiers and sailors so far off as India to fight their battles ; but you will wonder still more when you learn that, not content with this, they sent other fleets and armies to North America, where they fought till the English conquered the greatest part of all the country that the French ever had in that part of the world. But the greatest victory we gained there was the battle of Quebec, where our brave and good General Wolfe was killed. Some day you will read his life, and then you will wish that all English soldiers could be like him.

We will now think about the civil war in King George the Second's reign. You remember that in his father's time the Pretender, whom the Scots call James the Eighth, came from France to Scotland, and thought he could get the kingdom for himself, but he was soon obliged to go back again.

After that he went and lived in Italy, and married a Princess of Poland, and had two sons. The eldest of these was a fine brave young man : the youngest became a clergyman, and the Pope made him a Cardinal ; his name was Henry. The eldest, Charles Edward, who was called the Young Chevalier in Scotland and in England the Young Pretender, thought he would try once more to get the kingdom of Great Britain from the Protestant king ; so, in spite of the good advice of his true friends, he would go from Italy first to France, and then to Scotland, to make war against King George.

The King of France lent him a ship and a few men and officers, and gave him a little money, for this purpose ; and the young prince landed in Scotland, among the highlands, where the people were still fond of his family. In a very short time the highland chiefs, who had a great power over the poor people, gathered a great army, and marched to Edinburgh, which you know is the capital of Scotland.

There he had his father proclaimed King of England, Scotland, and Ireland, and gave titles of dukes and lords to the gentlemen who came to fight for him, and pretended to be the real Prince of Wales And he lived in the old palace of the Scottish kings, called Holyrood House, and there he gave balls and concerts to the Scottish ladies, and they all fancied themselves sure that Charles Edward would be their king instead of George

At first he gained two or three victories, the chief of which was at Preston Pans, near Edinburgh, and then he marched into England, where but few English gentlemen joined him, and when he got as far as Derby he found that he had better go back to Scotland, for the English would have nothing to do with him. Finding no real encouragement in the south, it was decided, though much against the will of Prince Charlie, to retreat to the Highlands.

From this time the French and Scottish officers of the Pretender quarrelled constantly, and the highland chiefs became jealous of the other generals, and everything began to be unfortunate for that unhappy prince, till at the battle of Culloden his whole army was destroyed, many officers were taken prisoners, and he was obliged to make his escape and hide himself till he could get back to France.

Sometimes the young prince was obliged to go many days without any food but wild berries in the woods, and to sleep in caves, or on the open ground. Sometimes he lay in bed, pretending to be a sick man, while the Duke of Cumberland's soldiers were hunting for him, and he could hear them talking of him Once he escaped from a great danger by being dressed in women's clothes, and seeming to be the maid-servant of a very kind and handsome young lady, called Flora MacDonald, who saved his life At last he got safe away;

and though he and his friends often threatened to make war in England again, they never could do any real mischief, and as he and his brother Henry both died without children, we have had no more Pretenders

The Pretender at Holyrood House.

I am sorry to say that the Duke of Cumberland was very cruel to Prince Charles's friends when the war was over. Three Scottish lords, a good many gentlemen, and a number of soldiers, were executed for having joined the Pretender

There is nothing else to tell you about the reign of George the Second; he was a very old man when he died at Kensington. He had fought many battles in Germany, and was a brave soldier, and not a bad king; but having been brought up in Germany, like his father, he never either looked or talked like an English king.

CHAPTER LVII

GEORGE III—1760 TO 1820

The people of England were glad when George the Third became king after his grandfather You read in the last chapter that his father, Frederick, Prince of Wales, died in the life-time of George the Second

George the Third was born in England, and brought up like an English gentleman. I think he was one of the best men that ever was a king ; but I do not think that everything he did was wise or right He reigned longer than any king ever reigned in England, and unhappily before he died he became blind, and he lost his senses

He married a German princess named Charlotte, and they had a great many sons and daughters, and one of their grandchildren was our Queen Victoria

You must not expect me to tell you everything that happened in this long reign, which lasted sixty years, but you shall read of one or two things of most consequence, and that you can understand best

When George had been king a little more than two years, he made peace with all the world, but his reign was very far from being a peaceable one

There were two wars in particular of great consequence ; the first was the American war, and the second the French war I will tell you a little about each of them

You will remember that in Raleigh's time the English built some towns in North America Afterwards, during the

civil wars in the time of Charles the First, many more English went there and took their families there to live, and by degrees they had taken possession of a very large country, and had got towns and villages, and fields. These English states in America were called *Colonies* ; but they were still governed by the King and parliament of England. The English wanted the Americans to pay taxes But the Americans said that, by Magna Carta and our old laws, no Englishman might be taxed without their own consent given in parliament. Now the American Colonies had no members in the British parliament , so they said the Parliament had no right to tax them. Then the king called them rebels, and threatened to punish them , and so, after many disputes, war broke out between the Americans and the King of England's soldiers who were in America to guard the towns and collect the taxes Then the Americans said they would have a government of their own This war was thought little of at first, but it soon grew to be one of the greatest wars England had ever had. The French and Spaniards, who had not forgotten how the English had beaten them by sea and land in the last wars, joined the Americans ; and although the English gained several victories by sea over the French and the Spaniards, yet by land the Americans beat the English.

The chief man in America was General George Washington, one of the greatest men that ever lived. He commanded the American army, and as he and his soldiers were fighting in their own land for their own freedom, and for their own wives and children, it was not wonderful that at last they beat out the English soldiers, who did not like to be sent so far from home to fight against men who spoke the same language with themselves

At last, when the King of England found the people were

tired of this long war, he agreed to make peace with America, and since that time the UNITED STATES OF AMERICA have had a government of their own, and have become a great and powerful nation They have a President instead of a king, and they call their parliament a Congress. You will understand these things in a few years

The French war lasted even longer than the American war. This was the cause · for a long time the French kings had governed France very badly, and the French nobles oppressed the poor people, and the clergymen did not do their duty rightly, but left the people ignorant At last the people could bear these bad things no longer, and King Louis the Sixteenth, who wished to do well, would have made them better if he could But the princes and nobles would not let him. Then the French Revolution broke out and caused much sorrow and cruelty A number of bad people seized the government in Paris, and they put the king and queen and all their family in prison, and they cut off the heads of the king and queen and the king's sister, and of a great many lords and ladies, and killed many others ; in short, I believe the French people did more wicked things in about three years than any other nation had done in a hundred up to that time The name of the most wicked of all was Robespierre , he was killed at last by some of those he meant to kill.

England and several other countries then went to war with the French, because they had sent armies to attack the neighbouring countries, and had conquered many of them, and that war lasted about twenty-four years.

France would have been mastered, I think, if it had not been for a brave and clever but very ambitious man, called Napoleon Buonaparte, who, from being a simple lieutenant

rose to be Emperor of the French. He chose able men for judges and generals He conquered many countries, and used to threaten to come and conquer England. But we had brave sailors and clever captains and admirals, who never let any of his ships come near us Lord Howe won the first sea victory in the war ; then we had Lord St. Vincent, Admirals Duncan, Hood, Collingwood, Cornwallis, Cochrane, Pellew, and many more, who gained battles at sea, besides more captains than I can tell you, who took parts of fleets or single ships. But the man that will be remembered for ever as the greatest English sailor was Admiral Lord NELSON He gained three great victories—at Aboukir in Egypt, at Copenhagen, and at TRAFALGAR near the coast of Spain In that battle he was killed, but he knew his own fleet had conquered before he died When he went into battle, the words he gave to tell all the ships when to begin to fight, were, ENGLAND EXPECTS EVERY MAN WILL DO HIS DUTY

These words must never be forgotten by any Englishman

There were no more great sea fights after Trafalgar, but many on land, where we had good generals and brave soldiers. The wise and good General Abercromby was killed just as he had gained a victory in Egypt. His friend, the brave Sir John Moore, was killed at Corunna in Spain, and many other officers and men died for the sake of England, but many lived to fight and to conquer The greatest general in that time was the Duke of WELLINGTON, who put an end to the sad long war by his great victory over the French, commanded by Napoleon himself, at WATERLOO I cannot tell you in this little book how many other battles he won or how skilfully he fought them, or how well he knew how to choose the officers to help him But he will have always a

name as great as Nelson, by whose side he was buried in St. Paul's.
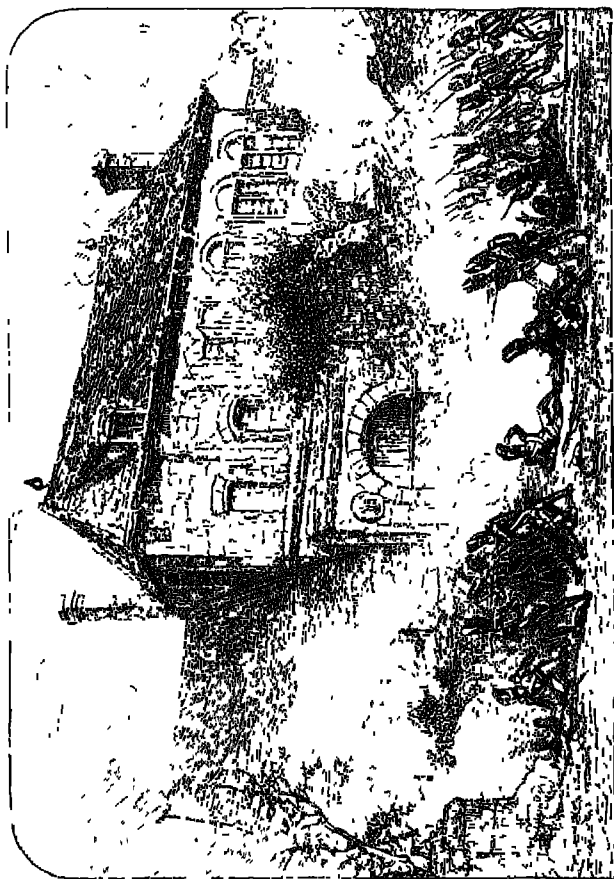
Farmhouse of Hougoumont on the Field of Waterloo

After the battle of Waterloo, Napoleon Buonaparte was kept a prisoner in the island of St Helena till he died, and the

brother of Louis the Sixteenth was King of France, under the title of Louis the Eighteenth.

Our good king, George the Third, died soon after. I have told you what kind of man he was at the beginning of this chapter

In his reign more things, useful to all men, were found out than in hundreds of years before New countries were visited, new plants and new animals were brought to England All the sciences received great encouragement The arts that are needful in common life were improved Steam engines were first made useful The beautiful light given by gas was found out, and all sorts of machines to assist men in their labour were invented Those arts called the fine arts, I mean such as sculpture, painting, and music, were encouraged by George the Third But what is of more consequence, the science of medicine and the art of surgery were so improved in his time, that the sufferings of mankind from pain and sickness are much lessened *

* This is the end of little Arthur's History, as first written by Lady Callcott; but for the benefit of the children of the present day who read this little History, a few more chapters are added.

CHAPTER LVIII

GEORGE IV.—1820 TO 1830

When George the Fourth came to the throne, he was fifty-eight years old, but he had been governing the kingdom for eight years before he was king, during which time he had been called the Prince Regent The reason of this was, that the old king, who, as you read in the last chapter, had the misfortune to go out of his mind, never quite recovered his reason from the time his youngest daughter, the Princess Amelia, died , so George, Prince of Wales, being the heir to the throne, governed for his father all that time.

George the Fourth had no sooner begun his reign than a dreadful plot was formed to kill all the cabinet ministers The wicked men—about thirty, I believe—who contrived this plot, used to meet at a house in an out-of-the-way place called Cato Street, in London , and there they agreed to carry out their plan on a certain day, when the ministers were all expected to meet together and dine Fortunately the plot was betrayed by one of the men, in time to prevent the murder most of the conspirators were seized, and the leader Thistlewood and four others were hanged

About twenty-five years before George the Fourth came to the throne, he had married his cousin, the Princess Caroline of Brunswick The marriage was not a happy one, and the Prince and Princess of Wales separated soon after the birth of their first and only child, the Princess Charlotte. This led to a sad quarrel, which I think it is no use for us to remember.

The Princess Charlotte, who would have succeeded her father on the throne if she had survived him, had married Prince Leopold of Saxe-Coburg, but died the year after her marriage, to the great grief of the people. This happened before her father became king

It was towards the middle of King George's reign that a war broke out between the Greeks and Turks A great many English gentlemen, amongst whom was the poet, Lord Byron, went to Greece to take the part of the Greeks The struggle lasted several years, and was ended by a battle fought in the harbour of Navarino, where all the Turkish ships were sunk by the British fleet—Navarino is at the south-west corner of the Morea in Greece The commander of the Turkish fleet was named Ibrahim Pacha, and the commander of the English fleet was Sir Edward Codrington After this battle, Greece, which had been subject to Turkey, was made into an independent kingdom, and three German princes were invited in turn to be king , Prince Leopold of Saxe-Coburg (who had married our Princess Charlotte) declined, but Prince Otho of Bavaria accepted the invitation, and became Otho the First, King of Greece Lord Byron died in Greece three years before the war ended Otho was afterwards sent away because he governed badly, and the crown was given to Prince George of Denmark, who was brother to our Queen Alexandra

A law was passed in this reign to allow Roman Catholics to sit in Parliament and help to make laws for the country. There was much talking and considering before this was done, for many people thought that if the Roman Catholics helped to make laws, they would try to change the religion of the country, and to bring back popery. Others, believing that the Roman Catholics of the present day were wiser, and that

they would continue loyal to the Sovereign and faithful to the laws of the land, consented to admit them to equal privileges with their Protestant fellow-countrymen So at last this law was passed; and now Roman Catholics sit in Parliament, and enjoy every right and privilege that other Britons have, except that of being the Lord Chancellor, who keeps the Great Seal and presides over the meetings of the House of Lords

About the same time the severe laws against Protestant Dissenters, which were made under Charles the Second, were done away with

The king died at Windsor at the age of sixty-eight, after a reign of ten years

George the Fourth was an able man, but he cared so much more for pleasing himself than for doing his duty and thinking of others, that he was not a favourite with his people

Many new buildings were erected and improvements made in this reign The New London Bridge and the Thames Tunnel were begun; the Menai Suspension Bridge, joining the Isle of Anglesey to North Wales, was completed, the Regent's Park was laid out in London; the Zoological Gardens were opened; and Regent Street and other handsome streets were built

One very great improvement was made by Sir Robert Peel in causing the streets and roads to be guarded night and day by active, well-drilled policemen, instead of by watchmen, who used to be on duty only at night, and who were very frequently feeble old men scarcely able to take care of themselves.

CHAPTER LIX

WILLIAM IV.—1830 TO 1837

As King George the Fourth left no child to succeed him, his brothers were the next heirs to the throne The Duke of York, the second son of George the Third, died three years before George the Fourth, and left no child, so William Henry, Duke of Clarence, the third son of George the Third, now mounted the throne William the Fourth, who had been brought up as a sailor, was at this time sixty-four years old; he was married to an excellent German princess, named Adelaide of Saxe Meiningen, and he had had two daughters, but they both died in early infancy

This reign was a short one, but several important changes took place in it, one of which was the passing of the Bill for a reform in the House of Commons You know how it was settled by King Edward the First that all the large towns, which in his reign were called burghs, should choose one or two persons to go to Parliament and help to make the law Since that time a great many little hamlets and villages had grown into large towns, and a great many of the old burghs had dwindled away until only a few houses were left in them, or even none The people, who were now living in the towns that had grown so large, thought it very hard not to be able to send members to Parliament to tell what was wanted in their towns; and they also thought it was useless for the little burghs, where only a few people lived, to continue sending members So it was proposed that the large towns

or boroughs should be allowed to send members to the House of Commons, according to the number of people in each town, and that the little decayed towns should leave off sending members. This new plan was called the "Reform Bill." It was talked over a long time in Parliament before it was agreed to; for, although there were a great many people who wished for the change, there were many others who thought it would be dangerous to the welfare of Old England, and both sides had to tell all their reasons for what they thought. At last it was put to the vote whether the Bill should pass or not; and as the greatest number were for making the change, the Bill became law. But I shall have to tell you of another Reform of Parliament under Queen Victoria.

Nearly the next thing that was done was to put an end to slavery in all the colonies belonging to England. A good man, named William Wilberforce, had tried to do this many years ago, in George the Third's reign; but it was not an easy thing to do, because all those persons who had large estates in the colonies, and who had bought slaves to cultivate the land, had paid a great deal of money for their slaves; and the masters were afraid they should be ruined if the slaves were set free, as there would be no one to sow and dig their fields.

There is no doubt the Parliament and people of England acted wisely in wiping away so great a disgrace as *slavery* is; and in order to do this with justice they paid a very large sum of money—twenty millions of pounds. When this was at last done, the slaves were made free.

There was a very sudden revolution in France at the beginning of this reign. It only lasted three days, and was called the "Three Days' Revolution." Charles the Tenth,

the King of France, was expelled, and came over to this country; his cousin Louis Philippe was then chosen by the French people to be their king, and was called the King of the French.

The example of France was followed in Belgium, a country which had been joined to Holland, so as to make but one kingdom, over which the Dutch king reigned The Belgians fought hard, and succeeded in driving away the Dutch; after which they invited Prince Leopold of Saxe-Coburg to be their king. Although Prince Leopold would not be King of Greece, he accepted the kingdom of Belgium He reigned a long time and wisely, and was succeeded by his son Leopold the Second.

I will now tell you of some improvements that were made in King William's reign, the principal of which is perhaps the forming of railways. The first that was opened in England was one between Liverpool and Manchester, and it was a very useful one You know that the people at Manchester weave great quantities of cotton, so much, indeed, that the town is full of factories, where thousands of spinners and weavers are at work. After the railway was opened, the work went on faster than ever, for as soon as the raw cotton arrived in bales from America to Liverpool, it was sent off by rail to Manchester; and as fast as it was spun and woven at Manchester, a great deal was sent back by rail to Liverpool, to be shipped off to America, and other parts of the world This kept a great many people at work, and as this railway seemed to do so much good, railways were very soon carried from one end of Britain to the other

Amongst the sad events of this reign, may be mentioned the appearance of the cholera in England, and a great fire which destroyed the Houses of Parliament at Westminster.

William the Fourth died, after a reign of seven years, at the age of seventy-one; and his widowed Queen Adelaide, who then became Queen Dowager, survived him about twelve years, when she died, much loved and respected by the English people.

CHAPTER LX

QUEEN VICTORIA—1837 TO 1901

William IV was succeeded on the throne by his young niece, the Princess Victoria. She was the grand-daughter of George III, who, you remember, married a German princess He had fifteen children, but only his fourth son, Edward, Duke of Kent, left a child to succeed to the throne of England

Princess Victoria was just eighteen when she was called to be Queen of England Her father died when she was quite a baby, and she had been very quietly brought up by her widowed mother at Kensington Some day, perhaps, my dear Arthur, you will see the room in Kensington Palace, where this good and great Queen was born

When the messengers came to tell her that her uncle the king, William IV, was dead, they found that she was fast asleep in bed, for it was yet early in the morning It was important that she should hear the news at once, so they told her maid to awaken her The girl appeared in her dressing-gown, with a shawl thrown over her shoulders; she had slippers on her feet, and her hair fell loose. When told that she was no longer Princess Victoria but the Queen of England, tears rose to her eyes, as she thought of the great duties that lay before her.

But I am glad to be able to tell you, that it was a very happy day for England when she became Queen, for she ruled her country well and wisely for sixty-three years She ruled longer than any king or queen had ever ruled before,

except Louis XIV, who had ruled over France for seventy-one years. When she died, at the age of eighty-one, not only her own country, but the whole world mourned for her

When she began to reign, there was peace everywhere So the people at home had plenty of time to improve the railways and steamboats, which were coming into use. You remember that I told you of the first train that ever ran in England, carrying passengers from Liverpool to Manchester This was a very short distance. Soon, lines were laid all over the land, and it was discovered that trains could go much faster than was at first supposed or had been thought to be safe Five years after her accession, the Queen herself travelled by train for the first time from Windsor to London

Up to this time, steamboats had only been used on the large rivers ; but the year after the Queen came to the throne, a steamer crossed the Atlantic from Bristol to New York in fifteen days. The old sailing-boats had taken about a month to travel the same distance, so this was a great improvement

You see, my dear Arthur, how much easier it was becoming to visit and send letters to other countries, and how this would help on England's trade and also, it was hoped, friendship between the different nations

Another great help was the Penny Post When Queen Victoria came to the throne, only rich people could send letters to one another, because the rates of postage were so very high. It cost one shilling and threepence to send a letter to a friend in Scotland, for letters had to be sent by coach over hundreds of miles, and only members of Parliament could send them free of cost. The postage then was fixed at a penny a letter, and that penny was paid, as you know, by
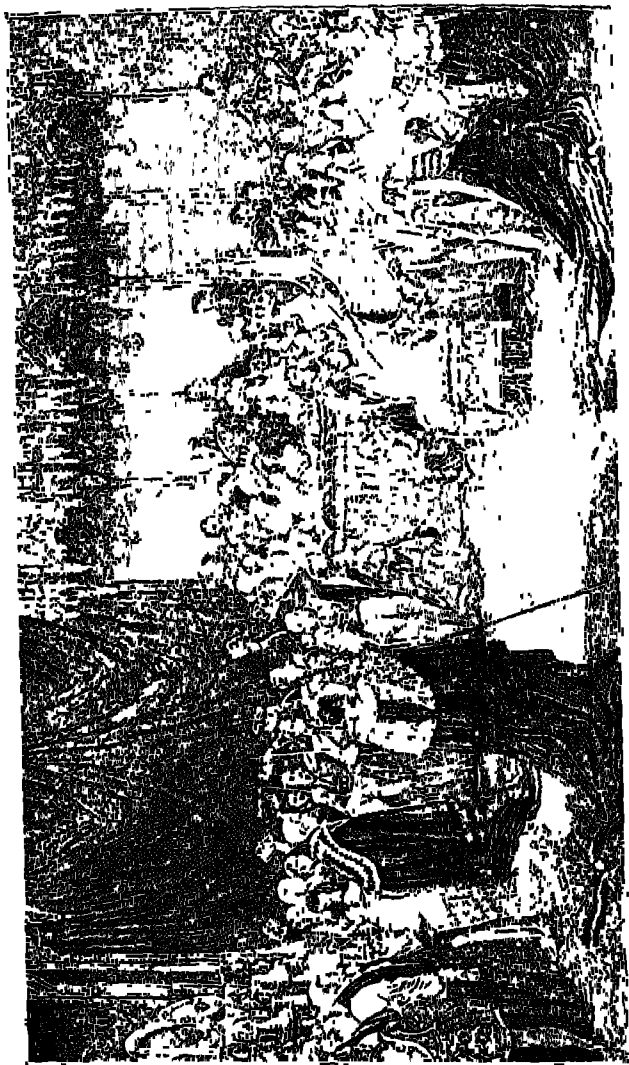
The Coronation of Queen Victoria in Westminster Abbey, June 28, 1838

the purchase of a stamp bearing a picture of the young Queen's head

A little later, the electric telegraph was started, to carry messages quickly from place to place ; but I think it was still more wonderful when men laid wires, or cables, under the sea, so that messages could be sent from England to all parts of the world All these improvements were regarded with interest by the Queen, and it pleased her to see her people growing better and happier in this greater freedom of communication.

I must now tell you of an event which took place when she was twenty-one You know a queen always chooses her own husband, and Queen Victoria chose to marry her young German cousin, Prince Albert of Saxe-Coburg and Gotha, nephew of Leopold, King of the Belgians There were great rejoicings on the wedding-day (February 10, 1840), and the marriage proved a very happy one for the Queen and the country

The birth of a son at the end of the following year was again the cause of much rejoicing in England. He was christened Albert Edward, and succeeded his mother on the throne of England fifty-nine years later, as King Edward the Seventh

One of the Queen's first acts after this was to pay a visit to Louis Philippe, King of France, whose daughter had married her uncle, Leopold, King of the Belgians It was the first time an English sovereign had set foot in France since Henry the Eighth had appeared on the Field of the Cloth of Gold

Some years later, the people of France grew discontented with the weak government of Louis Philippe Fighting often took place in the streets, until matters ended in a complete revolution Louis Philippe, in terror for his life, made his

escape from Paris and, disguised as a peasant, fled to England with his poor old wife It has ever been England's pride, that she receives exiles in distress from other countries, and the Queen now placed the royal residence of Claremont, in Surrey, at the disposal of the French king and his dethroned queen.

This revolution in France led to revolutions in other countries In England a number of discontented people, some of whom had been thrown out of work by the use of the new machinery, thought that a new charter, drawn up by them, would ensure better food and wages They were called Chartists, and they thought the moment had come when they might frighten the Queen and Parliament into granting their requests So they collected in huge numbers, and decided to go in a procession to the House of Commons to present a petition signed by hundreds and thousands of people Riots were feared, and the Queen, with her young children, was hurried out of London But the people of England loved their Queen too well to let the Chartists gain the day. Under the old Duke of Wellington, soldiers were placed in various parts of London ; the principal citizens guarded the city, while policemen kept the bridges over the Thames. The Chartists had planned their great procession with the monster petition, for the tenth of April, but when that day came, and they found that the people of London were against them, they wisely dispersed and went quietly home.

So you see, while there had been fighting between the people and the soldiers of all the great cities of Europe about this time, there was, after all, peace in London on this memorable Tenth of April, 1848.

In Ireland, I am sorry to say, matters were not so peaceful.

A very sad thing had happened early in the Queen's reign, which had greatly distressed her. A terrible famine had taken place in Ireland, caused by a disease, which destroyed the potato crop. The potato is the chief food of the poor people in Ireland, and when the potatoes rotted in the ground, there was nothing left for them to live upon. The rich people in England did all they could to help, and Parliament voted large sums of money, but thousands and thousands died of disease and starvation, until poor Ireland had lost two millions of her people. The country was still suffering from the effects of famine when rebellion broke out.

It distressed the Queen to think that she had disloyal subjects across the water, so when the country was quiet again, she and Prince Albert paid their first visit to Ireland, where they were received with great enthusiasm.

But, my dear Arthur, the discontent in Ireland was too deeply rooted to be so easily cured, and you will hear of more troubles there before the end of Queen Victoria's reign and indeed for years after that.

There had, for some time, been a cry in England for cheaper food, for all food coming into the country from abroad was heavily taxed. The Irish famine had shown how important it was not to depend too much on home crops alone. If the tax on foreign corn were removed, people in England could get cheaper bread; but, on the other hand, the farmers would get a lower price for their home-grown corn. So there was a great outcry at this suggestion. But after a time, Sir Robert Peel managed to pass a Bill through the House of Commons doing away with the tax on corn. The result of this was that bread became much cheaper throughout the United Kingdom. Other taxes were gradually removed, and England had what is known as Free
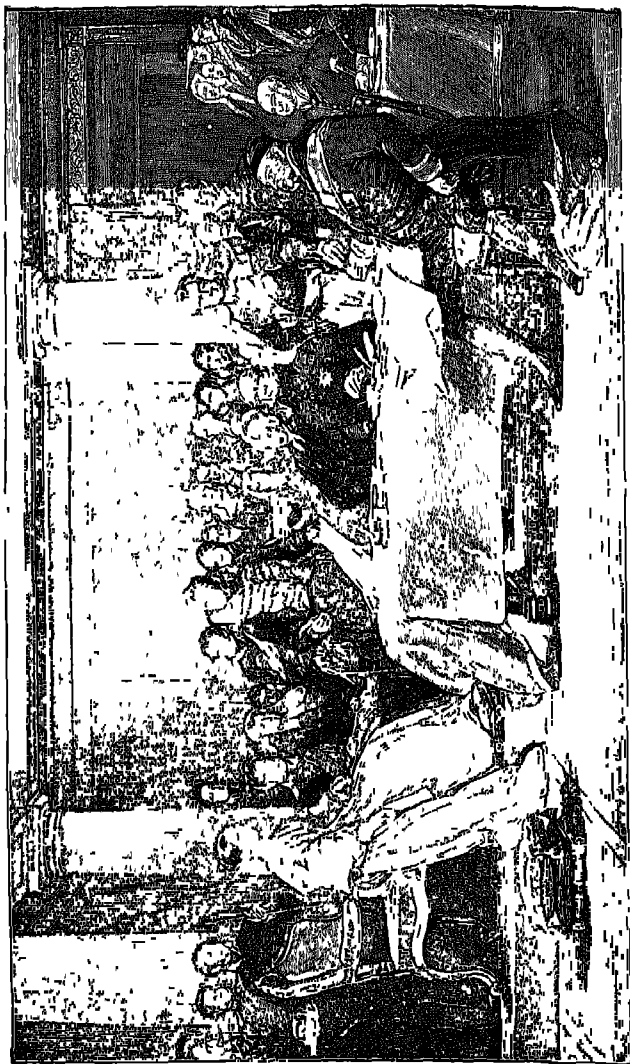
The Queen in Council

Trade, that is to say, she could import things from other countries without paying taxes on them And so it remained for many years, much to the prosperity of the people, until for other causes it had to be altered, but of that I need not tell you now.

It was a sad day for England when the Duke of Wellington died, at the age of eighty-four He was greatly missed by the Queen and the whole nation He had been loved and trusted during the whole of his long life, and the people of London gave him a public funeral, such as had never been seen before He was laid in St Paul's Cathedral, beside the great sea-captain Nelson ; and you must never forget the names of these two great men, who did so much for their country. Their names are joined in the fine ode which Tennyson, the poet-laureate of the Queen's reign, wrote in memory of the Duke I advise you, Arthur, to read this poem for yourself It is called "An Ode on the Death of the Duke of Wellington."

England had cause to mourn the loss of the "Iron Duke," as he was called, a few years later, when the long peace of forty years was broken by war with Russia

But you shall hear of this in the next chapter.

CHAPTER LXI

QUEEN VICTORIA—(*continued*)

Ever since the great battle of Waterloo, England had been at peace. And you can imagine how sad the Queen was when she heard that her beloved country must soon be at war The Russians, whose land, you know, is the largest in Europe, were trying to get possession of Turkey England feared, if Russia were successful, that she would grow too powerful in the East. So the English and French joined together to help the Turks to keep Russia in check

Most of the fighting took place in the Crimea, a peninsula to the south of Russia, for it was here that Russia had established a great fortress and arsenal The first battle, fought by the river Alma, ended in the defeat of the Russians The next, at Balaclava, has been made famous by the charge of the Light Brigade This brigade received an order to retake some guns captured by the Russians. Officers and men feared there was some mistake, but rather than disobey superior orders, they heroically made the charge Six hundred of them rode bravely forward, to find themselves right under the Russian guns. Some one had blundered, and only two hundred returned from the fatal charge The battle of Inkerman followed, with another Russian defeat. Still the fortress of Sebastopol defied the English and French armies. Winter came on The sufferings of our soldiers were terrible. They had no proper shelter from the icy storms that swept over the Crimea, no warm clothes, and not enough food.

The Charge of the Heavy Brigade at Balaclava

A band of Englishwomen, under Florence Nightingale, heroically undertook the long journey to the Crimea in order to nurse the poor soldiers in hospital.

At last, with the fall of Sebastopol, the unhappy war came to an end.

When the English soldiers came home, the Queen had a medal struck as a reward for bravery. It was made from the cannon taken at Sebastopol, and was in the shape of a cross, which was called the Victoria Cross The Queen herself presented it to those who had been specially brave, thanking them for their courage and devotion. To win that Cross is the greatest honour possible to a soldier or a sailor

The soldiers had not been home very long before a terrible mutiny broke out in India among the Sepoys The Sepoys are Indians whom the English trained to be soldiers in the service of the East India Company, of which you have already heard They were supposed to be faithful to their English masters, but they had been discontented for some time

A belief had spread among them that the English were trying to destroy their religion and take away their old privileges You know that cows are held sacred by many Indians One day some new cartridges were given to the Indian soldiers, which were covered with the grease of cow's fat to keep out the wet The soldiers had to bite these cartridges in their mouths before loading When they heard of this, they regarded it as a deadly insult , and as they were already discontented by the stories which had been spread among them, they determined to mutiny and kill their English masters This they did, without pity or mercy, and general terror spread through the land.

At Cawnpore the English garrison was under an old man of seventy-five. Unable to get help, he accepted the assist-

ance of a native, whom he trusted, called Nana Sahib This man played him false He offered to conduct the women and children, with their sick and wounded men, across the river Ganges to safety, but they had no sooner reached the boats

An Officer of First Royal Regiment of Foot, 1838.

and pushed off from the land than, at a given signal, he had them fired upon and killed Some few escaped, and these he had shut up in a place, where there was neither air nor light After untold sufferings, they died It is one of the saddest stories in English history, but it is relieved by the splendid

heroism of the defence of Lucknow by Sir Henry Lawrence, and the assault of Delhi by John Nicholson.

When the mutiny broke out, Sir Henry Lawrence set to work to strengthen the garrison at Lucknow, where he was besieged by the natives He had women and children to defend, for all were shut up in the Residency together By day and night he worked at his post, until he was killed by a shell which burst in his room

" Never give up, I charge you Every man die at his post."

This was his dying command Already the English flag, floating from the roof, was riddled with shot Already men, women, and children, were growing weak from want of food, but those brave men defended the cluster of buildings occupied by the English, called " the Residency," to the last And when Generals Havelock and Outram fought their way to the relief of Lucknow, the English there could cry with honest pride, that they had defended their Residency for nearly five months

When peace was restored, it was decided to end the rule of the East India Company, and to put India under the government of the Queen and her Ministers. Later on, the Queen took the title of Empress of India Her Indians became some of the most faithful subjects and devoted attendants at the English Court

It is impossible to tell you everything that happened in this long reign, but I think you will like to hear how the idea of Volunteers arose at this time

England and France were no longer the good friends they had been Indeed, they had become so suspicious of one another, that it was feared in England that the French might one day invade her coasts. People became alarmed, thinking there were not soldiers enough to defend her shores. So men

of every class came forward of their own free will, to be drilled and trained as soldiers in case of war These Volunteers, as they were called, were formed into regiments The French invasion did not take place, but ever since this time a volunteer force has formed part of the home defence, though now it is a real part of the Army, and its officers and men are called Territorials

Now I am coming to one of the saddest events of this reign The Queen had been married for twenty-one years, when her devoted husband, Prince Albert, died , leaving her with nine children The whole nation mourned with the widowed Queen, who was, for a time, crushed by the blow that had fallen upon her, and it was many years before she quite recovered from it ; but always she was helped by her sons and daughters, and especially by the young Prince of Wales, who was afterwards King Edward.

In the Queen's long reign, many new laws were made for the greater happiness and freedom of her people You remember about the Reform Bill, which was passed in the reign of William IV , allowing all big towns to send one or two members to Parliament, according to the number of people in every town Only a certain number of rich people were allowed to elect these members, and a feeling had long been growing among the working men of England, that they too ought to have a voice in the election of the man who was to represent them in Parliament So another Reform Bill was drawn up. It allowed every working man to have a vote, if he paid a certain amount of rates and taxes, that is to say, if he bore his share of the expenses of the government And so, from that time, the greater number of working men have had a voice in managing the affairs of the nation Further than this, a Ballot Act was passed, making all voting secret ;

so that every man could vote for whom he liked, without any one else knowing whom he had supported And since then further reforms have been made so that every man and every woman too, who is fairly entitled to it, has a vote

The tax, too, was taken off paper. When Queen Victoria came to the throne, a daily newspaper cost sixpence, and could only be bought by rich people It was common for a number of people to club together and take in a paper, which they read by turn. You can imagine how pleased these men were, when it was made possible for each one to buy his paper for one penny.

All these improvements were for the benefit of grown-up people; but a great deal was done for the children of England, as you shall now hear. Perhaps the passing of the Education Act in 1870 was one of the most important events in the whole reign.

In the early part of the reign very few children could read or write Indeed, worse than this, numbers of them were made to work underground in dark mines for fifteen hours a day. When the people of England realized this, they at once tried to put a stop to it A good man, called Lord Shaftesbury, took up the cause of the children, and brought in a Bill to shorten their hours

For some time past, schools had been established all over England in connection with the Churches They were chiefly supported by presents of money from rich people, and were known as voluntary schools. Teachers were specially trained to teach the children, and a great deal of very good work was done But the population of England had been rapidly increasing, and there were hundreds and thousands of little children who had no school to go to. I am sorry to tell you that England was behind other countries in the training of her

children France and Germany had already built schools, and compelled their children to attend

At last England followed their example Schools sprang up all over the country, under the management of chosen bodies of people in each place, known as School Boards while the voluntary schools still continued with renewed energy, so that soon, education was provided for every child in the country Some years later, every child was compelled to attend school for a certain number of years, free of all expense

I shall end this chapter by telling you of something that caused great rejoicing in England. The Queen's eldest son, Albert Edward, Prince of Wales, married the beautiful Princess Alexandra, daughter of the King of Denmark The country gave the new Princess such a welcome, as must have gladdened the heart of the poor widowed Queen

CHAPTER LXII

QUEEN VICTORIA—(*continued*)

I have now come to a very important part of Queen Victoria's reign—the enormous increase of her commerce, and the growth of her great Colonies As you will very often hear these two subjects mentioned, I will try to explain them to you

Once the power of steam had been discovered, there seemed no end to all its uses Not only could it move engines drawing carriages along metal lines, not only could it move ships through the water, but it could turn machines, which, up to this time, had been turned by the hands of man This meant greater speed, and increase of work Some day you will see a great factory, and learn for yourself the wonderful things that a steam-engine and electricity can do , how these forces are used to make cloth, linen, flannel, as well as knives and tools and many other things which are of daily use in every home.

The English were among the first people to discover the power of steam, and they went on inventing new machines to help their increasing work. It is not possible to tell you about one-half of these wonderful inventions here, but I want you to understand the great importance of these machines, and the great increase of commerce and wealth they brought to England Take, for instance, the clothes you wear. There is cloth for your coat , flannel, linen, or silk for your shirt ; wool for your stockings , and leather for your boots You

are but one of the millions of little boys who wear these things, so that you can form an idea of what quantities are made It is only by means of machinery working at great speed that this can be done , and as the English were among the first to invent these machines, so, for many years, they made a great part of the clothing of the world Other nations have now followed, but still she provides a great part

But she cannot supply sheep enough for the wool, nor flax enough for the linen, and she cannot grow cotton at all So that these had to be brought over from other countries in ships As trade increased, so more and more ships were wanted to bring the raw material, as it is called, to England, and to take back ready-made goods to other countries

Once there was a great civil war in America The northern states fought against the southern states on the question of slavery England had given up slavery long before this, so the question did not matter to her , but most of her cotton came from the southern states While the war lasted, no cotton could be grown to send to England. The cotton mills in Lancashire had to be closed , thousands of people were thrown out of work and nearly starved This will show you how one country depends on another for its prosperity and how evil war is, even hurting people very far away from the scene of the conflict

But when all the mills in the north were busy, when people were well and prosperous, when trade was growing, and wealth increasing, then the people found they had been increasing too, and their numbers were too large for England to find work for them all So a great many of them sailed away beyond the seas to make new homes Some went to

Canada, and sent over grain and farm produce to England, some went to Australia to keep sheep, so that they could send wool to England, and others went to South Africa where there are mines of diamonds and gold.

This brings us to the growth of the British colonies, and you will like to hear how well Englishmen did, when they went to live far away from home.

You remember how we lost our American colonies in the reign of George the Third, but how, just before this, General Wolfe had won Quebec, the capital of Canada, from the French. Since those days Canada had grown. A great many English had made their homes there. Gradually they had made their way westward; they had cut down trees, cleared the forests, dug up new soil, and planted crops. After a time, Canada stretched from sea to sea, right across from the Atlantic to the Pacific Ocean. It became known as the Dominion of Canada; but the east and the far west were like two countries, until they were joined by means of a great railway, known as the Canadian-Pacific Railway.

This has made communication easy to all parts, and colonists can forward their grain to the home country without difficulty. They can also travel to Ottawa, where the central government sits, to arrange the affairs of the Dominion. For Canada is a "self-governing colony," that is to say, the English colonists are allowed to manage the affairs of their own country, though they are proud to feel they are still a loyal part of the British Empire and under the British sovereign.

All the northern part of the country is bitterly cold. It extends right up into the Arctic regions, where the sea is frozen for a great part of the year. For a long time, explorers had been sailing about these northern seas, trying to find a

North-West Passage from the Atlantic through the ice north of Canada to the Pacific Ocean. They hoped to find a short way for ships to sail to India from England, without going round by the Cape of Good Hope

You will like to hear a little about Sir John Franklin, the man who really found the North-West Passage at last He started off with two ships, and a hundred and thirty men At first all went well, then there was silence. Year after year passed by, and there was no news of Franklin Ship after ship went in search of him, but it was twelve years before it was discovered for certain that he and all his brave companions had died of cold and starvation.

But, although he had found the North-West Passage before he died, it was no use for ships sailing to India, because it was never altogether open and free from ice Another way, however, was soon after this opened to India. For a clever Frenchman cut through a piece of land between the Mediterranean and the Red Sea, making the Suez Canal, by which all ships can sail to India, without going round by the Cape of Good Hope.

Besides Canada, another British country sprang up, though it was much farther away from England, across the seas—I mean Australia This great country, far beyond India, had been discovered by Captain Cook in the reign of George III At first it seemed so far away, that only convicts were sent there from the English prisons. But early in the reign, other English people went out, and when gold was discovered there in 1851, there was quite a rush of colonists. Two new colonies sprang up, and in the course of time they were called Victoria and Queensland, which shows you that Englishmen never forget their home, however far away they may be Since those days, Australia has grown very rapidly. It is

largely a sheep-farming colony, and meat is sent frozen all the way home for us to eat

Australia has its own Parliament, with representatives from each of its states, just as Canada has , and the British in both countries like to feel that they are still a part of their beloved homeland They could separate if they liked, to become independent nations like France and Germany, but I am glad to say that our colonies are not like that They would rather be parts of our great British Empire, and are ready, in case of danger, to take their places by our side, as we should be with them if they were threatened

Near Australia lies the sister colony of New Zealand The first colonists arrived here two years after the Queen's accession, and they called their capital Wellington, after the Duke

Our possessions also grew in Africa Immense tracts of land there came under British protection during the reign of Queen Victoria

In the reign of George the Third, the Cape of Good Hope became English. It was taken from the Dutch, but I am sorry to say the English and Dutch who had to live together at the Cape did not agree very well Just about the time when the Queen began to reign, the Dutch farmers—or Boers, as they were called—refused to live under the British rule any longer ; and went off to live by themselves farther north, in a little-known part of Africa They went beyond the Vaal river, so their country was called the Transvaal

The English also had trouble with the natives, as well as with the Boers. There was a very powerful tribe of black men called Zulus, who wanted to drive out the British, and there was some terrible fighting, though the British conquered at last A very sad thing happened in one of these

Zulu wars. Prince Louis Napoleon, whose father—once Emperor of France—had died an exile in England, was killed while fighting on the side of the British, to the great grief of the Queen.

Besides the colonists in Africa, there were explorers and travellers. One of these was David Livingstone. He opened up Central Africa, and discovered some of the great lakes. He was a missionary, and taught the heathen about Christ, and the black people loved him. So that, when he died far away from home, in the very heart of Africa, two black servants carried his body all the way to the coast, across hundreds of miles, to be buried by his white friends at Zanzibar.

A great discovery of diamonds caused a rush of colonists to South Africa. One Englishman named Cecil Rhodes made a great fortune in the diamond mines. He spent his money in the country, and helped England to gain an immense tract of land to the north of Natal, which was called after him, Rhodesia.

Up to this time, the Boers had lived in the Transvaal apart from the English, as I told you. But a great discovery of gold in their country brought a number of English colonists there. This displeased them, and they refused to let the English take any part in the government, so after a time war broke out. At first the Boers were successful, and our troops were shut up in Ladysmith and Mafeking for many months. At length larger armies were sent out from England under Lord Roberts, and the Boers were gradually forced back into their own country. This war was still going on when Queen Victoria died. But very soon afterwards peace was made, and so wise an arrangement was reached with the Boers that after a time they became contented citizens of the Empire, and

in the Great War, of which I must tell you presently, fought for South Africa against the Germans and under two of their old Boer generals, Botha and Smuts, gained a victory of which we all are proud

On the Gold Coast of West Africa, England has possessions too, though this was a very unhealthy part for white men to live in The English had a good deal of fighting with the black King of Ashanti, before he would allow them to enter his country , but he was such a tyrannical ruler that our Government felt it must interfere Soon after this, another large tract of country, known as Nigeria, was placed under the protection of England, for here, too, the people were oppressed And you know, my dear Arthur, wherever there is English rule, there is freedom and justice.

When I have mentioned Uganda, I think I shall have told you about all our largest possessions in Africa So you see how our country has stretched out her arms far and wide—to America, to Australia, and to Africa, and how she has sons and daughters living in these great continents They are loyal to her, and ready to help her in times of peril and danger, while she is ever ready to protect them

So whereas in the beginning of the great Queen's reign, England had only the little colony of Canada , at the end, she had many large colonies, now called Dominions, of the utmost importance Her foreign possessions had grown to be ninety times the size of herself, and three times the size of all Europe put together The Queen no longer ruled over the British Isles only, as the Kings and Queens of England had done before her, but over a great Empire beyond the seas as well , so that when her son came to the throne, he was called not only King of England, but also King of the British Dominions over the sea
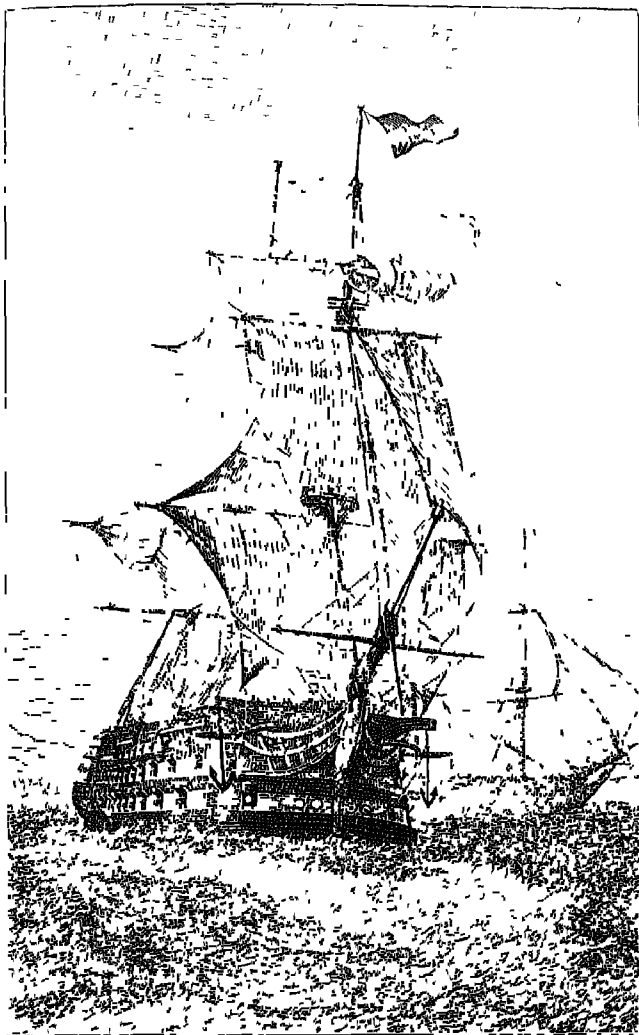
An Old Wooden Battleship.

CHAPTER LXIII

QUEEN VICTORIA—(*continued*)

I have told you how England has taken whole countries under her care to administer justice to oppressed people, and I now want to tell you a little about Burma and Egypt They are not Dominions like Canada, Australia, and parts of Africa, where white men go to make their homes They are countries full of their own people, and Englishmen help them to rule their country more justly than before, as they have done in India.

In the case of Burma, or Farther India, as it used to be called, our rulers found that King Theebaw was ill-treating our traders who visited his country, so we deposed him and assumed control of it ourselves It is now a part of the British Empire

But it was quite different in Egypt This country was governed by a native ruler, called the Khedive, who was England's friend. Another native, called Arabi, resented this English friendship, and revolted English troops were sent, and Arabi was defeated and taken prisoner

More fighting took place after this, because an Arab chief, calling himself the "Mahdi," invaded the country farther up the Nile. He had a number of followers who believed in him, and they destroyed an English army, that was sent from Cairo against them Then a gallant soldier, General Gordon, who knew Egypt well, was sent out from England He rode through the desert on a camel to Khartoum, where
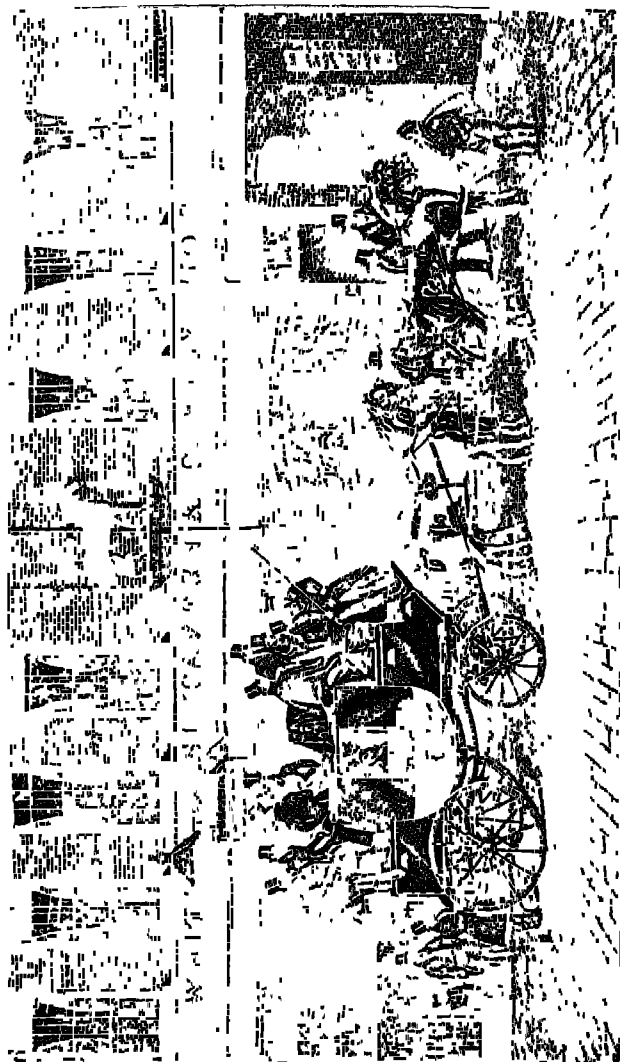
An Old Stage Coach

he was besieged for a long time by the Mahdi's troops. At last British soldiers were sent to his relief; but I am sorry to say they arrived too late, for General Gordon was killed the very day they appeared at Khartoum.

Some years after this, General Kitchener, with brave English and Egyptian soldiers, fought and won back the Sudan. This immense tract of country watered by the Nile is now Anglo-Egyptian, which means that both the British and the government of the Khedive are responsible for its good government.

You will like to hear how things were getting on at home all this time. Lord Beaconsfield, one of the Queen's favourite ministers, had died, and Mr. Gladstone had succeeded him. This change gave a great chance to the Irish. A number of them wished to have a separate Parliament to sit in Dublin, as it did in the old days. They had a clever leader in Mr. Parnell, and they persuaded Mr. Gladstone to bring in a Bill to give them Home Rule—that is, the power to govern themselves and make their own laws. For some years the people of England and Ireland were greatly agitated over this; but a general election decided that the Irish should not have a Parliament of their own, but that they should continue to sit at Westminster with the Scottish and Welsh members.

The Queen had a beautiful house in Scotland called Balmoral, where she spent some months every year. She was eighty-one when she went over to Ireland, which country she had not visited for forty years. It must have been a great effort, but she was very pleased with the hearty welcome she received from the warm-hearted Irish.

It is pleasant to turn to the celebration of the Queen's first Jubilee. She had reigned over England for fifty years, a period only exceeded by Edward the Third and George the

Third. A special thanksgiving service was held at Westminster Abbey to celebrate the event In front of the long procession rode thirty-two princes of her own house, including her sons, her grandsons, and her sons-in-law, and the Crown Prince of Prussia, Frederick, who was married to our Queen's eldest daughter, and who died in the next year, just after he had become German Emperor

But I must tell you something of the Diamond Jubilee In the year 1897 the Queen had reigned for sixty years, which was longer than any English ruler had reigned before. If the first Jubilee procession had been splendid, this one was yet more splendid Such a royal progress had never passed through London before, for there were subjects there from every part of the great Empire They had all come across the sea to do honour to the Queen under whose rule they were living so happily The procession made its way to St Paul's Cathedral amid a roar of applause, for the Queen had won all hearts by her kind deeds and motherly ways People sang " God save the Queen " as she passed, and at night the whole country was illuminated

But perhaps the most important part of this famous Jubilee was the great naval review that took place at Spithead. Amid the ships of other nations in their long imposing lines, the strength of the British navy showed forth in its pride and glory All through the reign of Queen Victoria, the navy had been growing steadily and surely , and this was very necessary, for England has a smaller standing army than any other nation Since the days of Nelson, she has had command of the sea, she must therefore look to her fleet as her chief protection and her " all-in-all "

Now London was a very different place from what it had been sixty years before. Better houses had been built for

rich and poor; the streets were cleaned, and lit with electric light and gas, policemen kept the crowds in better order while the people themselves were better fed and dressed Then the new Houses of Parliament had been built at Westminster, the new Tower Bridge had been made over the Thames, new Law Courts had arisen, and many of the narrow streets had been made broader.

You would like to hear something about Queen Victoria's family, I am sure, before I end this chapter Her eldest daughter became the wife of the Emperor Frederick of Germany, and mother of the Emperor (or Kaiser) against whom we fought the terrible war of 1914 Her eldest son, who afterwards was King Edward the Seventh, married a Danish princess, and she became Queen Alexandra. They had two sons and three daughters of whom the second son was our beloved King George the Fifth, the grandfather of our present gracious Sovereign

I am sorry to say the last years of Queen Victoria's life were clouded by the war in South Africa She lived long enough to receive Lord Roberts on his return home, but her strength was failing rapidly, and she died on January 22, 1901, at the age of eighty-one She had lived longer than her grandfather, George III, by just a few days Her people wished her to be buried in Westminster Abbey, but she had long before decided to be laid beside her husband at Windsor. So they gave her a splendid funeral, and buried her in the grave that she had chosen. And they praised her stainless life and her devotion to duty, for not only Great Britain and the Empire, but the whole world, had lost one of its best friends.

CHAPTER LXIV

EDWARD VII—1901 TO 1910

Queen Victoria had been so loved by her people, and her death had caused such sorrow all over the world, that it seemed as if King Edward the Seventh would not have an easy task to follow her Yet it is not too much to say that during his short reign of a little more than nine years, he became a more popular ruler than she had ever been

As I have already told you, Queen Victoria had led a very quiet and retired life after the death of the Prince Consort She was seldom seen in public, and if it had not been that her portrait was to be found in nearly every home in the land, few of her subjects would have known what she was like But King Edward was known everywhere As Prince of Wales he had for years taken his mother's place in performing public duties ; he was also a leader of London Society, a patron of sport of every description, and a country gentleman of the good old-fashioned kind Wherever there was a ceremony of national importance, such as the opening of a university, a hospital, or a public library, he was there ; his horses had twice won the Derby, the most famous race in the world, his sailing yachts had distinguished themselves at continental regattas, and his estate at Sandringham was one of the best managed in England Little wonder, then, that the people looked forward with joy to his reign such a King could not fail to be popular

And he was truly popular ; not at home only, but abroad

also Owing to the large number of his relations who were kings and queens on the continent, he was sometimes called "the uncle of Europe"; and there is no doubt that his welcome visits to foreign countries caused the name of England to be admired and respected in a way it had never been before Wherever he went he left a feeling of friendship behind him, and if he is known among future generations by the title of "the Peacemaker" (as he was called by some of his admirers even before he died), he will have won more lasting fame than many of the noblest warrior monarchs of the past

When he came to the throne the Boer war was still dragging on, but both sides were tired of it King Edward from the first used his influence to bring it to an end, so that his coronation might be celebrated in peace So the Boer generals met ours at a little place called Vereeniging, and the result of the conference was that the Boers had to admit that they were beaten and to lay down their arms They had fought bravely and fairly, and, as we are never hard on people we have conquered, they were treated kindly, and as we have seen since, wisely Though it is a bitter thing for a free people to be deprived of their independence, there is little doubt that they were better off in the end, for they now enjoy freedom as equal members with the British settlers in the Union of South Africa and a security they never had before.

Many years had passed, as you know, since the English had seen a King crowned, so all the nation was looking forward with pleasure to the day when King Edward would pass through the streets of London, in all his majesty, to Westminster Abbey. Wonderful preparations were made, and everything was ready, but almost at the last minute word was passed round that he was seriously ill, and the

ceremony had to be postponed He was not a young man, and the large amount of extra work he had tried to do had proved too much for him. Luckily a clever surgeon performed an operation in time, and his life was saved , he gradually recovered, and when his coronation really did take place, three months later, the greatest joy and thankfulness were felt through the length and breadth of the land

Towards the end of the same year Prince George, who had been created Duke of Cornwall on the death of Queen Victoria, was made Prince of Wales—a title which his father had borne with such honour for nearly sixty years Soon after this he went with his Princess, in a fine ship called the *Ophir*, on a round of visits to the British countries beyond the seas His most important journey was to Australia, where the different states had decided to join together into one " Commonwealth " The Prince went to give the King's greeting to the new government and to wish it success ; and so well has it prospered since then that it is now able to send battleships and men to help our navy and army

You may be sure that on his travels our Prince saw much to be proud of , but he also saw some things that were not so satisfactory. When he returned home he told what he had seen to the leading merchants of London, warned them of the progress that other nations were making in the distant corners of the earth, and advised old England to "wake up " and look after its trade For he saw how important to our Empire our trade is . and that all its parts should do what they can to work with and help the other parts, in a great inspiring brotherhood

Now I think I ought to tell you how King Edward's accession was celebrated in India Nearly twenty-five years before this, Queen Victoria had been proclaimed Empress of

India, so it was decided that it would be a good thing to have a gathering of the native princes to do homage to their new sovereign. A big assembly, called a Durbar, was held at Delhi, the old capital of the Mogul rulers, and all the Indian chiefs and kings were summoned to it As the King could not be present himself, his Viceroy took his place, and the princes came before him one by one and took the oath of loyalty to their Emperor This was a very wise precaution to take, since the Indians who remembered the bad days of the Mutiny would be less likely to rebel again when they knew that their rulers had agreed to serve the English King. Since then our government in England has tried to make the various races of India take a greater interest in their own affairs, and has built a great system of government, so that in time to come they may be allowed to manage their own country themselves

One of the earliest and most important events in King Edward's reign was the formation of an alliance with Japan Perhaps I ought to go back a little, to tell you what had been happening in what is called " the Far East " China, in spite of its great superiority in numbers, had been badly defeated in war a few years before by little Japan, and had lost some of its most important towns as well as the large island of Formosa. Russia was jealous of Japan's success, and said she would be too powerful if she kept all she had taken from China, so (in order to make things more even) she stepped in and took some of them for herself, especially the wonderful fortress of Port Arthur in the Korea. This led to trouble, as the Japanese just waited for an opportunity to attack Russia, and to win back the places she had taken War soon broke out. The fighting on land was terrible ; no such slaughter had been heard of before then On sea also, where the

Japanese were the more powerful, there was very severe fighting, but in the end the Russian ships were nearly all captured or sunk, so they thought they had better end the war. Peace was arranged, on condition that Russia gave back to Japan most of the places which she had taken from her The Japanese were glad to make closer friendship with a strong European power, and so our alliance with them was made and maintained for a number of years

You have already been told that King Edward made friends wherever he went No sooner had he ascended the throne than he began his travels Lisbon, Rome, and Paris were visited in turn, while Scotland and Ireland were not neglected You know that Queen Victoria had been very fond of Scotland and its people, who were also very fond of her, but Ireland had been very bitter towards England for a long time This feeling King Edward set himself to remove; and it is certain that his friendly and open manner quite charmed the hearts of the Irish people But unhappily other influences spoilt the good work and poor Ireland is still torn by angers and distrust

Of all foreign countries France was certainly his favourite As Prince of Wales he had been popular with the French people, and they were glad to find that when he became King his affection for their nation increased rather than diminished In his official meetings with their President Loubet, and afterwards with President Fallières, they were quick to notice an element of personal friendliness and courtesy, and the interchange of visits by the two fleets which followed, set them talking about an *entente cordiale* with England This expression, which means rather more than " a good understanding " and rather less than " a treaty," will help you to understand King Edward's wonderful power of attracting alliances

This *rapprochement*—" drawing nearer "—of France was

you may be sure, not altogether pleasing to Germany, who was always saying she was afraid of being hemmed in on all sides by enemies, and was anxious not to have England against her. It is true that, if she had really meant to keep on good terms with us, she might have acted more wisely than she did. She had built a big navy, on the excuse that it was needed to protect her commerce, and had dug an immense canal from the Baltic to the North Sea, through which the largest ships could pass without difficulty. She had also fortified the island of Heligoland, which we had rather unwisely given to her some years before, in exchange for some small places in Africa; and the English people were beginning to wonder what all these warlike preparations meant. Still, the German Emperor continued to appear friendly towards our people, and his visits to England and the reception of our King and Queen in Berlin seemed to foretell that the feeling of jealousy might disappear, and a new era of trust and confidence arise between the two nations. But, as you will hear later, that was not to be, because those in Prussia who wished to have a war could not be controlled; and all the time they were getting ready and secretly plotting for it to break out. Our great soldier, Lord Roberts, who knew something of what was going on in Prussia, did his best to arouse the British people to the dangers threatened by a powerful Germany; but they did not really listen to him, and when war did afterwards break out our country was not sufficiently prepared for it.

And now let us see what had been happening at home. The Conservative party had been in power for a long time, and it was evident that the country wanted a change. When the election at last took place the Liberals had such a huge majority that they believed the people wished them to make

great changes in the laws, so they proceeded to do so. The first thing they did was to create a new army system, to enable our forces to be rapidly increased during war This was a good thing (though many thought it did not go far enough), and nobody really objected to it ; but when they wished to give Home Rule to Ireland and also attacked the privileges of the landowners they came into conflict with the House of Lords, which has always been Conservative in its sympathies At this time a new party began to appear in Parliament It consisted generally of workmen who thought that as they had votes they might well use those votes for themselves, and so the Labour Party began to compete for government against the Liberals and the Conservatives

The quarrel between the two Houses of Parliament went on for some years More than once the Lords gave way, but at length they brought matters to a head by refusing to pass the Budget for the year As the Budget provides the money for carrying on the government, it is clear that if no money is voted the government cannot go on So they were obliged to have an election to find out on whose side the country was ; and as the verdict was against the Lords they had to accept the Budget. After this the Liberals wanted to prevent such a thing happening again, and brought in a Bill to limit the power of the Upper House Party feeling ran very high, and just as it seemed to have reached its bitterest point the newspapers announced that King Edward had been taken suddenly ill , and almost before the people had time to realize that his ailment was serious he was dead

The news of this sad event, which occurred on May 6th, 1910, came as a shock not only to the Empire, but to the whole world, and the British nation was touched by the expressions of sympathy which came from all sides No such

collection of kings and princes had ever been seen as followed in his funeral procession. The German Emperor came in person and rode alongside of our new King George the Fifth; while the French mourned the lost "Edouard" as if he had been one of their own flesh and blood

And now it is time to glance at what King Edward did for his Oversea Dominions, for you must not forget that although he had such wonderful success with foreigners his first care was for his own subjects At the beginning of his reign he had sent the Prince of Wales to Australia, South Africa, and Canada; but a more famous journey still was the tour that he made through India a few years later · so when King George succeeded his father, it was said that he was the first British Sovereign who had visited all his dominions These visits have drawn the Britons over the sea closer to the Motherland, and this sympathy has been helped by Imperial conferences in London, to which the Dominion and Colonial Premiers now come as a matter of equality and right

Not only in Australia, but also in South Africa, things had been moving towards a closer union It may seem strange to foreigners that we should be so ready to trust those who have recently been fighting against us; but it has always been our way, and this is one of the reasons why England has proved herself so good a mother of colonies She once lost a mighty Empire—the present United States—by treating the people carelessly, she is not likely to make the same mistake again. Well, soon after the Boer war was over our Government made up their minds to let the new dominions manage their own affairs, and not many years later the English provinces decided to join them, and to make one single State. The very man who had led the Boer armies against us, General Botha, was the first Premier of United South Africa Even before

this memorable event took place, the conquered Transvaal had given a proof of its loyalty by sending to our King and Queen the Cullinan diamond, the biggest gem of its kind in the world, to take an honoured place among the crown jewels

King Edward's reign, though short, was a time of many changes One of the most remarkable movements was the demand of women for votes Now I should like you to understand that a great many wise people were in favour of this, but the question grew angry and embittered, and unhappily there was a good deal of violence before the reform was granted, as it was soon after the Great War began.

We have seen that the army was reorganized ; the same is true also of the navy All of a sudden England surprised the world by building secretly a new kind of battleship, called the Dreadnought. This was so great an improvement on the vessels which had been built before, that all the nations in Europe set to work to imitate it, and so keen was the rivalry that even this wonderful ship soon got out of date. Another remarkable invention was the submarine, a boat which can travel for far distances either above or below the water The French first built these, but, as usual, others copied them, and now every maritime nation has a fleet of these deadly craft

The marvellous little engine which made the submarine possible was responsible for other developments also. Not only did it produce the motor-car, which is so common a sight in our streets to-day, but it also led to the building of the wonder of the age—flying machines These were of two types our English manufacturers paid especial attention to aeroplanes, while Germany made experiments chiefly with balloons driven by machinery

And then, look at the progress of electricity. Its use for

Central Press
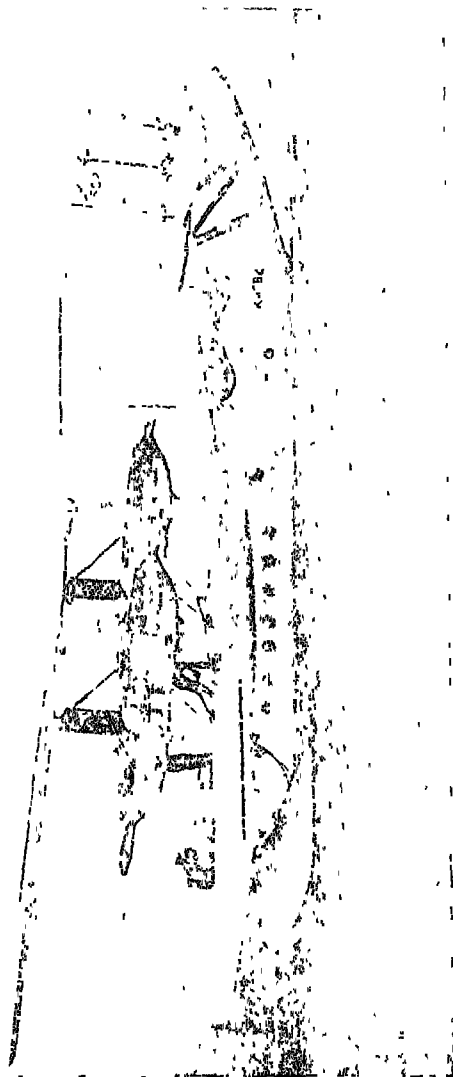
A Flying Boat, 1935

"traction," or hauling vehicles, made an extraordinary difference to our lives The street tram, the "tube" or underground railway, and the suburban electric trains soon became objects familiar to all dwellers in towns, and people began to say it would not be long before horses and locomotive engines would be superseded

And, lastly, we must not forget to mention the marvellous discovery, by a clever Italian called Marconi, of wireless telegraphy Since he found out a way of sending messages without wires it became possible to "talk" to ships far out at sea, and you will hardly need to be told what a great advantage that is, especially as through the "Wireless" you are familiar with its workings in your own home

These are a few, but by no means all, of the blessings that King Edward's peaceful reign brought to the nation under his care.

CHAPTER LXV

GEORGE V - ELIZABETH II—1910 TO THE PRESENT DAY

When George the Fifth came to the throne the people hoped that the good work done by his father would result in a long reign of peace, but I am sorry to say that they were disappointed. Within the space of five years the Great Powers of Europe, as they were called, were locked together in the deadliest struggle that the world has ever seen, and England was brought nearer to ruin than ever she has been in her history What it all arose from you will read later on, but I think one of the chief reasons was that the nations had been so busy arming that a fight was bound to come sooner or later, and Prussia especially wished to win a stronger position in the world through the use of her powerful army and her new navy

But before I tell you of the Great War I want you to know how things had been going on at home You will remember that just before King Edward died the Commons had been quarrelling with the Lords about which House was to have the chief power, and in the end the country decided that if they could not agree the Commons, or Lower House, was to have the last word This was a great change, for the Lords had always before been allowed to say "No" when any laws were proposed that they did not think good for the country, and some people think they ought to have this power still

A gradual change had been coming over the House of Commons As I told you, many working men had been

elected members of Parliament, and their number increased at every election, so you will not be surprised to learn that more laws were passed to help the poorer classes Old age pensions had already been granted to men and women who had reached the age of seventy and had not been able to save enough money to keep them when they were past working : this is a great and good Act, for it brings comfort and security to these poor people just when they need it most In 1912 another Act was passed to help workers when they are ill, or out of work through no fault of their own. A workman pays so much a week, his employer also pays something, and the nation pays something more, so that when he is unable to earn wages he receives an allowance of money, and when he is ill a doctor has to attend him

Ireland, you will remember, had for a long time been wishing to manage her own affairs, and at last seemed on the point of getting what she wanted A Home Rule Bill had actually passed both Houses of Parliament, and was only waiting to be put into force when the Great War broke out It was not thought wise to try the experiment when England was desperately at war, so the long-expected grant of Home Rule was postponed I am afraid that this delay was one of the causes of the terrible revolution and fighting that took place in Ireland in the next few years

And now we come to the tragedy that cast a gloom over every home for four long years and more and to which I have just referred—the Great World War How and where did it begin ? I will tell you. In the Balkan peninsula, that part of Eastern Europe where many Christian races had long been under the government of the Turks, there were several little nations which had recently won their freedom Russia had helped them to gain their independence, and considered

herself their protector ; but on the other side lay Austria, very jealous of this great power, and continually making trouble As these little States were always quarrelling with one another, there had been many wars, and it needed very little to start another ; it was just as if a train of powder was waiting to have a match applied to it

The heir to the Austrian throne and his wife were murdered while visiting a little place in Bosnia Austria laid the blame of this senseless crime on Serbia, and demanded satisfaction and an apology Though the Serbians denied that they were responsible, they agreed to do anything they could to appease Austria , but the conditions that she made seemed so hard that they appealed to Russia for help Now Russia was allied to France, and Austria was backed up by Germany, so you see that if war broke out it was certain that all these four nations would be drawn into it So England did all she could to prevent an outbreak, reasoning with each power in turn. I think Austria might have given way, but Germany told her that she had gone too far to draw back, and in spite of all our efforts the war began At first England did not join in, though she was suspicious of Germany and very friendly to France But she only hesitated for four days, for the Germans suddenly invaded Luxemburg and Belgium, which had nothing whatever to do with the quarrel, in order to strike France in the back, so to speak and this aroused the British nation Many years before, the Great Powers had all agreed to protect Belgium from this very thing . even Germany had promised When she was reminded of this, her Chancellor sneered at the treaty she had signed as " a scrap of paper " , but England said the promise must be kept, or we should declare war To this Germany returned no answer, so at eleven o'clock on August 4, 1914, when the limit of time

expired, vast crowds of people assembled outside Buckingham Palace, and cheered King George to the echo, for standing up for poor down-trodden Belgium They little thought that four long years of agony and distress would pass before they could cheer for the end of the fighting

But one man foresaw it—Lord Kitchener While nearly everybody was saying the war would not last till Christmas, and the German Kaiser was promising his troops that they would be home again " before the leaves fell," Lord Kitchener was asking men to enlist " for three years or the duration of the war "

Now I think I ought to explain that this war was like no war that had ever occurred before In days gone by it was only the regular armies that fought ; and though the continental nations had for many years made all their men go through military training, we had kept only a small force, sufficient to prevent invasion and to guard our dominions across the seas . we had never thought we should have to join in a continental war. But now that we were mixed up in one we had to enlist every man that could serve, and no less than four million men volunteered Even that was not enough, so in the end a law was passed that every sound man up to the age of fifty was obliged to defend his country, and for the first time in our history " conscription " became the law of the land Not only did the men give their services, but the women also they stepped into the places of those who had gone to the front, and " carried on " with their work As time went on they joined various corps and wore uniforms, and hundreds of thousands of them risked their lives right in the middle of the war areas on the continent No wonder the King and all Englishmen were proud of them, and thankful for their help !

I know you will be pleased to hear that when the mother country declared war all her dominions rushed to her aid. India, Canada, Australia, New Zealand—even South Africa, which had been fighting against us little more than ten years before—all sent soldiers and sailors to help us : no dependency was so small that it did not assist in some way, and nothing in our history has shown so clearly how wisely and kindly our colonies have been ruled in the past Germany expected the British Empire to break up, but instead of that the war united it more closely than ever Only in one place was there trouble—Ireland A revolution broke out there in the south, but it was put down Nevertheless, we had to keep a big army in Ireland all through the war, for fear the people might rise against us

But it is time to talk of the fighting in Europe and elsewhere, though it is impossible to tell more than the smallest fraction of what happened Before long, Italy, Portugal, and Roumania joined our side Japan had done so at once, as she was our ally Greece pretended to help us, but did not America hesitated a long time, but the sinking of the *Lusitania* in 1917 by a German submarine, with the loss of over 1000 lives (many of them women and children), at last turned the scale, and she came in when help was badly needed.

On the other side Turkey joined Germany, and Bulgaria as well, not so much because she liked Germany as because she hated Serbia. So in Palestine, Mesopotamia, Italy, and all along the Eastern and Western fronts, the fighting went on day after day for more than four years Millions of men were killed, and still more were injured for life At the beginning the Germans nearly succeeded in capturing Paris The gallant little British force sent out at once was forced to retreat almost as soon as it had taken up its position at Mons .

but it rallied magnificently, and helped the French to win a wonderful victory at the Marne river This victory, though we did not know it at the time, decided the war, because never again did the Germans come so near to success

So fierce was the fighting that almost at the onset nearly all our regular army was killed or wounded, so we had to make haste to collect another , and this took time. But when we had got the men we found we had not nearly enough guns and ammunition, so the factories in England were asked to leave what they were doing and make them ; and men and women worked at it night and day By slow degrees we got as many guns as the Germans had, but just as things were beginning to look better a revolution broke out in Russia The leaders of this revolution murdered the unhappy Tsar and all his family, and said they would fight no more , so the Germans were now free to send all their soldiers against the French and ourselves For a long time we were in very great danger, but at last the American troops began to arrive, and the tide turned Sir Douglas Haig drove back a determined attack on Amiens, and the French Marshal Foch, who had now been made Commander-in-Chief of all the armies against Germany in France, ordered the whole allied line to push forward Back, back went the Germans, fighting desperately every inch of the way , but they knew, and all the world knew, that they were beaten At last their armies got into such a tangle and were so demoralized that they were forced to ask for an armistice It was granted, and the war was over What a relief this armistice was, only those who had fathers, sons or brothers in the fighting line can really know The whole nation, the whole Empire, was filled with gratitude and great relief

But what had the Navy been doing ? As King George had

foretold, it proved to be " Britain's sure shield " So well did it guard our shores that not a single soldier lost his life in crossing to or from the war from England or America It fought only one really big battle, in the North Sea, off the coast of Jutland Both sides lost many ships, but the victory was ours , for although the German fleet luckily escaped home in the darkness, it never again dared to come out until it surrendered at the end of the war As brave as the Navy, our Merchant Service also did splendid work Though the seas all round our coasts were full of submarines, not one crew ever refused to leave port This was a great blessing, for if our sailors had failed to bring us food we should have been forced by starvation to lose the war As it was, our people passed through a very anxious time, and all food and coal had to be " rationed " this meant that each person was given so much, and no more, so that supplies should not run out

Not only was the war fought on sea and land, but in the air also Airships and aeroplanes were everywhere, and a new terror was brought to the dwellers in our towns by attacks with bombs London especially suffered from these, and a long time passed before we succeeded in checking those terrible raids

Men hoped, and said, that this was " the war to end wars," and it was with this end in view that the United States President, Woodrow Wilson, started the League of Nations , but a majority of the American people refused to support him Without such support it could not be truly successful in preventing war

The state of Europe after the war was terrible A vast area in France and Belgium was devastated , whole towns were wiped out, and the nations who had taken part in the
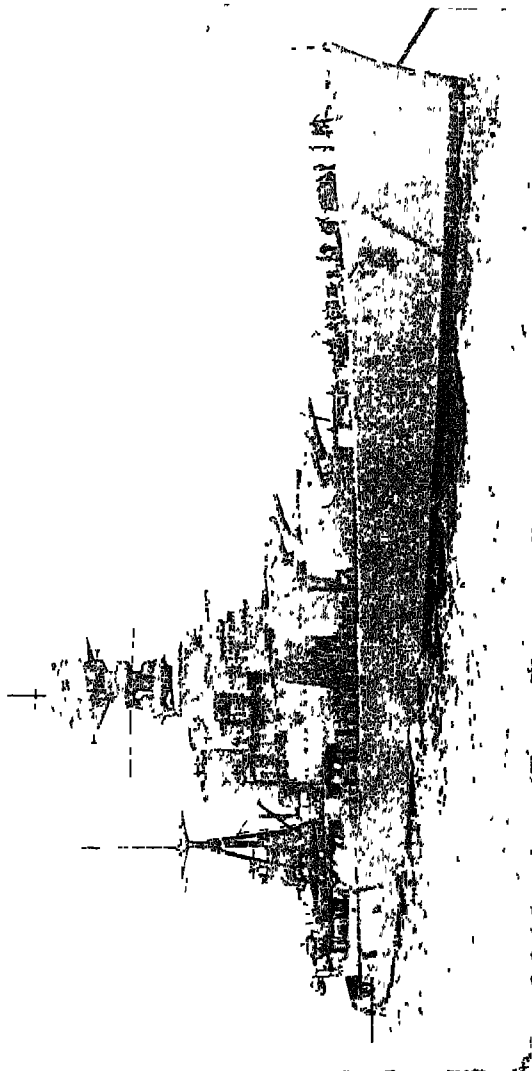
H M S "Hood."

war were all so badly in debt that trade was brought almost to a standstill For a while England prospered, but soon business began to fall away, and many thousands were unable to find work · at one time over two million men and women were out of employment

In Germany the ruling sovereigns, it is true, were driven out, and republics were set up in the various states, but their commerce at first seemed all right, for when money was scarce the Germans used paper notes instead , and for a while this plan succeeded Before long this paper was found to be worth nothing, and those who had saved money were reduced to beggary Notes for a million marks—a mark used to be equal to our shilling—were to be bought in London streets for a penny , and they were not worth even that, being only scraps of paper

Now it is time to see what changes took place in our own country The most important, perhaps, is that women, in recognition of their fine work during the war, now became by law equal with men They were given votes some are members of Parliament, and several have been in the Cabinet They are also taking their places in the learned professions. The Labour Party, too, has made great progress, and we have seen Labour Governments in charge of the affairs of the Kingdom The south of Ireland, too, after centuries of rebellion and horrible civil war, has now become an independent Republic , but the northern province of Ulster still remains happily part of the United Kingdom, and, although it has its own Parliament, it also sends representatives to the Imperial Parliament at Westminster

In our daily life there have been many changes one of the most remarkable of these was wireless telephony, allowing people at their own firesides to listen to what is said or what

is going on hundreds of miles away. We had looked forward to air travel becoming as common as the railway, but this has yet to come; though more and more lines of aeroplanes are running regularly and carrying mails over Europe to India and between many countries.

But wonderful things were also done in the air after the war. There was enormous excitement, for instance, when a young American, named Lindbergh, flew from New York to Paris in May, 1927, a journey of 3,510 miles, in 33¼ hours.

I think that the most remarkable result of all, however, is the growth of respect and love felt for our Royal Family. Sorrow was shown by everybody when Queen Alexandra, the mother of the King, died on the 20th November, 1925. On the 21st April, 1926, a daughter was born to the Duchess and Duke of York, and this little girl, the Princess Elizabeth, was later to become Queen of England.

At the end of 1928 the whole world waited anxiously for news of King George, who was very ill in Buckingham Palace. His illness was long, and it was not until the beginning of July, 1929, that His Majesty was strong enough to appear publicly and to attend a Thanksgiving Service for his recovery.

In the following years there was much anxiety in our country and throughout the world, for the prosperity which had been so great suddenly fell away and widespread depression in industry followed, with millions out of work and hardship everywhere.

Happily, our statesmen saw the necessity at once of co-operation among themselves, and with Mr. Ramsay MacDonald, who was our first Labour Prime Minister, at its head, a National Government was formed, consisting of members of the Conservative, Liberal and Labour Parties. At a

Central Press

Their Majesties King George V and Queen Mary at their Silver Jubilee.

General Election the whole country approved of that bold step and gave the new Government an enormous majority, with the result that conditions soon improved, unemployment went down and a return to prosperity came

And then, in May, 1935, when King George was in his seventieth year, his reign came to its Silver Jubilee, and in a celebration of those twenty-five years of great difficulties and yet of duty greatly done, of dignity and royal devotion to their interests, the peoples of the Empire united in paying to him and to his gracious consort, Queen Mary, a tribute of pride and love

But early in 1936 our good King again fell ill, and to the deep grief of his people at home and beyond the seas, at a few minutes before midnight on the 20th of January, died

I cannot tell how very sad not only we Britons within the Empire—"a great Family" he had called us in a Christmas-day broadcast—were made by the loss, but every nation of the world paid to his memory the tributes due to his simplicity of heart, modesty, wisdom and the high ideals that he had held and practised So in pride and honour the noble King George was borne to his resting-place at Windsor

---

He was succeeded by his eldest son, King Edward the Eighth, who had already gained much experience of travel and administration in times of war and of peace But not for long was he destined to wield the sceptre over the British Commonwealth of Nations for, less than a year after his Accession, he felt the call of private happiness and repose, and decided to renounce the throne and abdicate This he did after days of most earnest anxiety—of sorrow and of wonder—to all, to be succeeded by his brother, the Duke of York On his Accession Prince Albert, as he had been,

gratified his subjects by assuming the name of George, to which his father had brought a restored dignity and shining honour

The new King, who was to be so greatly loved, reigned in troubled years, for the clouds of war were already gathering Once again the trouble began in Germany, with the rise of the Chancellor Adolf Hitler, the *Fuhrer*, or the Leader as he was also called He set out to do three things to rule Germany absolutely, to extend her power far beyond her own bounds by overwhelming smaller nations, and to destroy the Jews Over six million of these poor people were thrown into prison camps, tortured and killed Hitler and his party became so strong in Germany that no one dared oppose them Then he made an alliance, called the Axis, with Mussolini, the dictator of Italy In this country we tried to defend justice and to maintain peace, but it proved impossible to do both, and when Hitler invaded Poland, with whom we had a treaty, we went to war, in September, 1939 France and Belgium were again our allies, but this time Italy came in with Germany Presently Russia joined us, although not long before the Russian leader Stalin had made a pact with Hitler

This was war in which everyone was in danger, for there were attacks from the air upon our cities, as well as fighting by land and sea There was a very bad time indeed when first Belgium, then France, were overrun by the Germans, as were Holland, Norway and Denmark France made a separate peace, and the northern half remained under occupation We were left alone We might have lost our army in France, and been ourselves invaded, but by the mercy of God and by great heroism on the part of all kinds of people we were saved Our soldiers were brought back from Dunkirk on the French coast, not only by the ships of the Navy but by

Tenzing on the Summit of Everest

a fleet of fishing-boats, little river-boats and every kind of craft The Air Force came to the rescue, beating back the German attack It was one of the greatest crises in our history, and one of our finest hours

"Never in the field of human conflict was so much owed by so many to so few", was said of our debt to the Royal Air Force at this time by one of the greatest Englishmen, Winston Churchill, who was Prime Minister during those dangerous years In his magnificent speeches he always told us how bad things were, but told us also how much we could do, and put heart into everyone Our King and Queen were no less great and heroic staying in London, even when Buckingham Palace was damaged by bombs, they went to see those whose homes had been destroyed to comfort them They became more and more loved and admired

These were the days of the Battle of Britain Hitler did not land any troops, but he sent wave after wave of aircraft, to drop bombs, the loss of life among civilians was greater than in any war before

Japan came into the war on the side of Germany, attacking in December, 1941 the American naval base of Pearl Harbor in the Pacific This brought in America as our ally There was fighting in Africa and in Burma, at sea, and in the air We came very near defeat, but at last the tide turned After victory in Africa Italy collapsed Then we landed in France and the German resistance crumpled France was freed from enemy occupation, and in May, 1945, the European war came to an end Victory in the Pacific followed after the dropping of nuclear bombs on Hiroshima and Nagasaki We had won, but we were exhausted, and life went on being hard, but in time we returned to something like normal ways and comfort

In peace as in war, King George VI served his people

Queen Elizabeth II and Prince Philip with their children

faithfully so that he never spared himself In February, 1952 he died and was succeeded by his elder daughter, the Princess Elizabeth, who was already greatly loved, and whose husband, Prince Philip, Duke of Edinburgh, was also very popular The young Queen was crowned in June, 1953

People awoke, on Coronation Day, to the news that Sir John Hunt's party had climbed Mount Everest, Hillary, a New Zealander, and Tenzing, a Sherpa, had reached the summit That day the crowning of Queen Elizabeth was seen not only by the congregation in Westminster Abbey but by millions of television viewers

Some kings and queens have reigned in ages famous for art and literature In recent times, our monarchs have ruled in an age of science Queen Victoria's reign, for instance, saw new types of transport, the railway train and steamship, it saw the invention of the telephone, the discovery of electricity, the first motorcars In Edward VII's reign, flying had its beginning, in George V's reign the first sound broadcasting service was formed and begun by the British Broadcasting Corporation Later the B B.C were the first in the world to start a television service

Radar was invented during the thirties and played a great part in winning the war Later Britain's giant radio-telescope added immensely to the world's scientific knowledge of the universe and there has been great work done to develop the use of nuclear power for peaceful purposes Great strides were made in medicine, outstanding among which was the discovery of the antibiotic drugs (substances which destroy living bacteria) such as penicillin Many new ways of healing were tried and deadly diseases, such as tuberculosis and diphtheria, were almost overcome

Britain's invention of jet propulsion has played a big role in

the development of aircraft The exploration of space has begun in Queen Elizabeth II's reign For some years, the Russians have made experiments, sending up space-ships with a dog or a monkey inside , in 1961, they succeeded in putting an airman, Major Yuri Gagarin, into orbit People began to think that flying to the moon was possible , in America, experiments were made in living under moon conditions

Perhaps this desire to fly into space was a result of the increasing speed of travel during the 1950s and 1960s Flying had made the world seem smaller, for we could now reach America in a day, and the Far East in less than a week For real excitement, men had to think of flying beyond this globe altogether

At the time of the Coronation the Queen and the Duke of Edinburgh had two children, Prince Charles, now Prince of Wales, and Princess Anne Prince Andrew was born in 1960 The Queen and her husband began making tours of the Commonwealth, and in Coronation Year visited Australia and New Zealand They have since visited Canada and various parts of Africa King George had ceased to be Emperor of India when that great country became a Republic, though retaining a link with the British Commonwealth of Nations , but when the Queen and the Duke paid a visit there, as well as to Pakistan, in 1960, they were most warmly welcomed They have also paid state visits to other countries, the Queen winning everyone by her gracious ways, the Duke impressing people by his quick mind and interest They have also visited people all over Britain itself, showing their interest in every way of life Like the late King George and Queen Elizabeth, they set an example of good and happy home life, and of service to others

Everyday life has grown more and more comfortable, with
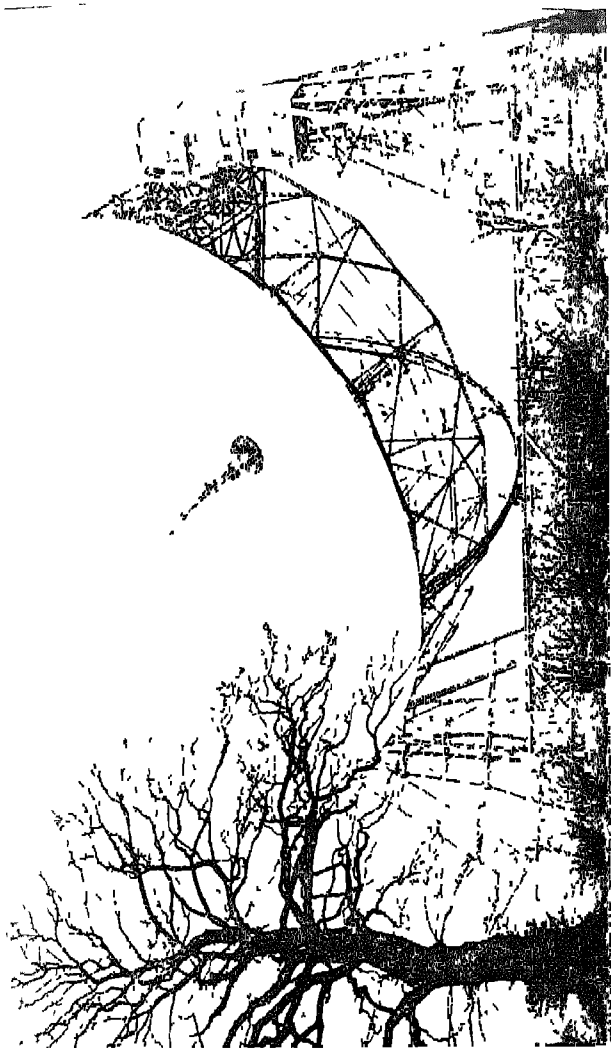
The radio-telescope at Jodrell Bank

higher wages, shorter working hours, better houses, and a great national health and welfare service. Yet there has never been so much crime among young people, not even in Victorian times when every city had frightful slums, children were sent to work in mines and factories, and hunger and misery drove people to steal and kill. This is a grave problem of our time, said to be due to a lack of good family life and religious teaching. Yet a great interest has been taken in the New Version of the Bible in English, published in 1961, and the different churches have come more closely together. In 1960 the Archbishop of Canterbury visited the Pope; never since the Reformation, four hundred years ago, had an English Archbishop paid such a visit.

The British Empire has become the British Commonwealth of Nations, and South Africa has left that Commonwealth to become a Republic, chiefly because of apartheid, the policy of dividing coloured people from white.

Everything seems to move faster and faster and there are many changes to come. Yet the old saying is true that history repeats itself, and the more we know of the past, the better we understand the present and are prepared for the future. Human nature does not change very much, and God does not change at all. So we must go on in faith, in loyalty to God, to our Queen and country and the Commonwealth, in honour, kindness and service to others.

INDEX